MSS No. 464 (Part-1) Subject Ramayana

Name of MSS RamCharit Manas (Baal Kand)

Author Tulsidas

Period Folios 264

Script Devnagiri Source Kapoor, Jalandhar City

Missing Folios

रामचरित मानस
(सप्त सोपान सम्पूर्ण

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः श्रीरामाय नमः अथ बालकांड लिख्यते [illegible] वर्णाना
मर्थसंघानां रसानां छंदसामपि मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ १ भवा
नीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थमीश्व
रं २ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रा
मवल्लभां ३ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणं यमाश्रितो हि वक्रोपि चंद्रः स
र्वत्र वंद्यते ४ येनाप्यर्थे समर्थे हि दत्तमर्थं चलत्पदं मंगलाय ततं तन्मे बाल्मे
यत्समाय [illegible]णत्राविते ५ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ वंदे विशुद्धवि
ज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ६ यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ७ यत्पादप्लवमेकमेव हि भ
वांभोधेस्तितीर्षावतां वंदेहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं ८ नानापुराणे
निगमागमसंमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि स्वांत[illegible] ९ सु
खाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति १० सोरठा जो
सुमिरत सिधि होइ गननायक करिवर बदन करो अनुग्रह सोइ बुधि रासि सु
भ गुन सदन १ सोरठा मूक होइ बाचाल पंगु चढै गिरवर गहन
जासु कृपा सु दयाल द्रवौ सकल कलि मल हरन २ श्रीरामाय नमः॥

रा° १

१

मरप्रायन ॥ तो यह पद्य ग्रंथ को ...

सका ॥ करो सो मम उर धाम सदा छीरसा ...
...योग है का हेते मुसाई जी नें हूं मुज श्री राम उ पासक हैं तो दीर शाई भगवान ...

सोरठा ॥ नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ॥ करो सु मम उर धाम सदा
छीरसागर सयन ॥ ३ ॥ सो ॥ कुंद इंदु सम देह उमा रवन करुना अयन ॥ जाहि दी
न प्रर नेह करो कृपा मरदन मयन ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ बंदो गुर पद कंज कृपा सिंध
नररूप हरि ॥ महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ बिबिध बिप्र
बुध ग्रह चरन बंदो कहो कर जोरि ॥ होइ प्रसंन पुरवो सकल मंजु मनोरथ मो
र ॥ ६ ॥ दो ॥ कवि कोविद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ॥ बाल बिनै सु
नि सुरुच लखि मो परि होहु कृपाल ॥ ७ ॥ चौपै ॥ बंदो प्रथम मही सुर चर
नो ॥ मोह जनित संसै सभ हरनो ॥ पुनि मन बचन कर्म रघुनायक ॥ चर
न कमल बंदो सभ लायक ॥ राजिव नैन धरे धनु सायक ॥ भगति बिपति भंजन
सुखदाइक ॥ जनकसुता जगजननि जानकी ॥ अतिसै प्रिया करुणानिधान की ॥ ता
के जुग पद कमल मनावो ॥ जासु कृपा निर्मल मति पावो ॥ सेस सहस्र सीस जग कारन
जो अवतरेउ भूमि भै टारन ॥ सदा सो सानुकूल रहि मो परि ॥ कृपासिंधु सौमित्र गुणाक
र ॥ प्रणवो संभु गउर गणनायक ॥ हरनि सोक संसै सुखदायक ॥ प्रणवो ... धपुरी
... तिपावन ॥ जेहि रहै राम भगति मन भावन ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ प्रणवो पवनकुमार खलबन

तो ग्रंथकार कीस ... मतर ... क्रिष्टि है याते बिरोधन होहि ... यह ग्रंथ
... गंभीर ग्रस्या नमे सयन कोर नहीं तेसे होउ ...
... र मांगते है किमि ...

चारवर्णके प्रथमब्राह्मणाहै इसकर प्रथमपदवीयाहै अपवा पृथ्वीके
देवताहैइसकरके मातलोकमे इहभीदेवहै पीछे स्वर्गवासीआकोवंदनकी है

पावककज्ञानघन॥ जासे हृदै आगार बसे राम सर चाप धरि॥५॥ चौ॥ सारद सेस गमन
वेपितते हैं॥ रघुपति भक्ति देहु हठु मोही॥ सनकसनकादि भक्त मुनि नारद
जे मुनिवर बिज्ञान बिसारद॥ बिनै सुनो सबु सुहि ऊ कृपाला॥ मंज ऊ बिषम
बिपति भऊ जाला॥ रघुपति चरन ऊपास कजेते॥ खग मृग सुर नर अ
सुर समेते॥ यह विवर मे मांग ऊ करि जोरी॥ सम मिल कर ऊ बिमल म
ति मोरी॥ तुम जग जीव जंत जग माही॥ कोई बिन भक्ति सुख नाही॥ समुझ स
न सह हृद दीनता प्रीती॥ श्रुति कहिये हि संतन की रीती॥६॥ दो॥ मूरख कर अ
र्थ न जान कुन हि गुन ज्ञान उपाइ॥ राम चरित कुबरन ऊ सम भमि ल्ले हृदुस
हइ॥११॥ चौ॥ वऊरबंद खलगन सतिभये॥ जे बिनकाज दहहि बाये॥ बंदो
खल जस सेस सरोषा॥ सहंस बदन वरने पर दोषा॥ परिहित हानला
भ जिनकेरे॥ उजरे हरष बिषाद बसेरे॥ सुनत कहत तव रग्र घनबाद्री
॥ जे दुख से बस सुरसज जगमाली॥ हरिहर जस सरीके सराऊ से॥ परअक
जभ सहस सबाऊ से॥ जे पर दोष लखे सहसाखी॥ परहित घृत जिनके मन

२ स्वर्गलोकवासीआकोवंदनाकरतोसे प्रथम पुन्यएकजगमेनहि
हुआ मनक्रमवचनविप्रपदपूजा पुन्यएकजगमिनहिंहिनसंता प्रथम

माबी॥ सुजन समाज सकल गुन खानी॥ करौं प्रनाम सप्रेम सुबानी॥ साधु चर
स सुभ चरित कपासू॥ निरस बिसद गुनमय फल जासू॥ जो सहि दुख परछि
द्र दुरावा॥ बंदनीय जेहि जग जस पावा॥ बरनौं पृथुराज समाना॥ पर अ
घ सुनै सहस दस काना॥ बहुरि सक्र सम बरनौं तेही॥ संतत सुरानीक हित
जेही॥ बचन बज्र जेहि सदा पियारा॥ सहस नयन पर दोष निहारा॥ बंदौं सं
त असज्जन चरना॥ दुखप्रद उभै बीच कछु बरना॥ बिछुरत ऐक प्रान ह
रि लेहीं॥ मिलत ऐक दारुन दुख देहीं॥ तेज कृशानु रोष महिषेशा॥ अघ
अवगुन धन धनी धनेशा॥ उदै केतु सम हित सबही के॥ कुंभकरन सम
सोवत नीके॥ पर अकाज लगि तनु परिहरहीं॥ जिमि हिम उपल कृषी दल
गरहीं॥ १२॥ दोहरा॥ उदासीन अरि मीत हित सुनत जरै खल रीत॥ जान
पानि जुग जोरि जन बिनती करै सप्रीत॥ १२॥ चौपई॥ मैं अपनी दिसि कीन
न्ह निहोरा॥ तिन निज ओर न लाउब भोरा॥ बायस पलीअहि अति अनुरागा॥ होइ निराम
ष कबहुं कि कागा॥ भल अनभल निज निज करतूती॥ लहत सुजस अपलोक बिभू

ती॥सपासधाकरसुरसरसाध॥गारलगुनलकलमलसरसाध॥गुणगव
गुणजानतसमकेऽरी॥जोऊहमाउनीकतिहसोऽरी॥कालसमाउकरमवरिमा
री॥भलोप्रकृतवसिचकैमलारी॥सोसुधारहरिवलनऊमलेंहौ॥दलदुष
दोषबिमलजसदेहौ॥बलऊकरेमलपाइसुसंगु॥मिटईमलनसु
भाउग्रमंगु॥१४॥दो॥समप्रकासतमपाखदुहिनामभेदबिधकीन॥सस
सोषकसोषकसमैजगजसअपजसलीन॥१५॥दो॥जठचेतनजगजीवज
नसकलरामममजान॥बंदोसभकेपदकमलसदाजोड़जगपान॥१६॥
दो॥देवदनुजनरनागखगप्रेतपित्रगंधर्व॥बंदोकिंनररजनच
रकपाकरोअबसर्व॥१७॥चौ॥सठउधरेसतिसंगतियाऽरी॥पारसपरस
कुधातसुहाऽरी॥बिधवसजनकुसंगतिवाँसी॥फनमनमससमनिजगुन
अनुसरहीं॥लषसवेषजगबंचकजेऊ॥बेषप्रतापपूजीअहितेऊ॥उध
रेअंतनहोइनबाहू॥कालनेमजिमरावनराहू॥कीइकुबेषसाधसन
मानू॥जिमजगजामवंतहनुमानू॥हवजेऐकसंगीजगमाही॥जलज

संका मायाब्रह्मजीवजगदीसा वह वाक्य कैसो॥ विधि बनायो मेसि इहाइ गो॥ ग्रंथ
कारकी तौ लिखत है उत्तर यह वाक्य बनायबे मो नहीं ग्रंथकार धर्यो चौ विधि
विधि प्रपंच गुन अवगुन साना इस वाक्य को उदाहरण है कि गुन अवगुन रूप प्रपंच

जोक जैम गुन बिलगाही॥ सुधा सुरा सम साधु असाधु॥ जनक एक ज-
ग जलधि अगाधु॥ भलो पोच सभि बिधि उपजाई॥ गनि गुन दोष बेद बि-
लगाइ॥१८॥ दो॥ भलो भलाइहि पै लहै लहै निचाई नीच॥ सुधा सराहिऐ
अमरता गरल सराहीऐ मीच॥१९॥ चौ॥ खल अघ अगुन साधु गुन गा-
हा॥ उभै अपार उदधि अवगाहा॥ तिह तें कछु गुन दोष बखाने॥ संग्रह
त्याग न बिन पहिचाने॥ कहहि बेद इतिहास पुराना॥ बिधि प्रपंच गुन अउ-
गुन साना॥ दुख सुख पाप पुन्य दिन राती॥ साधु असाधु सुजात कुजा-
ती॥ दानव देव ऊंच अरु नीच॥ अमीअ सुजीवन माहुर मीच॥ माया ब्रह्म जी-
व जगदीसा॥ लछि अलछि रंक अवनीसा॥ कासी मग सुरसर करमना-
सा॥ मरु मारव महिदेव गवासा॥ सरग नरक अनुराग बिरागा॥ निगमा-
गम गुन दोष बिभागा॥२०॥ दो॥ जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन करतार॥ संत हंस गुन
गहै पय परिहरि बारि बिकार॥२१॥ चौ॥ अस बिचार जब देइ बिधाता॥ तब तजि दोष
गुनै मन राता॥ बिन सतसंग बिबेक न होई॥ राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

राम माया ज्ञान की कोषा विसो व ब्रह्मा जी की प्रार्थना तें होत है तातें
सामान्य विशेष दुइ भय यव ञ्जते सिद्ध है ६

॥ बा॥ सतसंगति मुद मंगल मूला॥ सोई फल सिध सब साधन फूला॥ हान कु
संग सुसंगति लाहू॥ लोकहु बेद बिदित सब काहू॥ गगन चढै रज पवन
प्रसंगा॥ कीचहि मिलै नीच जल संगा॥ साधु असाधु सदन सुक सारी॥ सु
मिरै राम देहि गनि गारी॥ धूम कुसंगति कारख होई॥ लिखीए पुरा
न मंजु मसि सोई॥ सोई जल अनल अनिल संघाता॥ होइ जलद जग जी
वन दाता॥ २२॥ दो॥ ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग॥ हो
इ कुवसत सुवसत जग लखै सुलछन लोग॥ २३॥ चौ॥ सुजन समाज सक
ल गुन खानी॥ करौ प्रनाम सप्रेम सुबानी॥ मुद मंगलमै संत समाजू॥ जो
जग जंगम तीर्थराजू॥ रामभक्ति जेह सुरसरि धारा॥ सरसै ब्रह्म बिचार प्र
चारा॥ बिधि निषेध मै कलिमल हरनी॥ करम कथा रबिनंदन बरनी॥ हरि
हर कथा बिराजत बेनी॥ सुनत सकल मुद मंगल देनी॥ बट बिस्वा
स अचल निज धरमा॥ तीर्थराज समाज सुकरमा॥ सबहि सुलभ सब दि
न सब देसा॥ सेवत सादर समन कलेसा॥ अकथ अलौकिक तीर्थ

राऊ ॥ देस द्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥२४॥ दो० ॥ सुनि समझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अ
ति अनुरागा ॥ लहहिं चार फल अछत तन साधु समाज प्रयागा ॥२५॥ चौ० ॥ म
ज्जन फल देखीऐ ततकाला ॥ काक होहिं पिक बकउ मराला ॥ सुन आचरज क
रे जिन कोई ॥ सत संगति महिमा नहि गोई ॥ बालमीक नारद घटयोनी ॥
निज निज मुखन कही निज होनी ॥ जलचर थलचर नभचर नाना ॥ जे जड चे
तन जीव जहाना ॥ मति कीर्ति गति भूति भलाई ॥ जब जेहि जतन जहां जेहि पाई ॥
सो जानौं सत संगी प्रभाऊ ॥ लोकहु बेद न आन उपाऊ ॥ बिधि हरि हर कबि को
बिद बानी ॥ कहत साधु महिमा सकुचानी ॥ सो मो सन कहि जात न कैसे ॥
साग बनक मणि गुण गन जैसे ॥२६॥ दो० ॥ बंदौ संत समान चित हित अनहित न
हि कोइ ॥ अंजल गति सुभ सुमन जिम सम सुगंध कर दोइ ॥२७॥ दो० ॥ संत सर
ल चित जगत हित जान सुभाउ सनेह ॥ बाल बिनै सुन कर कृपा राम चरन
रत देह ॥२८॥ चौ० ॥ बंदौ गुर पद पदम परागा ॥ सुरुचि सुबास सरस अनुरा
गा ॥ अमीअ मूर मय चूरन चारू ॥ समन सकल भव रुज परवारू ॥ सुकृत

संभुतन बिमल बिभूती॥ मंजल मंगल मोद प्रसूती॥ जन मन मंजु मकुर म
ल हरनी॥ कीये तिलक गुन गन बस करनी॥ श्री गुर पद नख मन गन जो
ती॥ सुमरत दिब्य द्रिष्टि हीये होती॥ दलन मोह तम सो सप्रकासू॥ बडे भाग उर
आवे जासू॥ उघरें बिमल बिलोचन ही के॥ मिटे दोष दुख भव रजनी के॥
सूझें राम चरित मनि मानक॥ गुप्त प्रगट जो जिह खानक॥ दो॰ यथा
सुअंजन अंज द्रग साधक सिध सुजान॥ कौतक देखे सैल बन भूतल भू
र निधान॥ चौ॰ गुर पद रज म्रद मंजल अंजन॥ नयन अमी द्रग दोष बि
भंजन॥ तिह कर बिमल बिबेक बिलोचन॥ बर्नौं राम चरित्र भव मोचन॥ राम
चरित्र चिंतामणि चारू॥ संत सुमति तीया सुभग सिंगारू॥ हरन मोह तम
दिनकर कर से॥ सेवक शालि पाल जलधर से॥ अभिमत दानि देवतरु बर से॥
सेवत सुलभ सुखद हरि हर से॥ सुकवि सरद नभ मन उडगन से॥ रा
म भक्ति जन जीवन धन से॥ सकल सुक्रत फल भूर भोग से॥ जग हित निरउ
पाध साध लोग से॥ सेवक मन मानस मराल से॥ पावन गंग तरंग माल से

३१ दो॰ रामचरित्र राकेसकर सरस सखद सभकाहु॥ सजन कुमद चकोर चीत हित बिसेष बडु लाहु॥ ३२ चौ॰॥ जग मंगल गुनग्राम राम कै॥ दान मुक्ति धन धर्म धाम कै॥ सत गुर ग्यान बैराग जोग कै॥ बिबिध बैद भव भीम रोग कै॥ जननि जनक सीया राम प्रेम कै॥ बीज सकल ब्रत धर्म नेम कै॥ समन पाप संताप सोक कै॥ प्रिय पालक पर्लोक लोक कै॥ सचिव सुभट भूपति बिचार कै॥ कुंभज लोभ उदधि अपार कै॥ काम क्रोध कलमल करि गन कै॥ केहरि सावक जन मन बन कै॥ अथित पूज्य प्रियतम पुरारि कै॥ कामद घन दारद दवार कै॥ मंत्र महामणि बिषै ब्याल कै॥ मेटत कठन कुअंक भाल कै॥ ३३ दो॰॥ कुपथ कुचाल कुतर्क कलि कपट दंभ पाषंड॥ दहन राम गुनग्राम जिम ईंधन अनल प्रचंड॥ ३४ चौ॰॥ रामकथा कलि कामद गाई॥ सुजन सजीवन मूर सुहाई॥ सोई बसुधातल सुधा तरंगन॥ भै भंजन भ्रम भेक भुयंगन॥ असुर सेन सम नरक निकंदन॥ साधु बिबिध कुल हित गीरनंदनी॥ संत समाज पयोधर मां सी॥ ~~शिवप्रिया मयकल सैल सुता~~ बिस्व भार भर अचल छिमा सी॥ जमगन मुहि मसि जग जमना सी॥ जीवन मुक्ति हेत जन कासी॥ रामहि प्रिय पावावन तुलसी सी॥ तुलसीदास हित हीये हुलसी सी॥ शिवप्रिया मयकल सैलसु

कलींदगिर

मलमद्र

तासी॥सकलसिधसबसंपतरासी॥३१ दो॥रामकथामंदाकनीचित्रकूटचितचारु॥तुलसी
सुभगसनेहबनसीयारघुबीरबिहारु॥३१ चौ॥बंदौरामनामरघुबरको॥हेतुकृसान
भानुहिमकरको॥बिधहरिहरमयबेदप्रानसो॥अगुनअनूपमगुननिधा
नसो॥महामंत्रसोईजपतमहेसू॥कांसीमुकतिहेतुउपदेसू॥महिमाजासुजानगन
नराऊ॥प्रिथमपूजीयेनामप्रभाऊ॥जानआदिकबनामप्रतापू॥भयोसुद्धकरिउल
टाजापू॥सहंसनामसमसुनिशिवबानी॥जपिजेईपियासंगीभवानी॥
हरषेहेतुहेरिहरहीको॥कीयेभूषनतीयभूषनतीयको॥नामप्रभाऊजान
शिवनीको॥कालकूटफलदीनअमीको॥१९ दो॥बरषारितुरघुबरभगतितुल
सीसालसुदास॥रामनामबरबरनजुगसावनभाद्रोमास॥२० चौ॥आखर
मधुरमनोहरिदोऊ॥बरनबिलोचनजनजीयसोऊ॥ससमरतसुलभसुख
दसबकाहू॥लोकलाहपरलोकनिबाहू॥कहतसुनतसमरितसुठनीके॥
रामलखनसमप्रियतुलसीके॥बरनतबरनप्रीतबिलगाती॥ब्रह्मजीवसमसहि
जसंघाती॥नरनारायनसरससुभ्राता॥जगपालकबशेषजनत्राता॥भक्तिसुतीय
कलकर्नबिभूषन॥जगहितहेतबिमलबिधपूषन॥स्वादतोषसमसुगतिसुधाके

कमठसेषधरेसमवसुधाके॥जीहजसोमतहरिहलधरसे॥जनमनमंजकंजमधुकरसे
दोहे॥एकछत्रइकमुकटमनसमवरननपैजोउ॥तलसीरघुवरनामकेवरनविराज
तदोउ॥४०॥चौ॥समझतसरसनामअरुनामी॥प्रीतपरसपरप्रभअनुगामी॥नामरूपदे
ईसउपाधी॥अकथअनादसुसामझसाधी॥देखीयैरूपनामआधीना॥रूपज्ञा
ननहीनामविहीना॥रूपविसेषनामविनजानै॥करतलगतनहिपरैपछानै
सुमरीयैनामरूपविनदेषे॥आवतहृदैसनेहविशेषे॥नामरूपगतिअक
थकहानी॥समझतसुषदनपरतवषानी॥अगुनसगुनविचनामसुसा
षी॥उभैप्रवोधकचतुरदुभाषी॥४१दो॥रामनाममनिदीपधरिजीहदे
हरीदुआर॥तुलसीबाहरभीतरहिजोचाहेउजीयार॥४२चौ॥नामजीहज
पजागैजोगी॥विरतविरंचप्रपंचवियोगी॥ब्रह्मसुषेअनुभवहिअनूपा
अकथअनामयनामनरूपा॥ज्ञानीचाहैंगूढगतिजेऊ॥नामजीहज
पजानहुतेऊ॥साधकनामजपैलैलाइ॥होहिसिधअनमादिकपाइ॥जपहि
नामजनआरतभारी॥मिटहिकुसंकटहोहिसुषारी॥रामभक्तजगचा
रप्रकारा॥सुकृतीचारोअनघउदारा॥चहुंचतुरकोनामअधारा॥ज्ञा

रा
बा
१

13

नीप्रभुहिविशेषप्यारा॥ चहुजुगचहुश्रुतिनामप्रभाऊ॥ कलिविशेषनहिंआनउपाऊ॥ ४३ दो॥ सकलकामनाहीनजेरामभक्तिरसलीन॥ नामप्रेमपियूषह्रदतिन्हहुकिएमनमीन॥ ४४ चौ॥ अगुनसगुनदुइब्रह्मसरूपा॥ अकथअगाधअनादिअनूपा॥ मेरेमतिबडनामदुहूते॥ कीन्हजिहजुगनिजबसनिजबूते॥ प्रौढसुजनजनजाननेजनकी॥ कहौप्रतीतप्रीतिरुचमनकी॥ एकदारुगतिदेखीयेएकू॥ पावकसमजुगब्रह्मबिबेकू॥ उभैअगमजुगसुगमनामते॥ कहेउनामबडब्रह्मरामते॥ व्यापकब्रह्मएकअबिनासी॥ सतचेतनघनआनंदरासी॥ असप्रभुहिरदेअछतअबिकारी॥ सकलजीवजगदीनदुखारी॥ नामनिरूपननामजतनते॥ सोउप्रगटजिमिमोलरतनते॥ ४५ दो॥ निर्गुणतेयहिभांतिबडनामप्रभाउअपार॥ कहेउनामबडरामतेनिजविचारअनुसार॥ ४६ चौ॥ रामभक्तहितनरतनुधारी॥ सहिसंकटकीएसाधसुखारी॥ नामुसप्रेमजपतअनयासा॥ भक्तिहोइमुदमंगलवासा॥ रिषिहितरामसुकेतुसुताकी॥ सहितसे

पि

हं

राम
१

ताडुका
सनसी १

रामएकतापसतीयतारी नामकोटखलकुमतिसुधारी।२।

नसुतकीनविवाकी॥सहितदोषदुखदासदुरासा॥दलैनामजिमरवि
निसिनासा॥भंज्योरामआपभवचापू॥भवभैभंजननामप्रतापू॥दंडकबन
प्रभुकीनसुहावन॥जनमनअमितनामकिएपावन॥निसिचरनिकरदलेरघु
नंदन॥नामसकलकलिकलुषनिकंदन॥२३दो॥सबरीगीधसुसेवकन
सुगतिदीनरघुनाथ॥नामउधारेअमितखलबेदबिदितगुनगाथ
२४॥रामसुकंठबिभीषनदोऊ॥राखेसरनजानसभकोऊ॥नामअ
नेकगरीबनिवाजे॥लोकबेदबरबिरदबिराजे॥रामभालकपिकटकबि
टोरा॥सेतुहेतुस्रमकीननथोरा॥नामलेतभवसिंधुसुकाही॥करोबिचा
रसुजनमनमाही॥रामसकुलरनरावणमारा॥सीयासहितनिज
पुरपगधारा॥राजारामअउधराजधानी॥गावतसुरमुनिवरगुनबा
नी॥सेवकसिमरतनामसप्रीती॥बिनस्रमप्रबलमोहदलजीती॥फिरत
सनेहमगनसुखअपने॥नामप्रतापसोचनहिसपने॥२५दो॥ब्रह्म

उधारे

संका नाम बंधना स बंधना तें अधिक और नव दोहा लों करी सो काहे ते उत्तर याप्रश्न को उत्तर तो नाम बंदना ही मैं है काहे कि और जुगन मैं प्रभु के साधन रहे कलि मैं केवल नाम ही साधन है प्र· कैसे दो· ब्रह्म राम तें नाम बड़ बरदायक बरदानि प्र· चौ· नहि कलि करम न भगति बिबेकू रामनाम अवलंबन एकू इत्यादि ॥ या जुग मैं प्रबलता नाम की है काहे ते जहाँ तहाँ मुख्यता है तहाँ ताकी

रा

बा

14 A

C

राम तें नाम बड़ बरदायक बरदानि ॥ रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि ॥ ४ ॥ चौ· नाम प्रसाद संभु अबिनासी ॥ साजु अमंगल मंगल रासी ॥ सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी ॥ नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥ नारद जानेउ नाम प्रतापू ॥ जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥ नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ॥ भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥ ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नाऊँ ॥ पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥ सुमिरि पवनसुत पावन नामू ॥ अपने बस करि राखे रामू ॥ अपतु अजामिल गज गनिकाऊ ॥ भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ॥ कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई ॥ राम न सकहिं नाम गुन गाई ॥ दो· नाम राम को कलपतरु कलि कल्यान निवास ॥ जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदास ॥ २६ ॥ चौ· चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका ॥ भए नाम जपि जीव बिसोका ॥ बेद पुरान संत मत एहू ॥ सकल सुकृत फल नाम सनेहू ॥ ध्यान प्रथम जुग मख बिधि दूजे ॥ द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥ कलि केवल मल मूल मलीना ॥ पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥ नाम कामतरु काल कराला ॥ सुमिरत समन सकल जग जाला ॥ राम नाम कलि अभिमत दाता ॥ हित परलोक लोक पितु माता ॥

बड़ाई है अथवा ग्रंथकार की उपासना नाम की है ॥ ताते सर्व तें उपासक को सो परिवर्णन करनो जोग्य है ॥ ताको प्र· चौ· हम राम तें बड़ नाम बड़ है ते हम रामनाम ही सन नाम हूं ते ॥ इत्यादि ॥ और नव दोहा करने को भाव यह है ॥ अंक को प्रमाण नवा

श्लोक सांकेत्यं पारिहास्यं स्तोभं हेलनमेव वा । वैकुंठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः ।।

माता ।। नहि कलि करम न भगति बिबेकू ।। राम नाम अवलंबन एकू ।। कालनेमि कलि
कपट निधाना ।। नाम सुमति समरथ हनुमाना ।। दो० ।। राम नाम नरकेसरी कनक
कसिपु कलिकाल ।। जापक जन प्रह्लाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ।। चौ० ।।
भाय कुभाय अनख आलसहूं ।। नाम जपैं मंगल दस दिस हूं ।। सुमरि सुराम
नाम गुन गाथा ।। कहौं नाइ रघुनाथहि माथा ।। कवि न होउं नहि बचन प्रबी
नो ।। सकल कला सब बिद्या हीनो ।। आखर अरथ अलंकृति नाना ।। छंद प्रबंध अ
नेक बिधाना ।। भाव भेद रस भेद अपारा ।। कवित दोष गुन बिबिध प्रकारा ।।
कवित बिबेक एक नहि मोरे ।। सत्य कहौं लिखि कागद कोरे ।। सूझ न एको अंग उ
पाउ ।। मम मति रंक मनोरथ राउ ।। मति अति नीच ऊंच रुचि आछी ।। चाहिये अमिअ जु
रे न हि छाछी ।। छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ।। सुनिहहिं बाल बचन चित
लाई ।। जो बालक कहि तोतरि बाता ।। सुनहि मुदित मन पितु अरु माता ।। हंसिहहि
कूर कुटिल कुबिचारी ।। जे पर दूषण भूषन धारी ।। निज कवित्त केहि लाग
न नीकी ।। सरस होइ अथवा अति फीकी ।। जे पर भनित सुनत हरषाही ।। ते बर

पुरबबहुतजगमाहीं॥जगबहुनरसरिसरिसमभाई॥जेनिजबाढ़िबढ़ैजलपाई॥सज
नसकृतसिंधुसमकोई॥देखपूरबिधुबाढ़ैजोई॥५५दो॥सठसेवककीप्रीतरुचरु
षिहैरामकृपाल॥उपलकीएजलजानजेहिंसचवसुमतिकपिभाल॥५६चौ॥प्र
भुप्रतापमहिमानीयजासा॥मोरसचौबडुपुरवैतासा॥लोकहुबेदससाहिबरी
ती॥बिनैसुनतपहिचानतप्रीती॥गुनीगरीबग्रामनरनागर॥पंडुतमुढ़
मलीनउजागर॥सुकविकुकविनिजमतिअनुहारी॥नृपहिसराहतसभनरना
री॥साधसुजानसुसीलनृपाला॥ईसअंसभवपरमकृपाला॥सुनसनमान
हिंसबहिसबानी॥भनतभक्तिनतिगतिपहिचानी॥यहप्राकृतमहिपालसुभा
ऊ॥जानसिरोमणिकौशलराऊ॥रीझतरामसनेहनसोते॥कोजगमंदमल
नमतिमोते॥५८दो॥हौंहुकहावतसबकहतरामसहितउपहास॥साहिबसी
तानाथसो॥सेवकतुलसीदास॥५९चौ॥अतिबडुमोरढिठाईखोरी॥सुनअ
घनरकहिंनाकसकोरी॥समझैसहिमोहिडरअपने॥सोसुधरामकीनसपन
हिंसपने॥सुनअवलोकसुचितचषचाही॥भक्तिमोरमतिस्वांमसराही॥

राम बा ९

९

17

कहत नसाइ होत हियँ नीकी॥ रीझत राम जानि जन जी की॥ रहित न राम (प्रभु) चेत चूक की
ए की॥ करत सुरत सै बार ही ए की॥ जेहि अघ बधेउ ब्याध (जिम) बाली॥ फिर सुकंठ
सोई कीन्ह कुचाली॥ सोई करतूत बिभीषन केरी॥ सपनेहुं सो न राम हिय हेरी॥ ते
भरतहि भेंटत सनमाने॥ राजसभा रघुबीर बखाने॥ पद दो॥ प्रभु तर तर कपि डार प
र ते किये आप समान॥ तुलसी कहुं न राम से साहिब सील निधान॥ ५४ दो॥ इहि बि
धि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिर नाइ॥ बरनौं रघुवर बिसद जस सुनि कलि
कलुष नसाइ॥ ५५ दो॥ राम निकाई रावरी है सबही को नीक॥ जो यह सांची है सदा त
उ नीको तुलसीक॥ चौपई॥ जे जन मे कलि कलि कराला॥ करतब बाइस बेष मराला॥
चलत कुपंथ बेद मग छाडे॥ कपट कलेवर कलमल भांडे॥ बंचक भक्त क
हि राम के॥ किंकर कंचन कोह काम के॥ तिन मो प्रथम रेख जग मोरी॥ धिग धरम
ध्वज धंधक धोरी॥ जे अपने अवगुन सब कहहूं॥ बाढै कथा पार नहि लहहूं॥ [illegible]
ताते मै अति अलप बखाने॥ थोरे महि जानहि सयाने॥ समझ बिबिध बिधि बि
नती मोरी॥ कोउ न कथा सुन दैहे खोरी॥ एतेहु पर करहहि जे संका॥ मोहि ते अधि

३

कां २

कजेम्हममतैरंके॥ रामसुस्वामकुसेवकमोसो॥ निजदिसदेखदयानिधिपोसो॥ जेहिजन

परममताअतिछोहू॥ जेहकरुनाकरकीननकोहू॥ गईबहोरगरीबनिवाजू॥ सर

लसबलसाहिबरघुराजू॥ मोरसुधारहिसोसबभांती॥ जासुकृपानहिकृपाअघा

ती॥ दोहा॥ भागछोटअभिलाखबड़करौंएकबिस्वास॥ पैहैंसुखसुनिसुजनसब

खलकरिहैंउपहास॥ दो॰॥ खलपरिहासहोइहितमोरा॥ काककहैंकलकंठकठो

रा॥ हंसहिबकदादुरचातकही॥ हंसहिमलिनखलबिमलबतकही॥ कबि

तनरसिकनरामपदनेहू॥ तिनकहंसुखदहासरसएहू॥ भाषाभनितभोरिमतिम

तिमोरी॥ हंसिबेजोगहंसेनहिखोरी॥ प्रभुपदप्रीतिनसामझनीकी॥ तिन्हहिक

थासुनिलागहिफीकी॥ हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी॥ तिनकहुंमधुरक

रघुबरकी॥ रामभगतिभूषितजियजानी॥ सुनिहैंसुजनसराहिसुबानी॥ भन

तभदेसबस्तभलबरनी॥ रामकथाजगमंगलकरनी॥ छंद॥ मंगल

करनकलमलहरनतुलसीकथारघुनाथकी॥ गतिकूरकबितासरितकीज्यों

सरितपावनपाथकी॥ प्रभुसुजससंगतिभनितभलहोइहैसुजनमनभावनी॥

रा॰ बा॰ १९

18

यहां प्रसाधौ प्रथम भरत के चरणा इह पाठ है तहां इह संका है कि फेर इहां प्र
थाकार॥ नमौ ... ॥ प्रथम पद किस हेतु ते दीया है उत्तर
इहां प्रथम पद कौ मुख्य अर्थ इह है सो श्री रघुवर कौ छोड त्रय भ्रातन मै भरत मुख्य है

...गगन ... सुजस बखानी ॥ ६५ ॥ सोरठा ॥ सकल सुमंगल मूल प्र
थम पचीसी प्रेममय ॥ सुनत सुमन सब मूल संसै सोच विमोचनी ॥ ६६ ॥ चौ ॥ बंदौं अ
वधपुरी अति पावन ॥ सरजू सरि कलि कलुष नसावन ॥ प्रणवौ पुर नर नारि बहो
री ॥ ममता जिन पर प्रभुहि न थोरी ॥ करहि कृपा सुत सेवक जानी ॥ जिनहि विरच
बड़ भए विधाता ॥ महिमा अवध राम पितु माता ॥ प्रणवौ परजन सहित बिदेहू ॥ जाहि
राम पद गूढ़ सनेहू ॥ जोग भोग मै राखौ गोई ॥ राम बिलोकत प्रगटौ सोई ॥ ६७ ॥ दो
भरत लखन रिपुदवन पद बंदि कहौं कर जोर ॥ आपने सील सुभाइ गुन ... सदा मो
रि ॥ ६८ ॥ चौ ॥ आकर चार लाख चउरासी ॥ जाति जीव जल थल नभ वासी ॥ सीय राममय सब जग
जानी ॥ करो प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ जानि कृपाकरि किंकर मोहू ॥ सभ मिल करो दया छल छोहू ॥
हेतु प्रसंन देहु बरदानू ॥ साधु समाज भनित सनमानू ॥ जो प्रबंध बुध नहि आदरही ॥
सो स्रम बादि बाल कवि करही ॥ कीरति भनित भूति भल सोई ॥ सुरसरि सम सब कहु हित
होई ॥ राम सुकीरति भनित भदेसा ॥ असमंजस अस मोहि अंदेसा ॥ तुमरी कृपा सुलभ सो मो
रे ॥ सीयन सुहावन टाट पटोरे ॥ ६९ ॥ दो ॥ तन विचित्र कहर बचन ... मन घोर ॥ तु
लसी ... ते सब कहे मोर ॥ ७० ॥ चौ ॥ कर उपाय ... सज जीय जानी ॥ वि
मल जस ... सुबानी ॥ ... समवानी ॥ प्रणवौ दीनबंधु

तुलसी रो मति भरत तें जन ... पाल॥ अत एव प्रथम प्रणवौ प्रथम भजन कौ साधु
न कौ दीन भीतर है ताके करता भरत है ताकौ प्रमाण चौ॰ विश्व भरण पोषण कर जोई ॥ ता
कर नाम भरत अस होई ॥ अत एव प्रथम श्रीराम के प्राप्त करणे मै मुख्य है ताकौ प्र॰ दो॰ ...
जन मन ... भरत ... राम ... सब करत कौ ...

जो ग्रवतरउ ... मम ... सदा सो सानुकूल रहउ मो पर कृपासिंधु ... गुणाकर ...
... दन पद कमल नमामि सुरस शील भरत ... नामी महावीर ... निवेदन ... माना राम ...
... बखाना सो प्रणवौ पवनकुमार खल बन पावक ज्ञान घन ... आगार बस
हि राम सर चाप धर चौ. कपिपति ... सा ... ... जे ... समाजा ... दोस ... वे ... च

हितकारी॥ सेवक स्वामि सखा सीया पी के॥ हित निरुपाधि सब बिधि तुलसी के॥ कलि बिलो
कि जग हित हर गिरिजा॥ साबर मंत्र जाल जिन सिरजा॥ अनमिल आखर अरथ न जापू॥
प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू॥ सो उमेस मो पर अनुकूला॥ करत कथा मुद मंगल
मूला॥ जे इहि कथहि सनेह समेता॥ कहिहै सुनिहै समुझि सचेता॥ होइहै राम
चरन अनुरागी॥ कलि मल रहित सुमंगल भागी॥ ११॥ दो॥ सपने हु साचे
मो पर जो हर गौरि पसाउ॥ तउ फुर होउ जो कहौं सब भाषा भनति प्रभाउ॥ १२॥
चौ॥ गुर गउरीश चरन नचि तुलाई॥ जासु कृपा मैं निर्मल मति पाई॥ सादर सुमिर
सीया रघुराऊ॥ सेवक कपि सचिव तमाति समाऊ॥ हर बहुरि गौरि हनुमान भवानी॥ क
हैं राम गुन ग्राम बखानी॥ सादर सबै नाउ अब माथा॥ बरनौं बिसद राम गुन गा
था॥ संमत सोरह सै इकतीसा॥ करौं कथा हरि पद धरि सीसा॥ नौमी भौम बार मधुमासा॥
अवधपुरी यह चरित प्रकासा॥ जेहि दिन राम जनम स्रुति गावहि॥ तीरथ सकल त
हँ चलि आवहि॥ असुर नाग खग नर मुनि देवा॥ आइ करै रघुनाइक सेवा॥ जन्म
महोत्सव रचहि सुजाना॥ करहि राम कल कीरति गाना॥ १३॥ दो॥ मज्जहि सज्जन बृंद
बहु पावन सरजू नीर॥ जपहि राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम शरीर॥ १४॥ चौ॥
दरस परस मज्जन अरु पाना॥ हरै पाप कहि बेद पुराना॥ नदी पुनीत अमित म

× लंका हनुमान जी सिय ... प्रात नसहु बध ना करो और सुग्रीव कपीस को पाछे बंद
ना को करके री उत्तर श्री हनुमान जी के प्रकरण तो ग्रंथकार विचित्र लिखे है॥ प्रथम
बालकांड के आदि में यह लिखा है कपीश्वर कपीश्वरो तो इहा कपीश्वर पद हनुमा

संका ग्रंथकार कारका है ठौर तातें से लिखे हैं कि कि कविन हौं उ औ का है ठौर कहे हैं
कि कवि तुलसी सो क्यों कर उत्तर येह दोनों ताकी दैन्यता में कहे हैं काहे तें कि जहां कवि
ने तहां भी यही ताकि ... यो प्र॰ शंभु प्रसाद सुमति हिये हुलसी रामचरितमानस कवि तुलसी ता

मरवर रामचरित को॥ जन्म राम सिय प्रीति सरत के॥ जस मानस मानस चख
चाही॥ भई कबि बुधि विमल अवगाही॥ भयो हृदै आनंद उछाहू॥ उमगेउ प्रे
म प्रमोद प्रवाहू॥ चली लोक वेद मति मंजुल कूला॥ नदी पुनीत सुमानस
नंदन॥ कलिमल तरवर मूल निकंदन॥ रचि महेश निज मानस राखा॥ पा
इ सो समा शिवा सन भाखी॥ ताते रामचरितमानस सर॥ धरेउ नाम हिये हेर ह
रष हरि॥ कहौं कथा सोई सुखद सुहाई॥ सादर सुनहु सुजन मन लाई॥ ११
दो॥ जस मानस जेहि विधि भयो जग प्रचार जेहि हेत॥ अब सोई कहौं प्रसंग सब सुम
र उमाबृषकेत॥ १८॥ चौ॥ शंभु प्रसाद सुमति हिये हुलसी॥ रामचरितमानस कवि
तुलसी॥ करउ मनोहर मति अनुहारी॥ सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी॥ सुम
ति भूमि थल हृदै अगाधू॥ वेद पुरान उदधि घन साधू॥ बरषै राम सुजस बर बा
री॥ मधुर मनोहर मंगलकारी॥ लीला सगुन जो कहै बखानी॥ सोई स्वछता करै
मल हानी॥ प्रेम भक्ति जो वरनन जाई॥ सोई मधुरता सीतलताई॥ सो जल सुकृत
सालि हित होई॥ राम भक्तिजन जीवन सोई॥ मेधा महि गत सो जल पावन॥ सकलि
श्रवन मग चल्यो सुहावन॥ भरेउ सुमानस सुथल थिराना॥ सुखद सीत रुचि चा

कविन तो भी इनको शंभु प्रसाद तें यथार्थ है अथवा इनके दो उपदेश यथा कवि
र्थ है जहां कविन बने तहां नम्रता है और जहां कविन बने तहां यथार्थ है काहे तें कि

महिमा जाति॥ कहि न सकै सारदा बिमल मति॥ राम धामदा पुरी सुहावन॥ लो
क समस्त विदित अति पावन॥ चार षान जग जीव अपारा॥ अवध तजैं तन न
हिं संसारा॥ सब बिधि पुरी मनोहर जानी॥ सकल सिधिप्रद मंगल षानी॥ बिम
ल कथा करि कीन अरंभा॥ सुनत नसैंहि काम मद दंभा॥ रामचरतमानस इह
नामा॥ श्रवन सुनत पायै विश्रामा॥ वकता संकर सकल सबानी॥ श्रोता मुनि ग
न मुष भवानी॥ राम भक्ति मन उमापुरारी॥ सीयाराम जस कलिमल हारी॥ स
जस विसद विहरत सब दुषन॥ वकता शेष गंग विधि भूषन॥ सुनै गौरथ
ल धीर वैस॥ सुभाय पयोनिधि वीचि विलास॥ मनति मोरि शिव कृपा विभाती॥ ससि
समाज मिलि मनहु सुराती॥ ७५॥ दो॥ पुष्प मसुर भै पय विसद अति गुन करै सुषा
न॥ गीरा ग्राम सीयाराम जस गावहिं सुनहिं सुजान॥ ७६॥ चौ॥ सुमर शिवा शिव
पाइ पसाऊ॥ वर्नौ रामचरत चित चाऊ॥ रामचरतमानस मन भावन॥ विरचो
शंभु सुहावन पावन॥ त्रिविध दोष दुष दारद दावन॥ कलि कुचाल कलि कलुष
न सावन॥ सुनत सप्रेम सपंथ बढावन॥ भक्ति विराग विवेक बढावन॥ मानस

जाती गोकाराङ्कृ जैसे सब गो जानिये महत होजाता है तैसे सब कविता राम जस मे पूर्ण है॥
बंदो राम नाम रघुवर को इदृश्य भिहै जो मंगलप्रद सो अर्थ समझना अवरेब कवत जाननो

रुचिराना ॥७९॥ दो॥ सठ सुंदर सोहा देवल बिरचो बिबुध बिचारि ॥ तेहि ह्रद पावन सुभग सर घाट मनोहर चार ॥८०॥ चौ॥ सप्त प्रबंध सुभग सोपाना ॥ ज्ञान नैन निर्खत मन माना ॥ रघुपति महिमा अगुन अगाधा ॥ बर्नों सोइ बर बारि अगाधा ॥ राम सीय जस सलिल सुधासम ॥ उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥ पुरइनि सघन चारु चौपाई ॥ जुगति मंजु मनि सीप सुहाई ॥ छंद सोरठा सुंदर दोहा ॥ सोई बहुरंग कमल कुल सोहा ॥ अर्थ अनूप सुभाव सुभासा ॥ सोई पराग मकरंद सुबासा ॥ सुकृत पुंज मंजुल अलि माला ॥ ज्ञान विराग विचार मराला ॥ धुनि अवरेब कवित गुण जाती ॥ मीन मनोहर ते बहु भांती ॥ सुकृती साधु नाम गुण गाना ॥ ते विचित्र जल विहग समाना ॥८१॥ दो॥ पुलक बाटिका बाग बन सुख सुविहंग विहार ॥ माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारि ॥८२॥ चौ॥ तप जप साधन सम जम जथा ॥ ते विचित्र खग विहंग विहारा ॥ जे ते उछाहे हैं ते तन बरित राजू ॥ अकथ अनूप म सकल समाजू ॥ अस मानस मानस चख चाही ॥ भई कवि बुधि विमल अवगाही ॥ भये हृदै आनंद उछाहू ॥ उमग्यो प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥ चली सुभग कविता सरिता सो ॥

२

रामबीमलजसजलभरितासो॥ सरजूनामसुमंगलमूला॥ लोकवेदमतमंज
लकूला॥ नदीपुनीतसुमानसनंदन॥ कलिमलत्रिनतरमूलनिकंदन॥ ती
र्थसतकपुनीतपचीसी॥ तेमबसगमसनंदनदीसी॥ ८३ दो॥ श्रोतात्रिविध
समाजपुरग्रामनगरदुहूकूल॥ संतसभाअनुपमअवधसकलसुमंगल
मूल॥ ८४॥ चौ॥ रामभगतिसुरसरितहिजाई॥ मिलीसुकीर्तिसरजूसुहाई॥ सा
नुजरामसमरजसुपावन॥ मिल्योमहानदसोनसुहावन॥ जुगविचभगतिदेवधु
निधारा॥ सोहतसहितसुविरतिविचारा॥ त्रिविधतापत्रासकमुहानी॥ रामसरूप
सिंधुसमुहानी॥ मानसमूलमिलीसुरसरहीं॥ सुनतसुजनमनपावनकर
हीं॥ विचविचकथाविचित्रविभागा॥ जनुसरतीरतीरबनबागा॥ उमामहेसवि
वाहवराती॥ तेजलचरअगनीतबहुभांती॥ रघुबरजनमअनंदबधाई॥ भवर
तरंगमनोहरताई॥ ८५॥ दो॥ बालचरितचहुबंधकेबनजविपुलबहुरंग॥
नृपरानीपरिजनसुकृतमधुकरवारिविहंग॥ ८६॥ चौ॥ सीयास्वयंबरकथासु
हाई॥ सरितसुहावनसोछबिछाई॥ नदीनावपटुप्रसनअनेका॥ केवटकुस
लउतरसविवेका॥ सुनअनुकथनपरसपरहोई॥ पथकसमाजसोहस

राम
२२

परबजोगजनुजुरेसमाजा

रसोई॥ घोरधार भृगनाथरिसानी॥ घाट सुबंध राम बर बानी॥ सानुज राम बिवाह उछाहू॥ सोसुभ उमग सुखद सभ काहू॥ कहत सुनत हरखहि पुलकाही॥ ते सुकृती मन मुदित नहाही॥ राम तिलक हित मंगल साजा॥' काई कुमति कैकेई केरी॥ परी जासु फल बिपति घनेरी॥ ८७॥ दो॰ समन अमित उतपात सब भरत चरित जप जाग॥ कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग॥ ८८॥ चौ॰ कीरति सरित छहु रितु रूरी॥ समय सुहावन पावन भूरी॥ हिम हिम सैलसुता सिव ब्याहू॥ सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू॥ बरनब राम बिवाह समाजू॥ सो मुद मंगल मय रितुराजू॥ ग्रीखम दुसह राम बन गवनू॥ पंथ कथा खर आतप पवनू॥ बरखा घोर निसाचर रारी॥ सुरकुल सालि सुमंगलकारी॥ रामराज सुख बिनय बड़ाई॥ बिसद सुखद सोई सरद सुहाई॥ सती सिरोमनि सिय गुन गाथा॥ सोई गुन अमल अनूपम पाथा॥ भरत सुभाउ सुसीतलताई॥ सदा एकरस बरनन जाई॥ ८९॥ दो॰ अवलोकन बोलन मिलन प्रीत परसपर हास॥ भायप भलि चहु बंधु की जल माधुरी सुबास॥ ९०॥ चौ॰ आरत बिनय दीनता मोरी॥ लघुता ललित सुबारि न थोरी॥ अदभुत सलिल सुनत गुनकारी॥ आस प्यास मनोमल हारी॥ राम सुप्रेमहि पोखत पानी॥ हरत सकल कलि कलुख गिलानी॥

हू

सु

वास

कल

मवसर्म सोषक तोषक तोषा ॥ समन कुपंत दुष दारन दोषा ॥ काम क्रोह मद मोह नसा
वन ॥ विमल विवेक विराग बढावन ॥ सादर मज्जन पान कीए ते ॥ मिटै पाप पर ताप हीये ते
जिन्ह यह वारि न मानस धोए ॥ ते कायर कलिकाल विगोये ॥ त्रिषत निरषि रवि कर भव वा
री ॥ फिर है मृगजिव जीव दुषारी ॥ ४१ ॥ दो ॥ मति अनुहारि सुवारि गुण गण गुन गन मन अं
न्हवाइ ॥ सुमिरि भवानी शंकरहि कहि कवि कथा सुहाइ ॥ ४२ ॥ दो ॥ रामचरित्र अनंत
गुन अमित कथा विसतार ॥ सुनि आचरज न मानिहहि जिनके विमल विचार ॥ ४३ ॥ चौ
रेवा तीर सुदेस सुग्रामा ॥ बसै विप्र इक शंकर नामा ॥ धर्मसील सुचि साधु सुभा
उ ॥ भक्त कुमार ग [illegible] घरे न काउ ॥ सुत विनीत पति रज कनारी ॥ गृह समाज
सम साज सुषारी ॥ रेवा मज्जन सज्जन सेवा ॥ प्रिय गुर अति थापित नरमदे देवा ॥ सु
जन शिरोमणि गुण गण गन गेहू ॥ शिव सेवक हरि चरन सनेहू ॥ सुनीये वेग मज्ञ गाम
विधि नाना ॥ रामायण इतिहास पुराना ॥ लोक चतुर परलोक सयाना ॥ जीवन ध
न हरि के गुन गाना ॥ स्वधर्म वर्न धर्म जग धर्मा ॥ करम विकर्म कुकर्म सुकर्मा
४४ ॥ दो ॥ ज्ञान विराग उपासना कर्म अनेक प्रकार ॥ शंकर सादर धर्म सब सुने वार
हि वार ॥ ४५ ॥ चौ ॥ सुनै पुनीत नृप मनि ग्यानी ॥ नरक सुरग गति पवर ग कहानी ॥ सब
हि न धर्म रहि सम धके रे ॥ पुंन प्रबोध विमल बड तेरे ॥ सकल सुसमाचार तसरत सु

हए ॥ सनेस सकल जे हत रह जग पाए ॥ जुग प्रसंग कलि कल सभाअ ॥ सुनेस सुनै सोच
मभीसरराअ ॥ मतैजनहरकहैकविसोशी ॥ कलिकुचालजगप्रगटनगोई ॥ कल
मलमलनसकलनरनारी ॥ वर्नधर्मनहिआश्रमचरी ॥ नीच भिरं कुसभेठ
रनपाला ॥ सचवसवारथीक्रूरकराला ॥ राजासरीसप्रजाउत्रमागी ॥ दुसहिदु
रतिदुषदारददागी ॥ ५[illegible] [illegible] दंभसहतसबधर्मकलछलसमेतविवहार ॥ सा
थीसहितसनेहसबरचे भ्रबुहरतग्रचार ॥ ५७ ॥ चौ ॥ द्विपरसमारगवंउनदेही ॥
वेचहिवेदधर्मदुहलेहीं ॥ हरिहरपरहरग्रजहिप्रेता ॥ सभासवेषकुचालनिकेता ॥
बोलतकेकौकरतवकागा ॥ वितहितहेमंजपजागा ॥ कहितकरतबटकर्मसजा
ना ॥ सेवाकपटकरिल्लेकुदाना ॥ रजनिपठतनसेइप्रवीना ॥ छलमलीनमनधन
आधीना ॥ वासरसोमपरातिसुरायी ॥ परजापकारपराइनपापी ॥ कलिइभ्रष्टि
धबुधविपरवियोगए ॥ मह विसीठि [illegible] बोए ॥ परिहिकुपजहिदिनहठ
यारे ॥ कहिमर [illegible] बलंबहिग्रंथविचारे ॥ ५८ ॥ दो ॥ धर्म
सतीर्थमंत्रसुरमथमहिदेवविचार ॥ तेफलकलिकीएग्रधमसबपसीजोगुहारसु
धारि ॥ ५९ ॥ चौ ॥ कहौछलमयकलिमलमेला ॥ बंचकविपरवेदप्रतकूला ॥ आप

राम
बा
१५

नेधर्मनि सुपनेचलीहिं ॥ समरस्मार सुरछलमलही ॥ नीचवीचारनीच विवहा
रा ॥ नीचजीवकानीचअचारा ॥ छत्रजातअभिमानजोलेही ॥ कर्मिमलेछजीतजसले
हीं ॥ स्त्रवसहाइसबलजगजेई ॥ छत्रसोजातकहावततेई ॥ तीसरवरनवसेश
वाकी ॥ समकरीजीवनजीवनजाकी ॥ सुलसुधनहिसुदसजाती ॥ सकलवर्नशंक
रउतपाती ॥ आश्रमसमधमसबसंन्यासी ॥ तहांकीनकलिकालनिवासी ॥ १०० ॥ दो ॥ ब
चनबबेकविरागमैमानसकलमलखानें ॥ मंडतमुंडकपाइपटदंडकमंड
लपान ॥ १०१ दो ॥ पिसुकलहिदुघ्यातकपीना ॥ समजमनेमकथादमहीना ॥
ब्रह्मकहावतब्रह्मनिरूपी ॥ जगबंचकवीहरतबहुरूपी ॥ वासरसाधहिजोग
समाधी ॥ भोगयराइनरातिउपाधी ॥ बोलनबेषहंसबगकरनी ॥ पंडितवहि
तजतीगतिवरनी ॥ परमसठपरमार्थबादी ॥ परमहंसबहुबेषबिसाधी ॥ पटे
विप्रविगरहिजतिहेता ॥ परमहंसपपपाइनसोता ॥ आश्रमनहिकलकाननि
वासी ॥ कुटलकुटीचरकलिमलिरासी ॥ बहुहतरहितसकलगुनखानी ॥ प
ठिगुनगुरगृहकरहकुचाली ॥ १०२ ॥ दो ॥ नीलकंठहिरंकसनिठुरसठपाटघो
रबहुगाल ॥ आश्रमवरनिविगोइसबगलगाजकलिकाल ॥ १०३ ॥ चौ ॥ गृहिगृह

त

राम
१५

श्रमधर्मविहीना॥ घर्निधामघनसोचमलीना॥ सुरगुरपितरज्ञातिघ्नअपवा
दी॥ स्वार्थरतपरमार्थबादी॥ कपटीकेलकुमारगगामी॥ कुधनकुधामकुमा
मनस्वामी॥ कुमतकुसीलकुजीवन[illegible]ही॥ सुरसरतीरकूपजलपिअही
करहजकर्मकर्ममनिबानी॥ चलहि[illegible]मपथज्ञानसुमानी॥ ज्ञवगनिज्ञवव
नज्ञघहिज्ञमायी॥ चलहिसुहतपलपावरपापी॥ ज्ञाश्रमवरनसुधर्ममल
नसे॥ जगनरकलहिमहिए नलनसे॥ घोरेबहुतकहुकहुकोशी॥ ज्ञाश्रम
हुतिपवरनपहिलोई॥१०३॥ दो॥ सकलधर्मविप्रीतकलिकलपतेकुपंथ॥ पुं
नपराइपहरबनदुरेपुरानसुग्रंथ॥१०४॥ चौ॥ निजनिजधर्मविमुषसबलो
ग॥ भोगहीनहतरोगवियोगा॥ छिमा[illegible]हीनपदपीनप्रकोपी॥ दिनादिनअंस
मउदतोसमलोपी॥ सतसनेहसीलसबबीने॥ समदमदानदयाजनरीते॥ ध
र्मबेचविषकलमलमाड़े॥ सबहि[illegible]जाइवेदपथघाडे॥ कर्मकलापउपास
नज्ञाना॥ जपतपतीर्थब्रतबहुदाना॥ चितहितसकलसदंभमहेतू॥ छलम
लनिधकलिकपटनिकेतू॥ कलउतपातहेहिबहुतेरे॥ अंमकंपनिरघात

दया

घनेरे॥ उलूकयातादिगदाविविशाला॥ निसिसमरे मद्दन केतु कराला॥ १०५ दो॥ क
ड़ीसरसर विमलजल मरतमलन सुघान॥ फूलहिं फलहिं कुसमै तरु सुचकाम्प्र
मनैघान॥ १०६॥ चौ॥ तिन कहँ फल दुसदु रै तदु कला॥ विविघव्याघ बसि प्रजाबि
हला॥ डीतभीतमन्हिं कहौ मलीना॥ फरहिं कु विटप सतरफल हीना॥ बटहिं
सुखसतु सुनाजसजोगा॥ बढैं कुवसतु कुदंबकुयोगा॥ विघावनजकु षीः
शिवाडी॥ निपट घोर फलसुमसम्राधिकाडी॥ अंनयपेनफलर सलघुस्वाद॥ पा
षु घोर खड़बाद बिबादा॥ येन घोर पैपै घृत घोरी॥ सबलसाधजगबलब
लजोरी॥ सुमति मेंत्रु असवद गुनलोपे॥ कपट मेंत्र विबकलमलरोपे वर
सहिंगउसरसालि सखाहीं॥ उलटी रीतसकलकल माहीं॥ १०७ दो॥ गंतूगृ
रगावार नृपजीवनमसम हपाल॥ समन दमन भेद कृत केवल दंभ क
राल॥ १०८॥ चौ॥ चोरचौरलघुलंपटलोभी॥ सचिव सभासचे मलमहिं कोमी
राजसरीस सबराजसमाजी॥ प्रजाविकलबडु राज विराजी॥ देसउजार नरेस
प्रताया॥ जरहिं जीवजगतीन हिं ताया॥ भूपति बेचक प्रजा समभागी॥ प्रजा जरे
ग्रहिनी गृघ जागी॥ प्रजा रोज मगाविहगा समाजा॥ राजाविकमबाघव

सब बाजा ॥ मह्यिपम्हदेत सुनिपूजा त्रकज्ञ ॥ पूजा कहै कब जाइ हराज्ञ ॥ राजा
प्रजा पर सपर खोटे ॥ जग जन महि कर कलि मलि मोटे ॥ मय हितकर देकु
चाल कले सा ॥ सह हि दुसह दुख देसवि देसा ॥ १०५ ॥ दो ॥ प्रीत सगाई सक
ल गुन बनज उपाइ अनेक ॥ कल बल छल कलि मल मलन डहव हि एक
हि एक ॥ ११० ॥ चौ ॥ बन कम सजन सासस नामा ॥ बोलन दाहन कर नीवां
मा ॥ उभेवर द हरि कर हि कुसाना ॥ जोत हि गो म ग सरसर नायो ॥ बाद बि
र दम हि दावर देही ॥ ते सब सभ निष्ठुर हरि लेही ॥ घर न धाम धन द
मविहीना ॥ प्रिय पर जन मय मान मलीना ॥ जसन बसन बिन बंध वियो
गी ॥ कुमति कुसाज कुरूप कुरोगी ॥ कल हि कुटि कठिन कटवादी ॥ फी
र हि विकल बेलला तवबादी ॥ नीद नबजाल सब सकीने ॥ सब सदगु
न कलमलि हरि लीने ॥ जार त भयी भनाथ अनागी ॥ सम नर नार जर हि
जठरागी ॥ १११ ॥ दो ॥ ठाकुर क्रूर कुसचिव बक पुर थनार अधीन ॥ गुर
वित हित सब सिषब समसर थवि वध प्रवीन ॥ ११२ ॥ चौ ॥ धनी कुलीन धनी

गुनसागर॥ धनी सौं सम भोति उजागर॥ विबुध बेद गर विपर विरोधी॥ धनी रजी बे
वाइय योधी॥ बिन धनि गुन गन गर है गलानी॥ सहै नीरादर दर दर धर ध
रमानी॥ धनी है तक है देव सकउ राती॥ नीच ऊपै वै बड़े सब माती॥ साध
सुजात सुसील सुजाना॥ बिन धंन तजन डुख देव नेधाना॥ कल केवल धन म
ल मलाशी॥ बुध बबेक बल बै नै बरसी॥ प्रीत सनेह सकार तन केशी॥ सम
पित मात बंधु गुर द्रोही॥ ते सपाप पंडे ते कलबादी॥ व कतालावर कवि
जेपवादी॥ ११३॥ दो॥ चोर चतुर बटपार भट प्रभ प्रिय भरवा भंड॥ सब भ
छक परमार्थी कलसपं थ पाखंड॥ ११४॥ चौ॥ सब कवि के वेद कुरन केता॥
साधक सिद्ध सधर्म सुचेता॥ हम सब मोंत बड़े सब छोटे॥ हम बिन खोर खरे
सब खोटे॥ सकल कहै हम सर सन दूजा॥ कोधी हमान है के कीहस जा॥ लो
क वेद मर्जाद विसारी॥ सम नर नारि सदा रुच कारी॥ बकता सब के सने
ह बानी॥ सब जाचक जगके अनदानी॥ सब सिष वे जग सुनै न केई॥ गु
र सिष अंध बदर सम सोरी॥ सुत पित मातें सुध बिन वियाहे॥ पुन रि प
हे डुनार मोंह चाहे॥ तीय वसत ने बस रहे सुरूरारी॥ पर हर लोक लाज कु
लेगारी॥ ११५॥ दो॥ काम धार नीकरक साध रि नार प्रधान॥ तीया गुन सील

धरि

बिहीन सब दुख बन दरत निधान ॥११६॥ चौ० बेद बाद जुत समागतिचोरी ॥ कठि
नि कर्म गति बोलत मोरी ॥ बेद बाम पथ नब सन बिसेषी ॥ सो मामान सुहा हे सदेषी
ईं दूत रकउ भे कलि जीते ॥ निज निज कर्म धर्म बिप्रीते ॥ गृह दिदरी दुज तीघन वा
ना ॥ नगर कूर गावार सुजाना ॥ बिप्र चर्म मनसमर घन धारी ॥ कुसील कपावन नी
च नर नारी ॥ बिपर कछोटी पहिर न नाही ॥ सूदर मदर भिन मजुन जाही ॥ जा
त पात बहु भेद अचारा ॥ एक बरन सम कीए बिहारा ॥११७॥ छंद ॥ समर कवर्न
विचार कीने केकै कुल कल मल मैडी ॥ बहुबेष बहु मत सेव सावाते से रसर
से वानडी ॥ सब जात जती जमात और दुज टल भूतम आवते ॥ जतिरो ब दोष नि
धान मानी बान पान अपावने ॥११८॥ सो० ॥ कलप बेदु पर चारि प्रबल पाप या
वन पतेत ॥ तुलसीउ भे अधार राम नाम सर सरि तजल ॥११९॥ चौ० ॥ सम आस
रा है सो बिशेषी ॥ श्रवन अगम कहु जो धन देषी ॥ कर प्रपंच एच बैपर घाती ॥
सो बडे धीरता सब बडे घाती ॥ कउ डेकर नेक है कुसाषी ॥ रिनि अराहै नक मरन
अभिलाषी ॥ सठ समती सेहू सी जवारा ॥ जीवन थोर दुरास अपारा ॥ सा चे

राम
बा
१९

बांत जे सभाव षानी ॥ हंस सहि लोक बड़ चक्र कजानी ॥ जहं होइ जप जाग प्रजु
ना ॥ विरत विवेक विविचन नाना ॥ कथ कीरतन साध समाजा ॥ तहं विशे
षकलि काल विराजा ॥ १२० ॥ दो ॥ सुरसर न तीर पधुर तै नैपट कुचाल कु
साज ॥ मनहु मवासे मर कलि राजत सहित समाज ॥ १२१ ॥ चौ ॥ विचहि गाइ वि
सा है है री ॥ उहग्गा सनैय सहगाने चेरी ॥ परि पुर पर घर सुर सर सेत ॥ दुरक
रहि तेज कीरत हेतु ॥ पशि हपै गंपक वहि निज गेषा ॥ चहहि सज स समथ चल
हि कुंपंषा ॥ करै सुरत रवेवहि छतरे ॥ निज घर वर हि बनावहि दुरे ॥ मल
विना सकहहि गत गंगा ॥ तल सहि हस हिरा है मंगा ॥ गुर पित मात साध
हि षुपेली ॥ तीर्थ चलै समाज स केली ॥ सष लस तीर्थ बन सर थाना ॥ ता हु तु
रकं कर हि समा नैं प्रीत प्रेतीत न काजु कि काजु ॥ सम ठगा चोर मह जन साजु ॥
१२२ ॥ दो ॥ मंदर मुर रति मलिन कल पान प्रधान विचार ॥ तेस व सार दुर प्रजी
तै पाल हि मति जनु हर ॥ १२३ ॥ चौ ॥ वेस म कै म रै माज धि काडी ॥ चड ज गवडु
चउ वेद व ज्ञाशी ॥ काल कर्म गन पलति समाजे ॥ लोक वेद व डै म कै प्रभाजे ॥ मा थे है
मल वडले काल मलीना ॥ जसे विचार हरै म कै प्रवीना ॥ जल यज्ञ न्य निक पनजा ही

राम
१९

ले

वस भागवत लग्ने यास्यानी जिमिमा धरी
रसाल समानी।

गल

33

रहै सफल लघु रूप समाई ॥१२४ दो॥ तुलसी कानन साधु मन गुरव द
प्रेम प्रनाम ॥ भरत चरत सुर सरत जलराम मभक्ति विश्राम ॥१२५॥ चौ॥ अ
मल भक्ति फल अमल अनेक ॥ लषहि विमल जन विमल विवेक ॥ भ
क्ति वसे षभक्ति विसरामा ॥ ते घोरे जग जल घनलामा ॥ भक्ति निवास भ
क्ति जन देखी ॥ कलहि सकुच संताप विशेषी ॥ भक्ति मान कलि कलव उ
लुकौं सोच प्रपंच विलोकति दुका ॥ भक्ति वास सब सकस माना ॥ वाम दे
त कलि कपट स्याना ॥ राम भक्ति के कुंकुदे चारी ॥ गयघन अमान अमल
अविकारी ॥ तेमहि मंडल मंगल रूपा ॥ प्रीत राम पद अचल अनूपा ॥ ति
न कहु कल कतजग सम साजू ॥ सकत नसव दय पाज म राजू ॥१२६ दो॥
जे हरि भक्ति कहहि जगावित नहि तकर तकुपेर ॥ दंभ कपट पावे दुम ट
प ठेकी एकरि जेर ॥१२७ चौ॥ ते कलि वसि बहु नाच हि नाचा ॥ भलन बो
लहि सपने हु साचा ॥ तिलक वचेउ मनोहर माला ॥ वसन विभूषन बच
न रसाला ॥ भिलत मधुर गावत मदवानी ॥ करम कठन नहि जातव वानी ॥

गुढ गरब गाघ ज्ञव गान गए॥ राम प्रेम परमार्थ लूए॥ देव पैत्र मरी देव विरोधी॥
मोह लोभ मद बसे लंपट क्रोधी॥ ज्ञान वैरा गमने ते जर मरही॥ ज्ञान धर्म मद बनै धर्म
परिहरही॥ तजै सकर्म सकल रीत सरूडी॥ कलप कुपंथ कुचाल चलाही॥ थान पान
करि थोर विचारा॥ एक द्रसहि बस ऐसेष गृहता सा॥१२८॥ दो॥ बडे भक्ति जे जगति गुरु तउ
पदेस हि सब कहु हि॥ सर्व समग्र रहि सम रपन ज्ञाव ले ऊ जन म कहि लाऊ॥१२९॥ चौ॥
हिंदू तुरक नार नर ही जा॥ सब कोदे रस मे उम्मैं जा॥ बेचहरि हरै नाम नगी
ना॥ लोल पले हर विषय पकेट पीना॥ वेद पुरान भागवत गीता॥ पठ गुन क
हे गर्थ विप्रीता॥ साधु नस नार घनी व पै हो ही॥ गुरु षार्थ परमार्थ सोही॥
वेद वचन हरि भक्ति विराजा॥ हि सै ऊ ता मै कलि साहि समाजा॥ पांकर ना
मसु चेत मर जाही॥ सेव त जव कै सजनन मपै राही॥ वित हित तंग मंगा
के बासी॥ वित विन घोह लग आव हि कंसी॥१३०॥ दो॥ उपदेस कज्ञाचरन ज्ञस
पठहि सन हि सद गुंथ॥ तिन उपदेसे नार नरि कहि न चालहि कुपंथ
॥१३१॥ चौ॥ जो गुर बडे नीच उपदेसे॥ कालपाइ पछताइ ठगे से॥ गर गुन दी
येन सब गुन गांठी॥ पाछे बीचेत मह डी ठाठी॥ विन वित भक्ति न भक्ति सुहाही॥

सब संताप सोच मन माहीं ॥ बहुत तउ पाइ कीये घन लागी ॥ दिन दिन दुनी दुरासा
देलागी ॥ सुमति नसी [illegible]ने न सम सम सीर्ष अ ॥ दिन दिन सब हित मीत बटाअ ॥ लोइ न
क्षी बन जबिनु सेवा ॥ गए एकु दे स मए गुदेंवा ॥ सीपीक लइ बडे गुर केरे ॥
कपट
कर कल दंभ बहु तेरे ॥ १३२ ॥ दो ॥ जि हरि ब घट्ट है के जाप मुर सहंस मांति सोई
रीत ॥ करी प्रपंच बेचक सब हित दुरीतन कर तजन नीत ॥ १३३ ॥ चौ ॥ सद्धनम
धर्म नारि नर मोरे ॥ लोक बेद मति सूमजे धोरे ॥ ते करि सीव सकल ज्ञ प
नाइ ॥ कलप भक्ति मय बचन सुनाए ॥ गुर बिमूढ सीष नि पट कुमेधा ॥ जुरा
समाज बाम भए बेद्या ॥ सो बिध कहै हैं जानि है जो भावा ॥ सोई नि षेध जो ईन है हे
इ भावा ॥ जप गए गुर दीए बिगारे ॥ बात लबा नर बी की मारे ॥ सो बुवनी ज्ञ
कुचाली के हमांती ॥ ए कपोत जेव हि सचजाती ॥ केर चमार गौंड गुर देवा ॥
तिनकी करहि मही सुर सेवा ॥ मन्नहि जब हित जि जात तजने ऊ ॥ तब सराहि हि पि
ष करशी ते ऊ ॥ १३४ ॥ दो ॥ साधी सब दी दोहरा कहि है कहि नीउ पबान ॥ भक्ति पि
रूपन भक्ति कलि निंद तबे द पुरान ॥ १३५ ॥ चौ ॥ नाम सुनाम बाम पथ गामी
कायर कूर कुतर की कामी ॥ सकल सुमार गनिंद कमेदा ॥ कुल कुठ रकी व

राम
बा
२०

नरकुलबंस ॥ कलपाषंड प्रचंड प्रचारा ॥ संड मंड सब छिद्र बिबरारा ॥ भक्ति
कहा हिरण्याख्य नबेरे ॥ देषत को मलकर्म कहे रे ॥ भक्ति नाहिं बैरी भक्ति वि
हीना ॥ दंभनिधान प्रपंच प्रबीना ॥ लोक हि बेद भक्ति पथ भो ॥ जिनके जी
ए लाग सो ऊखोटा ॥ तिन के करत बके मकहि जाही ॥ एक हिं संक मलाही
नाही ॥ कहित सकल कलिकाल कुचाली ॥ बैठ कथा हों मीर बाली ॥ ९६ ॥ दो
तेहते कहीं सहेत कलिकथा समास समेत ॥ सनि सदंभसठ सकुच है सेइ
स्वजन सचेत ॥ ९७ ॥ चौ ॥ कलिगुनि कहै समति जन हारी ॥ सभो जन भेजेड
दुखारी ॥ कलियुग मानस पातक नाही ॥ पुंनि पुनीत मनोर्थ माही ॥ वाच कया प
जाहि पछताने ॥ शिवसुमरत सर सर्पतर्न नौ ॥ कारक कलुष कठन
कलिकाला ॥ सदफल है पर नाम कराला ॥ पुंन संसर्ग दोष कलि घोरा ॥
करतहि कहि गति छोन कठोरा ॥ करिए जो संगु समान सलोभा ॥ जान ब
हहि करता मनस सोभा ॥ हरि शंकर हि माय भजि मोरा ॥ पावहि सजन सु
फल श्रम घोरा ॥ जो कलिकाई धर्म रत ते सेई ॥ फलीये स साधन सिद्धइ सो
ई ॥ ९८ ॥ दो ॥ ज्ञान दान सम मज्जन मय निरूढ हद भेदि ध्यान ॥ तप तीर्थ सरस
वा

२०
राम
२

रतजल्लदर्सनमज्जनपान॥१३९॥चौ॥कलिकेवल्लपरमार्थहेतू॥रामनामभवसा
गरसेतू॥साधनतासप्रसिद्धफल्लनासू॥जेहिप्रीततातेहिविधवासू॥कृतयुगजोगती
ज्ञगासमाधी॥त्रेताकर्मधर्मनिर्योधी॥द्वापरेहरिपदपूजसप्रीती॥पापैहिपर
मैतिनरजगजीती॥कल्लजपनामसरुचेविस्वासा॥सोफल्लसल्लभगैन्यासा॥ते
सुकृतीसुचेसाधसुज्ञाना॥सदगुनसागरसील्लनिधाना॥जेहरिनामजपहिरे
नराती॥प्रीतप्रतीतसमेतसमाती॥रामभगतचहुजगभारी॥कलवशेषपदइक
फलचारी॥१४०॥दो॥जथाभूमसबबीजमयनखतनिवासअकास॥रामकामसब
धर्ममयजानततुलसीदास॥१४१॥चौ॥यहिविस्वासुजासजीयनाही॥ज्ञानबजार
जातजगमाही॥धर्मक्षीनकलियाततनैपीना॥जथाठोलघुनैसनैनबीना॥विचविच
होइहकल्लद्रुमनाशी॥पुंनैसील्लपुन्मीपतिपाशी॥चहुजगकाल्लमयपाननहरी
होसत्तमंगल्लमंगलकारी॥नपजाधीनकालगुनदोषा॥लोकवेदमतितातेहिन
घोषा॥भएबेनमहिषादिकराजा॥पुंनिकासिकलिकाल्लबिराजा॥विक्रमादित्यवनीप
कलिजाए॥कृतत्रेतासमधर्मचलाए॥कालचालमहिपालअधीनी॥कहतपुरा
वेदनीतप्रवीना॥१४२॥दो॥जथमसमलपावनपवनपाइकुसंगससंग॥कहिमकु

लै

वास सवास ते मकाल महि सप्रसंग ॥१४२॥ चौ॰ ॥ संकर काल चासु मी देखी ॥ दिन
दिन बढ तबिबाद बसेषी ॥ विप्रजन्म ग्रह मार विशाला ॥ कर्म भूमि सं कलि काल
कराला ॥ सब विधि भांति मन संषय दुपोषा ॥ समर संभ शिव शोक सोचा ॥ कृशातन
नीद भख मशी घोरी ॥ गृह कृतकर तहि तमति भोरी ॥ पागत बागत सोवत सम
पने ॥ सुमरि शिवहि सोचति मनि जपने ॥ विन सुमर सुमर जग मत तन लाघा ॥ ग
यो ज्ञो ऋषि प्रलोकन साधा ॥ खेलत खात बालपन बीता ॥ भयो तरुन तन भीम न जीता ॥ ब
ढत बपसुख तिब ढत दुरासा ॥ वृध्द वृषे कबल तेज हुरासा ॥१४४॥ दो॰ ॥ हम हम
र मविचारि ब[illegible]ड भूम भार छपी सीस ॥ हठ सठ परसू भये जे मकीर केस हम
कीस ॥१४५॥ सो॰ ॥ कहि शंकु मति सत वेद पुरान विचार सब ॥ द्वै जानकी कंत
तब छूटे संसार भय ॥१४६॥ सो॰ ॥ जब विनवो मन तोहि होहि राम पद कमल र
त ॥ नय ध्यान भेर उ मोहि सन उपकाव तपर महित ॥१४७॥ दो॰ ॥ इहि विधि सब गु
न दोष कहि बहु रस बहि सिर नाइ ॥ वरनो रघुपति विसद जस सनि कलि कलु
ष नसाइ ॥१४८॥ चौ॰ ॥ जागबल्क जो कथा सुहाई ॥ भारद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥
कहिहैं सोई संबाद बषानी ॥ सुनहु सुजन सुख मानी ॥ संभ कीन यहि चरत सुह
वा ॥ बहुर कृपा करि उमहि सुनावा ॥ सोई शिव कागभुसुंडहि दीना ॥ राम भ

राम बा॰ २१

२१

मन आति

क्रिअधिकारी चीन्हा॥ तेहि सन जागबलिक पुनि पावा॥ तिन पुनि भारद्वाज प्रति गावा॥
ते श्रोता बकता समसीला॥ सवदरसी जानहि हरिलीला॥ जानहि तीनि काल निज ग्या
ना॥ करतल गति आमलक समाना॥ अउरउ जे हरिभक्त सुजाना॥ कहै सुनै समझै बि
धि नाना॥१४९॥ दो॰ मै पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत॥ समझी नहि तब बा
लपन तब अति रहेउ अचेत॥१५०॥ दो॰ भारद्वाज जेहि प्रसन कीया जागबलिक मु
नि पाइ॥ प्रथम मुख्य संबाद सोइ कहिहैं हेतु बुझाइ॥१५१॥ चौ॥ भारद्वाज मुनि बसहि
प्रयागा॥ तिन रामपद अति अनुरागा॥ तापस सम दम दया निधाना॥ परमारथ प
थ परम सुजाना॥ माघ मकरगत रबि जब होई॥ तीरथपतिहि आव सभ कोई॥ देव द
नुज किंनर नर स्रेनी॥ सादर मजहि सकल त्रिबेनी॥ पूजहि माधव पद जलजाता॥ प
रसि अखैबटु हरषहि गाता॥ भारद्वाज आश्रम अति पावन॥ परम रम्य मुनिब
र मन भावन॥ तहाँ होइ मुनि रिषि समाजा॥ जाहि जे मजन तीरथ राजा॥ मजहि प्रा
त समेत उछाहा॥ कहहि परसपर हरिगुन गाहा॥१५२॥ दो॰ ब्रह्म निरूपन धर्म बिधि
बरनहि तत बिभाग॥ कहहि भक्ति भगवंत की संजुत ग्यान बैराग॥१५३॥ चौ॥ इहि प्रका
र भरि माघ नहाही॥ पुनि सब निज निज आश्रम जाही॥ प्रति संबत अति होइ अनंदा॥
मकर मजि गवनहि मुनिब्रिंदा॥ एक बार भरि मकर नहाए॥ सभ मुनीस आश्रम

त्रि स

सि धाए॥ जागबलिक मुनि परम बिबेकी॥ भारद्वाज राषे पद टेकी॥ सादर चरन सरोज प-
षारे॥ अति पुनीत आसन बैठारे॥ करि पूजा मुनि सुजस बषानी॥ बोले अति पुनीत
मृदु बानी॥ नाथ एक संसउ बड़ मोरे॥ करगत बेद तत्व सब तोरे॥ कहत सो मोहि लागत
भय लाजा॥ जौं न कहौं बड़ होइ अकाजा॥ १५४॥ दो॥ संत कहैं असि नीति प्रभु श्रुति पु-
रान मुनि गाव॥ होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन कीयें दुराव॥ १५५॥ चौ॥ अस बि-
चारि प्रगटौं निज मोहू॥ हरहु नाथ करि जन पर छोहू॥ राम नाम कर अमित प्रभावा॥
संत पुरान उपनिषद गावा॥ संतत जपत संभु अबिनासी॥ शिव भगवान ग्यान गु-
न रासी॥ आकर चारि जीव जग अहहीं॥ काशी मरत परम पद लहहीं॥ सोपि राम म-
हिमा मुनिराया॥ शिव उपदेश करत करि दाया॥ राम कवन प्रभु अवधेस कुमारा॥
जिनकर चरत विदत संसारा॥ नारि बिरह दुष लहेउ अपारा॥ भयो रोष रवन मे-
न मारा॥ १५६॥ दो॥ प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि॥ सत्यधाम सर्ब-
ग्य तुम कहहु बिबेक बिचार॥ १५७॥ चौ॥ जैसे मिटै मोर भ्रम भारी॥ कहहु सो कथा नाथ
बिस्तारी॥ जागबलिक बोले मुसकाई॥ तुमहि बिदित रघुपति प्रभुताई॥ राम भक्ति
तुम मन क्रम बानी॥ चतुराई तुम्हारि मैं जानी॥ चाहहु सुनै राम गुन गूढा॥ कीन्हेउ
प्रस्न मनहु अति मूढा॥ तात सुनहु सादर मन लाई॥ कहौं राम की कथा सुहाई॥

महामोहमहिषेसबिसाला॥ रामकथाकालकाकराला॥ रामकथाससिकि
रनसमाना॥ संतचकोरकरहितेहपाना॥ ऐसेहीसंसैकीनभवानी॥ महादेवत
बकहाबषानी॥ १५८ दो॥ कहौसुमतिअनुहारअबउमासंभसंबाद॥ भयोस
मयजिहहेतअबसुनिमुनिमिटहिबिषाद॥ १५९ चौ॥ एकबारत्रेताजगमाही॥
संभगएकुंभजरिषपाही॥ संगीसतीजगजननभवानी॥ पूजेरिषअषलेस
रजानी॥ रामकथामुनिवरजुबषानी॥ सनीमहेसपरमसुषमानी॥ रिषपूछी
हरिभक्तिसुहाई॥ कहिसंभअधिकारीपाई॥ कहतसुनतरघुपतिगुनगाथा
कछुदिनतहारहेगिननाथा॥ मुनिसनविदामांगतिपुरारी॥ चलेभवनसं
गदछकुमारी॥ तिहअवसरभंजनमहिभारा॥ हरिरघुबंसलीनअवतारा॥
ताहिसमयरामकरुनाकर॥ संगिसीतालछमनसेदूबर॥ पिताबचनतजिरा
जउदासी॥ दंडकबनविचरतअबिनासी॥ १६० दो॥ हृदैविचारतजातहरिके
हबिधदरसनहोइ॥ गुपतरूप [illegible] अवतरेउप्रभुगएजानसभकोइ॥
१६१॥ सो॥ संकरउरअतछोभसतीनजानेमरमसो॥ तुलसीदरसनलोभ
मनउरलोचनलालची॥ १६२ चौ॥ रावनमरनमनुजकरजाचा॥ प्रभवि

राम
बा
२३

धबचनकीनचहिसाचा॥ जउनहिजावरहैपछुतावा॥ करतविचारनबनतब
नावा॥ इहबिधिभएसोचवसईसा॥ तेहीसमैजाइदससीसा॥ लीननीचमारीच
हिसंगा॥ भयोकपटसोशीतुरकुरंगा॥ करीछलमूढहरीवैदेही॥ प्रभप्रभाउ
तसविदतनतेही॥ मगवधिबंधसहितहरिआए॥ आश्रमदेषनैनजल
छाए॥ विरहविकलनरइवरघुराई॥ षोजितविपनफिरतदोऊभाई॥ कब
हुजोगवियोगनजाके॥ देषाप्रगटविरहदुषताकै॥ १६३ दो॥ अतिविचत्ररघ
पतीचरितजानहिपरमसुजान॥ जेमतिमंदविमोहबसहृदैधरैकछुआन
१६४ चौ॥ संभसमयतेहरामहिदेषा॥ उपजाहीऐअतिहरषविशेषा॥ भरि
लोचनछबिसिंधनिहारी॥ कुसमयजाननकीनचिन्हारी॥ जयसचिदानंदज
गपावन॥ असकहिचलेउमनोजनसावन॥ चलेजातशिवसतीसमेता
पुनिपुनिपुलकतकृपानिकेता॥ सतीसुदशंभकीदेषी॥ उरउपजासंदेहविशे
षी॥ शंकरजगतबंधजगदीसा॥ सुरनरमुनिसभनावहिसीसा॥ तिननृप
सुतहिकीनप्रनामा॥ कहिसचिदानंदपरधामा॥ भएमगनि[illegible]छबिता
सविलोकी॥ अजऊप्रीतउररहितनरोकी॥ १६५ दो॥ ब्रह्मजोव्यापकविरजअ
जअकलअनीहअभेद॥ सोकहिदेहधरिहोइनरजाहिनजानतवेद॥ १६६॥

२३

चौ॥ विष्नजोसुरहितनरतनधारी॥ सोऊसर्बग्यजथात्रिपुरारी॥ खोजैसोकि
मग्यइवनारी॥ ज्ञानधामश्रीपतिअसुरारी॥ संभगिरापुनिम्रिषानहोई॥
शिवसरबग्यजानसभकोई॥ असंसैमनभयोअपारा॥ होइनह्रदैप्रबो
धप्रचारा॥ यदयप्रगटनकहेउभवानी॥ हरअंतरजामीसभजानी॥ सुनहि
सतीतवनारसुभाऊ॥ संसैअसनधरियमनकाऊ॥ जासकथाकुंभजरिषगा
ई॥ भगतिजासमैंमुनिहिसुनाई॥ सोइममइष्टदेवरघुबीरा॥ सेवतजाहिस
दामुनिधीरा॥१६७॥ छंद॥ मुनिधीरजोगीसिधसंततबिमलमनजेहध्याव
ही॥ कहिनेतनिगमपुरानआगमजासकीरतिगावही॥ सोइरामब्यापकब्र
ह्मभवननिकाइमायाधनी॥ अवतरेउअपनेभगतहितनिजतंत्रनितरघुकु
न
लमनी॥१६८॥ सो॥ लागनउरउपदेसजदपिकहेउशिवबारबहु॥ बोलेबि
हसिमहेसहरिमायाबलजानिजीयहि॥१६९॥ चौ॥ जोतुमरेमनअतिसंदेहू॥
तौकिनजाइपरीछालेहू॥ तबलगीबैठअहेउबटछाही॥ जबलगितुममैहो
मोहिपाही॥ जैसेजाइमोहिभ्रमभारी॥ करऊसुजतनबिबेकबिचारी॥ चली
सतीशिवआइसपाई॥ करैविचारकरौकाभाई॥ इहांसंभअसमनअनुमाना॥

राम
बा
२५

दछिसुताकहुनहिकल्याना॥मोरेकहेनसंसैजाही॥विधिविप्रीतभलाईनाही॥होइ
हिसोजोरामरचिराषा॥कोकरतरकबढावैसाषा॥असकहिलगेजपनहरिनाम
गईसतीजेहप्रभुसुषधामा॥१२०॥दो॥पुनिपुनिह्रदेविचारकरिधरिसीताकारू
प आगेहोइचलिपंथतेहजेहआवतिनरभूप॥१२१॥चौ॥लछमनदीषउमाकृ
तिवेषा॥चकितभएभ्रमह्रदेविशेषा॥कहिनसकैकछुअतिगंभीरा॥प्रभुप्रभाउ
जानतमतिधीरा॥सतीकपटजान्योसुरस्वामी॥सबदरसीसवअंतरजामी॥सुम
रतजाहमिटैअग्याना॥सोईसर्वग्यरामभगवाना॥सतीकीनचहतहदुराऊ॥नि
जमायावलह्रदैवषानी॥वोलेविहसरामम्रदवानी॥जोरपानप्रभुकीनप्रना
म॥पितासमेतलीननिजनाम॥कहेउवहोरकहांव्रषकेतु॥विपनअकेल
फिरहुकिहहेतु॥१२२॥दो॥रामबचनम्रदगूढसुनिउपजाअतिसंकोच॥
सतीसभीतमहेसपहिचलीह्रदैवडसोच॥१२३॥चौ॥मैसंकरकरकहनमा
ना॥निजअग्यानरामपरिआना॥जाइउतरअबदेहौकाहा॥उरउपजाअतिदार
नदाहा॥जानारामसतीदुषपावा॥निजप्रभाउकछुप्रगटजनावा॥सतीदीष
कौतकमगजाता॥आगेरामसहितश्रीभ्राता॥फिरचितवापाछेप्रभदेषा॥स
हितबंधसीयासुंदरवेषा॥जहचितवेतहप्रभआसीना॥सेवहिसिद्धमुनीसप्र

राम
२५

कीना॥ देखे शिव विधि विष्नु अनेका॥ अमीत प्रभाउ ऐक ते ऐका॥ बंदत चर्न करत प्र
भ सेवा॥ विविध वेष सब देखे देवा॥१७४॥ दो॥ सती विधात्री इंद्रा देखी अमीत अनूप॥
जेह जेह वेष अजादि सुर तेह तेह तन अनरूप॥१७५॥ चौ॥ देखे जेह तह रघुपती
जेते॥ शक्तिन सहत सकल सुर तेते॥ जीव चराचर जे संसारा॥ देखे सकल अनेक प्र
कारा॥ पूजहि प्रभहि देव बहु बेषा॥ राम रूप दुसर नहि देषा॥ अवलोके रघुपति ब
हुतेरे॥ सीता सहित न बेष घनेरे॥ सोई रघुपति सोई लछमन सीता॥ देषि सती
अति भई सभीता॥ हृदे कंप तन सुध कछु नाही॥ नेन मूद बेठी मग माही॥ बहुरि
विलोको नेन उघारी॥ कछु न दीष तेह दछकुमारी॥ पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा॥
चली तहां जहां रहे गीरीशा॥१७६॥ दो॥ गई समीप महेस तब हस पूछी कुसलात॥
लीन परीछा कवन बिध कहहु सति सब बात॥१७७॥ चौ॥ सती समझ रघुबीर प्र
भाऊ॥ भय वस शिव सन कीन दुराऊ॥ कछु न परीछा लीन गुसांई॥ कीन प्रनाम तु
मारे न्यांई॥ जो तुम कहा सो मृषा न होई॥ मोरे मन प्रतीत अति सोई॥ तब शंकर
देषो धरि ध्याना॥ सती जो कीन चरित सब जाना॥ बहुर राम माया सीर नावा॥
प्रेर सतिह जेह झूठ कहावा॥ हरि इछा भावी बलवाना॥ हृदे विचारत शंभ सु
जाना॥ सती कीन सीता कर बेषा॥ शिव उर भयो विषाद विशेषा॥ जो अब करो स

तौ सन प्रीती ॥ मिटै भक्ति पथ होइ अनीती ॥ १७८ ॥ दो ॥ परम पुनीत न जाइ तजि कीएं प्रेम
बड़ पाप ॥ प्रगट न कहत महेस कछु हृदै अधिक संताप ॥ १७९ ॥ चौ ॥ तब संकर प्रभ
पद सिर नावा ॥ सुमरत राम हृदै अस आवा ॥ इह तन सतिहि भेट मोहि नाही ॥ शिव सं
कल्प कीन मन माही ॥ अस विचार संकर मतिधीरा ॥ चले भवन सुमरत रघुबीरा ॥
चलत गगन भै गिरा सुहाई ॥ जय महेस भल भक्ति दृढाई ॥ अस पन तुम बिन करै
को आना ॥ राम भक्त समर्थ भगवाना ॥ सुन नभगिरा सती उर सोचा ॥ पूछा सिवहि स
मेत सकोचा ॥ कीन कवन पन कहहु कृपाला ॥ सतधाम प्रभ दीनदयाला ॥ जदपि सती
पूछा बहु भांती ॥ तदपि न कहिओ त्रिपुरआराती ॥ १८० ॥ दो ॥ सती हिए अनुमान कीय
सब जान्यों सर्बज्ञ ॥ कीन कपट मै संभ सन नार सहज जड अज्ञ ॥ १८१ ॥ सो ॥ ज
ल पय सरस बिकाइ देख प्रीत की रीत भलि ॥ बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई
परत पुनि ॥ १८२ ॥ चौ ॥ हृदै सोच समझत निज करनी ॥ चिंता अमित जाइ नहि ब
नी ॥ कृपा सिंध शिव परम अगाधा ॥ प्रगट न कहिओ मोर अपराधा ॥ संकर
रुख अवलोकि भवानी ॥ प्रभ मोहि तजो हृदै अकुलानी ॥ निज अघ समझ न
कछु कहि जाई ॥ तपै अवा इव उर अधिकाई ॥ सतिहि ससोच जान बृषकेतू ॥
कही कथा सुंदर सुख हेतू ॥ बरनत पंथ बिबिध इतिहासा ॥ बिस्वनाथ पहुचे कै

लासा॥ तिन्ह पुनि शंभ समुझ्य पन आपन॥ बैठे बट तर करि कमलासन॥ शंकर
सहज सरूप संभारा॥ लागि समाधि अखंड अपारा॥ १८३॥ दो॥ सती बसै कैलास
तब अधिक सोच मन माहि॥ मरम न कोउ जान कछु जुग सम दिवस सिराहि॥
१८४॥ चौ॥ नित नव सोच सती उर भारा॥ कब जैहैं दुख सागर पारा॥ मैं जु कीन र
घुपति अपमाना॥ पुनि पति बचन मृषा करि जाना॥ सो फल मोहि बिधाता दीना॥ जो
कछु उचित रहा सोइ कीना॥ अब बिधि अस बूझिय नहि तोही॥ संकर बिमुख जि
आवसि मोही॥ कहि न जाइ कछु हृदै गिलानी॥ मन महु रामहि सुमर सयानी॥ त
उ प्रभु दीनदयाल कहावा॥ आरति हरन बेद जस गावा॥ तउ मै बिनै करौ करि जोरी॥
छुटै बेगि देह यह मोरी॥ जो मोरे शिव चर्न सनेहु॥ मन कर्म बचन सत ब्रत एहु॥
१८५॥ दो॥ तउ समदरसी सुनिय प्रभु करो स बेगि उपाइ॥ होइ मरन जेहि बिनै श्रम
दुसह बिपति बिहाइ॥ १८६॥ चौ॥ इहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी॥ अकथनीय दार
न दुख भारी॥ बीते संबत सहस सतासी॥ तजी समाधि संभु अबिनासी॥ राम नाम

शिव सिमरन लागे॥ जान्यो सती जगतपति जागे॥ जाइ संभु पद बंदन कीना॥ सनमुष
संकर आसन दीना॥ लगे कहन हरि कथा रसाला॥ दछ प्रजेस भए तिह काला॥ देषा बि
धि बिचार सभ लाइक॥ दछहि कीन प्रजापति नाइक॥ बड अधिकार दछ जब पावा॥
अति अभिमान हिरदे तब आवा॥ नहि कोउ अस जनम्या जग माही॥ प्रभुता पाइ जाहि मद
नाही॥ ६०॥ दो॥ दछ लए मुनि बोलि सब करन लगे बड जाग॥ नेवते सादर सकल सु
र जो पावत मष भाग॥ ६०॥ चौ॥ किंनर नाग सिद्ध गंधर्बा॥ बधुन समेत चले सुर
सर्बा॥ बिस्न बिरंच महेस बिहाई॥ चले सकल सुर जान बनाई॥ सती बिलोके ब्यो
म बिबाना॥ जात चले सुंदर बिध नाना॥ सुर सुंदरि करहि कल गाना॥ सुनत श्रवन
छुटहि मुनि ध्याना॥ पूछेउ तब शिव कहिउ बषानी॥ पिता जग्य सुनि तब हर
षानी॥ जो महेस मोहि आइसु देही॥ कछु दिन जाइ रहौ मिस एही॥ पति परत्या
ग ह्रदे दुष भारी॥ कहै न निज अपराध बिचारी॥ बोली सती मनोहर बानी॥ भय
संकोच प्रेम रस सानी॥ ६१॥ दो॥ पिता भवन उत्सव परम जो प्रभु आइस होइ॥ तउ

मैजाउ क्रपाइतन सादर देषन सोइ॥१६०॥ चौ॥ कहै नीक मोरे मनि भावा
यह अनुचित नहि नेवत पठावा॥ दछ सकल निज सुता बुलाई॥ हमरे बैर
तुमै बिसराई॥ ब्रह्मसभा हम सन दुष माना॥ तेहि ते अजहु करे अपमा
ना॥ जो बिन बोले जाइ भवानी॥ रहै न सील सनेह न कानी॥ जदपि मित्र प्रभ
पितु गुर गेहा॥ जाइ बिन बोलेन संदेहा॥ तदपि बिरोध मान जहं कोई॥
तहं गऐ कल्यान न होई॥ भांति अनेक संभ समझावा॥ भावीबस न ज्ञान उ
र आवा॥ कह प्रभु जाउ जो बिनहि बुलाए॥ नहि भलि बात हमारे भाए॥१६१॥
दो॥ कहि देषा हर जतन बहु रहै न दछकुमारि॥ दए मुष्य गन संग तब बिदा
कीन त्रिपुरारि॥१६२॥ चौ॥ पिता भवन तब गई भवानी॥ दछ त्रास काहू न सन
मानी॥ सादर भलै मिली इक माता॥ भगनी मिली बहुत मुसकाता॥ दछ न क
छु पूछी कुसलाता॥ सतहि बिलोक जरे सब गाता॥ सती जाइ देष्यो तब जागा
कतहु न दीष संभ कर भागा॥ तब चित चढ्यो जो संकर कहिऊ॥ प्रभ अपमा
न समझ उर दहिऊ॥ पाछल दुष न हृदै अस ब्यापा॥ जस यह भयो मह

त

परताप॥ जदपि जग दारुन दुष नाना॥ सब ते कठिन जाति अपमाना॥ समुझि
सु सतहि भयो अति क्रोधा॥ बहु बिधि जननी कीन प्रबोधा॥ १९३॥ दो॥ सिव
अपमान न जाइ सहि हृदै न होइ प्रबोध॥ सकल सभहि हठि हटकि तब बोली
बचन सक्रोध॥ १९४॥ चौ॥ सुनहु सभासद सकल मुनिंदा॥ कहि सुनी जिन सं
कर निंदा॥ सो फल तुरत लहब सब काहु॥ भली भांति पछिताइ पिताहु॥ सं
त संभु श्रीपति अपवादा॥ सुनिअ जहां तहं असि मरजादा॥ काटीये तासु
जीभ जो बसाई॥ श्रवन मूंद न त चलिअ पराई॥ जगदातमा महेस पुरारी॥
जगत जनक सब के हितकारी॥ पिता मंद मति निंदत तेही॥ दक्ष सुक्र सं
भव यह देही॥ तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू॥ उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू॥
अस कहि जोग अगनि तन जारा॥ भयो सकल मख हाहाकारा॥ १९५॥
दो॥ सती मरन सुनि संभु गन लगे करन मख षीस॥ जग्य बिधंस बिलोकि
भृगु रक्षा कीनी मुनीस॥ १९६॥ चौ॥ समाचार सब संकर पाए॥ बीरभ
द्र करि कोप पठाए॥ जग्य बिधंस जाइ तिन कीना॥ सकल सुरन बिधिवति

फल दीना॥ भै जगविदित दछ गति सोई॥ जस कछु संभु विमुख कै होई॥ यह इति
हास सकल जग जानी॥ ताते मैं संछेप बखानी॥ सती मरत हरि सन वर मांगा॥ जन्म ज
न्म शिवपद अनुरागा॥ तेहि कारन हिमगिर गृह जाई॥ जहं तहं मुनिन्ह सुआश्र
म कीने॥ उचित बास हिम भूधर दीने॥ १९७॥ दो॥ सदा सुमन फल सहित सब द्रु
म नन नाना जाति॥ प्रगटी सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भांति॥ १९८॥ चौ॥ सर
िता सब पुनीत जल बहहीं॥ खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं॥ सहज वैर सब
जीवन त्यागा॥ गिर पर सकल करहि अनुरागा॥ सोहि सैल गीरजा ग्रह
आइ॥ जिमि जन राम भक्ति के पाए॥ कौतुकही गिर गेह सिधाए॥ सैलराज बहु
आदर कीना॥ पद पषारि वर आसन दीना॥ नारि सहित मुनि पद सिर नावा
चरन सलिल सब भवन सिंचावा॥ निज सौभाग बहुत गिर बरना॥ सुता बो
लि मेली मुनि चरना॥ १९९॥ दो॥ त्रिकालज्ञ सर्बज्ञ तुम गति सर्बत्र तुम्हार॥ क
हे सुता के दोष गुन मुनिवर हृदै विचार॥ २००॥ चौ॥ कहि मुनि बिहसि गूढ म
दु बानी॥ सुता तुम्हार सकल गुन खानी॥ सुंदर सहज सुसील सयानी॥ नाम उमा
अंबिका भवानी॥ सब लच्छन संपन्न कुमारी॥ होइहै संतत पीय हि प्यारी॥ स

दाअचलइहकरीअहिवाता॥इहतेजसुपैहैपितमाता॥होइहैपूजसकलजग
माही॥एहसेवतकछुदुरलभनाही॥इहकरनामुसुमरिसंसारा॥त्रियचढहहि
पतिब्रतअसधारा॥सैलसुलछनसुतातुमारी॥सुनहुजेअबअवगुनदुइ
चारी॥अगुनअमानमातपितहीना॥उदासीनसभसंसैछीना॥२१॥दो॥
जोगीजटलअकाममननगनअमंगलबेष॥असस्वामीइहकैमिलैप
रीहस्तअसरेष॥२२॥चौ॥सुनिमुनिगिरासतजीयजानी॥दुषदंपतहिउ
माहरषानी॥नारदहुंयहभेदुनजाना॥दसाएकसमझतबिलगाना॥स
कलसखीगिरजागिरमैना॥पुलकसरीरभरेजलनैना॥होइनम्रषादेव
रिषिभाषा॥उमासुबचनहृदैधरिराषा॥उपज्योशिवपदकमलसनेहू॥
मिलनकठनमनभासंदेहू॥जानकुअवसरप्रीतदुराई॥सषीउछंगबै
ठीपुनिजाई॥झूठनहोइदेवरिषबानी॥सोचहिदंपतसषीसयानी॥उरध
रिधीरकहैगिरिराऊ॥कहहुनाथकाकरीउपाऊ॥२३॥दो॥कहमुनीस
हिमवंतसुन॥जोविधलिषीलिलार॥देवदनुजनरनागमुनिकोउनमेट
नहार॥२४॥चौ॥तदपिएकमैकहौउपाई॥होइकरैजोदेवसहाई॥ज

स्रवनमेबरिन्योतुमपाही॥ मिलेउमेतससंसैनाही॥ जेजेवरकेदोषबषाने॥
तेसबशिवपहिमैअनुमाने॥ जोबिवाउसंकरसोहोई॥ दोषौगुनसमकहि
सभकोई॥ जोअहिसेजसेनहरिकरहीं॥ बुधकछुतिनकरदोषनधरहीं॥
भानकृषानसर्बरसषाही॥ तिनँमंदकहतकोउनाही॥ सुभअरुअसुभ
सलिलसबबहिई॥ सुरसरकोउअपुनीतनकहई॥ समर्थकोनहिदोष
गुसाई॥ रविपावकसुरसरकीन्याई॥२०५॥ दो॥ जोहिसेईरषाकरहिनर
जाहिबबेकअभिमान॥ परहिकलपभरनरकमहुजीवकिईससमान॥
२०६ चौ॥ सुरसरजलकृतिवारुनिजाना॥ कबहुनसंतकरहितिहपाना॥
सुरसरमिलेसुपावनजेसे॥ ईसअनीसहिअंतरतैसे॥ संभसहजसम
रथभगवाना॥ इहिबिवाउसबबिधकल्याना॥ दुराराधपैअहहिमहेसू॥
आसतोषपुनिकीएकलेसू॥ जउतपकरैकुमारतुमारी॥ भावउमेटस
केत्रिपुरारी॥ जदपवरअनेकजगमाही॥ इहिकेशिवतजिदूसरनाही॥ व
रदाइकप्रनतारतभंजन॥ कृपासिंधसेवकमनरंजन॥ इछतफलवि
नुशिवअवराधे॥ लहैनकोटिजोगजपसाधे॥२०७॥ दो॥ असकहिनारद

समर हरि गिरिजा हि दीन असीस ॥ होइ है इ कल्यान अब संसै तजहु गि
रीस ॥ २० ॥ चौ ॥ कहि अस ब्रह्म भवन मुनि गयो ॥ आगल चरत सुनो ज
समयो ॥ पतिहि इकंत पाइ कहि मैना ॥ नाथ न मै समझे मुनि बैना ॥ जो घ
रु वर कुल होइ अनूपा ॥ करीये विवाह सुता अनरूपा ॥ न त कंन्या वर
र रहउ कुआरी ॥ कंत उमा मम प्रानप्यारी ॥ जो न मिलै वर गिरिजै हि जोगू ॥ गि
रि जड सहिज कहै सभ लोगू ॥ सोई विचार पति करीजे विवाहु ॥ जे हि न ब
होर होइ उर दाहू ॥ अस कहि परी चर्न धरि सीसा ॥ बोले सहत सनेह
गिरीसा ॥ बरु पावक प्रगटे ससि माही ॥ नारद बचन अनथा नाही ॥ ९ ॥
दो ॥ प्रिया सोच परहरहु सब सुमरहु श्री भगवान ॥ पारबति हि निर्म्यो
जे हि सोई करै कल्यान ॥ २१ ॥ चौ ॥ अब जो तुमै सुता पर नेहू ॥ तउ अस जा
इ सिखावन देहू ॥ करै सु तप जे हि मिलै महेसू ॥ आन उपाइ न मीटै कले
सू ॥ नारद बचन सगरभ सहेतू ॥ सुंदर सभ गुन निधि ब्रिखकेतू ॥ अस विचार
तुम तजहु असंका ॥ सभ हि भांति संकर अकलंका ॥ सुनि पति बचन हरख म
न माही ॥ गई तुरत उठ गिरिजा पाही ॥ उमहि विलोकि नैन भरि वारी ॥ सहित सने

राम
बा

॥२९॥

॥२९॥

55

हगोदवैठारी॥बारंबारलेतउरलाई॥गदगदकंठनकछुकहिजाई॥जगतमा
तसर्बज्ञभवानी॥मातसुषदबोलीम्रदबानी॥२११॥दो॰॥सुनउमातमैदीन्हसुस
पनसुनावौंतोहि॥सुंदुगौरसुविपरवरअसउपदेसमोहि॥२१२॥चौ॰॥करैजा
त ईँपसैलकुमारी॥नारदकहासुसतिविचारी॥मातपितहिपुनियहिमतिभावा
॥तपसुषप्रददुषदोषनसावा॥तपबलरचैप्रपंचविधाता॥तपबलविस
सकलजगत्राता॥तपबलसंभकरैसंहारा॥तपबलसेषधरैमहिभारा॥तप
अधारसभस्रिष्टभवानी॥करैजाइतपअसजीयजानी॥सुनतबचनबिस्मित
महितारी॥सपनसुनायोगीरहिहकारी॥मातपितहिबहुबिसमझाई॥च
लीउमातपहितहरषाई॥प्रियापरिवारपिताअरुमाता॥भएबिकलमुषआ
वनबाता॥२१३॥दो॥बेदसिरामुनिआइतबसबैकहासमझाइ॥पारबतीम
हिमासुनतरहेप्रबोधहिपाइ॥२१४॥चौ॥उरधरउमाप्रानपतिचरना॥जाइ
विपनलागीतपकरना॥अतिसुकुमारनतनतपजोगू॥पतिपदसुमरतजोसभ
भोगू॥नितनउचरनउपजाअनुरागा॥बिसरीदेहतपैमनलागा॥संबतसहं
समूलफलखाए॥सागखाइसतबरषबिताए॥कछुदिनभोजनबारबिनासा॥

राम
बा
३०

कीए कठिन कछु दिन उपवासा॥ बेलपात महि परे सो खाई॥ तीन सहंस संबत सो
[illegible] खाई॥ पुनि परहरे सुखान्यो परना॥ उमा नाम तब भयो अपरना॥ देखि उमहि
तप खीन सरीरा॥ ब्रह्मगिरा भै गगन गंभीरा॥ २१५॥ दो॥ भयो मनोर्थ सफल तव
सुनि गिरिराज कुमारि॥ परहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहैं त्रिपुरारि॥ २१६॥
चौ॥ अस तप काहु न कीन भवानी॥ भए अनेक धीर मुनि ग्यानी॥ अब उर धर
हु ब्रह्म बर बानी॥ सत्य सदा संतत सुचि जानी॥ आवै पिता बुलावन जबही॥ ह
ठ परहरि घर जाइहु तबही॥ मिलहि तुम्हहि जब सप्तरिषीसा॥ जानेहु तब
प्रमान बागीसा॥ सुनत गिरा विधि गगन बखानी॥ पुलकित तन गिरजा हर
षानी॥ उमा चरित सुंदर मै गावा॥ सुनहु संभु कर चरित सुहावा॥ जब ते स
ती जाइ तन त्यागा॥ तब ते सिव मन भयो विरागा॥ जपै सदा रघुनायक ना
मा॥ जहँ तहँ सुनै राम गुन ग्रामा॥ २१७॥ दो॥ चिदानंद सुखधाम सिव बिग
त मोह मद मान॥ विचरहि महि धरि हृदै हरि सकल लोक अभिराम॥ २
१८॥ चौ॥ कतहु मुनिन्ह उपदेसहि ग्याना॥ कतहु राम गुन करहि बखाना॥ जद
पि अकाम तदपि भगवाना॥ भक्त विरह दुख दुखित सुजाना॥ इह विधि गयो का

राम
३०

लबहुबीती॥ नीतनयहोइरामपदप्रीती॥ नेमप्रेमशंकरकरि देषा॥ अब
चलहृदैभक्तिकैरेषा॥ प्रगटेरामकृतज्ञकृपाला॥ रूपसीलनिधितेजबिसाला
बहुप्रकारशंकरहिसराहा॥ तुमबिनअसब्रतकोनिरबाहा॥ बहुबिधिरामशिव
हिसमझावा॥ पारबतीकरजन्मसुनावा॥ अतिपुनीतगिरजाकैकरनी॥ बिस्तारस
हितकृपानिधिबरनी॥ २१९॥ दो॥ अबबिनतीममसुनहुशिवजोमोपरनिजने
हु॥ जाइबिवाहोसैलसुतयहिमोहिमांगेदेहु॥ २२०॥ चौ॥ कहिशिवजदपिउच
तअसनाही॥ नाथबचनपुनिमेटनजाही॥ शिरधरिआइसुकरीयेतुमारा॥
परमधर्मयहिनाथहमारा॥ मातपितागुरप्रभकैबानी॥ बिनैबिचारकरीयै
सुभजानी॥ तुमसबभांतिपरमहितकारी॥ आज्ञासिरपरनाथतुमारी॥ प्र
भतोष्योसुनिशंकरबचना॥ भक्तिबिवेकधरमयुतरचना॥ कहिप्रभुहरतुमा
रपनरहिऊ॥ अबउरराख्योजोहमकहिऊ॥ अंतरधानभए असभाषी॥ शं
करसोईमूरतिउरराषी॥ जबहिसपतरिषशिवपहिआए॥ बोलेप्रभअतिब
चनसुहाए॥ २२१॥ दो॥ पारबतीपहिजाइतुमप्रेमपरीषालेहु॥ गिरसुप्रेरिहि
प्रेरतपठभवनदूरकरोसंदेहु॥ २२२॥ चौ॥ रिषनगौरदेषीतहकैसी॥

वंत सुन

म्रतिंत पस्या जैसी॥ बोलउ मुनि सैलकुमारी॥ करहु कवन कारन तप भारी॥
केहि अवराधहु का तुम चहहू॥ हम सन सत्य मरम सब कहहू॥ सुनत रिषन के ब
चन भवानी॥ बोली गूढ मनोहर बानी॥ कहत मरम मन अति सकुचानी॥ ह
सहहु सुनि हमारि जडताई॥ मन हठ परा न सुनै सिखावा॥ चहत बारि पर भी
त उठावा॥ नारद कहा सत्य सोइ जाना॥ बिन पंखन हम चहहि उडाना॥ देख
हु मुनि अविवेक हमारा॥ चहै सदा शिव है भरतारा॥ २२३॥ दो॰ सुनत ब
चन बिहसे रिषि गिरिसंभव तव देह॥ नारद कर उपदेस सुनि कहहु
बसेउ केहि गेह॥ २२४॥ चौ॰ दक्षसुतन उपदेसन जाई॥ तिन फिर भवन
न देखा आई॥ चित्रकेतु कर घर उन घाला॥ कनककसिप कर पुनि अस हाला॥
नारद सिख जे सुनहि नर नारी॥ अवस होइ तजि भवन भिखारी॥ मन क
पटी तन सज्जन चीना॥ आप सरिस सब ही चहै कीना॥ तिन के बचन मानि
बिस्वासा॥ तुम चाहहु पति सहज उदासा॥ निरगुन निलज कुबेष कपाली॥ अकुल अ
गेह दिगंबर ब्याली॥ कहहु कवन सुख अस बर पाए॥ भल भूलिहु ठग के
बउराए॥ पंच कहे सिव सती बिबाही॥ पुनि अवडेरि मराइन ताही॥ २२५॥ दो॰ अब

देवत्यों के कहे वी रमाटेके

राम बा २१ राम २१ स

सब सोवत सोचन हि भी ग्राम भव बाहि ॥ सह जिए का केन के भवन कबहु के
नार बाहि ॥ २२६ ॥ चौ ॥ तज जकुं मान हु कल स हमारा ॥ हम तम के वकनी कवे चा
रा ॥ मते संइ वस सब द स सीला ॥ गावत बेद जास जस लीला ॥ दुषन रहत
सकल गुन रासी ॥ श्रीपति पर बैकुंठ बासी ॥ अब रत महि मिल्ला उब म्मानी ॥
सनत बिह सकल बचन भवानी ॥ हठ न हि छुटे छुट बरि देहा ॥ कनक कडु
पुनि पषान ते हेसी ॥ जारि कुस सजन पर हर सोई ॥ नार द बचन मैं पर ह
द कूं ॥ बस कु भवन उजरे न हिं डरकु ॥ गुर के बचन प्रतीत न जेही ॥ सप
ने कु सुगम न सब सिघ तेही ॥ २२७ ॥ दो ॥ महा देव अवगुन भवन बिसन स
कल गुन धाम ॥ जिह कर मनँर मजा हिं मन तेह ते हि सनकाम ॥ २२८ ॥ चौ ॥
जो तम मिल ते प्रथम मुनी सा ॥ सुनत सो सब तम मार घरि सीसा ॥ अब मै जन्म
संभ महि तिकारा ॥ को गुन दुषक करै विचारा ॥ जो तम मरे हठ हृदे विशेषी ॥ रहि
न जाइ बिन कौए अवरे षी ॥ जौ को तक म न म्मालस न ही ॥ वर कंन्या अनेक ज
ग माही ॥ जन्म कोटि लरं गार सजारी ॥ वर उ शंभ न तर हौं कारी ॥ तजौं न नार द
कर उपदेसु ॥ आप कहै सत वार महेसु ॥ मैं पा परौ कहै जग दंबा ॥ तम गृह

गावन अस भयो बिलंबा॥ देव प्रेम बोले मृदु बानी॥ जय जय जगदंबके भवानी॥
॥दोहा॥ तुम माया भगवान शिव सकल जगत पित मात॥ नाइ चरन सिर मु-
नि चले पुनि पुनि हरिषत गात॥ ८१॥ चौ॥ जाइ मुनिन हिमवंत पठाए॥ क-
रि बिनती गिरजहि गृह ल्याए॥ बहुर सप्तरिषि शिव पहि जाई॥ कथा उ-
मा की सकल सुनाई॥ भए मगन शिव सुनत सनेहा॥ हरष सप्तरिषि ग-
वने गेहा॥ मन थिर करि तब शंभ सुजाना॥ लगे करन रघुनायक ध्याना॥
तारक असुर भयो तिह काला॥ भुज प्रताप बल तेज बिशाला॥ तिह सब लो-
क लोकपति जीते॥ भए देव सुख संपति रीते॥ अजर अमर सो जीत न जा-
ई॥ हारे सुर करि बिबिध लराई॥ तब बिरंचि सन जाइ पुकारे॥ देखे बिधि सभ
देव दुखारे॥ ८२॥ दो॥ सभ सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ॥ संभु सु-
क्र संभूत सुत इह जीते रन सोइ॥ ८२॥ चौ॥ मोर कहा सुनि करहु उपाई॥ हो-
इहै ईश्वर करहि सहाई॥ सती जु तजी दछ मख देहा॥ जनमी जाइ हिमाचल गे-
हा॥ तिह तप कीन संभु पति लागी॥ शिव समाध बैठे सभ त्यागी॥ जदपि अहै असमंज-
स भारी॥ तदपि बात इक सुनहु हमारी॥ पठवहु काम जाइ शिव पाही॥ करै छोभ संक-

संका काम ने तो संकर के लीये चढाई करी तब ग्रंथ मार मे संसार विजय कारि ते कहैं वेतो संसार तौं सदा ही काम मे चेरो है उतर [illegible] काम को विश्वविजयी न कहे ते तेणे कर [illegible]

रमनीमारी॥ तबहमजाइशिवहिसिरनाई॥ करबाउबबिवाहबरिआई॥ इ

हबिधिभएदेवहितहोई॥ मतिअतिनीककहैसबकोई॥ अस्तुतिसुरन्हकी

न्हअतिहेतू॥ प्रगटेउबिषमबानझषकेतू॥ २८३॥ दो॥ सुरन्हकहीनिजबिप

तिसबसुनिमनकीन्हविचार॥ संभुविरोधनकुसलमोहिबिहसिकहेउअसमा

र॥ २८४॥ चौ॥ तदपिकरबमैकाजतुम्हारा॥ श्रुतिकहपरमधर्मउपकारा॥

परहितलागितजैजोदेही॥ संततसंतप्रसंसहितेही॥ असकहिचल्यो

सबैसिरनाई॥ सुमनधनुकरसहितसहाई॥ चलतमारअसहृदैबि

चारा॥ शिवविरोधध्रुवमरनहमारा॥ तबआपनप्रभाउविस्तारा॥ निज

बसकीनसकलसंसारा॥ कोपेउजबहिंबारिचरकेतू॥ छिनमहिंमिटेसक

लश्रुतसेतू॥ ब्रह्मचरजब्रतसंजमनाना॥ धीरजधर्मग्यानविज्ञाना॥ स

दाचारजपजोगविरागा॥ सभयववेककटकुसबभागा॥ २८५॥ छं॥ भा

ग्योविवेकसहाइसहितसोसु[illegible]भटसंजोगमहिमुरे॥ सदग्रंथ

परवतकंदरनिमहुजाइतेहिअवसरदुरे॥ होनिहारकाकरतारकोरख

[illegible] जानी दूस [illegible] विश्वविजयी कहा [illegible] विश्वविजयी काम को श्री [illegible] ने [illegible]

[illegible] ध्यान करे है ता समै क्रोध मे जो [illegible] वो का मान

[illegible] है ५

ताका ग्रंथकार प्रथम तो यह लिखै है कि निसदिन नहिं अवलोकय कोका फेर आगे इह लिखतै है कि उभय घरी अस कौतक भयो तो उभय घरी मे रात दिन के सब ने उतर कोक निस ही ते भोग करै लगे दिन की राह न ही देखते क्योंकि कोक को निस मे भोग प्राप्त है सो

वार जग खरभर परा॥ दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सर ध-
रा॥ दो॰॥ जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम॥ ते निज निज मरजा-
द तजि भए सकल बस काम॥ २८४॥ चौ॰॥ सबके हृदै मदन अभिलाषा॥ लता
निहारि नवहि तरु साखा॥ नदी उमगि अंबुधि कहुं धाई॥ संगम करहिं त-
लाउ तलाई॥ जहं असि दसा जडन कर बरनी॥ को कहि सकै सचेतन करनी॥
पसु पंछी नभ जल थल चारी॥ भए काम बस समय बिसारी॥ मदन अंध ब्या-
कुल सब लोगा॥ निसि दिन नहिं अवलोकहि कोका॥ देव दनुज नर किंन-
र ब्याला॥ प्रेत पिशाच भूत बेताला॥ इनके दसा न कहि उं बखानी॥ सदा का-
म के चेरे जानी॥ सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी॥ तेहि काम बस भए बियोगी॥ २८८॥
छं॥ भए काम बस जोगी स तापस पावरहि की को कहै॥ देखहि चराचर नारि-
मय जे ब्रह्ममय देखत रहे॥ अबला बिलोकहि पुरुष मय जग पुरुष सब
अबला मयं॥ दोइ दंड भरि ब्रह्मंड भीतर काम कृत कौतक कीयं॥ २८९॥
सो॥ धीर न काहू धीर सब के मन मनसिज हरे॥ जे राखे रघुबीर ते उबरे

काम की महमा है तां ते दिन राति इह भाव मे कही अथवा उभय घरी मे राति दिन तो लगो
बरता कि दिन के अंत की [illegible] घरी इस री तन है उभय घर

62

तेहि कालु महु ॥२४०॥ चौ० ॥ उभै घरी असकउतुक भयो ॥ जब लगि कामु संभु प
हि गयो ॥ सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारु ॥ भए जथाथित सब संसारु ॥ भए तुरत स
ब जीव सुखारे ॥ जिमि मद उतरि गएँ मतवारे ॥ रुद्रहि देषि मदन भए माना ॥
म दुराधरष दुरगँम भगवाना ॥ फिरत लाज कछु करि नहि जाई ॥ मरनु ठानि मन
रचेसि उपाई ॥ प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा ॥ कुसमित नव तरु राजि बिराजा
बन उपबन बापिका तड़ागा ॥ परम सुभग सब दिस बिभागा ॥ जहि तह ज
नु उमगत अनुरागा ॥ देषि मुएउ मन मनसिज जागा ॥२४१॥ छं० ॥ जागै मनो
भव मुएउ मन बन सुभगता न परै कही ॥ सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अन
ल सषा सही ॥ बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ॥ कलहंस पिक हं
सुक सरस रव करि गान नाचहि अपसरा ॥२४२॥ दो० ॥ सकल कला करि कोटि
बिधि हारेउ सेन समेत ॥ चली न अचल समाधि सिव कोपे हृदै निकेत ॥२४३॥
चौ० ॥ देषि रसाल बिटप बर साषा ॥ तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माषा ॥ सुमन
चाप निज सर संधाने ॥ अति रिस ताकि श्रवन लगि ताने ॥ छाड़े बिषम बि

शाबउरलागे ॥ छूटसमाधशंभतबजागे ॥ भयोईसमनक्षोभवशेषी ॥ ने
राम नउघारसकलदिसदेषी ॥ सोरभपल्लवमदनविलोका ॥ भयो [illegible] को
वा पकंप्येत्रैलोका ॥ तबशिवतीसरनैनउघारा ॥ चितवतकामभयोजरछारा ॥
२४ हाहाकारभयोजगभारी ॥ डरपेसुरभएअसुरसुषारी ॥ समझकामसुष
सोचहिभोगी ॥ भएअकंटकसाधकजोगी ॥ २४४ ॥ छंद ॥ जोगीअकंटकभएप
तिगतिसुनितेररतिमुरछितभए ॥ रोदतिवदतिबहुभांतिकरुनाकरतशंकरपहि
गए ॥ अतिप्रेमकरिविनतीविविधविधिजोरकरसनमुषरही ॥ प्रभुआसुतोष
कृपालशिवअबलानिरषबोलेसही ॥ २४५ ॥ दो ॥ अबतेरतितवनाथकरिहोइ
हिनामअनंग ॥ बिनबपुब्यापहिसबहिपुनसुनिनिजमिलनप्रसंग ॥ २४६ ॥ चौ ॥
जबयदुबंसकृष्णअवतारा ॥ होइहेहरनमहामहिभारा ॥ कृष्णतनैहोइहि
पतितोरा ॥ बचनअन्यथाहोइनमोरा ॥ रतिगवनीसुनिशंकरबानी ॥ कथाअप
रअबकहोबषानी ॥ देवनसमाचारतबपाए ॥ ब्रह्मादिकबैकुंठसिधाए ॥ सब
सुरविष्णुविरंचसमेता ॥ गएजहांशिवकृपानिकेता ॥ प्रिथकप्रिथकतिनकीन्हप्र
न

रा
राम
२४

संसा॥भएप्रसंन्नचंद्रअवतंसा॥बोलेकृपासिंघव्रषकेतू॥कहहुअमरआएकेहिहेतू
कहिविघतुमप्रभुअंतरजामी॥तदपिभक्तिबसबिनवौंस्वामी॥२४७॥दो॥सकलसुरनकेहृ
देअससंकरपरमउछाहु॥निजनैननदेखाचहहिनाथतुम्हारबिवाहु॥२४८॥चौ॥यहिउ
तसवदेखोभरलोचन॥सोइकछुकरहुमदनमदमोचन॥कामजारिरतिकहुवरदी
न्हा॥कृपासिंधयहिअतिभलकीना॥सासतिकरपुनिकरहिपसाऊ॥नाथप्रभनकरि
सहजसुभाऊ॥पारबतीतपकीनअपारा॥करोतासुअबअंगीकारा॥सुनिबिधिबिनैसमुझ
प्रभबानी॥ऐसेहोइकहासुखमानी॥तबदेवनदुंदभीबजाई॥बरषिसुमनजयजय
सुरसाई॥अवसरजानसप्तरिषआए॥तुरतहिबिधिगिरिभवनपठाए॥प्रथम
गएजिहरहिभवानी॥बोलेबचनमधुरछलसानी॥२४९॥दो॥कहाहमारनसु
नेहुतबनारदकेउपदेस॥अबभाझूठतुम्हारपनजारोकामहेस॥२५०॥चौ
सुनबोलीमुसकाइभवानी॥उचितकहितोमुनिवरविज्ञानी॥तुम्हारेजानेकाम
अबजारा॥अबलगिसंभररहेसविकारा॥हमरेजानसदासिवजोगी॥अजअ
नवद्यअकामअभोगी॥जोमैसिवसेएअसजानी॥प्रीतसमेतकर्ममनबा
नी॥तउहमारापनसुनहुमुनीसा॥करहैसत्तकृपानिधईसा॥तुमजोकहाहरिजा

रिउे मारा ॥ सोरी बहु जाेवे ब कतु मारा ॥ तात अनल कर सहज सुभाऊ ॥ हिम तेहि
निकट जाइ नहि काऊ ॥ गए समीप सो अवसि नसाई ॥ असि मन्मथ महेस
के नाई ॥ २५१ ॥ दो ॥ हियँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास ॥ चले भ
वानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास ॥ २५२ ॥ चौ ॥ सबु प्रसंग गिरिपतिहि
सुनावा ॥ मदन दहन सुनि अति दुखु पावा ॥ बहुरि कहेउ रति कर ब
र दाना ॥ सुनि हि[illegible] मवंत बहुत सुख माना ॥ हृदें बिचारि संभु प्रभुता
ई ॥ सादर मुनिबर लीए बुलाई ॥ सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाए ॥ बेग
बेद बिधि लगन धराए ॥ पत्री सप्तरिषिन सोई दीनी ॥ गहि पद बिनै
हिमाचल कीनी ॥ जाइ बिधिहि तिन दीन सो पाती ॥ बाचत प्रीति न हृदें समा
ती ॥ लगन बाचि अज सबहि सुनाई ॥ हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे ॥ मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे ॥ २५३ ॥ दो ॥
लगे सवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान ॥ होहि सगुन मंगल
सुभग करहि अपछरा गान ॥ २५४ ॥ चौ ॥ सिवहि संभु गन करहि सिंगारा ॥

बा
लम
३५

सुम
गम
३५

67

जटामुकट अहि मोरि सवारा॥ कुंडल कंकन पहिरे ब्याला॥ तन बिभूत पट
केहर छाला॥ ससि ललाट सुंदर सिर गंगा॥ नैन तीन उपवीत भुजंगा॥ गर
ल कंठ उर नर सिर माला॥ अस भेष शिव धाम कृपाला॥ कर त्रिसूल अरु ड
मरु बिराजा॥ चले बिसहँ चढि बाजे हि बाजा॥ देषि शिवहि सुर त्रिय मुसकाही
वर लाइक दुलहिन जग नाही॥ बिष्णु बिरंचि आदि सुर ब्राता॥ चढ चढ बा
हन चले बराता॥ सुर समाज सम भांति अनूपा॥ नहि बरात दुलह अनु
रूपा॥ २५५॥ दो॥ बिष्णु कहु अस बिहसि तब बोल सकल दिसराज॥ बि
लगि बिलग होइ चलउ सब निज निज सहित समाज॥ २५६॥ चौ॥ वर
अनहार वरात न भाई॥ हसी करे हु पर पुर जाई॥ बिष्ण बचन सुनि
सुर मुसकाने॥ निज निज सेन सहित बिलगाने॥ मनहि मन महेस मुस
काही॥ हरि के बिंग्य बचन नहि जाही॥ अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे
भृंगहि प्रेरि सकल गन टेरे॥ शिव अनुसासन सुनि सभ आए॥ प्रभ प
द जलज सीस तिन नाए॥ नाना बाहन नाना बेषा॥ बिहसे शिव समाज
निज देषा॥ कोउ मुष हीन बिपुल मुष काहू॥ बिन पद कर कोउ बहु प

दवाकुइ॥बिपुलनैननकेऊनैनबिहीना॥रिधुसिधकोऊजातितनछीना॥२५७॥
छं॥तनछीनकेऊजातिपीनपावनकेऊजापावनगतिधरे॥भूषनकराल
कपालसबसबसौनततनमरे॥बरसोनरूकरकालमुषगनबेषजग
नितकोगनै॥बहुभांतिप्रेतपिशाचजोगजमातबरनततनहबनै॥२५८॥
सो॥नाचहिंगावहिंगीतपरमतरंगीभूतसब॥देषतजातिविप्री
तबोलेबचनबचित्रबिध॥२५९॥चौ॥जससूलउतसबनीबराता॥कौ
तकविबधहोइमगजाता॥इहांहिमांचलरचेउबिताना॥जाति
विचित्रनहिजाइबषाना॥सैलसकलजेहतहजगमाही॥लघुबि
सालनकिवरतिसिराही॥बनसागरसबनदीतलावा॥हिमगि
रसबकोनिवतिपठावा॥कांमरूपसुंदतनधारी॥सहितसमाज
सहितवरनारी॥गवनेसकलहिमालगेहा॥गावहिमंगलसहि
तसनेहा॥प्रिथमहिगिरबहुगृहसमबाए॥जथाजोगजिहतह
सबछाए॥पुरसोभाअबलोकसहासी॥लागेलघुबिरंचनिपुनाई
२६०॥छं॥लघुलागिविधकीनिपुनताअबिलोकपुरसोभासही॥

बनबागकूपतडागसरितासुभगसभसबकोसककहै॥ मंगलविपुल
तोरनपताकाकेतुग्रहग्रहसोहहीं॥ बनितापुरषसुंदरचतुरछबिदे
षिमुनिमनमोहहीं॥२६१॥दो॥जगदंबाजिहअवतरीसोपुरबरनकि
जाइ॥रिधसिधसंपतिसुषनितनूतनअधिकाइ॥२६२॥चौ॥नगर
निकटबरातसुनिआई॥पुरषरभरसोभाअधिकाई॥करिबनावस
जिबाहननाना॥चलेलेनसादरअगवाना॥हिएहरषेसुरसेन
निहारी॥हरिहिदेषिअतिभएसुषारी॥शिवसमाजजबदेषनलागे
बिडरचलेबाहनसभभागे॥धरधीरजतिहरहैस्याने॥बालकसभ
लैजीवपराने॥गएभवनपूछैपितमाता॥कहैबचनभयकंपित
गाता॥कहैकाहिकहिजाइनबाता॥जमकरिकिधौबरआता॥बरबौ
राहिबरदअसवारा॥व्यालकपालबिभूषनछारा॥२६३॥छंद॥त
नछारब्यालकपालभूषननगनजटिलभयंकरा॥संगभूतप्रे
तपिशाचजोगनिविकटमुषरजनीचरा॥जोजीअतरहैबरातदेष

तपुन्य बड़ तेहि कर सही॥ देषिहै सो उमा बिबाह घर घर बात असि लरिक
कन्ह कही॥ दो॥ समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसकाहि॥ बाल बु
झाए बिबिध बिधि निडर होहु डर नाहि॥२८५॥ चौ॥ लै अगवान बरातहि आए॥ दि
ए सबहि जनवास सुहाए॥ मैना सुभ आरती सवारी॥ संग सुमंगल
गावहि नारी॥ कंचन थार सोह बर पानी॥ परछन चली हरहि ह
रषानी॥ बिकट बेष रुद्र जब देषा॥ तब अबलान्ह भय भयो बिसेषा॥
भागि भवन पैठी अति त्रासा॥ गए महेस जहा जनवासा॥ मैना हृदै
भयो दुष भारी॥ लीनी बोलि गिरीसकुमारी॥ अधिक सनेह गोद
बैठारी॥ स्याम सरोज नैन भरि बारी॥ जेहि बिधि तुम्हहि रूप अस दी
न्हा॥ तेहि जड बर बाउर कस दीन्हा॥२८६॥ छं॥ कस कीन बर बौराह
बिधि जिहि तुम्हहि सुंदरता दई॥ जो फल चहिअ सुरतरहि सो बरबस
बबूरहि लागही॥ तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि
महु परौं॥ घर जाउ अपजस होउ जग जीवत बिबाह न हौं करौं॥२८७॥

क

दो॥ भई विकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि॥ करि विलाप रोदति बद
ति सुता सनेहु संभारि॥२६८॥ चौ॥ नारद कर मैं काह बिगारा॥ भवन मोर जिन्ह ब
सत उजारा॥ अस उपदेस उमहि जिन्ह दीना॥ बौरे बरहि लागि तपु कीना॥ सांचेहु
के मोहु न माया॥ उदासीन धनु धाम न जाया॥ पर घर घालक लाज न भी
री॥ बांझ की जान प्रसव की पीरा॥ जननिहि विकल विलोकि भवानी॥ बोली जु
त विवेक मृदु बानी॥ अस विचारि सोचहि मति माता॥ सो न टरै जो रचै बि
धाता॥ करम लिखा जो बाउर नाहू॥ तउ कत दोस लगाइअ काहू॥ तुम्ह स
न मिटै कि बिधि के अंका॥ मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका॥२६९॥ छंद॥ जनि
लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नही॥ दुख सुख जो लिखा लिला
र हमरे जाउ जहं पाउब तहीं॥ सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल
अबला सोचहीं॥ बहु भांति बिधिहि लगाइ दूषन नैन बारि बिमोचहीं॥२७०॥
दो॥ तिहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत॥ समाचार
सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत॥२७१॥ चौ॥ तब नारद सबही सम

राम
बा
७२

ऊवा॥ परब कथा प्रसंग सनावा॥ मैन सति सुन ऊम म बानी॥ जगदंबा त
व सुता भवानी॥ अजा अनाद शक्ति अबनासन॥ सदा शंभ अरधंग निवासन
जग संभव पालन लय कारनि॥ निज इछा लीला वपु धारन॥ जनमी प्रथम
दछ ग्रह जाई॥ नाम सती संदुर तन पाई॥ तेहहु सती शंकर हि विव ही॥ कथा
प्रसिध सकल जग माही॥ एक बार आवत शिव संगा॥ देखो रघुकुल कम
ल पतंगा॥ भयो मोह शिव कहा न कीना॥ भ्रम बस वेषु सीया कर लीना॥ २७२॥ छं॥
सीया वेष सती जु कीन तेह अपराध शंकर परिहरी॥ हर विरह जाइ
बहोर पित के जग्य योगानल जरी॥ अब जनम तुमरे भवन निज पति ला
गी दारुन तप कीया॥ अस जान संसै तजहु गीरजा सर्बदा शंकर प्रिया॥ २
७३॥ दो॥ सुन नारद के बचन तब सभ कर मिटा विषाद॥ छन मह व्यापो
सकल पुर घर घर यह संबाद॥ २७४॥ चौ॥ तब मैना हिमवंत अनंदे॥
पुन पुन पारबती पद बंदे॥ नार पुरुष सिस जुवा सयाने॥ नगर लोग स
भ अति हरखाने॥ लगे होन पुर मंगल गाना॥ सजे सभै हाटक घट नाना॥

राम
७२

भांतिअनेकभईजेवनारा॥सूपशास्त्रजसकछुबिवहारा॥सोजेवनार
कजाइबखानी॥बसहिंभवनजेहिमातभवानी॥सादरबोलेसकलब
राती॥बिश्नुबिरंचदेवसबजाती॥बिबिधपांतबैठीजेवनारा॥लगेपरो
सननिपुनसुआरा॥नारबृंदसुरजेवतजानी॥लगीदेनगारीम्रिदुबा
नी॥३२५॥छं॥गारीमधुरसुरदेहिंसुंदरबिंग्यबचनसुनावहीं॥भो
जनकरैसुरअतिबिलंबबिनोदसुनिसचुपावहीं॥जेवतजबढ्योअ
नंदसोमुखकोटहूंनपरेकहिओ॥अचवाइदीनेपानगवनेबासजह
जाकोरहिओ॥३२६॥दो॥बहुरमुनहिमवंतकहुंलगनसुनाईआ
इ॥समयबिलोकबिवाहकरिपठएदेवबुलाइ॥३२७॥चौ॥बोलसकल
सुरसादरलीने॥सबहिजथोचितआसनदीने॥बेदीबेदबिधा
नसवारी॥सुभगसुमंगलगावहिनारी॥सिंहासनअतदिब्यसुहा
वा॥जाइनबरनबिरंचबनावा॥बैठेसीवबिप्रसिरनाई॥हृदेसिम
रिनिजप्रभरघुराई॥बहुरमुनीसनउमाबुलाई॥करिसिंगार

सषीलै आई॥ देषत रूप सकल सुर मोहे॥ बरनै छबि अस जग कवि को है॥ जग

राम दंबिका जान भव भामा॥ सुरन मनहि मन कीन प्रनामा॥ संदुरता मरजाद भ

बा वानी॥ जाइ न कोटि बदन बषानी॥ २७८॥ छं॥ कोटि बदन न हबनै

३५ बरनत जगजननि सोभा महा॥ सकुचहि कहत श्रुति सेष सारद मंद म

ति तुलसी कहा॥ छबिषानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप शिव जहा॥ अब राम

लोक सकहि न सकुच पति पद कमल मनु मधुकर तहा॥ २७९॥ दो॥ ३५

मुनि अनुसासन गनपति हि पूजि उ संभु भवान॥ कोउ सुनि संसै

करै जिन सुर अनादि जिय जान॥ २८०॥ चौ॥ जसु बिबाहु की बिधि श्रु

ति गाई॥ महामुनिन सो सब करवाई॥ गहि गीरीश कुस कंन्या पा

नी॥ भवहि समरपी जान भवानी॥ पानि ग्रहन जब कीन महेसा॥ हि

ये हरषे तब सकल सुरेसा॥ बेद मंत्र मुनिवर उचरही॥ जय जय

शंकर सुर गन करही॥ बाजहि बाजन विविध विधाना॥ सुमन बृ

ष्टि नभ भै नाना॥ हर गीरजा कर भयो बिबाहु॥ सकल भवन भरि

रहहुकहहु॥दासीदासतुरगरथनागा॥धेनुबसनमनिबस्तुबिभा
गा॥अंनकनकभाजनभरजाना॥दाइजदीनन्हजाइबषाना॥१०१॥छंद॥
दाइजदयोबहुभांतपुनकरजोरिहिमभूधरिकह्यो॥कादेउपूरनका
मशंकरचर्नपंकजगहिरह्यो॥शिवकृपासागरससुरकरिसंतोष
सबभांतहिकीयो॥पुनिगहेपदपाथोजमयनाप्रेमपरपूर्णहियो॥१०२॥
दो॥नाथउमाममप्रानसमगृहकिंकरीकरेहु॥छिमहुसकलअपराध
अबहोइप्रसन्नबरदेहु॥१०२॥चौ॥बहुबिधशंभसासुसमझाई॥गव
नीभवनचरनशीरनाई॥जननीउमाबोलितबलीनी॥लैउछंगसुंदरसि
षदीनी॥करहुसदाशंकरपदपूजा॥नारधर्मपतिदेउनदूजा॥बच
नकहितभरिलोचनवारी॥बहुरलाइउरलीनकुमारी॥कतबिधिस्रि
जीनारजगमाही॥पराधीनसपनेसुषनाही॥भैअतिप्रेमविकलम
हितारी॥धीरजकीनकुसमैविचारी॥पुनिपुनिमिलतपरतगहिचर
न॥परमप्रेमकछुजाइनवरना॥सबनारनमिलभेटभवानी॥

सकलसैलसरलीयेबुलाई

जाइजननिउरपुनिलपटानी॥२०४॥छं॥जननिहिबहुरिमिलिचलीउचितअ
सीससबकाहूदई॥फिरिफिरिबिलोकतमाततनतबसखीलैसिवपहिगई॥
जाचकसकलसंतोषिसंकरउमासहितभवनचले॥सबअमरहरषे
सुमनबरषिनिसाननभबाजेभले॥२०५॥दो॥चलेसंगहिमवंततबपहु
चावनअतिहेत॥बिबिधभांतिपरितोषकरिबिदाकीनबृषकेत॥२०६॥चौ
॥तुरतभवनआएगीरराई॥आदरदानबिनैबहुमाना॥सबकरबि
दाकीनहिमवाना॥जबहिसंभकैलासहिआए॥सुरसबनिजनिज
लोकसिधाए॥जगतमातपितसंभभवानी॥तिहसिंगारनकहिउंब
खानी॥करहिबिबिधबिधिभोगबिलासा॥गनन्हसमेतबसैकैलासा
॥हरगिरिजाबिहारनितनयो॥इहिबिधिबिपुलकालचलिगयो॥त
बजनम्योषटबदनकुमारा॥तारकअसुरसमरजिहमारा॥आ
गमनिगमप्रसिधपुराना॥षटमुखजनमसकलजगजाना॥२०७॥
॥छं॥जगजानषटमुखजनमकर्मप्रतापपुरषारथमहा॥तिसहे

...का विना अघ तजी सती असनारी तो अघ करु बग्रंथकार कहे चुके औ फेर ... विना अघ
पद देते हैं सो क्यों उत्तर यह अन्यत गुप्त वाक्य है ग्रंथकार लिखते हैं सो बिना जाने तो ...
वनी को विशेष बखान लोक करे है सो नहीं है किंतु सती को विशेषन है सो सुनो अघ शब्द

...तमे बेषके त सत करि चरित तमसे छै यहि कहा॥ यह उमा शंभु बिवाह जे नर नारि कहैं जे गावहीं॥ कल्यान काज विवाह मंगल सर्बदा सुख पावहीं॥ १०८॥ दो॥ चरत सिंधु गिरजा रमन बेद न पावहि पार॥ बरनै तुलसीदास किमि अति मतिमंद गवार॥ २९॥ चौ॥ संभु चरित सुनि सरस सुहावा॥ भरद्वाज मुनि अति सुख पावा॥ बहु लालसा कथा पर बाढ़ी॥ नैन नीर रोमावलि ठाढ़ी॥ प्रेम बिबस मुख आव न बानी॥ दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी॥ अहो धन्य तव जन्म मुनीसा॥ तुमहि प्रान सम प्रिय गौरीसा॥ शिव पद कमल जिन्हहि रति नाहीं॥ रामहि ते सपनेहु न सुहाहीं॥ बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू॥ राम भक्ति कर लछन एहू॥ शिव सम को रघुपति ब्रत धारी॥ बिनु अघ तजी सती असनारी॥ पनु करि रघुपति भक्ति दिखाई॥ को शिव सम रामहि प्रिय भाई॥ २९०॥ दो॥ प्रथमहि मै कहि शिव चरित बूझा मरम तुम्हार॥ सुच सेवक तुम राम के रहित समस्त बिकार॥ २९१॥ चौ॥ मै जाना तुम्हार...

को दुःख अर्थ मे ईहाँ ग्रहण है पाप अर्थ नहीं है प्रमाण अघस्तु व्यसने दुःखे इत्यमरः
याते सती को त्याग शंकर जीने कीयो बिना अघ अर्थात बिना दुःख मोह रहित और जो...

भक्ति प्रसंग में गरीब जो कोउ दुख भयो न लपती प्रसंग में ताको प्र० चो० यद्यपि प्रकाम तदपि भगवाना ॥ भक्ति बिरहु दुख दुखी सुजाना ॥ याते उत्तरकांड को वाक्य भक्ति प्रसंग में है और सनकादिक वन नारी प्रसंग में है सकर सख विवेक त्यागी इहदुख भयो काहे ते कि रघुनाथ के प्रति मोह हू बाक्य प्रका

र गुनसीला ॥ कहौं सुनउ अब रघुपति लीला ॥ सुनि मुनि आजु समा
गम तोरे ॥ कहि न जाइ जस सुष मन मोरे ॥ राम चरित अति अमि त मु
नीसा ॥ कहि न सकै सत कोटि अहीसा ॥ तदपि जथाश्रुति कहौं ब
खानी ॥ सुमरि गिरापति प्रभ धनपानी ॥ सारद दारु नारि स
म स्वामी ॥ राम सूत्रधर अंतरजामी ॥ जेहि पर कृपा करहि ज
न जानी ॥ कवि उर अजिर नचावहि बानी ॥ प्रणवौं सोइ कृपाल रघु
नाथा ॥ बरनौं बिसद तासु गुन गाथा ॥ परम रम्य गिरिवर कैला
सू ॥ सदा जहां शिव उमा निवासू ॥ २८४ ॥ दो० ॥ सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर कि
न्नर मुनिवृंद ॥ बसहिं तहां सुकृती सकल सेवहिं शिव सुष
कंद ॥ २८५ ॥ हरि हर विमुष धर्म रति नांही ॥ ते नर तहं सपनेहु न
हि जांहीं ॥ तेहि गिरि पर बट विटप बिसाला ॥ नित नूतन सुंदर सब
काला ॥ त्रिविध समीर सुसीतल छाया ॥ शिव विश्राम विटप श्रुति गाया ॥

रजी कह्यो प्र० चो० कहि शिव यद्यपि उचित प्रसंग नाहीं संशय करि हृदयांतर भी धार्यो प्रश्न यो पार्वती रूप धार्यो तथापि पत्नी भाव में ग्रहण करें सो शिव जी ने अनुचित कीयो परंतु स्वामी की आज्ञा प्रबल है प्रथम सघ पद को ... में लगावत नो तैं इस रीत ते जो सती मो

तिहप्रासनप्रासीनकृपाला

एकबारतिहतरप्रभगयो॥ तरबिलोकउरअतिसुखभयो॥ निजकरि
डासिनागरिपुछाला॥ बैठेसहजसमचरना॥ नखद्युतिभक्तहृद
यतमहरना॥ भुजंगभूतिभूषनत्रिपुरारी॥ आननसरदचंद
छबिहारी॥ २९४॥ दो॥ जटामुकटसुरसरितसिरलोचननलिनविशा
ला॥ नीलकंठलावननिधिसोहबालविधुभाल॥ २९५॥ चौ॥ बैठेसोहकामरिपु
कैसे॥ धरेसरीरसांतरसजैसे॥ पारबतीभलअवसरुजानी॥ गईसंभु
पहमाततभवानी॥ जानप्रियाआदरअतिकीन्हा॥ बामभागआसनहरदी
न्हा॥ बैठीशिवसमीपहरषाई॥ पूरबजनमकथाचितआई॥ पतिहियहे
तुअधिकमनमानी॥ बिहसिउमाबोलीमृदवानी॥ कथाजोसकललोकहि
तकारी॥ सोइपूछनचहशैलकुमारी॥ विश्वनाथममनाथपुरारी॥ त्रिभु
वनमहिमाविदितुतुम्हारी॥ चरअरुअचरनागनरदेवा॥ सकल
करहिंपदपंकजसेवा॥ दो॥ प्रभुसमरथसरबज्ञशिवसकलकलागु
नधाम॥ जोगग्यानवैराग्यनिधिप्रनतकल्पतरुनाम॥ २९६॥ चौ॥ जोमो
परप्रसन्नसुखरासी॥ जानमोहिसत्यनिजदासी॥ तोप्रभुहरहुमोरअ
ज्ञाना॥ कहिरघुनाथकथाविधिनाना॥ जासुभवनसुरतरुतरहोइ

शी॥ सहि कि दरि इजनित दुष सोई॥ शशि भूषन अस हृदय बिचारी॥ हर हु नाथ मम मति भ्रम भारी॥ प्रभु जे मुनि परमारथ बादी॥ कहहि राम कहु ब्रह्म अनादी॥ शेष सारदा वेद पुराना॥ सकल करहि रघुपति गुन गाना॥ तुम्ह पुनि राम राम दिन राती॥ सादर जपहु अनंग अराती॥ राम सु अवध नृपति सुत सोई॥ की अज अगुन अलख गति कोई॥ दो॥ जो नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरह मति भोरि॥ देषि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि॥ २८६॥ चौ॥ जौ अनीह ब्यापक बिभु कोऊ॥ कहहु बुझाय नाथ मोहि सोऊ॥ अग्य जानि रिस उर जनि धरहु॥ जेहि बिधि मोह मिटै सो करहु॥ मै बन दीषि राम प्रभुताई॥ अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई॥ तदपि मलिन मन बोध न आवा॥ सो फल भली भांति हम पावा॥ अजहु कछु संसय मन मोरे॥ करहु कृपा बिनवौ कर जोरे॥ प्रभु तब मोहि बहु भांति प्रबोधा॥ नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा॥ तब कर अस बिमोह अब नाही॥ राम कथा पर रुचि मन माही॥ कहहु पुनीत राम गुन गाथा॥ भुजग राज भूषन सुर नाथा॥ २८७॥ दो॥ बंदौ पद धरि धरनि सिर बिनय करौ कर जोरि॥

बर्नौं रघुबर बिशद जस श्रुति सिधांत निचोरि ॥२५८॥ चौ॰॥ यद्यपि जोषित
अनधिकारी॥ दासी मन क्रम बचन तुम्हारी॥ गूढ़उ तत्व न साधु
दुरावहिं॥ आरत अधिकारी जब पावहिं॥ अति आरत पूछौं सुरराया॥
रघुपति कथा कहहु करि दाया॥ प्रथम सो कारन कहहु बिचारी॥ निर्गु
न ब्रह्म सगुन बपु धारी॥ पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा॥ बालचरि
त पुनि कहहु उदारा॥ कहहु कथा जानकी बिवाही॥ राज तजा सो दू
षन काही॥ बन बसि कीन्हे चरित अपारा॥ कहहु नाथ जिमि रावन
मारा॥ राज बैठि कीन्ही बहु लीला॥ सकल कहहु संकर सुषसीला॥२५९॥
दो॰॥ बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम॥ प्रजा सहित रघु
बंसमनि किमि गमने निज धाम॥२६०॥ चौ॰॥ पुनि प्रभु कहहु सो तत्व ब
षानी॥ जेहि बिज्ञान मगन मुनि ज्ञानी॥ भगति ज्ञान बिज्ञान बैरागा॥ पुनि
सब बर्नहु सहित बिभागा॥ औरौ राम रहस्य अनेका॥ कहहु नाथ
अति बिमल बिबेका॥ जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई॥ सोउ दयाल राखहु जनि

गोशी॥ जुमतेमवतेगरवेदवषाना॥ आनन्द्रीवपावरकहजाना॥ प्र
स्नउमाकेसहजसुहाई॥ छलविहीनसुनेशिवमनमाई॥ हर
हियरामचरतसवआये॥ प्रेमपुलिकलोचनजलछाये॥ श्रीर
घुनाथरूपउरआवा॥ परमानंदअमितसुषपावा॥ ३·१॥ दो॥ म
गनध्यानरसदंडयुगपुनिमनवाहरकीन॥ रघुपतिचरित
महेसतवहर्षतवर्नेलीन॥ ३·२॥ चौ॥ झूठेउसत्यजाहिविनुजा
ने॥ जिमभुजंगविनुरजुपहिचाने॥ जिहजानेजगजाइहिराए
जागेयथासुपनभ्रमजाए॥ वंदौवालरूपसोउरामू॥ सवसि
द्धिसुलभजपतजिसनामू॥ मंगलभवनअमंगलहारी॥ द्रवौ
सोदसरथअजिरविहारी॥ करिप्रनामरामहित्रिपुरारी॥ हर्षिसुधा
समगीराउचारी॥ धंन्यधंन्यगीरिराजकुमारी॥ तम्हरघुवीरच
रनअनुरागी॥ कीन्हेप्रस्नजगतहितलागी॥ ३·३॥ दो॥ रामकृपाते
तीजैंसपनेहुतवमनमाहि॥ सोकमोहिसंदेहभ्रममममविचार

कहुं नाहि॥ ३४॥ चौ॥ तदपि असंक कीन्हि मैं सोई॥ कहत सुनत सब कर हित
होई॥ जिन्ह हरि कथा सुनी नहि काना॥ श्रवन रंध्र अहि भवन समाना
नैयनन्हि संत दरस नहि देषी॥ लोचन मोर पंख सम पेषी॥ ते सि
र कटु तुंबरि समतूला॥ जे न नमत हरि गुर पद मूला॥ जे हरि
भक्ति हृदय नहि आनी॥ जीवत शव समान ते प्रानी॥ जो नहि करै
राम गुन गाना॥ जीह सु दादुर जीह समाना॥ कुलिश कठोर निठुर
सोई छाती॥ सुनि हरि चरित न जो हरषाती॥ गिरजा सुनहु राम के
लीला॥ सुर हित दनुज विमोहन सीला॥ ३५॥ दो॥ राम कथा सुर धेन
सम सेवत सब सुषदानि॥ संत समाज सुर लोक सम को न सुनै अस
जान॥ ३६॥ चौ॥ राम कथा सुंदरि कर तारी॥ संसय बिहंग उडावनिहा
री॥ राम कथा कलि बिटप कुठारी॥ सादर सुनि गिरिराज कुमारी॥ रा
म नाम गुन चरित सुहाये॥ जन्म कर्म अगनित श्रुति गाए॥ यथा अनं
त राम भगवाना॥ तथा तथा कीर्ति गुन नाना॥ जदपि यथा श्रुति जस
मति मोरी॥ कहिहौ देषि प्रीति अति तोरी॥ उमा प्रश्न तव सहज सुहाई॥

राम सुषद संत संमत मोहि भाषी॥ एक बात नहिं मोहि सुहानी॥ जदपि मो
हि बस कहितें भवानी॥ तुम जो कहा राम कोउ आना॥ जेहि श्रुति गाव ध
बा रहिं मुनि ध्याना॥ ३७॥ दो॥ कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह
८४ पिसाच॥ पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साच॥ ३८॥ चौ॥ अग्य अको
बिद अंध अभागी॥ काई बिषय मुकर मन लागी॥ लंपट कपटी कुटि
ल बिशेषी॥ सपनेहुं संत सभा नहिं देषी॥ कहहिं ते बेद असंमत
रा बानी॥ जिन्ह के सूझ लाभ नहिं हानी॥ मुकर मलिन अरु नैन बिही राम
ना॥ राम रूप देषहिं किमि दीना॥ जिन्हु के अगुन न सगुन बिबेका॥ ८४
ह जल्पहिं कल्पित बचन अनेका॥ हरि माया बस जगत भ्रमाही॥ तिन्हहि
कहत कछु अघटित नाही॥ बातुल भूत बिबस मतवारे॥ ते नहिं बो
लहिं बचन बिचारे॥ जिन्ह कृत महा मोह मद पाना॥ तिन कर कहा
करिय नहिं काना॥ ३८॥ सो॥ अस निज हृदय बिचारि तजु संसै भजु
राम पद॥ सुनि गिरिराजकुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम॥ ३९॥
चौ॥ सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा॥ गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥

84

अगुन अरूप अलष अज जोई॥ भगति प्रेम बस सगुन सु होई॥ जो गुन रहित सगुन सोइ कैसे॥ जलु हिम उपल बिलग नहि जैसे॥ जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा॥ तेहि किमि कहिय बिमोह प्रसंगा॥ राम सच्चिदानंद दिनेसा॥ नहि तह मोह निसा लवलेसा॥ सहज प्रकास रूप भगवाना॥ नहि तह पुनि बिज्ञान बिहाना॥ हर्ष बिषाद ज्ञान बिज्ञाना॥ जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥ राम ब्रह्म व्यापक जग जाना॥ परमानंद परेस पुराना॥२११॥ दो॥ पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट चराचर नाथ॥ रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिव नायो माथ॥२१२॥ चौ॥ निज भ्रम नहि समुझहि अज्ञानी॥ प्रभु पर मोह धरहि जड़ प्रानी॥ यथा गगन घन पटल निहारी॥ झांपेउ भानु कहहि कुबिचारी॥ चितवत लोचन अंगुलि लाए॥ प्रगट युगल ससि तिहि के भाए॥ उमा राम विषयक अस मोहा॥ नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा॥ विषय करन सुर जीव समेता॥ सकल एक ते एक सचेता॥ सब कर परम प्रकासक जोई॥ राम अनादि अवधपति सोई॥ जगत प्रकास्य प्रकासक रामु॥ मायाधीस ज्ञान गुन धामु॥

राम
बा
८५

जासु सत्यता ते जड माया॥ भास सत्य इव मोह सहाया॥ दो॥ रजत सीप म
हु भास जिमि यथा भानु कर वारि॥ यदपि मृषा तिहु काल सोइ भ्रम न स
कै कोउ टारि॥ ३१३॥ चौ॥ एहि विधि जग हरि आश्रित रहई॥ जदपि अ
सत्य देत दुख अहई॥ जौ सपने सिर काटै कोई॥ विनु जागे न दूरि दुख
होई॥ जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई॥ गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा॥ मति अनुमानि निगम अस गावा॥ विनु पद च
लै सुनै विनु काना॥ कर विनु कर्म करै विधि नाना॥ आनन रहित सक
ल रस भोगी॥ विनु बानी बकता बड जोगी॥ तन विनु परस नयन विनु
देखा॥ ग्रहै घ्रान विनु वास असेषा॥ असि सब भांति अलौकिक करनी॥
महिमा जासु जाइ नहि बर्नी॥ ३१४॥ दो॥ जेहि इमि गावहि वेद बुध जाहि ध
रहि मुनि ध्यान॥ सोइ दशरथ सुत भक्त हित कोशलपति भगवान॥ ३१५॥
चौ॥ कांशी मरत जंतु अवलोकी॥ जासु नाम बल करौ विशोकी॥ सोइ प्रभु
मोर चराचर स्वामी॥ रघुवर सब उर अंतरजामी॥ विवशहु जासु नाम न
र कहही॥ जनम अनेक संचित अघ दहही॥ सादर सुमिरन जे न

राम
८५

रकरहीं॥ भवबारिधि गोपद इव तरहीं॥ राम सो परमात्म भवानी॥ तहभ्र
म अति अविहित तव बानी॥ अस संसय आनत उर माहीं॥ ज्ञान विराग
सकल गुन जाहीं॥ सुनि शिव के भ्रम भंजन बचना॥ मिटि गै सब कुत
र्क के रचना॥ भई रघुपति पद प्रीति प्रतीती॥ दारुण असंभावना बीती॥
११७॥ दो॥ पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि॥ बोली गिरिजा ब
चन वर मनहु प्रेम रस सांनि॥ ११७॥ चौ॥ शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी
मिटा मोह शरदातप भारी॥ तुम्ह कृपाल सब संसय हरेउ॥ राम स्वरूप जा
नि मोहि परेउ॥ नाथ कृपा अब गयो बिषादा॥ सुखी भई प्रभु चरन प्रसादा॥ अ
ब मोहि आपन किंकर जानी॥ जदपि सहज जड़ नारि अयानी॥ प्रथम जो मैं
पूछा सोई कहहु॥ जो मो पर प्रसन्न प्रभु अहहु॥ राम ब्रह्म चिनमय अविना
सी॥ सर्ब रहित सब उर पुर बासी॥ नाथ धरेउ तन केहि हेतू॥ मोहि सम
झाइ कहहु बृषकेतू॥ उमा बचन सुनि प्रेम बिनीता॥ राम कथा पर प्रीति पु
नीता॥ ११८॥ दो॥ हिय हरषें कामारि तब शंकर सहज सुजान॥ बहु विधि उम
हि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान॥ ११९॥ सो॥ सुनि शुभ कथा भवानि रामचरित

४४

मनसवैमल॥कहाभुसुंडिबषानसुनविहंगनाइकगरुड॥१२०॥सोसंबादउदारजेहबिधभाआगेकहव॥सुनहुरामअवतारचरितपरमसुंदरअनघ॥१२१॥हरिगुननामअपारकथारूपअगनितअमित॥मैनिजमतिअनुसारकहौंउमासादरसुनहु॥१२२॥चौ॥सुनगिरिजाहरिचरितसुहाए॥विपुलविशदनिगमागमगाए॥हरिअवतारहेतुजेहहोई॥इदमित्थंकहिजाइनसोई॥रामअतर्क्यबुद्धिमनबानी॥मतहमारअससुनहुसयानी॥तदपिसंतमुनिवेदपुराना॥जसकछुकहहिस्वमतिअनमाना॥तसमैसुमुषसुनावौतोही॥समझिपरैजसकारनमोही॥जबजबहोइधर्मकैहानी॥बाढहिअसुरअधमअभिमानी॥करहिअनीतिजाइनबर्नी॥सीदहिविप्रधेनसुरधर्नी॥तबतबप्रभुधरिविविधसरीरा॥हरहिकृपानिधसज्जनपीरा॥१२३॥दो॥असुरमारिथापहिसुरनराषहिनिजश्रुतिसेतु॥जगविस्तारहिविशदजसरामजन्मकरहेतु॥१२४॥चौ॥सोईजसगाइभक्तभवतरहीं॥कृपासिंधुजनहिततनधरहीं॥रामजन्मकेहेतअनेका॥परमविचित्रएकतेएका॥जन्म

राम बा ४६

राम ४६

जन्म

एकदुइकहेउबखानी॥सावधानसुनिसुमतिभवानी॥द्वारपालहरि=
केप्रियदोऊ॥जयअरुविजयजानसबकोऊ॥विप्रश्रापतेदुनोभाई॥ताम
सअसुरदेहतिन्हपाई॥कनककसिपुअरुहाटकलोचन॥जगतविदितसु
रपतिमदमोचन॥विजयीवीरसमरविख्याता॥धरबराहवपुएकनिपाता॥होइ
नरहरिदूसरपुनिमारा॥जनप्रहलादसुजसविस्तारा॥१२५॥दो॥भएनिशा
चरजाइपुनितेही॥महावीरबलवान॥कुंभकरनरावणसुभटसुरवि
जईजगजान॥१२६॥चौ॥मुक्तिनभएहतेभगवाना॥तीनजन्मद्विजबचनप्रवा
ना॥एकवारतिनकेहितलागी॥धरेउशरीरभक्तिअनुरागी॥कश्य
पअदितितहाँपितुमाता॥दशरथकौशल्याविख्याता॥एककल्पएहिवि
धिअवतारा॥चरितपवित्रकिएसंसारा॥एककल्पसुरदेखिदुखारे॥स
मरजलंधरसबहारे॥शंभुकीन्हसंग्रामअपारा॥दनुजमहाबलमरेन
मारा॥परमसतीअसुराधिपनारी॥जेहिबलतहिनजितेपुरारी॥१२७॥
दो॥छलकरिटारेतासुतपप्रभुसुरकारजकीन॥जबतेइजानेउमर
मतबश्रापकोपकरिदीन॥१२८॥चौ॥तासुश्रापहरिकीन्हप्रवाना॥

कौतक निधि क्रपाल भगवाना॥ तहा जलंधर रावन भएउ॥ रन हति रा
म राम पद दएउ॥ एक जनम कर कारन एहा॥ जेहि लगि राम धरी न
र देहा॥ प्रति अवतार कथा प्रभु केरी॥ सुनि मुनि बरनी कबिन्ह घने
री॥ नारद श्राप दीन्ह एक बारा॥ कल्प एक तेहि लगि अवतारा॥ गिर
जा चकित भई सुनि बानी॥ नारद बिष्नु भगत पुनि ग्यानी॥ कारन कवन
श्राप मुनि दीन्हा॥ का अपराध रमापति कीन्हा॥ यह प्रसंग मोहि कहहु
पुरारी॥ मुनि मन मोह आचरज भारी॥१२८॥ दो॥ बोले बिहसि महे
स तब ग्यानी मूढ न कोइ॥ जेहि जस रघुपति करहि जब सो तस तेहि
छिन होइ॥१२२॥ सो॥ कहउ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु॥ भ
व भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद॥१२१॥ चौ॥ हिमगिरि गु
हा एक अति पावन॥ बह समीप सुरसरी पावन॥ आश्रम परम
पुनीत सुहावा॥ देखि देवरिषि मन अति भावा॥ निरखि सैल सर बि
पिन बिभागा॥ भयो रमापति पद अनुरागा॥ सुमिरत हरिहि

ज्ञाप गति बांधी ।। सहज बिमल मन लाव समाधी ।। मुनि मति देखि सुरेस
डराना ।। कामहि बोल कीन सनमाना ।। सहित सहाइ जाउ मम हेतु ।। चलो हर
षि हिये जलचरकेतु ।। सुनासीर मन मह अस त्रासा ।। चहत देव रिषि मम
पुर वासा ।। जे कामी लोलुप जग मांहीं ।। कुटल काक इव सबहि डरा
हीं ।। ३३२ दो० ।। सूक हाडु लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज ।। छीन लेइ
जन जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज ।। ३३२ चौ० ।। तेहि आश्रमहि मदन
जब गयो ।। निज माया बसंत निर्मयो ।। कुसमति बिबिध बि[illegible]ट प
बहुरंगा ।। कूजहि कोकिल गुंजहि भृंगा ।। चली सुहावन त्रिबिध
ब्यारी ।। काम कृसानु बढ़ावन हारी ।। रंभादिक सुर नार नवीना
सकल असम सर कला प्रबीना ।। करहि गान बहु तान तरंगा ।। ब
हु बिधि क्रीड़हि पानि पतंगा ।। देखि सहाइ मदन हरखाना ।। कीन्हे
सि पुनि प्रपंच बिधि नाना ।। काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी ।। नि
ज भय डरो मनोभव पापी ।। सीम कि चांप सकै को तासु ।। बर

बा
राम
४८

रखवार रमावतियास॥ ३३४॥ दो॥ सहत तस सहइ सभीत अति मानि
हारि मन मयन॥ गहे सजाइ मनिचरन कन्हि सठ आरत तबखे
न॥ ३३५॥ चौ॥ मएन ताई मन कछु रोषा॥ कहिन्नि यवचन काम प्रतोषा
नाइ चरन कीन्त आइ सपाइ॥ गयो मदन तबस हत सहाए॥ मनिस
सीत्त ताम्र पायन कर्नीं॥ सर धति समाआइ सब बनीं॥ मति सबके मन
मचर्ज आवा॥ मनहिं प्रसंसहिं हरि हिसि नावा॥ तब नादंगब नेसी
वपाही॥ जे ताकाम जाहिं प्रीति मनि माही॥ मार बरति संकर ही
सनाए॥ प्रति थ्रिय जान संकरी सिबाए॥ बार बार बिनवो मन तो
ही॥ जे भिए हृकधा सनाए ब्रमोही॥ तिमिजनि हरि हि सनावजु
कबहुं॥ चलेप्र संगा इराए ज तब हुं॥ ३३६॥ दो॥ पंम दीन उपदे
सहित तन हिनाई हि सो हान॥ मार दर्जि कौतक सनज हरि इथा
बलवान॥ ३३७॥ चौ॥ रामकीन चाहहिं जस होई॥ करै अन्यथा

राम
४७

राम
४८

अस्मन नहिं कोशी॥ प्रेम बचन मुनि मन नहिं माए॥ तब बिरंच के लोक सिधाए
एकवार करतल वर वीना॥ गावत हरि गुन गान प्रवीना॥ छीर सिंधु
गवने मुनिनाथा॥ जहं वस श्रीनिवास स्रुति माथा॥ हर्षि मिले उठि र
मानिकेता॥ बैठे आसन रिषहि समेता॥ बोले बिहस चराचर राया॥
बहुते दिन कीन मुनि दाया॥ काम चर्त नारद सब भाषे॥ यद्यपि प्रथ
म वर्जि शिव राषे॥ अति प्रचंड रघुपति कै माया॥ जेहि न मोहि अस को
जग जाया॥ १२८॥ दो॥ रूष वदन कर बचन मृदु बोले श्री भगवान॥ तु
मरे सुमरन ते मिटहि मोहि मार मद मान॥ १२९॥ चौ॥ सुनु मुनि मो
हि होइ मनि ताके॥ ज्ञान विराग हृदय नहि जाके॥ ब्रह्मचर्ज ब्रत रत
मति धीरा॥ तुमहि कि करै मनोभव पीरा॥ नारद कहेउ सहित अभि
माना॥ कृपा तुम्हारि सकल भगवाना॥ करुनानिधि मन दीष बीचा
री॥ उर अंकुरेउ गर्व तरु भारी॥ बेगि सु मैं डारिहौं उपारी॥ पन हमा
र सेवक हितकारी॥ मुनि कर हित मम कौतुवा हेरी॥ अवस उपाय

करवमै सोई॥ तब नारद हरिपद सिर नाई॥ चला हृदय अहमिति
अधिकाई॥ श्रीपति निज माया तब प्रेरी॥ सुनहु कठिन करनी तेहि केरी॥३४०॥
दो॥ बिरचेउ मग महु नगर तेहि सत जोजन बिस्तार॥ श्रीनिवासपुर ते
अधिक सोभा बहु प्रकार॥३४१॥ चौ॥ बसहि नगर संदुर नर नारी
जनु बहु मनसिज रति तनुधारी॥ तेहि पुर बसै शील निधि राजा
अगनित हय गय सेन समाजा॥ शत सुरेस सम बिभव बिलासा॥
रूप तेज बल नीति निवासा॥ विश्वमोहनी तासु कुमारी॥ श्री बिमो
हि जिसु रूप निहारी॥ सोई हरि माया सब गुन खानी॥ सोभा तासु
कि जाइ बखानी॥ करै स्वयंबर सो नृपबाला॥ आए तिहु अगनित
महिपाला॥ मुनि कौतुकी नगर तेहि गयो॥ पुरबासनि सब पूछ
त भयो॥ सुनि सब चरित भूपगृह आए॥ करि पूजा नृप मुनि बैठाए
॥३४२॥ दो॥ आनि दिखाई नारदहि भूपति राजकुमार॥ कहहु नाथ गु
न दोष सब एहि के हृदय विचार॥३४३॥ चौ॥ देखि रूप मुनि बिरति बि

मारीं बड़ी बार लगि रहे निहारी॥ लछनि तासु बिलोकम् लोने॥ जु दै हदी
न लहि प्रगट बखाने॥ जो ए हवरे अमर सो श्री होइ॥ सम रम मति हली
तन केही॥ सेस वहि सकल चराचर ताही॥ वरै शील निधि कंन्या जाही॥ ल
छु न सब विचार मन रावे॥ कछु कबनाइ भूप सन भाषे॥ सुत सल छ
न कहि न्रपया हीं॥ सरद चले सोच मन माहीं॥ करौ सोइ जाइ जतनु बि
चारी॥ जेहि प्रकार मोहि वरै कुमारी॥ जपतप कुछ न होइ एहि काला॥ हे वि
धि मिलै कवन बिधि बाला॥ २४३॥ दो॥ एह अवसर चाहिय परम सोभा
रुप विसाल॥ सो विलोकरी मैं कुयर तब मेलै जयमाल॥ २४४॥ चौ॥ हरि
सन मागौ सुंदरताई॥ होइ जात गहरु अति भाई॥ मेरे हित हरि सम
नहि केऊ॥ एहि अवसर सहाइ सोइ होइ॥ बहु बिधि बिनय कीन तेहि
काला॥ प्रगटेउ प्रभु कौतकी कृपाला॥ प्रभु विलोक मुनि नयन जुड़ाने
होइ है काज हृदय हरषाने॥ अति आरत कहि कथा सुनाई॥ करौ कृपा प्रभु

हेउ सरूसी॥ आपन रूप देउ हरि मोही॥ आन भांति नहि पावौ ओही॥ जे
हि बिधि नाथ होत हित मोरा॥ करउ सो बेगि दास मैं तोरा॥ निज माया
तब देखि बिशाला॥ हिय हस बोले दीनदयाला॥३४५॥ दो॥ जेहि बिधि हो
इ हि परम हित नारद सुनउ तुम्हार॥ सोई मै करब न आन कछु ब
चन न म्रषा हमार॥३४६॥ चौ॥ कुपथ मांग रुज ब्याकुल रोगी॥ बैद न दे
य सुनउ मुनि योगी॥ एहि बिधि हित तुम्हार मै ठयउ॥ कहि अस अंत
रहित प्रभु भयउ॥ माया बिबश भए मुनि मूढा॥ समुझी नहि हरि गि
रा निगूढा॥ गवने तहां तुर [illegible] ति ऋषिराशी॥ जहं स्वयंबर भूप बना
शी॥ निज निज आसन बैठे राजा॥ बहु बनाव करि सहित समाजा॥
मुनि मन हरष रूप अति मोरे॥ मोहि तजि आनहि बरहि न मोरे॥ मु
नि हित कारन कृपानिधाना॥ दीन कुरूप न जाइ बखाना॥ सो चरित्र ल
ख काहु न पावा॥ नारद जान सबहि सिर नावा॥३४७॥ दो॥ रहे तहां दु
इ रुद्र गन ते जानहि सब भेउ॥ बिप्र बेष देखत फिरहि परम कौत

आकाशवानी भै इ

संका नम एक दुइ कहौं बखानी तौ एक औ दुइ ये तीन कल्प की कथा स्वरूप करि श्री
शंकर पार्बती प्रति कहि चुके तब चतुर्थ कल्प की कथा कहिबे लागे मनु के प्रकरण की
तब कश्यप अदिती औ नारद के श्राप की भी कथा कही तौ पूर्व कल्प की कथा इहां
कहि तें आई उत्तर इहै प्रकरण जान्यो है औ सप्तकांड गत है प्रथम कल्प भेद कथा
भेद बहुत है प्रथम सकल ग्रंथकार को यह है प्र० चौ० सो सब हेतु कहब मैं गाई कथा
चरि प्रबंध विचित्र बनाई कल्प भेद हरि चरित सुहाए भांति अनेक मुनीसन गाए इत्या
दि पुनः संकल्प शंकर को चौ० अपर हेतु सुनु सैलकुमारी कहौं विचित्र कथा
विस्तारी कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं चारु चरित नाना विधि करहीं विवि
ध प्रसंग अनूप बखाने करहिं न कछु आचरय सयाने इत्यादि पुनः संकल्प
शंकर को अब कल्प भेद [illegible] निर्णय सुनो जब शंकर तीन कल्प की कथा कही के
चतुर्थ कल्प कथा कहिने लगे तब यह वाक्य कह्यो प्र० चौ० लीला कीन्ही जो तेहि
अवतारा सो सब कहिहौं मति अनुसारा यांते यह ज्ञान परयो कि जो लीला चतु
र्थ अवतार श्री साकेत बिहारी की है सो सब रुचइ इहि जानके तुमारे मोहनास
र्थ कहत हैं औ कथा विचित्रता के लीये पूर्व कल्प की कथा तीन सो तु स्वरूप
ले कहैंगे तां मैं दुइ अवतार तो श्री विष्णु को है औ एक अवतार छीरशा
ई श्री नारायण को है औ एक अवतार श्री साकेत बिहारी को है तीनों कथा
क मते सप्तकांड मै निर्बाह करी है एक कथा दुइ गोसाई तिन्ह को उदाहर

९६

९८

५१ ण क्रमतेस्तनो प्रथमश्रीविष्णुअवतारकथामानगत ग्रं॰थौ पुरवे
कुंठज्ञानकहहकोई आकासबानीकोवाक्य यों है कश्यपअदितिमहात
पकीन्हा तिनहूंकोहमपूर्बवरदीना फेरजनमसमय छंद निजआ
युध भुजचारी पुनः भयउ प्रकटश्रीकंता पुनः विप्रचररा देवत
मनलोभा पुनः गंगाप्रमाणचौ पदनबनिर्बिदेवसरिहरबी पुनख
मल्लुकहिरामाद्भिवासा पुनः मंदोदरीवाका चौ अतिवलमधुकैट
भजेहमारे महावीरदितिसुतसंहारे जेहवलिवाधसहसभुजमारा
सोअवतरेउ हरसाम हिभारा पुनः माल्यवंत दो हिरन्याक्षभ्राता
सहतमधुकैटभबलवान जेहिमारे सोईअवतरेकृपासिंधुभगवा
न पुनः छंद जेरामरमारमसंसमन इत्यादिअनेकवाक्यविष्णुअव
तारकेमानसगतहै अबक्षीरसाई भगवानरामअवतारकथासुनो
दो सदाक्षीरसागरसयन पुनः शोबसहस्त्रसीसजगकारणा पुनकोउ
कह पयनिधबसप्रभु सोई पुनः नारदवचन चौ मोर स्नापकरअं
गीकारा सहितरमनादुःखभारा इत्यादि अबश्रीसाकेतबिहारीवतरन्य
रतनन्द्विभुजतिन्हको परत्वपर प्रकरणसुनो सतीप्रकरण ग्रं॰थौ है

५२

कीतेउ ॥३४८॥ चौ॥ जेहि समाज बैठे मुनि जाई॥ हृदय सरूप अहमिति
अधिकाई॥ तहँ बैठे महेस गन दोऊ॥ विप्रवेष गति लषै न कोऊ॥ क
रहि कूटि नारदहि सुनाई॥ नीकि दीन्ह हरि सुंदरताई॥ रीझहि राजकुअर
छबि देषी॥ इन्हहि वरहि हरि जानि विशेषी॥ मुनिहि मोह मन हाथ पराए
हसहि शंभुगन अति सचु पाए॥ जदपि सुनहि मुनि अटपट बानी॥ स
मुझि न परै बुधि भ्रम सानी॥ काहू न लषा सो चरित विशेषा॥ सो सरूप
नृपकंन्या देषा॥ मर्कट बदन भयंकर देही॥ देषत हृदये क्रोध भा ते
ही ॥३४९॥ दो॥ सषी संग लै कुअर तब चली जनु राजमराल॥ देषत फिरै
महीप सब कर सरोज जयमाल॥३५०॥ चौ॥ जेहि दिसि बैठे नारद फूली॥ सो दिसि ति
हन बिलोकी भूली॥ पुनि पुनि मुनि उकसहि अकुलाही॥ देषि दसा हर गन मुस
काही॥ धरि नृपतनु तहँ गयो कृपाला॥ कुअर हरषि मेली जयमाला॥ दुलह
नि लै गए लछिनिवासा॥ नृपसमाज सब भयो निरासा॥ मुनि अति बिकल मो
हि मति नाठी॥ मनि गिरि गई छुटि जनु गाठी॥ तब हर गन बोले मुसकाई॥ नि
ज मुष मुकर बिलोकहु जाई॥ अस कहि दोउ भागे भय भारी॥ बदन दीष मु

राम
बा
५१

निवारनहारी॥ बिषविलोकको घाअति बाठा॥ तिनहि आपदी नञति
गाढा॥ ३५१॥ दो॥ हेउ अनेक चर जाइ तुम कपटी पापी देय॥ सुसेउ
हमोह सुलेउ फलु बहुर हसेउ मुनि कोइ॥ ३५२॥ चौ॥ पुनि जल दी
मरूप निजपावा॥ तदपि संतोष बनि आवा॥ फुर कन्न घर कोप मनमा
ही॥ देहों आप कि मर हों जाही॥ जगति मोहि उपला सकराही॥ बीच
हि पंथ मिल्यो दनजारी॥ संग गेर मामोही राजकुमारी॥ बोले मधु
र बचन सुर सांही॥ मनि कहि चले छिकल की नाही॥ सुनत ब
चन उपजा अति क्रोधा॥ माया बस न रहा मन बोधा॥ पर संपदा
कउ नहि देखी॥ तुमरे हीर बाक पटिव शेखी॥ मय तंसि हुन द्वहि
बउ राय उ॥ स्मर नि खेरि विबपान कराय उ॥ ३५३॥ दो॥ गसर समरा
बेष शंकर हि जाय परमामन चाह॥ स्वार्थ साइ क कुटल तुमस
दा कुटल बिवहार॥ ३५४॥ चौ॥ पर मस तं हन सीर पर केही॥ मा
वे म हि कर होत मसोही॥ भलेउ मंद मंद उ भल करहु॥ विसम

राम
५१

सिद्ध

७

बेशीविधविष्णुअनेका अमितप्रभावएकतेएका बंदतचरणक
रतप्रभुसेवा पुनः मनुः प्रकर्ण प्र॰ चौ उपजयजासुअंसतेनाना
शंभुविरंचिविष्णुभगवाना नमसेवकसुरतरुसुरधेनु विधि
हरिहरबंदितपदरेणु पुनः बाललीला प्र॰ दो दिखालरामभा
तहिनिजअद्भुतरूपअखंड रोमरोमलागे हैं कोटिकोटिब्रह्मं
ड प्रतिब्रह्मांडमे ब्रह्मांविष्णुमहेसगाए हैं जहांकोटिनब्र
ह्मांडरोमरोप्रति हैं तहां योकिमत पुनः चौ हरिहितसहि
तरामजबजोये रमासमेतरमापतिमोहे पुनः सतीप्र॰ चौ देखे
पचतुर्भुजरूपदिखावा मुनिअकुलायउठा तबकैसे पुनः हनु
मंत चौ कलिमलतीनदेवमकेउ नामविष्णुहैअथवानरनाथ
यस कीन्हमदोनेनामहीरश्याईहौं, अथवा जगकारणतारण
भवभंजनधरणीभार कीन्हम, अखिलभुवनपति लीनमनुज

अवतार अर्थात्सोंकेतविहारीहौं इत्यादिवाकैः संकापरीह्वार

पर हर्ष बन कछु मन घर कहू ॥ डहक डहक परचेहु सब काहू ॥ अति असंक मन सदा उछाहू ॥ करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा ॥ अब लगि तुम्हहि न काहू साधा ॥ भले भवन अब बायन दीन्हा ॥ पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥ बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा ॥ सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ॥ कपि आकृति तुम्ह कीन्ह हमारी ॥ करिहै कीस सहाइ तुम्हारी ॥ मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी ॥ नारि बिरह तुम्ह होब दुखारी ॥ १५५ ॥ दो ॥ श्राप सीस धरि हर्षि हिय प्रभु बहु बिनती कीन्ह ॥ निज माया कर प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्ह ॥ १५६ ॥ चौ ॥ जब हरि माया दूरि निवारी ॥ नहि तहां रमा न राजकुमारी ॥ तब मुनि अति सभीत हरि चर्ना ॥ गहे पाहि प्रनतारति हर्ना ॥ मृषा होउ मम श्राप कृपाला ॥ मम इछा कह दीन दयाला ॥ मैं दुरबचन कहे बहुतेरे ॥ कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे ॥ जपहु जाइ संकर सत नामा ॥ होइहै हृदय तुरत विश्रामा ॥ कोउ नहि शिव समान प्रिय मोरे ॥ असि परतीति तजहु जनि भोरे ॥ जेहि पर कृपा न करहि पुरारी ॥ सो न पाव मुनि भक्ति हमारी ॥ अस उर धरि महि विचरहु जाई ॥ अब न तु

बं

राम
बा
५२

मनमहिमायानियराई॥१५७॥दो॥बहुबिधिमुनिहिप्रबोधप्रभुतब
भएअंतरधान॥सत्यलोकनारदचलेकरतरामगुनगान॥१५८॥
चौ॥हरगनमुनिहिजातपथदेषा॥बिगतमोहमनहर्षबिशेषा॥अ
तिसभीतनारदपहिंआइ॥गहिपदआरतबचनसुनाए॥हरगनह
मनविप्रमुनिराया॥बडअपराधकीनफलपाया॥श्रापअनुग्रहकर
हुकृपाला॥बोलेनारददीनदयाला॥निशाचरजाइहोहुतुमदोऊ॥बै
भवविपुलतेजबलहोऊ॥भुजबलबिश्वजितवतुमजहीया॥समर
मरनहरिहाथतुमारा॥होइहुमुक्तिनपुनसंसारा॥चलेजुगलमुनि
पदसिरनाई॥भयेनिशाचरकालमहिजाई॥१५९॥दो॥एककलपए
हहेतुप्रभुलीनमनुजअवतार॥सुररंजनसज्जनसुषदहरिभंज
नभुविभार॥१६०॥चौ॥एहिबिधिजन्मकर्महरिकेरे॥सुंदरसुषदविचि
त्रघनेरे॥कलपकलपप्रतिप्रभुअवतरहीं॥चारुचरितनानाबिधिक
रहीं॥तबतबकथामुनीसनगाई॥परमपुनीतप्रबंधबनाई॥वि

राम
ऊ
५२

वधप्रसंगअनूपवखाने॥ करहिं न सुनि आचरजु सयाने॥ हरि अनंत हरि
कथा अनंता॥ कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता॥ रामचंद के चरित सुहा
ए॥ कलप कोटि लगि जाहिं न गाए॥ येहि प्रसंग मैं कहा भवानी॥ हरि मायाँ मो
हहिं मुनि ग्यानी॥ प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी॥ सेवत सुलभ सकल दुख हारी
॥१४१॥ सो॥ सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल॥ अस विचार म
न माहिं भजीये महामाया पतिहि॥१४१॥ चौ॥ अपर हेतु सुनु सैलकुमारी
कहौं विचित्र कथा विस्तारी॥ जेहि कारन अज अगुन अरूपा॥ ब्रह्म भए कोस
लपुर भूपा॥ जो प्रभु विपिन फिरत तुम देखा॥ बंधु समेत धरे मुनि बेषा॥
जासु चरित अवलोक भवानी॥ सती शरीर रहिहु बौरानी॥ अजहुँ न छा
या मिटति तुम्हारी॥ तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी॥ लीला कीन जो तेहि अवतारा॥ सो
सो सब कहिहौं मति अनुसारा॥ भारद्वाज सुनि शंकर बानी॥ सकुच सप्रेम
उमा मुसकानी॥ लगे बहुर बरनै बृषकेतु॥ सो अवतार भए जेहि हेतु॥
१४२॥ दो॥ सो मैं तुम सों कहौं सब सुनु मुनीस मन लाइ॥ रामकथा कलि

मत्त हर्षि कर्न सम सकल सहाइ ॥३८४॥ चौ॥ स्वयंभू मनु अरु सतरूपा
तिन ते भै नर सृष्टि अनूपा ॥ दंपति धर्म आचरनि नीका ॥ आजहु गाव श्रु
ति जिन केलीका ॥ नृप उतान पाद सुत तासू ॥ ध्रुव हरि भक्ति भयो सुत जा
सू ॥ लघु सुत नाम प्रियाब्रत ताही ॥ देवहूति पुनि तासु कुमारी ॥ जो मु
नि कर्दम के प्रिय नारी ॥ आदिदेव प्रभु दीन दयाला ॥ जठर धरेउ जेहि क
पिल कृपाला ॥ सांख्य शास्त्र जिन प्रगट बखाना ॥ तत्व विचार निपुन
भगवाना ॥ तेहि मनु राज कीन बहु काला ॥ प्रभु आयसु सब विधि प्रति
पाला ॥ ३८५ ॥ सो॥ होइ न विषय विराग भवन बसत भा चौथपन ॥ हृदय बहु
त दुख लागी जन्म गयो हरि भक्ति बिनु ॥ ३८६ ॥ चौ॥ बरबस राज सुतहि
तब दीना ॥ नारि समेत गवन बन कीना ॥ तीर्थ वर नैमिष विख्याता ॥
अति पुनीत साधक सिधि दाता ॥ बसहि तहां मुनि सिद्धि समाजा ॥ तहं हरषि च
ल्यो मनु राजा ॥ आए मिलन सिद्धि मुनि ज्ञानी ॥ धर्म धुरंधर नृप रिषि जानी ॥ ज
हं जहं तीर्थ रहे सुहाए ॥ मुनिन्ह सकल सादर करवाए ॥ कृश शरीर मुनिपट धर

राम
बा
५१

ब
राम
५२

धाना॥ संत समाज नित सुनत नहि पुराना॥ ३४७॥ दो॥ द्वादस अक्षर मंत्र पुनि जपहि सहित
अनुराग॥ वासदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग॥ ३४८॥ चौ॥ करहि अहार साक
फल कंदा॥ सुमरहि ब्रह्म सच्चिदानंदा॥ पुनि हरि हेत करन तप लागे॥ बा
रि अधार मूल फल त्यागे॥ उर अभिलाष निरंतर होई॥ देखीये नैन परम प्रभु
सोई॥ अगुन अखंड अनंत अनादी॥ जिह चिंतहि परमार्थ बादी॥ नेति नेति
जिह बेद निरूपा॥ निजानंद निरुपाधि अनूपा॥ संभु बिरंचि बिस्नु भगवा
ना॥ उपजहि जासु अंस ते नाना॥ ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई॥ भक्ति हेत
लीला तन गहई॥ जौ जेह बचन सत्य श्रुति भाषा॥ तउ हमार पूजहि अभि
लाषा॥ ३४९॥ दो॥ इह बिधि बीते बर्ष षट सहंस बारि आहार॥ संबत सप्त
सहंस पुनि रहे समीर अहार॥ ३५०॥ चौ॥ वर्ष सहस्र दस त्यागेउ सोऊ॥ ठा
डे रहे एक पद दोऊ॥ बिधि हरि हर तप देखि अपारा॥ मनु समीप आए बहु
बारा॥ मांगहु बर बहु भांति लुभाए॥ परम धीर नहि चलहि चलाए॥ अ
स्थि मात्र होइ रहे शरीरा॥ तदपि मनाग मनहि नहि पीरा॥ प्रभु सर्बज्ञ दास
निज जानी॥ गति अनन्य तापस नृप रानी॥ मांगु मांगु बर भै नभ बानी॥

परम गंभीर कृपामृत सानी॥ म्रतक जिआवनि गीरा सुहाई॥ श्रवन रंध्र होइ उर जब
आई॥ हृष्टपुष्ट तन भए सुहाए॥ मानहुं अबहि भवन ते आए॥ ३२१ दो॥ श्रवन सु
धा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात॥ बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय
समात॥ ३२२ चौ॥ सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू॥ बिधि हरि हर बंदित पद रेनू॥ सेवक
सुलभ सकल सुखदायक॥ प्रनतपाल सचराचर नायक॥ जौं अनाथ हित हम
पर नेहु॥ तौ प्रसन्न होइ यह वर देहु॥ जो सरूप बस सिव मन माही॥ जेहि कारन मु
नि जतन कराही॥ जो भुसुंडि मन मानस हंसा॥ सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा॥
देखहि हम सो रूप भरि लोचन॥ कृपा करहु प्रनतारति मोचन॥ दंपति बचन परम
प्रिय लागे॥ म्रदुल बिनीत प्रेम रस पागे॥ भगत बछल प्रभु कृपानिधाना॥ बिस्व
बास प्रगटे भगवाना॥ ३२४ दो॥ नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्या
म॥ लाजहि तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥ ३२५॥ चौ॥ सरद मयं
क बदन छबि सींवा॥ चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा॥ अधर अरुन रद
सुंदर नासा॥ बिधु कर निकर बिनिंदक हासा॥ नव अंबुज अंबक छबि नीकी

शंका मनु शतरूपा के वरदान समै युगल किशोर प्रकट भये औ वरदान केव
ल श्री राघव जी ने दीयो श्री किशोरी जी ने काहे सो का है उत्तर ... काहू पूछी
तें केवल राम उपासना गाई प्र० दो० वाम देव पद ...
की॥ चितवहिं मिलि लेत भावती जी की॥ भ्रकुटि मनोज चाप छबि हारी॥ तिलक ललाट
पटल दुतिकारी कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा॥ कुटिल केश जनु मधुप समा
जा॥ उर श्रीवत्स रुचिर बनमाला॥ पदिक हार भूषन मनिजाला॥ केहरि कं
धर चारु जनेऊ॥ बाहु बिभूषन सुंदर तेऊ॥ करि कर सरिस सुभग भुज
दंडा॥ कटि निषंग कर सर कोदंडा॥ १४६॥ दो॥ तड़ित बिनिंदक पीत पट उ
दर रेख बर तीन॥ नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवर छबि छीन॥ १४७॥ चौ
पद राजीव बर्नि नहिं जाही॥ मुनि मन मधुप बसहिं जिन्ह माहीं॥ बाम भाग सो
भत अनुकूला॥ आदि शक्ति छबि निधि जग मूला॥ जासु अंस उपजहिं गुनखा
नी॥ अगनित लछमि उमा ब्रह्मानी॥ भ्रकुटि बिलास जासु जग होई॥ राम बाम
दिसि सीता सोई॥ छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी॥ इकटक रहे नैन पट रोकी॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा॥ तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा॥ हर्ष बिबस त
न दसा भुलानी॥ परे दंड इव गहि पद पानी॥ सिर परसे प्रभु निज कर कंजा॥
तुरत उठाए करुनापुंजा॥ १४८॥ दो॥ बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि॥
नः चौ० पुनः हरि हेतु न कररात तप लौ गो इत्यादि क्रिया नेक वाक्य है किंतु मनु म
न महाराज ... की ... तो श्री राघव

सुघवडुपातनको गाई तो ग्रंथकार को पूर्व संकल्प इहि है प्र॰ चौ॰ जिह कारण
जन्म ... ब्रह्म भयो कौसल्यपुर ... श्री राम के हेत मैं श्री

जान ॥ मागु बरु जोइ भाव मन महादान अनुमान ॥ १४८ ॥ चौ॰ सुनि प्रभु बचन
जोरि युग पानी ॥ धरि धीरज बोली मृदु बानी ॥ नाथ देखि पद कमल तुम्हारे ॥ अ
ब पूरे सब काम हमारे ॥ एक लालसा बडि उर माहीं ॥ सुगम अगम कहि जात सो ना
हीं ॥ तुम्हहि देत अति सुगम गोसांई ॥ अगम लाग मोहि निज कृपनाई ॥ सो तु
म्ह जानहु अंतरजामी ॥ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥ सकुच बिहाइ मांगु नृप
मोहि ॥ मोरे नहीं अदेय कछु तोही ॥ १५० ॥ दो॰ दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौं
सतिभाउ ॥ चाहौं तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ॥ १५१ ॥ चौ॰ देखि प्री
ति सुनि बचन अमोले ॥ एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥ आपु सरिस खोजौं कह
जाई ॥ नृप तव तनय होब मैं आई ॥ सतरूपहि बिलोकि करि जोरे ॥ देवि मां
गु बरु जो रुचि तोरे ॥ जो बरु नाथ चतुर नृप मागा ॥ सोई कृपाल मोहि अति
प्रिय लागा ॥ प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई ॥ जदपि भक्त हित तुम्हहि सुहाई ॥
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी ॥ ब्रह्म सकल उर अंतरजामी ॥ अस समुझत म
न संसय होई ॥ कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई ॥ जे निज भक्त नाथ तव अहहीं ॥ जो

...महाराज ... श्री जानकी जी ... विदेह महाराज को ... भाग मैं है
प्र॰ चौ॰ जनक ... वैदेही दशरथ ... राम घर देही इहाँ वि

सब पावहि जो गति हरी ॥ ३८२ ॥ दो ॥ सोइ सरख सो गति भगति सोइ सोइ द्विज च
र्न सनेउ ॥ सोई विवेक सोई रहनि प्रभु अनुग्रह करि पा करि देहि ॥ ३८३ ॥ चौ ॥ सुनि मु
दु गरुड रुचिर बर रचना ॥ कृपा सिंधु बोले मृदु बचना ॥ जो कछु संदेह तुम्हरे मन
माही ॥ मै सोदी कु सब संसय नाही ॥ मातु विवेक अलौकिक तोरे ॥ कबहु न मि
टहि अनुग्रह मोरे ॥ बंद चर्न मन कहि बहु होरी ॥ अब र एक बिनती प्रभु मो
री ॥ सति विघइ कतब पद रति होऊ ॥ मोहि बहु सठ कह इ कोकिन केऊ ॥ मनि
बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना ॥ मम जीवन तिमि तुम्ह अधीना ॥ अस सव र मागी
चर्न गहि रहिउ ॥ एवमस्तु करुणानिधि कहिउ ॥ अब तु मम मम अनुसा
सन मानी ॥ बसउ जाइ सुरपति रजधानी ॥ ३८४ ॥ सो ॥ तहु करि भोग विसा
ल तात गए कछु काल पुनि ॥ होइ हु अबध मध्य ल तब मैं हे बनु मार सुत ॥
३८५ ॥ चौ ॥ इच्छामय नर वेष सवारे ॥ होइहउ प्रगट निकेत तुम्हारे ॥ अंसनि
सहित देह धरि ताता ॥ करिहौ चरित भगत सुख दाता ॥ पूर्व मै अभिलाष तुम्हारा ॥
सत्य सत्य पर्न सत्य हमारा ॥ पुनि पुनि अस कहि कृपा निधाना ॥ अंतरधान

भयेभगवाना॥ दंपतिउरधरिभगतिक्रपाला॥ तेहिआश्रमनिवसेकछुकाला
समयपायतनतजिअनयासा॥ जाइकीनअमरावतिवासा॥ ३८६॥ दो॥ यह
इतिहासपुनीतअतिउमहिकहाब्रषकेत॥ भारद्वाजसुनअपरपुनिरामज
नमकेहेत॥ ३८७॥ चौ॥ सुनिमुनिकथापुनीतपुरानी॥ जोगिरिजाप्रतिशंभुबखानी

बिस्वबिदितएककैकयदेसू॥ सत्यकेतुतहँबसेनरेसू॥ धर्मधुरंधरनीतनि
धाना॥ तेजप्रतापशीलबलवाना॥ तेहिकेभएजुगलसुतबीरा॥ सबगुन-
धाममहारनधीरा॥ रजधानीजोजेठसुतआही॥ नामप्रतापभानुअसता
ही॥ अपरसुतहिअरमर्दननामा॥ भुजबलअतुलअचलसंग्रामा॥ भाइ
हिभाइहिपरमसमीती॥ सकलदोषछलबरजितप्रीती॥ जेठेसुतहिराज
नृपदीना॥ हरिहितआपगवनबनकीना॥ ३८८॥ दो॥ तबप्रतापरबिभएन्र
पफिरीदुहाईदेस॥ प्रजापालअतिवेदबिधिकतहुँनहींअघलेस॥ ३८९॥
चौ॥ नृपहितकारकसचिवसयाना॥ नामधर्मरुचिसुक्रसमाना॥ सचिव
सयानबंधुबलबीरा॥ आपप्रतापपुंजरनधीरा॥ सेनसंगचतुरंगअपारा

गामितिसभटसबसमरजुझारा॥सेनविलोकिराउहरषाना॥ग्ररुबाजेगहगहेनिशा
ना॥विजेहेतकटकइकनाई॥सुदिनसाधिन्रपचलेबजाई॥जहतहपरीअनेकल
राई॥जीतेसकलभूपवरिआई॥सप्तदीपभुजबलवसकीने॥लैलैदंडछाडिन्र
पदीने॥सकलअवनिमंडलतेहकाला॥एकप्रतापभानुमहिपाला॥१५९॥दो॥स्व
वसविस्वकरिवाहुबलनिजपुरकीनप्रवेस॥ग्ररथधर्मकामादिसुखसेवयसमे
नरेसु॥१५४॥चौ॥भूपप्रतापभानुबलपाई॥कामधेनुभइभूमिसुहाई॥सबदुख
वर्जितप्रजासुखारी॥धर्मशीलसुंदरनरनारी॥सचिवधर्मरुचिहरिपदप्रीती॥
न्रपहितहेतुसिखवनितनीती॥गुरसुरसंतपितरमहिदेवा॥करैसदान्रपस
वकीसेवा॥भूपधर्मजेवेदवषाने॥सकलकरैसादरसुखमाने॥दिनप्रतदे
इविविधविधदाना॥सुनैशास्त्रवरवेदपुराना॥नानावापीकूपतडागा॥
सुमनवाटकासुंदरबागा॥विप्रभवनसुरभवनसुहाए॥सबतीर्थनविचि
बनाए॥१५५॥दो॥जहलगिकहेपुरानश्रुतिएकएकसबजाग॥बारसहस्र
सहस्रन्रपकीएसहितअनुराग॥१५६॥चौ॥हृदयनकछुफलअनुसंधा
ना॥भूपविवेकीपरमसुजाना॥करेजेधर्मकर्ममनवानी॥वासदेवअर्पति

नृपजानी ॥ चढ़िबरबाजिबारएकराजा ॥ मृगयाकरिसबसाजिसमाजा ॥ बिंध्या
चलगंभीरबनगयो ॥ मृगपुनीतबहुमारतभयो ॥ फिरतबिपिननृपदीख
बराहु ॥ जनुबनदुरेउससिहिग्रसिराहु ॥ बड़बिधुनहिंसमातमुखमाहिं
मनहुंक्रोधबसउगलतनाहिं ॥ कोलकरालदसनछबिगाई ॥ तनुबिसालपी
वरअधिकाई ॥ घुरघुरातहयआरोपाए ॥ चकितबिलोकितकानउठाए ॥
३९४ दो ॥ नीलमहीधरसिखरसमदेखिबिसालबराहु ॥ चपरिचल्योह
यसुटकिनृपहांकिनहोतनिबाहु ॥ ३९५ ॥ चौ आवतदेखिअधिकरवबा
जी ॥ चल्योबराहमरुतगतिभाजी ॥ तुरतकीननृपसरसंधाना ॥ महि
मिलगयोबिलोकतबाना ॥ तकितकितीरमहीसचलावा ॥ करिछ
लसुअरशरीरबचावा ॥ प्रगटदुरतजाइमृगभागा ॥ रिसबस
भूपचल्योसंगलागा ॥ गयोदुरिबनगहनबराहु ॥ जहंनहिंगज
बाजीनिबाहु ॥ अतिअकेलबनबिपुलकलेसु ॥ तदपिनमृगमग
तजतिनरेसु ॥ कोलबिलोकभूपबड़धीरा ॥ भागपैठगिरिगु

115

न्हगंभीरा॥ अगम देषि नृप अति पछताझी॥ फिरेउ महीपति परेउ भु
लाझी॥ १५८॥ चौ॥ फिरत बिपन आश्रम इक देषा॥ तहँ बस नृपत कप
ट मुनि बेषा॥ जासु देस नृप लीन छड़ाझी॥ समर सेन तजि गयो पराझी
समय प्रतापभानु करि जानी॥ रिस उरि मारि रंक जिम राजा॥ विपन बसे
तापस के साजा॥ तासु समीप गवन नृप कीना॥ इह प्रतापरवि तेझी
तब चीना॥ राउ त्रिषत नहि सो पहिचाना॥ देषि सुबेष महामुनि जा
ना॥ उतर तुरिग ते कीन प्रनामा॥ परम चतुर न कहेउ निज नामा॥ १५९॥
दो॥ भूपति त्रषत विलोकि तेहि सरवर दीन दिषाइ॥ मज्जन पान स
मेत हय कीन नृपत हर्षाइ॥ १५९॥ चौ॥ गए स्रम सकल सुषी नृप भ
यो॥ निज आश्रम तापस लै गयो॥ आसन दीन अस्त रवि जानी॥ पुनि
तापस बोल्यो मृदु बानी॥ को तुम कस बन फिरहु अकेले॥ सुंदर जुवा
जीव परिहेले॥ चक्रवर्ति कें लछन तोरे॥ देषत दया लाग अति मोरे॥
नाम प्रतापभानु अवनीसा॥ जानत हु कछु भल होनिहारा॥ कहि मु
तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा

बैतातभयेअंधारा॥जोजनसत्तरनगरतुम्हारा॥१५८॥दो॥तुलसीजस
भवतब्यतातैसीमिलैसहाइ॥आपुनआवैताहिपहिताहितहालैजाइ॥५·१॥
चौ॥भलेहिनाथआयसुधरिसीसा॥बांधितुरगतरुबैठमहीसा॥न्रपबहुभां
तिप्रसंसेउताही॥चरनबंदिनिजभाग्यसराही॥पुनिबोल्योम्रदुगिरासु
हाई॥जानिपिताप्रभुकरौंढिठाई॥मोहिमुनीससुतसेवकजानी॥ना
थनामनिजकहोबखानी॥तेहिनजानन्रपन्रपहिसजाना॥भूपसु
ह्रदसोकपटसयाना॥बैरीपुनिछत्रीपुनिराजा॥छलबलकीन्हचहै
निजकाजा॥समुझिराजसुखदुखितअराती॥आवाअनलइवसुल
गैछाती॥सरलबचनन्रपकेसुनिकाना॥बैरसंभारह्रदयहरषाना॥
॥४·१॥दो॥कपटबोरिबानीम्रदुलबोलेजुगतसमेत॥नामहमारभि
खारअबनिर्धनरहितनिकेत॥४·२॥चौ॥कहिन्रपजेबिग्यानिनिधानी
तुमसारखेगलितअभिमानी॥सदारहहिआपनपौदुराए॥सबबि
धिकुसलकुबेषबनाए॥तेहितेकहहिसंततस्रुतिटेरे॥परमअकिंचन

प्रिय हरि केरे॥ तुम सम अधन भिषार अगेहा॥ होत बिरंच शिवहि न
संदेहा॥ योसि सोसि तव चर्न नमामी॥ मो पर कृपा करय अब स्वामी॥ सह
ज प्रीति भूपति कै देषी॥ आपु बिषय बिस्वास बिशेषी॥ सब प्रकार राज
हि अपनाई॥ बोलेउ अधिक सनेह जनाई॥ सुनि सति भाउ कहो महिपाला
इहा बसत बीते बहु काला॥ ४३॥ दो॥ अब लगि मोहि न मिल्यो कोउ मैं न जनाउ
काउ॥ लोक मानता अनल सम कर तप कानन दाउ॥ ४४॥ सो॥ तुलसी देषि
सुबेष भूलहि मूढ न चतुर नर॥ सुंदर केकहि पेषि बचन सुधा सम असन
अहि॥ ४५॥ चौ॥ तातै गुप्त रहौं जग माही॥ हरि तजि किम प्रयोजन
नाही॥ प्रभु जानत सब बिनहि जनाए॥ कहहु कवन सिधि लोक रिझाए॥
तुम सुचि सुमति परम प्रिय मोरे॥ प्रीति प्रतीत मोहि पर तोरे॥ अब जौ
तात दुरावौ तोही॥ दारुन दोष बढै अति मोही॥ जिम जिम तापस कहेउ
दासा॥ तिम तिम नृप उपजेउ बिस्वासा॥ देषा स्वबस कर्म मन बानी॥
तब बोले तापस बग ध्यानी॥ नाम हमार एकतनु भाई॥ सुनि नृप बोलेउ

ग

तेसिकन नाशी॥ कहहु नाम कर अर्थ बषानी॥ मोहि सेवक जानि तजापुन जा
नी॥४६॥ दो॥ आदि सृष्टि उपजी जबहि तब उतपति भै मोर॥ नाम एक तनु हेतु
तेहि देह न धरी बहोर॥४७॥ चौ॥ जनि आचर्ज करहु मन माही॥ सुत तप
ते दुर्लभ कछु नाही॥ तप बल ते जग सृजै बिधाता॥ तप बल विस्नु भए
परित्राता॥ तप बल शंभु करहि संघारा॥ तप बल सेस देहि करि
तारा॥ भयो नृपत सुनि अति अनुरागा॥ कथा पुरातन कहै सो लागा॥
कर्म धर्म इतिहास अनेका॥ उद्भव पालन प्रलय कहानी॥ कहिसि
अमित आचर्ज बषानी॥ सुनि महीस तापस बस भयो॥ आपन नाम
मैं कहन तब लयो॥ कह तापस नृप जानौं तोहीं॥ कीन्हेउ कपट लाग भ
ल मोहीं॥४८॥ सो॥ सुनु महीस असि नीति जहं तहं नाम न कहहि
नृप॥ मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुराशी बिचार तव॥४९॥ चौ॥ नाम
तुम्हार प्रताप दिनेशा॥ सत्यकेतु तव पिता नरेशा॥ गुर प्रसाद जानिय सब रा
जा॥ कहिय न आपन जानि अकाजा॥ देखि तात तव सहज सुधाई॥ प्रीति प्रतीत

राम
बा
५९

राम
५९

नीतनिपुनाही॥उपजपरीममतामनमोरे॥कहौंकथानिजपूर्बतोरे॥
अवप्रसन्नमैसंसयनाही॥मागजमंमयभावमनमाही॥सुनिसवबचनभू
पतिहरषाना॥गहिपदविनयकीनविधिनाना॥कृपासिंधमनिदरसनतो
रे॥चारिपदार्थकरतलमोरे॥प्रभहितथापिप्रसन्नविलोकी॥मागिअ
गमवरहोउअसोकी॥४१०॥दो॥जरामरनदुषरहिततनसमरजितेजन
कोउ॥एकछत्ररिपहीनमहिराजकलपशतहोउ॥४११॥चौ॥कहिता
पसनृपऐसेहोऊ॥कारनएककठिनसुनसोऊ॥कालोतुयपदनाइहि
सीसा॥एकविप्रगतछाडिमुनीसा॥तपबलविप्रसदाबरियारा॥ति
नकेकेपनकोउरषवारा॥जोविप्रनवसकरउनरेसा॥तोतुयवस
विधविष्नमहेसा॥चलनब्रह्मकुलसनबरियारी॥सत्यकहोदो
उभुजाउठाई॥विप्रश्रापबिनसुनिमहिपाला॥तोरनासनहिकवने
काला॥४१२॥दो॥एवमस्तुकहिकपटमनिबोलाकुटलबहोरि॥मिल
वहमारभुलावनिजकहहुतहमहिनषोरि॥४१३॥चौ॥तातैमैतो

हिं बरजौं राजा॥ कहे कथा जब परम अकाजा॥ छठें श्रवन इह परत कहानी॥
नास तुमार सत्य मम बानी॥ इह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा॥ नास तोर सुन-
भानप्रतापा॥ आन उपाव नास तव नाही॥ जौं हर हरि कोपहि मन माही॥
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा॥ द्विज गुर कोप कहहु को राषा॥ राषै गुर जौ
कोप बिधाता॥ गुर बिरोध नहि कोउ जग त्राता॥ जौं न चलब हम कहे तुम्हा-
रे॥ होइ नास नहि सोच हमारे॥ एकहि डर डरपत मन मोरा॥ प्रभु म-
हिदेव श्राप अति घोरा॥ १६४॥ दो॰॥ होहि बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृ-
पा करि सोइ॥ तुम तजि दीनदयाल निज हितु न देषौं कोइ॥ १६५॥ चौ॰॥ सुनि नृ-
प बिबिध जतन जग माही॥ कष्टसाध्य पुनि होहि कि नाही॥ अहहि एक अति
सुगम उपाई॥ तहं परंतु एक कठिनाई॥ मम आधीन जुगति नृप सोई॥
मोर जान तव नगर न होई॥ आजु लगे अरु जब ते भयो॥ काहू के गृह
ग्राम न गयो॥ जौं न जाउं तब होइ अकाजू॥ बनो आइ असमंजस आजू॥
सुनि महीस बोले मृदु बानी॥ नाथ निगम असि नीति बखानी॥ बडे

राम ६०

सनेह लघु न परिकरसी ॥ गीरा निज त्याग न सदा सीर धरसी ॥ जल जग गाधि मो
लि बड़ फेनू ॥ संत तथ वर निधरती [illegible] सीर रेनू ॥ ४१६ ॥ दो॥ जम कहि ग हेन रे सपद
स्वामी हेहि कृपाल ॥ मोहि लागी दुख सहे प्रभ सज्जन दीन दयाल ॥ ४१७ ॥ चौ॥ जानि नृ
पहि आपन आधीना ॥ बोला तापस कपट प्रबीना ॥ सत्य कहो भूप तिस निज
व गना हिन दुर्लभ कछु मोही ॥ जब संजमे करहें तोरा ॥ मन तब बचन भक्ति
तै मोरा ॥ जोग जुगत तप मंत्र प्रभाउ ॥ फलै तबै जब करीय दुराउ ॥ जो नरेस
मै करों रसोई ॥ तुम पर सहु मोहि जान न कोई ॥ अंन सो ई जोई जोई भो
जन करई ॥ सो ई सो ई तब आइ सु अनुसरई ॥ पुनि तिन के कर जे वै जो
ई ॥ तब बस हेई भूप बस सो ई ॥ जाइ उपाइ रचहु नृप एहु ॥ संबत पर
संकलप करेहु ॥ ४१८ ॥ दो॥ मै आइ ब सोई बे बृ धरि वहि चाने हु तब मोहि
जब इकांत बोलाइ सब कथा सुनावौ तोहि ॥ ४१९ ॥ [illegible] सयन कीन नृप आ
य समानी ॥ आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥ श्रमित भूप निद्रा अति आई ॥ सो किम
सोव सोच अधिकाई ॥ काल केतु नि[illegible] स्वर तहि आवा ॥

जेहसूकरकरहेतनृपहिभुलावा॥परममित्रतापसनृपकेरा॥जानैसोअ
तिकपटघनेरा॥तेहकेसतसुतअरुदसभाई॥खलअतिअजइदेवदुषदाई
प्रथमहिभूपसमरसबमारे॥विप्रसंतसुरदेषदुषारे॥तेहिंषलपा
छलबैरसंभारा॥तापसनृपमिलमंत्रविचारा॥जेहरिपुषयसोई
रचेन्हिउपाऊ॥भावीवसनजानकछुराऊ॥४२०॥दो॥रिपुतेजसीअकेलअपि
लघुकरिगनयनताऊ॥अजऊदेतदुषरविससिहिसिरअवशेषत
राऊ॥४२१॥चौ॥तापसनृपतवसषहिनिहारी॥हर्षमिल्योउठिभ
योसुषारी॥मित्रहिकहिसबकथासुनाई॥जातधानुबोलासुषपाई॥अ
बसाधेउरिपुसुनऊनरेसा॥जोतुमकीनमोरउपदेसा॥परहरसोच
रहऊतुमसोई॥बिनुऔषधव्याधबिधषोई॥कुलसमेतरिपमूल
बिहाई॥चौथेदिवसमिलबमैंआई॥तापसनृपहिबऊतपरितोषी
॥चलामहाकपटीअतिरोषी॥भानप्रतापहिवाजसमेता॥पहिचाए

सि छन मांझ निकेता॥ नृपहि नारि सहि सयन कराई॥ हयगृह बांधेसि बाजि बना
ई॥४२२॥ दो॥ राजके उपरोहितहि हरि लै गयो बहोरि॥ लै राखेसि गिरि षोह महि मा
या करि मति भोरि॥४२३॥ चौ॥ आपु विरचि उपरोहित रूपा॥ परेउ जाइ तेहि सेज अनू
पा॥ जागेउ नृप अनभए विहाना॥ देषि भवन अति अचरज माना॥ मुनि महिमा मन महि
अनुमानी॥ उठेउ गवें जेहि जान न रानी॥ कानन गयो बाजि चढि तेही॥ पुर नर ना
रि न जानेउ केही॥ गये जाम जुग भूपति आवा॥ घर घर उत्सव बाज बधावा॥
उपरोहितहि देषि जब राजा॥ चकित विलोकि सुमिरि सोइ काजा॥ जुग सम नृप
हि गए दिन तीनी॥ कपटी मुनि पद रहि मति लीनी॥ समय जानि उपरोहित आ-
वा॥ नृपहि मते सब कहि समझावा॥४२४॥ दो॥ नृप हर्षेउ पहिचानि गुरु भ्रम वस
रहा न चेत॥ बरे तुरत सत सहस बर विप्र कुटुंब समेत॥४२५॥ चौ॥ उपरोहित
जेवनार बनाई॥ छरस चारि विधि जस श्रुति गाई॥ मायामय तेहि कीन्ह रसोई॥
ब्यंजन बहु गनि सकै न कोई॥ विविध मृगन्ह कर आमिष रांधा॥ तेहि महि विप्र
मांस खल सांधा॥ भोजन कहु सब विप्र बोलाए॥ पद पषारि सादर बैठाए॥ पर

संका भानुप्रतापतो धर्मात्मा था गरुड देवार्पण कर्म करतो हतो तिसको राक्षस होने का स्राप क्यों भयो उत्तर यह कर्म करनेवाला जीव के प्रारब्ध मुख्य है प्र० तो
तवतो तवतवनहवातानिमिले सहाय तो यह प्रारब्ध कर्म की प्रबलता तै राजा निका

सुनु जब हिलागि गए महिपाला॥ भई अकास बानी तिहि काला॥ विप्रबृंद उठि उठि गृ
ह जाहू॥ है बडि हानि अन्न जनि खाहू॥ भयो रसोई भूसुर मांसू॥ सब द्विज उठे मानि विस्वा
सू॥ भूप विकल मति मोहि भुलानी॥ भावी बस न आव मुख बानी॥ ४२६॥ दो० बोले विप्र स
कोप तब नहि कछु कीन विचार॥ जाइ निसाचर होइ नृप मूढ सहित परिवारि॥ ४२७॥ चौ०
छत्रबंधु तै विप्र बोलाई॥ घालै लीय सहित समुदाई॥ ईश्वर राखा धर्म हमारा॥ जैहसि
तै समेत परिवारा॥ संवत मध्य नास तव होई॥ जलदाता न रहिहै कुल कोई॥ नृप सुनि
श्राप विकल अति त्रासा॥ भई बहोरि बर गिरा अकासा॥ विप्रन श्राप विचार न दीना॥ न
हि अपराध भूप कछु कीना॥ चकित विप्र सब सुनि नभबानी॥ भूप गयो जहि भोजन खानी॥ तह
न असन नहि विप्र सुआरा॥ फिरेउ राउ मन सोच अपारा॥ सब प्रसंग महिसुरन्हि सुनाई॥
त्रसित परेउ अवनी अकुलाई॥ ४२८॥ दो० भूपति भावी मिटै न हि जदपि न दूषन तोरि॥ कि
ये अन्यथा होइ नहि विप्र श्राप अति घोरि॥ ४२९॥ चौ० जौ करि कपट छले जग काहू॥ देसहि
दीस अघ मगति ताहू॥ विप्र बचन सुनि नृप अकुलाना॥ उठि पुनि विनय कीन विधि नाना॥
पुनि पुनि पद गहि कहे भुयाला॥ साप अनुग्रह करहु कृपाला॥ जब तम होव निशाच

र कर्म करत रह्यो सो उस का मम भयो प्र० तो मागि आगम वह होउ विसेकी सो मागवो
सुनो दो० जरमरन दुख रहित तनन समर जितै जन कोउ एक क्षत्र रिपुहीन महि राज क
ल्प सत होउ या तै है जो ये कि राजा की ... नासका लमें कराते होइ

प्र॰ दो॰ भारद्वाज सुनु जाहि जब होत बिधाता बाम धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दा-
म पुनः विप्र वचन प्र॰ दो॰ भू॰प ति भावी मिटै नहीं दुःख्या दि अनेक प्रमाण प्रारब्धक मैके प्र

रजाई॥ ब्रह्मवंस तापस तनु धारी॥ अजर अमर अतुलित प्रभारी॥ जग विख्यात बीर
दोउ भाई॥ सेइ हहिं जब हि पराभव चारी॥ तब तुम सेउ देव पुरारी॥ जीव प्रमाद ब-
लयाइ बहोरी॥ सेइ इहिं सब ज प्रमता तोरी॥ भेल हहिं तो हि त बसन त कुमारा॥ तब तु-
म सम अजवा साय ह मारा॥ ४३०॥ दो॥ तुम्ह पुनि बचन समार निज सादर सन उनरेस
से सपरिवार उधार तब होइहि मुनि उपदेस॥ ४३१॥ चौ॥ अस कहि सब महि देव सि-
धाए॥ समाचार पुरलोक न पाए॥ सोचहि दूषन दैवहि देही॥ बिरचत हंस काग
कि उजेही॥ उपरोहि तहि भवन पहुचाई॥ असुर तापसहि खबर जनाई॥ विविध
भांति करि होइ लराई॥ जेहे सकल सुभट करकनी॥ बंधु समेत परि उन पधनी॥ सत्य
केतु कुल कोउ नहि बाचा॥ विप्र साप किमि होय असाचा॥ रिपु जिति सब नृप नगर बसाई॥ नि-
ज पुर गवने जय जसु पाई॥ ४३२॥ दो॥ भारद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम॥ धूरि मेरु स-
म जनक जम ताहि ब्याल सम दाम॥ ४३३॥ चौ॥ काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा॥ भयो
निसाचर सहित समाजा॥ दस सिर ताहि बीस भुजदंडा॥ रावन नाम बीर बरचं-
डा॥ भूप अनुज अरिमर्दन नामा॥ भयो सो कुंभकर्न बलधामा॥ सचिव जो रहा धर्म-
रुचि जासू॥ भयो बिमात्र बंधु लघु तासू॥ नाम बिभीषन जेहि जग जाना॥ विष्णुभ-

करणी मैं है तातें इह धार प्रत्युगल मनिवर्थ को है पांते कर्म प्रधान इस प्रकरण मैं है सो कहते
कि प्रायने भैसन कर्म ते तो यारा तन भयो परंतु या के सत कर्म यज्ञादिक पू[र्व] ...

तोने द्दा कहीं प्रधान ज्ञाननो हीए १८
लंका रावणने वरदाय न समयमें नर वानर कोटि अन्यके हाथ मरण सेन मरण

तिबिज्ञाननिधाना॥ रहे जो सुत सेवक न्रप केरे॥ भए निशाचर घोर घनेरे॥ कामरू-
प षल जिनस अनेका॥ कुटिल भयंकर विगत विवेका॥ क्रिपा रहित हिंसक सब
पापी॥ बरनि न जाइ विस्व परितापी॥ १७४ दो॰ उपजे जदपि पुलस्तकुल पावन अमल
अनूप॥ तदपि महीसुर श्राप वस भए सकल अघरूप॥ १७५॥ चौ॰ कीन्ह विविध
तप तीनउं भाई॥ परम उग्र नहि वरनि सो जाई॥ गए निकट तब देषि विधाता॥
मागहु वर प्रसन्न मैं ताता॥ करि बिनती पद गहि दससीसा॥ बोल्यो बचन सुनहु ज-
गदीसा॥ हम काहू के मरें न मारे॥ बानर मनुज जाति दुइ वारे॥ एवमस्तु तुम बडु
तप कीना॥ मैं ब्रह्मा मिलि तेहि वर दीना॥ पुनि प्रभु कुंभकरन पहि गयो॥ तेहि बिलो-
कि मन बिसमय भयो॥ जो तेहि षल यह करब अहारू॥ होइहि सब उजार संसारू॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी॥ मांगेसि नीद मास षट केरी॥ १७६ दो॰ गए विभीषन पास
पुनि कहेउ पुत्र वर मांगु॥ तेहिं मांगेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु॥ १७७॥
चौ॰॥ तिनहि देय वर ब्रह्म सिधाए॥ हरषे ते अपने ग्रह आए॥ मय तनुजा मंदोदरि
नामा॥ परम सुंदरी नारि ललामा॥ सोई मय दीन रावनहि आनी॥ होइहि जातुधा-
नपति जानी॥ हरषित भए उनारि भलि पाई॥ पुनि दोउ बंधु बिआहे सु जाई॥ गिरि त्रिकूट

रावणने हाथ है म॰ चौ॰ रावण मरन मनुज कर जाचा प्रतः नर कर...
वध वाची याको मरनतो या भांति नरके हाथ सिद्ध है २ है वानर सो अनेकन

कुनसो राजा भयो निसाचर तहिं तसमाजा दूसरि [illegible] नाम
वीर वरवठा पुनः रहै जेहतै [illegible] कै रे भयो निसाचर घोर घनेरे पुनः

इकाइँ घर मारी॥ विधि निर्मित दुर्ग अति भारी॥ सोई मय दानव बहुरि सवारी॥ कनक
रचित मनि भवन अपारा॥ भोगावति जस अहिकुल बासा॥ अमरावति जस सक्र निवा
सा॥ तिन ते अधिक रम्य अति बंका॥ जग विख्यात नाम तेहि लंका॥ ४३८ दो॥ षाइं सिं
धु गंभीर अति चारउ दिसि फिरि आव॥ कनक कोट मनि षचित दृढ बर्नि न जाइ॥ ४३९
चौ॥ हरि प्रेरित जेहि कल्प तजोइ॥ जातुधान प्रावत सो होइ॥ सूर प्रतापी अतुल
बल॥ दल समेत बस सोइ॥ रहे तहा निशाचर भट भारे॥ ते सब सुरन समर संघा
रे॥ अब तहा रहहि सक्र के प्रेरे॥ रछक कोटि जछपति केरे॥ दसमुख कतहु
खबर असि पाई॥ सेन साजि गढ घेरेसि जाई॥ देषि विकट भट बड़ि कटकाई॥ जछ
जीव लै गए पराई॥ फिरि सब नगर दसानन देषा॥ गयो सोच सुख भयो विसे
षा॥ सुंदर सहज अगम अनुमानी॥ कीन तहा रावन रजधानी॥ जेहि जस जो
ग बांटि गृह दीने॥ सुषी सकल रजनीचर कीने॥ एक बार कुबेर पर धावा॥ पु
ष्पक जान जीत लै आवा॥ ४४० दो॥ देव जछ गंधर्ब नर किंनर नाग कुमार॥ जीति
बरी निज बाहुबल बहु सुंदर बर नार॥ ४४१ दो॥ कौतुक ही कैलास पुनि लीन
जाइ उठाइ॥ मनहु तोलि निज बाहुबल चला बहुत सुष पाइ॥ ४४२ चौ॥ सुष संप

मध्य पुत्त को प्रमाता [illegible] करि है [illegible]
मारी पुनः चौ [illegible] के भेरे [illegible] धावत [illegible] निशाचर भेरे [illegible]
[illegible]

काहू किरात रावनकी प्रथम ताक्यु नौ ... कि चौ हमका हूके मरैं न मारे
हूसरे ... ते ... ने ... शी ... ने गिरा को प्रेर कै कहायो ताको प्र-
तिसतसमहशी॥ जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाशी॥ नित नूतन सब बाढत जाशी॥ जि-
मि प्रति लाभ लोभ अधिकाशी॥ अति बल कुंभकर्न अस भ्राता॥ जेहि कहू नहि प्रति भट
जग जाता॥ करै पान सोवै षट मासा॥ जागत होइ तिन उपुर त्रासा॥ जो प्रति दिन अ-
हार करै सोशी॥ बिस्व बेग सब चौपट होशी॥ समर धीर नहि जाइ बषाना॥ तिह सम अ-
मित बीर बलवाना॥ बारदनाद जेठ सुत तासू॥ भट मह प्रथम लीक जग जासू॥ जेहि न
होइ रन सनमुष कोशी॥ सुरपुर नित परावन होशी॥ ४४३॥ दो॥ कुमुष अकंपन कुलसर
द धूमकेतु अतिकाइ॥ एक एक जग जीत सक ऐसे सुभट निकाइ॥ ४४४॥ चौ॥ काम
रूप जानहि सब माया॥ सपुने जिन के धर्म न दाया॥ दसमुष बैठे सभा इक वारा॥ देषि
अमित आपन परवारा॥ सुत समूह जन परिजन नाती॥ गनै को पार निशाचर
जाती॥ सेन बिलोक सहत अभमानी॥ बोला बचन क्रोध मद सानी॥ सुनहु सक-
ल रजनीचर जूथा॥ हमरे बैरी बिबुध बिरूथा॥ ते सनमुष नहि करे लराशी॥
देषि सबल रिपु जाइ पराशी॥ तेह कर मरन एक बिधि होशी॥ कहौ बुझाइ सुनहु अब
सोशी॥ द्विज भोजन मष होम सराधा॥ सब के जाइ करो तुम बाधा॥ ४४५॥ दो॥
छुधा छीन बलहीन सुर सहजे मिलहि आइ॥ तब मारिहौं के छाडिहौं भली
गीतावली॥ रावन कुंभकरन ... भाग ... शी ... माया ... कुल ...
... भाग मे रावन है ... भाग मे ... है ...

राम बा ६४

राम

चढत महागज जिमि सहु पुत रहनी

पुनः चौ० लंकर सहस्र बिदुम्ह जतो ही सकर राम कर द्रोही पुनः म हउ चौ० कोटि बिदुम्ह सम बानन कही

भांति आपना॥४४६॥ चौ० मेघनाद कहु तह कंरावा॥ दीनी सीष बलु बयर बढावा॥ जे सुर समर धीर बलवाना॥ तिन के लरिबे कर अभिमाना॥ तिनहि जीति रन आनेसु बाधी॥ उठि सुत पितु अनुसासन साधी॥ एहि बिधि सब कहु आग्या दीनी॥ आपुन चल्यो गदा कर लीनी॥ चलत दसानन डोलत अवनी॥ गर्जत गरभ स्रवहि सुर रमनी॥ रावन आवत सुनेउ सकोहा॥ देवन तके मेरु गीर षोहा॥ दिगपालन के लोक सुहाए॥ सूने सकल दसानन पाए॥ पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी॥ देइ देवतन गारि प्रचारी॥४४७॥ दो०॥ गर्ब देषि लंकेस कर ब्रह्मा मन अनुमान॥ पठए नारद आइ तब देषा अति भट मान॥४४८॥

चौ०॥ रन मद मत्त फिरै जग धावा॥ प्रतिभट षोजत कतहु न पावा॥ रवि ससि पवन बरुन धनधारी॥ अगनि काल जम सब अधिकारी॥ किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा॥ हठ सबही के पंथे लागा॥ ब्रह्म सृष्टि जह लगि तनधारी॥ दसमुष बसवर्तीन रु नारी॥ आयसु करे सकरे सकल भय भीता॥ नवहि आय नित चर्न विनीता॥४४९॥ दो०॥ भुजबल विश्व बस्य करि राषेसि कोउ न सुतंत्र॥ मंडलीक मनि रावन राज करहि निज मंत्र॥४५०॥ चौ०॥ नारद मिले कहे सिष मम सकाशी॥ देव कहहु मुनि देहु दिषाशी॥ सुनत अनसु नारद हि न भावा॥ सेत दीप ते हल तरत पठावा॥ सागर

कहे इत्यादि

उतरपारसोईगयो॥ नारबृंदतेहदेखतभयो॥ तेनसनकहेसयतनपदिजाऊ
कहेउकिआयोनिधाचरनाऊ॥ तबमैतेनहिजीतसंग्रामा॥ लेजैहोतुम्हकउनिज
धामा॥ सुनतबचनदुकजठरारिसानी॥ धायचर्नगहिगगनउडानी॥ गई
दूरधरिछर्मिजकजेपरा॥ ढारेसिसिंघमध्यअतिजोरा॥ ४५१॥ दो॥ गएप्रतालआचे
तहोइमरेनविप्रप्रसाद॥ सावधानउठिगर्जिउनिस्यिरहर्षनविखाद॥ ४५२॥
चौ॥ जीतेसिनागनगरसबझारी॥ गयेबहुरिबलिलोकसरारी॥ बामनरावनु
आवतजाना॥ कियेदेवरिबसनअभिमाना॥ खेलतरहेनगरसिसुनाना॥
निजबलतेहिदीनभगवाना॥ धाइधरातेनपुरिलेआए॥ नगरनारनर
देखनधाए॥ बीसबाउदसकंधरयाही॥ बिधयहिगठनिकसकरिमा[illegible]ही॥ रा
खेतबांधिरविजावनमारी॥ नाम्रनकहिसमसहैवरमारी॥ बामनदीखबहुतसकुः
चाना॥ तबछुडाइदियकृपानिधाना॥ चलातुरंतनिशाचरिनाहा॥ लाजसंककछुन
हिमननाहा॥ तबतुरंतपंपापुरआवा॥ बालिनामकपिपतिजेहिठावा॥ देखीजाइक
ससरवरसोमा॥ जेहिदेखिमनहूकरछोभा॥ तहांकपीसकरैनिजध्याना॥ आाद
रसैसंध्यासननाना॥ जायठाढतहमयोरजनीसा॥ ठेकेउबाहुगर्जिभुजबीसा॥

तबकपीसचितवामुसकाई॥ध्यानकेअवसररेसठबिसराई॥तबरावनबोला
करिक्रोधा॥बकध्यानीकपिसनुबोधा॥४५३॥दो॥मोहिजीतेबिनुसमरसननक
ह्यध्यानकपीस॥अंजलिदेइनपावउसपथकरोजगदीस॥४५४॥चौ॥तबबालिबोला
विहसाई॥बलतुम्हारजाइसमुझइहइमाही॥रविअंजलिमैदेउसप्रीती॥ठाढहेरउजाएकु
मोहिजीती॥तबनिसाचरपसेउझोरिमाही॥देकपियुद्धछाडिकदराई॥तबकपीसप
तिमनहिबिचारा॥शिवबलदीनमरेनहिमारा॥दसकेधरधरिजाउबिचारी॥आज
यतुम्हारछोड़िभुजमारी॥बहुतभांतिबालीसमुझावा॥कौनिउभांतिबोधनहिआ न
वा॥तबसकोपहोइउठेउकपीसा॥धरितकंधचांपेउदससीसा॥अंजलिदीन
रविहिमनजानी॥अचएउसाउउदधिकरपानी॥जपेउआदिसंकरमनजानी॥तेहिदेन
संध्याबंदिसिरानी॥४५५॥दो॥आवघरहिकपीसतबकाखरहेलंकेस॥एहिबिधिबीते
मासषटपावेबहुतकलेस॥४५६॥चौ॥बहुप्रसेदकखरीमहजामा॥जातिकुवासता
कउमैधामा॥मलमलाइरिसदसननकाटा॥काचकरजीवमनउभ्रमछाटा॥
एकदिवसरविअंजलसाजा॥काषतेनिसरेमहाधुनिगाजा॥सोपुनिधरिकपीस
तबबाधा॥बीसभुजादससीससुधारा॥चरनकेआंगुपुनिधरिउरमारा॥धरिसमे
टनुमरसमकीना॥बाघसेजपरसोमादीना॥अंगदखेललातसिरमारा॥कि

लकिलाइकिलकपकिलकारा॥४५७॥दो॥ताराचोनेउरावननहितेहिदिनदीनहुरा
इ॥जाउतुरतुरतलंकेसगुहवउरिदिपैहिकपिराइ॥४५८॥चौ॥पुनिरावननआ
योतिहठांई॥सहसबाहुजिहरासबनाई॥जलक्रीडाकरसंगसनारी॥विविध
भांतिसोभाअतिभारी॥आइरचामंडलतटरेवा॥सुरनरनागकरहिसबसेवा
जाइदीखरावनसुखमाना॥हर्षसमेतहृदयसचुमाना॥लसंलंकेशजाइपीवदे
खा॥मनउविरंचरचेवउरेखा॥तलसीकमलपत्रसबमाना॥बिल्वपत्रआमिषु
खप्रमाना॥जाइतबजलक्षोभ्योदससीसा॥चंभ्योमंत्रसवरिगोरीसा॥४५९॥दो॥
जबप्रचंडजलक्षोभेउसबयसमाज॥सहसबाहुअतिसंकमनसकलत्रियन
उरलाज॥४६०॥चौ॥तबराजासनबोलहिनारी॥अतिसंद्रसबराजहिकुमारी॥
सुनउन्नयतिआयोकोउगाठा॥भकसमादमहानंदबाढा॥सुनिराजाहिभैक्रोधअ
पारा॥जसरिनेत्रद्विपुरारहिमारा॥जाइदीखरावननतहठाढा॥जासुमंत्रजनज
लनिधबाधा॥मायाप्रबलमहाबलभारी॥लंकेश्वरकहघरेसप्रचारी॥लेइपु
नि बाधगयोरियपासा॥गढनदेखसबपमेउलासा॥करिइस्नानपूजेगोरीसा॥
हृयसालाबाहेसदससीसा॥४६१॥दो॥कहमसंडगीरिजासुनउअबयहकथा
रिसाल॥लयहृयसालाबाहेसिबीसभुजादशभाल॥४६२॥चौ॥सकलआइदेखहि

राम ६६

नरनारी॥ मारहि लात हसहि देतारी॥ नाम न कहै रहै सकुचाना॥ बहु विधि पर कहै नृपति
सुजाना॥ निर्भय करहि रंमा दिकनारी॥ दसहु माष्य दस दीप कजारी॥ छुक दिवस एह भां
ति गवाया॥ सो पुलस्ति मुनि जाइ छुड़ावा॥ चलत तुरंत मन लाज भि मानी॥ सबल को आप पाया
नेय रानी॥ मारग जात दीख बिबुधारी॥ अति अनूप सुंदर वरनारी॥ चंदन पुष्प परकरवारी॥ पु
जे बली जाइ शिवपरारी॥ देखि उरवसी मान सकुचानी॥ तब रावन बोले उमरहु बानी॥ ४६३॥ दो॰ पक
रि जाइ दसकंधर गहि अंक भरि लीन॥ पुत्रबधू कुबेर की नहि विचार कछु कीन॥ ४६४॥
चौ॰॥ चिक्षि छिय हि मन विसमय भयो॥ लेके खबर लंक को गयो॥ चलि तब उरबसी आ
ईत हां॥ अलके का पुरी नलकूबर जहां॥ समाचार सब पतिहि सुनावा॥ सुनत कथा
मन महु दुख पावा॥ दीन श्राप करि क्रोध अपारा॥ रावन बंस हेइ छय करा॥ चली
आय लंका मह आई॥ दसकंधर रिषि सो जिह ठाई॥ आगे आइ ठाढ़ि भई आया॥ तब लं
केस्वर अति भयकाया॥ सउर सकोप चितवे तिह ओरा॥ नलकूबर के श्राप अति
घोरा॥ ४६५॥ दो॰॥ श्राप हि अंगीकार करि मन नें कीन विचार॥ अस्त्री से दंड न हि दीन्यो रो
खो लंक मुयार॥ ४६६॥ चौ॰॥ इति चारि तिहि पठवम वानी॥ भारद्वाज मुनि कथा बखानी॥

मै

राम बा ६३

आइ दूतिरिषिनकेगेहा॥ देषतसबेभयोसंदेहा॥ पूछहिंरिषिहिकहाउपगुधारी॥
कहोकुसलतंकेसभुयारा॥ तातकुशलअबभेविपरीता॥ तुमसनमांगेदंडअभी
ता॥ देहुदंडअसकहिसिरनाई॥ कौतीरकंदरिजाइअघराशी॥ सुनिअसबचन
परमदुषपावा॥ तुरतबेगइकपाउमगावा॥ सबमिलिकरिविचारइकठाइ॥
भरघटरुधिररिषयलैआए॥ दूतिनकहिसौपामनजीनी॥ होइसकोपबोले
मृदुबानी॥४६७॥ दो॥ घटउघरतपयहोयहिसकुलसहितपरिवारि॥ घटिले
दूतआयेतहंजहरहतलंकभयार॥४६८॥ चौ॥ आगेआनधराघटिभारी॥ दे
षिसकलतंकापतिनारी॥ बोलहिबचनकाहियहिमाही॥ सकलकथातिननृप
हिसुनाई॥ एहघट तेलंकापतिनासा॥ सबदूतन असबचनप्रगासा॥ एहघ
टलेउतरदिसजाहू॥ जतनसमेतदेहुलेकाहू॥ सुनिनृपबचनचलेसबकै
से॥ जनकरायकेदेसपैसे॥ धरेउघटहिंचलेबिचारी॥ ताहंप्रगटभैदेवकुमारी
जगजननहिकोवरनैपारा॥ राजाजनकजहापगुधारा॥ कंन्यादेषिआनंदपावा
नी॥ नामजानकीपरमपुनीता॥ नारदआयकहिउनिजमीता॥४६९॥ दो॥ सक

राम बा ६३ रा

लकथानयजनकसोनारदकहीबखान॥सकलसुलछनलछगुनजगदंबा
सनज्ञान॥४७०॥चौ॥कहतकथारिषराजसिधाए॥बहुरिहुतलंकापुरिजाए॥कोहेन
जायमायेनहमराधी॥सोसंकरगीरिजासनभाषी॥जागवलकमुनिकथारिसाला
साधसाधसुनेपरमह्मयाला॥पुनिपुनिकहिउकथाउपदेसा॥जगजीत्तिउसबलंक
नरेसा॥चारडाउहारेसभयत्रासा॥सकलदेवकीनेनिजदासा॥४७१॥दो॥देवयछगं
धर्बनरकिन्नरनागकुमार॥जीतबरीनिजबाहुबलबहुसंदुवरिनारि॥४७२॥चौ॥
इंद्रजीतसननोकछुकहिउं॥सोसबजनुपहिलेकरिरहिउ॥प्रथमहिजनको
आयसुदीना॥तिनकरिचरतसुनहुजोकीना॥देषितभीमरूपसबपापी॥निसि
रनिकरदेवपरतापी॥करहिउपद्रवअसुरनकाया॥नानारूपधरहिकरिमाया॥जे
जिहविधहोइधर्मनिर्मूला॥सोसबकरेहबेदप्रतिकूला॥जेहजेहदेसधेनु[illegible]
रपावहि॥नगरगावपुरिआगीलगावहि॥सुभआचरनकतहुनहिहोई॥देवबिप्र
गुरमाननाकोई॥नहिहरिभक्तिजज्ञतपज्ञाना॥सपनेहुनसुनेबेदपुराना॥४७३॥छंद॥
जपजोगबिरागातपजपभागाश्रवनसुनेदससीसा॥आपुनउठिधावैरहनपावे
धरिसबघालेखीसा॥असभ्रष्टअचाराभासंसाराधर्मसुनयनहिकान॥तिहबहु

बंधि ब्रह्मा से देवन्ह नेक सेनो कहहि बेद पुरान ॥१७४॥ चौ० ॥ बाढे खल बहु चोर जुआरा ॥ जे लंपट परधन परदारा ॥ मानहि मात पिता नहि देवा ॥ साधुन सन करवावहि सेवा ॥ जिन के यह आचरन भवानी ॥ ते जानहु निसिचर सम प्रानी ॥ अतिसय देखी धर्म की ग्लानी ॥ परम सभीत धरा अकुलानी ॥ गिरि सरि सिंधु भार नहि मोही ॥ जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥ सकल धर्म देखै बिप्रीता ॥ कहि न सकै रावन भय भीता ॥ धेनु रूप धरि हृदय बिचारी ॥ गई तहं जहं सुर मुनि झारी ॥ निज संताप सुनाइसि रोई ॥ काहू ते कछु काज न होई ॥१७५॥ छंद ॥ सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोका ॥ संग गोतनु धारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका ॥ ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोरि कछु न बसाय ॥ जा करि तै दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाय ॥१७६॥ सोरठा ॥ धरनि धरहि मन धीर कहि बिरंचि हरि पद सुमिरु ॥ जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति ॥१७७॥ चौ० ॥ बैठे सुर सब करहि बिचारा ॥ कहं पाय प्रभु करिअ पुकारा ॥ पुर बैकुंठ जान कहैं कोई ॥ कोउ कहै पयनिधि बस प्रभु सोई ॥ जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ॥ प्रभु तहं प्रगट सदा तेहि रीती ॥ तेहि समाज गिरिजा मैं रहिऊ ॥ अवसर पाय बचन इक कहिऊ ॥ हरि ब्यापक

स

सर्बत्र समाना॥ प्रेम ते प्रगट होइ मे जाना॥ देस काल दिस विदिस मांही॥ कहुह
कोत हां जहां हरि नाही॥ अगजगमै सब रहत विरागी॥ प्रेम ते प्रभु प्रगटै जिमि आगी॥
मोर बचन सब के मन माना॥ साधु साधु कहि ब्रह्म बखाना॥४७॥ दो॰ सुनि बिरंच
मन हर्षित तन पुलक नैन बह नीर॥ अस्तुति करत तब जोर कर सावधान मतिधी
र॥४७८॥ छंद॥ जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवंता॥ गो द्वि
ज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुताप्रियकंता॥ पालन सुर धरनी अद्भुत करनी
मर्म न जानै कोइ॥ सो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोइ॥ जय जय अव
नासी सब घटिबासी ब्यापक परमानंद॥ अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारह
ति मुकुंद॥ जिहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिबृंद॥ निसबासुर ध्यावहि गुनगनग
नगावहि जयति सच्चिदानंदा॥ जिह सृष्टि उपाई त्रिविधि बनाई संग सहायन कोऊ
दूजा॥ सो करउ अघारी चिंत हमारी जानीये भक्ति न पूजा॥ सो भव भय भंजन मुनि
मन रंजन गंजन विपत बरूथा॥ मन बच क्रम जानी छाडि सयानी सरन सकल
सुरजूथा॥ सारद श्रुति शेषा रिषय असेषा जा कउ कोय न जांत॥ जिह दीन प्या
रे बेद पुकारे द्रवे सो श्री भगवाना॥ भव वारिधि मंदर सब बिध संदर गुणमंदर सु

सपुंज॥ मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंज॥ ४७९॥ दो॥ जा
नि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह॥ गगन गिरा गंभीर भइ हर्नि सोक संदे
ह॥ ४८०॥ चौ॥ जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा॥ तुम्हहि लागि धरहौं नर वेसा॥ अंसन सहित
मनुज अवतारा॥ लेहौं दिनकर वंस उदारा॥ कस्यप अदिति महातप कीना॥ तिन को
मै पूर्व बर दीना॥ ते दसरथ कौशल्या रूपा॥ कौशलपुरी प्रगट नर भूपा॥ तिनके गृह
अवतरहौं जाई॥ रघुकुल तिलक सो चारो भाई॥ नारद बचन सति सब करहौं॥ प
रम शक्ति समेत अवतरहौं॥ हरिहौं सकल भूमि गरुवाई॥ निर्भय होहु देव समु
दाई॥ गगन ब्रह्मबानी सुनि काना॥ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना॥ तब ब्रह्मा ध
रनि हि समझावा॥ अभय भई भरोस जिय आवा॥ ४८१॥ दो॥ निज लोकहि जो वि
रंच गए देवन इहै सिखाइ॥ बानर तन धरि धर्न महि हरि पद सेवहु जाइ॥
४८२॥ चौ॥ गए देव निज निज सब धामा॥ भूमि सहित मन कहु बिश्रामा॥ जो कछु आ
यसु ब्रह्मा दीना॥ हर्षे देव बिलंब न कीना॥ बनचर देह धरी छिन माही॥ अतु
लित बल प्रताप तिन पाही॥ गिर तरु नख आयुध सब बीरा॥ हरि मार्ग चितवहि
मतिधीरा॥ गिर कानन जहं तहं भरि पूरी॥ रहे निज निज अनीक रचि रूरी॥ प

हिसमरुचिरचरितमेंभाषा॥ जबजोमनउजोबीचहिराषा॥ अवधपुरीरघु
कुलमनिराऊ॥ बेदविदतितिहदसर्थनाऊ॥ धर्मधुरंधरगुननिज्ञानी॥ हृदयभ
क्तिमतिसारंगपानी॥४८३॥ दो॥ कौशल्यादिकनारप्रियसबआचारपुनीत॥ प
तिअनुकूलप्रेमदृढहरिपदकमलविनीत॥४८४॥ चौ॥ एकबारभूपतिमनमा
ही॥ भईगिलानमोरेसुतनाहीं॥ गुरगृहगयोतुरतमहिपाला॥ चरनलागि
करिबिनैबिसाला॥ निजसुखदुखसबगुरहिसुनायो॥ कहिबसिष्टबहुबिधिस
मझायो॥ धरहुधीरहोहैसुतचारी॥ त्रिभुवनविदतिभक्तिभयहारी॥ पुत्रकामसुभजज्ञ
करावो॥ शृंगीरिषहिबसिष्टबुलावो॥ भक्तिसहिततबआहुतदीने॥ प्रगटेअगनिच
रूकरलीने॥ जोवसिष्टकछुहृदयविचारी॥ सकलकाजभासिद्धतुम्हारी॥ इहहविबांटदे
हुनृपजाई॥ जथाजोगजेहिभागबनाई॥४८५॥ दो॥ तबअदृश्यपावकभए सकलसभ
हिसमझाइ॥ प्रेमानंदमगननृपहर्षनहृदयसमाइ॥४८६॥ चौ॥ तबराजेप्रिय
नारिबुलाई॥ कौशल्यादितहांचलिआई॥ अर्द्धभागकौशल्यादीना॥ उभयभाग
आधेकरकीना॥ केकेईकहनृपसोदयऊ॥ रह्योसोउभयभागपुनिकीऊ॥ कौ
शल्याकेकेईहाथधरि॥ दीनसोमित्रहिमनसोप्रसन्नकर॥ इहिबिधिग

भै सब हि समन नारी॥ असी हृदय हर्षित सब भारी॥ जा दिन ते हरि गर्भहि आये
सकल लोक सुष संपत छाये॥ मंदर मह राजहि सब रानी॥ सोभा सील
तेज की षांनी॥ सुष जुत कछुक काल चलि गयो॥ जेहि प्रगट सो अवसर भयो
॥४८७॥ दो॥ योग लगन ग्रह वार तिथ सकल भए अनकूल॥ चर अरु अचर
हर्षयुत राम जन्म सुष मूल॥४८८॥ चौ॥ नौमी तिथ मधु मास पुनीता॥ सुकल
पछ अभिजित हरि प्रीता॥ मध्य दिवस अति सीत न घामा॥ पावन काल लो
क विश्रामा॥ सीतल मंद सुरभि वहि वाऊ॥ हर्षित सुर संतन मन चाऊ॥ बन
कुसम जगीर गन मनआरा॥ स्रवहि सकल सरतामृत धारा॥ सो अवसर बि
रंच तब जाना॥ चले सकल सुर साजि विवाना॥ गगन बिमल संकुल सुर जू
था॥ गावहि गुन गंधरब बिरूथा॥ बर्षहि सुमन सुअंजल साजी॥ गहि गही
देव दुंदभी बाजी॥ अस्तुति करहि नाग मुनि देवा॥ बहु बिधि लावहि निज निज
सेवा॥४८९॥ दो॥ सुर समूह विनती करि पहुचे निज निज धाम॥ जग नि
वास प्रभु प्रगटे अखिल लोक विश्राम॥४९०॥ छंद॥ भये प्रगट कृपाला दी

न दयाला कोशल्याहितकारी॥ हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बि-
चार॥ लोचन अभिरामं तनु घनश्यामं निज आयुध भुज चारी॥ भूषण बनमा-
ला नयन बिशाला सोभासिंधु खरारी॥ कहि दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बि-
धि करौं अनंत॥ माया गुण ज्ञानातीत अमाना बेद पुराण भणंत॥ करुना गु-
ण सागर सब गुण आगर जिहि गावहि श्रुति संत॥ सो मम हित लागी जन अ-
नुरागी प्रगट भये श्रीकंत॥ ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै॥
मम उदर सु बासी यहि उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥ उपजा जब ज्ञा-
ना प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन॥ चहै कहि कथा सुहाई मात बुझाई
जिहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥ माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात इह रू-
प॥ कीजे सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूप॥ सुनि बचन सुजा-
ना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूप॥ यहि चरित जे गावहि हरिपद पावहि
ते न परहि भवकूप॥४८१॥ दो॥ बिप्र धेनु सुर संत हित लीन मनुज
अवतार॥ निज इछा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥४८२॥ चौ॥ सुनि-

सिसुरुदनपरमप्रियबानी॥ संभ्रमसबचलिआईरानी॥ हरषितजहतहधाई
दासी॥ आनंदमगनसकलपुरबासी॥ दसरथपुत्रजन्मसुनिकाना॥ मानहुब्र
ह्मानंदसमाना॥ परमप्रेममनपुलकशरीरा॥ चाहतउठनकरतमतिधीरा॥
जाकरिनामसुनतसुभहोई॥ मेरेगृहआवाप्रभुसोई॥ परमानंदपूरिमनरा
जा॥ कहाबुलाइबजावहुबाजा॥ गुरवसिष्ठकोगयोहकारा॥ आयेद्विजनसह
ितनृपद्वारा॥ अनुपमबालदेषनहिजाई॥ रूपशीलगुनकहिनसिराई॥४८·॥
दो॥ नंदीमुखसराधकरिजातकर्मसबकीन॥ हाटकधेनुबसनमनिनृप
विप्रबहुदीन॥४८१॥ चौ॥ ध्वजपताकतोरनपुरछावा॥ कहिनजाइजेहिभांति
बनावा॥ सुमनबृष्टिअकाशतेहोई॥ ब्रह्मानंदमगनसबकोई॥ बृंदबृंदमि
लिचलीलुगाई॥ सहजसिंगारकियेउठिधाई॥ कनककलसमंगलभरिथा
रा॥ गावतपैठिभूपद्वारा॥ करआरतीनिछावरकरही॥ बारिबारशिशु
चरननिपरही॥ मागधसूतबंदिजनगाइक॥ पावनगुनगावहिरघुनायक॥
सर्वसदाननदीनसबकाहू॥ जेहिपावारापानहितेहू॥ मृगमदचंदनकुमकु

राम
बा
११

राम
११

दे

मचा॥ मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥४९२॥ दो॥ ग्रह ग्रह बाजु बधाव सम प्र-
गट भयो सुख कंद॥ हर्षवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर ब्रंद॥४९३॥ चौ॥ कै-
कयसुता सुमित्रा दोऊ॥ सुंदर सुत जनमत भये सोऊ॥ वह सुख संपति स-
मय समाजा॥ कहि न सकै सारद अहि राजा॥ अवधि पुरी सोहइ इहि भाँती
प्रभु मिलन आई जनु राती॥ देखि भानु जनु मनु सकुचानी॥ तदपि बनी संध्या
अनुमानी॥ अगर धूप जनु बहु अंध्यारी॥ उड़इ अबीर मानहु अरुनारी॥ मं-
दर मनि समूह जनु तारा॥ नृप ग्रह कलस सु इंदु उदारा॥ भवन बेद धु-
नि अति मृद बानी॥ जनु खग मुखर समय जनु सानी॥ कौतक देखि पतंग भु-
लाना॥ एक मास तेइँ जात न जाना॥४९४॥ दो॥ मास दिवस कर दिवस भा मर-
म न जाने कोइ॥ रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ॥४९५॥ चौ॥
यह रहस्य काहु नहि जाना॥ दिनमनि चले करत गुन गाना॥ देखि महोत्स-
व सुर मुनि नागा॥ चले भवन बर्नत निज भागा॥ औरो एक कहौं निज चोरी॥

सुनगीजा अति द्रढमति तोरी॥ काकभसुंडसंग हम दोअ॥ मनुजरूप नहि
जानेकोऊ॥ परमानंद प्रेम सुख फूले॥ बीथन फिरहि मगन मन भूले॥ इह सु
भ चरत जान पै सोई॥ क्रपा राम की जानपर होई॥ तेहि अवसर जो जेहि बिधि
आवा॥ दीन भूप जो जेहि मन भावा॥ गज रथ तुरग हेम गो हीरा॥ दीने न्रप ना
नाबिधि चीरा॥ ४९६॥ दो० मन संतोष सबकी याज हतन ह देह असीस॥ सकल त
नय चिर जीव हो तुलसीदास के ईस॥ ४९७॥ चौ० कछुक दिवस बीते इह भांती
जात न जानी दिन अरु राती॥ नामकर्न कर अवसर जानी॥ भूप बोल पठे ये मुनि ज्ञानी
करि पूजा भूपति अस भाषा॥ धरिय नाम जो मन गुन राषा॥ इन के नाम अने
क अनूपा॥ मै न्रप कहब स्वमति अनुरूपा॥ जो आनंद सिंधु सुख रासी॥ सीकर
ते त्रैलोक सुवासी॥ सो सुष धाम राम अस नामा॥ अषिल लोक दायक बिश्रामा
विश्व भर्न पोषन कर जोई॥ तां कर नाम भर्त अस होई॥ जाके सुमरन ते रिपु ना
सा॥ नाम शत्रुहन बेद प्रकासा॥ ४९८॥ दो० लषन धाम सु राम प्रिय सकल लोक

आधार॥ गुर बसिष्ट तिह राखा लछमन नाम उदार॥ ४९९॥ चौ॥ धरे नाम गु
र हृदय बिचारी॥ बेद तत्व नृप तव सुत चारी॥ मुनि जन धन सर्बस शिव प्रा
ना॥ बाल केलि रस तिन्ह सुख माना॥ बारहि ते निज हित पति जानी॥ लछमन
राम चरन रति मानी॥ भरत शत्रुहन दोनो भाई॥ प्रभ सेवक जस प्रीति बडाई॥
श्याम गौर सुंदर दोउ जोरी॥ निर्खहि छबि जननी त्रण तोरी॥ चारो सील रूप गुन
धामा॥ तदपि अधिक सुखसागर रामा॥ हृदे अनुग्रह इंद प्रकासा॥ सूचै किरन त
मनोहर हासा॥ कबहु उछंग कबहु बर पलना॥ मातु दुलारे कहि प्रिय लल=
ना॥ ५००॥ दो॥ ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण बिगत बिनोद॥ सो अज प्रेम भक्ति बस कौश
ल्या के गोद॥ ५०१॥ चौ॥ काम कोटि छबि श्याम शरीरा॥ नील कंज बारद गंभीरा॥ अरुण च
रन पंकज नख जोती॥ कमल दलन्हि बैठे जनु मोती॥ रेख कुलिस धुज अंकुस सोहे॥ नूपुर
धुनि सुनि मुनि मन मोहे॥ कटि किंकिन उदर त्रय रेखा॥ नाभि गंभीर जान जिह देखा॥ भुज
बिसाल भूषण जुत भूरी॥ हिय हरि नख सोभा अति रूरी॥ उर मनिहार पदक की सोभा
बिप्र चरन देखत मन लोभा॥ कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई॥ आनन अमित मद
न छबि छाई॥ दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे॥ नासा तिलक को बरनै पारे॥ ५०२॥

दो॥ अंगअंगअंगसमनोहर केहरिबनपगतलाइ॥ उपमदेतकंजतनुदेखतलयजु
ड़ाइ॥ प॰३॥ चौ॥ संदर श्रवन सुचारु कपोला॥ अतिप्रियमधुरतोतरेबोला॥ नीलजल
ज है नयन छबि शाला॥ विकट भ्रकुटि लट कानन वर माला॥ चिक्कन कच कुंचित गभु
वारे॥ बहु प्रकार रचि मातु सवारे॥ पीत झगुरीया तन पहिराई॥ जानु पान बिचर
नि मोहि भाई॥ रूप सकहि नहि कहि श्रुति शेषा॥ सोजानेसुपनेहु जेन देखा॥ जिन्ह
मुनि ध्यान अगोचर लावहि॥ ते उ कएप्रभु नियोन आवहि॥ सो हरि ग्र बाधि वासु
लीयागाशी॥ सुखसागर नागर रघुराशी॥ मातुः प्रेम मग्र अधिक उपजावहि॥ जनि
परिजन निवि लोक सुख पावहि॥ प॰४॥ दो॥ सुखसंदेह मोहि पर ज्ञान गीरा गोः
तीत॥ दंपति परम प्रेम बस कर सिसु चरित पुनीत॥ प॰५॥ चौ॥ इहि बिधि राम ज
गत पित माता॥ कौशलपुर वासन सुखदाता॥ जिन रघुनाथ चरन रत मा
नी॥ तिनकी यहि गति प्रगट भवानी॥ रघुपति विमुख जतन करे कोरी॥ कवन
सकै भय बंधन छोरी॥ जीव चराचर वासे के राखे॥ सो माया प्रभु सो भय भाखे॥
भ्रकुटी विलास नचावै ताही॥ अस प्रभु छाड़ि भजीये कहु काही॥ मन बच क
र्म छाड़ि कुटलाई॥ भजत हि कृपा करत रघुराई॥ इहि बिधि शिशु बिनो

द प्रभु कीना॥ सकल नगरवासीन सुख दीना॥ लै उछंग कबहुक हलरा
वैं॥ कबहुं पालनें घालि झुलावैं॥ प॰ ६ दो॰ प्रेम मगन कौशल्या निसदिन जा
त न जान॥ सुत सनेह बस मात है बालचरत गुन गान॥ प॰ ७ चौ॰ एक बार
जननी अनुवाए॥ करि शृंगार पालन पोढाए॥ निज कुल इष्टदेव भगवा
ना॥ पूजा हेत कीन असनाना॥ करि पूजा नैवेद चढावा॥ आप गई जह पा
क बनावा॥ बहुरि मात तहवा चलि आई॥ भोजन करत देखि सुत जाई॥ ग
ई जननी सुत पहि भयभीता॥ देखा बाल तहा पुनि सूता॥ बहुरि आइ देखा
सुत सोई॥ हृदय कंप मन धीर न होई॥ इहा उहा दोय बालक देखा॥ मतिभ्र
म मोर कि आन विशेषा॥ देखि राम जननी अकुलानी॥ प्रभु हस दीन मधुर मु
सकानी॥ प॰ ८ दो॰ देखरावा निज मात को अद्भुत रूप अखंड॥ रोम रोम प्रति भाजहि कोटि
कोटि ब्रह्मंड॥ प॰ ९ चौ॰ अगनत रवि शशि शिव चतुरानन॥ बहु गिरि सरित सिंधु मही
कानन॥ काल कर्म गुण ज्ञान सुभाऊ॥ सो देखा जो सुना न काऊ॥ देखी माया सब विधि गा
ढी॥ अति सभीत जोरे कर ठाढी॥ देखा जीव नचावै जाही॥ देखी भक्ति जो छोरे ताही॥ तन

पुलकतमषबचननआवा॥ नेनमूदचर्ननिसिरुनावा॥ बिसमयवंतदे
षीमहितारी॥ भयेबहुरिशिशुरूपषरारी॥ अस्तुतिकरनजायभयमा
ना॥ जगतपितामैसुतकरिजाना॥ हरिजननीबहुविधसमझाई॥ यहजि
नकतहूंकहसिसुनमाई॥ २१०॥ दो॥ बारिबारिकौशल्याबिनयकरतकरिजो
र॥ अबजिनब्यापेकबहूंप्रभमोहिमायातोर॥ २११॥ चौ॥ बालचरितबहु
बिधिप्रभुकीना॥ अतिअनंददासनकहुदीना॥ कछुककालबीतससबभा
ई॥ बडेभएपरिजनसुषदाई॥ चूडाकरनकीनगुरजाई॥ बिप्रनपुनिब
हुदछनापाई॥ परमगनोहरचरितअपारा॥ करतफिरतचारेसुकुमारा
मनक्रमबचनअगोचरजोई॥ दसरथअजिरविचरप्रभसोई॥ भोजनक
रतबोलजबराजा॥ नहिआवहितजिबालसमाजा॥ कौशल्याजबबोलन
जाई॥ ठुमकठुमकप्रभचलेहिपराई॥ निगमनेतिशिवअंतनपावा॥
ताहिधरहिजननीहठिधावा॥ धूसरधूरभरेतनआये॥ भूपतिविहस
गोदबैठाए॥ २१२॥ दो॥ भोजनकरतचपलचितइतउतअवसरपाइ॥

भाजचले किलकंत मुख यौदन लपटाइ ॥ ५१३ ॥ चौ० ॥ बालचरित अतिसर
लसुहये ॥ सारदशेषशंभश्रुतिगये ॥ जिन्हकरमन इह्नसन नहिरा
ता ॥ तेजन बंचकीये बिधाता ॥ भएकुमार जबहि सबभ्राता ॥ दीनजनेऊ
पितगुरमाता ॥ गुरगृहगए पठन रघुराई ॥ अलपकाल विद्यासब
पाई ॥ जाकीसहजस्वास श्रुतिचारी ॥ सोहरिपठय कौतकभारी ॥ विद्या
विनयनिपुनगुन शीला ॥ खेलहि खेल सकल न्रपलीला ॥ करतलबा
नधनुष अतिसोहा ॥ देखतरूप चराचरमोहा ॥ जिन्हबीथिनविहरहि
सबभाई ॥ थकतहोंहि सबलोगलुगाई ॥ ५१४ ॥ दो० ॥ कोसलपुरबासी
नारनरीबृधअरुबन अरुबाल ॥ प्रानऊतेप्रियलागही सबकें रामकृपा
ल ॥ ५१५ ॥ चौ० ॥ बंधसखासबलेहिबुलाई ॥ बनमृगयाखेलहि निजजा
ई ॥ पावनमृगमारहि जियाजानी ॥ दिनप्रतिन्रपहि दिखावहि आनी ॥
जेमृगरामबानकेमारे ॥ ततनतजिसुरलोकसिधारे ॥ अनुजसखा
संगभोजनकरहीं ॥ मातपिताआज्ञाअनुसरहीं ॥ जिह्विधिसुखीहो

150

हिं पुर लोगा॥ करहि कृपानिधि सोई संजोगा॥ बेद पुरान सुनहि मन लाई॥
आपु कहहि अनुजन्ह समुझाई॥ प्रातकाल उठि कै रघुनाथा॥ मातु पिता गुर
नावहि माथा॥ आइसु मांगि करहि पुर काजा॥ देषि चरित हरषै मन राजा॥
५१६॥ दो॥ व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप॥ भक्त हेत नाना विधि
करत चरित्र अनूप॥५१७॥ चौ॥ इह सब चरित कहा मै गाई॥ आगिल क
था सुनो मन लाई॥ विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी॥ वसहि विपिन शुभ आश्र
म जानी॥ जहि जप जोग जग्य मुनि करही॥ अति मारीच सुबाहु ह डर
ही॥ देषत यग्य निसाचर धावहि॥ करहि उपद्रव मुनि दुष पावहि॥
गाधि तनय मन चिंता व्यापी॥ हरि विनु मरहि न निसिचर पापी॥ तब
मुनिवर मन कीन विचारा॥ प्रभु अवतरे हरन महि भारा॥ एहुं मिस
देखौं पद जाई॥ करि विनती आनउ दोउ भाई॥ ज्ञान विराग सकल
गुन ऐना॥ सो प्रभु मै देषब भरि नैना॥५१८॥ दो॥ बहु विधि करत मनोर्थ
हि जात लागि नहि वारि॥ करि मज्जन सरजू जल गये भूप दरबारि॥

बा राम २५

राम २५

॥५१९॥ चौ॥ मुनि आगमन सुना जब राजा॥ मीलन गएउ लै सचिव समाजा॥ करि दंडव
त मुनिहि सनमानी॥ निज आसन बैठारे आनी॥ चर्न पखारि कीन्ह अति पूजा॥ मो स
म आजु धंन नहि दुजा॥ विविधि भांति भोजन करवावा॥ मुनिवर हृदय हर्ष अति पा
वा॥ पुनि चरननि मेले सुत चारी॥ राम देखि मुनि देह बिसारी॥ भये मगन देखत
मुख सोभा॥ जनु चकोर पूरन ससि लोभा॥ तब मनि हर्ष बचन कहे राऊ॥ मु
नि अस कृपा कीन्ह काऊ॥ केहि कारन आगमन तुम्हारा॥ कहहु सो कर्त न ला
वउ वारा॥ असुर समूह संतावहि मोही॥ मै जाचन आयो नृप तोही॥ अनु
ज समेत देउ रघुनाथा॥ निसिचर वध मय [illegible] सनाथा॥५२०॥ दो॥ देउ भूप मन
हर्ष कर तजउ मोहि अज्ञान॥ धर्म सुजसु प्रभु तुम्ह कउ इन्ह कहै अति कल्या
न॥५२१॥ चौ॥ सुनि राजा अति अप्रिय बानी॥ हृदे कंप मुख दुति कुम लानी॥
चौथेपन पाये सुत चारी॥ विप्र बचन नहि कहिउ विचारी॥ मागउ भूमि धेनु ध
न कोसा॥ सर्वस देयो आजु सहरोसा॥ देह प्रान ते प्रिय कछु नाही॥ सोउ मु
नि देउ निमिष इक माही॥ सब सुत प्रिय प्रान की नाई॥ राम देत नहि बने

152

बा राम १७६ सु

गुसांई॥ कहि निस्चर अति घोर कठोरा॥ कहि सुंदर सुत परम किसोरा॥ मुनि न
प गिरा प्रेम रस साानी॥ हृदय हरष माना मुनि ग्यानी॥ तब बसिष्ट बहु बिधि
समुझावा॥ नृप संदेह नास कहु पावा॥ अति आदर दोउ तनय बुलाए॥ हृ
दय लाय बहु भाँति सिखाए॥ मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ॥ तुम मुनि पिता आ
न नहि कोऊ॥ ५२२ दो॥ सौपे भूपति रिसिहि सुत बहु बिधि देइ असीस॥
जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस॥ ५२३॥ पुरुषसिंह दो
उ बीर हरषि चले मुनि भय हरन॥ कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व का
रन करन॥ ५२४॥ चौ॥ अरुन नैन उर बाहु बिसाला॥ नील जलद तन स्याम
तमाला॥ कटि पट पीत कसै बर भाथा॥ रुचिर चाप सायक दुहु हाथा॥ स्या
म गौर सुंदर दोउ भाई॥ बिस्वामित्र महानिधि पाई॥ प्रभु ब्रह्मन्यदेव मै
जाना॥ मोहि लगि पिता तजे भगवाना॥ चले जात मुनि दीन्हि देखाई॥ सुनि ताड
का क्रोध करि धाई॥ एकहि बान प्रान हरि लीना॥ दीन जानि तेहि निज पद दी
ना॥ तब रिषि निज नाथहि जीय चीना॥ ५२५॥ दो॥ आयुध सब समरपि कै प्र

राम ७६

भतिजग्य आश्रम आनें॥ कंद मूल फल भोजनो दीन्हे भक्ति हित जानी॥ परद॥ चौ॥ प्रात
काल कहे मुनि सन रघुराई॥ निर्भय यज्ञ करोतु म जाई॥ होम करन लागे मुनि झारी॥ आपु रहे
मख कीं रखवारी॥ सुनि मारीच निशाचर कोही॥ लै सहाइ धावा मुनि द्रोही॥ बिनु फ
र बान राम तेहि मारा॥ शत जोजन गा सागर पारा॥ पावक सर सुबाहु पुनि मारा॥ अ
नुज निशाचर कटक संहारा॥ मारि असुर द्विज निर्भयकारी॥ अस्तुति करहिं देव मुनि झा
री॥ तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया॥ रहे कीन्ह विप्रन पर दाया॥ भक्ति हेत प्रभु कथा
पुराना॥ कहें विप्र जद्यपि प्रभु जाना॥ तब मुनि सादर कहा बुझाई॥ चरित एक
प्रभु देखिये जाई॥ धनुष यग्य सुनि रघुकुल नाथा॥ हरषि चले मुनिवर के साथा॥
आश्रम एक दीख मग माहीं॥ खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं॥ पूछा मुनिहि सिला प्रभु
देखी॥ सकल कथा मुनि कही विशेषी॥ परग॥ दो॥ गौतम नारि श्राप वस उपल दे
ह धरि धीर॥ चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर॥ परव॥ छंद॥ पर
सत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तप पुंज सही॥ देखत रघुनायक जन
सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥ अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख

राम
बा
११

नहीं आवै बचन कही ॥ अतसै बड़भागी चर्नन्हि लागी जुगल नैन जल धार बही
धीरजु मन कीना प्रभु कहु चीना रघुपति कृपा भगति पाई ॥ अति निर्मल बा
नी अस्तुति ठानी ज्ञान गम्य जय रघुराई ॥ मै नारि अपावन प्रभु जग पावन रा
वन रिपु जन सुखदा [illegible] ई ॥ राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पा
हि सरनै मै आई ॥ मुनि श्राप जु दीना अति भल कीना परम अनुग्रह मै माना ॥
देखेउ भरि लोचन हरि भव मोचन इहै लाभ शंकर जाना ॥ बिनती प्रभु मोरी
मै मति भोरी नाथ न बर मागो आना ॥ पद कमल परागा रस अनुरागा मम म
न मधुप करै पाना ॥ जिह पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई शिव सी
स धरी ॥ सोई पद पंकज जिहि पूजत अज मम सिर धरु कृपाल
हरी ॥ इह भांति सिधारी गोतम नारी बार बार हरि चर्नन परी ॥ जो अति मन भा
वा सो बरु पावा पति लोक आनंद भरी ॥ प २९ ॥ दो ॥ अस प्रभु दीन दयाल हरि
कार्न रहित कृपाल ॥ तुलसी दास सठ तिह भजु छाडि सकल जंजाल ॥ प
३० ॥ चौ ॥ श्रीजानकीबल्लभ जयति ॥ चले राम लछमन मुनि संगा ॥ गये

११
राम

जह्नजगीपावनगंगा॥ अनजसहस्तिप्रभुकीयेप्रनामा॥ बहुप्रकारसबपायोरामा
पुनिसुरसरिउतरेरघुराजी॥ कैशकपहिपूछाकिरनाधी॥ कहमुनिप्रभुतवकुल
इक्कुराजा॥ नामसागरतेउलोकबिराजा॥ तेहिनृपकेजुगभामनसुकुमारीः
प्रथमकेसनीसुमतिलघुप्यारी॥ सबप्रकारसंपतिसबभ्राराजा॥ सुतबि
हीनमनबिस्मयराजा॥ एकसमयदोउभामनसाथा॥ नृपबनतपहेत
गएरघुनाथा॥ सघनसपल्लवरसंद्रुनाना॥ तहभगमुनिबसतपतेज
निधाना॥ पद्धर॥ दो॥ सहितनारिनृपमुदितमनितहंवर्षशतएक॥ कीना
तपमलदेवभगउस्तुतिकरीअनेक॥ पद्धर॥ चौ॥ कहिनिजदुखप्रनामकी
ना॥ देइअसीसमुनिवरवरदीना॥ नृपघरिनीसनमुनिअसभाषा॥ ले
हिसोवरजोजिउअभिलाषा॥ सुनिमुनिबचनसीसतिननावा॥ देउनाः
थतुमकेजोभावा॥ एककहिएककहिउसुतहोना॥ दूसरहिसाठसहससुगु
नलोना॥ हर्षवंतभयेसुभगवरपाई॥ नृपयुजोरिचर्ननिमिकनाई॥ सहित
भामतिहस्रवधरिआयो॥ हर्षसहितकछुदिवसगवायो॥ जानसघरीः

संडसुखदाई॥ नासके सनीक्रस मांज सभयाई॥ समती प्रसवत्तुविनी
एकसोई॥ भेसुतप्रगटकहै मुनिजोई॥ हर्षित सहृत दिए दान नरेसु
पूजे विप्रगुर गौरि गनेसु॥ घरि घरि संडु विविध मगाए॥ ते सब सुतन्हप
तिनम ऋ्मानु वाए॥ ५३४॥ दो॥ एहि विधि मय सकल सुत पूजे सब मनका
म॥ जांहि देव सनिनी हर्षयुत सन ऋघन श्याम॥ ५३५॥ चौ॥ घरि जन सब
घरि घर नेन रेसु॥ अति अनंद तन मिटै सदेसु॥ होइ सकाज सकाल म
नचीते॥ एहि सुखवसत बहुत दिन बीते॥ बालकेलि करि भए कुमारी
लीन्हा करि हि जग मसंसारा॥ सरजू नदी अवध जो अहई॥ विमल स
लिल उत्तर तट वहई॥ प्रजा लोक के बालक नाना॥ नित उठि तहां करि
हि सनाना॥ अस मंज सत हतर नीक्रानी॥ तिनहे चहुं इ ओरै ने
जिपानी॥ भए प्रजा सब परम दुखारी॥ बालक बधहिं मसुन ऋषरा
री॥ सकल गए जहं बैठ नृपा॥ बोल्यो बचन नाइ पद माला॥ तुम नृप
चाउ प्रजा प्रीतपाला॥ सतत मार मास बकरि काला॥ तज अवदेस वक

राम ९८

मनउनरेस॥ बिनातजेनहिमेटहिकलेस॥ पद्ध॥ दो॥ तबसुतकीनेयाप
बउमारेबालकबंद॥ तमकउप्रानसमानए हहमकेतेकैमिमंद॥ पद्ध॥
चौ॥ प्रजापीरासमेंधीउदीना॥ सुतहिदेसतेबाहरिकीना॥ तासुततनय
जगविदतिप्रभाऊ॥ गुननिंजसमाननतिहनाऊ॥ बसतहृदयनपके
सोकैसे॥ फनिमनिमीनसलिलुरहजैसे॥ गएप्रजासबनिजनिजधा
मा॥ भयेनिसोचमनकउविश्रामा॥ बउरनपतमनकीनबीचारा॥ श्रा
रमयोपनचौथहमारा॥ द्विजमंत्रीगुरसतनबुलाए॥ हिमगीरिविंध्य
मध्यतबश्राए॥ रचरबेदकाएकबनाई॥ येषतबनेबर्ननहिजाई॥ मष
मंरंभषकाउद्योतबतुरगा॥ वेदावंतदेषेयजिमउरगा॥ पद्ध॥ दो॥ सरयपति
सर्निषदानंनमनमउकरिसनमान॥ श्राइतुरंगतबलीयोमरमन
केअजान॥ पद्ध॥ चौ॥ राषेउश्रपनकपलमनिपाही॥ केअनजानकाकुगमश्रा
ही॥ योगवतरहैजेसमटमाने॥ लेतितुरंगतेनउनहिजाने॥ तेनसमश्रा
इकहनयपाही॥ महराजहमकहतउराही॥ लीनतुरंगमजाननकेउ॥

राम
बा
७९

काहूबदियसोआयसहेतु॥सनतबचननयविसमयपाइ॥सकलसतनक
उतरतबुलाए॥जाइतरंगतमहेरउजाड़ी॥सकलचलेचर्णनिसिरनाड़ी॥
सरयतिसमदेषेबलवीरा॥सकलधनर्धरअतिरनधीरा॥तिनहिचलति
चर्नोआकुलाशी॥बलयसजीवमएआकुलाशी॥समनबाडुकउपबनबागा॥
सरताकूपबापकातड़ागा॥नगरगाउअनिनपलनाना॥गीरिकाननिकंदरअ
स्याना॥५४॥सो॥एहिबिधिसोधितरंगगआएसबमिलिमयपाहि॥चर्ननिमाथा
नाइबोलेप्रभकहुअसवनहि॥५४॥चौ॥बोदउमहिसुतफेरपठाये॥चलेस
कलपर्बदिसआए॥जिनकेकरजिमिकुलसमाना॥जोजनभरिबोदहिब
लिवाना॥देषिअतबलविबुधिडराने॥मरहिकहदिविरंचनमाने॥सा
धतमहिपतालसबआए॥दिगजदेषएकसिरनाए॥तेहिपरछासबक
छासुनाए॥बउरीसकलदछनदिसआए॥एउबिधिपुमिदुसरगजे
देषा॥अतिउतंगगुनबिमलविशेषा॥ताहुकेप्रनामतिनकीनो॥चले
सकलपछमचितदीनो॥तिसरेदीषप्रदछनिकीना॥पुनिउतरदिस

राम
७९

सोदेखीना॥देगजस्वेतनिर्षसुषपाए॥सकललक्षणमुनिपछितुमिग्या
ए॥बोदमिमांहिकेअपारनपावा॥सोईभाचऊदिसजलधिसुहावा॥दो॥
५४२॥देखनेग्याइतुरंगतबबाधामुनिवरपास॥बोलेबचनकुधतबभा
चसभबकरनास॥५४३॥चौ॥बोदामहिहमचारऊकेधा॥रेरेदुष्टबडूत
तबसोधा॥कोअकहिचोरदीषबऊहेई॥ग्याहिसमषलीनहीकोई॥सुनति
बचनमुनिचितवाजबही॥भयेभसमछनमाहिसबतबही॥उमाबचनमुनि
हिसमजनबोला॥सधाहोइबिषतेहक्रमडोला॥पावकजानघरहिकरि
प्रानी॥जरहिनकाहेतेअभिमानी॥जानगर्भिजेसंगहकरही॥सुनऊमाम
तेकाहेनमरही॥क्रोधकीनबिनकीएबिचारा॥भएसकलतेहतेजरिछारा॥
रहानरपतिअंसमानबोलाए३॥नहिग्याएजबतिनहिपठाए३॥५४४॥दो॥दी
नेनरपतिअसीसतबअतिहितबारहिबार॥बेगीफिरोलेतुरंगसतमेरेप्रा
नअधार॥५४५॥चौ॥चलेनाइपदसीसकुमारा॥बिसमतितेऊकुलिउजीयारा॥
जहकहुतनीर्थमनीनकेधामा॥दषछबबरकरिदंडप्रनामा॥चलेमनिनस

नयाइ असीसा॥ बोले जुग ऐहउ जाउ महीसा॥ पहुँ गउर गन समन पाशिअ सीसा
चारो दिगजनक नावत पद सीसा॥ एहि बिधि मग गमउ सो छन जाता॥ मैल्ये
ग कउ समती करि भ्राता॥ चर्न परात ब आशिष दयो॥ जरे सकल जे एहि बि
धि सो कयो॥ सन तिहि बचन सो छिमा भारी॥ लेय गेस देखाउ यवारी॥
असमान जहँ मजनु कीना॥ क्रम क्रम सब हि तिलंजुल दीना॥ बहुरि ग
रउ बोले सन ताता॥ मै तोहि कहों करे इक बाता॥ ४८६॥ सो॥ करि अत सो
शीउ याउ गंगा जाउ हि अवन महि॥ दर्सन ते अघ जाइ मज्जन कीने पर्म स
ख॥ ४८७॥ चौ॥ बहु सहस मसब तरहि एहि बिधि॥ गंगा पाइ पर्म पावन नि
धि॥ सुनि अस बचन हृदय अनुमाए॥ सहित गरउ मुनि बरि पहि आए॥
तब बघ गेस मन चर्न नि नायो॥ पूर्व कथा मुनि केरि सुनायो॥ आशिष बदेय त
रंग मुनि दीना॥ हर्षित हृद यग वन तब कीना॥ नगर समीप गरुड य
उचाड़ी॥ गए भवनी निज तब रघुराशी॥ इहत रंग ले नयहि सीत नाशी॥ ब
हु सहस मन कथा सुनाशी॥ विस्मये हर्ष विवस नप भयो॥ कीनय ज्ञरा

बा
राम
८०

राम
८०

नबहुदयो॥ बहुबिधिनृपराजुपुनिकीना॥ प्रजालोककोप्रीतिसबदीना॥
५४५॥ मनुकेराजुदेइनृपआपगयोसुरधाम॥ सुरसरिबिनुआइमनुन
लहेबिश्राम॥५४६॥ चौ॥ तासुतनयदिलीपनृपभयो॥ मनुतपहेतउतरदि
सगयो॥ जतस्विरागमतपकीनकृपाला॥ भएकालवसीबीतेकछुकाला॥ कब
नदिलीपप्रभुताई॥ सेवाजासुनृपरहेहूआई॥ जोगावतजासुमुखसुरपतिर
हाई॥ महिमातासुकविकेहिबिधिकहहीं॥ भागीरथजासुसुतभएजासु॥ पितु
समीनीतआधिकउरजासु॥ तिनहिबोलनृपदीनेउराजा॥ आपचल्योउठितत
पकेकाजा॥ मनमहुकरतपंथअनुमाना॥ सुरसरिआवतजोनतप्राना
ऊमीमनुतनदीनोतिमदेऊ॥ फिरिनिजनगरकनाउनलेऊ॥५५॥ सो॥
एहिबिधिकरतिबिचारनृपतबकीनाप्रबलतप॥ तबबीतेकछुकालदे
हतजीतउप्रगटनाहि॥५५१॥ चौ॥ सुरसरिलागीतजेहितनभूपा॥ सोतजि
सठपियहिजलकूपा॥ होहांभगीरथमनअसभयो॥ पितुनआवबहु
दिनचलिगयो॥ कुकस्थनामतनयइकुरहिऊ॥ दीनराजनीतबहुक

162

राम
बा
८१

हितो। कहि तब सर्व कथा सत पाही। दीन गऊ सीस चल्यो नर नाही। तिक
सत नगर सगन समयाए। अत हि निबड बन सन पआए। देखि भ
गीरथ बन सब पावा। सर सरि हेत तप करु मन लावा। एक चरन देखु
जाउ ठाढी। रवि सन मख चित वे मन लाडी। वर्ष स हस बीते एह माती
जात न जाने दिन अरु राती। देखि उग्र तप अति चल आए। बोले न्र
प सन बचन सुनाए। चह हि न्रपत मोल्ले ऊ वर दाना। बोल्ले न्रप क
रि अत्र हि प्रनामा। जो मांगो सो जानत अहु। मो हि सन मांगन प्रभु के
कै कहहु। ५५१। सो। तदपि कहों प्रभ देउ वर मम। तात न के बुध। दूस
र मांगो जो इरि करि गंगा आवहि पर्मनिधि। ५५२। चौ। एवमस्तु कहि प्रभु निधि
छि का हि डी। सर सरि देउ कवने विधि रहि डी। छुटे जाइ प्रभु के न्रहरि सा तलि
पैर हि न बऊ रि न्रपति सुनि अतलि। से हि तक हो एक ता पाडी। अत ते घा
ल प्रांकर मन मोही। सो री सकारा य देव सर आज। ३ ना हि जब हि तब ही
हो काज। अस कहि विधि अंतर हित भयो। बहुरि भगीरथ शिव तप ठयो

राम
८१

बिबुध बर्षअंगुष्ट मधारा॥ बारि बारि शिवनाम उचारा॥ शिव घाल प्रगटे तब आई॥ हष जोर नय बिनय सुनाई॥ मेरा बवस्य ईसर कहि ईशा॥ बहुरि उमा पति गै कैलासा॥ ५५४॥ दो॥ उहां देव सर शिव बचन नय मुनि मन कीजे विचार॥ जाउ रसातल्ल शिव सहित जात नलावो बार॥ ५५५॥ चौ॥ अंतर शिव रची उपाई॥ निज सिर जटा सो जगम बनाई॥ ईहं भगीरथ अस्तुत कीनी॥ सुभिमदु गीराक्षाउ वीघि दीनी॥ छुटे सोर भयो बहु भारी॥ चकित देव मह ईसगंगे चारी॥ सुरसरि आई शिव जटा समानी॥ एक बर्ष तत बर ही मुलानी॥ कौतक देख सकल सुर हर्षे॥ करि जय जय ति सुमन तिन बर्षे॥ बहुरि भगीरथ सुमरन कीना॥ शिव तब गार बुंद ति न दीना॥ ति हते भई तीन तब धारा॥ गाशीन भए एक ए कपतारा॥ गाशीन भ सो अघ घन कीस पवन॥ देव न दरा नाउ मंदाकन॥ ५५६॥ सो॥ दूसर गई पताल नाम प्रभावति हर निदुष॥ तीसर भई सो गंगा सब संत दुके कर्न सुख॥ ५५७॥ आय भगीरथ तब सिर नाये॥ बोली सुरसरि बचन सुहाए॥ बे गावंति नपर थगै आन्त॥ तरग मरत सम झाँभि मान्त॥ ते हि र

पचइ चलुन पमम आगे ॥ चले हैसे तब पाछे लागे ॥ सनैन पदि खलर तिर छुआ
ना ॥ चले हृदय समरति भगवाना ॥ चली अगु करि मेघ तसुर ... ॥ देवन
मुदति सुमन जर करी ॥ चलति तेज कछु वर्नन जाशी ॥ छुट छित रपीरिशि
लासुहाशी ॥ करहि कुलाहल जीव बहु जाती ॥ कमठ नक्रझष व्याल बहु भा
ती ॥ मज्जन करहि देवति ह आशी ॥ मनेग वैसेहु रहे सब घाशी ॥ ५५८ ॥ सो
करहि जाप जगी जोग हर्ष हृदय न हिजात कहि ॥ तरहि दर्स ते लोग अस
शिव मनि इंद्र जकहहि ॥ ५५९ ॥ चौ ॥ करहि जो मज्जन जय मन लाइ ॥ ति
नकी महिमा कहि न सिराइ हि ॥ स्पदन परिन पमोहत कैसे ॥ तेज वंत र
व देख पजैसे ॥ त्रंघ ति सैल स उवन देसा ॥ पाछे सरि सरै आगे नरे
सा ॥ हरि द्वारि समीप तव आशी ॥ तीर्थ देख सर सरिमन भाए ॥ तीर्थ उम
न मासुख मारी ॥ आय प्रयाग पउची अघहारी ॥ तह मज्जन कीने दुख जा
शी ॥ बहुरि देव सरि कैसी आशी ॥ सो शिव पुरी स हजि सुष राशी ॥ वर्नन जाइ
मनोहरि ताशी ॥ अवरो तीर्थ विविध विधि जानी ॥ गशी कहं कैसी कहो बखानी ॥

बा
राम

८२

राम

८२

मगालोगाहिबहुकरतसनाथा॥ जायचलीएहबिधिरघुनाथा॥ ६६०॥ दो॥
मिलीबहोरिअदितिगाइउदधी हृदयसुखमान॥ लग्योसरापहनभगीरथहि
तमसहंनननआन॥ ६६१॥ चौ॥ कीनेउअसअजसकरेनकेशी॥ तपमहिमावलककी
नहिहेशी॥ सगरतनेयतारेततकाला॥ हर्षवंततबभयोभुपाला॥ अबवरीरहेजेकु
लमहिकेशी॥ तिनकैसंगतरेसबजोशी॥ सकलसमेसंगतहंविधाता॥ तपसनआ
यकहिअसबाता॥ धंन्यभगीरथजसुजगजयो॥ तुमहिसमानरूपअवरनभयो॥ आय
नससप्रतज्ञाकियो॥ संमतवेदजीवनसषदयो॥ गंगासागरसबकोउकहिही
गाघउलूकदेवतरविहुरही॥ भागीरथीअसनामककेहहि॥ सरिमुनिअसिउनाग
जसुगेहहि॥ असकहिविधितेजलोकहिआये॥ इहांभगीरथआतिसुषपाये॥ ६६२॥
छंद॥ पायेअमितसुषबहुरिरजीसरसरहिमनुलाइकै॥ तबदीनआशीष
मदतगंगानृपभवनगेसुषपाइकै॥ इहभांतिसुनिगंगाकथातबरामअ
तिचनिलियनये॥ कहेदासतुलसीरामलछनमहिमतामुनिआशीषदये॥
६६३॥ दो॥ कौशिकआशीषतमीसमयायहर्षरघुनाथ॥ हर्षसहितहोउवं
प धातमुनिपदहनर्थमथा ॥ ६६४॥ चौ॥ रामनामतेसंसयजाशी॥ देहिधरेकाफल

राम
का
८२

पहिंजाहीं॥ गाधिसुतनसबकथासुनाई॥ जेहिप्रकारसुरसरीमहिआई॥ तबप्रभुरिषि
नसमेतनहाए॥ बिबिधदानमहिदेवनपाए॥ हरषिचलेमुनिबृंदसहाया॥ बेगि
बिदेहनगरनीयराया॥ पुररम्यतारामजबदेखी॥ हरषेअनुजसमेतबिशे
षी॥ वापीकूपसरितसरनाना॥ सलिलसुधासममनिसोपाना॥ गुंजति
मंजुमत्तरसभृंगा॥ कूजतकलबहुवरनविहंगा॥ वर्नवर्नबिकसेबनजा
ता॥ त्रिबिधसमीरसदासुखदाता॥२१५॥ दो॥ सुमनबाटिकाबागीबन
विपुलविहंगनिवासु॥ फूलतफलतसुपल्लवतसोहतपुरचहुँपास
॥२१६॥ चौ॥ बनेनवर्नतनगरनिकाई॥ जहिंजाईमनुतहांलुभाई॥ चारुब
जारुबिचित्रअंवारी॥ मनमयजनुबिधिस्वकरसवारी॥ धनिकवनिकव
रधनदसमाना॥ बैठेसकलवस्तुलैनाना॥ चौहटसुंदरगलीसुहाई॥ संत
तरहैंसुगंधसिंचाई॥ मंगलमयमंदरसबकेरे॥ चित्रितजनुरतिना
थचितेरे॥ पुरनरनारिसुभगसुचिसंता॥ धर्मशीलज्ञानीगुनवंता
॥ अतिअनूपजहँजनकनिवासू॥ विथकहिंविबुधविलोकविलासू॥
होतचकितचितकोटविलोकी॥ सकलभुवनसोभाजनुरोकी॥२१७॥ दो॥

राम
८२

धवलधाममनिपुरटपटसुघटतनानाभांत॥सीयनिवाससुंदरसदनसो-
भाकिमिकहिजात॥पदद॥चौ॥सुभगद्वारसबकुलिसकपाटा॥भूपभीरनटमा
गधभाटा॥बनीबिशालबाजगजसाला॥हैगैरथसंकुलसबकाला॥सू
रसचिवसेनपबहुतेरे॥न्रपग्रहसरससदनसबकेरे॥पुरबाहि
रिसरसरतसमीपा॥उतरेजहंतहांबिपुलमहीपा॥देखिअनूपएक
अंबराई॥सबसुपाससबभांतिसुहाई॥कौशककहिउमोरमनमाना॥इ
हांरहियेरघुबीरसुजाना॥भलेहिनाथकहिक्रपानिकेता॥उतरेतहं
मुनिबृंदसमेता॥विश्वामित्रमहामुनिआए॥समाचारमिथिलापतिपाए॥
पदष॥दो॥संगसचिवसुचिभूरिभटभूसुरबरगुरज्ञात॥चलेमिलनि
मुनिनायकहिमुदितराउइहिभांत॥प२०॥चौ॥कीनप्रनामचरनधरमा
था॥दीनअसीसमुदितमुनिनाथा॥विप्रबृंदसबसादरबंदे॥जानभागबड़
राउअनंदे॥कुशलप्रसंनकहिबारहिबारा॥विश्वामित्रन्रपहि
बैठारा॥तिहिअवसरआएदोउभाई॥गएरहेदेखनफुलवाई॥

स्याम गोर म्रदु वैस किसोरा॥ लोचन सुखद विस्व चित चोरा॥ उठे सकल
रघुपति के आए॥ विस्वामित्र निकट बैठाए॥ भये सब सुखी देखि दोउ भ्रा
ता॥ वारि विलोचन पुलक तगाता॥ मूर्ति मधुर मनोहर देखी॥ भयो बि
देह विदेह विशेषी॥ ५७१॥ दो॥ प्रेम मगन मनु जानि नृप करि विवेक धि
रि धीर॥ बोलो मुनि पद नाय सिर गद गद गिरा गंभीर॥ ५७२॥ दो॥
प्रेम मगन मन जानि नृप करि विवेक धरि धीर॥ बोलो मुनि पद नाइ
सिर गद गद गिरा गंभीर॥ ५७३॥ चौ॥ कहो नाथ सुंदर दोउ बालक॥
मुनि कुल तिलक कि नृप कुल पालक॥ ब्रह्म जो निगम नेति कहि गा
वा॥ उभै बेष धरि के सोई आवा॥ सहज विराग रूप मनु मोरा॥ थक
त होत जिम चंद चकोरा॥ ताते प्रभ पूछों सतिभाउ॥ कहो नाथ जिन
करो दुराउ॥ इनहि बिलोकत अति अनुरागा॥ बरबस ब्रह्म सुखहि
मन त्यागा॥ कहि मुनि बिहसि कहेउ नृप नीका॥ बचन तुमार न हो
इ अलीका॥ ए प्रिय सबहि जहां लग प्रानी॥ मन मुसकाहि राम सुनि

बानी॥ रघुकुल मनि दसरथ के जाए॥ मख हित लाग नरेस पठाए॥२१४॥ दो॰॥ रा
म लखन दोउ बंधु बर रूप सील बल धाम॥ मख राखेउ सब साखि जग जिते अ
सुर संग्राम॥२१५॥ चौ॥ मुनि तव चरन देखि कह राऊ॥ कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभा
ऊ॥ सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता॥ आनंदहू के आनंद दाता॥ इन्ह कै प्रीति परसप
र पावनि॥ कहि न जाइ मन भाव सुहावनि॥ सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू॥ ब्र
ह्म जीव इव सहज सनेहू॥ पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू॥ पुलक गा
त उर अधिक उछाहू॥ मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसा॥ चलेउ लवाइ न
गर अवनीसा॥ सुंदर सदन सुखद सब काला॥ तहाँ बासु लै दीन्ह भुआ
ला॥ करि पूजा सब बिधि सेवकाई॥ गयउ राउ गृह बिदा कराई॥२१६॥ दो॥
रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजन बिश्राम॥ बैठे प्रभु भ्राता सहित दि
वस रहा भरि जाम॥२१७॥ चौ॥ लखन हृदै लालसा बिसेषी॥ जाइ जनकपु
र आइअ देषी॥ प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं॥ प्रगट न कहहिं मनहिं मु
सुकाहीं॥ राम अनुज मन की गति जानी॥ भगत बछलता हियँ हुलसानी

परमबेनीतसकुचमुसकाई॥बोलेगुरअनुसासनपाई॥नाथलषनपुरदे
षनचहहीं॥प्रभुसकोचडरप्रगटनकहहीं॥जोराबरआइसमैपावौं॥नग
रदिषाइतुरतलैआवौं॥सुनेमुनीसकहिबचनसप्रीती॥कसनरामतुमरा
षोनीती॥धर्मसेतपालकतुमताता॥प्रेमविवससेवकसुषदाता॥५२८॥दो॥
जाइदिषावोऊनगरतुमसुषनिधानदोऊभाइ॥करऊसफलसभ
केनयनसुंदरबदनदिषाइ॥५१८॥चौ॥मुनिपदकमलबंदिदो
ऊभ्राता॥चलेलोकलोचनसुषदाता॥बालकबृंददेषअतिसोभा
लगैसंगीचोलैमनलोभा॥पीतबसनपरिकरकटिभाथा॥चारचा
पसरसोहतहाथा॥तनअनहरतसचंदनषोरी॥स्यामलगौरम
नोहरजोरी॥केहरकंधरबाहुबिसाला॥उरअतिरुचरनागमनमा
ला॥सुभगसोनसरसीरऊलोचन॥बदनमयंकतापत्रैमोच
न॥काननिकनकफूलछबिदेहीं॥चितवतचितहिचोरिमनलेहीं॥

मनहुं रंक निधि लूटन लागी

171

चितवन चारि भकुटवर बांकी॥ तिलक रेष सोभा जन चांकी॥ ५८०॥ दो॥
रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केस॥ नष सिष सुंदर बंधु दोऊ
सोभा सकल सुदेस॥ ५८१॥ चौ॥ देषन नगर भूपसुत आइ॥ समाचा
र पुरबासिन पाए॥ धाए काम धाम सम त्यागे॥ निरष सहज सुंदर दो
ऊ भाई॥ होहि सुखी लोचन फल पाई॥ जुवती भवन झरोषन लागी॥
निरषै राम रूप अनुरागी॥ कहहि परसपर बचन सप्रीती॥ सषि इ
न कोटि काम छबि जीती॥ सुर नर असुर नाग मुनि माही॥ सोभा अस
कहु सुनी अत नाही॥ बिस्नु चार भुज बिध मुष चारी॥ विकट बेष मुष
पंच पुरारी॥ अपर देव अस कोऊ न आही॥ यह छबि सषी पटतर एजा
ही॥ ५८२॥ दो॥ वै किसोर सुषमा सदन स्याम गोर सुष धाम॥ अंग अंग प
र वारी अहि कोटि कोटि सत काम॥ ५८३॥ चौ॥ कहो सषी अस के तन धारी॥
जो न मोहि यह रूप निहारी॥ कोऊ सप्रेम बोली मृद बानी॥ जो मै सुना स
सुन हु सयानी॥ ए दोऊ बंधु दसरथ के ढोटा॥ बाल मरालन के कल जोटा॥

मुनि कौसिक के रखवारे॥ जिन रन अजर निशाचर मारे॥ स्याम गात कल कंज
बिलोचन॥ जो मारीच सुभुज मद मोचन॥ कौसल्या सुत सो सुख खानी॥ नाम राम
धनु सायक पानी॥ गौर किसोर बेखु बर काछे॥ कर सर चाप राम के पा
छे॥ लछमन नाम राम लघु भ्राता॥ सुनि सखि तासु सुमित्रा माता॥ ५८४॥
दो॥ बिप्र काजु करि बंधु दोउ मग मुनि बधू उधार॥ आए देखन चाप म
ख सुनि हरखीं सब नार॥ ५८५॥ चौ॥ देखि राम छबि कोउ इक कहही॥ जोगु जान
कीहि यह बर अहही॥ जौ सखि इनहि देख नरनाहू॥ पन परिहरि हठि करै
बिबाहू॥ कोउ कह ए भूपति पहिचाने॥ मुनि समेत सादर सनमाने॥ सखि
परंतु पन राउ न तजई॥ बिधि बस हठि अबिबेकहि भजई॥ कोउ कहै
जौं भल अहहि बिधाता॥ सब कहँ सुनिअ उचित फल दाता॥ जौं जानकिहि मि
लहि बर एहू॥ नाहिन आलि इहाँ संदेहू॥ जौं बिधि बस अस बनै सं
जोगू॥ तौ कृतकृत्य होंहि सब लोगू॥ सखि हमरें आरति अति तातें॥ कब
हुँक ए आवहिं एहि नातें॥ ५८६॥ दो॥ नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि इन

राम बा ६६

राम ८६

करदरसनदूर॥ एहंससंघटतबहोइजबपुन्यपुराकृतभूर॥ ५८७॥ चौ॥ बो
लीअपरकहेउसखिनीको॥ इहबिबाहअतिहितसबहीका॥ कोउकहसंकर
चापकठोरा॥ एस्यामलमृदगातिकिसोरा॥ सभअसमंजसअहहिस्यानी यहे
सुनिअपरकहैमृदबानी॥ सखइनकहकोउअसकहहीं॥ बडप्रभाउदेखतल
घअहहीं॥ परसजासपदपंकजधूरी॥ तरीअहिल्याकृतअघभूरी॥ सोकिरहैबि
नाशिवधनुतोरे॥ यहप्रतीतपरहरअनभोरे॥ जेहबिरंचरचसीयासवारी
तेहस्यामलवरुरच्योविचारी॥ तासुबचनसुनिसबहरषानी॥ ऐसेइहोउक
हैंउमृदुबानी॥ ५८८॥ दो॥ हियेहरषबरषैसुमनसुमुखसुलोचनबृं
द॥ जाहिजहांजहांबंधदोउतहंतहंपरमानंद॥ ५८९॥ चौ॥ पुरपूरबदिसग
एदोउभाई॥ जेहधनमखहितभूमबनाई॥ अतिबिस्तारचारुगचढारी॥ बिमलबे
दकारुचिरसवारी॥ चहुदिसकंचनमंचबिशाला॥ रचेजहांबैठेमहिपाला॥ तेह
पाछैसमीपचहुपासा॥ अपरमंचमंडलीबिलासा॥ कछुकऊचसबभातिसहाए॥
बैठेनगरलोकजेहजाए॥ तिनकेनिकटबिशालसुहाए॥ धवलधामबहुबरनबना
ए॥ जेहबैठेदेखैसबनारी॥ जथाजोगनिजकुलअनुहारी॥ पुरबालककहिकहिम

हुबचना॥ सादर प्रभुहि दिखावहि रचना॥ ५८०॥ दो॥ सब सिसु एहि मिस प्रेमब
स परसि मनोहर गात॥ तन पुलकहि अति हरष हिय देखि देखि दोउ भ्रात॥ ५८१॥
चौ॥ सिसु सब राम प्रेमबस जाने॥ प्रीति समेत निकेत बखाने॥ निज निज रुचि सब
लेहु बुलाई॥ सहित सनेह जाहि दोउ भाई॥ राम दिखावहि अनुजहि रचना॥ कहि
मृदु मधुर मनोहर बचना॥ लव निमेष महु भुवन निकाया॥ रचे जासु अनुसास
न माया॥ भक्ति हेत सोई दीनदयाला॥ चितवत चकित धनुष मष साला॥ कौतुक देखि
चले गुर पा[illegible]ही॥ जानि बिलंब त्रास मन माही॥ जासु त्रास डर कहु डर होई॥ भजन
प्रभाउ देखवत सोई॥ कहि बातै मृदु मधुर सुहाई॥ कीए बिदा बालक बरिआई॥
५८२॥ दो॥ सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाई॥ गुर पद पंक
ज नाइ सिर बैठे आइस पाइ॥ ५८३॥ चौ॥ निसि प्रवेस मुनि आइस दीना॥ सब
हीं संध्याबं[illegible]दन कीना॥ कहत कथा इतहास पुरानी॥ रुचिर रजनि जुग जाम
सिरानी॥ मुनिवर सैन कीन तब जाई॥ लगे चरन चांपन दोउ भाई॥ जिन
कै चरन सरोरुह लागी॥ करत बिबिध जप जोग बिरागी॥ तेई दोउ बंधु प्रे
म जनु जीते॥ गुर पद कमल पलोटत पीते॥ बार बार मुनि आज्ञा दीनी॥

रघुवर जाइ सैन जव कीनी।। चापत चरन लखन उर लाए।। समय सप्रेम परम सु
ख पाए।। पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता।। पौढे धरि उर पद जलजाता।।२२४।।दो।। उठे ल
खन निसि विगत सुनि अरुन सिखा धुनि कान।। गुर तें पहिले जगत पति जागे रा
म सुजान।।२२५।।चौ।। सकल सौच करि जाइ नहाए।। नित्य निवाहि मुनिहि सिर ना
ए।। समै जानि गुर आइसु पाई।। लेन प्रसून चले दोउ भाई।। भूप बाग वर देखो
जाई।। जहं बसंत रितु रही लोभाई।। लागे विटप मनोहर नाना।। वरन वरन
बर वेलि विताना।। नव पल्लव फल सुमन सुहाए।। निज संपति सुर रूष लजाए।। चातक को
किल कीर चकोरा।। कूजत विहंग नटत कल मोरा।। मध्य बाग सर सोह सु
हावा।। मनि सोपान विचित्र बनावा।। विमल सलिल सरसिज बहुरंगा।। जल
खग कूजत गुंजत भृंगा।।२२६।।दो।। बाग तडाग विलोकि प्रभु हरखे बंधु समेत
परम रम्य आरामु यह जो रामहि सुख देत।।२२७।।चौ।। चहु दिसि चितै पूंछि
माली गन।। लगे लेन दल फूल मुदित मन।। तेहि अवसर सीता तहं आई।। गि
रिजा पूजन जननि पठाई।। संग सखी सब सुभग सयानी।। गावहि गीत मनो
हर बानी।। सर समीप गिरिजा गृह सोहा।। वरनि न जाइ देखि मन मोहा।।

मज्जनकरिसरसखिनसमेता॥ गईमुदितमनिगौरनिकेता॥ पूजाकीनअ
धिकअनरागा॥ निजअनुरूपसुभगवरमागा॥ एकसषीसीयासंगीबि
हाई॥ गईरहीदेषनफुलवाई॥ तेहदोउबंधुविलोकेजाई॥ प्रेमविवस
सीतापहिआई॥ ५९८ दो॥ तासदसादेखीसखनपुलकगातजलनैन॥ कहु
कारननिजहर्षकरीपछहिसबमदबैन॥ ५९९॥ चौ॥ देषनबागकुंयार
दुइआए॥ वैकिसोरसभभांतसुहाए॥ स्यामगौरकिमकहौंबषानी॥ गिराअ
नैननैनबिनबानी॥ सुनिहरषीसबसखीस्यानी॥ सीयहीयअतिउतकंठजा
नी॥ एककहैन्रपसततेईआली॥ सुनेजेमुनिसंगीआएकाली॥ जिनिजरू
पमोहनीडारी॥ कीनस्ववसनगरनरनारी॥ वर्नतछबिजहतहसब
लोगू॥ अवसिदेषीअहिदेषनजोगू॥ तासबचनअतिसीयहिसोहाने॥ द
रसलागलोचनअकुलाने॥ चलीअगरकरप्रियसखसोई॥ प्रीतपुरा
तनलखैनकोई॥ ६०० दो॥ सुमरसीयनारदबचनउपजीप्रीतपुनीत॥
चकतिविलोकतसकलदिसजनसिसम्रगीसभीत॥ ६०१ चौपई॥ कंक

नकेंकनन्नपरधुनिसुनी॥ कहततलषनसनरामहृदैगुनी॥ मनहुमदनदुंदभी
दीनी॥ मनसाविसविजयकहुकीनी॥ असकहिफिरचितएतेहुओरा॥ सीयमुषससि
भएनैनचकोरा॥ भएविलोचनचारुअचंचल॥ मनहुसकुचनिमितजेदिगंचल
देषसीयसोभासुषपावा॥ हृदैसराहतबचननआवा॥ जनुविरंचसविनिजनिपु
नाई॥ विरचविसकहुप्रगटदेषाई॥ संदरताकहुसंदरकरई॥ छविगृहदीपसिषा
जनुवरई॥ सबउपमाकबरहैजुठारी॥ केहिपटतरोविदेहकुमारी॥ ६२॥ दो॥ सी
यसोभाहीएवरनप्रभआपनदसाविचार॥ बोलेसुचिमनअनुजसनबचनसमय
अनुसार॥ ६३॥ चौ॥ तातजनकतनजाइहिसोई॥ धनषजग्यजिहकारनहोई
पूजनगौरसषीलैआई॥ करतप्रकासफिरैफुलवाई॥ जासविलोकअलौकक
सोभा॥ सहजपुनीतमोरमनछोभा॥ सोसभकारनजानविधाता॥ फरकहि
सुभगअंगसुनभ्राता॥ रघुबंसनकरिसहजसुभाऊ॥ मनकुपंथपगध
रैनकाऊ॥ मोहिअतिसैप्रतीतमनकेरी॥ जिहसपनेपरनारनहेरी॥ जि
नकेलहैनरिपरनपीठी॥ नहिपावहिपरतियमनडीठी॥ मंगनलहहि
नजिनकैनाही॥ तेनरवरथोरेजगमाही॥ ६४॥ दो॥ करतबातकहीअ

नजसन मनु सियरूप लुभान॥ मुख सरोज मकरंद छबि करै मधुप इव

पान॥ २३५॥ चौ॥ चितवत चकित चहूं दिस सीता॥ कहं गए न्रप किसोर मन

चीता॥ जहं बिलोक मृग सावक नैनी॥ जनु तहं बरस कमल सित स्रेनी॥ लता

उल्लट तब सषन लषाए॥ स्यामल गोर किसोर सुहाए॥ देष रूप लोच

न ललचाने॥ हरषे जनु निज निध पहचाने॥ थके नैन रघुपति छबि दे

षे॥ पलकन हूं परहरी निमेषे॥ अधिक सनेह देह भै भोरी॥ सरद ससिह

जनु चितव चकोरी॥ लोचन मग रामहि उर आनी॥ दीने पलक कपाट सया

नी॥ जो छबि इन नैनन मम राझी॥ मन तपु नैष्टि पैज ह कीज ह जाई॥ तब सीय

सषन प्रेमबस जानी॥ कहि न सकहि कछु मन सकुचानी॥ २३६॥ दो॥ लता भव

न ते प्रगट भए तेहि अवसर दोउ भाइ॥ निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पट

बिलगाइ॥ २३७॥ चौ॥ सोभा सीव सुभग दोउ बीरा॥ नील पीत जलजात सरीरा॥

काक मोर पंष सिर सोहत नीके॥ गुछे बिच बिच कुसुम कली के॥ भाल तिल

क श्रम बिंदु सुहाए॥ श्रवन सुभग भूषन छबि छाए॥ बिकट भ्रकुट कच

राम रा ८९

राम ८९

घुंघरवारे॥ नवसरोजलोचनरतनारे॥ चारचेबकनासकाकपोला॥ हसविलास
लैमनमोला॥ मुषछविकहिनजाइमोपैपाही॥ जोबिलोकबहुकामलजाही॥ उरम
नमालकंबकलग्रीवा॥ कामकलभकरभुजबलसीवा॥ सुमनसमेतबांमकरि
दोना॥ सावरकुअरसषीसुठिलोना॥ २८८॥ दो॥ केहरकटिपटपीतधरसुषमासी
लनिधान॥ देषभानकुलभूषनहिबिसरासषनअपान॥ २८९॥ चौ॥ धरिधीरज
इकअलीसयानी॥ सीतासनबोलीगहिपानी॥ बहुरीगौरिकरध्यानकरेहू॥ भूपकि
सोरदेषिकिनलेहू॥ सकुचसीयतबनैनउघारे॥ सनमुषदोउरघुसिंघनिहारे॥
नषसिषदेषरामकेसोभा॥ सुमरपितापनमनअतिछोभा॥ परबससषनल
षीजबसीता॥ भएगहरुसबकहिहसभीता॥ पुनिआउबयहिबेरीअका
ली॥ असकहिमनबिहसीइकआली॥ गूढगीरासुनिसीयासकुचानी॥ भयो
बिलंबमातभयमानी॥ धरबडधीररामउरआने॥ फीरीअपनपउपितु
बसजाने॥ २९०॥ दो॥ देषनमिसमृगविहंगतरफिरैबहोरबहोर॥ निर
षनिरषरघुबीरछबिबाढैप्रीतनथोर॥ २९१॥ चौ॥ जानकठनशीव
चापविसूरत॥ चलीराषउरस्यामलमूरत॥ प्रभुजबजातजानकीजानी॥

सबसनेहसोभागुनषानी॥बरमनप्रेममगनमदमसकीनी॥चैरचितबे
भीतरलिषलीनी॥ गईभवानीभवनबहोरी॥बंदचरनबोलीकरजोरी
जयजयगिरवरराजकिसोरी॥जयमहेसमुषचंद्रचकोरी॥जयगज
बदनषडानननमाता॥जगतजननदामनदुतगाता॥नहितवआदिमंत
मधिसाना॥अमितप्रभाउबेदनहिजाना॥भवभवविभवपराभवकारन॥विस्व
बिमोहिनस्ववसविहारन॥१३२॥दो॥पतिदेवतासतीयमहुमातप्रथमतव
रेष॥महिमाअमितनकहसकैसहससारदासेस ॥१९३॥चौ॥सेवततोहसलभ
फलचारी॥वरदायनतिपुरारप्यारी॥देवपुजपदकमलतुमारे॥सुरनर
मुनिसबहोहिसुषारे॥मोरेमनोरथजानहुनीके॥बसहुसदाउरपुरस
बहीके॥कीनउप्रगटनकारनतेही॥असकहिचरनगहेबैदेही॥बिनप्रे
मबसभईभवानी॥षसीमालमूरतमुसकानी॥सादरसीयप्रसादसिस
धरेऊ॥बोलीगौरहरषहीऊभरेऊ॥सुनसीयसतअसीसहमारी॥पूज
हिमनकामनातुमारी॥नारदबचनसदासचसाचा॥सोवरमिलहुजाहिमन

राम
बा
५०
राम
५०
व

राचा [illegible]॥ मन नारद बचन सदा सुचि साचा॥२३४ छंद॥ मन जाहि राचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर सांवरे॥ करुनानिधान सुजान सील सनेह जानत रावरे॥ एहि भांति गौरि असीस सुनि सीया सहित हीय हरषी अली॥ तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥२३५॥ सो॥ जानि गौरि अनुकूल सीय हीयै हरष न जाइ कहि॥ मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥२३६॥ चौ॥ हृदै सराहत सीय लोनाँई॥ गुर समीप गमने दोउ भाई॥ राम कहा सब कौसिक पाही॥ सरल सुभाउ छुवा छल नाही॥ सुमन पाइ मुनि पूजा कीनी॥ पुनि असीस दुहु भाइन दीनी॥ सफल मनोरथ होउ तुमारे॥ राम लषन सुनि भए सुषारे॥ करि भोजन मुनिवर विज्ञानी॥ लगे कहन कछु कथा पुरानी॥ विगत दिवस गुर आइस पाई॥ संध्या करन चले दोउ भाई॥ प्राची दिस ससि उयौ सुहावा॥ सीय मुष सरिस देष सुष पावा॥ बहुर बिचार कीन मन माही॥ सीय बदन सम हिमकर नाही॥२३७॥ घटै बढै बिरहनि दुषदाई॥ ग्रसै राहु निज संधहि पाई॥ कोक सोकप्रद पंकज द्रोही॥ अवग

दोहा॥ जनम सिंधु पुनि बंधु बिष दिन मलीन सकलंक॥ सीय मुष समता पाव किमि चंद

नबहुतचंद्रमातोही॥ बैदेहीमुखपटतरकीने॥ कोटन्हिकोटिजतनजा
बा
धीनै॥ होइदोषअनुचितबडकीने॥ सीयमुषछबिबिधब्याजबषानी॥
श
राम
गुरपहिचलेनिसबडजानी॥ करिमनिचरनसरोजप्रनामा॥ आइसपाइकी
नबिश्रामा॥ बिगतिनिसारघुनाइकजागे॥ बंधबिलोककहनअसलागे॥
उदोअरुनअवलोकहुताता॥ पंकजकोकलोकसुखदाता॥ बोलेलखन
५१
जोरजुगपानी॥ प्रभप्रभाउसूचकम्रदबानी॥६१९॥ दो॥ अरुणोदैसकु
चेकुमदउडगनजोतमलीन॥ जिमितुमारआगमनसुनिभएन्रपतिब
लहीन॥६२०॥ चौ॥ न्रपसबनषतकरहिउज्यारी॥ टारनसकहिचापत
राम
मभारी॥ कमलकोकमधकरिषगनाना॥ हरषेसकलनिसाअवसाना॥
५१
ऐसेप्रभुसबभक्ततुमारे॥ होइहैंटूटतधनषसुषारे॥ भयोभानबिनश्र
मतमनासा॥ दुरेनषतजगतेजप्रकासा॥ रविनिजउदैब्याजरघुराया॥
प्रभुप्रतापसभन्रपनदिषाया॥ तबभुजबलमहिमाउदघाटी॥ प्रगटीध
नविघटनपरिपाटी॥ बंधबचनसुनप्रभमुसकाने॥ होइसुचसहजपुनी

तनसाने॥नितक्रियाकरिगुरपहिंआये॥चरनसरेजसुभगसिरना
ए॥सतानंदतबजनकबुलाए॥कैसकमुनिपहिंतुरतपठाए॥जनक
विनयतिनआइसुनाई॥हरषबोलिलएदोउभाई॥२२१॥दो॥सतानंदपद
वंदप्रभुबैठेगुरपहिंजाइ॥चलहुतातमुनिकहेउतबपठवाजनकबुला
इ॥२२२॥चौ॥सीयासुयंबरुदेखीयेजाई॥ईसकाहिधोंदेइबडाई॥लषन
कहाजसभाजनसोई॥नाथकृपातवजापरहोई॥हरषेमुनिसबसु
निबरबानी॥दीनअसीससबैसुषमानी॥पुनिमुनिबृंदसमेतकृपा
ला॥देषनचलेधनषमषसाला॥रंगभूमिआएदोउभाई॥असिसुधिस
बपुरबासनपाई॥चलेसकलग्रहकाजबिसारी॥बालकजुवजठरन
रनारी॥देषीजनकभीरभैभारी॥सुचसेवकसबलएहकारी॥तुरत
सकललोकन्हिपहिंजाहू॥आसनउचतदेउसमकाहू॥२२३॥दो॥कहि
मृदवचनविनीततिनबैठारेनरनार॥उतममधममनीचपुनिनिज
निजथलअनुहार॥२२४॥चौ॥राजकुअरतिहअवसरआए॥मनोम

नोहर तात न थाए॥गुन सागर नागर वर बीरा॥सुंदर स्यामल गौर सरीरा॥राजसमाज विराजत रूरे॥उडगन मुह जनजुग विधु पूरे॥जिनकै रही भावना जैसी॥प्रभु मूरति तिन देखी तैसी॥देखहिं भूप महा रनधीरा॥मनहु बीर रस धरे सरीरा॥डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी॥मनहु भयानक मूरति भारी॥रहे असुर छल छोनिप बेषा॥तिन प्रभु प्रगट कालसम देखा॥पुरबासिन देखे दोउ भाई॥नरभूषन लोचन सुखदाई॥२२५॥दो॰॥नारि बिलोकहिं हरषि हीयँ निज निज रुचि अनुरूप॥जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप॥२२६॥चौ॰॥बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा॥बहु मुख कर पग लोचन सीसा॥जनक जाति अवलोकहिं कैसे॥सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे॥सहित बिदेह बिलोकहिं रानी॥सिसु सम प्रीति न जाइ बखानी॥योगिन्ह परम तत्वमय भासा॥सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा॥

हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता॥इष्टदेव इव सब सुख दाता॥रामहि चितव भाइ जेहि सीया॥सो सनेह सुख नहिं कथनीया॥उर अनुभवति न कहि सक सोऊ॥कवन प्र

कोर कहै कव कोऊ॥ येह बिधि रहा जाहि जस भाऊ॥ तेहि तस देख्यो को
सलराऊ॥ २४१॥ दो॥ राजत राज समाज मऊ कौसलराज किसोर॥ सुं
दर स्यामल गौर तन विस्व विलोचन चोर॥ २४२॥ चौ॥ सहज मनोह
र मूर्ति दोऊ॥ कोटि काम उपमा लघु सोऊ॥ सरद चंद निंदक मुख नी
के॥ नीरज नैन भावने जी के॥ चितवन चारु मार मन हरनी॥ भाव
त हृदै जात नहि बरनी॥ कल कपोल स्रुत कुंडल लोला॥ चिबुक अध
र सुंदर म्रदु बोला॥ कुमद बंधु कर निंदक हासा॥ भ्रकुटी विकट म
नोहर नासा॥ भाल विसाल तिलक झलकाही॥ कच विलोक अलि अव
लि लजाही॥ पीत चौतनी सिरन सहाई॥ कुसम कली विच बीच बनाई॥ रे
खा रुचिर कंबु कल ग्रीवा॥ जनु त्रिभुवन सुखमा की सीवा॥ २४२॥ दो॥ कुंजर मणि
कंठा कलित उरन तुलसिका माल॥ ब्रिषभ कंध केहर ठवन बलनिधि बाहु बि
साल॥ २४३॥ चौ॥ कटि तूनीर पीत पट बांधे॥ कर सर धनुष बाम बर कांधे॥ पी
त जग्योपवीत सुहाए॥ नख सिख मंजु महा छबि छाए॥ देख लोग सब भए सु

बारे॥ रुचिर कसौटी जनु चलत तन तारे॥ हरषे जनक देखि दोउ भाई॥ मुनि पद कमल गहे तब जाई॥ करि बिनती निज कथा सुनाई॥ रंग अवनि सब मुनिहि देखाई॥ जहँ जहँ जाहिं कुअर बर दोऊ॥ तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ॥ निज निज रुख रामहि सब देखा॥ कोउ न जान कछु मरम बिसेषा॥ भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ॥ राजाँ मुदित महा सुख लहेऊ॥ २४१॥ दो॥ सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल॥ मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल॥ २४२॥ चौ॥ प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे॥ जनु राकेस उदय भएँ तारे॥ असि प्रतीति सब के मन माहीं॥ राम चाप तोरब सक नाहीं॥ बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला॥ मेलिहि सीय राम उर माला॥ अस बिचारि गवनहु घर भाई॥ जसु प्रतापु बलु तेजु गवाँई॥ बिहसे अपर भूप सुनि बानी॥ जे अबिबेक अंध अभिमानी॥ तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा॥ बिनु तोरें को कुअँरि बिआहा॥ एक बार कालउ किन होऊ॥ सिय हित समर जितब हम सोऊ॥ यह सुनि अवर

मर्तिपमसकाने॥ घरमसीलहरिमतीस्याने॥ द३३॥ सो॥ सीयाविवाहीरामगर
बहुरकपैनयनकै॥ जीतकैसकसंग्रामदसपैरनबांकरे॥ द३४॥ चौ॥ अर्थमर
हुजनगालबजाई॥ मनमोदकनकिमभवताई॥ सीसहमारसनेप
रमपुनीता॥ जगदंबजानहुजीयासीता॥ जगतपितारघुपतिहविचा
री॥ भरलोचनछबिलेहुनिहारी॥ सुंदरसबदसकलगुनरासी॥ ए
देउबंधसंमउरबासी॥ सधासमदुसमीपबैठी॥ मगजलनिरषमर ह
हकतिधाई॥ कहहुजाइजाकहुजोईभावा॥ हमतोआजजनमफलपा
वा॥ जसकमलोमपमनुरागे॥ रूपामृतपबिलोकनलागे॥ देषकैस
रनमचढेबिबाना॥ बरषहिसमनकरहिकलगाना॥ द३५॥ दो॥ जानस
मउसरसीमातबपठईजनकबुलाइ॥ चतुरसखीसंदुसकलसादर
चलीलवाइ॥ द३६॥ चौ॥ सीयासोमानहिजाइबषानी॥ जगदंबकारूपगु
नषानी॥ उपमासकलमोहिलघुलागी॥ प्राकृतनारअंगअनरागी॥
सियवरनियतहिउपमादेई॥ कुकविकहाइअजसकोलेई॥ जोपट

तरिअतीअसमसीया॥जगअसजुवतकहा कमनीया॥गिरामुषर
तनअरधभवानी॥रतिअतिदुषितअतनपतिजानी॥विषवारुनीबं
धुप्रियजेही॥कहिअरमासमकिमवैदेही॥जोछबिसुधापयोनिध
होई॥परमरूपमयकछुपसोई॥सोभारजुमंदरुसिंगारु॥
मथैपानिपंकजनिजमारु॥२३७॥दो॥इहबिधिउपजैलछिजबसुंद्र
तासुखमूल॥तदपिसंकोचसमेतकविकहहिसीयासमतूल॥२
३८॥चौ॥चलीसंगलैसंगिसयानी॥गावतिगीतमनोहरबानी॥सो
हतबलतनसुंद्रसारी॥जगतजननअतुलतिछबिभारी॥भूषन
सकलसुदेससुहाए॥अंगअंगरचसखिनबनाए॥रंगभूमज
बसीयापगधारी॥देषिरूपमोहेनरनारी॥हरषसुरनदुंदभी
बजाई॥बरषप्रसूनअपछरागाई॥पानसरोजसोहिजयमाला॥
अवचटचितएसकलभुआला॥सीयाचकतचितरामहिचाहा॥
भएमोहबससभनरनाहा॥मुनिसमीपदेषेदोउभाई॥लगे

ललकिलोचननिधपाई॥२३९॥दो॥गुरजनलाजसमाजबडुदेखिसी
यासकुचानि॥लागबिलोकनसखिनतनरघुबीरहिउरआनि॥२४०॥
चौ॥रामरूपअरुसियछबिदेखे॥नरनारनपरहरीनमेखे॥सोच
हिसकलकहतसकुचाही॥बिधसनबिनैकरेमनमाही॥हरबिध
बेगजनककजडताई॥मतिहमारअसदेहुसहाई॥बिनबिचारप
नितजिनरनाहू॥सीयारामकरकरैबिवाहू॥जगभलकहैभावसब
काहू॥हठकीनेअंतहिउरदाहू॥यहिलालसामगनसबलोगू॥बरसांवरो
जानकीजोगू॥तबबंदीजनजनकबुलाए॥बिरदावलीकहतचलआए॥कहिन
पजाइकहेपनमोरा॥चलेभाटहीयेहरखनथोरा॥२४१॥दो॥बोलेबंदीबच
नबरसुनउसकलमहीपाल॥पनबैदेहकरकहहिहमभुजाउठाइबिसा
ल॥२४२॥चौ॥न्रपभुजबलबिधशिवधनराहू॥गरुअकठोरबिदितसब
काहू॥रावनबानमहाभटभारे॥देखसरासनगवहिसिधारे॥सो
ईपुरारकोदंडकठोरा॥राजसमाजआजजेहीतोरा॥त्रिभवनजयसमे

बा
राम
९५

तबै देही ॥ कैनै विचार करै हठ तेही ॥ सनि पन सकल भूप अभिला
षे ॥ भटमानी अतिसै मन माषे ॥ परकरि बांधि उठे अकुलाई ॥ च
ले इष्ट देवन सिर नाई ॥ तमकि ताकि तकि सिवधनु धरही ॥ उठे न
कोटि भांति बल करही ॥ जिन कै कछु विचार मन माही ॥ चाप समी
प महीप न जाही ॥ २४३ ॥ दो ॥ तमक धरै धनु मूढ नृप उठे न चल
हि लजाइ ॥ मनउ पाइ भट बाहुबल अधिक अधिक गरुआइ ॥
२४४ ॥ चौ ॥ भूप सहस दस एकहि बारा ॥ लगे उठावन टरै न टारा ॥
डगै न शंभ सरासन कैसे ॥ कामी बचन सती मन जैसे ॥ सब नृप भए जो
ग उपहासी ॥ जैसे बिन बैराग संन्यासी ॥ कीर्ति विजै बीरता भारी ॥ च
ले चाप कर बरबस हारी ॥ श्रीहत भए हार हीए राजा ॥ बैठे निज निज
जाइ समाजा ॥ नृपन बिलोक जनक अकुलाने ॥ बोले बचन रोष ज
न साने ॥ दीप दीप के भूपत नाना ॥ आइ सुनि हम जो पन ठाना ॥ दे
व दनुज धरि मनुज सरीरा ॥ विपल बीर आए रनधीरा ॥ २४५ ॥ दो ॥

राम
९५

कुअरि मनोहर विजय बड़ि कीरति अति कमनीय॥ पावनहारि विरंचि जनु रचे
उ न धनु दमनीय॥२४६॥ चौ॥ कहहु काहि यहु लाभु न भावा॥ काहु न संकर चाप च
ढ़ावा॥ रहौ चढ़ाउब तोरब भाई॥ तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई॥ अब जनि कोउ मा
खै भट मानी॥ बीर बिहीन मही मै जानी॥ तजहु आस निज निज गृह जाहू॥ लिखा
न बिधि बैदेहि बिबाहू॥ सुकृत जाइ जौ पन परिहरऊ॥ कुअरि कुआरि रहौ का क
रऊ॥ जौं जनतेउ बिनु भट भुव भाई॥ तौ पन करि होतेउ न हसाई॥ जनक बच
न सुनि सब नर नारी॥ देखि जानकिहि भए दुखारी॥ माखे लखन कुटिल भइ
भौंहे॥ रदपट फरकत नैन रिसौंहे॥२४७॥ दो॥ कहि न सकत रघुबीर डर
लगे बचन जनु बान॥ नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान॥२४८॥ चौ॥
रघुबंसिन्ह महु जहँ कोउ होई॥ तेहि समाज अस कहै न कोई॥ कही जनक जसि
अनुचित बानी॥ बिद्यमान रघुकुल मनि जानी॥ सुनहु भानुकुल पंकज भानू॥
कहौ सुभाउ न कछु अभिमानू॥ जौ तुम्हार अनुसासन पावौं॥ कंदुक इव ब्रह्मांड उ
ठाऊ॥ काचे घट जिमि डारौ फोरी॥ सकौ मेरु मूलक जिमि तोरी॥ तव प्रताप महिमा

भगवाना॥ को बापुरो पिनाकु पुराना॥ नाथ जानि अस आइसु होऊ॥ कौतुक क
रौं बिलोकीये सोऊ॥ कमल नाल जिमि चाप चढ़ाऊं॥ जोजन सत्र प्रमान ले धा
ऊं॥ २४९॥ दो॥ तोरों छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ॥ जौं न करों प्रभ पद सप्र
थ कर न धरों धनु माथ॥ २५०॥ चौ॥ लखन सकोप बचन जब बोले॥ डगमगा
न महि दिगज डोले॥ सकल लोक सभ भूप डराने॥ सीया हीय हरष जन
क सकुचाने॥ गुर रघुपति सब मुनि मन माही॥ मुदित भए पुनि पुनि पुल
काही॥ सयनहि रघुपति लखन नेवारे॥ प्रेम समेत निकट बैठारे॥ बिस्वामित्र
समे सुभ जानी॥ बोले अति सनेह मय बानी॥ उठहु राम भंजहु भव चापा॥ मेटहु ता
त जनक परितापा॥ सुनि गुर बचन चरन सिर नावा॥ हरष बिषाद न कछु उर आ
वा॥ ठाढ़ भए उठि सहज सुभाए॥ ठवनि जुवा मृगराज लजाए॥ २५१॥ दो॥ उद
त उदै गिर मंच पर रघुबर बाल पतंग॥ बिकसे संत सरोज सब हरषे
लोचन भृंग॥ २५२॥ चौ॥ नृपन केरि आसा निसि नासी॥ बचन नखत अव
लीन प्रकासी॥ मानी महिप कुमुद सकुचाने॥ कपटी भूप कुमद सकुचाने॥

दिनकरिबेषराम प्रगटाने॥ कपटीभूप उलूकलुकाने॥ भएबि-
सोककोकमुनिदेवा॥ बरिसहिसुमनजनावहिसेवा॥ गुरपदबंदिस-
हितअनुरागा॥ राममुनिन्हसनआयसुमागा॥ सहजहिचलेसकल
जगस्वामी॥ मतमंजुबरकुंजरगामी॥ चलतरामसबपुरनरनारी॥ पुल-
कपूरितनभएसुखारी॥ बंदिपितरसुरसुकृतसंभारे॥ जोकछुपुंन्यप्रभाउ
हमारे॥ तौसिवधनुम्रनालकीन्याई॥ तोरहिरामगनेशगुसाई॥ २५३॥
दो॥ रामहिप्रेमसमेतलखिसखिन्हसमीपबोलाइ॥ सीतमातुसनेहबसब-
नकहैबिलखाइ॥ २५४॥ चौ॥ सखसबकौतकदेखनहारे॥ जेउकहा-
वतहितूहमारे॥ कोउनबुझाइकहैनृपपाही॥ एबालकअसहठभ-
लनाही॥ रावनँछुआनहिचापा॥ हारेभूपसकलकरिदापा॥ सो
धनराजकुअरकरिदेही॥ बालमरालकिमंदरलेही॥ भूपस्यानप
सकलसिरानी॥ सखबिधगतिकछुजातनजानी॥ बोलीचतुरस-
खीम्रदबानी॥ तेजवंतलघुगनियैनरानी॥ कहिकुंभजकहिसिंधु

बान

बा
राम
८७
सुन

अपारा॥ सोइ बिरंचि अज जस सरिस संसा॥ रविमंडल देखत लघु लागा॥ उदित तासु त्रिभुवन तम भागा॥ २५५॥ दो॥ मंत्र परम लघु जा सब बस बिधि हरि हर सुर सर्ब॥ महामत गजराज कहु बस कर अंकुस खर्ब॥ २५६॥ चौ॥ काम कुसुम धनु सायक लीने॥ सकल भुवन बस अपने कीने॥ देवि तजिय संसे अस जानी॥ भंजब धनुष राम सुनु रानी॥ सखी बचन सुनि भै प्रतीती॥ मिटा बिषाद बढी अति प्रीती॥ तब रामहि बिलोकि बैदेही॥ सभै हृदै बिनवत जेहि तेही॥ मन ही मन मनाव अकुलानी॥ होइ प्रसन्न महेस भवानी॥ करहु सफल आपन सेवकाई॥ करि हित हरहु चाप गरुआई॥ गननायक बरदायक देवा॥ आज लगे कीने उतय सेवा॥ बार बार बिनती सुनि मोरी॥ करहु चाप गुरता अति थोरी॥ २५७॥ दो॥ देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर॥ भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर॥ २५८॥ चौ॥ नीके निरखि नैन भरि सोभा॥ पितु पन सुमरि बहुरि मन छोभा॥ अहह तात

राम
८७

लो

दारनहठठानी॥ समझतनहिकछुलाभनहानी॥ सचवसभैसिषदेइ
नकोई॥ बुधसमाजबडअनुचितहोई॥ कहधनकुलिसहुचाहिकठोरा
कहिस्यामलमृदगातकिसोरा॥ विधकिहभांतधरोउरधीरा॥ सीरसस
मनकनिबेधअहीरा॥ सकलसभाकैमतिभैभोरी॥ अबमोहिसंभचा
पगतितोरी॥ निजजडतालोगनपरडारी॥ होइहरुअरघुपतिहिनि
हारी॥ अतिपरतापसीयमनमाही॥ लवनमेषयुगशतसमजाही॥ दो
०॥ प्रभहिचितैपुनिचितवमहिराजतलोचनलोल॥ खेलतमनसि
जमीनजुगजनबिधमंडलडोल॥ २६०॥ चौ॥ गिराअलिमुखपंकजरोकी॥
प्रगटनलाजनिसाअविलोकी॥ लोचनजलरहलोचनकोना॥ जैसेपर
मकृपनकरिसोना॥ सकुचीव्याकुलताबडजानी॥ धरिधीरजप्रतीतउ
रिआनी॥ तनमनबचनमोरपनुसाचा॥ रघुपतिपदसरोजचितराचा॥
तउभगवानसकलउरबासी॥ करैमोहिरघुपतिकैदासी॥ जिहकेजिह
परिसतिसनेहू॥ सोतिहमिलैनकछुसंदेहू॥ प्रभुतनचितैप्रेमपनठा

ना॥ क्रपानिधान राम सब जाना॥ सियहि बिलोकत तकेउ धनु कैसे॥ चितव
गरुर लघु ब्यालहि जैसे॥ २६१॥ लषन लषेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंड
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मंड॥ २६२॥ चौ॥ दिसकुंजरहु कम
ठ अहि कोला॥ धरहु धरनि धरि धीर न डोला॥ राम चहहि संकर धनु
तोरा॥ होहु सजग सुनि आइसु मोरा॥ चांप समीप राम जब आए॥ नर
नारिन सुर सुक्रत मनाए॥ सब कर संसै अरु अग्यानू॥ मंद महीप
न कर अभिमानू॥ भ्रिगुपति केर गरब गरुआई॥ सुर मुनिबरन
केर कदराई॥ सीया कर सोच जनक पछितावा॥ रानिन कर दारुन दुष
दावा॥ संभु चाप बड़ बोहितु पाई॥ चढे जाइ सब संग बनाई॥ राम बा
हुबल सिंधु अपारू॥ चहत पार नहि कोउ कड़हारू॥ २६३॥ दो॥ राम बि
लोके लोक सब चित्र लिषे से देषि॥ चितए सीय क्रपायतन जानी बिकल
बिशेष॥ २६४॥ चौ॥ देषी बिपुल बिकल बैदेही॥ निमिष बिहात कलप
सम तेही॥ त्रिषित बारि बिनु जो तनु त्यागा॥ मुए करै का सुधा तडागा॥

कावरषासबक्रसीसुषाने॥ समैचुकैपुनिकापछिताने॥ असजीयाः
जानजानकीदेषी॥ प्रभुपुलकैलषप्रीतविशेषी॥ गुरहिप्रनामुमनहि
मनकीना॥ अतिलाघवउठाइधनुलीना॥ दमकोदामनजिमजु
वलयो॥ पुनिनभधनमंडलसमभयो॥ लेतचढावतषैचतगाः
ढे॥ काहूनलषादेषसमठाढे॥ तेहछिनराममधधनतोरा॥ भरेभ
वनधुनिघोरकठोरा॥ ६६५॥ छंद॥ भरेभवनघोरकठोररवरविबा
जतजिमारगचले॥ चिकरहिदिगजडोलमहिअहिकोलकूरमक
लमले॥ सुरअसुरमुनिकरकानदीनेसकलविकलविचारही॥ को
दंडखंडेउरामतुलसीजयतिबचनउचारही॥ ६६६॥ सो॥ शंकरचापज
हाजसागररघुवरबाहुबलु॥ बडासकलसमाजचढेउजुप्रिथमेमोह
बसि॥ ६६७॥ चौ॥ प्रभुदोउखंडचापमहिडारे॥ देषिलोगसबभएसुखारे॥
कौसककरूपपयोनिधपावन॥ प्रेमवारिअवगाहसुहावन॥ रामरूपराके
सनेहारी॥ बढतबीचपुलकावलभारी॥ बाजेनभगहगहेनिसाना॥

रा

देववधूनाचहिंकरिगाना॥ ब्रह्मादिकसुरसिद्धमुनीसा॥ प्रभुहिप्रसंसहिंदेहिं
असीसा॥ बरसिसुमनरंगबहुमाला॥ गावहिंकिंनरगीतरसाला॥ रहीभुवन
भरिजयजयबानी॥ धनुषभंगधुनिजातनजानी॥ मुदितकहहिंजहंतहंनरनारी॥
॥राम॥ भंज्योरामसंभुधनुभारी॥ २६८॥ दो॥ बंदीमागधसूतगनबिरदबदहिंमतिधी
बा रकरहिंनिछावरिलोगसबहयगयधनमनिचीर॥ २६९॥ चौ॥ झांझमृदं
९९ गसंखसहनाई॥ भेरिढोलदुंदुभीसुहाई॥ बाजहिंबहुबाजनेसुहाए
जहंतहंजुवतिन्हमंगलगाए॥ सखिन्हसहितहरषीअतिरानी॥ सूखत
धानपराजनुपानी॥ जनकलहेउसुखसोचबिहाई॥ पैरतथकेंथाह ३
जनुपाई॥ श्रीहतभएभूपधनुटूटे॥ जैसेंदिवसदीपछबिछूटे॥ सीया ॥राम॥
सुखहिबरनियकेहिभांती॥ जनुचातकीपाइजलुस्वाती॥ रामहिलखनु ९९
बिलोकतकैसें॥ ससिहिचकोरकिसोरकजैसें॥ सतानंदतबआ
यसुदीना॥ सीतागमनुरामपहिंकीन्हा॥ २८०॥ दो॥ संगसखीसुंदरचतु
रगावहिंमंगलचार॥ गवनीबालमरालगतिसुषमाअंगअपार॥
॥२८१॥

चौ॥ सषिन मद्ध सीया सोहित कैसे॥ छबिगन मद्ध महाछबि जैसे॥ कर स
रोज जैमाल सुहाई॥ बिस्व बिजै सोभा जिह छाई॥ तन सकोच मन परम उ
छाहु॥ गूढ प्रेम लष परै न काहू॥ जाइ समीप राम छबि देषी॥ र
हि जनु कुअर चित्र अवरेषी॥ चतर सषी लष कहा बुझाई॥ पहि
रावहु जयमाल सुहाई॥ सुनत जुगल कर माल उठाई॥ प्रेम बिव
स पहिराइ न जाई॥ सोहत जनु जुग जलज सनाला॥ ससिहि सभीत दे
त जयमाला॥ गावहि छबि अवलोक सहेली॥ सीया जैमाल राम उर
मेली॥ २६२॥ सोरठा॥ रघुवर उर जयमाल देषि देव बरसहि सुमन॥ सकुचे
सकल भुपाल जन बिलोक रवि कुमदगन॥ २६३॥ चौ॥ पुर अरु ब्योम बाजने बाजे॥
षल भइ मलन साधु सब राजे॥ सुर किंनर नर नाग मुनीसा॥ जय जय जय कहि देहि
असीसा॥ नाचहि गावहि बिबुध बधूटी॥ बार बार कुसमांजल छूटी॥ जह तह विप्र
बेद धुनि करही॥ बंदी बिरदावल उचरही॥ महि पाताल नाक जसु ब्यापा॥ राम बरी सी
या भंजेउ चापा॥ करहि आरती पुर नर नारी॥ देहि निछावर बित बिसारी॥ सोहि

200

तसीयरामकैजोरी ॥ छ॥ वि सींगार मन उइकठोरी ॥ सखीक है प्रभ पद गहि
सीता ॥ कर तिन चरनपर स जति भीता ॥ ६८४ ॥ दो गोतमैया गतिसुरसि
करन हियर सत पग पानि ॥ मनमअ विहसेर घुबंसमए प्रीत अलौक
कजान ॥ ६८५ ॥ चौ ॥ तबसीयादेषी भूपजभिलाषे ॥ कूर कपूत मूढ मन
माषे ॥ उठि उठि पहिर सनाह अभागे ॥ जहतहगालवजावन लागे ॥ लेउ
छडाइसीयाकेकोई ॥ धरि बाधहु नृप बालक दोई ॥ तोरे धनष चाढ नहि
सरई ॥ जीवत हमहि कुयर को वरई ॥ जैव देहि वहु वैरै सहाई ॥ जीतउ
समरिसहित दोउ भाई ॥ साधु भूप बोले सुनि बानी ॥ राज समाजहि लाज ल
जानी ॥ वल प्रताप बीरत बडाई ॥ नाक पिनाक हि संग सिधाई ॥ सोई सू
रताकि अवकहु पाई ॥ अस बुध तौ विधि मुह मसि लाई ॥ ६८६ ॥ दो ॥ देषहु
रामहि नैन भरि तजि ईरषा मद कोहु ॥ लषन रोषक प्रवल जानस
लभजन होइ ॥ ६८७ ॥ चौ ॥ वैनतेय वलि जिम चहु का गू ॥ जिम ससि च

बा
राम
१००

ती
राम
१००

हैवागअरसभागु, जिमचहकुसलअकारनकोही॥ सबसंपदाचहैशिवद्रोही॥ लो
भलोलुपकलकीरतचहई॥ अकलंकताकिकामीलहई॥ हरिपदविमुखपरम
गतिचाहा॥ तसतुमारलालचनरनाहा॥ कोलाहलसुनिसीयासकुचानी॥
सखीलवाइगईजहरानी॥ रामसुभाइचलेगुरपाही॥ सीयसनेहवरन
तमनमाही॥ राननसहतसोचबससीया॥ अबधौंविधिहिकाहकरनीया॥
भूपबचनसुनिइतिउततकही॥ लषनरामडरबोलिनसकही॥ २६८॥ दो॥ अ
रुननैनभ्रकुटीकुटलचितवतनृपनसकोप॥ मनहुमतगजगननिरखिसिं
घकिसोरहिचोप॥ २६९॥ चौ॥ खरिभरिदेखविकलपुरनारी॥ सभमिलदेह
महीपनगारी॥ खरभरदेखनिकरसबराजा॥ तिहकारनभगपतिजन
गाजा॥ तिहअवसरसुनिशिवधनभंगा॥ आयोभ्रगकुलकमलपतंगा॥ देखम
हीपसकलसकुचाने॥ बाजजपटजनलवालुकाने॥ गोरशरीरभूतभ-
लिभ्राजा॥ भालविशालत्रिपुंडविराजा॥ सीसजटाससिबदनसहावा॥ रिस
बसकछुकअरुनहोइआवा॥ भ्रकुटीकुटलनयनरिसराते॥ सहजहिचि

तवतमहुरिसाते॥ बृषभकंधउरबाहुबिसाला॥ चारजनेउमालमृगछाला॥ क-
टिमुनिबसनतूनदुइबांधे॥ धनुसरकरकुठारकलकांधे॥२९०॥दो॥ संतबेष
करनीकठिनबरननजाइसरूप॥ धरिमुनितनजनुबीररसआयोजिहँ
सबभूप॥२९१॥चौ॥ देषतभृगपतिबेषकराला॥ उठेसकलभयविकल
भुआला॥ पितुसमेतकहिकहिनिजनामा॥ लगेकरनसबदंडप्रनामा॥
जेहिसुभाइचितवहितजानी॥ सोजानइजनुआयुषुटानी॥ जनकबहो-
रिआइसिरनावा॥ सीयाबुलाइप्रनामकरावा॥ आसिषदीनसषीहरषा-
नी॥ निजसमाजलैगईसयानी॥ विस्वामित्रमिलेपुनिआई॥ पदसरोजमे-
लेदोउभाई॥ रामलषनदसरथकेढोटा॥ दीनअसीसदेषिभलजोटा॥
रामचितइरहेथकलोचन॥ रूपअपारमारमदमोचन॥२९२॥दो॥ ब-
हुरिविलोकविदेहसनकहहुकाहअतिभीर॥ पूछतजानेजिमब्यापो
कोपसरीर॥२९३॥चौ॥ समाचारकहिजनकसुनाए॥ जेहिकारनमही-
पसबआए॥ सुनतबचनफिरिअनतनिहारे॥ देषेचापषंडमहिडारे॥

अतिरिसबोलेबचनकठोरा॥कहुजडजनकधनुककैतोरा॥बेगदेखाउमूढनत
आजू॥उलटौंमहिजहलगतवराजू॥अतिडरउतरदेतनृपनाही॥कुटलभूप
हरखेमनिमाही॥सुरमुनिनागनगरनरनारी॥सोचहिसकलत्रासउ
रभारी॥मनपछतातसीयामहितारी॥बिधिसवारसबबातबिगारी॥
भृगपतिकरसुभाउसुनिसीता॥अरधनिमेषकलपसमबीता॥१६४॥दो
सभैबिलोकेलोगसबजानिजानकीभीर॥हृदेनहरषबिषादकछुबोलेश्री
रघुबीर॥१६५॥चौ॥नाथसंभुधनुभंजनहारा॥होइहैकोउइकदास
तुमारा॥आयुसकाहकहिअकिनमोही॥सुनिरिसाइबोलेमुनिकोही॥सेव
कसोजोकरैसेवकाई॥अरिकरनीकरिकरिअलराई॥सुनहुरामजि
हशिवधनुतोरा॥सहसबाहुसमसोरिपुमोरा॥सोबिलगाउबिहाइ
समाजा॥नतमारेजैहैसबराजा॥सुनिमुनिबचनलखनमुसकाने॥बो
लेपरसुधरहिअपमाने॥बहुधनुहीतोरीलरकाई॥कबहुनअसरिसकी
न्हगोसाई॥यहिधनुपरममताकिहहेतू॥सुनिरिसाइकहभृगुकुलकेतू॥१६६॥

दो॥ रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न संभार॥ धनुही सम तिपुरारि धनु बि-
दित सकल संसार॥२९७॥ चौ॥ लखन कह्यो हसि हमरे जाना॥ सुनहु देव सब ध-
नुष समाना॥ का छति लाभ जून धनु तोरे॥ देखा राम नए के भोरे॥ छुअत टूट र-
घुपतिहि न दोसू॥ मुनि बिन काज करिय कत रोसू॥ बोले चितइ परसु की ओ-
रा॥ रे सठ सुनहि सुभाउ न मोरा॥ बालक बोलि बधो नहि तोही॥ केवल मु-
नि जड जानहि मोही॥ बाल ब्रह्मचारी अति कोही॥ बिस्व बिदित छत्रकुल द्रोही॥
भुजबल भूमि भूप बिन कीन्ही॥ बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥ सहसबाहु भु-
ज छेदनहारा॥ परसु बिलोकु महीपकुमारा॥२९८॥ दो॥ मात पितहि जनि सो-
चबस करसि महीसकिसोर॥ गर्भन के अर्भक दलन परसु मोर अति
घोर॥२९९॥ चौ॥ बिहसि लखन बोले मृदु बानी॥ अहो मुनीस महा भटमा-
नी॥ पुनि पुनि मोहि देखाउ कुठारू॥ चहत उडावन फूंकि पहारू॥ इहां कु-
म्हड बतिआ कोउ नाही॥ जे तरजनी देखि मरि जाही॥ देखि कुठार सरासन
बाना॥ मै कछु कहा सहित अभिमाना॥ सुर महिसुर हरिजन अरु गाई॥

हमरेकुलइनपरनसुराई॥ बधेपापअपकीरतिहारे॥ मारतहूंपापरिअ
तुमारे॥ कोटिकुलिससमबचनतुमारा॥ ब्यर्थधरहुधनबानकुठारा॥
२७३॥ दो॥ जोबिलोकअनुचितकहेउँछमहुमहामुनिधीर॥ सुनिसरोषभ
गबंसमणिबोलेगीरागंभीर॥ २[illegible]॥ चौ॥ कौसकसुनहुमंदयहुबालक
कुटलकालबसनिजकुलघालक॥ भानबंसराकेसकलंकू॥ निपटनिरं
कुसअबधअसंकू॥ कालबसहेइहछिनमाही॥ कहोपुकारखोरमोहि
नाही॥ तुमहटकहुजोचहहुउबारा॥ कहिप्रतापबलरोषहमारा॥ लखन
कहेउमुनिसुजसतुमारा॥ तुमहिअछतकोबरनैपारा॥ अपनेमुखतुमआप
नकरनी॥ बारअनेकभांतिबहुबरनी॥ नहिसंतोषतोपुनिकछुकहहु॥
जनिरिसरोकदुसहदुखसहहु॥ बीरब्रतीतुमधीरअछोभा॥ गारीदेतन
पावोहुसोभा॥ २७५॥ दो॥ सूरसमरकरनीकरहिकहिनजनावहिआपु
विद्यमानरनपाइरिपुकायरकथहिप्रतापु॥ २७४॥ चौ॥ तुमतोकालहां

कुजन लावा॥ बार बार मोहि लागि बोलावा॥ सुनत लखन के बचन कठोरा
परसु सुधारि धरेउ कर घोरा॥ अब जनि देइ दोस मोहि लोगू॥ कटुबादी
बालक बधजोगू॥ बाल बिलोकि बहुत मै बाचा॥ अब यहु मरनहार भा
सांचा॥ कौसिक कहा छमिय अपराधू॥ बाल दोष गुन गनहि न साधू॥ कर
कुठार मै अकरुन कोही॥ आगे अपराधी गुरद्रोही॥ उतर देत छोडउं बि
नु मारे॥ केवल कौसिक सील तुमारे॥ २७४॥ दो॥ गाधिसून कह हृदै हसि
मुनिहि हरिअरै सूझ॥ अयमय खांड न ऊखमय अजहु न बूझ अबूझ
२७५॥ चौ॥ कहेउ लखन मुनि सील तुमारा॥ को नहि जान बिदित संसार॥
माता पिता उरन भये नीके॥ गुर रिन रहा सोच बड जीके॥ सो जनु हमरे
माथा काढा॥ दिन चल गए ब्याज बड बाढा॥ अब [illegible] आनीये ब्यवहरी
आ बोली॥ तुरत देउ मै थैली खोली॥ सुनि कटु बचन कुठार सुधारा॥
हाइ हाइ सब सभा पुकारा॥ भृगुबर परसु देखावत मोही॥ बिप्र बि

207

चारबचोनपड्रोही॥ मीलैनकबजसुभटरनमाहै॥ द्विजदेवताघरहिकेघाटै॥ अनु
चितकहतबलोकपुकारे॥ रघुपतिसैनहिलखनेनिवारे॥ ६९६॥ दो॥ लखनउत्तर
आहुतसरिसभगवरिकोपक्रशान॥ बढ़तदेखजलसमबचनबोलेरघुकुल
भान॥ ६९७॥ चौ॥ नाथकरहुबालकपरछोहू॥ सूँदुधमयवकरिअनकोहु॥ जोपैप्र
भुप्रभाउकछुजाना॥ तउकिवराबरकरिअहुआना॥ जोलरिकाकछुअचुगरक
रहीं॥ गुरपितुमातमोदमनभरहीं॥ करयकृपासिससेवकजानी॥ तुमसम
सीलधीरमुनिज्ञानी॥ रामबचनमनिकछुकजुडाने॥ कहिकछुबचनलखन
मुसकाने॥ हसतदेखनखसिखरिसव्यापी॥ रामतोरभ्रातबड़पापी॥ गोरशरीर
स्यामनमाही॥ कालकूटमुखपयमुखनाही॥ सहजटेढअनुहरैनतोही॥ नी
चमीचसमदेखतमोही॥ ६९८॥ दो॥ लखनकहेउहसिसुनिअमुनिक्रोधपापक
मूल॥ जिसबसजनअनुचितकरहिचरहिविस्वप्रतकूल॥ ६९९॥ चौ॥ मैतुमार
अनुचरमुनिराया॥ परहरक्रोधकरियअबदाया॥ टूटचापनहिजरिहिरिसा
ने॥ बैठिअहोइहुपाँपिराने॥ जोअतिप्रियातौकरीयेउपाही॥ जोरीयेकोउबड़गु
नीबुलाही॥ बोलतलखनहिजनकडराही॥ मष्टकरहुअनुचितभलनाही॥

बाल
१०४

थर थर कंपहि पुर नर नारी ॥ छोट कुमार खोट अति भारी ॥ भृगपति सु
नि सुनि निर्भय बांनी ॥ रिस तन जरै होइ बल हांनी ॥ बोले रामहि देइ निहोरा
बचौ बिचार बंधु लघु तोरा ॥ मन मलीन तनु सुंदर कैसे ॥ विष रस भरा कन
क घटु जैसे ॥ ७०० ॥ दो० ॥ सुनि लछमन बिहसे बहुरि नैन तरेरे राम ॥ गुर समी
प गवने सकुच परहरि बांनी बांम ॥ ७०१ ॥ चौ० ॥ अति विनीत म्रदु सीतल बानी
बोले राम जोर जुग पानी ॥ सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना ॥ बालक बचन क
रीयै न कांना ॥ बररै बालक एक सुभाऊ ॥ इन्हहि न संत विदुषहि काऊ ॥ ति
हि नाहि कछु काज बिगारा ॥ अपराधी मै नाथ तुमारा ॥ क्रपा कोप बध बंध
गुसाई ॥ मो पर करीये दास की न्याई ॥ कहीयै बेगि जे बिधि रिस जाई ॥ मु
निनाइक सोई करो उपाई ॥ कहि मुनि राम जाइ रिस कैसे ॥ अजहु अनुज
तव चितव अनैसे ॥ इस के कंठ कुठार न दीना ॥ तौ मै का क्रोप करि कीना ॥
७०२ ॥ दो० ॥ गर्भ स्रवै अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर ॥ परसु अछत दे
खौं जियत बैरी भूप किसोर ॥ ७०३ ॥ चौ० ॥ बहै न हथ दहै रिस छाती ॥ भा

राम
१०४

व

कुठारकुंठितनृपघाती॥भयोबांमबिधिफिरेउसुभाउ॥मोरे हृदै कृपा कसि
काउ॥आजदयोदुखदुसहसहावा॥सुनिसौमित्रिबिहसिसिरुनावा॥बा
उकृपामूरतिअनुकूला॥बोलतबचनझरतजनफूला॥जौंपैकृपाजर
हिमुनिगाता॥क्रोधभएतनराखबिधाता॥देखजनकहठबालकएहू
कीनचहतजडजमपुरिगेहू॥बेगकरहुकिनआखिनओटा॥देखत
छोटखोटनृपढोटा॥बिहसेलखनकहमनमाही॥मूंदेआंखकत
हुकोउनाही॥२७४॥दो॥परसरामतबरामप्रतिबोलेउरअतिक्रो
ध॥संभुसरासनतोरिसठकरसिहमारप्रबोध॥२७५॥चौ॥बंधकहैक
टुसंमततोरे॥तूछलबिनयकरसिकरजोरे॥करपरितोषमोरसं
ग्रामा॥नाहितछाडकहउबरामा॥छलतजिकरहिसमरसिवद्रो
ही॥बंधसहितनतमारोंतोही॥भृगपतिबकैकुठारउठाए॥मनमु
सकाहिरामसिरनाए॥गुनहलखनकरहमपररोषू॥कहतसुधा
इहुतेबडदोषू॥टेढजानसबबंदकाहू॥बक्रचंद्रमहिग्रसैनराहू॥

बाल ९५

राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा॥ कर कुठार आगे यह सीसा॥ जेहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी॥ मोहि जानिअ आपन अनुगामी॥७·६॥दो॥ प्रभुहि सेवकहि समर कस तजहु बिप्रबर रोस॥ बेष बिलोकें कहेसि कछु बालकहू नहि दोस॥७·७॥चौ॥ देखि कुठार बान धनु धारी॥ भै लरिकहि रिस बीर बिचारी॥ नाम जान पै तुम्हहि न चीन्हा॥ बंस सुभाइ उतर तेहि दीन्हा॥ जौ तुम्ह औतेहु मुनि की नाई॥ पद रज सिर सिसु धरत गोसाई॥ छमहु चूक अनजानत केरी॥ चहिऐ बिप्र उर कृपा घनेरी॥ हमहि तुम्हहि सरबरि कस नाथा॥ कहहु न कहा चरन कह माथा॥ राम मात्र लघु नाम हमारा॥ परसु सहित बड़ नाम तुम्हारा॥ देव एकु गुन धनु हमारे॥ छमहु बिप्र अपराध हमारे॥७·८॥दो॥ बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम॥ बोले भृगुपति सरुष हसि तहू बंधु सम बाम॥७·९॥चौ॥ निपटहि द्विज करि जानहि मोही॥ मै जस बिप्र सुनावौ तोही॥ चाप स्रुवा सर आहुति जानू॥ कोप मोर अति घोर कृशानू॥ समिधि सेन चतुरंग सुहाई॥ महा म

राम ९५

हीपभएपसुआई॥ मैयेहिपरसकाटिबलिदीने॥ समरजग्यजपकोटिनकीने॥
मोरप्रभाउबिदितनहितोरे॥ बोलसनिदरबिप्रकेभोरे॥ भंजेउचापदापुबडबा
ढा॥ अहमितमनहुजीतजगठाढा॥ रामकहमुनिकहहुबिचारी॥ रिसअति
बडलघुचूककहमारी॥ छुअतेटूटपिनाकपुराना॥ मैकेहिहेतुकरौअभिमा
ना॥२८०॥ दो॰ जौहमनिदरहिबिप्रबदिसतसुनहुभृगुनाथ॥ तौअसकोजगसुभ
टजेहिभयबसनावहिमाथ॥२८१॥ चौ॰ देवदनुजभूपतिभटनाना॥ समबल
अधिकहोउबलवाना॥ जौरनहमहिपचारैकोऊ॥ लरैसुखेनकालकिनहोऊ॥ छ
त्रियतनधरसमरसकाना॥ कुलकलंकुतेहिपावरआना॥ कहौसुभाउनकुल
हिप्रसंसी॥ कालहुडरहिनरनरघुबंसी॥ बिप्रबंसकेअसप्रभुताई॥ अभयहो
इजोतुमहिडेराई॥ सुनिमृदुबचनगूढरघुपतिके॥ उघरेपटलपरसुधरम
तिके॥ रामरमापतिकरधनुलेहू॥ खैचहुमिटैमोरसंदेहू॥ देतचापआपुहि
चलिगयो॥ परसराममनबिसमैभयो॥२८२॥ दो॰ जानारामप्रभाउतबपुलक
प्रफुलितगात॥ जोरपानबोलेबचनहृदैनप्रेमसमात॥२८३॥ चौ॰ जयरघुबं

बा
९६

सबनजबनिभानु ॥ गहनदनुजकुलदहनकृसानु ॥ जयसुरधेनुविप्रहि
तकारी ॥ जयमदमोहकोहभ्रमहारी ॥ बिनैशीलकरुनागुनसागर ॥ जय
तिबचनरचनाअतिसागर ॥ सेवकसुखदसुभगसबअंगा ॥ जयसरी
रछबिकोटिअनंगा ॥ करोंकाहिमुखएकप्रसंसा ॥ जयमहेसमनमानसहं
सा ॥ अनुचितमैंबहुतकहिउअग्याता ॥ छिमहुछिमामंदिरदोउभ्राता ॥ कहिजय
जयजयरघुकुलकेतु ॥ भृगपतिगएबनहितपहेतु ॥ अपभयकुटिल
महीपडराने ॥ जहतहकाइरगवहिपराने ॥ २१४ ॥ दो ॥ देवनीदीनीदुंदभी
प्रभुपरबर्षहिफूल ॥ हरषेपुरनरनारसबमिटीमोहिमयसूल ॥ २१५ ॥
चौ ॥ अतिगहगहेबाजनेबाजे ॥ सबहिमनोहरमंगलसाजे ॥ जूथजूथमिल
सुमुखसुनैनी ॥ करहिगानकलकोकिलबैनी ॥ सुखबिदेहकरबरननजा
ई ॥ जनमदरिद्रमनहुनिधिपाई ॥ बिगतत्रासभयसीयासुखारी ॥ जनुबिधुउ
देचकोरकुमारी ॥ जनककीनकोसकहिप्रनामा ॥ प्रभुप्रसादधनभंज्योरामा
मोहिकृतकृतकीनदुहुभाई ॥ अबजोउचितसोकहियेगुसाई ॥ कहिमुनिसुनि

राम
९६

नरनारिप्रवीना॥ रहहिविवाहचांयपनअधीना॥ टूटतहिधनभयोविवाहू॥ सुरनरनाग
विदितसबकाहू॥ २८६ दो॥ तदपिजाइतुमकरहुअबजथाबंसविवहार॥ बूझिविप्रकु
लब्रिधगुरवेदविदतआचार॥ २८७ चौ॥ दूतअवधपुरपठवहुजाई॥ आनहिन्रपद
सर्थहिबुलाई॥ मुदितराउकहिभलेहिकृपाला॥ पठएदूतबोलितेहिकाला॥ बहुरिमहाज
नसकलबुलाए॥ आइसबनसादरसिरनाए॥ हाटबाटमंदिरसुरबासा॥ नगर
सवारहुचारोपासा॥ हरषचलेनिजनिजग्रहआए॥ पुनिपरिचारिकबोलिपठ
ए॥ रचहुविचित्रवितानबनाई॥ सिरधरिबचनचलेसचुपाई॥ पठएबोलिगु
नीतिनननाना॥ जेवितानविधकुसलसुजाना॥ विधहिबंदितिनकीनअरंभा॥
विरचेकनककदलिकेखंभा॥ २८८ दो॥ हरितमनिहकेपत्रफलपदमरागकेफू
ल॥ रचनादेखविचित्रअतिमनुविरंचकरभूल॥ २८९ चौ॥ बेनहरितम
निमयसबकीने॥ सरलसपरबनपरहिनहिचीने॥ कनककलितअहिबे
लबनाई॥ लषनहिपरैसपरनसुहाई॥ तिहकेरचिपचबंधबनाए॥ विच
विचमुक्तादामसुहाए॥ मानिककमरकतकुलिसपिरोजा॥ चीरकोरचिरचेस

रोजा॥कीएभंगबहुरंगबिहंगा॥गुंजहिकूजहिपवनप्रसंगा॥सुरप्रित
माखंभनगढिकाढी॥मंगलद्रब्यलीएसबठाढी॥मानहुरतनखंभगढिकाढी
चौकभांतिअनेकपुराई॥सिंधुरमनिमयसहजसुहाई॥२२०दो॥सौरभपल्ल
वसुभगसुठिकीएनीलमणिकोरि॥हेमबौरमरकतघवरिलसतपाटमयडोरि॥
२२१॥चौ॥रचेरुचिरबरबंदनवारे॥मनहुमनोभवफंदसवारे॥मंगलकल
सअनेकबनाए॥धुजापताकापटचवरसुहाए॥दीपमनोहरमनिमयनाना॥
जाइनबरनिबचित्रबिताना॥जेहिमंडपदुलहिनबैदेही॥सोबरनैअसमतिकब
केही॥दूलहरामरूपगुनसागर॥सोबितानतिहुलोकउजागर॥जनकभव
नकीसोभाजैसी॥ग्रहग्रहप्रतिपुरदेखीऐतैसी॥जेहितेरहुतितिहसमयनि
हारी॥तिहलघुलगहिभवनदसचारी॥जोसंपदानीचग्रहसोहा॥सोबिलोक
सुरनाइकमोहा॥२२२॥दो॥बसैनगरजिहलछिकरिकपटनारिबरबेष॥तिह
पुरकीसोभाकहतसकुचहिसारदसेष॥२२३॥चौ॥पहुचेदूतरामपुरपावन॥
हरषेनगरबिलोकसुहावन॥भूपद्वारतिहखबरजनाई॥दसरथनृपसु

(margin correction:) रामलखनउरकरिवरिचीठी

निलए बोला ही॥ करि प्रनाम तिन पाती दीनी॥ मुदित महीप आइ उठि लीनी॥ बारि
बीलोचन बाचैं पाती॥ पुलक गात आई भरि छाती॥ [illegible]
मीठी॥ पुनि धरि धीर पत्रका बाची॥ हरषी सभा बात सुनि साची॥ खेलत रहे
तहां सुधि पाई॥ आए भरत सहित दोउ भाई॥२२४॥ दो॥ कुसल प्रान प्रिया बंधु
दोउ अहहि कहहु केहि देस॥ सुनि सनेह साने बचन बाची बहुरि नरेस॥२२५॥
चौ॥ सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता॥ अधिक सनेह समात न गाता॥ प्रीति पुनीत भर
त के देषी॥ सकल सभा सुष लहिउ विशेषी॥ तब नृप दूत निकट बैठारे॥ म
धुर मनोहर बचन उचारे॥ भैया कहहु कुसल दोउ बारे॥ तुम नीके नि
ज नैन निहारे॥ स्यामल गौर धरे धनु भाथा॥ बै किसोर कौसक मुनि साथा॥
पहिचानहु तुम कहौ सुभाऊ॥ प्रेम विवस पुनि पुनि कहि राऊ॥ जा दिन ते मुनि
गए लवाई॥ तब ते आज साच सुधि पाई॥ कहहु विदेह कवन विधि जाने॥ सु
नि प्रिया बचन दूत मुसकाने॥२२६॥ दो॥ सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम सम धं
नन कोउ॥ राम लषन जाके तनय विस्व विभूषन दोउ॥२२७॥ चौ॥ पूछ न जो

बा
१८

गनतनयेनमारे ॥ पुरषंकीघतिहपुरउजिआरे ॥ जिनकेजसप्रतापकेआ
गे ॥ ससिमलीनरविसीललागे ॥ तिहकसकहिआनाषकीमचीने ॥ दे
षरविकिदीपककरलीने ॥ सीयासयंबरमंपतिआनेका ॥ समटेभूमाटि
एकतेएका ॥ शंभसरासनकाउनटारा ॥ हारेसकलबीरबरिआरा ॥ तीनिलो
कमऊजेभटमानी ॥ सबकैशक्तिसंभुधनभांनी ॥ सकैउठाइसरासुरमेरू
सोहीयेहारगयोकरिफेरू ॥ जिहकैतकाशिवसैलउठावा ॥ सोऊतिहस
मापराभवपावा ॥ २२८ ॥ दो ॥ तहंरामरघुबंसमणिसुनिऔमहमहिपाल ॥
मंज्योचांपपघ्यासबिन जिमगजपंकजमाल ॥ २२९ ॥ चौ ॥ सनिसरोषभृगु
नैपकुधाए ॥ बहुतभांतितिनमैनदिषाए ॥ देषरामबलनिजघनदीना ॥
करिबहुविनयगवनबनकीना ॥ राजतरामअतुलबलजैसे ॥ तेजनिधा
नलषनपुनितैसे ॥ कंपतभूपदिलोकतताकै ॥ जिमगजहरकिसोरकेताकै ॥
देवदेषतबबालकदोऊ ॥ नभवनमांछिनतरानवनकेऊ ॥ दूतनबचनरच
नाभयालागी ॥ प्रेमप्रतापबीररसपागी ॥ समासमेतराउअनुरागे ॥ दूतन

राम
१८

देतभिकवरलागे॥ करहिक्रनीततेमंदेनुकना॥ धरमविचारसबहिस
खमाना॥२३०॥ दो॥ तबउठभूपबशिष्टकहुंदीनपत्रकाजाइ॥ कथासुनाई
गुरहिसबसादरदुतबुलाइ॥२३१॥ चौ॥ सुनिबोलेगुरअतिसुखपाई॥ पुन
यपुरषकहुंमहिसुखछाई॥ जिमसरितासागरमहुंजाही॥ जद्यपिताहिकामनानाही॥
नानाही॥ जिमसुखसंपतिबिनहिबोलाए॥ धर्मसीलपहिंजाहिसुभाए॥ तु
मगुरविप्रधेनसुरसेवी॥ तसपुनीतकेशल्यादेवी॥ सुकृतीतुमसमान
जगमाही॥ भयोनहैकोउहोनेउनाही॥ तुमतेअधिकपुन्यबडकाके॥ रा
जतरामसरिससुतजाके॥ बीरविनीतधरमब्रतधारी॥ गुनसागरबरबा
लकचारी॥ तुमकहुंसर्बकालकल्याना॥ सहजबरातबजाइनिसाना॥२
३२॥ दो॥ चलेबेगसुनिगुरबचनभलेहिनाथसिरनाइ॥ भूपतिगवनेभ
वनतबदुतनबासदिवाइ॥२३३॥ चौ॥ राजासबरनिवाससबुलाइ॥ जनक
पत्रिकाबाचसुनाई॥ सुनिसंदेससकलहरखानी॥ अपरकथासभभूप
बखानी॥ प्रेमप्रफुल्लितराजहिरानी॥ मनहुंसिखिनिसुनिबारिदबानी॥

बा
१९

मुदत असीस देहि गुर नारी॥ अति आनंद मगन महतारी॥ लेहि परस
पर अति प्रिय पाती॥ हृदै लगाइ जुड़ावहि छाती॥ राम लखन कै कीरति
करनी॥ बार हि बार भूपवर बरनी॥ मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाए॥ रा
नन तब महिदेव बुलाए॥ दए दान आनंद समेता॥ चले विप्रवर आ
सिष देता॥ ३३४॥ सो॥ जाचक लए हकार दीन निछावर कोटि विधि॥ चिर
जीवहु सुत चार चक्रवर्ति दसरथ हि के॥ ३३५॥ चौ॥ पुनि दूतन्यो निछावरि
दीनी॥ देत सकच कछु नहि कीनी॥ कहित चले पहिरे पट नाना॥ हरष
हूने गहगहे निसाना॥ समाचार सब लोकन पाए॥ लागे घरि घरि हेने
बधाए॥ भुवन चार दस भरा उछाहू॥ जनकसुतर घबीर बवाहू॥ सुनि
सुभ कथा लोग अनुरागे॥ मारग गली सँवारन लागे॥ जदप अवध सदै
व सुहावन॥ रामपुरी मंगलमय पावन॥ तदप प्रीतके रीत सुहाई॥ मं
गल रचना रचि बनाई॥ धुजा पताका पट चामर चारू॥ छावा परम वि
चित्र बजारू॥ कनक कलस तोरन मन जाला॥ हरद दूब दधि अछित माला॥

मम
१९

२३६॥ दो॥ मंगलमय निज निज भवन लोगन रचे बनाइ॥ बीथी सींची चतुरसम
चौके चारु पुराइ॥२३७॥ चौ॥ जहं तहं जूथ जूथ मिलि भामिनी॥ सजि नव सप्त सकल दु
ति दामिनी॥ बिधुबदनी म्रग साबक लोचन॥ निज सरूप रति मानु बिमोचन॥
गावहिं मंगल मंजुल बानी॥ सुनि कलरव कलकंठि लजानी॥ भूप भवन किमि जाइ
बखाना॥ बिस्व बिमोहन रचेउ बिताना॥ मंगल द्रब्य मनोहर नाना॥ राजत बा
जत बिपुल निसाना॥ कतहुं बिरिद बंदी उचरही॥ कतहुं बेद धुनि भूसुर करही
गावहिं सुंदरि मंगल गीता॥ लै लै नामु रामु अरु सीता॥ बहुत उछाहु भवनु अ
ति थोरा॥ मानहु उमगि चला चहु ओरा॥२३८॥ दो॥ सोभा दसरथ भवन की को कबि बरनै
पार॥ जहां सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार॥२३९॥ चौ॥ भूप भरत पुनि
लीए बुलाई॥ हय गय स्यंदन साजहु जाई॥ चलहु बेगि रघुबीर बराता॥ सुनत पुल
क पूरे दोउ भ्राता॥ भरत सकल साहनी बुलाए॥ आइसु दीन मुदित उठि धाए॥
रचि रुचि जीन तुरग तिन साजे॥ बरन बरन बर बाजि बिराजे॥ सुभग सकल सु
ठि चंचल करनी॥ अइ इव जरत धरत पग धरनी॥ नाना जाति न जाहि बखाने॥

निदरिपवनजनचहतउडाने॥ तिनसभछयलभएअसवारा॥ भरतसरसबयराजकुमारा॥ सभसंदुरसबभूषनधारी॥ करसरचापतूनकटिभारी॥७४०॥ दो॥ छरेछबीलेछयलसबसूरसुजाननबीन॥ जुगपदचरसवारप्रतिजेअसिकलाप्रबीन॥७४१॥ चौ॥ बांधेबिरदबीररनगाठे॥ निकसभएपुरबाहरठाढे॥ फिरहिचतरतुरगगतनाना॥ हरषैसुनिपवननिशाना॥ रथसार्थनबचित्रबनाए॥ धुजापताकमनभूषनलाए॥ चवरचारुकिंकनधुनिकरही॥ भानजानसोभाअपहरही॥ सावकरनअगनतहयहोते॥ तेतिनरथनसारथनजोते॥ संदुरसकलअलंकृतसोहैं॥ जिनहिबिलोकतमुनिमनमोहैं॥ तेजलचलहिथलहिकीनाई॥ टापनबूडबेगअधिकाई॥ अस्त्रशस्त्रसबसाजबनाई॥ रथीसार्थनलैबोलाई॥७४२॥ दो॥ चढिचढिरथबाहरनगरलागीजुरनबरात॥ होतसगुनसंदुरसबहिजोजेहिकारजजात॥७४३॥ चौ॥ निदरघनहिघुंमरहिनिसाना॥ निजपराइकछुसुनीयेनकाना॥ महाभीरभूपतिकेद्वारे॥ रजहोइजाइपषानपवारे॥ चढीअटारनदेखहिनारी॥

बाल ११०

धृति

राम ११०

लीए आरती मंगल थारी॥ गावहि गीत मनोहर नाना॥ अति आनंद न जाइ
बषाना॥ तब सुमंत्र द्वय स्यंदन साजी॥ जोते रवि हय निंदक बाजी॥ दोउ रथ
रुचिर भूप पहि आने॥ नहि सारद पहि जाइ बषाने॥ राज समाज एक रथ
साजा॥ दूसर तेज पुंज अति भ्राजा॥ २९४॥ दो॰॥ तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहु हर
षि चढ़ाइ नरेस॥ आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हरि गुर गौरि गनेस॥ २९५॥
चौ॰॥ सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसें॥ सुर गुर संग पुरंदर जैसे॥ करि कुल रीति बे
द बिधि राउ॥ देषि सबहि सब भांति बनाउ॥ सुमिरि राम गुर आइसु पाई॥
चले महीपति संष बजाई॥ हरषे बिबुध बिलोकि बराता॥ बरषे सुमन सु
मंगल दाता॥ भयो कुलाहल हय गै गाजे॥ ब्योम बरात बाजने बाजे॥ सुर न
र नारि सुमंगल गाई॥ सरस राग बाजहि सहनाई॥ घंट घंटि धुनि बर
नि न जाई॥ सर्ब करहि पाइक ढहराई॥ करहि बिदूषक कौतुक नाना॥ हा
स कुसल कल गान सुजाना॥ २९६॥ दो॰॥ तुरंग नचावहि कुअर बर अकनि
मृदंग निसान॥ नागर नट चितवहि चकित डगहि न ताल बिधान॥ २९७॥

चौ॥ बनै न बरनत बनी बराता॥ होहिं सगुन सुंदर सुभदाता॥ चारा चाषु बाम दिसि
लेई॥ मनहु सगल मंगल कहि देही॥ दाहिन काग सुखेत सुहावा॥ नकुल दरसु
सब काहू पावा॥ सानुकूल बह त्रिबिध बयारी॥ सघट सबाल आव बर नारी
लोवा फिर फिर दरस दिखावा॥ सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा॥ मृगमा
ला फिर दाहिन आई॥ मंगल गन जनु दीन्ह देखाई॥ छेमकरी कहु छेम ब
शेषी॥ स्यामा बाम सुतरु पर देखी॥ सनमुख आयो दधि अरु मीना॥ कर पुस्तक दु
इ बिप्र प्रबीना॥ ३४८॥ दो॥ मंगलमय कल्यानमय अभिमत फल दातार॥ ज
नु सब साचे होन हित भए सगुन इक बार॥ ३४९॥ चौ॥ मंगल सगुन सुगम
सब ताके॥ सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके॥ राम सरिस बर दुलहिनि सीता॥ सम
धी दसरथ जनक पुनीता॥ सुनि अस ब्याह सगुन सब नाचे॥ अब कीन्हे बिरं
चि हम साचे॥ इहि बिधि कीन्ह बरात पयाना॥ हय गय गाजहिं हने निसाना॥ आ
वत जानि भानुकुल केतू॥ सरितन्हि जनक बंधाये सेतू॥ बीच बीच बर बास ब
नाए॥ सुरपुर सरिस संपदा छाए॥ असन सयन बर बसन सुहाए॥ पावहिं

निज निज मन के भाए ॥ नित नूतन सुष लषि अनुकूले ॥ सकल बरातन
मंदरि भूले ॥ ७५० ॥ दो० ॥ आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसां
न ॥ सजि गज रथ पद चर तुरग लेन चले अगवान ॥ ७५१ ॥ चौ० ॥ कनक क
लस भरि कोपरि थारा ॥ भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥ भरे सुधा सम स
ब पकवाने ॥ भांति भांति नहि जाहि बषाने ॥ फल अनेक बर बसत सुह
ई ॥ हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥ भूषन बसन महामनि नाना ॥ षग मृ
ग हय गज बहु बिधि जाना ॥ मंगल सगुन सुगंध सुहाए ॥ बहुत भांति
महिपाल पठाए ॥ दधि चिउरा उपहार अपारा ॥ भर भर कांवर चले कहा
रा ॥ अगवानन जब दीष बराता ॥ उर आनंद पुलक भर गाता ॥ देषि बनाव स   ब
हित अगवाना ॥ मुदित बरातिन हने निसाना ॥ ७५२ ॥ दो० ॥ हरषि परसपर मि
लन हित कछुक चले बगमेल ॥ जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहइ स
बेस ॥ ७५३ ॥ चौ० ॥ बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहि ॥ मुदित देव दुंदुभी बजावहि ॥
बसत सकल राषीं नृप आगे ॥ बिनै कीन तिन अति अनुरागे ॥ प्रेम समेत

बा
११२

राइसबलीना॥ भेवकसीसजाचकनदीना॥ करिपूजामानताबड़ाई॥ ज
नवासकउचलेलवाई॥ बसनचिरपांवड़ेपराहीं॥ देखधनदधनम
दपरहरहीं॥ अतिसुंदरदीन्येउजनबासा॥ जहसबकउसबभांतिसुपा
सा॥ जानीसीयाबरातपुरआई॥ कछुनिजमहिमाप्रगटजनाई॥ हृदेस
मरिसबसिद्धिबुलाई॥ भूपपहुनाईकरनपठाई॥७५४॥ दो॰॥ सिद्धिसबसी
याआयसुअकनिगईजहजनबास॥ लएसंपदासकलसुखसुरपुर:
भोगबिलास॥७५५॥ चौ॰॥ निजनिजबासबिलोकबराती॥ सुरसुखसक:
लसुलभसबभांती॥ बिभवभेदकछुकेउनजाना॥ सकलजनककरकर
हिबखाना॥ सीयामहिमार[illegible]घुनाइकजाना॥ हर्षेहृदेहेतुपहिचाना॥
पितआगमसुनितदोउभाई॥ हृदैनअतिआनंदसमाई॥ सकुचनक
हिनसकतिगुरपाहीं॥ पितदर्सनलालचमनमाहीं॥ विश्वामित्रबिने
बड़िदेखी॥ उपजाउरसंतोषबिसेषी॥ हरखतभएसुहृददोउभाई॥
हृदैनअतिआनंदसमाई॥ हर्षबंधदोउहृदेलगाए॥ पुलकअंग

राम
११२

लो० च न

सबकेजलछाए॥चलेजहंदसरथजनवासे॥मनहुसरोवरतकेउपियासे॥७५६॥
दो०॥भूपविलोकेजबहिंमुनिआवतसुतनसमेत॥उठेहरषिसुखसिंधुमहुच
लेथाहसिलेत॥७५७॥चौ॥मुनिहिदंडवतकीनमहीसा॥बारबारपदरजधरिसी
सा॥कौसिकराउलियेउरलाई॥कहिअसीसपूछीकुसलाई॥पुनिदंडवतकर
तदोउभाई॥देखिनृपतिउरसुखनसमाई॥सुतहियेलाइदुसहदुखमेटे॥मृत
कशरीरप्रानजनुभेटे॥पुनिबसिष्टपदसिरतिननाए॥प्रेममुदितमुनिवरउ
रलाए॥विप्रबृंदबंदेदुहुभाई॥मनभावतीअसीसैपाई॥भरतसहानुज
कीनप्रनामा॥लएउठाइलाइउररामा॥हरषेलखनदेषिदोउभ्राता॥मिलेप्रे
मपरिपूरितगाता॥७५८॥दो॥पुरजनपरजनजातजनजाचकमंत्रीमीत॥मिले
जथाविधिसबहिप्रभुपरमकृपालविनीत॥७५९॥चौ॥रामहिदेषिबरातजुडा
नी॥प्रीतिरीतिनजाइबखानी॥नृपसमीपसोहहिंसुतचारी॥जनुधनधर्मादिक
तनुधारी॥सुतनसमेतदसरथहिदेखी॥मुदितनगरनरनारिबिशेषी॥सुमनवर
समरहनहिनिसाना॥नाकनटीनाचहिंकरिगाना॥सतानंदअरुविप्रसचवगन

नै॥मागधसूतबिदुषबंदीजन॥सहितबरातराउसनमाना॥आइसमाँग
फिरेअगवाना॥प्रथमबरातलगनतेंआई॥तातेंपुरप्रमोदअधिकाई
ब्रह्मानंदलोकसबलहहीं॥बढेदिवसनिसबिधसनकहहीं॥२९०॥दो
॥रामसीयसोभाअवधिसुकृतअवधदोउराज॥जहँतहँपुरजनकह
हिंअसमिलनरनारसमाज॥२९१॥चौ॥जनकसुकृतमूर्तिवैदेही॥दसर्थ
सुकृतरामधरेदेही॥इनसमकाहुनशिवअवराधे॥काहुनइनसमानफ
लमाधे॥इनसमानकोउनभेजगमाही॥हैनहिंकतहुहोनेउनाही॥हमस
बसकलसुकृतकैरासी॥भएजगजनमजनकपुरबासी॥पुनिदेखबरघुबी
रबिवाहू॥लेबभलीबिधलोचनलाहू॥कहहिंपरसपरकोकिलबैनी॥ए
हबिवाहबडलाभसुनैनी॥बडेभागबिधबातबनाई॥नैनातिथहोइहहिदोउ
भाई॥२९२॥दो॥बारहिबारसनेहबसजनकबुलाउबसीय॥लेनआइहहि
बंधदोउकोटकामकमनीय॥२९३॥चौ॥बिवधभांतहोइहपहुनाई॥प्रियन
काहिअससासुरमाही॥तबतबरामलषनहिनिहारी॥होइहहिंसबपुरलो

॥मा॥ २१३ ॥राम॥ २१२

कसखवारी॥ सखवजसुरामलषनकरजोटा॥ तैसेभूपसंगदुइढोटा॥ स्यामगौर
सबअंगसुहाए॥ जेसबकहैदेषजेआइ॥ कहाएकमैआजनिहारे॥ जनुविरंचि
निजहाथसवारे॥ भरतरामहीकीअनुहारी॥ सहसालषनसकहिनरनारी॥ ल
षनशत्रुसूदनएकरूपा॥ नषसषतेसबअंगअनूपा॥ मनभावैमुषवरनिन
जाही॥ उपमाकहुत्रिभवनकेउनाही॥ ३६४॥ छंद॥ उपमानकेउकहदासतुल
सीकतहुकविकोविदकहै॥ बलविनयविद्यासीलसोभासिंधइनसेएइहै॥ पु
रनारसकलपसारअंचलविधहिवचनसुनावही॥ विआहिअहुचारिउभा
इयहिपुरहिमससमंगलगावही॥ ३६५॥ सो॥ कहैपरसपरनारवारिविलोच
नपुलकतन॥ सषिसबकरवपुरारिपुनियपयोनिधभूपदेउ॥ ३६६॥ चौ॥ यहिविध
सकलमनोरथकरही॥ आनंदउमगउमगउरभरही॥ जेन्रपसीयास्वयंबरआए
देषबंधसबतिनसुषपाए॥ कहतरामजसविसदविसाला॥ निजनिजगृहग
वनेमहिपाला॥ गएबीतकछुदिनइहभांती॥ प्रमदितपुरजनसकलवराती॥
मंगलमूललगनदिनआवा॥ हिमरितुअगहनमाससुहावा॥ ग्रहतिथ

बा ११४ राम ११४

नषतजोगवरवारू॥ लगनसोधविधकीनविचारू॥ पठैदीननारदसनसो
ई॥ गनीजनककेगनकनजोई॥ सुनीसकललोगनयहिबाता॥ कहहिजो
तिषीअहविधाता॥ ७६७॥ दो॥ धेनधूरबेलाबिमलसकलसुमंगलमूल॥ वि
प्रनकहेउविदेहसनजानसगुनअनुकूल॥ ७६८॥ चौ॥ उपरोहितैकहेउनर
नाहा॥ अबबिलंबकरकारनकाहा॥ सतानंदतबसचिवबुलाए॥ मंगलस
कलसाजसभिल्याए॥ संषनिसानपनवबहुबाजे॥ मंगलकलससगुनस
भसाजे॥ सुभगसुआसनगावहिगीता॥ करहिबेदधुनिविप्रपुनीता॥ लेनच
लेसादरइहभांती॥ गएजहांजनबासबराती॥ कोशलपतिकरिदेषसमाजू॥
अतिलघुलागतिनहिसुरराजू॥ भयोसमैअबधारिअपाऊ॥ यहिसुनिपरा
निशानहिघाऊ॥ गुरहिपूछकरिकुलविधराजा॥ चलेसंगीमुनिसाधसमाजा

मव ७६९॥ दो॥ भागविभवअवधेसकरदेषदेवब्रह्मादि॥ लगेसराहनसहसमु
षजानजनमनिजबाद॥ ७७०॥ चौ॥ सुरनसुमंगलअवसरजाना॥ बरषहि
सुमनबजाइनिशाना॥ शिवब्रह्मादिकविबुधविरूथा॥ चढेविवाननिनाना

ग्रुधा॥ प्रेमपुलकतन हृदैंउछाहू॥ चलेविलोकनरामव्याहू॥ देषजनकपुर
सुरअनुरागे॥ निजनिजलोकसबहिंलघुलागे॥ चितवहिंचकितविचित्र
विताना॥ रचनासकलअलौकिकनाना॥ नगरनारनररूपनिधाना॥
सुघरसुधरमसुसीलसुजाना॥ तिनहिंदेषसबसुरसुरनारी॥ भयेनष
तजनुविधउज्यारी॥ विधिहिंभयउआचरजैविशेषी॥ निजकरनीकछुकतहुँदे न
षी॥ २२१॥ दो०॥ शिवसमुझाएदेवसबजनिआचारजभुलाहु॥ हृदै विचा
रहुधीरधरिसीयारघुबीरबियाहु॥ २२२॥ चौ०॥ जिनकरनामुलेत जगमा
ही॥ सकलअमंगलमूलनसाही॥ करतलहोहिंपदारथचारी॥ तेइ सीयरा
मकहिंउकामारी॥ यहिविधसंभसुरनिसमुझावा॥ पुनिआगेवारवासचला
वा॥ देवनदेषेदसरथजाता॥ महामोदमनपुलकितगाता॥ साधुस माजसं
गमहिदेवा॥ जनुतनुधरेकरैसुखसेवा॥ सोहतसाथसुभगसुत चारी॥
जनुअपवरगसकलतनधारी॥ मर्कतकनककवरैंवरजोरी॥ देषसुरनभै

न

श्रीतनथोरी॥ पुनिरामहिविलोकहीयेहरषै॥ नृपहिसराहिसुमनतवबरषै॥ ३
२३॥ दो॥ रामरूपनषसिषसुभगवारहिवारनिहार॥ पुलकगाततलोचन
सजलउमासमेतपुरार॥ ३२४॥ चौ॥ केकिकंठदुतिस्यामलअंगा॥ तडित
विनिंदकबसनसुरंगा॥ ब्याहविभूषनविविधबनाए॥ मंगलमयसब
भांतिसुहाए॥ सरदविमलविधुबदनसुहावन॥ नैननवलराजीववलजा
वन॥ सकलअलौकिकसुंदरताई॥ कहिनजाइमनहीमनभाई॥ बंधुमनोह
रसोहहिसंगा॥ जातनचावतचपलतुरंगा॥ राजकुअरबाजिदिषरावहि॥
बंसप्रसंसकबिरदसुनावहि॥ जेहितुरंगपररामविराजे॥ गतिबिलोकषग
नायकलाजे॥ कहिनजाइसबभांतिसुहावन॥ बाजबेषजनुकामबनावा॥ ३
२५॥ छंद॥ जनुबाजबेषबनाइमनसिजरामहितअतिसोहई॥ आपनेबयब
लरूपगुनगतिसकलभवनबिमोहई॥ जगमगतजीनजरावजोतसुमो
तमनिमानकलगे॥ किंकिनललामलगामललितविलोकसुरनरमुनिठ

गे॥२२६॥ दो॰॥ भ्रम मन सहि लयलीन मन चलत न चाल छबि पाव॥ अब तउ इम भनत
डु तु घन जन रवि बाजन चाइ॥२२७॥ चौ॰॥ जेहि वर बाज राम असवारा॥ तेहि सा
रदउ वरने पारा॥ शंकर राम रूप अनरागे॥ नेन पंच दस अति प्रिय लागे॥
हरि हित सहित राम जब जोहे॥ रमा समेत रमापति मोहे॥ नीरख राम छबि
बिध हरखाने॥ आठो नेन जान पछताने॥ सुरसेनँ उर बहुत उछाहु॥ विध ते
बड़े बढ़ि लोचन लाहू॥ रामहि चितव सुरेस सुजाना॥ गोतम स्राप परम हित
जाना॥ देव सकल सुरपतिहि सराहीं॥ आज पुरंदर सम को नाहीं॥ मुदित
देवगन रामहि देखी॥ नृपसमाज दुहु हरष विशेषी॥२२८॥ छंद॥ अति हरष
राजसमाज दुहु दिस दुंदभी बाजहि घनी॥ वर्षहि सुमन सुर हर्ष कहि जय ज
य जय त रघुकुलमनी॥ यहि भांति जान बरात आवत बाजने बहु बाजही॥
रानी सुआसन बोलि परिछन हेत मंगल साजही॥२२९॥ दो॰॥ साजि आरती
अनेक बिध मंगल सकल सवार॥ चलीँ दत प्रछिन करि नागर गामि वर
नार॥२३०॥ चौ॰॥ बिध बदनी सब सब मृगलोचन॥ सब निज तन छबि रति

प

मदमोचन॥ पहिरे बरनबरन बर चीरा॥ सकल विभूषन सजे शरीरा॥ सकल
सुमंगल अंग बनाए॥ करहि गान कलकंठि लजाए॥ कंकन किंकन नूपुर
बाजहि॥ चाल बिलोकि काम गज लाजहि॥ बाजे बाजन विविध प्रकारा॥ नभ
अरु नगर सुमंगलचारा॥ सची सारद रमा भवानी॥ जो सुरतीय सुचि स
हज सयानी॥ कपट नारि बर बेष बनाई॥ मिली सकल रनिवासहि जाई॥ क
रहि गान कल मंगल बानी॥ हर्ष विवस सब काउ न जानी॥ ७८१॥ छंद॥ को
जान केहि आनंद बस सब ब्रह्म बर परिछन चली॥ कल गान मधुर निसान बर
षहि सुमन सुर सोभा भली॥ आनंदकंद विलोकि दूलह सकल हिये हरषि
त भई॥ अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई॥ ७८२॥ दो॥ जो सुख
भा सीया मात मन देषि राम बर बेष॥ सो न सकहि कहि कलप सत सहस
सारदा सेष॥ ७८३॥ चौ॥ नैन नीर हठ मंगल जानी॥ परिछन करहि मुदित मन
रानी॥ बेद विहित अरु कुल आचारू॥ कीन भली विधि सब ब्यवहारू॥ पंच सब
द धुनि मंगल गाना॥ पट पावडे परहि विधि नाना॥ करि आरती अरघु तिन

का ११६ राम ११६

दीना॥ रामगमनमंडपतबकीना॥ दसर्थसहतसमाजबिराजे॥ बिभोबि
लोकलोकपतिलाजे॥ समैसमैसुरबर्षहिफूला॥ सांतपढेमहिसुरअ
नकूला॥ नभअरुनगरकलाहलहोई॥ आपनीपरकछुसनैनकोई॥
येहिबिधरामंमंडपहिआए॥ अरघुदेआसनबैठाए॥ ३८४॥ छंद॥ बैठा
रआसनआरतीकरिनिरषबरसुषपावही॥ मनिबसनभूषनभूरवा
रहिनारमंगलगावही॥ ब्रह्मादिसुरबरबिप्रबेषबनाइकैतकदेषही॥
अवलोकरघु कुलकमलरविछबिसुफलजीवनलेषही॥ ३८५॥ दो॥
नारनवारीभाटनटरामनिछावरपाइ॥ मुदतअसीसहिनाइसिरहरष
नहृदेसमाइ॥ ३८६॥ चौ॥ मिलेजनकदसर्थअतिप्रीती॥ करवैदकलौककस
बरीती॥ मिलतमहादोउराजबिराजै॥ उपमाषोजषोजकबिलाजै॥ लहीन
कतहूंहारहीयेमानी॥ इनसमएउपमाउरआनी॥ सामधदेषदेवअ
नुरागे॥ सुमनबरषजसगावनलागे॥ जगबिरंचउपजावाजबते॥ देषे
सनेब्याहबहुतबते॥ सकलभांतिसमसाजसमाजू॥ समसमधीदेषेहम

बा
११२

मज्जन॥ देवन गिरा सहित मुद सांची॥ प्रीति अलौकिक दुहु दिसि माची॥१८७॥
छंद॥ मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे॥ निज पान जनक
सुजान सब कहुं आन सिंघासन धरे॥ कुल इष्ट सरिस बशिष्ट पूजे बिनै
करि आसिष लही॥ कौसिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न कहै परी॥१
८८॥ दो॥ बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस॥ दीये दिव्य आसन सब
हि सब सन लही असीस॥१८४॥ चौ॥ बहुर कीन्ह कौशलपति पूजा॥ जान
ईस सम भाउ न दूजा॥ कीन्ह जोरि कर बिनै बड़ाई॥ कहि निज भाग बिभव
बहुताई॥ पूजे भूपति सकल बराती॥ समधी सम सादर सब भांती॥ आसन
उचित दीये सब काहू॥ कहौं काह मुख एक उछाहू॥ सकल बरात जनक स
नमानी॥ दान मान बिनती बर बानी॥ बिधि हरि हर दिसिपति दिनराऊ॥ जे
जानहि रघुबीर प्रभाऊ॥ कपट बिप्र बर बेष बनाए॥ कौतक देखै अति सचु
पाए॥ पूजे जनक देव सम जाने॥ दए सुआसन बिन पहिचाने॥ छंद॥ पहि
चान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई॥ आनंद कंद बिलोकि दूल्ह

राम
११७

234

हिउँमेदिसुआनंदमई॥सुरलखेरामसुजानपूजेमानसिकआसनदए॥
अवलोकसीलसुभाउप्रभकोविबुधमनप्रमुदितभए॥३२१॥दो॥रामचंद्र
मुखचंद्रछबिलोचनचारुचकोर॥करतपानसादरसकलप्रेमप्रमोदन
थोर॥३२२॥चौ॥समैबिलोकबसिष्टबुलाए॥सादरसतानंदुपुनिआए॥बे
गिकुअँरअबिआनहुजाई॥चलेमुदितमुनिआइसुपाई॥रानीसुनिउपरो
हितबानी॥प्रमुदितसखिन्हसमेतसयानी॥बिप्रबधूकुलबृधबुलाई॥कर
कुलरीतसुमंगलगाई॥नारिवेषजेसुरबरबामा॥सकलसुभाइसुंदरीस्या
मा॥तिनहिदेखिसुखपावहिनारी॥बिनुपहिचानप्रानतेप्यारी॥बारबारस
नमानहिरानी॥उमारमासारदसमजानी॥सीयसँवारसमाजबनाई॥मुद
तमंडपहिचलीलवाई॥३२३॥छंद॥चलीलियाइसीतहिसखीसादरसजि
सुमंगलभामनी॥नवसतहिसाजेसुंदरीसबमत्तकुंजरगामनी॥कलिगान
सुनिमुनिध्यानत्यागहिकामकेकललाजही॥मंजीरनूपुरकलितकंकन
तालगतिवरबाजही॥३२४॥दो॥सोहितबनितावृंदमहुसहजसुहावन

लघुमति बहुत मनोहरताई

सीय॥ छबि ललना गन मध्य जनु सुषमा तिय कमनीय॥३२४॥ चौ॥ सीयां सुं
दरता बरनन जाई॥ आवत देषि बरातन सीता॥ रूप रासि सब भांति पुनीता॥ सब
ह मन हि मन कीये प्रनामा॥ देषि राम भए पूरनकामा॥ हरषे दसरथ सुत सहि स
मेता॥ कहि न जाइ उर आनंद जेता॥ सुर प्रणाम करि बरसहि फूला॥ मुनि अ
सीस धुनि मंगल मूला॥ गान निसान कुलाहल भारी॥ प्रेम प्रमोद मगन नर
नारी॥ एहि बिधि सीया मंडप हि आई॥ प्रमुदित सांति पढहि मुनिराई॥ तेहि अ
वसर कर बिधि बिवहारू॥ दुहुं कुलगुर सब कीन आचारू॥३२५॥ छं॥ आचा
र करि गौर गनपति मुदित बिप्र पुजावही॥ सुर प्रगट पूजा लेहि देहि असीस
अति सुख पावही॥ मधुपर्क मंगल द्रब जो जेहि समय मुनि मन मऊ चहै॥ भ
रे कनक कोपर कलस सो तब लीए हि परचारक रहै॥ कुल रीत प्रीत समेत रबि
कहि देव सब सादर कीए॥ इह भांति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दए॥ सी
अ राम अवलोकन परसपर प्रेम काहू न लष परे॥ मन बुधि बर बानी अगोच
र प्रगट कबि कैसे करे॥३२६॥ दो॥ होम समै तन धरि अनल अति सुख आहुति

लेहि॥ विप्रबेषधरि वेदसब कहि विवाहि विधि देहि॥३९८॥ चौ॥ जनकपाटम
हिषीजगजानी॥ सीयामातकिमिजाइबषानी॥ सुजससुकृतिसुषसुंदरताई॥
सबसमेटि बिधिरचीबनाई॥ समैजानिमुनिवरनबुलाई॥ सुनतसुआसिन
सादरल्याई॥ जनकबामदिससोहिसुनेयना॥ हिमगिरिसंगबनीजनुम
मयना॥ कनककलसमनिकोपरिरूरे॥ सुचिसुगंधमंगलजलपूरे॥ निज
करिमुदितरायअरुरानी॥ धरेरामकेआगेआनी॥ पढहिबेदमुनिमंगलबा
नी॥ गगनसुमनझरिअवसरुजानी॥ वरविलोकदंपतिअनुरागे॥ पायपुनी
तपषारनलागे॥३९९॥ छंद॥ लागेपषारनपायपंकजप्रेमतनपुलकाव
ली॥ नभनगरगाननिसानजयधुनिउमगिजनुचहुदिसचली॥ जेपदसरो
जमनोजअरिउरसरसदैवविराजही॥ सकृतसुमिरतविमलतामन
सकलकलिमलभाजही॥ जेपरसमुनिबनितालहीगतिरहीजोपातकमई॥
मकरंदजिनकेसंभुसिरसुचितावधिसुरबरनई॥ करिमधुपमनमुनि
जोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहै॥ तेपदपषारतभागभाजनुजनक

238

बा

११९

जयजयसबकहै॥ करिकुआरिकर तलजोरसाषोचार दोउकुलगुरकरै॥
मयोपानगहनिविलोकविधिसरमनुजमनआनंदभरै॥ सखसमलल
हूलहदेषदंपतिपुलकतनहुलसेहिये॥ करिलोकबेदविधानकंन्याः
दाननृपभूषनकीये॥ हिमवंतजिमगिरिजमहेसहिहरहिश्रियसादर
दई॥ तिमजनकरामहिसीयसमर्पीविस्वकलकीरतिनई॥ किउकरयवि
नयविदेहकिउविदेहमूर्तिसावरी॥ करिहोमविधवतगांठजोरीहोनला
गीभावरी॥ ८०० दो॥ जयधुनिवंदीबेदधुनिमंगलगानिसान॥ सुनिहर्षे
वर्षहिविवधसुरतरसुमनसुजान॥ ८०१॥ चौ॥ कुअरिकुअरिकलभावरि
देही॥ नेनलाभसबसादरलेही॥ जाइनवरनमनोहरजोरी॥ जोउपमा
कछुकहेंसुथोरी॥ रामसीयासंदरप्रतिछाही॥ जगमगातमनषंभननमा
ही॥ मनहमदनरतिधरिबहुरूपा॥ देषतरामव्याहअनूपा॥ दरस
लालसासकुचनिथोरी॥ प्रगटतदुरतबहोरबहोरी॥ भएमगनसब
देषनिहारे॥ जनकसमाजअपनविसारे॥ प्रमदतमुनहिभावरीफेरी॥

नम

११९

नेगसहितसबरीतिनबेरी॥ रामसीयासिरसेंदुरदेही॥ सोभाकहिनजाइ
बिधकेही॥ अरुनपरागजलजभरिनीकें॥ ससिहभूषअहिलोभअमीके
बहुरबसिष्ठदीनअनुसासन॥ बरुदुलहिनिबैठेइकआसन॥
३२४॥ छंद॥ बैठेबरासनरामजानकिमुदितमनदसरथभए॥ तनपुलक
पुनिपुनिदेखिअपनेसुकृतसुरतरफलनए॥ भरभवनरहउछाहराम
बिवाहभासबहीकहा॥ केहिभांतिबरनसिरातरसना॥ एकइहमंगल
महा॥ तबजनकपाइबसिष्ठआयसुब्याहसाजसवारकै॥ मांडवीस्रुतकी
र्तिउरमिलाकुयरिलईहंकारकै॥ कुसकेतकंन्याप्रथमजोगुनसीलसुख
सोभामई॥ सबरीतिप्रीतसमेतकरिसोब्याहिनृपभरतहिदई॥ जानकी
लघुभगनीसकलसुंदरिसिरोमणिजानिकै॥ सोजनकदीनीब्याहलखनहिस
कलबिधसनमानकै॥ जिहनामस्रुतिकीर्तिसलोचनसमुषसबगुनआ
गरी॥ सोदईरिपसूदनहिभूपतिरूपसीलउजागरी॥ अनरूपबरदुलहिन
परसपरलखिसकुचिहियहरषही॥ सबमुदितसुंदरतासराहतसुम
नसुरगनबर्षही॥ सुंदरीसुंदरबरनसहसबएकमंडपराजही॥ जनुजीव

उरि चारि ओअवध आवे भवन सहित बरजनही॥ ८०३॥ दो॥ मुदित अवधपति स
कल सुत बधुन समेत निहारि॥ जनु पायो महिपाल मनि क्रियन सहित फ
ल चारि॥ ८०४॥ चौ॥ जस रघुबीर ब्याह बिधि बरनी॥ सकल कुअर ब्याहे तेहि क
रनी॥ कहि न जाइ कछु दाइज भूरी॥ रहा कनक मनि मंडप पूरी॥ कंचन ब
सन बिचित्र पटोरे॥ भांति भांति बहु मोल न थोरे॥ गज रथ तुरग दास अ
रु दासी॥ धेनु अलंकृत कामदुहा सी॥ बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा॥ क
हि न जाइ जानहि जिन देषा॥ लोकपाल अवलोकि सिहाने॥ लीन अवध
पति सब सुष माने॥ दीन जाचकनि जो जेहि भावा॥ उबरा सो जनवासहि
आवा॥ तब कर जोरि जनक म्रदु बानी॥ बोले सब बरात सनमानी॥ ८०५॥ छं॥
सनमानि सकल बरात आदर दान बिनै बड़ाइ कै॥ प्रमुदित महा मुनि बृं
द बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै॥ सिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संप
ट किए॥ सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दए॥ कर जोरि ज
नक बहोरि बंधु समेत कौसलराय सौं॥ बोले मनोहर बैन सानि सनेह
सील सुभाइ सौं॥ संबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भए॥ इह

राजसमाजसमेतसेवकजानकीविनगरगाहूए॥एदारिकप्रचारकन्हरीपालवी
कुसलामइ॥ज्ञध्रुकमवोवोलियठएवेडुतसीदीठीदशी॥पुनिनंनकुलि
भवनसकलसनमानविधिसमधीकीए॥कहिजोरिकरविनतीपुनिपुनप्रे
मपरिपूरनहीए॥बृंदारकगनसुमनबरसहिराउजनवासहिचले
दुंदभीजयधुनिबेदधुनिनभनगरकौतूहलभले॥तबसषीमंगलगा
६ नकरतमुनीसआँसुपाइके॥दुलहदुलहिनिससहितसंडचलीकोहवरल्या
इकै॥८६॥दो॥पुनिपुनिरामहिचितवसीयासकुचतमनुसकुचेन॥हरत
मनोहरमीनछविप्रेमप्यासेनैन॥८७॥चौ॥स्यामशरीरसुभाइसुहावन॥
सोभाकोटिमनोजलजावन॥जावकजुतपदकमलसुहाए॥मुनिमनम
धुपरहतजिनछाए॥पीतपुनीतमनोहरधोती॥हरतबालरविदाम
निजोती॥कलकिंकनकटिसूत्रमनोहर॥बाहुबिसालबिभूषनसोंदर
पीतजनेउमहाछबिदेशी॥करिमुद्रकाचोरचितलेशी॥सोहतब्याहस
माजसबसाजे॥उरआयतउरभूषनराजे॥पियरउपरनाकाषासे

ती॥दुइदुइमचारनलगेमनिमोती॥नैनकमलकलकुंडलकाना॥बदन
सकलसौंदरपनिधाना॥सुंदुभृकटीमनोहरनासा॥भालतिलकरुचि
बा रताभिवासा॥सोहतमौरमनोहरमाथे॥मंगलमयमुक्तामनिगाथे॥
१२१ ९०॥छंद॥माथेमहामनिमौरमनोजअलअंगसमचितमोरही॥पुरनारि
सुंदरसुंदरीवरहिबिलोकसबतिनतोरही॥मनबसनभूषनवारिआर राम
तिकरहिमंगलगावही॥सुरसुमनवरसहिसूतमागधबंदसुजस १२१
नावही॥कोहवरहिआनेकुयरकुआरसुआसिनिसुखपाइकै॥अति
प्रीतलौकिकरीतलागीकरनमंगलगाइकै॥लहकौरगौरसिखाव
रामहिसीयसनिसारदकहै॥रनवासहासविलासरसवसजनमके
फलसबलहै॥निजपानमनिमहंदेखप्रतमूरतिसरूपनिधानकी॥चा
लतनभुजबलीबिलोकनिबिरहभयबसजानकी॥कौतकबिनोदप्र
मोदप्रेमनजाइकहिजानहिअली॥वरकुयरसुंदरसकलसखिलवा
इजनवासेचली॥तेहसमयसुनिअसीसजहतहनगरनभआ

जनु

नंद महा॥ चिरजीव जोरी चार चारउ मुदत मनि सबही कहा॥ जोगी सि
द्ध मुनीस देव बिलोक प्रभ दुंदभि हनी॥ चले हरष बरषि प्रसून निज निज
लोक जय जय जय भनी॥८०९॥ दो॰ सहित बधूटन कुअर सब तब आए पि
त पास॥ सोभा मंगल मोद भर उमगेउ जनवास॥८१०॥ चौ॰ पुनि जेवनार
भई बहु भांती॥ पठए जनक बुलाइ बराती॥ परत पावरे बसन अनू
पा॥ सुतन समेत गवन कीओ भूपा॥ सादर सभ के पाइ पखारे॥ जथा जो
ग पीठ बैठारे॥ धोए जनक अवधपति चरना॥ सील सनेह जाइ नहि
बरना॥ बहुर राम पद पंकज धोए॥ जे हर हृदै कमल महु गोए॥ तीन
उ भांत राम सम जानी॥ धोए चरन जनक निज पानी॥ आसन उचत सब
हि नृप दीने॥ बोल सूपकारी सभ लीने॥ सादर लगे परन पनवारे॥
कनक कील मनि पान संवारे॥८११॥ दो॰ सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वा
द पुनीत॥ छिन महु सब के परस गए चतुर सुआर बिनीत॥८१२॥ चौ॰
पंच कवल करि जेवन लागे॥ गारि गान सुन अति अनुरागे॥ भांति अ

ने

नेकपरे पकवाने॥ सुधासरस नहि जाइ बखाने॥ परसन लगे सुयार
सुजाना॥ बिंजन बिबिध नाम को जाना॥ चार भांति भोजन बिधि गाई॥
एक एक बिधि बरनि न जाई॥ छरस रुचिर बिंजन बहु जाती॥ एक एक
रस अगनित भांती॥ जेवत देहि मधुर धुनि गारी॥ लै लै नाम पुरुष अ
रु नारी॥ समै सुहावन गारि बिराजा॥ हसत राउ सुनि सहित समाजा॥
इहि बिधि सबही भोजन कीना॥ आदर सहित आचमन दीना॥ १३॥
दो॥ देइ पान पूजे जनक दसरथ सहित समाज॥ जनवासहि गवने
मुदित सकल भूप सिरताज॥ १४॥ चौ॥ नित नूतन मंगल पुर माही॥ नि
मिष सरिस दिन जामनि जाही॥ बडे भोर भूपतिमनि जागे॥ जाचक गुन
गन गावन लागे॥ देखि कुयर बर बधुन समेता॥ किम कहि जाइ मो
द मन जेता॥ प्रातक्रिया करि गे गुर पाही॥ महाप्रमोद प्रेम मन माही॥ क
रि प्रनाम पूजा कर जोरी॥ बोले गिरा अमिअ जनु बोरी॥ तुमरी कृपा सु
नहु मुनि राजा॥ भयो आज मै पूरनकाजा॥ अब सब बिप्र बुलाइ गुसाई॥

देइ धेनु सब भांति बनाई॥ मुनि गुर करि महिपाल बड़ाई॥ पुनि पठए मु
नि ब्रिंद बुलाई॥ ३१५॥ दो॥ बामदेव अरु देवरिषि बालमीक जाबालि॥ आए
मुनिवर निकर तब कौसकादि तपसालि॥ ३१६॥ चौ॥ दंड प्रनाम सबहि नृ
ल प कीने॥ पूजि सप्रेम वरासन दीने॥ चारि लछ वर धेनु मगाई॥ कामसुरभि
समसील सुहाई॥ सब बिधि सकल अलंकृत कीने॥ मुदित महिप महिदेवन
दीने॥ करत विनै बहु बिधि नरनाहु॥ लहेउ आज जग जीवन लाहु॥ पाइ अ
सीस महीस अनंदा॥ लए बोलि पुनि जाचक ब्रिंदा॥ बनक बसन मनि है
गै स्यंदन॥ दीने बूझि रुचि रबिकुल नंदन॥ चले पढत गावत गुन गाथा॥ ज
य जय जय दिनकर कुलनाथा॥ इह बिधि राम बिवाह उछाहु॥ सकै न वरन
सहस मुख जाहु॥ ३१७॥ दो॥ बार बार कौसक चरन सीस नाइ कहि राउ॥ यह
सब सुख मुनिराज तव क्रिपा कटाछ प्रभाउ॥ ३१८॥ चौ॥ जनक सनेह सील
करतूती॥ नृप सब भांति सराहि विभूती॥ दिन उठि विदा अवधपति मागा॥
राखहि जनक सहित अनुरागा॥ नित नूतन आदर अधिकाई॥ दिन प्र
ति सहस भांति पहुनाई॥ नित नव नगर अनंद उछाहु॥ दसरथ गवन

बा सुतइ नकाहु॥ बहुत दिवस बीते इहि भांती॥ जनु सनेह रजु बंधे बराती॥
कौसिक सतानंद तब जाई॥ कहा बिदेह नृपहि समुझाई॥ अब दसरथ क
क हुं आइसु देहु॥ जदपि छाडि न सकहु सनेहु॥ भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाए॥ राम
१२२ कहि जय जीव सीस तिन नाए॥ ८१९॥ दो॥ अवधनाथ चाहत चलन भीत
र करहु जनाउ॥ भए प्रेम बस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ॥ ८२०॥ चौ॥ १२२
पुरबासी सुनि चलहि बराता॥ बूझत बिकल परसपर बाता॥ सुनत गव
नु सब बिलखाने॥ मनहु सांझ सरसिज सकुचाने॥ जहं जहं आवत
बसे बराती॥ तिहं तिहं सीध चला बहु भांती॥ बिबिध भांति मेवा पकवाना॥
भोजन साज न जाइ बखाना॥ भरि भरि बसह अपार कहारा॥ पठए जनक
अनेक सुसारा॥ तुरग लाख रथ सहस पचीसा॥ सकल संवारे नख अ
रु सीसा॥ मत सहस दस सिंधुर साजे॥ जिनहि देखि दिसकुंजर लाजे॥
कनक बसन मनि भरि भरि जाना॥ महिषी धेनु बसत बिधि नाना॥ ८२१॥
दो॥ दाइज अमित न सकिय कहि दीन बिदेह बहोरि॥ जो अवलोकत
लोकपति लोक संपदा थोरि॥ ८२२॥ चौ॥ सब समाज इह भांति बनाई॥

जनकअवधपुरिदीनपठाई॥चलेबरातसुनितिसबरानी॥बिकलमीन
गनजनलघपानी॥पुनिपुनिसियगोदकरिलेही॥देइअसीससिखावन
देही॥होयहुसंततपीअहिप्यारी॥चिरअहिवातअसीसहमारी॥सासससु
रगुरसेवाकरहु॥पतिरुषलषिआयसुअनुसरहु॥अतिसनेहबससख
यीसयानी॥नारिधर्मसिखवहिमृदबानी॥सादरसकलकुअरिसमझाई॥रा
ननवारवारउरलाई॥बहुरिबहुरिभेटहिमहतारी॥कहहिविरंचिरच
ीकतनारी॥८२३॥दो॥तेहिअवसरभाइनसहितरामभानकुलकेत॥
चलेजनकमंदिरमुदितबिदाकरावनहेत॥८२४॥चौ॥चारोभाइसुभाइसुहा
ए॥नगरनारिनरदेषनधाए॥कोउकहैंचलचहतहैंआजु॥कीनविदेहविदा
करिसाजु॥लेहुनैनभरिरूपनिहारी॥प्रियपाहुनेभूपसुतचारी॥कोजानैके
हिसुकृतिसयानी॥नैनअतिथकीनेविधिआनी॥मरनसीलजिमिपायपिऊषा
सुरतरुलहैजनमकरिभूषा॥पावनारकीहरिपदजैसे॥इनकरिदरसन
हमकहुतैसे॥नषरामसोभाउरधरहु॥निजमनफनिमूरतिमनिकरहु॥

ये सिधि सब सैनें न फल देता॥ गए कुअर सब राज निकेता॥ ८२५॥ दो॥
रूप सील सब बंधु लखि हरष उठे रनिवास॥ करहि निछावरि आरती
महा मुदित मन सास॥ ८२६॥ चौ॥ देखि राम छबि अति अनुरागी॥ प्रेम बिब
स पुनि पुनि पग लागी॥ रही न लाज प्रीति उर छाई॥ सहज सनेह बरनि
किमि जाई॥ भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए॥ छरस असन अति हेति
जिवाए॥ बोले रामु सुअवसर जानी॥ सील सनेह सकुच मै बानी॥ राउ
अवधपुर चहत सिधाए॥ बिदा होन हम इहाँ पठाए॥ मातु मुदित मन
आइसु देहू॥ बालक जानि करब नित नेहू॥ सुनत बचन बिलखेउ रनिवा
सू॥ बोलि न सकहि प्रेम बस सासू॥ हृदय लगाइ कुअर सब लीन्हे॥ पतिन्ह सौ
पि बिनती अति कीन्हे॥ ८२७॥ छं॥ करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि क
र पुनि पुनि कहै॥ बलि जाउ तात सुजान तुम्ह कहु बिदित गति सब की अहै॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानबी॥ तुलसीस सील सने
ह लखि निज किंकरी मानबी॥ ८२८॥ सोरठा॥ तुम परपूर सकाम ज्ञान सी

रहिस्वेइसासीबरबानी बहुविधिरामैसासुसनमानी

रोमनमावप्रय॥ जनगृनगाहकरामदेबदलनकरनायतन॥ २४॥ चौ॥ त्र
सकहिहरंसीचरनगहिरानी॥ बहुबिधिरामसमाफिसनमानी॥ रामवदामा
गतिकरिजोरी॥ कीनप्रनामबहोरबहोरी॥ पाइअसीसबहुरिसिरनाई॥
भाईअनिसहतचलैरघुराई॥ मंजमधरमूर्तिउरजानी॥ भईसनेह
सिथलसबरानी॥ पुनिधीरजधरिकुयरहकारी॥ बारबारभेटहिमहि
तारी॥ पउचावहिपेकरिमिलतहिबहोरी॥ बढीपरसपरप्रीतनथोरी॥
पुनिपुनिमिलतसषनबिलगाई॥ बालबछजिमधेनुलवाई॥ २५॥ दो॥
प्रेमविबसनरनारसबसषनसहितरनबास॥ मानउकीनविदेहपुरि
करनाबिरहनिबास॥ ३१॥ चौ॥ सुकसारकाजानकीज्याए॥ कनकपिंजर
निराषपढाए॥ ब्याकुलकहहिकहावैदेही॥ सुनिधीरजपरिहरैनकेही॥ म
एविकलषगमृगाइहभांती॥ मनुजदसाकैसेकहिजाती॥ बंधसमेतजनक
कतबआए॥ प्रेमउमगलोचनजलछाए॥ सीयाबिलोकधीरतामागी॥ रहे
कहावतपरमविरागी॥ लीनराइउरलाइजानकी॥ मिटीमहामरजादग्यानकी॥

समअवसरसबसचिवसयाने॥कीनविचारनअवसरजाने॥बारहिंबारसुता
बा उरलाई॥सजिसुंदरपालकींमगाई॥३३२॥दो॥प्रेमविवसपरवारसबजानिसु
१२५ लगननरेस॥कुअरचढाईपालकीनसुमरेसिद्धगनेश॥३३३॥चौ॥बहुवि
धभूपसुतासमझाई॥नारधर्मकुलरीतसिखाई॥दासीदासदएबहु
तेरे॥सुचसेवकजेप्रियसीयाकेरे॥सीयाचलतब्याकुलपुरबासी॥होहि
सगुनशुभमंगलरासी॥भूसरसचिवसमेतसमाजा॥संगचलेपहु राम
चावनराजा॥समैबिलोकबाजनेबाजे॥रथगजबाजबरातनसाजे॥दस
रथविप्रबोलसबलीने॥दानमानपरपूर्नकीने॥चरनसरोजधूरिधरिसी १२५
स॥मुदितमहीपतिपाइअसीसा॥सुमरिगजाननकीनपयाना॥मंगलमू
लसगुनभएनाना॥३३४॥दो॥सुरपरसूनवरषहिहरषकरहिअप
छरागान॥चलेअवधपतिअवधपुरमुदितबजाइनिसान॥३३५॥चौ॥नृ
पकरिविनैमहाजनफेरे॥सादरसकलमागनेटेरे॥भूषनबसनबाज
गजदीने॥प्रेमपोषठाढेसबकीने॥बारबारविरदावलभाषी॥फिरेस

कलराम महिउर राषी॥ बहुर बहुर कौशलपति कहहीं॥ जनक प्रेम बस
फिरै न चहहीं॥ पुनि कहि भूपति बचन सुहाए॥ फिरय महीस दुर बडि
आइ॥ राउ बहोर उतर भए ठाढे॥ प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढे॥ तब बिदे
ह बोले कर जोरी॥ बचन सनेह सुधा जनु बोरी॥ करौ कवन बिधि बिनय
बनाई॥ महाराज मोहि दीन बडाई॥ ३२६॥ दो॥ कौसलपति समधी स
जन सनमाने सब भांति॥ मिलन परसपर बिनै अति प्रीत न हृदै समा
त॥ ३२७॥ चौ॥ मुनि मंडलहि जनक सिर नावा॥ आसिरबाद सबहि सन
पावा॥ सादर पुनि भेटे जामाता॥ रूप सील गुन निधि सब भ्राता॥ जोर पंक
रुह पान सुहाए॥ बोले बचन प्रेम जनु जाए॥ राम करौं केहि भांति प्रसंसा
मुनि महेस मन मानस हंसा॥ करहि जोग जोगी जेह लागी॥ कोह मोह
ममता मद त्यागी॥ ब्यापक ब्रह्म अलष अबिनासी॥ चिदानंद निरगुन
गुनरासी॥ मन समेत जेह जान न बानी॥ तरक न सकहि सकल अनु
मानी॥ महिमा निगम नेत कहि कहई॥ ३२८॥ दो॥ नैन बिषय मैं कहु म
जो तिहु काल एकरस रहई

बा

१२६

यो सो समउ समउ सब म्हाल॥ सबै सल भज गाजी बकउ मयशी समान कूल॥३३९॥
चौ॰ सब हि भांति मोहि दीन बड़ाई॥ निज जन जानि लीन अपनाई॥ होइ स
हस दस सारद शेषा॥ कर हि कलप कोटक भरि लेषा॥ मोर भाग राउर गु
न गाथा॥ कहि न सिराहि सुनिउ रघुनाथा॥ मै कछु कहौं एक बल मोरे॥
तुम रीझउ सनेह सुठि थोरे॥ बारि बारि मागौं करि जोरे॥ मन परिहरै च
रन जनि भोरे॥ सुनि बर बचन प्रेम जन पोषे॥ पूर्न काम राम परितोषे॥ करि
बर बिनै ससुर सनमाने॥ पित कौसिक बशिष्ठ सम जाने॥ बिनती बहु
रि भरत सन कीनी॥ मिलि सप्रेम पुनि आशिष दीनी॥३४०॥ दो॰ मिले लष
न रिपुसूदनहि दीन असीस महीस॥ भए परसपर प्रेम बस फिरि फिर
नावहि सीस॥३४१॥ चौ॰ बारि बारि करि बिनै बड़ाई॥ रघुपति चले संग
सब माही॥ जनक गहे कौसिक पद जाई॥ चर्न रेनी सिर नयनन्हि लाई॥
सुनि मुनीस बर दरसन तोरे॥ अगम न कछु प्रतीत मन मोरे॥ जो सुज
सु लोकपति चहही॥ करत मनोरथ सकुचत अहही॥ सो सुष सुजस स

राम

१२६

सुख

त्वँमोरिस्वामी ॥ सबसिद्धांतबद्र्सनअनुगामी ॥ कीन्हबिनयपुनिपुनि
सिरनाई ॥ फिरेमहीसआसिषपाई ॥ चलीबरातनिसानबजाई ॥
मुदितछोटबडसबसमुदाई ॥ रामहिनिरषिग्रामनरनारी ॥ पाइनैन
फलहोइसुषारी ॥३४२॥ दो॰ ॥ बीचबीचबरबासकरिमगलोगनसुष
देत ॥ अवधसमीपपुनीतदिनपहुचीआइजनेति ॥३४३॥ चौ॰ ॥ हनेनि
सानेपनवबरबाजे ॥ भेरसंषधुनिहयगजगाजे ॥ झंझिभेरिडुंदभीसु
हाई ॥ सरसरागबाजहिंसहनाई ॥ पुरजनआवतअकनिबराता ॥ मु
दितसकलपुलकावलीगाता ॥ निजनिजसुंदरसदनसवारे ॥ हाटबाटचौ
हटपुरद्वारे ॥ गलीसकलअरगजासिंचाई ॥ जहतहचौकेचारुपुराई ॥
बनाबजारनजाइबषाना ॥ तोरनकेतुपताकबिताना ॥ सफलपुंगफलक
दलिरसाला ॥ रोपेबकुलकदंबतमाला ॥ लगेसुभगतरुपरसतध
नी ॥ मनिमयआलबालकलकरनी ॥३४३॥ दो॰ ॥ बिबधभांतिमंगल
कलसगृहगृहरचेसवारि ॥ सुरब्रह्मादिसिहाइसबरघुबरपुरीनिहार ॥
३४४॥ चौ॰ ॥ भूपभवनतिहिअवसरसोहा ॥ रचनादेषिमदनमनमोहा ॥

मंगलसदनमनोहरताई॥ रिधिसिधिसुखसंपदासुहाई॥ जनउ
छाहसबसहजसुहाए॥ तनधरिधरिदसरथगृहछाए॥ देखनहेत
रामबैदेही॥ कहोलालसाहोइनकेही॥ जूथजूथमिलचलीसुआ
सिन॥ निजछबिनिदरहिमदनबिलासिन॥ सकलसुमंगलस
जेंआरती॥ गावहिजनबहुबेषभारती॥ भूपतिभवनकुलाहल
होई॥ जाइनबरनिसमउसुखसोई॥ कौसल्यादिराममहतारी॥ प्रेम
बिबसतनदसाबिसारी॥ ३४५॥ दो॰ दएदानबिप्रनबिपुलपूजगने
सपुरारि॥ प्रमुदितपरमदरिद्रजनपाइपदार्थचारि॥ ३४६॥ चौ॰॥ मोद
प्रमोदबिबससबमाता॥ चलेनचरनसिथलभएगाता॥ रामदरसहित
अतिअनुरागी॥ परिछनिसाजसजनसबलागी॥ बिबिधबिधानबा
जनेबाजे॥ मंगलमुदितसुमित्रासाजे॥ हरददूबदधिपल्लवफूला॥
पानपूगफलमंगलमूला॥ अछतअंकुररोचनलाजा॥ मंजुलमंज
रितुलसिबिराजा॥ छुहेपुरटघटसहजसुहाए॥ मदनसकुनजन
नीड़बनाए॥ सगनसुगंधनजाहिबखानी॥ मंगलकलससजहिसबरानी॥

रचीआरतीबहुतविधाना॥मुदितकरहिंकलमंगलगाना॥८४७॥दो॥कनक
थारिभरिमंगलनिकमलकरिलिएमात॥चलीमुदितपरिछनकरनपुल
कप्रफुल्लितगात॥८४८॥चौ॥धूपधूमनभमेचकभयो॥सावनघनघमंड
जनुठयो॥सुरतरुसुमनमालसुरवर्षहिं॥मनहुंबलाकअवलिमनुक
र्षहिं॥मंजुलमनिमयबंदनिवारे॥मनहुंपाकरिचापसवारे॥प्रगटहिंदु
रहिंअटनपरभामिनि॥चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि॥दुंदभिधुनिघ
नगर्जहिंघोरा॥जाचकचातकदादुरमोरा॥सुरसुगंधसुचिवर्षहिंवारी
सुखीसकलससिपुरनरनारी॥समउजानगुरआइसुदीना॥पुरप्रवेस
रघुकुलमनिकीना॥सुमिरिसंभुगिरिजागनराजा॥मुदितमहीपतिसहित
समाजा॥८४९॥दो॥होहिंसगुनवर्षहिंसुमनसुरदुंदुभीबजाइ॥विबुधब
धूनाचहिंमुदितमंजुलमंगलगाइ॥८५०॥चौ॥मागधसूतवंदिनटनाग
र॥गावहिंजसतिहुंलोकउजागर॥जयधुनिविमलवेदवरबानी॥दसदि
सिसुनियसोमंगलसानी॥बिपुलबाजनेबाजनेलागे॥नभसुरनगरलोग
अनुरागे॥बनेबरातीवरनिनजाहीं॥महामुदितमनसुखनसमाहीं॥पुर

बारि बिलोचन पुलक सरीरा॥ आरती करहिं मुदित पुर नारी॥ हरषहि
निरषि कुवर बर चारी

बा   बसन तब राउ जुहारे॥ देवत राम हित भये सुषारे॥ करहि निछावर मनि   राम
गन चीरा॥ शिवक सुभग ओसहर उघारी॥ देषि दुलहनिन होहि सुषारी
१२८   ३५१॥ दो॥ एह बिधि सम ही देत सष आऐ राजदवार॥ मदत मात परछ   १२८
न करहि बधुन समेत कुमार॥ ३५२॥ चौ॥ करहि आरती वारहि वारा॥ प्रे
म प्रमोद कहै को पारा॥ भूषन मनि पट नाना जाती॥ करहि निछावरि
अगनित भाती॥ बधुन समेत देष सत चारी॥ परमानंद मगन महतारी॥
पुनि पुनि सीया राम छबि देषी॥ मदत सफल जग जीवन लेषी॥
सषी सीय मुष पुनि पुनि चाही॥ गान करहि निज सुकृत सराही॥ वर्ष
हि सुमन छनहि छन देवा॥ नाचहि गावहि लावहि सेवा॥ देष मनो
हर चारी जोरी॥ सारद उपमा सकल ढंढोरी॥ देत न बनहि निपट ल
घु लागी॥ इकटक रही रूप अनुरागी॥ ३५३॥ दो॥ निगम नीत कुल री
त करि अरघ पावडे देत॥ बधुन सहित सत प्रछ सम चली लवाइ नि
केत॥ ३५४॥ चौ॥ चार सिंहासन सहज सुहाए॥ जनु मनोज निज हाथ
ना   बनाए॥ तिन पर कुयरि कुयारि बैठारै॥ सादर पाइ पुनीत पषारे॥ धूप

256

दीपनहीवेदबेदविधि॥ पूजेवरदुलहनमंगलनिधि॥ वारहिवारआर
तीकरही॥ विजनचारचामरसिरढरही॥ वसतुअनेकनेवछावरहोही॥
भरीप्रमोदमातसबसोही॥ पावापरमततजनजोगी॥ अंम्रतलहेउजन
संततरोगी॥ जनमरंकजनपारसपावा॥ अंधेलोचनलाभसुहावा॥ मूकब
दनजनसारदछाई॥ मानहुसमरसूरजयपाई॥ ३५५॥ दो॥ इहसुखतेश
तकोटिगनपावहिमातअनंद॥ भाईयनसहितव्याहिघरआएरघुकु
लचंद॥ ३५६॥ दो॥ लोकरीतजननीकरहिवरदुलहनसकुचाहि॥ मोदबि
नोदविलोकबडरामामनहिमुसकाहि॥ ३५७॥ चौ॥ देवपितरपूजेविधिनी
की॥ पूजीसकलबासनाजीकी॥ सबहिबंदमांगहिवरदाना॥ भाइनसहि
तरामकल्याना॥ अंतरहितसुरआसिषदेही॥ मुदितमातअंचलभ
रलेही॥ भूपतबोलबरातीलीने॥ जानबसनमनिभूषनदीने॥ आइसपा
इराखउररामहि॥ मुदितगएसबनिजनिजधामहि॥ पुरनरनारसकलप
हिराए॥ घरघरबाजनलगेबधाए॥ जाचकजनजाचहिजोईजोई॥ प्र
मुदितराउदेहिसोईसोई॥ सेवकसकलबजनिआनाना॥ पूरनकीएदान

सनमानि ॥ ३५८ ॥ दो० ॥ देहिँअसीसजुहारसबगावहिगुनगनगाथ ॥ त
बगुरभूसुरसहितगृहगवनकीननरनाथ ॥ ३५९ ॥ चौ० ॥ जोबसिष्टअ
नुसासनदीनी ॥ लोकबेदबिधसादरकीनी ॥ भूसुरभीरदेखसबरानी
सादरउठीभागबडजानी ॥ पाइपखारसकलअनवाए ॥ पूजभलीबिधभू
पजेवाए ॥ आदरदानप्रेमप्रपोषे ॥ देतअसीसचलेमनतोषे ॥
बहुबिधकीनगाधसुतपूजा ॥ नाथमोहिसमधंन्यनदूजा ॥ कीनप्रसं
साभूपतिभूरी ॥ रानिनसहितलीनपगधूरी ॥ भीतरभवनदीनबरबा
सु ॥ मनजोगवतरनृपरनिवासु ॥ पूजेगुरपदकमलबहोरी ॥ कीनबि
नैउरप्रीतनथोरी ॥ ३६० ॥ दो० ॥ बधुनसमेतकुमारसबरानिनसहितमही
स ॥ पुनिपुनिबंदतगुरचरनदेतअसीसमुनीस ॥ ३६१ ॥ चौ० ॥ बिनयकी
नउरअतअनुरागे ॥ सुतसंपदाराखसबआगे ॥ नेगमांगमुनिनायक
लीना ॥ आसिरबादबहुतबिधदीना ॥ उरधरिरामहिसीयसमेता ॥ हरषि
कीनगुरगवननिकेता ॥ बिप्रबधूसबभूपबुलाई ॥ चैलचारभूषन
पहिराई ॥ बहुरिबुलाइसुआसनलीनी ॥ रुचबिचारपहिरावनदीनी

ग

नी॥नेगीनेगजोगसबलेही॥रुचिअनरूपभूपमनिदेही॥प्रीयपाहुनेपूज
जेजाने॥भूपतिभलीभांतिसनमाने॥देवदेखरघुबीरबिबाहू॥बर्षिप्रसूनप्र
संसिउछाहू॥३६२॥दो॥चलेनिशानबजाइसरनिजनिजपुरसुषपाइ॥कह
तपरसपररामजसुप्रेमनहृदैसमाइ॥३६३॥चौ॥सबबिधिसबहिसमदिन
रनाहू॥कहाहृदैभरिपूरउछाहू॥जिहरनवासतहंपगधारे॥सहितब
धूटनिकुयरनिहारे॥लीनगोदकरिमोदसमेता॥कोकहिसकैभयोसुषजे
ता॥बधूसप्रेमगोदबैठारी॥बारिबारहीयहरषदुलारी॥देषिसमाजमु
दितरनवासू॥सबकेउरआनंदकीओबासू॥कहिओभूपजिमभयोबिबाहू॥
सुनिसुनिहर्षहोइसबकाहू॥जनकराजगुनसीलबडाई॥प्रीतरीतसंपदा
सुहाई॥बहुबिधभूपभाटजिमबरनी॥रानीसबप्रमुदितसुनिकरनी॥३६
४॥दो॥सुतनसमेतनहाइनृपबोलिबिप्रगुरज्ञाति॥भोजनकीयेअनेकबि
धघरीपंचगइराति॥३६५॥चौ॥मंगलगाननकरहिबरभामन॥भैसुषम
मूलमनोहरजामन॥अचैपानसबकाहूपाए॥स्रगसुगंधभूषतछबि
छाए॥रामहिदेषरजाइसुपाई॥निजनिजभवनचलेसिरनाई॥प्रेमप्र

मोदबिनोदबढ़ाई। समउसमाजमनोहरताई॥ कहिनसकहिसतसा
रदसेसू॥ बेदबिरंचिमहेसगनेसू॥ सोमैकहौकवनबिधबरनी॥ भूम
नागसिरधरैकिधरनी॥ न्रपसबभांतिसबहिसनमानी॥ कहिम्रदबचन
बुलाईरानी॥ बधूलरकनीपरघरिआए॥ राखैहुनयनपलककीना
ए॥३९६॥ दो॥ लरकास्रमितउनीदबससयनकरावहुजाइ॥ असकहि
गेविश्रामग्रहरामचरनचितलाइ॥३९७॥ चौ॥ भूपबचनसुनिसहजसु
हाए॥ जटितकनकमनिपलंगडसाए॥ सुभगसुरभयपयफेनसमा
ना॥ कोमलकलितसुपेतीनाना॥ उपबरहनबरबरनिनजाही॥ स्रगसु
गंधमनिमंदरमाही॥ रतनदीपसुठिचारुचंदोवा॥ कहतिनबनेजानि
जेहजोवा॥ सेजरुचिररचिरामउठाए॥ प्रेमसमेतपलंगपउढाए॥ आ
ग्यापुनिपुनिभाइनदीनी॥ निजनिजसेजसयनतिनकीनी॥ देखिस्याममृ
दमंजुलगाता॥ कहैसप्रेमबचनसभमाता॥ मारगजातभयावनभारी॥
किहबिधतातताड़कामारी॥३९८॥ दो॥ घोरनिशाचरविकटभटसमर
गनहिनहिंकाहु॥ मारेसहितसहायकिमखलमारीचसुबाहु॥३९९॥ चौ॥

७२

मुनिप्रसादेवलीमाततमारी॥ ईसमअनेककरवरपंडितारी॥ मधीरचवारी
करिदुरुभाशी॥ गुरप्रसादसबविद्यापाशी॥ मनीतीयतारीजगतपमध्य
री॥ कीर्तिवरणीभवनिभरिपूरी॥ कमठपीठदवकूटकठोरा॥ नयसमाजम
उनीवधनतोरा॥ विश्वविजयजमजाजनिविलाशी॥ गाएभवनव्याप्तिसब
भाशी॥ सकलजमानमकर्मतुमारे॥ केवलकौशिकलव्यासुधारे॥ आजम
फलजनमहमपाया॥ देषेतात विधवदनतमारा॥ जेदिनगएनुमहिविन
देषे॥ तेविवरंचजनिपारहितलेषे॥ ८७॥ दो॥ रामप्रतोषीमातसबकहिविनी
तवरबैन॥ समरश्रमगुरविप्रपदकीयेनीदवसीमेन॥ ८८॥ चौ॥ नींदउ
बरनसोरस्रुठलीना॥ मनउसांजसमरसीरउसोना॥ घरिघरिकरीहिजाग
रननारी॥ देहिप्रसपरमंगलगारी॥ पुरीविराजतराजतिरजनी॥ रानीकहे
बिलोकउसजनी॥ सेंदबधसासलैसोई॥ फनिकनजननिरमनिउरगोई॥
प्रातपुनीतकालप्रभुजागे॥ अरुनचूडवरबोलनलागे॥ बंदमागधगुनिगु
नीगानगाए॥ पुरजनद्वारजोहारनआए॥ बंदविप्रसुरगुरपितमाता॥

बा पाइअसीसमहुदेतसबभ्राता॥जननमादरबदनेमिलसो॥भूपतिसंगि
द्वारपगुधारे॥८७२॥दो॥कीनसोचसबसहजसुचिसरितपुनीतनहा
१२१ इ॥प्रातक्रयाकरितातपहिंआएचारौभाइ॥८७३॥चौ॥भूपबिलोकिलएउ ราम
रलाई॥बैठेहरषरजाइसुपाई॥देषिरामसबसभाजुडानी॥लोचन १२१
लाभअवधिअनुमानी॥पुनिबशिष्टमुनिकौसकआइ॥सुभगआसन
नमुनिबैठाए॥सुतनसमेतपूजपदलागे॥नरषरामदोउगुरअनुरा
गे॥कहहिंबशिष्टधरमइतिहासा॥सुनहिंमहीससहितरनिवासा॥मुनि
मनअगमगाधिसुतकरनीं॥मुदितबशिष्टबिपलबिधबरनीं॥बोलेबाम
देवसबसाची॥कीरतिकलितलोकतिहुंमाची॥सुनिआनंदभयेसबका
हू॥रामलषनउरअतिहिउछाहू॥८७४॥दो॥मंगलमोदउछाहिंदिव नित जाहिं
सइहभांति॥उमगीअवधअनंदभरिअधिकअधिकअधिकाति॥८७४॥
चौ॥सुदिनसोधकलकंकनछोरे॥मंगलमोदबिनोदनथोरे॥नितनव
सुषसुरदेषिसिहाहीं॥अवधजनमजाचहिंबिधिपाहीं॥बिस्वामित्रचलन

न नित चहहीं॥ राम सप्रेम बिनै बस रहहीं॥ दिन दिन सदगुन भूपति भाऊ॥ दे
खि सराहि महामुनिराऊ॥ मागत बिदा राउ अनरागे॥ सुतन समेत ठाढ़ भ
ए आगे॥ नाथ सकल संपदा तुम्हारी॥ मै सेवक समेत सुत नारी॥ करब सदा
लरिकन पर छोहू॥ दर्सन देत रहब मुनि मोहू॥ अस कहि राउ सहित सु
त रानी॥ परेउ चर्न मुख आव न बानी॥ दीन असीस बिप्र बहु भांती॥ चले
न प्रीत रीत कहि जाती॥ राम सप्रेम संग सभ भाई॥ आइसु पाइ फिरे पहु
चाई॥ ३७६॥ दो॰॥ राम रूप भूपति भक्ति ब्याह उछाह अनंद॥ जात सराहत
मनहि मन मुदित गाधिकुलचंद॥ ३७७॥ चौ॥ बामदेव रघुकुल गुरु ग्यानी॥ ब
हुरि गाधिसुत कथा बखानी॥ सुनि मुनि सुजसु मनहि मन राऊ॥ बर्नत आ
पन पुन्य प्रभाऊ॥ बहुरे लोग रजाइसु भयो॥ सुतन समेत नृपति गृह ग
यो॥ जहं तहं राम ब्याहि सब गावा॥ सुजस पुनीत लोक तिहु छावा॥ आए ब्या
हि राम घर जब ते॥ बसे अनंद अवध सब तब ते॥ प्रभु ब्याह जस भयो
उछाहू॥ सके न बर्नि गिरा अहिनाहू॥ कबिकुल जीवन पावन जानी॥ ३७८॥
राम सीय जस मंगल खानी

सुनि गायक हैं। गहि सकैन्या धन्य अधिकारी सही॥ नित प्रीति प्रनु धम सुनि
त ह रिगुरा मग्नि ग्रनु तेल ही॥ रघुवीर पद नेह नाग तल लोमा ग्नि बेग बु

बा

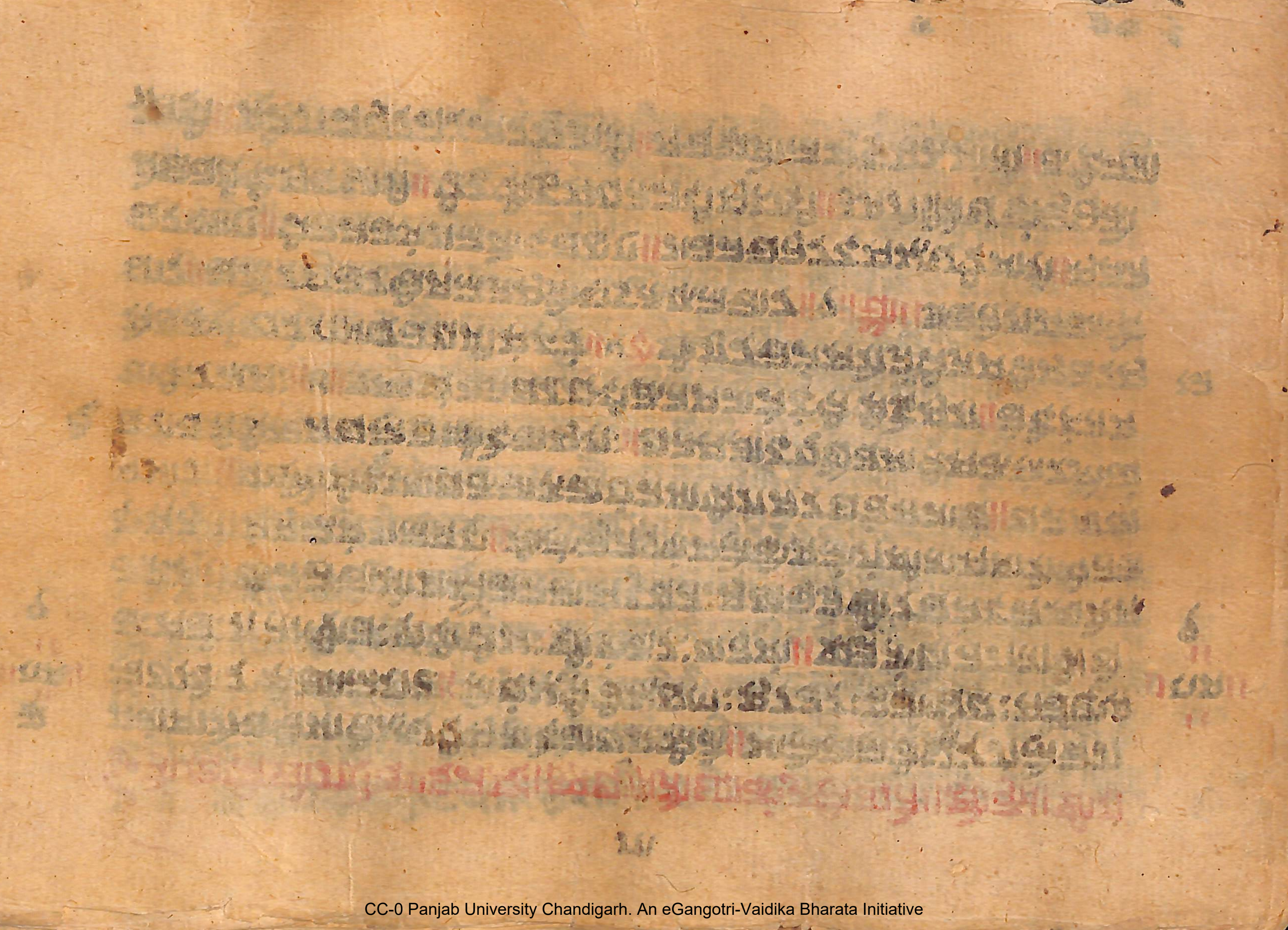
264

१५२

रामसीयजसमंगलखानी॥ तेहतेमैकछुकहबखानी॥ करनपुनीतहेत
निजबानी॥ ३५८॥ छंद॥ निजगीरापावनिकरनकारनरामजसतुलसीकहिवें॥ र
घुवीरचरीतअपारवारिधपारकविकौनेलहिवें॥ उपवीतव्याहउछाह
मंगलसुनिजेसादरगावही॥ वेदेहरामप्रसादजनिसर्वदासुखपावही॥
×३५९॥ सोरठा॥ वालचरतसतिभाउवरनौतुलसीदासहित॥ कहेसुनेसु
खपाउपरमपुनीतपवित्रमति॥ ३६०॥ सो॥ मङ्गलवरीसभोमनातिनिरम
लसुखश्रीवपुरी॥ तसंदेववियांमसोमनहिमावरनयकम॥ ३६१॥ दो॥
कहैसुनैसमकेसकलसप्रभुगुनगांन॥ सीतापतिरघुकुलतिलकमङ्गक
राहिकल्यांन॥ ३६२॥ सो॥ सीयारघुवीरव्याहिजेसप्रेमगावहिसुनै॥ तिनके
सदाउछाहिमंगलायतनरामजस॥ ३६३॥ छंद॥ सुनेगाइकहैसोनीसीसकेन्या
धंनअधिकारीसही॥ नितप्रीतकूतनसुनतहरगुनभगतिमनयमसैल
ही॥ रघुवीरपदसनरागजलतोअंगनेवैकुंठावही॥ याहिजानतुल
सीदासमनिकमबचननहरिगुनगावही॥ ३६४॥ इतिश्रीरामचरितेबालकंड
प्रथमोसोपानः॥ संपूर्णं शुभमस्तु॥ १॥ श्रीरामजीसति॥ राम॥ राम॥
त

वद्दे॥ राम य है जान तुल ॥१५२॥ सा दा समन कमब चनह रिगुरा गावहे

१) श्री लेमताबकोर
नहींगयाति ९)५ सेर फगराहैर८० ९)) ७॥ से
१) श्री लेनट्टूवजरी ३)) मरग २४५ ६ वस्स
०) श्री लेमताबकोर ९)५ चैत्रदे६ श्री लेरर॥वस्स
९) श्री लेलश्री जिवगदीलठकी६



A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 464 (Part -2) Subject Ramayana

Name of MSS Ramcharit Manas (Ayodhya Kand)

Author Tulsidas

Period ______ Folios 187

Script Devnagiri Source Kapoor, Jalandhar City

Missing Folios ______

ग्रा

॥श्री॥ ॥राम॥ १

६॥ ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः॥अथअयोध्याकांडलिख्यते॥श्लोक॥श्रीरा
मवामांगेचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके॥भालेबालविधुर्गलेचग
लंयस्योरसिव्यालराट॥सोयंभूतिविभूषणःसुरवरःसर्वाधिपःसर्वदास
र्वःसर्वगतःशिवःशशिनिभःश्रीशंकरःपातुमां॥प्रसन्नतांयानगताभिषे
कतस्तथाननम्लानस्मेवनवासदुखतः मुखांबुजेश्रीरघुनंदनस्यमेस
दास्तुसामंजुलमंगलप्रदः॥नीलांबुजश्यामलकोमलांगंसीतासमारोपितवा
मभागं॥पाणौमहासायकचारुचापंनमामिरामंरघुवंसनाथं॥यन्माया
२ वशवर्तिविश्वमखिलंब्रह्मादिदेवासुराः॥यत्सत्वादमृषैवभातिसकलंरज्जौय
थाहेर्भ्रमः॥४॥यत्पादांबुजवरपदीकृतमनानंदंतिकेदेसुराः॥वंदेहंतम
सेषकारणपरंरामाख्यमीसंहरिं॥५॥दो॥श्रीगुरचरनसरोजरजनिजमनमकरस
धार॥वर्नौरघुबरबिमलजसुजोदाइकफलचार॥१॥चौ॥जबतेरामब्याहि
घरआए॥नितनवमंगलमोदबधाए॥भुवनचतुरदसभूधरभारी॥सुकृत
मेघवर्षहिंसुखवारी॥रिद्धसिद्धसंपतनदीसुहाई॥उमगिअवधअंबुधिको
आई॥मनिगनपुरनरनारसुजाती॥सुचअमोलसुंदरसबभांती॥कहिनजा

॥राम॥ १

रज

इकछु नगर रवि मूरती॥ जन बिरंच इत नीक रतूती॥ सम मँहि सम भवर लोक सु
खरी॥ राम चंद्र मुख चंद निहारी॥ मुदित भए तब समस सब मिहेली॥ फलत चित लोक
मनोरथ बेली॥ राम रूप गुण सील सुभाऊ॥ प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ॥ ३॥ दो॥
सब के मन अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेस॥ आप अछत जुबराज पद
रामहि देउ नरेस॥ ३॥ चौ॥ एक बार जानकी समेता॥ बैठे प्रभु निज सदन निके
ता॥ भुज पर लंब उर नैन बिशाला॥ पीत बसन तन नव श्याम तमाला॥ कोटि मनो
ज देखि छबि मोहा॥ सीता कर चामर वर सोहा॥ तेहि अवसर रिषि नारद आ
ए॥ सरहित लागी बिरंच पठाए॥ तेज पुंज तन कर तल बीनां॥ हरि गुन गान
गावत लैलीना॥ देखि राम सह साउठ धाए॥ करि दंडवत सहित बैठाए॥ साद
र निज आसन बैठारे॥ जनकसुता तव चरन पखारे॥ तेहि चरनोदक भवन सींच
वा॥ जग पावन हरि सीस चढ़ावा॥ सनि मुनि बिबिध बरत जो प्रानी॥ सम ममत बेद
हि अभिमानी॥ तिन के मत संगी तित ब्रह्म हेठी॥ करउ कृपा जो को प्रभु सो सी॥ तौ के
मुनि नाहि न भव मागे॥ जेहि बिन है त संत प्रिय लागे॥ तो ते नारद मैं बउ
मागी॥ यद्यपि गत संकट बहु अनुरागी॥ ४॥ दो॥ मुनि हरि बचन मधुर प्रिय

क

३

करि बिचार मन धीर ॥ रामकृपा तन्ह सब लोकहि तत्याहि कहत रघुबीर ॥ ५ ॥

चौ॥ कहहिं मुनि तब मम हित मोर रघुराया ॥ मैं जानौं कछु तुम्ह पै दाया ॥ बचन की

जे प्राकृत कीन्ह्यों सोही ॥ तातें नहिं कछु घरे जोग सांही ॥ प्रभु बानी तुम्ह मैं सब

न ग्रासी ॥ निज लघुता जन की बड़ भागी ॥ मोहि जस सुभाउ प्रान अनुरागी ॥ न

रतन धरी उर भगति तहि तल लागी ॥ माया गुन सों ज्ञान अतीता ॥ अजित नाम सो

दास न जीता ॥ जिन्ह सम प्रभु जग तैसे कोउ नाही ॥ ब्यापक ब्रह्म जस मान न सम भमा

ही ॥ उदर चराचर मैं लखउँ सोवा ॥ ग्रस्यन पान न लागि सो रोवा ॥ नाम रूप ब

ृ एक न न भेदा ॥ गति अगति मन नेति कहहिं बेदा ॥ निर्मल मति बैराग्य जोगी

दसरथ सत कहहिं गावहिं सोही ॥ तप जप जोग जग्य ब्रत दाना ॥ बिमल बिराग

ज्ञान बिज्ञाना ॥ करत जतन मम पावत केऊ ॥ देखि प्रगट भक्ति बस सोऊ ॥

हठ बस सठ साधन बहु करहीं ॥ भक्ति हीन भव सिंधु न तरहीं ॥ दो॥ जा

न सकहु ते जान हीं निर्गुन सगुन सरूप ॥ मम हृदै कंज भृंग इम बस

हि राम नर भूप ॥ ७ ॥ चौ॥ ब्रह्म भवन महि हिरदै राखि जोग गुपाला ॥ गावत तत्व ग

ुन हीन ब्याला ॥ ग्रस इच्छा उपजी मन माही ॥ देख उचर न बहुत दिन तोही ॥

आके २ राम २ कृपाला जा

जदपपप्रभुसर्बज्ञसमाना॥ सँनरूपमोरेमनमाना॥ गवधचलतद्वि
रंचमगुहिजाना॥ केनीविनयलागममम [illegible] काजा प्रभुजानेतसभिअं
तरजामी॥ महीपचछबिनतीइउस्वांमी॥ जेहहितलीनमनुजअवतारा॥
नाथबेगसोइकरीयेसंभारा॥ सुनतबचनरघुपतिमुसकाने॥ मुनिश्र
जकुविरंचभयमाने॥ कहहुतातक्लसमुझी॥ कछुदिनबीनेदेषउश्या
ही॥ बारबारचरननसिरनाई॥ ब्रह्मानंदनदीदेसमाई॥ रामरूपउरधर
मुनिनारद॥ चलेकर्तगुनगानबिसारद॥ तबरघुपतिसीतासमुझावा॥ चरह
तकरनसोंचिरितसुनावा॥ सरहितलापीकरीयैसोउपाही॥ जायेबनप
रहरठकुराई॥ ५॥ दो॥ जगसंभवकर्मसितितलोकरेजाकीभकटबिलास॥ सोप्र
भुजतबिचारतेकेहिबिधनिशाचरनास॥ ६॥ चौ॥ एकसमेसभसहितसमाजा
राजसभारघुबीरबिराजा॥ सकलसुकृतिमूर्तिनरनाहू॥ रामसुजससुनिश्र
तिहिउछाहू॥ नृपसमुरहिंहिसापाम्रभिलाषी॥ लोकपकरहिप्रीतसबराषी॥ ३
भवनतीनकालजगमाही॥ भरभागदसर्पसमनाही॥ मंगलमूलराम
सुतजासू॥ जोकछुकहिहिथोरसमतासू॥ राइसुभाइमुकरबकरीलीना॥ बद

२ लागा श्रवन जन कहत बुझाई राम हि राज देहु किन जाई

गम जुब २

न बिलोकि मकुट सम कीना॥ श्रवन समीप भए शित केसा॥ मनहु जठर मैसँ (पन अस)
यह उपदेसा॥ नृप जुबराज राम कौं देहू॥ जीवन जनम लाहु किन लेहू॥ यह
मोदस ... विचसुभाय॥ ... ॥१॥ दो॥ इह बिचा
र उर राव न पसु दिन अवसर पाइ॥ प्रेम पुलक तन मुदित मन गुरहि सुना
यो जाइ॥११॥ चौ॥ कहै भुपाल सुनो मुनि नायक॥ भए राम सब विधि सब ला
यक॥ सेवक सचिव सकल पुरवासी जे हमरे अर मित्र उदासी॥ सबहि राम प्रि
य जेहि मोही॥ प्रभु असीस जन तन धरि सोही॥ विप्र सहित परिवार गुसांई॥
करहिं छोह सम रौरहि नाही॥ जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं॥ ते जन सकल
विभउ वस करहीं॥ मोहि सम ... अनभएउ न दूजे॥ सम पाऊर जिपाइन पूजे
गुन सागर नागर श्रुति गए॥ बड़े भाग मोरे गृह आए॥ जेठो राम जगत
हितकारी॥ सकल सराहत पुर नर नारी॥ अब अभिलाष एक मन मोरे॥
पूजऊ नाथ अनुग्रह तोरे॥ मुनि प्रसन्न लख सहज सनेहू॥ कहि ते नरेस
रजायसु देहू॥ १२॥ दो॥ राजन राउर नाम जस सब अभिमत दातारि॥ फ
ल अनगामी महिप मनि मन अभिलाष तुमारि॥ १३॥ चौ॥ सब विधि गुर

पन अस / अउपदेसा — न — 5 — राम २ — विध — हि

प्रसनजीयजानी॥ बोलेराउरहसिमृदबानी॥ नाथरामकरीयेजुबराजू॥ कहियकृ
पाकरिकरवसमाजू॥ मोहिअछतयहहोइउछाहू॥ लहहिलोकसबलोचनलाहू
प्रभुप्रसादशिवसमहिनिबाही॥ यहलालसाइकमनमाही॥ पुनिनसोचतनः
रहेकिजाऊ॥ जेहिनहोइपाछेपछताऊ॥ मर्थराइसनम्राइसमांगी॥ पछमग
एमातै[illegible]लागी॥ करऊविचारनलावऊबारा॥ जबमुनिभायनैचउथहमा
रा॥ सुनिमुनिदसर्थबचनसुहाए॥ मंगलमूलमोदमनभाए॥ सुनिनृपजा
सुविमुषपछुताही॥ जासभजनबिनुजरनिनजाही॥ भयोतुमारतनीसोस्वा
मी॥ रामपुनीतप्रेमअनगामी॥ १४॥ दो॥ बेगबिलंबनकरीएनृपसाजीयेसभेस
माज॥ सुदिनसमंगलतबहिजबरामहोइजुबराज॥ १५॥ चौ॥ मुदितमहीपति
मंदिरिआए॥ सेवकसचिवसमंत्रबुलाए॥ कहिजयजीवसीसतिननाए॥ भूप
सुमंगलबचनसुनाए॥ प्रमुदितमोहिकहिउगुरआज॥ रामहिराजदेऊजु
वराज॥ जोपंचहिमततलागेनीका॥ करऊहरषहीयेरामहिटीका॥ मंत्रीमुदित
सुनतिप्रियबानी॥ अभिमतविरवपराजनुपानी॥ विनतीकरहिसचिवकरि
जोरी॥ जीयऊजगतपतिवर्सकरोरी॥ जगमंगलभलकाजविचारा॥ बेगहि

नाथनलायेबारा॥ नृपहिमोदसुनिसचिवसुभाषा॥ बढतबौंडजनुलहिसुडो
समाखा॥१६॥ दो॥ कहिउभूपमुनिराजकरजोइजोइआइसुहोइ॥ राम
राजअभिषेककहुबेगिकरोसोइसोइ॥१७॥ चौ॥ हरषिमुनीसकहेमृदुबा
नी॥ आनहुसकलसुतीरथपानी॥ औषधमूलफूलफलपाना॥ कहेनामु
गनमंगलनाना॥ चांमरचमरबसनबहुभांती॥ रोमपाटपटअगनि
तजाती॥ मनिगनमंगलबसतुअनेका॥ जेजगजोगभूपअभिषेका॥ बेद
बिदितकहिसकलबिधाना॥ कहिउरचहुपुरबिबिधबिताना॥ सफलर
सालपूंगफलकेरा॥ रोपहुबीथनपुरचहुंफेरा॥ रचहुमंजुमनिचउकाँ
चारू॥ कहहुबनावनबेगबजारू॥ पूजहुगनपतिगुरकुलदेवा॥ सब
बिधकरहुभूमिसुरसेवा॥१८॥ दो॥ ध्वजपताकतोरनकलससजहुतुरगि
रथनाग॥ सिरधरिमुनिबरबचनसबनिजनिजकाजहिलागि॥१९॥ चौ॥
सनिमुमेतमनप्रतिहरखाना॥ जीवनजनमसफलकरिमाना॥ जहतहँ
धावनकोटिपठाए॥ मंगलद्रुबसकललेआए॥ कनककलससमजेध
त्रितोदारे॥ गजरथतुरगनेकसवारे॥ बहुबिधबांधेबंदनवारा॥

रा ४

या 7 राम ४ का

धुजपताकपटबसनअपारा ॥ ~~[illegible]~~ ४
~~[illegible]~~ ॥ बरनानगरकछुवरनेनजाई ॥ सकलतो
कसोंपुर ... ॥ जोमुनीसजेहिआइसदीना ॥ सोतेहिकालप्रथमजनुकीना ॥ मुनीम छाई
नइकाकरनेनपावा ॥ सोसमंतेपरदेलेलेआवा ॥ विप्रसाधसुरपूजतराजा ॥ करतरा
महितमंगलकाजा ॥ सुनतरामअभिषेकसुहावा ॥ बाजेगहगहअवधवधावा ॥
रामसीयतनसगुनजनाए ॥ फरकहिंमंगलअंगसुहाए ॥ पुलकसप्रेमपरसपरक
हहीं ॥ भरथआगमनसूचकअहहीं ॥ भएबहुतदिनअतिअवसेरी ॥ सगुनप्र
तो तीतिभेटप्रियाकेरी ॥ भरतसरसप्रियकोजगमाहीं ॥ इहैसगुनफलदूसरनाहीं ॥
रामहिबंधुसोचदिनराती ॥ अंडकमठहृदैजेहिभाती ॥ दो० ॥ इहसमवसरमं
गलपरमसुनिरहसेउरनिवास ॥ सोभतलखिबिधिबढतजनुवारिधिबीचविलास ॥
स रानी ॥ प्रथमजाइजिन्हबचनसुनाए ॥ भूषनबसनभूरितिनपाए ॥ प्रेमपुलकतनमन
वचन अनुरागी ॥ मंगलकलससजनसबलागी ॥ चौकेचारुसुमित्रापूरी ॥ मनिमयबिबि
बधभांतिअतिरूरी ॥ आनंदमगनराममहतारी ॥ दीएदानबहुबिप्रहकारी ॥
पूजींग्रामदेवसुरनागा ॥ कहेउबहोरिदेनबलिभागा ॥ वारीवारीगणपतिदि

१

निहोरा॥ कीजै सकल मनोर्थ मोरा भयउ हदे प्रभु प्रेर कुजाई॥ मति हट ठहेइ जो
जीयत मरहि गाड़ी॥ जो कछु इछा हदै मन माही सो पुर होइ आन कछु नाही॥ जे
हि बिधि होइ राम कल्याना॥ देउ दया करि सो बरदाना॥ गावहि मंगल कोकल
बैनी॥ बिधु बदनी म्रग सावक नैनी॥ २४॥ दो॥ राम राज अभिषेक सुनि हीये हर्ष
नर नारि॥ लगै सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि॥ २३॥ चौ॥ तब नर
नाह बशिष्ट बुलाए॥ राम धाम सिष देन पठाए॥ गुर आगमन सुनत रघु
नाथा॥ द्वार आइ पग नायो माथा॥ सादर अर्घ देइ घर आने॥ सोरह भां
ति पूज सनमाने॥ गहे चर्न सीया सहित बहोरी॥ बोले राम कमल कर जोरी॥ से
वक सदन स्वामि आगमनु॥ मंगल मूल अमंगल दमनु॥ तदपि उचित जन
बोलि सप्रीती॥ पठे ऐक काज नाथ अस रीती॥ प्रभुता तजि प्रभु कीन सनेहु॥ भ
यो पुनीत आजु यहु गेहु॥ आयसु होइ सु करौं गुसांई॥ सेवक लहहि स्वामि सेव
काई॥ २४॥ सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस॥ राम कस न तुम्ह कहहु अस
हंस बंस अवतंस॥ २५॥ चौ॥ बरनि राम गुन सील सुभाऊ॥ बोले प्रे
म पुलकि मुनिराऊ॥ भूप सजेउ अभिषेक समाजु॥ चाहत तुम्है देन जुबरा

ग ५ स सेव भ्रम टों० — राम ५ — र

जू॥ रामकरहुसबसंजमआजू॥ जोविधकुसलनिवाहैकाजू॥ गुरसिषदेइरा
उपहिंगयो॥ रामहृदैअसविसमैभयो॥ जनमेएकसंगसबभाई॥ भोजनसैनके
लिलरकाई॥ करनबेधउपवीतबिवाहू॥ संगसंगसबभयोउछाहू॥ बिमलबं
सइहअनुचितएकू॥ बंधबिहाइबडेहिअभिषेकू॥ प्रभुसप्रेमपछतानिसुहाई
हरउभक्तमनकैकुटलाई॥२६॥ दो॥ तेहिअवसरआएलषनमगनप्रेम
आनंद॥ सनमानेप्रियबचनरघुवरकुलकैरवचंद॥२७॥ चौ॥ बाजहिंबा
जनविविधविधाना॥ पुरप्रमोदनहिजाइबषाना॥ भरथआगमनसगल
मनावहिं॥ आवहिंवेगनैनफलपावहिं॥ हाटबाटघरगलीअथाँई॥ कहहिं
परसपरलोगलुगाई॥ कालिलगनभलकेतिकबारा॥ पूजहिविधिअभिला
षहमारा॥ कनकसिंघासनसीयासमेता॥ बैठहिरामहोहिचितचेता॥ सक
लकहहिंकबहोइहकाली॥ विघनमनावहिंदेवकुचाली॥ तिनहिसुहाइनअ
वधबधावा॥ चोरहिचांदनरातिनभावा॥ सारदबोलिविनयसरकरहीं॥
वारहिवारपाइलेपरहीं॥२८॥ दो॥ विपतिहमारविलोकसनिमातकरएसोइ
आज॥ रामजांहिबनराजतजिहोइसकलसरकाज॥२९॥ चौ॥ सुनिसरविनैठाढि
पछुताती॥ भईसरोजविपनहिमराती॥ देषदेवपुनिकहहिंनिहोरी॥ मातता

10

वडे

के

था

लि

रतनहि थोरउ खोरी ॥ बिसमय हरष रहत रघुराऊ ॥ तुम जानहु सब राम प्रभा-
ऊ ॥ जीव करम बस सुख दुख भागी ॥ जाइअ अवध देव हित लागी ॥ बार बार गहि
चरन सकोची ॥ चली बिचारि बिबुध मति पोची ॥ ऊंच निवास नीच करतूती ॥ देखि
न सकै पराइ बिभूती ॥ आगल काज बिचार बहोरी ॥ करहि चाह कुसल कब
मोरी ॥ हर्ष हृदे दसर्थ पुर आई ॥ जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई ॥ दो॰ नाम मंथरा
मंद मति चेरी कैकई केर ॥ अजस पिटारी तासु करि गई गिरा मति फेर ॥ १२ ॥ चौ॰ ॥
देखि मंथरा नगर बनावा ॥ मंगल मंजुल बाजै बधावा ॥ पूछसि लोकन काह
उछाहू ॥ राम तिलक सुनि भा उर दाहू ॥ करै बिचार कुबुधि कुजाती ॥ होइ अ-
काज कवन बिधि राती ॥ देखि लाग मधु कुटिल किराती ॥ जिम गवं तकै लेउं के-
हि भांती ॥ भरत मात पहि गई बिलखानी ॥ का अनमन हसि कह हसि रानी ॥ उतर
देइ न लेइ उसासू ॥ नारि चरित करि ढारै आंसू ॥ हसि कह रानि गाल बड़
तोरे ॥ दीन लखन सिख अस मन मोरे ॥ तबहि न बोल चेरि बड़ि पापन ॥ छो-
डै स्वास कारि जनु सांपन ॥ दो॰ सभय रानि कहि कहसि किन कुसल राम म-
हिपाल ॥ लखन भरत रिपुदमन सुनि भा कुबरि हिअ साल ॥ १३ ॥ चौ॰ ॥ कस सो बेता॰
सहज भाय अभिमानी ॥ निकट महा भय तनु न दुरानी ॥ कत सिख दे हमहि कोमाई ॥

जनेस

गालकरबकिहिकरबलपाई॥रामहिछाडिकुसलकिहआजू॥जाऊँनरेसदे
ऊँजुबराजू॥भयोकौशलहिबिधिअतिदाहिन॥देषतगरबरहितउरनाहिन
देषहुकसनजाइसबसोभा॥जौंअवलोकमोरमनछोभा॥पूतबिदेसनसोच
तुमारे॥जानतहेवसनाहहमारे॥नींदबहुतप्रियसेजतुराई॥लषहुनभूप
कपटचतुराई॥सुनिप्रियबचनमलिनमनजानी॥झुकीरानिअबरहिअरगा
नी॥पुनिअसकबहूंकहिसघरफोरी॥तबधरजीभकढावौंतोरी॥३४॥दो॥काने
षोरेकूबरेकुटलकुचालीजानि॥तियबिशेषपुनिचेरकहिभरतमातमुसक
न॥३५॥चौ॥प्रियवादिनसिषदीनोंतोंही॥सपनेतोपरकोपनमोही॥सुदिनसुमं
गलदाइकसोई॥तोरकहाफुरजिहिदिनहोई॥जेठस्वामिसेवकलघुभाई॥याहि
नकरकुलरीतसुहाई॥रामतिलकजौंसांचेकाली॥देवोमागमनभावतआ
ली॥कौशल्यासमसबमहतारी॥रामहिसहजसुभाइप्यारी॥मोपरकरहि
सनेहविशेषी॥मैंकरप्रीतपरीछादेषी॥जोबिधजनमदेहकरिछोहू॥होइ
रामसीयपूतपतोहू॥प्रानतेंअधिकरामप्रियमोरे॥तिनकेतिलकछोभकस
तोरे॥प्रतिप्रियबचनसुनाएमोही॥कहुमंथरादेउकातोही॥३६॥दो॥भर्थसप

अरगा

राम रा २ ह

13 राम २ रू

तेतुहिसतिकहुपरिहरहुकपटदुराउ॥ हर्षसमैविसमैकरसिकार्नमोहिसुनाउ
॥३७॥ चौ॥ सुनतबचनमंथरारसानी॥ बोलीबचनकपटछलसानी॥ एकहि
बारआससबपूजी॥ अबकछुकहबजीभकरिदूजी॥ फोरैजोगकपारअ
भागै॥ भलेकहतदुखरौरेहिलागे॥ कहहिंझूठफुरिबातबनाई॥ तेप्रियतु
म्हहिकरुवमैमाई॥ हमहिकहबअबठकुरसुहाती॥ नाहितमौनरहब
दिनराती॥ करकुरूपविधिपरबसकीना॥ बोवासोलुनियेलहैजोदीना॥ को
नृपहोइहमहिकाहानी॥ चेरछाडिअबहोउकिरानी॥ जारैजोगसुभाउ
हमारा॥ अनभलदेखिनजाइतुमारा॥ तातेकछुकबातअनुसारी॥ छमो
देवबडचूकहमारी॥ ३८॥ दो॥ गूढकपटप्रियबचनसुनितीयअधरबुध
रानि॥ सुरमायाबसचेरहितहसुहृदजानपतिआनि॥ ३९॥ चौ॥ सादरपुनि
पुनिपूछतओही॥ सबरीगाननृगीजनमोही॥ तसमतिफिरीइहैजसभावी॥
रहसीचेरिघातजनफावी॥ तुमपूछहुमैकहतडराऊं॥ धरउमोरघरफो
रैनाऊं॥ तसप्रतीतबहुविधगढछोली॥ अवधसाढसातीतबबोली॥
प्रियसीयारामकहततुमरानी॥ रामैतमप्रियासोफुरबानी॥ रहाप्रथम

४५

14

जावते दिन बीते ॥ समय पाय फेरे रिपु होंहि प्रीते ॥ भानु कमल कुल पोषन हारा ॥ बिन
जल जार करे सोई छारा ॥ जरु तुम्हार चह सौति उषारी ॥ रुंधहु करि उपाउ बर बा
री ॥ १४ ॥ दो० ॥ तुमहि न सोच सुहाग बल निज बस जानहु राउ ॥ मन मलीन मुह मी
ठ नृप राउर सरल सुभाउ ॥ १४ ॥ चौ० ॥ चतुर गभीर राम महतारी ॥ बीच पाइ नि
ज बात सवारी ॥ पठए भरथ भूप ननिऔरे ॥ राम मातु मत जानव रौरे ॥ सेवहि सक
ल सौत मुहि नीके ॥ गरबित भरत मातु बल पी के ॥ सालु तुम्हार कौसलहि माई ॥
कपट चतुर नहि होइ जनाई ॥ राजहि तुम्ह पर प्रेम बिसेषी ॥ सौत सुभाउ सकइ नहि
नहि देखी ॥ रचि प्रपंच भूपति अपनाई ॥ राम तिलक हित लगन धराई ॥ यह कु
ल उचित राम कहु टीका ॥ सबहि सुहाइ मोहि सुठि नीका ॥ आगिल बात समुझि डर मो
हि ॥ देउ दैउ फिरि सो फल ओही ॥ १५ ॥ दो० ॥ रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट
प्रबोध ॥ कहिसि कथा सत सौति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोध ॥ १६ ॥ चौ० ॥ भावी बस प्र
तीति उर आई ॥ पूछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥ का पूछहु तुम अबहु न जाना ॥ निज हित अ
नहित पसु पहिचाना ॥ भयो पाख दिन सजत समाजू ॥ तुम पाई सुधि मोसुन
आजू ॥ जो असत्य कछु कहब बनाई ॥ तौ बिधि देइहि हमहि सजाई ॥ याये पहिरी

15

येराजतुमारै॥ सतनकहेनहिंदोषहमारे॥ रामहितिलककाल्हजोभयो॥ तुमको
बिपतिबीजबिधिबौयो॥ रेषषचाइकहौंबलमाषी॥ भावनभयोदूधकैमाषी॥ जो
सतसहितकरोगीसेवकाई॥ तउघररहौनअनउपाई॥४४॥ दो॥ कद्रूबिनत
हिदीनदुषतुमहिकौशल्लदेव॥ भरतबंदगृहसेवहैंलषनरामकेनेव॥
४५॥ चौ॥ कैकयीसुतासुनतकटुबानी॥ कहिनसकैकछुसहमसुषानी॥ तन
प्रस्वेदकदलीजिमकांपी॥ कुबरीदसनजीभतबचांपी॥ कहिकहिकोटककप
टकहानी॥ धीरजधरउप्रबोधसरानी॥ कीनूसकठिनपठइकुपाठु॥ जिम
ननवैपुस्योकठकाठू॥ बचनसुनततनतसैभैमानी॥ दुषसंपीतेमतिबउ
रानी॥ धर्मनिरतगुनग्यानगंभीरा॥ दुषसंगीमतिरहेनधीरा॥ फिराकर्म
प्रियालागीकुचाली॥ बकहिसराहैमानमराली॥ सुनमंथराबातफुरितोरी॥
दहिनआंषनितफरकतमोरी॥ दिनप्रतिदेषउंरातकुसपने॥ कहेनतोहि
मोहिबसिअपने॥ कहकरहैंसषिसुधसुभाऊ॥ दाहिनबामनजानोकाऊ॥
४६॥ दो॥ अपनेचलतनअजौंलगिअनभलकाहूनकीन॥ केहिअघएकहि
बारमुहिदइदुसहिदुषदीन॥४७॥ चौ॥ एकैहिजनममरबबरुजाई॥ जी

नैहर

फिरस्यो

श्री

मतिनकरौंसउतसेवकाई॥जरैबसिदरुजैंबुतजाई॥मनरनमलातिहजी
वतचाही॥दीनबचनकहिविक्रइबिधरानी॥सनिकुबरीधेयमायाठानी॥जस
कसकहोंमानमनऊना॥सबसमरागातमकेंदिनदूना॥जहिराउरिमतिमन
मलताका॥सोईपाइयहफलपरपाका॥जवतेकुमतिसुनामैंस्वामिन॥मकन
बसरनीदनजामिन॥प्रकोगुननरेबतिनषांची॥मरथमप्यालहिइहसां
ची॥मामनकरोतुकहोंउपाऊ॥हेतमारसेवाबसिराऊ॥४८॥दो॥परोंकेपतम
बचनपरिसकेंप्रतपतितागा॥कहिमोरदुखदेखिबरुकमनकरवहितला
गा॥४८॥चौ॥कुवरीकरैकुटलकेकेई॥कपटछुरीउरपाहनदेई॥लखैनरा
ननिकटदुखकैसे॥चरैहरेत्रिणवलपसुजैसे॥सुनतबातमदमतिकठोरी
देतमनहुमधमधुरघोरी॥देवरिहानमनपसनघाती॥मांगैंमाजजहुडार्वैथा
ती॥कहेतमैसुधम्महैकिनाही॥स्वामिनकहोंकथामुहिपाही॥सतहिराजराम
हिवनबासू॥देहुलेसुमसपतहुलपासू॥भूपतिरामसपतजबकरैशी॥तबमो
गाहुजेहबचननहरशी॥हेइगमकाजआजजिसबीते॥बचनमोरपुरमान
हुजीते॥५॥दो॥बड़कुबातकरिपातकनकहिसकेपगरहजाउ॥काजसवार

16

६

रा ५ राम

ऊसज जाँ सभ सह समाज नियतो माऊ ॥ ५१ ॥ चौ ॥ कुंवर हिं रानि प्रान सम जानी ॥
बार बार बड बुधि बखानी ॥ तुम्ह सम हित न मोर संसारा ॥ बहे जात कै भई
सुधारा ॥ जो बिधि पुरव मनोरथ काली ॥ करौं तोहि चखु पूतरी आली ॥ बहु बिध
चेरि हि आदर देई ॥ केय भवन गवनी कैकेई ॥ बिपति बीज वर्षा रितु चेरी ॥
भूइ भई कुमति कैकेई केरी ॥ पाइ कपट जल अंकुर जामा ॥ बिटप दोउ दल फ
ल दुखप रिनामा ॥ केय समाजु साजि सभ सोई ॥ राज करत निज कुमति बिगो
ई ॥ राउ नगर कुलाहल होई ॥ यह कुचाल कछु जानन कोई ॥ ५२ ॥ प्रमुदित
पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगल चारि ॥ इक प्रविसहिं इक निर्गमहिं भीर भू
प दरबार ॥ ५३ ॥ चौ ॥ बाल सखा सुनि हियै हर्षा ही ॥ मिलि दस पाँच राम पहि
जाँही ॥ प्रभु आदर हिं प्रेम पहिचानी ॥ पूछहि कुसल छेम मृदु बानी ॥ फिरहि
भवन प्रिय आइसु पाई ॥ करत परसपर राम बड़ाई ॥ को रघुबीर सरिस संसा
रा ॥ सील सनेह निबाहन हारा ॥ जेहि जेहि जोनि करम बस भ्रमहीं ॥ तहँ तहँ
ईस देउ यह हमहीं ॥ सेवक हम स्वामी सिय नाहू ॥ होइ नात यह ओर निबा
हू ॥ अस अभिलाष नगर सब काहू ॥ कैकेई सुत हृदै अति दाहू ॥ को

राम ५ च

17

नकुसंगतिपाइनसाधी॥रहैनबीचमतेचतुराशी॥५४॥दो॥सांझसमयसानं
दनृपगएकैकेईगेह॥गवननिठरतानिकटकीयाजनुधरिदेहसनेह॥५५॥
चौ॥कोपभवनसुनिसकुचेउराऊ॥भेवसअगहुडपरेनपाऊ॥सुरपतिबसैबाहुब
लजाकी॥नरपतिसकलरहहिरुषताकी॥सोसुनितीयारिसगयोसुषाई॥
देषहुकामप्रतापबडाई॥सूलकुलसअसअंगवनिहारे॥तेरतिनाथसुमनसर
मारे॥सभैनरेसप्रियापहिगयो॥देषदशादारनदुषभयो॥भूमिसयनपटमोट
पुराना॥दिएडारितनभूषननाना॥कुमतिहिकसिकुबेषताफबी॥अनअहि
वातसूचजनभावी॥जाइनिकटनृपकहमृदबानी॥प्रानप्रियाकिहहेतरिसा
नी॥छं॥केहिहेतरानिरिसानपरसतपानपतिहिनिवारीये॥मानहुसरो
षभुअंगभामिनिविषमभांतिनिहारीये॥दोउवासनारसनादसनवरमरमठा
हरदेषीये॥तुलसीनृपतिभवतबतावसकामकौतकपेषीये॥५७॥सो॥बार
बारकहिराउसुमुषिसुलोचनपिकबचन॥कारनमोहिसुनाउगजगामिननिज
कोपकर॥५८॥चौ॥अनहितेतोरप्रियाकिहकीना॥कहिदोसिरकिहजमचहलीना॥
कहुकिहरंककरिकरोंनरेसू॥कहुकिहनृपहिनिकासोदेसू॥सकेंतोरअरिअम

रोमारी॥ कहु कीरबपुरे नरनारी॥ जानसमोर सभाउ बरोरी॥ मन तव आनन
चंद चकोरी॥ प्रिया प्रान सुत सर्बस मोरे॥ परजन परजा सकल बस तोरे॥ जो
कछु कहों कपट करि तोही॥ भामिन राम सपत सत मोही॥ बिहसि मांगु मन भा
वत बाता॥ भूषन सजहु मनोहर गाता॥ घरी कुघरी समझ जीया देषु॥ बे
गि प्रिया परहरहु कुबेषु॥ ५८॥ दो॥ यहि सुनि मन गुन सपथ बडि बिहसि उठी
मतिमंद॥ भूषन सजत बिलोका म्रिग मनहु किरातिन फंद॥ ६०॥ चौ॥ पुनि कहि
राउ सुह्रिद जीया जानी॥ प्रेम पुलक म्रिद मंजुल बानी॥ भामिन भयो तोर मन भावा॥
घर घर नगर अनंद बधावा॥ रामहि देउ कालि जुवराजू॥ सजोसुलोचनि मंगल साजु॥ दलकि उठो सुनि ह्रिद
कठोरा॥ जनु छुवगयो पाक बरतोरा॥ ऐसो पीर बिहसि तिन गोई॥ चोर नारि
जिम प्रगट न रोई॥ लषी न भूप कपट चतुराई॥ कोटि कुटिल मति गुरू पढा
ई॥ जदपि नीत निपुन नरनाहू॥ नारचरित्र जलनिधि अवगाहू॥ कपट सने
ह बढाइ बहोरी॥ बोली बिहसि नेन मुह मोरी॥ ६१॥ दो॥ मांग मांग पै कहि पीया
कबहु देहु न लेहु॥ देन कहे बरिदान दुइ तेउ पावत संदेहु॥ ६२॥ चौ॥ देहु त
जीव तज हुन तप्राना॥ बचन सुनत भूपति मुसकाना॥ जानि ओ मरमन

भो

राउ हसि कहि है॥ तुम्ह तै कउन पर मोहि प्याराहि है॥ थाती राखन मागो काहू॥ बिसर गया
मोहि भोर सुभाऊ॥ झूठे हू हमहि दोष जिन दीजै॥ दो के चार मांग किन लीजै॥ रघु
कुल रीत सदा चल आई॥ प्रान जाइ बरु बचन न जाई॥ नहि असत्य सम पात
क पुंजा॥ गीर सम होइ कि कोटक गुंजा॥ सत्यमूल सब सुकृत सुहाए॥ वेद पु
रान विदत मनु गाए॥ तेहि पर राम सपत करि आई॥ सुकृत सनेह अवध र
घुराई॥ बात दृढाइ कुमति हसि बोली॥ कुमत कुबिहंग कुलह जनि खोली॥ २३॥ दो
भूप मनोरथ सुभग बन सुख सुबिहंग समाज॥ भिलन जिमि छाडन चहत ब
चन भयंकर बाज॥ २४॥ चौ॥ सुनहु नाथ मन भावत जी कौ॥ देहु एक बर भर
थहि टीका॥ मांगउ दूसर बर कर जोरी॥ पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी॥ तापस बेष
बिसेष उदासी॥ चउदह वर्ष राम बन बासी॥ सुनि करि बचन भूप हिये सोकु॥ सस
करि छुहैं बिकल जिम कोकु॥ गयो सहमि मन नहि कछु कहि आवा॥ जनु सचान बनी

छुहित

झपटेउ लावा॥ संभ्रम मम रघुपति डोलन कै से॥ कटै पंख परे खग जैसे॥ बिव
रन भयो निपट नरपालू॥ दामिनि हन्यो मनहु तरु तालू॥ अति व्याकुल तन वि
गलत कैसा॥ करि धीरज पुनि उठि डोन रेसा॥ जागे सो सांपनि जिम मठा टी॥ पुनि

21

पुनिसासिलेतजनतिकँठी॥ माथेहाथमूददोऊलोचन॥ तनधरसोचुलागज
राम नुसोचन॥ मोरमनोर्थसुरतरफूला॥ फर्तकर्नजनहत्योसमूला॥ अउध राम
उजारकीनकैकेई॥ दीनसअचलबिपतकैनेई॥ २५॥ दो॥ कवनेअवसरका
११ भयोगयोनारबिस्वास॥ जोगसिद्धफलसमैजिमजतहिअबिद्यानास॥ ११
राम २६॥ चौ॥ इहबिधराउमनहिमनझाषा॥ देखिकुभांतिकुमतिमनमाषा॥ भरथ
किराउरपूतनहोई॥ आनहुमोलबसाहिकिमोही॥ जोसुनिसरअसलागतु
मारे॥ काहानबोलहुबचनसमारे॥ देहुउतरअउकरहुकिनाही॥ सत्यासं अव
धतमरघुकुलमाही॥ देनकहेवरअबजिनदेहू॥ तजहुसतजगअपज
सलेहू॥ सतिसराहिकहेवरदेना॥ जानहुलैहैमांगिचबीना॥ शिवदधी
चबलजोकछुभाषा॥ तनधनतजेबचनपनराखा॥ अतिकटुबचनक
हतकैकेई॥ मानोलोनजरेपरदेई॥ २७॥ दो॥ धर्मधुरंधरधीरधरिनैन
उघारेराइ॥ सिरधुनिलीनोसासअसमारसमोहिकुठाइ॥ २८॥ चौ॥ आगे
देषजरतरिसभारी॥ मानहुरोषतरवारउघारी॥ मूठकुबुधधारनिठरा घा
ई॥ धरीकुबरीसानबनाई॥ लषीमहीपकरालकठोरा॥ सतकेजीवनलेइ

हि मोरा॥ बोल्यो राउ कठिन करि छाती॥ बानी सबिनै तासु सुहाती॥ प्रिया बचन क
स कहसि कुभाँती॥ भीर प्रतीति प्रीति करि हाँती॥ जब कत तुम तिन्ह सी जीया तोरे॥ अबल
गी कहसि राम प्रिया मोरे॥ मोरे भरथ राम दुइ आँखी॥ सत्ति कहौं करि संकर साखी॥
अवस दूत मैं पठौं प्राता॥ आइहैं बेगि सुनत दोउ भ्राता॥ सुदिन सोधि सब साज स
जाई॥ देउँ भरथ कौ राज बजाई॥ तब सुत राज करे सुनि रानी॥ राम सरेहे घर
कहु इह बानी॥ २४॥ दो॥ लोभ न रामहि राज कर बहुत भरथ पर प्रीति॥ मैं बड़ छोट
बिचार जीय करत रहेउ नृपनीत॥ २॥ चौ॥ बिनै रघुपति सम जीवन नारी॥ प्रिया बीचा
र देखहु मन माही॥ राम सपथ सत कहौं सुभाऊ॥ राममात कछु कहेउ न का
ऊ॥ मैं सब कीन तोहि बिन पूछे॥ तातें परेउ मनोरथ छूछे॥ रिस परिहरु अब मंग
ल साजू॥ कछु दिन गए भरथ जुबराजू॥ इक कहि बात मोहि दुख लागा॥ बर दूसर
असमंजस मांगा॥ अजहूं हृदै जरत तिहि आँचा॥ रिस परिहास कि साँचो साचा॥ क
हु तजि रोष राम अपराधू॥ सब कोउ कहै राम सठ साधू॥ तूही सराहसि करसि सने
हू॥ अब सुनि मोहि भयो संदेहू॥ जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला॥ सो किमि करैहि
मातु प्रतिकूला॥ ३१॥ दो॥ प्रिया हास रिस परिहरै मांग बिचार बिबेक॥ जेहि देखौं मे

नैन भरि भरि तराज अभिषेक॥७२॥चौ॥जीयै मीन वरु वारि विहीना॥मनि बिनु
फनि जीयै दुख दीना॥कहौं सुभाउ न छल मन माहीं॥जीवन मोर राम बिनु
नाहीं॥समुझ देखु जीय प्रिया प्रबीना॥जीवन राम दरस आधीना॥जद्यपि नृ
प अति कीन निहोरा॥मानै नहीं अति हदे कठोरा॥सुनि मृदु बचन कुमति अ
ति जरई॥मनहुं अनल आहुति घ्रित परई॥कहै करहु किन कोटि उपाया
इहां न लागे राउर माया॥देहु कि लेहु अजस करि नाहीं॥मोहि न बहुत प्रपंच
सोहाहीं॥राम साधु तुम साधु स्याने॥राम मां भल सब पहिचाने॥जस कौशि
ल्या मोर भल ताका॥तस फल उन्हें देउं करि साका॥७३॥दो॥होत प्रात मुनि बेष
धरि जौं न राम बन जांहि॥मोर मरन राउर अजस नृप समुझैं मन मांहि॥
७४॥चौ॥अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी॥मानहुं रोष तरंगनि बाढ़ी॥पाप प
हार प्रगट भइ सोई॥भरी क्रोध जल जाइ न जोई॥दोउ वर कूल कठिन ह
ठ धारा॥भवंर कूबरी बचन प्रचारा॥ढाहत भूपरूप तरु मूला॥चली विप
ति वारधि अनुकूला॥लखी नरेस बात सब सांची॥तिय मिस मीच सीस पर
नाची॥गहि पद बिनै कीन बैठारी॥जनि दिनकर कुल होइ कुठारी॥मांगि मा

२५

थ अबहीं देउ तोही ॥ राम बिरह जिन मार समोही ॥ राखहु राम कहुँ जिहि तिहि भांती
नाहि त जरै जनम भरि छाती ॥ २५ ॥ दो० ॥ देषी ब्याधि असाध नृप परेउ धरनि धुनि
माथ ॥ कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥ २६ ॥ चौ० ॥ ब्याकुल राउ
सिथिल सब गाता ॥ करनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥ कंठ सूष मुष आउ न बा
नी ॥ जनु पाठीन दीन बिनु पानी ॥ पुनि कह कटु कठोर कैकेई ॥ मनहुँ घाउ मैं मा
हुर देई ॥ जो अंतहु अस करतब रहेऊ ॥ मागि मागि तुम केहि बल कहेऊ ॥ दुइ
कि होइ इक समै भुआला ॥ हंसब ठठाइ फुलाउब गाला ॥ दानि कहाउब अस
कृपनाई ॥ होइ कि षेम कुसल रौताई ॥ छाडहु बचन कि धीरज धरहू ॥ जनि अबला
जिमि करुना करहू ॥ तनु तिय तनय धाम धन धरनी ॥ सत्य संध कहुँ त्रिन सम
बरनी ॥ दीन दान फिर मांगसि राजा ॥ परिहर बेद लोक की लाजा ॥ होत प्रात सुत
बनहि न जाही ॥ चौषेप नैन पसु जस मन माही ॥ २७ ॥ दो० ॥ मर्म बचन सुनि राउ कहि
कहु कछु दोस न तोर ॥ लागि तो तोहि पिसाच जिमि काल कहावत मोर ॥ २८ ॥ चौ० ॥ चहत
न भरथ भूपतिहि भोरे ॥ बिधि बस कुमति बसी जीय तोरे ॥ सो सब मोर पाप प
रिनामू ॥ भयो कुठाहर जिहि बिधि बामू ॥ सुबस बसहि फिरि अवध सुहाई ॥ सब
गुन धाम राम प्रभुताई ॥ करिहैं भाइ सकल सेवकाई ॥ होइहै तिहुपुर राम बडाई ॥

जन

पि

क

ना

राम
१२

तोरकलंककमोरपछताउ। मुएनमिटैनजाइसकाउ। अबतोहिनीकलागीकरि
सोई। लोचनओटबैठुमुहुगोई। जबलगिजीयोंकहौंकरिजोरी। तबलगिजिन
कछुकहसिबहोरी। फिरिपछिताइहिअंतअभागी। मारिसगाइनहरूलागी
३५। दो। परेउराउकहिकोटिबिधकाहेकरसिनदान। कपटसियानिनकहतिकछु
मानउजगतमसान ३६। चौ। रामरामरटिबिकलभुआलू। जनुबिनुपंखबिहंग
बेहालू। हृदैमनाउभोरजिनहोई। रामहिजाइकहैजिनकोई। उदैकरउजिन
रबिरघुकुलगुर। अवधबिलोकसूलहुइहैउर। भूपप्रीतिकैकैकठिनाई।
उभैअवधबिधिरचीबनाई। बिलपतिनृपतिभयोभिनसारा। बीनाबेणुसंखधु
नद्वारा। पढहिभाटगुनगावहिगाइक। सुनतनृपहिजनुलागोसाइक। मं
गलसकलसुहांहिनकैसे। सहिगामनिहिबिभूषनजैसे। तिहनिसनींदपरे
नहिकाहू। रामदरसलालसाउछाहू। कबैउदेरबिहोइबिहाना। देखीएनैनन
कृपानिधाना। गजअरूढरामनजश्रीसंगा। सोभातनसतकोटिअनंगा। क
रतमनोरथनिसासिरानी। प्रातप्रगटजागेमनेजानी ३७। द्वारभीरसेवकस
चिवकहहिउदतरविदेषि। जागेअजहुंनअवधपतिकारनकौन[illegible]।
३८। चौ। तबकहिबसिष्टसुमंतबुलाए। हृदैहरषजातरचलिआए। पिछले

25
राम
१२
दो०

पछिरम भूपति नित जागा॥ आजहु हमहि बड अचरज लागा॥ जाहु सुमंत्र जगावहु
जाई॥ कीजैं काज रजाइसु पाई॥ गए सुमंत्र तब रावर माही॥ देखि भयावन जात डे
राही॥ धाइ खाइ जनु जात न हेरा॥ मानहु बिपति बिषाद बसेरा॥ पूछे कोउ न ऊतरु
देही॥ गए फेर जिह भवन कैकेही॥ कहि जैजीव बैठ सिर नाई॥ देखि भूप गति
गए सुकाई॥ सोच बिकल बिबरन महि परिऊ॥ मानहु कवल मूल परहरीऊ॥
सचिव सभीत सकै नहि पूछी॥ बोली असुभ भरी सभ छूछी॥ ८३॥ दो॥ परी न राज
हि नीद निसि हेत जान जगदीस॥ राम राम रट भोर कीय कहै न मरम महीस॥ ८
४॥ चौ॥ आनहु रामहि बेग बुलाई॥ समाचार तब पूछहु आई॥ चलै सुमंत्र
राउ रुख जानी॥ लखी कुचाल कीन कछु रानी॥ सोच बिकल मग परै न पाऊ॥
रामहि बोलि कहै का राऊ॥ उर धरि धीरज गयो दुवारे॥ पूछहि सकल देखि मन
मारे॥ समाधान सो करि सबही का॥ गये जहां दिनकर कुल टीका॥ राम सुमंत
हि आवत देखा॥ आदर कीन तात सम लेखा॥ निरख बदन कहि भूप रजाई॥ रघु
कुलदीपहि चलै लवाई॥ राम कुभांति सचिव संग जाही॥ देखि लोक जह तह बि
लखाही॥ ८५॥ दो॥ जाइ देखि रघुबंसमण नृपति निपट कुसाज॥ सहिम परि

उँ लख सीहनिहि मनहुँ ब्रिध गजराज ॥ ८६ ॥ चौ ॥ सूकै अधर जरै सभ अंगू ॥
मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू ॥ सरुख समीप देखि कैकेई ॥ मानहुँ मीच घरी
गनि लेई ॥ करुनामै म्रिदु राम सुभाऊ ॥ प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥ तदपि धी
र धरि समै बिचारी ॥ पूछी मधुर बचन महितारी ॥ चरन नाइ सिर दे क
रि जोरी ॥ बोले बचन सुधा जनु घोरी ॥ मुहि कहु मात तात दुख कारन ॥ करि
ऐ जतन जेहि होइ नेवारन ॥ सुनहु राम सभ कारन एहू ॥ राजहि तुम पर ब
हुत सनेहू ॥ देन कहे मुहि दो बरदाना ॥ मागेउँ जो कछु मोहि सुहाना ॥ सो
सुनि भयो भूप उर सोचू ॥ छाड़ि न सकै तुमार सकोचू ॥ ८७ ॥ दो ॥ सुत सनेह इत
बचन उत संकट परेउ नरेस ॥ सकहु त आइस धरहु सिर मेटहु कठिन
कलेस ॥ ८८ ॥ चौ ॥ निधरक बैठि कहै कटु बानी ॥ सुनत कठिनता अति अकुला
नी ॥ जीभ कमान बचन सर नाना ॥ मनहुँ महीप म्रिदु लछ समाना ॥ जनु कठो
र पन धरें सरीरू ॥ सिखै धनख बिद्या बर बीरू ॥ सब प्रसंग रघुपति
हि सुनाई ॥ बैठि मनहुँ तन धरि निठुराई ॥ मन मुसकाइ भानकुल भानू ॥
राम सहज आनंद निधानू ॥ बोले बचन बिगत सब दूखन ॥ म्रिदु मंजुल

रा
राम
१४

राम
दे १४
27

सो

जनुबागबघबसभयउ॥सुनिजननीसोइसुतबड़भागी॥जोपितुमातुबचनअनु 28
रागी॥तनयमातुपितुतोषनिहारा॥दुरलभजननिसकलसंसारा॥४९॥दो॥मुनि
गनमिलनुबिशेषिबनसबहिभांतिहितमोर॥तेहिमहपितुआइसुबहुरिसंमत
जननीतोरि॥४०॥चौ॥भरतप्रानप्रियपावहिराजू॥बिधिसबबिधमोहिसनमु
खआजू॥जउनजाउबनऐसेहुकाजा॥प्रथमगनिअमोहिमूढसमाजा॥सेवहिअरँ ग्र
क डुकलपतरुत्यागी॥परिहरअंम्रितलेहिबिषमांगी॥तेउनपाइअससमउचु
काहीं॥देखुबिचारमातुमनमाहीं॥अंबएकदुखमोहिबिशेषी॥निपट
बिकलनरनाइकदेषी॥थोरीबातपितहिदुषभारी॥होतप्रतीतनमोहिमह
तारी॥राउधीरगुनउदधिअगाधू॥भामोतेकछुबडअपराधू॥जातेमोहिकछुक
हतनराऊ॥मोरिसपथतोहिकहिसतिभाऊ॥४१॥दो॥सहजसरलरघुबरबचन
कुमतिकुटिलकरिजान॥चलैजोकजलबक्रगतिजदपिसलिलसमान॥४२॥चौ॥
रहसीरानिरामरुषपाई॥बोलीकपटसनेहजनाई॥सपथतुम्हारभरतकेआ
ना॥हेतुनदूसरमैकछुजाना॥तुमअपराधजोगनहिताता॥जननीजनकबंधु
सुषदाता॥रामसतिसभजोकछुकहिहू॥तुमपितमातबचनरतिअहिहू॥पि

रा
राम
२५

तदपि कुसमउ कहौं बल सोई॥ चौ॰ चेपेप न जेहि जन जस मन होई॥ तुम सम सम सयन
सुकृत जेहि दीन्हे॥ उचित न तासु निरादर कीन्हे॥ लागहि कुमत बचन सम भवै
सै॥ मग गंगादिक गयादिक तीर्थ जैसे॥ राम महिमा तव बचन सम भाए॥ जिमि सर सर
गति सरल सुहाए॥९३॥ दो॰॥ गए सुमंत्र तब राम हि सीमर रन्प कर बटलीन॥ सच
व राम आगमन कहि बिनै समै सम कीन॥९४॥ चौ॰॥ अवन प्रसंग न राम पग धा
रे॥ धरि धीरज तब नैन उघारे॥ सचिव संभार राउ बैठारे॥ चरन परत नृप रा
म निहारे॥ लीए सनेह बिकल उर लाई॥ गई मनि मनहु फनि फिरि पाई॥ रा
म हि चितै रहे नरनाहू॥ चला बिलोचन बारि प्रबाहू॥ सोक बिबस कछु कहै
न न पारा॥ हृदै लगावत बारंबारा॥ बिधहि मनाव राउ मनि माहीं॥ जेहि रघुना
थ न कानन जाहीं॥ सिमर महेसु र कहै निहोरी॥ बिनती सुनहु सदा सिव मो
री॥ आसुतोष तुम आवढर दानी॥ आरत हरहु दीन जनु जानी॥९५॥ दो॰॥ तु
म प्रेरक सभ के हृदै सो मति रामहि देहु॥ बचन मोर तजि रहै गृह परह
र सील सनेहु॥९६॥ चौ॰॥ अजस हो इ जग सुजस नसाऊ॥ नरक परौ बरु सु
र पुर जाऊ॥ सभ दुख दुसह सहावहु मोही॥ राम रहै ग्रह प्रगट बौ तोही॥

29
राम
२५ किर
क
क

समसमनगुनै राउ नही बोला॥ पीपल पात सरस मनै डोला॥ रघुपति पितहि प्रेमबस जा
नी॥ पुनि कछु कहै प्रेम मन मानी॥ देस काल अवसर अनुसारी॥ बोले बचन बिनीत बि
चारी॥ तात कहौं कछु करौं ढिठाई॥ अनुचित छेमब जानि लरकाई॥ अति लघु बात ला
गि दुख पावो॥ काहु न मोहि कहि प्रथम जनायो॥ देखि गुसांई पूछे उँ माता॥ सुनि
प्रसंग भयो सीतल गाता॥५२॥ दो॥ मंगल समै सनेहबस सोच परहरै तात॥ आइसु दे
उ हरषि हीयै कहि पुलके प्रभु गात॥५०॥ चौ॥ धंन जन्म जगती तल तासु॥ पितहि प्रमोद च
रित सुनि जासु॥ चार पदारथ करतल ताके॥ प्रिय पित मात प्रान सम जाके॥ आइसु पा
लि जनम फल पाई॥ ऐहौं बेगहि होइ रजाई॥ बिदा मात सन आवौं मागी॥ चलिहौं
बनहि बहुरि पग लागी॥ अस कहि राम गौन तब कीना॥ भूप सोचबस उतर न दीः
ना॥ नगर ब्यापि गई बात सुतीछी॥ छुअत चढी जनु सब तन बीछी॥ सुनि भए बिक
ल सकल नर नारी॥ बेलि बिटप जिमि देखि दवारी॥ जो जहँ सुनै धुनै सिर सोई॥ बड
बिषाद नहि धीरज होई॥५५॥ दो॥ मुख सुखाहि लोचन स्रवहि सोक न हृदे समाइ॥
मनहु करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ॥१०५॥ चौ॥ मिले माझ बिधि बात बेगारी॥
जहँ तहँ देहि कैकई गारी॥ एहि पापनिहि बूझि का परेऊ॥ छाइ भवन पर पावक

दै

दै

टपजिमि देषि

१०

६ एकधर्मपरमितिपहिचानी नृपहिदोसनहिदेहिसयाने सिवदधीचहरिचंदकहानी

मा
राम
९६

धरेउ॥निजकरिनैनकाढिचहदीखा॥डारिसुधाबिषचाहतचीखा॥कुटिलकठो
रकुबुधअभागी॥भईरघुबंसबेनुबनआगी॥पालवैबैठपेडइहकटा॥सु
खमहिसोकठाटइहठाटा॥सदारामइहप्रानसमाना॥कारनकउनकुटिलप
नठाना॥सतिकहैकबिनारिसभाऊ॥सबबिधअगहिअगाधदुराऊ॥निज
प्रतिबिंबदरकगहिजाई॥जाननजाइनारिगतिभाई॥१२॥दो॥कहनपावक
जारिसककनसमुंदसमाई॥कानकरैअबलाप्रबलकेहिजगकालनखा
इ॥१२॥कासुनाइबिधकाहिसुनावा॥कादिखाइचाहिकाहदिखावा॥एककहै
भलभूपनकीना॥बरबिचारनहिकुमतहिदीना॥जोहठभयेसकलदुखभां
जन॥अबलाबिबसज्ञानगुनगाजन॥एकएकसनकहहिबखानी॥एकभरत
करिसंमतिकहहिं॥एकउदासभावसुनिरहहि॥काननमूंदकैकररदगहिजीहा॥
एककहैइहबातअलीका॥सकृतजाहिअसकहततुमारे॥रामभरथकोप्रान
प्यारे॥१३॥दो॥चंदचवैबरअनलकनसुधाहोइबिषतूल॥सपनेकबहूंन
करैकछुभरथराजप्रतिकूल॥१४॥चौ॥एकबिधातेदूषनदेहीं॥सुधादिखाइदी
नबिषजेहीं॥खरभरनगरसोचसभकाहू॥दुसहदाहउरमिटाउछाहू॥बिप्रबधू

चौ०

राम
९६

31

कुलमन्याजठेरी ॥ जेप्रियापर्मकेकईकेरी ॥ लगीदेनसिषसीलसरासी ॥ वचनबा
नसमलागहिताही ॥ अर्थमोहिप्रियारामसमाना ॥ सदाकहैयहसबजगजाना ॥
परसहज करैरामसैसनेहू ॥ केहिअपराधआजबनदेहू ॥ कबहुनकीउँसवतआरेसू ॥ प्रीत
प्रतीतजानसबदेसू ॥ कौशल्याअबकहाबिगारा ॥ तुमजेहिलागिबजरपुरपारा
१५ ॥ दो ॥ सीयकेपीयासंगपरहरिहैलषनकेरहिहैधांम ॥ राजकीभुंचबभरथपुर
नपकिजीयइबिनरांम ॥ १४ ॥ चौ ॥ असबिचारजीयछाडउकोहू ॥ सोककलंककेठि
जु जनहोहू ॥ अर्थभरथहिअवसदेहुजुबराजू ॥ काननकाहरामकरकाजू ॥ नाहिनरा
मराजकेभूषे ॥ धर्मधुरीनबिषैरसरूषे ॥ गुरगृहबसेरामतजिगेहू ॥ नृपस
नअसबरदूसरलेहू ॥ जौनहिलगिहैंकहेहमारे ॥ नहिलागिहैकछुहाथतुमा
रे ॥ जोपरहासकीनकछुहोई ॥ तउकहिप्रगटजनावहुसोई ॥ रामसरससुतका
ननजोगू ॥ कहाकहैसुनतुमकोलोगू ॥ उठहुबेगसोईकरहुउपाई ॥ जेहिबिध
सोककलंकनसाई ॥ १७ ॥ छंद ॥ जेहिभांतसोककलंकजाइउपाइकरकुलपाल
ही ॥ हठफेररामहिजातबनजिनबातदूसरचालही ॥ जिमभानबिनदिनप्रानबि
नतनचंदबिनजिमजामनी ॥ तिउँअवधतुलसीदासप्रभुबिनसमझधौंमनभा

मि

अ
राम
१२

मनी॥१०८॥ सो॰॥ सब बन सिसिवावँदीन समन तम धर प्रनाम हित॥ तेहि कछु कान न
कीन कुटल प्रबोधी कूबरी॥१०९॥ चौ॰॥ उतर न देइ दुसह रिस रूखी॥ म्रगन्हि चित
व जिम बाघिन भूखी॥ ब्याधि असाधि जानि तिन त्यागी॥ चली कहत मतिमंद
अभागी॥ राज करत इह दैव बिगोई॥ कीनेस अस जस करे न कोई॥ इह बिधि बि
लपहि पुर नर नारी॥ देहि कुचालहि कोटक गारी॥ जरहि बिषम जर लेहि उसा
सा॥ कवन राम बिन जीवन आसा॥ बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी॥ जन जलच
र गन सोकत पानी॥ अति बिषाद बस लोक लुगाई॥ गए मात पहि राम गुसांई॥
मुख प्रसन्न चित चउगन चाउ॥ मिटा सोच जिन राखे राउ॥११०॥ दो॰॥ नव गयंद रघु
बीर मन राज अलान समान॥ छूट जान बन गवन सुन उर आनंद अधिकान॥
॥१११॥ चौ॰॥ रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा॥ मुदित मात पद नायो माथा॥ दीन अ
सीस लाइ उर लीने॥ भूषन बसन निछावर कीने॥ बार बार मुख चुंबत माता॥
नैन नेह जल पुलकत गाता॥ गोद राख पुन हिर्दै लगाए॥ स्रवत प्रेम रस पयद
सुहाए॥ प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई॥ रंक धनद पदवी जन पाई॥ सादर सुंद
बदन निहारी॥ कबहि लगन मुद मंगलकारी॥ सुकृत सील सुख सीव सुहाई॥

राम
१२
यो

जनमत्ताभकैम्बघ गाघाडी ॥ ११२ ॥ दो ॥ जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत इहि भांति ॥
जिमि चातक चातकि त्रिषित बृष्टि सरद रितु स्वांति ॥ ११३ ॥ चौ ॥ तात जाउ बलि बेगि नहाहू ॥ जो
मन भाउ मधुर कछु खाहू ॥ पितु समीप तब जाइहु भैया ॥ प्रेम पुलक बमादर कहि मैया
या ॥ मातु बैन सनि अति अनुकूला ॥ जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥ सुख मकरंद भरे श्रि
य मूला ॥ नसवराम मन मोर न भूला ॥ धर्म धुरीन धर्म गति जानी ॥ कहेउ मातु सन
अति मृदु बानी ॥ पिता दीन मोहि कानन राजू ॥ जेहि सब भांति मोर बड काजू ॥ आइ
सु देहु मुदित मन माता ॥ जेहि मुद मंगल कानन जाता ॥ जनि सनेह बस डरपसि भो
रे ॥ आनंद अंब अनुग्रह तोरे ॥ ११४ ॥ दो ॥ बर्ष चारि दस बिपिन बसि करि पितु बच
न प्रमान ॥ आइ पाइ पुनि देखिहौं मन जनि करसि मलान ॥ ११५ ॥ चौ ॥ बचन विनीत
मधुर रघुबर के ॥ सर सम लगे मातु उर करके ॥ सहमि सूखि सुनि सीतल बानी ॥ जि
मि जवास परें पावस पानी ॥ कहि न जाइ कछु हृदे बिषादू ॥ मनहु म्रिगी सुनि केहरि
नादू ॥ नैन सजल तन थरहर कांपी ॥ माजहि खाइ मीन जनु मापी ॥ धरि धीरज सु
त बदन निहारी ॥ गदगद बचन कहत महतारी ॥ तात पितहि तुम प्रान पियारे ॥
देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥ राज देन हितकर कुल मया के सुभ दिन साधा ॥

॥ तउ जनि जाहु जानि बड़ि माता॥ जो पितु मातु कहेउ बन जाना॥ १०

85

कहि सिय जानि बनहि किन जाहा॥ तात सुनावहु मोहि निदानू॥ को दिनकर कुल
भयो कृसानू॥१४६॥ दो॥ नखि राम रुष सचिव सुत कारन कहेउ बुझाइ॥ सुनि प्र
संग रही मूक जिमि दसा बरनि नहि जाइ॥१४७॥ चौ॥ राखि न सकै न कहि सकै जा
हू॥ लिखित सुधाकर गा लिखि राहू॥ बिधि गति बाम सदा सब काहू॥ धर्म सनेह
उभै मति घेरी॥ भै गति सांप छछुंधरि केरी॥ राखै सुतहि करौ अनुरोधू॥ धर्म जाइ
औ बंधु बिरोधू॥ कहै जान बन तौ बड़ि हानी॥ संकट सोच बिबस भै रानी॥ बहुर
समझि तीय धर्म स्यानी॥ राम भर्थ दोउ सुत सम जानी॥ सरल सुभाउ राम महता
री॥ बोली बचन धीर धरि भारी॥ तात जाउ बलि कीन्हे नीका॥ पितु आइसु सब ध
र्म के टीका॥१४८॥ दो॥ राज देन कहि दीन्ह बन मोहि न सो दुख लेस॥ तुम्ह बिन भर
थहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेस॥१४९॥ चौ॥ जो केवल पितु आइसु ताता॥
तउ कानन सत अवध समाना॥ पितु बनदेव मातु बनदेवी॥ खग मृग चर्न स
रोरुह सेवी॥ अंतहु उचित नृपहि बनबासू॥ बै बिलोकि हिये होइ हरासू॥ बड़
भागी बन अवध अभागी॥ जो रघुबंस तिलक तुम त्यागी॥ जो सुत कहौ संग
मोहि लेहू॥ तुम्हरे हृदै होइ संदेहू॥ पूत परम प्रिय तुम सब ही के॥ प्रान प्रान के जीव

श्री राम १९ अयोध्या

राम १९

नजीकै॥ तेन मकहिं जो राम बनजाहू॥ मैं सनि बचन बैठ पकताहू॥१२०॥ दो॥ यहि बि
चार तकरै हठ जूठ मनेह बठइ॥ मान मात कपि तात बल मरति बिसपै जेनजा
इ॥१२१॥ चौ॥ देव पित्र सम मत महि गसांई॥ राखे पलक नैन की न्याई॥ अवधि अंबु
प्रियपरिजन मीना॥ तम करुनाकर धर्म धुरीना॥ अस बिचार सोइ करो उपाई॥
सबहि जीयत जेहि भेटहु आई॥ जाहु सखै बन पहि बलजाऊ॥ करि सनाथ जन प
रिजन गाँऊ॥ सम करि साज सत तीय पल बीता॥ भयो कराल काल बिप्रीता॥ बहु बि
ध बिलप चरन लपटानी॥ परम अभागिनि आपहि जानी॥ दारुन दुसह दाहउ
र व्यापा॥ बरनन जाइ बिलाप कलापा॥ राम उठाइ मातु उर लाई॥ कहि मृदु ब
चन बहुर समुझाई॥१२२॥ दो॥ समाचार तिन्ह मैं सुनि सीय उठी अकुलाइ॥
जाइ सासुपद कमल जग बंदि बैठि सिर नाइ॥१२३॥ चौ॥ दीन्ह असीस सासु मृदु बानी॥
अति सुकुमारि देखि अकुलानी॥ बैठि नमित मुख सोचति सीता॥ रूपरासि पति प्रेम पु
नीता॥ चलन चहत बन जीवन नाथा॥ केहि सुकृती सन होइहि साथा॥ की तन प्रान
कि केवल प्राना॥ बिधि करतब कछु जाइ न जाना॥ चार चरन नख लेखति धरनी॥ नूप
र मुखर मधुर कबि बरनी॥ मनहु प्रेम बस बिनती करहीं॥ हमहि सीय पद जनि

व्य

४ नयनपुतरि करि प्रीति बढाई राखेउ प्रान जानकिहि लाई

परहरही॥ मंजु बिलोचन मोचत बारी॥ बोली देखि राम महतारी॥ तात सुनहु
सीया अति सुकुमारी॥ सास ससुर परिजनहि प्यारी॥१२४॥ दो॥ पिता जनक भूपाल
मनि ससुर भानुकुल भानु॥ पति रबि कुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधान॥१२५॥
चौ॥ मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई॥ रूप रासि गुन सील सुहाई॥ कलपबेलि जिमि बहु
बिधि लाली॥ सींच सनेह सलिल प्रतिपाली॥ फूलत फलत भयो बिधि बामा॥
जानि न जाइ काह परिनामा॥ पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा॥ सीया न दीन पद अव
नि कठोरा॥ जिअनमूरि जिमि जुगवत रहेऊं॥ दीप बाति नहि टारन कहेऊं॥ सोइ
सीया चलन चहत बन साथा॥ आइसु काह होत रघुनाथा॥ चंद किरन रस
रसिक चकोरी॥ रबि रुख नैन सकै किमि जोरी॥१२६॥ दो॥ करि केहरि निसिचर च
रहि दुष्ट जंतु बन भूरि॥ बिष बाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवन मूरि॥१२७॥
चौ॥ बन हित कोल किरात किसोरी॥ रची बिरंचि बिषय सुख भोरी॥ पाहन कृमि जि
मि कठिन सुभाऊ॥ तिन्हहि कलेस न कानन काऊ॥ कै तापस तिया कानन जोगू॥
जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू॥ सीया बन बसि तात केहि भांती॥ चित्र लिखी कपि
देखि डराती॥ सुरसर सुभग बनज बन चारी॥ डाबर जोग कि हंस कुमारी॥

राम॥ राम॥ १९

सम बिचार जौं आइस होई॥ मैं सिष देउ जानकिहि सोई॥ जौं सीता भवन रहै कहि अंबा॥ मो कउ होइ बहुत अवलंबा॥ सुनि रघुबीर मात प्रिय बानी॥ सील सनेह सुधा जनु सानी॥ १२८॥ दो॥ कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्ह मात परितोष॥ लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगट बिपिन गुन दोष॥ १२९॥ चौ॥ मात समीप कहत सकुचाहीं॥ बोले समय समुझ मन माहीं॥ राजकुमारि सिषावन सुनहू॥ आन भांति जिय जिन कछु गुनहू॥ आपन मोर नीक जो चहहू॥ बचन हमार मानि ग्रह रहहू॥ आइस मोर सास सेवकाई॥ सभ बिधि भामिनि भवन भलाई॥ इह ते अधिक धरम नहि दूजा॥ सादर सास ससुर पद पूजा॥ जब जब मात करै सुध मोरी॥ होइहै प्रेम बिकल मति भोरी॥ तब तब तुम कहि कथा पुरानी॥ सुंदरि समुझाइउ म्रिद बानी॥ कहो सुभाइ सपथ शत मोही॥ सुमुषि मात हित राषउ तोही॥ १३०॥ दो॥ गुर स्रुत संमत धर्म फल पाइऐ बिना कलेस॥ हठ बस सभ संकट सहे गालव नहुष नरेस॥ १३१॥ चौ॥ मै पुनि करि प्रवान पित बानी॥ बेग फिरव सुनि सुमुषि सयानी॥ दिवस जात नहि लागिहै बारा॥ सुंदरि सिषवन सुनहु हमारा॥ जो हठ करहु प्रेम बस बामा॥ तउ तुम दुष पाव परनामा॥ कानन कठन भयंकर भारी॥ घोर घाम हिम बारि बयारी॥

कुसकंटकमगकांकरनाना॥चलबपयादेहिबिनुपदत्राना॥चरनकमलम्रि
दमंजतुमारे॥मारगअगमभूमधरभारे॥कंदरखोहिनदीनदनारे॥अग
मअगाधनजाहिंनिहारे॥भालबाघबृककेहरनागा॥करहिंनादसुनधीर
जभागा॥१३२॥दो॥भूमसैनबलकलबसनअसनकंदफलमूल॥तेकिसद
सबदिनमिलहिंसबैसमयअनकूल॥१३३॥चौ॥नरअहाररजनीचरचरही
कपटबेषबिधकोटिककरही॥लागीअतिपाहारकरपानी॥बिपनबिपतन
हिजाइबखानी॥ब्यालकरालबिहगबनघोरा॥निशचरनिकरनारनरचोरा॥
डरपहिंधीरगहनसुधआई॥म्रिगलोचनतुमभीरसभाई॥हंसगौनतुमन
हिबनजोगू॥सुनिअपजसमोहिदेहैलोगू॥मानससलिलसुधाप्रतिपाली॥जी
इकिलवनपयोधमराली॥नवरसालबनबिहरनसीला॥सोहिकिकोकिल
बिपनकरीला॥रहोभवनअसह्रदैबिचारी॥चंदबदनदुखकाननभारी॥१३४
दो॥सहजसुह्रदगुरस्वामसिखजोनकरइसिरमान॥सोपछिताइअघाइउर
अवसहोतहतहान॥१३५॥चौ॥सुनमृदुबचनमनोहरपीयके॥लोचनल
लितभरेजलसीयाके॥सीतलसिखदाहकभैकैसे॥चकइहिसरदचंदनिस

जैसे॥ उतरन आव बिकल बैदेही॥ तजन चहत सुच स्वामि सनेही॥ बरबस रोक बि
लोचन बारी॥ धर धीरज उर अवन कुमारी॥ लाग सास पग कह कर जोरी॥ छे
मउ देव बड़ अबिनय मोरी॥ दीन प्रानपति मोहि सिख सोँ॥ जेह बिध मोर परम
हित होई॥ मैं पुन समझ दीख मन माही॥ पिय बियोग सम दुख जग नाही॥ ६४ दो
दो॥ प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान॥ तुम बिन रघुकुल कुमुद बिध सुर
पुर नरक समान॥ ६४ चौ॥ मात पिता भगनी प्रिय भाई॥ प्रिय परवार सुहृद स
मुदाई॥ सास ससुर गुर सजन सहाई॥ सुत सुंदर सुसील सुखदाई॥ जेह लग
नाथ नेह अरु नाते॥ पीय बिन तीय तरनी ते ताते॥ तन धन धाम धरन पुर राज
पत बिहीन सब सोक समाज॥ भोग रोग सम भूषन भारू॥ जम जातना सरस सं
सारू॥ प्राननाथ तुम बिन जग माहीं॥ मो कहु कत हु कछु नाही॥ जीय बिन
देह नदी बिन बारी॥ तैसे नाथ पुरष बिन नारी॥ नाथ सकल सुख साथ तुमारे॥
सरद बिमल बिध बदन निहारे॥ ६५ दो॥ खग मृग परजन नगर बन बलक
ल बिमल दुकूल॥ नाथ साथ सुर सदन सम परनसाल सुख मूल॥ ६५ चौ॥
बनदेवी बन देव उदारा॥ करि है सास ससुर सम सारा॥ कुस किसलै साथरी

41

रा
राम
२१

सुहाई॥प्रभुसँगमंजुमनोजतुराई॥कंदमलफलअमीअहारू॥अवध
सौधसतसमरसपहारू॥छिनछिनप्रभुपदकमलबिलोकी॥रहिहौंमुद
तिदिवसजिमकोकी॥बनदुखनाथकहेबहुतेरे॥भैबिषादप्रतापघनेरे
प्रभुबियोगलवलेससमाना॥सबमिलहोहिंनकृपानिधाना॥असजीया
जानिसुजानसिरोमणि॥लीयेसाथमोहिछाडइजिन॥बिनतीबहुतकरौंका
स्वामी॥करुनामयउरअंतरजामी॥१४१॥दो०॥राषीयेअवधजअवधलगी
रहितजानीयेप्रान॥दीनबंधुसंदरसुषदसीलसनेहनिधान॥२४१॥मुहिम
गचलतनहोइहेहारी॥छिनछिनचरनसरोजनिहारी॥सभैभांतिपीयासेवा
करिहूं॥मारगचलतसगलश्रमहरिहूं॥पाइपषारबैठितरुछांही॥करहौंबा
उमुदतमननेमाहीं॥श्रमकनसहितस्यामतनदेषे॥कहिदुषसमोप्रानपतिपेषे
सममहितनतरपल्लवडासी॥पाइपलोटेसमनिसदासी॥वारिवारमृदमूर्ति
जोही॥लागहितातबयारनमोही॥कोप्रभुसंगमहिचितवनहारा॥सिंहबध
हिजिमससकसिआरा॥मैसकुमारनाथबनयोगू॥तुमहिउचततपमोकोभो
गू॥१४२॥दो०॥ऐसेबचनकठोरसनिजोनहृदेबिलगान॥तउप्रभुबिषमबि

राम
२१
२

योगदुखसहिहैयावर प्रान॥१४३॥चौ॥जसकहिसीयाविकलभैभारी॥बचनवि
योगनसहिसकीसमारी॥देषदसारघुपतिजीयाजाना॥हठराषेनहिराषैप्राना॥
कहिउहोकृपालभानकुलनाथा॥परहरसोचचलोबनसाथा॥नहिविषादके
स रिअवसरआजू॥बेगकरहुबनगवनसमाजू॥कहिप्रियाबचनप्रियपहिसममझी
लगीमातिपगआइसपाई॥बेगप्रजादुषमेटबआई॥जननीनिठरबिसरजि
नजाई॥फिरहिदसाविधबहुरिकिमोरी॥देषहुनैननमनोहरजोरी॥सदिनसुघ
रीताततकबहोइहै॥जननीजीअतबदनविधजोहै॥१४४॥दो॥बहुरबछकहिलाल
घुवर नकहिरघुपतितात॥कबहिबुलाइलगाइहीयेहरषनिरषहोइगात॥१४५॥
चौ॥लषसनेहसुभारतमहितारी॥बचननमावबिकलभैभारी॥रामप्रबोधकी
नविधनाना॥समयसनेहनजाइबषाना॥तबजानकीसासपगलागी॥सनिमाता
मैपरमअभागी॥सेवासमैदयीबनदीना॥मोरमनोरथसफलनकीना॥तजबछो
भमजननछाडिअछोहू॥करमकठनकछुदोषनमोहू॥सुनिसीयबचनसासु
अकुलानी॥दसाकौनविधकहौबषानी॥बारहिबारलाइउरलीनी॥धरधीर
जसिषअसीसदीनी॥अचलहोइअहिवाततुमारा॥जबलगिगंगजमुनजलधा य
रा॥१४६॥दो॥सीतहिसासअसीसिषदीनअनेकप्रकार॥चलीनाइपददपदम

सीरगमतीहितबार मबार ॥१४७॥ चौ ॥ समाचार जब लछमन पाए ॥ व्याकुल
बिलखबदन उठधाए ॥ कंपपुलकतन नैन शरीरा ॥ गहे चरन अति प्रेम
अधीरा ॥ कहिन सकत कछु चितवत ठाढे ॥ मीन दीन जिम जल तेकाढे ॥
सोचहृदै बिधकाहनिहारा ॥ समसुख सुकृतसिरान हमारा ॥ मोकों कहा कर
वर घुनाथा ॥ रखिहै भवन कि लेहै साथा ॥ राम बिलोक बंध कर जोरे ॥ देह
गेह सम सनतृण तोरे ॥ बोले बचन राम नैनागर ॥ सील सनेह सरल सु
ख सागर ॥ तात प्रेम बस जिन कदराहू ॥ समझ हृदै प्रण मउछाहू ॥१४८॥ दो ॥
मातपितागुर स्वाम सिष सिर धर करहि सुभाइ ॥ लहेउ लाभ तिन जनम
कर नतर जनम जग जाइ ॥१४९॥ चौ ॥ असजीयाजान सुनहु सिष भाई ॥ क
रो मातपितपद सेवकाई ॥ भवन भरत रिपसूदन नाही ॥ राउ बृध मम दु
ख मन माही ॥ मै बन जाउ तुमहि लै साथा ॥ होइ है सम बिध अवध अनाथा ॥
गुर पित मात प्रजा परवारू ॥ सभको होइ दुसहि दुष भारू ॥ रहउ करउ सब
करि तोषू ॥ नतर तात होइहि बड दोषू ॥ जास राज प्रिय प्रजा दुषारी ॥ सोनृप
अवस नरक अधिकारी ॥ रहहु तात असनीत बिचारी ॥ सुनत लषन भए
व्याकल भारी ॥ सीयरे बचन सूखगै कैसे ॥ परसत तुहिन तामरस जैसे ॥१५०॥ दो ॥

उतरुनआवैप्रेमबसगहेचरनअकुलाइ॥नाथदासमैस्वामतमतजउतकाहबसाइ
१५१॥ चौ॥ दीनमोहिसिखनीकगुसांई॥लागिअगमअपनीकदराई॥नरवरधीरधर्म
धुरधारी॥नीगमनेतकहितेअधिकारी॥मैसीसप्रभुसनेहप्रतिपाला॥मंदरमेरकि
लेहुमराला॥गुरपितमाततनजानउकाहू॥कहउंसुभाउनाथपतियाऊ॥जहलगि
जगतसनेहसगाई॥प्रीतप्रतीतनिगमनिजगाई॥मोरसबैएकतुमस्वामी॥दीन
बंधुउरअंतरजामी॥धर्मनीतउपदेसीयेताही॥कीर्तिभूतसुगतिप्रियजाही॥मनक्र
मबचनचरनरतहोई॥क्रिपासिंधपरहरीयेकिसोई॥१५२॥दो॥करुणासिंधसुबंधु
केसुनिमृदबचनविनीत॥समझाउरलाइप्रभुजानसनेहसभीत॥१५३॥चौ॥
मागहुबिदामातसनजाई॥आवहुबेगिचलहुबनभाई॥मुदितभएसुनिरघुबर
बानी॥भयोलाभबडगैबडहानी॥हरषहदैमातपहिआए॥मनहुअंधफिरलो
चनपाए॥जाइजननिपदनायोमाथा॥मनरघुनंदनजानकीसाथा॥पूछेमातम
लनमनदेखी॥लखनकहीसबकथाविशेषी॥गईसहमसुनिबचनकठोरा॥म्रि
गीदेखिदवजनुचहुओरा॥लखनलखेभाअनरथआजू॥इहसनेहबसकरत
अकाजू॥मांगतविदासभैसकुचाही॥जाइसंगविधकहैकिनाही॥१५४॥दो॥समझ

गम
॥राम॥
२३

समीत्रा राम सीय रूप सुसील सुभाउ॥ नृप सनेह लख धुन्यो सिर पापन कीन कुदाँउ
१५५॥ चौ॥ धीरज धरेउ कुअवसर जानी॥ सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥ तात तुमार
मात बैदेही॥ पिता राम सब भाँति सनेही॥ अवध तहाँ जहाँ राम निवासु॥ तहाँ दिवस
जहाँ भान प्रकासु॥ जो पै सीय राम बन जाही॥ अवध तुमार काज कछु नाही॥ गुर पि
त मात बंध सुर साँई॥ सेइअहि सकल प्रान की न्याँई॥ राम प्रान प्रिय जीवन जी के
स्वार्थ रहित सखा सब ही॥ पूजनीय प्रिय परम जहाँ ते॥ सब मानिअहि राम के ना
ते॥ अस जीय जान संग बन जाहु॥ लेहु तात जग जीवन लाहु॥ १५६॥ दो॥ भूर भा
ग भाजन भयो मोहि समेत बलि जाँउ॥ जो तुमारे मन छाड़ छल कीन राम पद ठाँ
उ॥ १५७॥ चौ॥ पुत्रवती जुवती जग सोई॥ रघुपति भगत जासु सुत होई॥ नतर बाँझ
भल बाद विआनी॥ राम विमुख सुत ते हित हानी॥ तुमरे भाग राम बन जाँही॥ दु
सर हेत तात कछु नाही॥ सकल सुकृत कर सुत फल एहु॥ सीया राम पद सहि
ज सनेहु॥ राग दोष इरखा मद मोहु॥ जिन सपने इन के वस होहु॥ सकल प्रका
र विकार विहाई॥ मन कर्म बचन करउ सेवकाई॥ तुम को बन सब भाँत सु
बासु॥ संग पित मात राम सीया जासु॥ जेहन राम बन लहहि कलेसु॥ सुत

के
त्र

॥राम॥
२३

उलीछ दोहरा। आसिष दीन्ही विविधि विधि सब हि नीति समुझाइ वेद संत गुरजन सुमति नीति पंथ सत भाइ

२

सोई करेउ इहै उपदेसू ॥१५८॥ छंद ॥ उपदेस यह जेहि तात तुम्हते राम सीय सुख पाव
हीं ॥ पित मात प्रीय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ॥ तुलसी प्रभुहि सिष देइ
आइस दे हपुनि आसिष दई ॥ रति होउ अबिरल अमल सीय रघुबीर पद नित
नित नई ॥१५९॥ सो० ॥ मात चरन सिर नाइ चले तुरत संकित हृदय ॥ बागुर बिषम तोरा
इ मानहु भाग म्रिग भाग बस ॥१६०॥ चौ० ॥ गए लखन जहं जानकीनाथू ॥ भए मन मु
दित पाइ प्रिय साथू ॥ बंदि राम सीय चरन सुहाए ॥ चले संग न्रिपमंदिर आए ॥ क
हहि परसपर पुर नर नारी ॥ भलि बनाइ बिधि बात बिगारी ॥ तन क्रिस मन दुख
बदन मलीना ॥ बिकल मनहु माषी मधु छीना ॥ कर मीजहि सिर धुनि पछिता
हीं ॥ जनु बिनु पंष बिहंग अकुलाहीं ॥ भै बड़ भीर भूप दरबारा ॥ बरनि न जाइ
बिषाद अपारा ॥ सचिव उठाइ राइ बैठारे ॥ कहि प्रिय बचन राम पगु धारे ॥ सीय
समेत दोउ तनय निहारी ॥ ब्याकुल भयो भूमिपति भारी ॥१६१॥ दो० ॥ सीय समेत सुत
सुभग दोउ देषि देषि अकुलाइ ॥ बारहि बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥१६२॥
चौ० ॥ सकै न बोलि बिकल नरनाहू ॥ सोक जनित उर दारुन दाहू ॥ नाइ सीस पद अ
ति अनुरागा ॥ उठि रघुबीर बिदा तब मांगा ॥ पितु असीस आइसु मोहि दीजै ॥ ह
रष समै बिसमै कत कीजै ॥ तात किए प्रिय प्रेम प्रमादू ॥ जस जग जाइ होइ अपवादू ॥

सनेह सनेह बस उतर न आह॥ देखि दसा रघुपति गहि बाह॥ सुनेहु तात तुम के म-
ठ कहीं॥ राम चराचर नाइक कहि कहीं॥ मम जस राज पुन्न करम न टारी॥ ई-
स देइ फल हृदै बिचारी॥ करै जु करम पाव फल सोई॥ निगम नीत अस सब कहि स-
भ कोई॥ ६३॥ दो॥ अउर करै अपराध के और पाउ फल भोग॥ अति बिचित्र भग-
वंत गति को जग जानन जोग॥ ६४॥ चौ॥ राइ राम राखन हित लागी॥ बहुत उपा-
उ कीए छल त्यागी॥ लखे राम रुख रहत न जाने॥ धर्म धुरंधर धीर सयाने॥ तब
नृप सीय लाइ उर लीनी॥ अति हित बहुत भांति सिख दीनी॥ ॥ कहि बन के दु-
ख दुसह सुनाए॥ सासु ससुर पितु सुख समुझाए॥ सीय मन राम चरन अनुरागा॥
घर न सुगम बन बिषम न लागा॥ अउरउ सबन सीय समझाई॥ कहि कहि बिपत
बिपति अधिकाई॥ सचिव नारि गुर नारि सयानी॥ सहित सनेह कहै मृदु बानी॥ तुम
कौं तौ न दीन्ह बन बासू॥ करउ जो कहै ससुर गुर सासू॥ ६५॥ दो॥ सिख सीतल
हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सुहानि॥ सरद चंद चांदनि लगत जनु चकई अकुला-
नि॥ ६६॥ चौ॥ सीय सकुच बस उतर न देई॥ सो सुनि तमकि उठी कैकेई॥
मुनि पट भूषन भाजन आनी॥ आगे धरि बोली मृदु बानी॥ नृपहि प्रान प्रिय तु-
म रघुबीरा॥ सील सनेह न छाडत भीरा॥ सुकृत सुजस परलोक न साऊ॥ त

राम २४

माहिजानबतनकहिहनराउ॥असविचारसोइकरेउजुभावा॥रामजननिसिषसुनि
सुषपावा॥अपहिबचननैसमलागे॥करहिनप्रानपयानअभागे॥लोकविकल
मुरछतनरनाहु॥कहतकरैकछुसुमनकहु॥रामतरततमुनिबेषबनाइ॥च
लेजननजनकहिसिरनाई॥१९७॥दो॥सजिबनसाजसमाजसबबनिताबंधुस
मेत॥बंदिबिप्रगुरचरनप्रभुचलेकरिसबहिअचेत॥१९८॥चौ॥निकसबसिष्ट
द्वारभैठाढे॥देषेलोकबिरहदवदाधे॥कहिप्रियबचनसकलसमुझाए॥बि
प्रबृंदरघुबीरबुलाए॥गुरसनकहिबरषासनदीने॥आदरदानबिनैबस
कीने॥जाचकदानमानसंतोषे॥मीतपुनीतप्रेमपरतोषे॥दासीदाससबुलाइ
बहोरी॥गुरहिसौपबोलेकरजोरी॥सबकैसारसंभारगुसांई॥करबजनकज
ननीकीनांई॥बारहिबारजोरजुगपानी॥कहतरामसबसनमृदुबानी॥सोइ
सबभांतिमोरहितकारी॥जेहितेरहैभुआलसुषारी॥१९९॥दो॥मातसकल
मोरेबिरहजेहिनहोइदुखदीन॥सोइउपावतुमकरहुसबपुरजनपरम
प्रबीन॥२००॥चौ॥इहबिधिरामसबहिसमुझावा॥गुरपदपदमहरषिसिरनावा॥गन
पतिगौरिगिरीसमनाई॥चलेअसीसपाइरघुराई॥रामचलततसभैभयोबि
षादु॥सुनिनजाइपुरआरतनादु॥कुसगुनलंकअवधअतिसोकु॥हरषबिषाद

सो

^ लैरथसंगसषातुमजाहू

बिबसिसुरलोकू॥ गैमुरछातबभुपतिजागे॥ बोलिसुमंत्रकहनअसलागे॥
रामचलेबनप्रानननजाही॥ केहिसुषलागिरहततनमाही॥ इहतेकवनब्रिथा
बलवाना॥ जोदुषपाइतजहितनप्राना॥ पुनिधरधीरकहैनरनाहू^॥१७१॥ दो॥
सुठकुमारकुमारदोउजनकसुताकुमारि॥ रथचढाइदिषराइबनफिरेउ
गएदिनचारि॥१७२॥ चौ॥ जौनहिफिरहिधीरदोउभाई॥ सतसंध दृढब्रतरघु
राई॥ तउतुमबिनैकरहुकरजोरी॥ फेरीयेप्रभमिथलेसकिसोरी॥ जबसीया
काननदेषिडराई॥ कहेमोरसिषअवसरपाई॥ सासससुरअसकहिउ
संदेसु॥ पुत्रफिरएबनबहुतकलेसू॥ पितगृहकबकेबहिससुरारी॥ कहे
जहंरुचहोइतुमारी॥ इहबिधकरहुउपाइकदंबा॥ फिरइतहोइप्रानअवलं
बा॥ नाहितमोरमरनपरिनामा॥ कछुनबसाइभयेबिधबामा॥ असकहिमु
रछपरेमहिराऊ॥ रामलषनसियआनदिषाऊ॥१७३॥ दो॥ पाइरजाइसुनाइसि
रुरथअतिबेगबनाइ॥ गयोजहांबाहरनगरसीयसहितदोउभाइ॥१७४॥
चौ॥ तबसुमंत्रनृपबचनसुनाए॥ करिबिनतीरथरामचढाए॥ चढिरथसी
यसहितदोउभाई॥ चलेबनहिअवधहिसिरनाई॥ चलतरामलषिअवधअ
नाथा॥ बिकललोकसबलागेसाथा॥ क्रपासिंधबहुबिधसमझावहि॥ फरहि

प्रेमबसपुनिफिरिआवहिं॥ लागतिअवधभयावनिभारी॥ मानहुकालरातिअंध्या
री॥ घोरजंतुसमपुरनरनारी॥ डरपहिंएकहिएकनिहारी॥ घरमसानपुरजनजनु
भूता॥ सुतहितमीतमनहुजमदूता॥ बागनबिटपबेलिकुम्हलाहीं॥ सरितसरोवरदे
खिनजाहीं॥१७५॥ दो॥ हैगैकोटककेलिम्रिगपुरपसुचातृकमोर॥ पिकरथांगसुक
सारकासारसहंसचकोर॥१७६॥ चौ॥ रामबियोगबिकलसबठाढे॥ जहंतहंमनहु
चित्रलिखिकाढे॥ नगरसफलबनगहबरभारी॥ खगम्रिगबिपुलसकलनरना
री॥ बिधिकैकेईकिरातनकीनी॥ जेहिंदवदुसहदसोदिसदीनी॥ सहिनसकेरघु
बरबिरहागी॥ चलेलोगसबब्याकुलभागी॥ सबहुंबिचारकीनमनमांही॥
रामलखनसीयाबिनसुखनाहीं॥ जहांरामतहंसबैसमाजू॥ बिनरघुबीरअवधन
हिंकाजू॥ चलेसाथअसमंत्रदृढाई॥ सुरदुर्लभसुखसदनबिहाई॥ रामचरनप्रियपं
कजजिनहीं॥ बिषैभोगबसकरैकितिनहीं॥१७७॥ दो॥ बालकब्रिधबिहाइगृहचलेलोग
सबसाथ॥ तमसातीरनिवासकीयप्रथमदिवसरघुनाथ॥१७८॥ चौ॥ रघुपतिप्रजा
प्रेमबसदेखी॥ सदयहृदेदुखभयोबिशेषी॥ करनामयरघुनाथगुसांई॥ बेगपाइ
ह्रिंपीरपराई॥ कहिसप्रेममृदबचनसुहाए॥ बहुबिधरामलोकसमझाए॥ की
येधर्मउपदेसघनेरे॥ लोगप्रेमबसफिरहिंनफेरे॥ सीलसनेहछाडिनहिंजा

श्री
राम॥
२६

शी॥ अस मम जस सचिव समैर रघुराशी॥ लोग सोग स्रम बस गै सोशी॥ कछुक देवमाया म
तिमोशी॥ जबहि जाम जुग जाम न बीती॥ राम सचिव सन कहिउ सप्रीती॥ षोज मार
रथ हंकहु ताता॥ आन उपाइ बनै नही बाता॥ १७९॥ दो॥ राम लषन सिय जान बैठु
चढि भु चरन सिर नाइ॥ सचिव चलायो तुरत रथ इत उत षोज दुराइ॥ १८०॥ चौ॥
जागे लोक सकल भै भोरू॥ गये रघुनाथ भयो अति सोरू॥ रथ कर षोज कतहु
नही पावहि॥ राम राम कहि चहु दिस धावहि॥ मनहु बारिनिध बूड जहाजू॥ भयो
विकल बड बनिक समाजू॥ एकहि एक देहि उपदेसू॥ तजे राम हम जानि क
लेसू॥ निंदहि आप सराहैं मीना॥ धिग जीवन रघुबीर बिहीना॥ जो पै प्रिय वि
योग जग कीना॥ तउ कस मरन न मागे दीना॥ इह बिधि करत प्रलाप कलापा॥
आए अवध भरे परितापा॥ विषम वियोग न जाइ बिषाना॥ अवध आस सब
राषहि प्राना॥ १८१॥ दो॥ राम दरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नार॥ मनहु कोक
कोकी विकल दीन विहीन तमार॥ १८२॥ चौ॥ सीता सचिव सहित दोउ भाई॥ श्रिं
गबेरपुर पहुचे जाई॥ उतरे राम देवसर देषी॥ कीन दंडवत हर्ष बिशे
षी॥ लषन सचिव सीया कीउ प्रनामा॥ सभहि सहित सुष पायो रामा॥ गंग सक
ल मद मंगल मूला॥ सब सुष करन हरन सभ सूला॥ कहि कहि कोटिक क

श्रि
राम॥
२६
त
न

52

था प्रसंगा॥ राम बिलोकहिं गंग तरंगा॥ सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई॥ बि
बुध नदी महिमा अधिकाई॥ मजन कीन पंथ श्रम गयो॥ सुचि जल पीअत मुदित
मन भयो॥ सुमिरत जाहि मिटै श्रम भारू॥ तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारू॥८६॥
दो॰॥ सुध सचिदानंदमय कंद भानकुल केतु॥ चरित करत नर अनुहरत संसृत
सागर सेतु॥८७॥ चौ॰॥ यह सुधि गुहि निषाद जब पाई॥ मुदित लिए प्रिय बंधु बु
लाई॥ लिए फल मूल भेट भरि भारा॥ मिलन चल्यो हिय हरष अपारा॥ करि दंड
उत भेट धरि आगे॥ प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे॥ सहज सनेह बिबस रघु
राई॥ पूछी कुसल निकट बैठाई॥ नाथ कुसल पद पंकज देखे॥ भए भाग भाज
न जन लेखे॥ देव धरनि धन धाम तुम्हारा॥ मै जन नीच सहित परिवारा॥ कृपा क
रि पुर धारिए पाऊ॥ थापिय जन सब लोक सराहू॥ कहेहु सत्य सब सखा सु
जाना॥ मोहि दीन्ह पितु आइस आना॥८८॥ दो॰॥ बरष चारि दस बास बन मुनि ब्रत
चि बेष अहार॥ ग्राम बास नहिं उचित सुनि गुहहि भयो दुख भार॥८९॥ चौ॰॥ राम लखन
सीया रूप निहारी॥ कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी॥ ते पितु मातु कहहु सखि कैसे॥
जिन पठए बन बालक ऐसे॥ एक कहहिं भल भूपति कीना॥ लोइन लाहु हमहि च

जिनदीना॥ तबनिषादपतिउरअनुमाना॥ तरुसीसपालमनोहरजाना॥ लैरघुना
थहिठांउदेषावा॥ कहिउरामसभभांतिसुहावा॥ पुरजनकरिजुहारघरिआए॥
रघुवरिसंध्याकरनसिधाए॥ गुहसंवारसाथरीडसाई॥ कुसकिसलैमेंम्रिदुलसु
हाई॥ सुचिफलमूलम्रिदुलमधुजानी॥ दोनाभरभरराषेसिपानी॥ १८७॥ दो॥
सीयासुमंतभ्रातासहितकंदमूलफलषाइ॥ शैनकीनरघुबंसमनिपाइप
लोवतभाइ॥ १८८॥ चौ॥ उठेलषनप्रभसोवतजानी॥ कहिसचिवहिसोवनम्रि
दुबानी॥ कछुकदूरसजिबानसरासन॥ जागनलगेबैठिबीरासन॥ गुहबु
लाइपाहरूप्रतीति॥ ठांउठांउराषेअतिप्रीती॥ आपलषनसंगिबैठेजाई॥ कटि
भाथासरचापचढाई॥ सोवतप्रभुहिनिहारनिषादु॥ भएप्रेमबसहृदैबिषा
दु॥ तनपुलकितजललोचनबहई॥ बचनसप्रेमलषनसनकहई॥ भू
पतिभवनसुभाइसुहावा॥ सुरपतिसदननपटतरपावा॥ मनिमयरचित
चारचौबारे॥ जनुरतिपतिनिजहाथसवारे॥ १८९॥ दो॥ सुचसुबिचित्रसुभोग
मयसुमनसुगंधसुबास॥ पलँगमंजमणिदीपजिहसबबिधसकलसुपा
स॥ १९०॥ चौ॥ विविधवसनउपधानतुलाई॥ छीरफेनसमबिसदसुहाई॥

तिहसीयारामसैननीसकरही॥सैजछबरातिमनोजमदहरही॥तेसीयाराम
साथरीसोइ॥श्रमतबसनछिनजांछिनजोइ॥मातपितापरजनपुरबासी॥स
षासुसीलसदासमसरदासी॥जुगवहिजिनहिप्रानकीयांई॥महिसोवतसोई
रामगुसांई॥पिताजनकजगविदतप्रभाउ॥ससुरसुरेससषरघुराउ॥राम
चंदपतिसोवैदेही॥सोवतमहिविधिवामनकेही॥सीयारघुवीरकेकानन
जोगू॥कर्मप्रधानसतिकहिलोगू॥१९१॥दो॥केकईनंदनमंदमतिकठिनकु
टलपनकीन॥जेहरघुनंदनजानकीहिसुखअवसरदुखदीन॥१९२॥चौ॥
भैदिनकरकुलविकटपकुठारी॥कुमतिकीन्हसभविस्वदुषारी॥भयोविषा
धनिषादहिभारी॥रामसीयामहिसैननिहारी॥बोलेलषनमधरमृदुबा
नी॥ज्ञानबिरागभगतिरससानी॥काहनकोउदुषसुषकरदाता॥निजकृतक
र्मभोगसबभ्राता॥जोगवियोगभोगभलमंदा॥हितअनहितमध्यमभ्रमफंदा
जनममरनजहलगीजगजालू॥संपतिविपतिकर्मअरुकालू॥धर्मधामधन
पुरपरवारू॥सुरगनरकजेहलगीविउहारू॥देषीसनेहगनेमनमाही॥मो
हमूलपरमार्थनाही॥१९३॥दो॥सपनेहोइभिषारनपरंकुनाकपतिहोइ॥
जागेलाभनहानकछुतिमप्रपंचजीयजोइ॥१९४॥चौ॥ असविचारनहि

उली१ देषिअे सुपन अनेक प्रकारा एहि जग जामिन जागहि जोगी। उली२ होहि विवेक मोह भ्रम भागा तव रघुनाथ चरन अनुरागा उली३ राम ब्रह्म परमारथ रूपा अविगति अलिख अनादि अरूपा

श्री राम २८

कीजीये रोस॥ काहु बादन देईये दोस॥ मोहनीसा सम सोवन हारा॥ परमार्थी
प्रपंच बियोगी॥ जानीये तब ही जीव जग जागा॥ जब सब विषै बिलास बेरागा॥ ८
सषा परम परमार्थ एहू॥ मन कर्म बचन राम पद नेहू॥ सकल विकार रहि
त गति भेदा॥ कहि नित नेत निरूपहि वेदा॥ १९५॥ दो॥ भगत भूमि भूसुर सुरभि
सुर हित लागि कृपाल॥ करत चरित धरि मनुज तन सुनत मिटै जग जाल॥
१९६॥ चौ॥ सषा समुझि अस परहर मोहू॥ सीया रघुबीर चरन रति होहू॥
कहत राम गुन भा भुनसारा॥ जागे जग मंगल दातारा॥ सकल सोच करि रा
म नहावा॥ सुचि सुजान बट छीर मंगावा॥ अनुज सहित सिर जटा बनाई॥
देषि सुमंत्र नैन जल छाई॥ हृदै दाह अति बदन मलीना॥ कहि कर जोर ब
चन अति दीना॥ नाथ कहेउ अस कौशलनाथा॥ लै रथ जाहु राम के सा
था॥ बन दिषाइ सुरसरि अन्हवाई॥ आनहु बेग फेरि दोउ भाई॥ राम लषन
सीया आनहु फेरी॥ संसै सकल संकोच निबेरी॥ १९७॥ दो॥ नृप अस कहेउ गो
सांई जस कहहौं करौं बल सोइ॥ करि बिनती पाइन परेउ दीन बाल जिम
रोइ॥ १९८॥ चौ॥ तात कृपा करि कीजीये सोई॥ जाते अवध अनाथ न होई॥ मं
त्रहि राम उठाइ प्रबोधा॥ तात धर्म मत तुम सब सोधा॥ सिवि दधीच हरी

सोय
55
राम र २८

त हिक

चंदनरेसा॥ सहे धर्म हित कोटि कलेसा॥ रंतिदेव बलि भूप सुजाना॥ धर्म धरेउ सहि
संकट नाना॥ धर्म न दूसर सत्य समाना॥ आगम निगम पुरान बखाना॥ मैं सोइ
धर्म सुलभ करि पावा॥ तजें तिहूं पुर अपजसु छावा॥ संभावित कहुं अपजस ला-
हू॥ मरन कोटि सम दारुन दाहू॥ तुम्ह सन तात बहुत का कहऊं॥ दिएं उतरु फिरि पा-
तकु लहऊं॥१४९॥ दो॥ पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि॥ चिंता
कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि॥१५०॥ चौ॥ तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मो-
रें॥ बिनती करउं तात कर जोरें॥ सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारें॥ दुख न पाव पि-
तु सोच हमारें॥ सुनि रघुनाथ सचिव संबादा॥ भयो सपरिजन बिकल निषादा॥
पुनि कछु लखन कही कटु बानी॥ प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी॥ सकुचि राम
निज सपथ देवाई॥ लखन संदेस कहब जनि जाई॥ कह सुमंत्र पुनि भूप संदेसा॥ स-
हि न सकहि सीया बिपिन कलेसा॥ जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया॥ सोइ रघु-
बीर तुम्हहि करनीया॥ नतरु निपट अवलंब बिहीना॥ मैं न जीउब जिमि जल बिन
मीना॥१५१॥ दो॥ पैकी ससुरें सकल सुख जबहि जहां मन मान॥ तहं तब रहिहि
सुखेन सीया जब लगि बिपति बिहान॥१५२॥ चौ॥ बिनती भूप कीन्ह जेहि भांती॥

संभ

न

क

हे

रा म
राम
२९

आरत बैन घ[illegible] सोक कहि जाती ॥ पित संदेस सुनि कृपा निधाना ॥ सीयहि दीन्ह सि
ष कोटि बिधाना ॥ सास ससर गुर प्रिय परवारू ॥ फीर त सब कर मिटै खिभ
ारू ॥ सुनि पति बचन कहत बैदेही ॥ सुन हु प्रान पति परम सनेही ॥ प्रभु करु
ना मय परम बिबेकी ॥ तन तजि रहति छांह किमि छेकी ॥ प्रभा जाइ कहि भान
बिहाई ॥ कहि चंद्रका चंद तजि जाई ॥ पतिहि प्रेम मय बिनय सुनाई ॥ कहति सचि
व सन गिरा सुहाई ॥ तुम पित ससुर सरि स हितकारी ॥ उतर देउ फिर अनुचित
भारी ॥ २४ ॥ दो ॥ आरत बस सनमुख भई बिलग न मानब तात ॥ आरज सुत पद
कमल बिन बादि जहां लगि नात ॥ २४ ॥ चौ ॥ पित बैभव बिलास मै डीठा ॥ नृप
मनि मकुट मिलित पद पीठा ॥ सुख निधान अस पित गृह मोरे ॥ पीया बिहीन
मन भावन मोरे ॥ ससुर चक्रवै कोसलराऊ ॥ भवन चारदस प्रगट प्रभाऊ ॥
आगे होइ जेहि सुरपति लेही ॥ अरध सिंघासन आसन देही ॥ ससुर एतादृस
अवध निवास ॥ प्रिय परवार मात सम सास ॥ बिन रघुपति पद पदम परागा ॥
मोहि केउ सपनेहु सुखद न लागा ॥ अगम पंथ बन भूमि पहारा ॥ करि केहरि सर
सरित अपारा ॥ कोल कीरात कुरंग बिहंगा ॥ मोहि सब सुखद प्रानपति संगा ॥ २५ ॥

राम
२९
स

अ॰ली॰११ चरनकमलरजकहुसबकहही मानुषकरनमूरकछुअहही

॥दो॥ सासससुरसनमोरहितबिनैकरोपरिपाइ॥ मोरसोचजिंकरीयेकछुमैबनस
षीसभाइ॥ ५६॥ चौ॥ प्राननाथप्रियदेवरसाथा॥ धीरधुरीनधरेधनभाथा॥ नहिमग
श्रमभ्रमदुषमनमोरे॥ मोहिलगिसोचकरीजेजनभोरे॥ सुनिसुमंत्रसीयासीतल
बानी॥ भयोबिकलजिमफणमनहानी॥ नैनीसूझसुनैनहिकाना॥ कहिनसकै
कछुअतिअकुलाना॥ रामप्रबोधकीनबहुभांती॥ तदपिहोइनहिसीतलछाती॥
जतनअनेकसाथहितकीने॥ उचितउतररघुनंदनदीने॥ मेटजाइनाहिरामरजा
ई॥ कठनकर्मगतिकछुनबसाई॥ राममलषनसीयापदसिरनाई॥ फिरेउबनक
जिममूरगवाई॥ ५७॥ दो॥ रथहांकेउहेरामतनहेरहेरहिहिनाहि॥ देषिनिषादबि
षादबसधुनेसीसपछताहि॥ ५८॥ चौ॥ जासबियोगबिकलपसऐसे॥ प्रजा
मातपितजीवहिकैसे॥ बरबसरामसुमंत्रपठाए॥ सुरसरतीरआपतबआ
ए॥ मांगीनावनकेवटआना॥ कहैतुमारमरममैजाना॥ छुहतसिलाभईनारि
सुहाई॥ पाहनतेनकाठकठनाई॥ तरनीउमुनिघरनीहुइजाई॥ बाटपरेमोरी
नाउउडाई॥ इहप्रतपालोसबपरवारू॥ नहिजानउकछुअवरकबारू॥ जौप्र
भुपारअवसगाचहहू॥ मोहिपदपदमपषारनकहहू॥ ५९॥ दो॥ पदपदम

श्रम

नि

हि नहि

धोइचढांनावनांथउतराइचहैं॥मोहिरामराउरआनदसर्थसपथसमसांची
कहैं॥बरतीरमारऊलषनमोहिजबलगिनपांउपषारहैं॥तबलगिनतुलसीदा
सनाथकृपालपारउतारहैं॥२१॥सो॥सुनिकेवटकेबैनप्रेमलपेटेअटपटे॥बिह
सेकरुणाऐनचितैजानकीलषनतन॥२१॥चौ॥कृपासिंधबोलेमुसकाई॥सोइकरजे
हतवनाउनजाई॥बेगआनजलपाइपषारू॥होतबिलंबउतारऊपारू॥जासनाम
सुमरतइकबारा॥उतरहिनरभवसिंधअपारा॥सोइकृपालकेवटहिनिहोरा॥जेहि
जगकीयातिहुंपगथोरा॥पदनषनषदेवसरहरषी॥सुनिप्रभबचनमोहिमतिकर
षी॥केवटरामरजाइसपावा॥पानकठउताभरिलैआवा॥अतिआनंदउमगिअनुरा
गा॥चरनसरोजपषारनलागा॥बर्षसुमनसुरसकलसहांही॥इहसमपुंनिपुंजकौ
ऊनाही॥२२॥दो॥पदपषारजलपानकरिआपसहितपरवार॥पितरपारकरिप्र
भुहिपुनिमुदतगयोलैपार॥२१॥चौ॥उतरठाढभेसुरसरिरेता॥सीयारामगुहलष
नसमेता॥केवटउतरदंडवतकीना॥प्रभहिसकुचइहकछुनहिदीना॥पीयाहीये
कीसीयजाननहारी॥मनमुंद्रीमनमदतिउतारी॥कहेउकृपाललेहुउतराई॥के
वटचरनगहेअकुलाई॥नाथआजमैकहानपावा॥मिटेदोषदुषदारिददावा॥

बज़तकालमैकीनमजूरी॥आजदीनबिधबनिभलभूरी॥अबकछुनाथनचाः
हीयैमोरे॥दीनदयालअनुग्रहतोरे॥फिरतवारमुकहुजोमहिदेवा॥सोप्रसादुमैसिर
लेवा॥२१४॥दो॥बज़तकीनप्रभलषनसीयानहिकछुकेवटलेइ॥बिदाकीनकर
नायतनभगतिविमलवरदेइ॥२१५॥चौ॥तबमजनकरिरघुकुलनाथा॥पूजिपार
थीनायोमाथा॥सीयासुरसरहिकहैकरिजोरी॥मातमनोरथपूरवमोरी॥पतिदे
वरसंगकुसलबहोरी॥आइकरौजेहिपूजातोरी॥सुनिसीयाबिनेप्रेमरसमानी
भईतबबिमलवारवरिबानी॥सुनुरघुबीरप्रियवैदेही॥तउप्रभाउजगबिदित
नकेही॥लोकपहोहिबिलोकततोरे॥तोहिसेवहिसबसिधिकरजोरे॥तुमजोहमहिबडि
उबिनेसुनाई॥कृपाकीनमोहिदीनबडाई॥तदपिदेविमैदेउअसीसा॥सफलहो
हितनिजबागीसा॥२१६॥दो॥प्राननाथदेवरसहितकुसलदेवफिरआइ॥पूजहि
मनकीकामनासुजससुरहैजगछाइ॥२१७॥चौ॥गंगाबचनसुनिमंगलमूला॥मुद
तिसीयासुरसरअनकूला॥तबप्रभुगुहहिकहिउघरिजाहू॥सुनतसूषमुषभा
उरदाहू॥दीनबचनगुहकहिकरिजोरी॥बिनैसुनउरघुकुलमनिमोरी॥नाथ
साथरहिपंथदिषाई॥करिदिनचारिचरनसेवकाई॥जेहिबनजाउरहिबर
छाई॥परनकुटीमैकरबसुहाई॥तबमोकउजसदेउरजाई॥सोईकरउर

रा म
राम
३१

रघुबीरदुहाई॥ सहजसनेहरामलषतासू॥ संगलीनकहिहृदैहुलासू॥ पु
निकहिंग्यातिबोलिसभलीने॥ करिपरतोषबिदासभकीने॥२१८॥ दो॥ तबगनप
तिशिवसिमरप्रभनाइसुरसरहिमाथ॥ सषाअनुजसीयासहिततबगौनकी
नरघुनाथ॥२१९॥ चौ॥ तेहिदिनभयोबिटपतरबासू॥ लषनसषासभकीनसु
पासू॥ प्रातप्रातकृतकरिरघुराई॥ तीर्थराजदीषप्रभजाई॥ सचिवसत्यश्रधा॥
प्रियानारी॥ माधवसरसमीतहितकारी॥ चारपदार्थभराभंडारू॥ पुंनिप्रदेस
देसअतिचारू॥ छेत्रअगमगढगाढसुहावा॥ सपनेनहिप्रतपछनपावा॥
सैनसकलतीरथबरबीरा॥ कलषअनेकदलननरनधीरा॥ संगमसिंघासन
सठसोहा॥ छत्रअषैबटमुनिमनमोहा॥ चवरजमुनअरुगंगतरंगा॥ दिष
होहिदारदभंगा॥२२०॥ दो॥ सेवहिसुकतीसाधसुचिपावहिसभमनकाम॥ बं
दीबेदपुरानगनकहिहिबिमलगुनगाग्राम॥२२१॥ चौ॥ कोकहिसकैप्रागप्रभा
ऊ॥ कलषपुंजकुंजरम्रिगराऊ॥ असतीर्थपतिदेषसुहावा॥ सषसागररघु
पतिसषपावा॥ कहिसीयालषनहिसषहिसुनाई॥ श्रीमुषतीर्थराजबडा
ई॥ करिप्रनामदेषतबनबागा॥ कहितमहातमअतिअनरागा॥ इहबिधिआ
इबिलोकीबेनी॥ सुमरतसकलसुमंगलदेनी॥ मुदिततनहाइकीनशिवसेवा॥

राम
३१

पूजय्या बिधि तीर्थ देवा॥ तब प्रभु भारद्वज पहि आए। करत दंडवत मुनि हीए
लाए॥ मुनि मन मोद न कछु कहि जाई॥ ब्रह्मानंद रासि जनु पाई॥ २२२॥ दो॥ दीन्हि अ
सीस मुनीस उर अति अनंद अस जानि॥ लोचन गोचर सुकृत फल मनहु कीए बिधि
आनि॥ २२३॥ चौ॥ कुसल प्रस्न करि आसन दीने॥ पूजे प्रेम परपूरन कीने॥ कंद
मूल फल अंकुर नीके॥ दीए आनि मुनि मनहु अमी के॥ सीय लखन जन सहित
सुहाए॥ अति रुचि राम मूल फल खाए॥ भए बिगत श्रम राम सुखारे॥ भारद्वज
मृदु बचन उचारे॥ आजु सफल तप तीर्थ त्याग॥ आजु सफल जप जोग बिराग॥
सफल सकल सुभ साधन साजु॥ राम तुम्हहि अवलोकत आजु॥ लाभ अवधि स
न दूजी॥ तुमरे दरस आस सब पूजी॥ अब करि क्रिपा देहु बर एहु॥ निज पद सरसज
सहज सनेहु॥ २२४॥ दो॥ कर्म बचन मन छाड़ि छल जब लगि जन न तुमार॥ तब
लगि सुख सपनेन नही कीये कोटि उपचार॥ २२५॥ चौ॥ सुनि मुनि बचन राम सकु
चाने॥ भाउ भगति आनंद अघाने॥ तब रघुबर मुनि सुजस सुहावा॥ कोटि भां
ति कहि सभहि सुनावा॥ सो बड़ सो सब गुन गन गेहु॥ जेहि मुनीस तुम आद
र देहु॥ मुनि रघुबीर परसपर नवही॥ बचन अगोचर सुख अनुभवही॥ यह
सुधि पाइ प्रयाग निवासी॥ बटु तापस मुनि सिध उदासी॥ भारद्वज आश्रम स

भआए॥ देषहिदसासुरसनमुखभए॥ रामप्रनामकीनसबकाहू॥ मुदितभएलहि
लोचनलाहू॥ देषिसीसपरमसषपाई॥ फिरहिसराहतसेइहताई॥ २२
१ दो॥ रामकीनविश्राम निस प्रातप्रयागनहाइ॥ चलेसहितसीयालषनजन
मुदितमनहुपसिरनाइ॥ २२२॥ चौ॥ रामसप्रेमकहेउमुनिपाही॥ नाथकहि
हमकेहिमगजाही॥ मुनिमनविहसरामसनकहिही॥ सगमसगलमगत
मकोंजहिही॥ साथलागिमुनिसिषबुलाए॥ सुनिमनमुदितपचासकआए॥
सबनरामपरप्रेमअपारा॥ सकलकहहिमगदीषहमारा॥ मुनिबटचार
संगतबदीने॥ जिनबहुजनमसुकृतसमकीने॥ करिप्रनामरिषआइसपाई॥
प्रमुदितहदैचलेरघुराई॥ ग्रामनिकटजबनिकसहिजाई॥ देषहिदरसना
रनरधाई॥ होइसनाथजनमफलपाई॥ फिरहिदुषितमनिसंगपठाई॥
२२३॥ दो॥ विदाकीयेबटुबिनैकरिफिरेपाइमनकाम॥ उतरनहाएजमनजल
जोसरीरसमस्याम॥ २२४॥ चौ॥ सुनततीरबासीनरनारी॥ धाएनिजनिज
कामविसारी॥ लषनरामसीयासेइताई॥ देषकरैनिजभागबडाई॥ अति
लालसासभमनमनमाही॥ नांउगांउपूछतसकुचाही॥ जेतिनमैबईबृध
सयाने॥ तिनकरिजगतिरामपहिचाने॥ सकलकथातिनसमहिसुनाई॥

बनदेखि चलेपित आइसपाई॥ सुनि सविषाद सकल पछुताही॥ रानी राइ कीन
भलनाही॥ तेहि अवसर एक तापस आवा॥ तेजपुंज लघु बैस सुहावा॥ कवि
अलखित गति बेष बिरागी॥ मन क्रम बचन राम अनुरागी॥ २३०॥ दो॥ सज
ल नैन तन पुलक निज इष्टदेव पहिचानि॥ परेउ दंड जिव धरनि तल दसा
न जाइ बखान॥ २३१॥ चौ॥ राम सप्रेम पुलक उर लावा॥ परम रंक जिउ पारस
पावा॥ मनहु प्रेम परमार्थ दोऊ॥ मिलत धरे तन कहु सब कोऊ॥ बहुरि लख
न पाइन सोई लागा॥ लीन उठाइ उमग अनुरागा॥ पुनि सीया चरन धूर धरि
सीसा॥ जननि जानि सिस दीन असीसा॥ कीन निषाद दंडवत तेही॥ मिलेउ मुद
त लख राम सनेही॥ पीयत नैन पुट रूप पियूषा॥ मुदत सुअसन पाइ जिम भू
षा॥ ते पित मात कहु सखि कैसे॥ जिन पठए बन बालक ऐसे॥ राम लषन
सीया रूप निहारी॥ सोच सनेह बिकल नर नारी॥ २३२॥ दो॥ तब रघुबीर अने
क बिध सखहि सिखावन दीन॥ राम रजाइ ससीस धरि भवन गवन तिह कीन॥ २३३॥
चौ॥ पुनि सीया राम लषन कर जोरी॥ जमनहि कीन प्रनाम बहोरी॥ चले स
सीय मुद दोऊ भाई॥ रवि कंन्या की करत बडाई॥ पथक अनेक मिले मग जाता॥
कहे सप्रेम देख दोऊ भ्राता॥ राज लषन सभ अंग तुमारे॥ देख सोच अति ह

रा
राम

देहमारे॥मारगचलहुपयादेपाई॥जोतकुठहमारेमाई॥मगमवंधगिर
काननभारी॥तिहमैनारसाथसुकुमारी॥करिकेहरबनजाइनजोई॥हम
संगिचलहिजुआइसहोई॥जाउजहांलगितहपहुचाई॥फिरहबहुरतु
महिसिरनाई॥२३४॥दो॥इहबिधपूछहिप्रेमबसपुलकगातजलनैन॥कृ
पासिंधफेरहितिनहकहिबिनीतम्रिदबेन॥२३५॥चौ॥जेपुरगांउबसैमग
माही॥तिनहिनागसुरनगरसिहाही॥केहिसुकृतीकेहघरीबसाए॥ध
न्यपुन्यमैपरमसुहाए॥जहतहरामचरनचलिजाही॥तिहसमानअमरावत
नाही॥पुन्यपुंजमगनिकटनिवासी॥तिनहिसराहहिसुरपुरबासी॥जेभरिनै
नबिलोकहिरामहि॥सीतालखनसहितघनस्यामहि॥जोसरसरितरामः
अवगाहै॥तिनहिदेवसरिसरितसराहै॥जेहतरुतरप्रभुबैठहिजाई॥कर
हिकलपतरतासबडाई॥परसरामपदपदमपरागा॥मानतभूमभू
रनिजभागा॥२३६॥दो॥छांहकरहिघनबिबुधगनबर्षहिसुमनसिहा
हि॥देखतगिरबनबिहगम्रिगरामचलेबनजाहि॥२३७॥चौ॥सीताल
खनसहितरघुराई॥गांउनिकटजबनिकसहिजाई॥सनिसमबालब्रि
धनरनारी॥चलहितुरतग्रिहकाजबिसारी॥रामलखनसीयारूपनि

॥३३॥ राम ॥३३॥

हरी॥ पाइ नैन फल होहिं सुषारी॥ सजल बिलोचन पुलक सरीरा॥ सब भए मगन
देषि दोउ बीरा॥ बरनि न जाइ दसा तिन केरी॥ लहि जनु रंकन सुरमनि ढेरी॥ एकन
एक बोलि सिष देहीं॥ लोचन लाहु लेहु छिन एहीं॥ रामहि देषि एक अनुरागी॥ चित
वत चले जाहिं संग लागी॥ एक नैन मग छबि उर आनी॥ होहिं सिथिल तन मन बर
बानी॥ २३८॥ दो॥ एक देषि बट छाहँ भलि डासि मृदुल तृन पात॥ कहहिं गवाँइयै छिनुक
श्रम गवनियै कि धौं प्रात॥ २३९॥ चौ॥ एक कलस भरि आनहिं पानी॥ अँचइयै नाथ कहहिं मृदु
बानी॥ सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देषी॥ राम कृपाल सुसील बिसेषी॥ जानी श्रमित सी
या मन माहीं॥ घरिक बिलंबु कीन्ह तरु छाहीं॥ मुदित नारि नर देषहिं सोभा॥ रूप अनू
प नैन मनु लोभा॥ एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा॥ रामचंद मुष चंद चकोरा॥ तरु
न तमाल बरन तनु सोहा॥ देषत कोटि मदन मनु मोहा॥ दामिनि बरन लषन सुठि नी
के॥ नष सिष सुभग भावते जी के॥ मुनि पट कटिन्ह कसें तूनीरा॥ सोहहिं कर कमल
नि धनु तीरा॥ २४०॥ दो॥ जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नैन बिसाल॥ सरद पुरब
बिधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल॥ २४१॥ चौ॥ बरनि न जाइ मनोहर जोरी॥ सोभा बहु
त थोरि मति मोरी॥ राम लषन सिय सुंदरताई॥ सब चितवहिं चित मन मति लाई॥ थके
नारि नर प्रेम पिआसे॥ मनहु मृगी मृग देषि दिआ से॥ सीय समीप ग्रामतिय जाहीं॥ पू

धतसमाचारसकुचाही॥बारबारसमभलगाहिंपाए॥कहैंबैनमृदसरससुलए॥रा
मकुमारबिनैहमकरही॥तियासमाउकछुएकतडरही॥स्वामनिमबिनयसमव
हमारी॥बिलगनमानबजानगवारी॥राजकुअरदोउसरजसलौने॥इनतेलह
हीदुतिमरकतिसोने॥२४२॥दो॥स्यांमलगौरकिसोरवरसुंदरसुखमाऐन॥सरदसर
वरीनाथमुखसरदसरोरुहनैन॥२४३॥चौ॥कोटमनोजलजावननहारे॥सुमुखि
कहाकोअहहितुम्हारे॥सुनिसनेहमयमंजुलबानी॥सकुचसीयमनमहिमुसका
नी॥तिनहिबिलोकिबिलोकतधरनी॥दोहसकोचसंकुचतवरवर्नी॥सकुचसप्रे
मबालमृगनैनी॥बोलीमधुरबचनपिकबैनी॥सहजसुभाइसुभगतनगोरे॥ना
मलषनलघुदेवरमोरें॥बहुरबदनबिधुअंचरढाकी॥पीयातनचितैभौंहकर
रिबांकी॥षंजनमंजुतरीछैनैना॥निजपतिकहिउतिनहिसीयासैना॥भईमुद
तसबग्रांमबधूटी॥रंकनराइरासजनलूटी॥२४४॥दो॥अतिसप्रेमसीयापाइ
परिबहुबिधिदेहिअसीस॥सदासुहागनहोहितुमजबलगमहिअहिसीस॥२
४५॥चौ॥पारबतीसमपतिप्रियाहोउ॥देवनहमपरिहरिअजिबोहूं॥पुनिपुनिबिने
करैकरिजोरी॥जोइहमारगफिरोबहोरी॥दर्सनदेउजानिनिजदासी॥लषीसीया
सभप्रेमपियासी॥मधुरबचनकहिसीयापरतोषी॥जिमकुंमदनीकैमदीपोषी॥त

बहिरत्नबनरघुबररजधानी॥ एकयोममग्लोचनमूदबानी॥ सुनततनारनरम
एडुबारी॥ पुलकतगातविलोचनवारी॥ मिटामोदमनभएमलीना॥ बिधहीन
दीनलेतजनछीना॥ सममजकर्मगतिधीजकीना॥ सोधसगममगातिनकरिदीना
२४६॥ दो॥ लखनजानकीसहिततबभगवनकीनरघुनाथ॥ फेरेसमभिप्रियबचन=
कहिलीएलोइमनसाथ॥ २४७॥ चौ॥ फिरतनारनरजतिपकतासी॥ दयीदोसदोसु
देहैमनमाही॥ सहतबिषादपरसपरकहिहै॥ बिधकरतवउलटैसमजानिहि॥ नि
पटनिरंकसनिठरभिसंकू॥ जेहससिकीनसजसकलंकू॥ रूषकलपतरसाग
रखारा॥ तिनहिपठेबनराजकुमारा॥ जोपेइनेदीनबनबासू॥ कीनबाद
बिधभोगबिलासू॥ एबिचरहिमगबिनपदत्राना॥ रचेबादबिबिधबाहन
नाना॥ इहमहिपरिहिकुसकुसपाता॥ सुभगसेजकतसिरजीबिधाता॥ त
रवरवासइनहिबिधदीना॥ धवलधामरचिरचिस्रमकीना॥ २४८॥ दो॥ जोरसम
नेपटधरजटलसुंदरसठसकुमार॥ बिबिधभांतिभखनबसनबादकीएकर
तार॥ २४९॥ चौ॥ जोएकंदमूलफलखांही॥ बादसधादिअसनजगमांही॥ एक
कैहैइहसहजसुहाई॥ आपप्रगटभएबिधनबनाई॥ देबजहांबेजभवन
दसचाही॥ कहहंसपुरबकहंअसनारी॥ इनहिदेखबिधमनअनरागा॥

अ
राम
२५

पटतरजोगबनावनलागा॥ कीनबहुतस्रमएनहीआए॥ तेहइरषाबन
आनदुराए॥ एककहैहमबहुतनजानहि॥ आपहिधंनपरमकैमानहि॥ ते
पुनिपुंनपुंजहमलेषे॥ जेदेषहिदेषहिजिनदेषे॥२५०॥ दो॥ इहविधिकहि
कहिबचनप्रियलीननैननभरिनीरि॥ कीमलहिहैमारगअगमसठिसु
कुमारसरीर॥२५१॥ चौ॥ नारसनेहबिकलसमहोई॥ चकईसांजसमैज
नसोई॥ म्रदपदकमलकठनमगजानी॥ गहवरहदैकहिहवरबानी
परसतम्रदलचरनअरुनारे॥ सकचतमहिजिमहदेहमारे॥ जौजगदी
सइनहिबनदीना॥ कसनसमनमयमारगकीना॥ जोमांगापाईऐबिध
पाही॥ एरषीअहिसषआंषनमाही॥ जेनरनारनअवसरआए॥ तिंसिसी
यारामनदेषनपाए॥ सुनिसरूपबूझहिअकुलाई॥ अबलगिगएकहां
लगीभाई॥ समरथधाइबिलोकहिजाई॥ फिरहिप्रमदितजनमफलपाई॥
२५२॥ दो॥ अबलाबालकब्रिधजनकरमीजहिपछताहि॥ होहिप्रेमबसलोग
सबरामजहांजहांजाहि॥२५३॥ चौ॥ गांउगांउअसहोइअनंदू॥ देषभानकु
लकैरवचंदू॥ जेकछुसमाचारसनिपावहि॥ तेन्रपरानहिदोसलगावहि॥

राम
२५

कहहिएकअतिभलनरनाहू॥दीनहहमहिजेहिलोचनलाहू॥कहैपरस
परलोगलोगाईं॥बातैसरलसनेहसुहाईं॥तेपितुमातधंनजिनजाए॥ध
न्यसुनगरजहांतेआए॥धंन्यसुदेससैलबनगांऊ॥जहंजहंजाहिधंन्यसो
ठाऊं॥सुषपायोबिरंचरचितेही॥ऐजेहिकेसभभांतिसनेही॥रामलषन
पथकथासुहाई॥रहीसकलमगकाननछाई॥२५४॥दो॥एहिबिधरघुकुल
कमलरविमगलोगनसुषदेतु॥जाहिचलेदेषतबिपिनसियसौमित्रसमे
त॥२५५॥चौ॥आगेरामलषनबनेपाछें॥तापसबेषबिराजतकाछें॥उभैबी
चसीयासोहतकैसे॥ब्रह्मजीवबिचमायाजैसे॥बहुरिकहौंछबिजसमन
बसही॥जनुमधमदनमध्यरतिलसही॥उपमाबहुरकहौंजीयजोही॥

बीच

जनुबुधबिधबिचरोहनसोही॥प्रभपदरेषबीचसीता॥धरतचरनम
गचलतसभीता॥सीयारामपदअंककबराए॥लषनचलहिमगदाहिन
लाए॥रामलषनसीयाप्रीतसुहाई॥बचनअगोचरकिमकहिजाई॥
षगमृगमगनदेषछबिहोही॥लएचोरचितरामबटोही॥२५६॥दो॥जि
नदेषेपथकप्रियासीयासमेतदोउभाइ॥भवमगअगमअनंदतेबि
नस्रमरहेसिराइ॥२५७॥चौ॥अजहंजासुउरसपनेहिकाऊ॥बसहिलषनसियराम

सीयालषनबटाऊ॥रामधामपथपावहिसोई॥जोपथपाउकबहुमुनि
कोई॥तबरघुबीरस्रमतसीयाजानी॥देषीतबनसरसैलसोहाए॥बा
लमीकआश्रमप्रभुआए॥रामदीषमुनिबासुसुहावन॥सुंदरगिरकानन
जलपावन॥सरनसरोजबिटपबनफूले॥गुंजतमंजमधुपरसभूले॥
षगमृगबिपुलकुलाहलकरहीं॥बिचरहिबैरबिगतमनचरही॥२५८॥
दो॥सुंदरसुचआश्रमनिरषहरषेराजवनैन॥सुनिरघुबरआगमनमुनिः
आगेआयोलैन॥२५९॥चौ॥मुनिकोरामदंडवतकीना॥आसिरबाद
बिप्रबरदीना॥देषरामछबिनैनजुड़ाने॥करीसनमानआश्रमहि
आने॥मुनिवरअतिथप्रानप्रियापाए॥कंदमूलफलमधुरमगाए
सीयासोमित्ररामफलषाए॥तबमुनिआश्रमदीएसुहाए॥बालमीक
मनआनंदभारी॥मंगलमूर्तिनैननिहारी॥तबकरकमलजोररघु
राई॥बोलेबचनश्रवनसुषदाई॥तुमत्रिकालदर्सीमुनिनाथा॥बिस
वदरजिमतुमरेहाथा॥असकहिप्रभुसबकथाबषानी॥जिहजिहभांत
दिनबनरानी॥२६०॥दो॥तातबचनपुनिमातहितभाइभरतअसरा
उ॥मोकोदर्सतुमारप्रभुसभिममपुन्निप्रभाउ॥२६१॥चौ॥देषपाइमु

दिराजतुमारे॥ भएसुकृतसबसुफलहमारे॥ अबजिहराउरआयसुहो
ई॥ मुनिउदबेगनपावैकोई॥ मुनितापसजिन्हतेदुषलहही॥ तेनरेसबिन
पावकदहही॥ मंगलमूलविप्रपरितोषू॥ दहैकोटिकुलभूसुररोषू॥ असजीयजा
नकहिसोइठाऊ॥ सीयासौमित्रसहिततिहजाऊ॥ तिहरचिरुचिरपर्नत्रिनशाला
बासकरोकछुकालकृपाला॥ सहजसरलसुनिरघुबरबानी॥ साधसाधबोले
मुनिग्यानी॥ कसनकहहुअसरघुकुलकेतू॥ तुमपालकसंततश्रुतिसेतू॥ २६२॥
छंद॥ श्रुतिसेतपालकरामतुमजगदीसमायाजानकी॥ जोसृजतिजगपालतिह
रतिरुषपाइकृपानिधानकी॥ जोसहंससीसअहीसमहिधरलषनसचर
चरधनी॥ सुरकाजधरिनरराजतनुचलेदलनषलनिशिचरअनी॥ २६३॥ सो॥
रामसरूपतुमारबचनअगोचरबुधपरि॥ अबगतिअकथअपारनेतिने
तिनितनिगमकहि॥ २६४॥ जगपेषनतुमदेषनहारे॥ बिधहरिशंभुनचावन
हारे॥ तेनहिजानहिमरमतुमारे॥ अउरतुमहिकोजाननहारे॥ सोइजानहि
जिहदेउजनाई॥ जानततुमहितुमेहोइजाई॥ तुमरीकृपातुमहिरघुनंदन॥ जा
नहिभक्तभक्तउरचंदन॥ चिदानंदमयदेहतुमारी॥ बिगतविकारजानअ
धिकारी॥ नरतनधरिओसंतसुरकाजा॥ कहहुकरहुजसप्राकृतराजा॥

रामदेषिसुनिचरीततुमारे॥जडमोहहिबुधहोहिसुषारे॥तुमजोकहहु
करहुसबसाचा॥जसकाछीयतसचाहिअनाचा॥२६५॥दो॥पूछहुमोहि
किरहहुकहु[illegible]सकुचाउ॥जहनहोइतहदेहुकहितुमहिदेषाउठाउ
२६६॥चौ॥सुनिमुनिबचनप्रेमरससाने॥सकुचरामसनमहिमुसकाने
र बाल्मीकहसकहहिबहोरी॥बानीमधुरअमीअरसबोरी॥सुनहुरामअब
कहोनिकेता॥जहांबसहुसीयालषनसमेता॥जिनकेश्रवनसमुद्रसमा
ना॥कथातुमारसुभगसरनाना॥भरहिनिरंतरहोइनपूरे॥तिनकेहदे
तुमकोघरीरूरे॥लोचनचात्रिकजिनकरिराषे॥रहहिदरसजलधरअ-
भिलाषे॥निदरहिसरतसिंधसरभारी॥रूपबिंदजलहोहिसुषारी॥ति
नकेहदेसदनसुषदाइक॥बसहुबंधसीयासहरघुनाइक॥२६७॥दो॥
जसतुमारमानसबिमलहंसनजीहाजासु॥मुकताहलगुनगनचुन
हिरामबसहुहियेतासु॥२६८ चौ॥प्रभुप्रसादसुचिसुभगसुबासा॥
सादरजासुलहैनितनासा॥तुमहिनिवेदतभोजनकरही॥प्रभुप्रसा
दपटभूषनधरही॥सीसनिवैसुरगुरद्विजदेषी॥प्रीतसहितकरिबि
नैविशेषी॥करीनितकरहिरामपदपूजा॥रामभरोसहदैनहिदूजा॥

74

चरन राम तीर्थ चलि जाहीं॥ राम बसहु तिन के मन माहीं॥ मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा॥ पूजहिं तुम्हहि सहित परवारा॥ तर्पन होम करहिं बिधि नाना॥ बिप्र जेवाइ देहिं बहु दाना॥ तुम्ह ते अधिक गुरहि जिय जानी॥ सकल भाइ सेवहिं सनमानी॥ १२८॥ दो॥ सब करि मांगहिं एक फल राम चरन रति होइ। तिन के मन मंदिर बसहु सीया रघुनंदन दोइ॥ १२९॥ चौ॥ काम क्रोध मद मान न मोहा॥ लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥ जिन के कपट दंभ नहिं माया॥ तिन के हृदै बसहु रघुराया॥ सब के प्रिय सब के हितकारी॥ दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥ कहहिं सति प्रिय बचन बिचारी॥ जागत सोवत सरन तुम्हारी॥ तुम्हहि छाडि गति दूसरि नाहीं॥ राम बसहु तिन के मन माहीं॥ जननी सम जानहिं परनारी॥ धन पराव विष ते विष भारी॥ जे हर्षहिं पर संपति देखी॥ दुखित होइ पर बिपति बिसेषी॥ जिन्हहि राम तुम प्रान प्यारे॥ तिन के मन सुभ सदन तुमारे॥ १३०॥ दो॥ स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन के सब तुम तात॥ मन मंदर तिन के बसहु सीया सहित दोउ भ्रात॥ १३१॥ चौ॥ अवगुन तजि सब के गुन गहहीं॥ बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥ नीति निपुन जिन के जग लीका॥ घर तुमार तिन कर मन नीका॥ गुन तुमार समझै निज दोसा॥ जिहि सब भांति तुमार भरोसा॥ राम भक्त प्रिय लागहिं

जेहीं॥ तेहु अरबसहु सहित बैदेहीं॥ जातपात धन धाम बड़ाई॥ प्रीया परवारि
सदन सुखदाई॥ सब तजि तुम्हहि रहै लौ लाई॥ तिन के हृदै बसहु रघुराई॥
सरग नरक अपवर्ग समाना॥ जहँ तहँ देखै धरे धनु बाना॥ कर्म बचन म
न माउर चेरा॥ राम करहु तिन के हीयै डेरा॥ २७३॥ दो॥ जाहि न चाहिय कबहि क
छु तुम्ह सन सहज सनेह॥ बसहु निरंतर तासु मन सो रावर निज गेह॥ २७४॥
चौ॥ जेन्हि छुधित भोजन न करवावै॥ ग्रीषम रितु प्यासन जल प्यावहि॥ नगनहि
देहि बसन उपरधामा॥ सनीगत राखहि जिम प्राना॥ बिप्रन ने अमा उप्माने॥ गु
न अवगुन कछु मन नहि आने॥ हरि हर भक्ति करै बिन आसा॥ राम करहु ति
न के मन बासा॥ एहि बिधि मुनिवर भवन दिखाए॥ बचन सप्रेम राम मन भाए॥
कहि मुनि सुनहु भानुकुलनाइक॥ आश्रम कहु समै सुखदाइक॥ चित्रकूट गिर
करहि निवासु॥ तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासु॥ सैल सुहावन कानन चारु॥ कर
केहरि मृग विहंग विहारु॥ नदी पुनीत पुरान बखानी॥ अत्रि प्रिया निज तप ब
ल आनी॥ सुरसरि धार नाम मंदाकिन॥ जो सब पातक पोतक डाकिन॥ अत्रि
आदि मुनिवर बसहीं॥ करहि जोग जप तप तन कसहीं॥ चलहु सफल श्र
म सब करि करहु॥ राम देहु गौरव गिरिवरहु॥ २७५॥ दो॥ चित्रकूट महिमा

अमितकहीमहामुनिगाइ॥आइनहाएसरितवरसीआसमेतदोउभाइ॥१
३२॥चौ॥रघुबरिकहिउलखनभलघाटू॥करहुकतहुंअबठाहरठांउ॥लखनदी
खपाउउतरकनारा॥चहुंदिसफिरेउधनकजिमनारा॥नदीपनचसरसमद
ससना॥सकलकलुषकलसाउजनाना॥चित्रकूटजनुअचलअहेरी॥चुकैन
घातमारमुठभेरी॥असकहिलखनठांउदिखरावा॥थलबिलोकरघुबरसु
खुपावा॥रम्योराममनदेवनजाना॥चलेसहितसुरपतिपरधाना॥कोलकि
रातिबेषसबआए॥रचेपरिनतृनसदनसुहाए॥बरनिनजाइमंदुइसाला॥ए
कललितलघुएकबिशाल॥१३३॥दो॥लखनजानकीसहतप्रभराजतपर्नन
केत॥सोहिमदनमुनिबेषधरिरतिरितराजसमेत॥१३४॥चौ॥अमरनागकिं
नरदिसपाला॥चित्रकूटआएतिहकाला॥रामप्रनामकीनसभकाहू॥मुदितदे
वलहिलोचिनलाहू॥बरषसुमनकहिदेवसमाजू॥नाथसनाथभएहमआ
जू॥करिबिनतीदुखदुसहिसनाए॥हर्षितनिजनिजसदनसिधाए॥चित्रकू
टरघुनंदनछाए॥समाचारसुनिसुनिमुनिआइ॥आवतदेखमुदतमुनिबृं
दा॥कीनदंडवतरघुकुलचंदा॥मुनिरघुबरहिलाइउरलेही॥सुफल

राम होनहितआशीषदेंही॥सीयासोमित्रराम छबिदेषी॥साधनसकलसफलकर 77
राम लेषी॥२७९॥दो॥यथाजोगसनमानप्रभुबिदाकीएमुनिबृंद॥करहिंजोगज
३९ पजागतपनिजआश्रमनसुछंद॥२८०॥चौ॥यहिसुधिकोलकिरातनपाई॥ राम
हर्षतजननवनिधिघरआई॥कंदमूलफलभरिभरिदौना॥चलेरंकजन ३९
लूटतसौना॥तिनमहिजिनदेषेदोउभ्राता॥अपरतनहिपूछैमगजाता॥
कहतसुनतरघुबीरनिकाई॥आइसबनदेषैरघुराई॥करहिंजुहारभेट
धरिआगे॥प्रभुहिबिलोकहिंअतिअनुरागे॥चित्रलिषैजनजिहतिहठाढे॥
पुलकसरीरनैनजलबाढे॥रामसनेहमगनसभजाने॥कहिप्रियबचन
सकलसनमाने॥प्रभुहिजुहारबहोरबहोरी॥बचनबिनीतकहैकरजोरी॥२
८१॥दो॥अबहमनाथसनाथसबभएदेषप्रभुपाइ॥भागहमारेआगमनरा
वरकौशलराइ॥२८२॥चौ॥धंन्यभूमिबनपंथपहारा॥जिहजिहनाथपंपतु
मधारा॥धंन्यबिहगमृगकाननचारी॥सफलजनमभएतुमहिनिहारी॥हम
सभधन्यसहितपरवारा॥देषिदर्समरिनैनतुमारा॥कीनबासभलठां
उबिचारी॥इहांसकलरितुरहोसुषारी॥हमसभभांतिकरोंसेवकाई॥कर

केहरि नाग हि बाघ बराहा॥ बन बेहड गीर कंदर खोहा॥ सब हमार प्रभु पग
पग जोहा॥ तहं तहं तुम्हहि अहेर खेलाउब॥ सर नीरझर जलठाउं देखाउब॥ ह
म सेवक परिवार समेता॥ नाथ न सकुच कहब कछु देता॥ २८३॥ दो॥ वेद बचन
मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन॥ बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक
बैन॥ २८४॥ चौ॥ रामहि केवल प्रेम पियारा॥ जानि लेउ जो जाननिहारा॥ राम सक
ल बनचर तब तोषे॥ कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे॥ बिदा कीए सिर नाइ सि
धाए॥ प्रभु गुन कहत सुनत घर आए॥ एहि बिधि सीय समेत दोउ भाई॥ बस
हि बिपिन सुर मुनि सुखदाई॥ जब ते आइ रहे रघुनाइक॥ तब ते भयो बन मं
गलदाइक॥ फूलहि फलहि बिटप बिधि नाना॥ मंजु कलित बर बेलि बिताना॥
सुरतरु सरिस सुभाइ सुहाए॥ मनहु बिबुध बन परिहरि आए॥ गुंज मंजु
तर मधुकर श्रेनी॥ त्रिबिध बयारि बहै सुखदेनी॥ २८५॥ दो॥ नीलकंठ कल
कंठ सुक चातक चक्क चकोर॥ भांति भांति बोलहि बिहग श्रवन सुखद चित
चोर॥ २८६॥ चौ॥ करि केहरि कपि कोल कुरंगा॥ बिगत बैर बिचरहि सब
संगा॥ फिरत अहेर राम छबि देखी॥ होहि मुदित मृगबृंद बिसेषी॥ बिबि

गम धविवनजहंलगिजगमांही॥देषिरामबनसकलसिहाही॥सुरसरसरसदि 79
राम नकरिकंन्या॥मेकलसुतागोदावरधंन्या॥सबसरसिंधनदीनदनाना॥
४० मंदाकिनकरिकरहिबषाना॥उदेअसतगिरिअरुकैलासु॥मंदरमेरसराम
च कलसरबासु॥सैलहिमांचलआदिकजेते॥चित्रकूटजसगावहितेते॥बिंधि
धमुदतमनेसुषनसमाई॥श्रमबिनबिपुलबडाईपाई॥१३८॥दो॥चित्र ४०
ग त्रकूटकेबिहंगम्रिगबेलबिटपत्रिनजात॥पुन्यपुंजसबधन्यअसकहिहदेव
दिनरात॥१३८॥चौ॥नैनवंतरघुबरहिबिलोकी॥पाइजनमफलहोहिबिसोकी॥
सोकी॥परसचरनरजअचरसुषारी॥भएपरमपदकेअधिकारी॥सोबन
सैलसुभाइसुहावन॥मंगलमैअतपावनपावन॥महिमाकहैकउनबिध
तासु॥सुषसागरजिहकीननिवासु॥पयपयोधतजिअवधबिहाई॥जिह
सीयालषनरामरहेआई॥कहिनसकहिसुषमाजसकानन॥जोसतस
हसहोइसहसानन॥सोमैबरनिकहोबिधकेही॥डाबरकमठकिमंदर
लेही॥सेवहिलषनकरममनबानी॥जाइनसीलसनेहबषानी॥१३९॥दो॥
न छिनछिनलषसीयारामपदजानआपपरनेह॥करतनसुपनेहुलषन

चितबंधमातपितुगेह॥२९०॥चौ॥रामसंगसीयारहतसुखारी॥पुरपरजनग
ह्सुरतबिसारी॥छिनछिनपियाबिधुबदननिहारी॥प्रमुदितमनहुचकोरकुमा
री॥नाहनेहनितबढतबिलोकी॥हर्षितरहतदिवसजिमकोकी॥सीयामनरामच
रनअनुरागा॥अवधसहससमबनप्रियालागा॥परनकुटीप्रियप्रीतमसंगा॥प्रि
यपरिवारकुरंगबिहंगा॥सासससुरसममुनितियमुनिवर॥असनअमीसमकं
दमूलफर॥नाथसाथसाथरीसुहाई॥मैनसैनसमसीयासुखदाई॥लोकपहो
हिबिलोकतजासु॥तेहिकिमोहसकबिषैबिलासु॥२९१॥दो॥सुमिरततरामहितजेन
जिनतृणसमबिषैबिलास॥रामप्रियजगजननीसीयाकछुनअचरजतास॥२९२॥
चौ॥सीयालषनजेहविधसुषलहिहि॥सोईरघुनाथकरसोईकहहि॥कहहि
पुरातनकथाकहानी॥सुनहिलषनसीयाअतिसुषमानी॥जबजबरामअव
धसुधकरहीं॥तबतबबारबिलोचनभरहीं॥सुमिरमाततपितपरजनभाई॥
भर्थसनेहसीलसेवकाई॥कृपासिंधुप्रभुहोहिदुषारी॥धीरजधरहिकुसमौ
बिचारी॥लषसीयालषनबिकलहोइजाहीं॥जिमपुरषहिअनुसरपरछाहीं॥
प्रियाबंधुगतिलषिरघुनंदन॥धीरकृपालभक्तउरचंदन॥लगेकह
नकथापुनीता॥सुनिसुषलहैलषनअरुसीता॥२९३॥दो॥रामलषनसीतास

रा
राम
४१

हतसोहतपर्ननिकेत ॥ जिमबासव बस अमरपुर सचीजयंत समेत ॥ २८४ ॥
चौ ॥ जगावहि प्रभ सीया लखन हि कैसे ॥ पलक बिलोचन गोलक जैसे ॥ सेवहि
लखन सीय रघुबीरहि ॥ जिम अबिबेकी पुरष सरीरहि ॥ एह बिध प्रभ बन ब
सहि सुखारी ॥ खग मृग सुर तापस हितकारी ॥ कहिउ राम बन गौन सुहावा ॥ सु
नहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ॥ फिरेउ निषाद प्रभहि पहुचाई ॥ सचिव सहि
त रथ देखेसि आई ॥ मंत्री बिकल बिलोक निषादू ॥ कहि न जाइ जस भयो बिषा
दू ॥ राम राम सीया लखन पुकारी ॥ परेउ धरनितल ब्याकुल भारी ॥ २८५ ॥ दो ॥ न
त्रिन चरहि न पीयहि जल मोचहि लोचन बार ॥ ब्याकुल भए निषाद सब र
घुबर बाजि निहार ॥ २८६ ॥ चौ ॥ धरि धीरज तब कहइ निषादू ॥ अब सुमंत्र प
रहरहु बिषादू ॥ तुम पंडत परमार्थ ग्याता ॥ धरहु धीर लख बाम बिधाता ॥ बि
बिध कथा कहि कहि म्रिदु बानी ॥ रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥ सोक सिथिल र
थ सकै न हांकी ॥ रघुबर बिरह पीर उर बांकी ॥ तरफराहि मग चलहि न घो
रे ॥ बन मृग मनहु आनि रथ जोरे ॥ अटक परहि फिर हेरहि पीछे ॥ राम
बियोग बिकल दुख तीछे ॥ जो कहै राम लखन बैदेही ॥ हिंकर हिंकर हित हेर

राम
४१

81

ह्रितेही॥ बाजबिरहिगतिकैमकहिजाती॥ बिनमनफनगबिकलजेहभांती
२९७॥ दो॥ भयोनिषादबिषादबस देषतसचिवतुरंग॥ बोलिसुसेवकचारत
बदएसचिवकेसंग॥२९८॥ चौ॥ गुहसारथिहिफिरपहुचाई॥ बिरहबिषादब
रननहिजाई॥ चलेअवधलेइरथहिनिषादा॥ होहिछिनहिछिनमगनबिषाद
सोचसुमंतबिकलदुषदीना॥ धिगजीवनरघुपतिबिहीना॥ रहैनअंत
हुअधमसरीरु॥ जसनलहेउबिछुरतरघुबीरु॥ भएअजसअघभाज
नप्राना॥ कवनहेतनहिकरेपयाना॥ मीजहिहाथसिरधुनपछिताई॥ मन
हुकृपनधनरासिगवाई॥ अहैमंदमतिअवसरचूका॥ अजहुनहियेहोतदु
इटूका॥ बिर्दबांधबरबीरकहाई॥ चलेसमरजनसुभटपराई॥ २९९॥ दो॥ बि
प्रबिबेकीबेदबिधसंमतसाधसुजात॥ जिमधोषेमदपानकरसचिवसोच
तिहभांत॥ ३००॥ चौ॥ जिमकुलीनतीयासाधसयानी॥ पतिदेवताकर्ममनबा
नी॥ रहैकर्मबसपरहरनाहु॥ सचिवहिहदेतिमदारनदाहु॥ लोचनसजलडी
ठभैथोरी॥ सुनैनश्रवनबिकलमतिभोरी॥ सूषहिअधरलागमुषलाटी॥
जीउनजाइउरअवधकपाटी॥ बिबर्नभयोनजाइनिहारी॥ मारसमनहु

82

श्री राम ॥८२॥

पितामतहितकारी ॥ हनगीलानवेपतमनव्यापी ॥ जमपुरपंसोचजिमपावी ॥
बेचननक्षावहदेपछुताई ॥ क्रोधकहामैदेवोजाई ॥ रामरहितरतदेवी
हिजोरी ॥ सकुचहिमोहिमोहिविलोकतमोरी ॥ २१ ॥ दो ॥ धाइ एक कैहहिजबसिमहि
विकलनगरनरनार ॥ उतरदेउमैपहिवहितबहदेवजबेकर ॥ २२ ॥ चौ ॥ पुछहि
दीनीदुख्यतसबमाता ॥ कहिविवकहामैतेनहिविधाता ॥ पछहिजबहिलषन
महितारी ॥ कहिहैकवनसंदेससुखारी ॥ रामजननजबआएधाई ॥ सुमर
वछजिमधेनलवाई ॥ पछतउतरदेवमैतेही ॥ गवनेरामलषनवैदेही ॥ जो
पछैतेहउतरदेउ ॥ जाइअवधअबयहसुषलेउ ॥ पछहिजबहिराउदुखदी
ना ॥ जीयनजासुरघुवीरविहीना ॥ देहौंउतरकौनमुखलाई ॥ आयोकुसलकु
यरपहुचाई ॥ सुनतलषनसीयारामसंदेसु ॥ तिनजिमतनपरहरेनरेसू ॥ २३ ॥
दो ॥ हृदैनविदरयोपंकजिमिबिछुरतप्रीतमनीर ॥ जानतहौंमोहिदीनविधि इ
हजाततनासरीर ॥ २४ ॥ चौ ॥ इहिविधिकरैपंथपछितावा ॥ तमसातीरतुरतरथआ
वा ॥ बिदाकीयेकरिविनैनिषादू ॥ फिरेपायपरिविकलविषादू ॥ पैठतनगरस
चवसकुचाई ॥ जनुमारेसगुरब्राह्मनगाई ॥ बैठिभवनरथराषदुरे ॥ दीन

जनसमाचारसुनिपाए ॥ भूपबचनरथदेखनआए ॥ रथपहिचानबिकललखघोरे ॥ गरहिगातजिमआतपओरे ॥ नगरनारनरबियाकलकैसे ॥ नीघटैनीरमीनगतिजैसे ॥ ३५ ॥ दो ॥ सचिवआगमनसुनतसभ बिकलभयोरनवास ॥ भवनभयंकरलगीतेहमानहुप्रेतनिवास ॥ ३५ ॥ चौ ॥ अतिआरतिसभपूछहिरानी ॥ उतरनआउबिकलभैबानी ॥ सुनैनश्रवननैननहिसूझा ॥ कहहुकहांनृपतेहितेहिबूझा ॥ दासनदेखिसचिवबिकलाई ॥ कौशल्यागृहगइलवाई ॥ जाइसुमंत्रदेखिकसराजा ॥ अमियरहितजनुचंदबिराजा ॥ आसनसैनबिभूषनहीना ॥ परेउभूमितलनिपटमलीना ॥ लेइउसाससोचएहिभांती ॥ सुरपुरतेजनुखसेउजजाती ॥ लेतसोचभरछिनछिनछाती ॥ जनुजरपंखपरेउसंपाती ॥ रामरामकहिरामसनेही ॥ पुनकहिरामलखनबैदेही ॥ ३६ ॥ दो ॥ देखसचिवजैजीवकहिकीन्हादंडप्रनाम ॥ सुनतउठेउब्याकुलनृपतिकहुसुमंत्रकहंराम ॥ ३६ ॥ चौ ॥ भूपसुमंत्रलीनउरलाई ॥ बूडतकछुअधारजनुपाई ॥ सहितसनेहनिकटबैठारे ॥ पूछतराउनैनभरिबारे ॥ रामकुसलकहुसषासनेही ॥ कहंरघुनाथलखनबैदेही ॥ आएफेरकिबनहिसिधारे ॥ सुनतसचिवलोचनजलधारे ॥

॥राम॥
॥४२॥

सोक बिकल पुनि पूछ नरेसू। कहु सीया राम लषन संदेसू॥ राम रूप गुन सील सुभाऊ। सुमर सुमर उर सोचत राऊ॥ राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू। सुनि मन भयो न हरष हरासू॥ सो सुत बिछुरत गए न प्राना। को पापी बड़ मोहि समाना॥ ७४॥ दो॥ सखा राम सीया लषन जहँ तहाँ मोहि पहुचाउ। नाहि त चाहत चलन अब प्रान कहो सतिभाउ॥ १४९॥ चौ॥ पुनि पुनि पूछत मंत्रहि राऊ। प्रीतम सुत्र्प्रान संदेस सुनाऊ॥ करो सखा सोइ बेगि उपाऊ। राम लषन सीया नैन दिखाऊ॥ सचिव धीर धरि कहि मृदु बानी। महाराज तुम पंडित ग्यानी॥ बीर सुधीर धुरंधर देवा॥ साधु समाज सदा तुम सेवा॥ जनम मरन सब दुख सुख भोगा॥ हानि लाभ प्रिय मिलन बियोगा॥ काल करम बस होहि गुसांई॥ बरबस राति दिवस की नाई॥ सुख हरषहि जड़ दुख बिलषाही॥ दोउ सम धीर धरहि मन माही॥ धीरज धरहु बिबेक बिचारी॥ छाड़ो सोच सकल हितकारी॥ १५०॥ दो॥ प्रथम बास तमसा भयो दूसर सुरसर तीर॥ न्हाइ रहे जलपान करि सीया समेत दोउ बीर॥ १५१॥ चौ॥ केवट कीन्ह बहुत सेवकाई॥ सो जामन सिंगरोर गवाई॥ होत प्रात बट छीर मंगावा॥ जटा मुकट निज सीस बनावा॥ राम सषा तब नाउ मंगाई॥ प्रिय च

॥राम॥
॥४२॥

उइचढेरघुराई॥लछमनबानधनधरेबनाई॥आपचढेउप्रभआइसपाई॥बिकल
बिलोकमोहिरघुबीरा॥बोलेमधरधीरधरिधीरा॥तातप्रनामतातसनकहेऊ॥
बारबारपदपंकजगहेऊ॥करोपाइपरिबिनैबसेषी॥तातकरीयेजिनचिंतामो
री॥बनमगमंगलकुसलहमोरे॥सयानजनुप्रहहुनेतमारे॥१३॥छंद॥तमरे
मनजगहुतातकाननजातममममयपाइहो॥प्रितपालआइसकुसलदेखिनपाइ
उनीपैपिआइहैं॥जननीसकलपरितोषपितियपरयाइबिनतीकरघनी॥तु
लसीकरइसोईजतनजिहकुसलेरहैंकैपालघनी॥१४॥सोरठा॥गुरसन
कहैंसंदेसबारबारपदपदमगहि॥करोसोईउपदेसजिहनसोचमोहिअवध
पति॥१५॥चौ॥पुरजनपरजनसकलनिहोरी॥आतेरहिनरनारिसुषारी॥कहत
९ संदेसमर्थकेमा॥नीतनतमैराजपदपाए॥पालहपरजसकर्ममनबानी॥सेए
गुरुमातसकलसमजानी॥अबरनिबाहिउभाइप्रभाई॥करिपितमातसजन
सेवकाई॥तातभांतितिहराषबराऊ॥सोचमोरिजिहकरेनाकाहू॥लछमनक
हिउकछुबचनकठोरा॥बरजरामपुनिमोहिनिहोरा॥बारबारमुनिसप

राम

तदपि चाही॥ कहेउँ न तात लषन लरिकाई॥ ३१६॥ दो॥ कहि प्रनाम कछु बचन कहि सीया भै सिथिल सनेह॥ थकत बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह॥ ३१७॥ चौ॥ तेहि अवसर रघुबर रुख पाई॥ केवट पारहि नाउ चलाई॥ रघुकुल तिलक चले इहि भांती॥ देखौं ठाढ़ कुलिस धरि छाती॥ मैं आपन किमि कहौं कलेसू॥ जीअत फिरेउँ लेइ राम संदेसू॥ अस कहि बचन सचिव रहि गयो॥ हानि गलानि सोच बस भयो॥ सूत बचन सुनतहि नरनाहू॥ परेउ धरनि उर दारुन दाहू॥ तलफत बिषम मोह मन मापा॥ मांजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा॥ करि बिलाप सब रोवहिं रानी॥ महा बिपति किमि जाइ बखानी॥ सुनि बिलाप दुखहूं दुख लागा॥ धीरजहूं कर धीरज भागा॥ ३१८॥ दो॥ भयो कोलाहल अवध अति सुनि नृप राउर सोर॥ बिकल बिहंग बन परेउ निसि मानहुँ कुलिस कठोर॥ ३१९॥ चौ॥ प्रान कंठगत भयो भुआला॥ मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्याला॥ इंद्री सकल बिकल भई भारी॥ जनु सर सरसिज बन बिन बारी॥ कौसल्यां नृप देखि मलाना॥ रबिकुल रबि अथयो जिय जाना॥ उर धरि धीर राम महतारी॥ बोली बचन समै अनुसारी॥

राम ॥ ८८॥

री॥ नाथ कहीं हौं मन न समुझ बिचारू॥ राम बियोग पयोधि अपारू॥ करनधार तुम्ह अउ
ध जहाजू॥ चढेउ सकल प्रिय पथिक समाजू॥ धीरज धरिअ त पाइअ पारू॥ नाहि त
बूडे सब परिवारू॥ जे जीय धरी मै बिनै पीय मोरी॥ राम लखन सीया मिलहि बहो
री॥ ३१॥ दो॥ प्रिया बचन मृदु सुनत नृप चितयो आंखि उघार॥ तलफत मीन मली
न जिउ सींचे सीतल बार॥ ३१॥ चौ॥ धरि धीरज उठि बैठि भुपाला॥ कहु सुमंत कहं
राम कृपाला॥ कहां लखन कहं राम सनेही॥ कहं प्रिय पुत्रबधू बैदेही॥ बिलपत
राउ बिकल बहु भांती॥ भए जुग सरिस सिरात न राती॥ ताप संअंध साप सुधि आ
ई॥ कोशल्या सम कथा सुनाई॥ भयो बिकल बरनत इतहासा॥ राम रहत धग
जीवन आसा॥ सो तन राख करब मै काहा॥ जेन प्रेम पन मोर निबाहा॥ हा रघुनं
दन प्रान पिरीते॥ तुम बिन जीयत बहुत दिन बीते॥ हा जानकी लखन हा रघुब
र॥ हा पित हित चित चातक जलधर॥ ३२॥ दो॥ राम राम कहि राम कहि राम क
हि राम॥ राम बिरह तन परहरि उ राउ कीओ सुरधाम॥ ३३॥ चौ॥ जीअन मरन
फल दसरथ पावा॥ अंड अनेक अमल जस छावा॥ जीअत राम बिधु बदन निहा
रा॥ राम बिरह कर मरन संवारा॥ सोक बिकल सब रोवहि रानी॥ रूप सील ब

रा
राम
५५

लसे जनु बघबानी॥ करहिं बिलाप अनेक प्रकारा॥ परहिं भूमितल बारहिं बारा॥ बि
लपहिं बिकल दास अरु दासी॥ घर घर रुदन करहिं पुरबासी॥ अथयो आज
भानुकुल भानू॥ धर्म अवधि गुन रूप निधानू॥ गारी सकल कैकइहि देहीं॥ नैन
बिहीन कीन जग जेहीं॥ इहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी॥ आए सकल महामुनि
ज्ञानी॥१२४॥ दो॥ तब बसिष्ट मुनि समै सम कहि अनेक इतहास॥ सोक नेवारउ
सबहि कर निज विज्ञान प्रकास॥१२५॥ चौ॥ तेल नाउ भरि नृप तन राखा॥ दूत बु
लाइ बहुर अस भाषा॥ धावहु बेग भरथ पहिं जाहू॥ नृप सुध कतहु कहहु जिन
काहू॥ इतनी कहेहु भरथ सन जाई॥ गुर बुलाइ पठए दोउ भाई॥ सुनि मुनि आइस
धावन धाए॥ चले बेग बर बाजि लजाए॥ अनर्थ अवध अरभे जब ते॥ कु
सगुन होहिं भरत कहु तब ते॥ देखै रात भयानक सपना॥ जाग करै कटु कोटि कल
पना॥ बिप्र जिवाइ देहि दिन दाना॥ शिव अभिषेक करहिं बिध नाना॥ मांगहिं
हृदै महेस मनाई॥ कुसल मात पित परिजन भाई॥१२६॥ दो॥ इहि बिधि सोचत
भरत मनि धावन पहुचे जाइ॥ गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेस मना
इ॥१२७॥ चौ॥ चले समीर बेग है हांकै॥ नाघत सरित सैल बन बांके॥ हृदै सोच

राम
५५

बड कछु न सुहाई॥ अस जानै जीय जाउं उडाई॥ एक निमेष बरष सम जाई॥ एहि बि
धि भरथ नगर निअराई॥ असगुन होहि नगर पैठारी॥ रटहि कुभांति कुषेत करा
री॥ षर सिआर बोलहि प्रतिकूला॥ सुनि सुनि होहि भरथ मन सूला॥ श्रीहत सर
सरित बन बागा॥ नगर बिशेष भयावन लागा॥ षग मृग है गज जांहि न जोए॥ रा
म बियोग कुरोग बिगोए॥ नगर नारि नर निपट दुषारी॥ मनहु सबन सब सं
पति हारी॥ ३२॥ दो॥ पुरजन मिलहि न कहहि कछु गवहि जोहारहि जांहि॥ भरत कुस
ल पूछि न सकहि भै बिषाद मन मांहि॥ २२५॥ चौ॥ हाट बाट नहि जाइ निहारी॥ ज
नु पुर दहदिसि लागि दवारी॥ आवत सुत सुनि कैकइ नंदनि॥ हरषी रबिकुल ज
लरुह चंदनि॥ सजि आरती मुदित उठि धाई॥ द्वारहि भेट भवन लै आई॥ भरत
दुषित परिवार निहारा॥ मानहु तुहिन बनज बन मारा॥ कैकई हरषित एह
भांती॥ मनहु मुदित दव लाइ किराती॥ सुतहि ससोच देषि मन मारे॥ पूछति नै
हर कुसल हमारे॥ सकल कुसल कहि भरत सुनाई॥ पूछी निज कुल कुसल भ
लाई॥ कहु कहं तात कहं सब माता॥ कहं सीया राम लषन प्रिय भ्राता॥ ३३॥ दो॥
सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भर नैन॥ भरत श्रवन मन सूल सम

का

अ
राम
४६

पावनबोलीबैन॥३३१॥चौ॥तातबाततमैसगलसवारी॥भईमंथरासहाइ
हमारी॥कछुककाजबिधबीचबिगारेउ॥भूपतिसरपतिपुरपगधारेउ
सुनतभरतभएबिबसबिषादा॥जनुसहमेउकरिकेहरिनादा॥ताततात
हातातपुकारी॥परेभूमितलब्याकुलभारी॥चलतनदेखनपायो॥तात
नरामहिसौंपिउमोही॥बहुरधीरधरिउठोसंभारी॥कहुपितहेतमरन
महतारी॥सुनसुतबचनकहतिकेकई॥मरमपांछिजनुमाहुरदेई॥आ
दहुतेसभआपनकरनी॥कुटलकठोरमुदितमनबरनी॥३३२॥दो॥भरतहिबिस
रेउपितमरनसुनतरामबनगौन॥हेतअपनपोजानजीयथकितरहेधर
मौन॥३३३॥चौ॥बिकलबिलोकसुतहिसमझावत॥मनहुजरेपरलोनलगा
वत॥तातराउनहिसोचईजोगू॥बिढइसुक्रतजसकीनउभोग॥जीवतस
कलजनमफलपाए॥अंतअमरपतिसदनसिधाए॥असअनमानसोचप
रहरहू॥सहितसमाजराजपुरकरहू॥सुनिसुठिसहमिस्योराजकुमारू॥पाके
छतजनुलागअंगारू॥धीरजधरिभरिलेउसासा॥पापनसभहिभांति
कुलनासा॥३३४॥जौपैकुरुचरहिअतितोही॥जनमतकाहेनमारेउमो

राम
४६

नी॥ पेट कटि तैं पालउ सींचा॥ मीन जीअन निति बारि उलीचा॥ दो॥ हंस बंस दसरथ जन
क राम लखन से भाइ॥ जननी तूं जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ॥ ३२५॥ चौ॥ जब
तें कुमति कुमत जीं ठयो॥ खंड खंड होइ हृदै न गयो॥ बर मांगत मन भै नहिं पीरा॥ गर
न जीभ मुह परे न कीरा॥ भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही॥ मरन काल बिधि मति हरि ली
न्ही॥ बिधि हू न नारि हृदै गति जानी॥ सकल कपट अघ अवगुन खानी॥ सरल सुसी
ल धर्म रत राउ॥ सो किमि जानै तीय सुभाउ॥ अस को जीव जंतु जग माहीं॥ जे
रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं॥ भे अति अहित राम तेउ तोही॥ को तूं अहसि सत
कहु मोही॥ जो हसि सो हसि मुह मसि लाई॥ आंखि ओट उठि बैठहि जाई॥ दो
हा॥ राम बिरोधी हृदै तें प्रगट कीन बिधि मोहि॥ मो समान को पातक बादि क
हउं कछु तोहि॥ ३२६॥ चौ॥ सुनि सत्रुघन मात कुटिलाई॥ जरहिं गात रिस कछु
न बसाई॥ तेहि अवसर कुबरी तहं आई॥ बसन बिभूषन बिबिध बनाई॥ ल
खि रिस भरेउ लखन लघु भाई॥ बरत अनल घृत आहुति पाई॥ हुमगि लात तकि
कूबर मारी॥ परि मुह भरि महि करत पुकारी॥ कूबर टूटेउ फूट कपारू॥ दलित
दसन मुख रुधिर प्रचारू॥ आह दई मैं काह नसावा॥ करत नीक फल अनइस

पावा॥ सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी॥ लगे घसीटन धरि धरि चोटी॥ भरत
दयानिधि दीन्ह छुड़ाई॥ कौशल्या पहिं गए दोउ भाई॥ ३३७ दो॥ मलिन बसन बि
बरन बिकल कृस सरीर दुख भारा॥ कनक कलप बर बेलि बन मानहुं हनी तु
सार॥ ३३८॥ चौ॥ भरतहि देखि मात उठि धाई॥ मुरछित अवनि परी झइं आई॥
देखत भरत बिकल भे भारी॥ परे चरन तन दसा बिसारी॥ मात तात कहं देहु दि
खाई॥ कहं सिय राम लखन दोउ भाई॥ केकई कत जनमी जग मांझा॥ जो ज
नमी भई कांहे बांझा॥ कुल कलंक जेहि जनम्यो मोही॥ अपजस भाजन प्रियजन द्रो
ही॥ को त्रिभुवन मोहि सरिस अभागी॥ गति असि तोरि मात जिहि लागी॥ पि
तु सुरपुर बन रघुकुल केतू॥ मै केवल सब अनरथ हेतू॥ धिग मोहि भयो
बेन बन आगी॥ दुसह दाह दुख दूषन भागी॥ ३३९ दो॥ मात भरत के बचन मृ
दु सुनि पुनि उठी संभार॥ लीन्हे उठाइ लाइ उर लोचन मोचन बार॥ ३४०॥ चौ॥
सरल सुभाइ माइ हीये लाए॥ अति हित मनहु राम फिर आए॥ भेटे बहुरि ल
खन लघु भाई॥ सोक सनेह न हृदे समाई॥ देखि सुभाउ कहत सब कोई॥ राम मा
त अस कांहि न होई॥ माता भरत गोद बैठारे॥ आंसु पोंछि मृदु बचन उचारे॥ अज

94

रुवध बलधीरज धरहू॥ कुसमै समझ सोक परहरहू॥ जेठमात जीय यह सतगी
लानी॥ कहत कुमगति अघरतजानी॥ काहू देस देहजन ताता॥ भामाकम बिध
बाम बिधाता॥ जो एते पर मोहि जीयावा॥ सजकुं केउजनेक तिन भावा॥३४१॥ दो॥ प
तिआरसमप नबसन तात तजे रघुबीर॥ ठैसमे हरषन हदै कचुप हिरेबल
कलेचीर॥३४२॥ चौ॥ मुषप्रसन्नमन रंग न रोषू॥ सभकर सभ बिधकरी परितो
षू॥ चले बिपन सुनि सीया संग लागी॥ रहहि न राम चरन अनुरागी॥ सुनत शी
लषन चले उठि साथा॥ रहहि न जतन कीये रघुनाथा॥ तब रघुपति सभ ही
सिरनाई॥ चले संग सीया अरु लघु भाई॥ राम लषन सीय बन हि सिधाए॥
गए न संगी न प्रान पठाए॥ यहि सभ भा इन मोषन लागे॥ तउन तजत तन जी
य अभागे॥ मुनि सनेह जनै नेह निहारी॥ राम सरस सत मैं महितारी॥ जीयन म
रन मल भरत जाना॥ मोर हदै सत कुलस समाना॥३४३॥ दो॥ कौशल्या के बच
न सुनि भर्थ सहत रनवास॥ ब्याकुल बिलपति राज ग्रह मानहु सोक निवास॥
३४४॥ चौ॥ बिलपहि बिकल भरत दोउ भाई॥ कौशल्या लए हदै लगाई॥ भांति अ
नेक भरत समझाई॥ कहि बिबेक मय बचन सुनाई॥ भर्थहि मात सकल समझाई॥

कहिहु राम कृत कथा सुनाई॥ छल बिहीन सुच सरल सुबानी॥ बोले भरत जो
र जुग पानी॥ जो अघ मात पिता सुत मारे॥ गाइ कोट महिसुर पुर जारे॥ जे अघ
घतीया बालक बध कीने॥ मीत महीपति माहुर दीने॥ जो पातक उपपातक
अहही॥ कर्म बचन मन भव कबि कहही॥ ते पातक मुहि होहि बिधाता॥
जो यहु होइ मोर मति माता॥ ३८५॥ दो॥ जो परहरि हर हरि चर्न भजहि भूतग
न घोर॥ तिन कै गति मुहि देहि बिधि जो जननी मति मोर॥ ३८६॥ चौ॥ बेचहि बे
द धर्म दुहि लेही॥ पिशुन पराइ पाप कहि देही॥ कपटी कुटल कलहप्रिय
क्रोधी॥ बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी॥ लोभ लंपट लोलुपचारा॥ जे ताकहि प
र धन परदारा॥ पावहु मै तिन कै गति घोरी॥ जो जननी यहु संमत मोरी॥
जो नहि साधसंग अनुरागे॥ परमार्थ पथ बिमुख अभागे॥ जे न भजहि हरि न
र तन पाई॥ जिन हि न हरि हर सुजस सुहाई॥ तजि श्रुति पंथ बाम पथ चलही
॥ बंचक बिरच बेष जग छलही॥ तिन कै गति मुहि शंकर देहु॥ जननी जो य
हि जानहु भेउ॥ ३८७॥ दो॥ मात भर्थ के बचन सुनि साचे सरल सुभाइ॥ कहत रा
म प्रिया तात तुम सदा बचन मन काइ॥ ३८८॥ चौ॥ राम प्रान ते प्रान तुमारे॥ तु

मरम बुझि तिन्ह प्रानन ते प्यारे॥ बिधि बिबस बढै धवै हि माग्या गी॥ हेइ वार चर वार विरा
गी॥ भए ज्ञान बर मिटै न मोहू॥ तुम रामहि प्रतकूल न होहू॥ मात तुमार रघु सहज
न वाहि हि॥ सो सयन हि सब सगत हि न लहि हि॥ गम बेठ हि मात भरत ही ये लाए
घन पयद बर हि नैन जल छाए॥ करत बिलाप बिपल इह भांती॥ बैठे बीत गई सम
र राती॥ बामदेव बसिष्ट तब आए॥ सचिव महाजन सगल बुलाए॥ मुन बहु भां
ति भरथ उपदेसे॥ कहि परमार्थ बचन सदेसे॥ २४९॥ दो॥ तात हदै धीरज धरहु क
रहु जु अवसर आज॥ उठे भरत गुर बचन सुन करन कहे सब साज॥ २४९॥ चौ॥
नृपतन वेद विहत अनवावा॥ परम बिचित्र बिमान बनावा॥ गहि पद भरत मात
सब राखी॥ रही राम दर्सन अभलाखी॥ चंदन अगर भार बहु आए॥ अमीत अने
क सुगंध सुहाए॥ इह बिध दाहि क्रिया सब कीनी॥ बिधवत नाइ तिलांजल दीनी॥ सुध
सिमरत सब बेद पुराना॥ कीन भरत दसगात बिधाना॥ जिह जस मुनवर आइस
दीना॥ तहां तिह सहस भांति सम कीना॥ भए बिसुध दए बहु दाना॥ धेन बाज गज बा
हन नाना॥ २५०॥ दो॥ सिंघासन भूखन बसन अंन धर्न धन धांम॥ दए भरत लहि
भूंमसुर भए परपूर्न कांम॥ २५०॥ चौ॥ पितहित भर्थ कीन जस कर्नी॥ सो मुख लाख

राम ॥४५॥

जाइ न बरनी॥ सुदिन सोध मुनीवर तब आए॥ सचिव महाजन सगल बुलाए॥ बै
ठे राज सभा सभ जाई॥ पठए भरत बोलि दोऊ भाई॥ भरथ बशिष्ट निकट बैठारे॥ नी
त धर्म मै बचन उचारे॥ प्रिथम कथा सभ मुनीवर बरनी॥ कैकई कुटल कीन जस क
नी॥ भूप सति ब्रित धर्म सराहा॥ जेह तन परहर प्रेम नेबाहा॥ कहत राम गुन
सील सुभाउ॥ सजल नैन पुलकेउ मुनिराउ॥ बहुर लखन सीया प्रीत बखानी॥
सोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी॥ ३५३॥ दो॥ सुनहु भरथ भावी प्रबल बिलख कहि
उ मुनि नाथ॥ हानि लाभ जीवन मरन जसु अपजसु बिधि हाथ॥ ३५४॥ चौ॥ अस
विचार कहि देये दोसु॥ ब्यर्थ काहि पर कीजीये रोसु॥ तात बिचार करु मन माही
सोच जोग दसर्थ न्रप नाही॥ सोचिये विप्र जो वेद विहीना॥ तजि निज धर्म विषे
लैलीना॥ सोचिये बैस क्रपन धनवांनू॥ जो न अतिथ शिव भक्ति सुजानू॥ सो
चिये सूद्र विप्र अपमानी॥ मुखर मान प्रिया ज्ञान गुमानी॥ सोचिये पुनि प
ति बंचक नारी॥ कुटल कलहि प्रिया इछाचारी॥ सोचिये बटु निज ब्रित पर
हरई॥ जो न गुर आइस अनुसरई॥ ३५५॥ दो॥ सोचिये ग्रही जो मोह बस
करै कर्म पथ त्याग॥ सोचे जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग॥ ३५६॥ चौ॥

राम ॥४४॥

बैषानससोइसोचहिंजोगू॥तपबिहाइजिसभावैभोगू॥सोचैपिशनअकारनक्रो
धी॥जननजनकगुरबंधुबिरोधी॥सभबिधसोचैपरअपकारी॥निजतनपो
षकनिर्दैभारी॥सोचनीयसभहीबिधसोई॥जोनछाडिछलहरिजनहोई॥
सोचनीनहिंकोशलराऊ॥भउनचारदसप्रगटप्रभाऊ॥भयोनअहैनहोनहा
रा॥भूपभरतजसपितातुमारा॥बिधहरिहरसुरपतिदिसनाथा॥ब
र्नैहिंसभदसरथगुनगाथा॥१७५॥दो॥कहेतातकिहभांतिकेउकरैबडाईतास
रामलखनतमसत्रुघनसरसुअनसुचजासु॥१७५॥चौ॥सभप्रकारभूपत
बडभागी॥बादबिखादकरउतिहलागी॥इहसुनिसमझसोचपरहरहू॥
सिरधरराजरजाइसकरहू॥राइराजपदतुमकउदीना॥पिताबचनफु
रचाहीयैकीना॥तजेरामजिहबचनहितलागी॥तनपरहरेउरामबिर
हातललागी॥नृपहिबचनप्रियनहिंप्रियप्राना॥करहुतातपितबचनप्रमा
ना॥करहुसीसधरभूपरजाई॥हैतुमकउसभभांतिभलाई॥परसरामपित
आज्ञाराखी॥मारीमातलोकसभसाखी॥तनैजजातहिजोबनदयो॥पितआ
ज्ञाअघअजसनभयो॥१७५॥दो॥अनचितउचितबिचारतजिजोपालहिंपितबै

न॥ ते भाजन सुष सुजस के बसहि अमरपति ऐन॥ ३६०॥ चौ॥ अवस नरेस
बचन फुर करहू॥ पालहु परजा सोक परहरहू॥ सुरपुर नृप पाइहि प
रितोषू॥ तुम कौं सुकृत सुजस नहिं दोषू॥ बेद बिहित संमत सबही का॥ जेह
पितु देहि सो पावहि टीका॥ करहु राज परहरहु गिलानी॥ मानहु मोर
बचन हित जानी॥ सुनि सुष लहब राम बैदेही॥ अनुचित कहब न पंडि
त केही॥ कौसल्यादि सकल महतारी॥ तेउ प्रजा सुष होहि सुषारी॥ परम तु
म्हार राम कर जानहि॥ सो सब बिधि तुम सन भल मानहि॥ सौंप्यो राज राम के
आए॥ सेवा करहु सनेह सुहाए॥ ३६१॥ दो॥ कीजे गुर आइस अवस कहहि सचिव कर जो
रि॥ रघुपति आएँ उचित जस तब तस करब बहोर॥ ३६२॥ चौ॥
कौसल्या धर धीरज कहई॥ पूत पथ्य गुर आइस अहई॥ सो आदर क
रीये हित मानी॥ तजिये बिषाद काल गति जानी॥ बन रघुपति सुरपुर
नरनाहू॥ तुम यह भाँति तात कदराहू॥ परिजन प्रजा सचिव सब अंबा॥
तुमही सुत सब कहँ अवलंबा॥ लषि बिधि बाम काल कठिनाई॥ धीरज ध
रहु मात बलि जाई॥ सिर धर गुर आइस अनुसरहू॥ प्रजा पालि परिजन

100

दुषहरहु॥ गुर के बचन सचिव अभिनंदनु॥ सुनै भरत हीयै हित जनु चंदन
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी॥ सील सनेह सरल रस सानी॥ २६३॥ छंद॥ सानी स
रल रस मातु बानी सुनि भरथु ब्याकुल भए॥ लोचन सरोरुह स्रवत सींचत बि
रहि उर अंकुर नए॥ सो दसा देषत समै तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की॥ तुल
सी सराहत सकल सादर सहज सनेह की॥ २६४॥ सो॥ भरत कमल कर जोरि धी
र धुरंधर धीर धरि॥ बचन अमीअ जनु बोरि देत उचित उतर सबहि॥ २६५॥ चौ॥
मोहि उपदेसु दीन गुर नीका॥ प्रजा सचिव संमत सब ही का॥ मातु उचित धरि
आयसु दीना॥ अवसि सीस धरि चाहौ कीना॥ गुर पितु मातु स्वामि हित बानी॥
सुनि मन मुदित करीअै भलि जानी॥ उचित की अनुचित कीए बिचारू॥ धरमु जाइ
सिर पातक भारू॥ तुम्ह तौ देहु सरल सिष सोई॥ जो आचरत मोर भल होई॥ जद
पि बात सम जनतै नीकै॥ तदपि होत परितोष न जी कै॥ अब तुम्ह मोर [illegible] बि
नै सुनि लेहु॥ मोहि अनुहरत सिषावनु देहु॥ उतर देउ छमि मम अपराधू॥ दुषित दोष गु
न गनहि न साधू॥ २६६॥ दो॥ पितु सुरपुर सीयारामु बन करन कहहु मोहि राजु॥
ऐहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड काजु॥ २६७॥ चौ॥ हित हमार सीयापति सेवी

श्री
राम
५१

कैकई॥ सो हरि लीन मातु कुटलाई॥ मैं अनुमान देख मन माही॥ आन उपा
इ मोर हित नाही॥ सोक समाज राज केहि लेखै॥ लखन राम सीय पाय द बिन
देखै॥ बादि बसन बिन भूषन भारू॥ बादि बिरति बिन ब्रह्म बिचारू॥ स
रुज सरीर बादि बहु भोगा॥ बिन हरि भगति जाय जप जोगा॥ जाइ जीव
बिन देह सुहाई॥ बादि मोर सब बिन रघुराई॥ जाउं राम पहि आइसु
देहू॥ एकहि आंक मोर हित एहू॥ मोहि नृप करि भल आपन चहहू॥ सोउ
सनेह जड़ता बस कहहू॥ दो॥ कैकई सुअन कुटिल मति राम बिमुख ग
तिलाज॥ तुम चाहत सुख मोह बस मोहि से अधम के राज॥ १८२॥ चौ॥ कहौं
साच सब सुनि पतियाहू॥ चाहिअ धर्मसील नरनाहू॥ मोहि राज हठि देइहहु
जबही॥ रसा रसातल जाइहि तबही॥ मोहि समान को पाप निवासी॥ जेहि
लगि सीय राम बनबासी॥ राइ राम कौं कानन दीना॥ बिछुरत गौन अ
मरपुर कीना॥ [illegible]॥ मैं सठ सब अनरथ कर हेतू॥ बै
ठ बात सब सुनउं सचेत॥ बिन रघुबीर बिलोकि अवासू॥ रहे प्रान सह
जग उपहासू॥ राम पुनीत बिषै रस रूखे॥ लोलुप भूमि भोग के भूखे॥ की

राम
५१

लनीव कहैं हदे देत कठनाही ॥ जेहि रघुकुलभूषण सीजी ह ललनि बडाई ॥ २०५ ॥ दो॰ ॥ करनते
करजकठन हेइ दोस न होमोहि ॥ कुलिस आमस तते उपल ते लोह कराल कठोर
२१ ॥ चौ॰ ॥ कैकई भवन एहु भमन रागे ॥ पापर प्रान भाघाइ ज भागे ॥ जो प्रियवीर
हि प्रान प्रियलागे ॥ देषोसन ध्रुवज तन वमगौ ॥ लषन राम सीया को वनदी
ना ॥ पठे अमरपुर पतिहति कैना ॥ लीन वैधव्य अपजसु आए ॥ दीनेउ प्र
जहि सोक संताप ॥ मोहि दीन सुष सुजसु सुराजु ॥ कीन कैकेई सम करकाजु
इह ते मोर का कर भव नीका ॥ तेहि पर देन कहिउ तुम टीका ॥ कैकई जठर जे
नम जग माही ॥ इह मोक हु कछु अनुचित नाही ॥ मोर वात सब विधिहि बनाई ॥
प्रजा पांच कत करहु सहाई ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ ग्रह ग्रहीत पुनि वात बस तेहि पुनि बी
छी मार ॥ ताहि पीआइ अवारुनी कहहु कौन उपचार ॥ २३ ॥ चौ॰ ॥ कैकई सुअन जो
गजग जोई ॥ चतुर विरंच दीन मोहि सोई ॥ दसरथ तनय राम लघु भाई ॥ दीन
मोहि विधि बाद बडाई ॥ तुम सब कहहु कढावन टीका ॥ राम रजायसु भली कोनीका ॥
उतर देउ केहि विधि केहि केही ॥ कहहु सुषेन जियाकहि जोई ॥ मोहि कुमत स

मेत बिलगाई॥ कहहु काहि हित कीन्ह भलाई॥ मो बिन को सचराचर मांही॥ जि
न्ह सीया राम प्रान प्रिय नाही॥ परम हानि सब कहु बड़ लाहू॥ अदिन मोर न
हि दूषन काहू॥ संसे उचत जो सब कछु कहहू॥ संसै सील प्रेम बस अहहू॥
३७४॥ दो॥ राम मात सुठि सरल चित मो पर प्रेम बिशेष॥ कहै सभाइ सनेह
बसि मोर दीनता देष॥ ३७५॥ चौ॥ गुर बिबेक सागर सब जाना॥ जैन्ह बिस्व
करबदर समाना॥ मो कौ तिलक साजु सज सोऊ॥ भे बिध बिमष बिमष स
ब कोऊ॥ परहर राम सीय जग माही॥ कोऊ न कहि हम मोर मत नाही॥ सो
मै सुनब सहब सुख मानी॥ अंतहि कीच तहां जह पांनी॥ डर न मोहि जग
कहिहि कि पोचू॥ प्रलोकहि कर नाहन सोचू॥ एक उर बस दसह दवारी॥
मोहि लगि भे सीया राम दुषारी॥ जीवन लाह लखन भल पावा॥ सब तजि
राम चरन मन लावा॥ मोर जनम रघुबर बन लागी॥ झूठ काह पछिता
उ अभागी॥ ३७६ दो॥ आपन दारुन दीनता कहौ सबै सिर नाइ॥ देषे बिन
रघुनाथ पद जीय की जरन न जाइ॥ ३७७॥ चौ॥ आन उपाइ मोहि नहि सूझा॥

केकेयकेरघुबरबिनबूजा॥एकहिआंकइहैमनमाही॥प्रातकालचलिहउप्रभुपाही
जदपिमैंअनभलअपराधी॥भैमोहिकारनसकलउपाधी॥तदपिसरनसनमुखमोहिदे
खी॥छमिसबकरिहहिकृपाविशेषी॥सीलसकुचसुठिसरलसुभाऊ॥कृपासने
हसदनरघुराऊ॥अरिहुकअनभलकीनन्हरामा॥मैंसिसुसेवकजदपिबामा॥तु
म्हपैपांचमोरभलमानी॥आइसुआसिषदेहुसुबानी॥जेहिसुनिबिनैमोहिजनु
जानी॥आवहिबहुरिरामरजधानी॥१८३॥दो॥जदपिजनमकुमातुतेमैसठसदास
सदोस॥आपनजानिनत्यागिहैमोहिरघुबीरभरोस॥१८३॥चौ॥भरतबचनस
बकहुंप्रियलागे॥रामसनेहसुधाजनुपागे॥लोगबियोगबिषमबिषदागे॥मंत्र
सबीजसुनतजनुजागे॥मातसचिवगुरपुरनरनारी॥सकलसनेहबिकलभे
भारी॥भरतहिकहहिसराहिसराही॥रामप्रेममूरतिजनुआही॥तातभरतअस
काहेनकहहू॥प्रानसमानरामप्रियअहहू॥जोपावरुअपनिजडताई॥तुम्हहिसुगाइमातुकुटिलाई॥सोस
ठकोटिकपुरुषसमेता॥बसहिकलपशतनरककिनेता॥अहिअघअवगुन
नहिंमनिगहई॥हरैगरलदुखदारिददहई॥१८४॥दो॥अवसिचलिअबन
रामजहंभरतमंत्रभलकीन॥सोकसिंधबूडतसबहितुम्हअवलंबनदीन॥१८४॥

चौ॥ भासबकेमनमोदुनथोरा॥ जनुघनधुनिसुनिचातकमोरा॥ चलतप्रातल
खिनिरनौनीके॥ भरथप्रानप्रियभेसबहीके॥ मुनिहिबंदिभरतसिरनाई॥ चलेस
कलघरबिदाकराई॥ धंन्यभरतजीवनजगमाही॥ सीलसनेहसराहतजा
ही॥ कहहिपरसपरभाबडकाजू॥ सकलचलैकरसाजहिसाजू॥ जेहराषहिरहु
घररषवारी॥ सोजानैजनगरदनमारी॥ कोउकहरहनकहियनहिकाहू॥ को
नचहैजीवनलाहू॥ कोकहनभाउसीयालषननरामस॥ समककादिप्रियसीये
सदासकाम॥१८२॥ दो॥ जरोसोसंपतिसदनसुषसुहृदमातपितभाइ॥ सनमु
षहोतजोरामपदकरेनसहजसहाइ॥१८३॥ चौ॥ घरघरसाजहिबाहनना
ना॥ हरषहृदेप्रभातपयाना॥ भरथजाइघरकीन्हविचारू॥ नगरबाजिगजभव
नभंडारू॥ संपतिसबरघुपतिकैआही॥ जोबिनजतनचलौतजिताही॥ तौप
रनामनमोरभलाई॥ पापसिरोमनसाइदुहाई॥ करैस्वामहितसेवक
सोई॥ दूषनकोटिदेइकिनकोई॥ असविचारसुचिसेवकबोले॥ जेसपने
निजधर्मनडोले॥ कहिसबमरमधरमभलभाषा॥ जोजेहलाइकसो
तिहराषा॥ करिसबजतनराषिरषवारे॥ राममातपहिभरतसिधारे॥१८४॥

दो॥ भारतजननीजानसबभर्तसनेहसुजान॥ कहितेउबनावनपालकीसजन
सषासनजान॥ ॥१८५॥ चौ॥ चक्रचकीजिमपुरनरनारी॥ चलतप्रातउरआरतभा
री॥ जागतसबनिसभयोबिहाना॥ भरतबुलाएसचिवसुजाना॥ कहितेउलेहुस
मतिलकसमाजु॥ बनहिदेहुमुनिरामहिराजु॥ बेगचलोसुनिसचिवजुहारे॥
तुरततुरंगरथनागसवारे॥ अरुंधतीअरुअगिनिसमाऊ॥ रथचढिचलेप्रथ
ममुनिराऊ॥ बिप्रचलेचढिबाहननाना॥ चलेसकलतपतेजनिधाना॥ नगरलो
कसबसजिसजिजाना॥ चित्रकूटकीकीयपयाना॥ सिबिकासुभगनजाइबखा
नी॥ चढिचढिचलतभईसबरानी॥ ॥१८६॥ दो॥ सोंपनगरसभसेवकनसादर
सबहिचलाइ॥ सुमररामसीयाचरननबचलेभर्तदोउभाइ॥ ॥१८७॥ चौ॥ राम
दरसबसबनरनारी॥ जनकरिकरिनचलैतकिबारी॥ बनसीयारामस
मझमनमाही॥ सानुजभरतपयादेजाही॥ देषिसनेहलोगअनुरागे॥ उतरच
लेहेगैरथत्यागे॥ जाइसमीपराषनिजडोली॥ राममातमृदबानीबोली॥ तात
चढउरथबलिमहितारी॥ होइहैप्रियपरवारदुषारी॥ तुमरेचलतचलत

श्र
राम
५४

हिसमभलोगा॥ सकलसोककलपानहिमगलोगा॥ सिरधरबचनचलेसिरना
ई॥ रथचढिचलतभएदोउभाई॥ तमसाप्रथमदिवसकरिबासा॥ दूसरगो
मतितीरनिवासा॥१८८॥ दो॰॥ पयअहारफलअसनइकनिसिभोजनइकलो
ग॥ करतरामहितनेमब्रतपरहरभूषनभोग॥१८९॥ चौ॰॥ सोएतीरबसि
चलेबिहाने॥ सिंगबेरपुरसबनीयराने॥ समाचारसबसुनेनिषादा॥ हृ
देबिचारकरैसबिषादा॥ कारनकवनभरथबनजांही॥ हैकछुकपटभाउम
नमांही॥ जौंपैजीयनहोतकुटिलाई॥ तौकतलीनसंगकटकाई॥ जानहि
सानुजरामहिमारी॥ करौंअकंटकराजसुखारी॥ भरतनराजनीतउरआनी
तबकलंकअबजीवनहानी॥ सकलसुरासुरजुरहिंजुझारा॥ रामहिसम
रनजीतनिहारा॥ काआचरजभरतअसकरहीं॥ नहिबिषबेलिअमियफल
फरहीं॥१९०॥ दो॰॥ असबिचारगुहग्यातसनकहेउसजगसबहोहु॥ हथ
वांसहुबोरहुतरनकीजैघाटारोह॥१९१॥ चौ॰॥ होहुसंजोइलरोकहुघाटा॥
ठाटोसकलमरेकेठाटा॥ सनमुखलोहभरथसनलेउं॥ जीतननसुरसर

राम
५४

उतरनदेहु॥ समरमरनपुनिसुरसरतीरा॥ रामकाजछिनभंगसरीरा॥ भर
तभाइनृपमैजननीचू॥ बड़ेभागअसपाइअमीचू॥ स्वामकाजकरिहौरनरा
री॥ जसधवलयचभवनदसचारी॥ तजउप्रानरघुनाथनिहोरे॥ दुहूंहाथ
मुदमोदकमोरे॥ साधसमाजनजाकरलेखा॥ रामभगतिजासुनरेखा॥ जा
इजीइतिजगसोमहिभारू॥ जननीजोबनबिटपकुठारू॥ १९३॥ दो॥ बिग
तबिषादनिषादपतिसबहिबढ़ाइउछाह॥ सुमरिराममागेउतुरतत
रकसधनषसनाहि॥ १९३॥ चौ॥ बेगहुभाइहुसजहुसंजोऊ॥ सुनिरजाइ
कदराइनकोऊ॥ भलेहिनाथसबकहैसहर्षा॥ एकहिएकबढ़ावहिक
र्षा॥ चलेनिषादजुहारजुहारी॥ सूरसकलरनरुचहिरारी॥ सुमर
रामपदपंकजपनही॥ माथीबांधिचढ़ाइनधनही॥ अंगरीपहिरिकुं
ड़ुसिरधरही॥ फरसाबांसेलसमकरही॥ एककुसलअतिओड़न
खोड़े॥ कूदहिगगनमनहुछितछाड़े॥ निजनिजसाजुसमाजुबना
ई॥ गुहराउतहिजुहारेजाई॥ देखसुभटसबलाइकजाने॥ लैलैनामसक
लसनमाने॥ १९४॥ दो॥ भाइहुलावहुधोखजनिआजुकाजबड़मोहि॥

सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहि॥ १९५॥ चौ॥ राम प्रताप नाथ
बल तोरे॥ करहि कटक बिन भट बिन घोरे॥ जीवत पाउ न पाछे धरही
रुंड मुंड मै मेदन करही॥ देषि निषादनाथ भल टोलू॥ कहेउ बजाउ जु
झाउ ढोलू॥ इतनी कहत छीक भइ बाए॥ कहेउ सगुनिअन षेत सुहाए
बूढ एक कह सगुन बिचारी॥ भरथहि मिलीऐ न होइहि रारी॥ रामहि भ
रत मनावन जाही॥ सगुन कहै अस बिग्रह नाही॥ सुनि गुह कहै नीक क
हि बूढा॥ सहसा करि पछिताइ बिमूढा॥ भरत सुभाउ सील बिन बूझै॥
बडि हित हानि जानि बिन जूझै॥ १९६॥ दो॥ गहहु घाट भट समिटि सब ले
उ मरम मिलि जाइ॥ बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहौ आ
इ॥ १९७॥ चौ॥ लषब सनेह सुभाइ सुहाए॥ बैर प्रीति नहि दुरै दुराए॥ अ
स कहि भेट संजोवन लागे॥ कंद मूल फल षग म्रग मागे॥ मीन
पीन पाठीन पुराने॥ भरि भरि भार कहारन आने॥ मिलन साज सजि
मिलन सिधाए॥ मंगल मूल सगुन सुभ पाए॥ देषि दूर ते कहि निज
नामू॥ कीन मुनीसहि दंड प्रनामू॥ जानि राम प्रिय दीनि असीसा॥ भरथ

राम

हिकहेउबुझाइमुनीसा॥ रामसखासुनिसंदनुत्यागी॥ चलेउतरिउमगतिअ
नुरागी॥ गांउजातगुहनांउसुनाई॥ कीन्हजुहारमाथमहिलाई॥ १९३॥ दो॥ करतदं
उवतदेषितेहिभरतलीन्हउरलाइ॥ मनहुलखनसनभेटभइप्रेमनहृदैसमाइ॥ १
९४॥ चौ॥ भेटतभरतताहिअतिप्रीती॥ लोगसिहांहिप्रेमकैरीती॥ धन्यधन्यधुनिमं
गलमूला॥ सुरसराहितेहबरसहिफूला॥ लोकबेदसबभांतहिनीचा॥ जासुछांह
छुइलेइअसीचा॥ तेहिभरअंकरामलघुभ्राता॥ मिलतपुलकपरपूरितगाता॥ रा
मरामकहिजेजमुहांही॥ तिनहिनपापपुंजसमुहांही॥ इहतौरामलाइउरली
ना॥ कुलसमेतजगपावनकीना॥ करमनासजलसुरसरपरही॥ तिहकोकहो
सीसनहीधरही॥ उलटनामजपतजगजाना॥ बालमीकभएब्रह्मसमाना॥ ८४॥
दो॥ सुपचसबरषसजमनजडपावरकोलकिरात॥ रामकहतपावनपरमहोत
भवनबिख्यात॥ ९१॥ चौ॥ नहिअचरजजुगजुगचलिआई॥ केहिनदीनरघुना
थबडाई॥ रामनाममहिमासुरकहिही॥ सुनिसुनिअवधलोकसुखलहिही॥
रामसषहिमिलभरतसप्रेमा॥ पूछीकुसलसुमंगलखेमा॥ देषिभरतकरसी
लसनेहू॥ भानिषादतिहसमैबिदेहू॥ सकुचसनेहमोदमनबाढा॥ भरत

हिचितवतइकटकठाढ॥ धरधीरजपदबंदबहोरी॥ बिनैसप्रेमकरतक
रिजोरी॥ कुसलमूलपदपंकजदेषी॥ मैतिहकालकुसलनिजलेषी॥ अबप्र
भुपरमअनुग्रहतोरे॥ सहतकोटिकुलमंगलमोरे॥ ४२॥ दो॥ समझमो
रकरततिकुलप्रभमहिमाजीयाजोइ॥ जोनभजेरघुबीरपदजगबिधिबं
चितसोइ॥ ४३॥ चौ॥ कपटीकाइरकुमतिकुजाती॥ लोकबेदबाहिरसबभाती
रामकीनआपनजबहीते॥ भयोभवनपावनतबहीते॥ देषिप्रीतसुनिबि
नैसुहाई॥ मिल्योबहोरभरतलघुभाई॥ कहिनिषादनिजनामसुबा
नी॥ सादरसकलजुहारीरानी॥ जानलषनसमदेहिअसीसा॥ जीउसुषीसै
लाषबरीसा॥ निरषनिषादनगरनरनारी॥ भएसुषीजनलषननिहारी॥
कहैलहिजगजीवनलाहु॥ भेटेउरामभद्रभरबाहू॥ सुनिनिषादनिजभाग
बड़ाई॥ प्रमुदितमनलैचल्यौलवाई॥ ४४॥ दो॥ सनकारेसेवकसकलचलेस्वं
मरुषपाइ॥ घरतरुतरसरबागबनबासबनाइनिजाइ॥ ४५॥ चौ॥ सृं
गबेरपुरभरतदेषीजब॥ भएसनेहसबअंगसिथलतब॥ सोहतदीए
निषादहिलागू॥ जनतनधरेबिनयअनरागू॥ एहबिधभरतसैनसब

मसेगा॥ सीय जाइ जमुपावन गंगा॥ रामघाट कहि कीन प्रनामु॥ भा मन मगन
मिले जन रामु॥ करहि प्रनाम नगर नर नारी॥ मुदित ब्रह्ममै वारि निहारी॥ कर
मज्जन मांगहि कर जोरी॥ रामचंद्र पद प्रीत न थोरी॥ भर्थ कहेउ सुरसर तव रेनू
सकल सुषद सेवक सुरधेनू॥ जोर पानि वर मांगहि एहू॥ सीया राम पद सहज
सनेहू॥ ४५ दो॥ एहि बिध मजन भर्थ कर गुर अनुसासन पाइ॥ मात नहानी जा
न सम डेरा चले लवाइ॥ ४७ चौ॥ जहँ तहँ लोकन डेरा कीना॥ भर्त सोध सम ही
करि लीना॥ गुर सेवा करि आइसु पाई॥ राम मात पहि गए दोउ भाई॥ चरन चां
प कहि कहि मृदु बानी॥ जननी सकल भर्थ सनमानी॥ भाईहि सौंपि मातु से
वकाई॥ आप निषादहि लीने बुलाई॥ चले सषा कर सों कर जोरी॥ सिथल स
नेह सरीर न थोरी॥ पूछत सषहि सो ठांउ दिषाउ॥ नेक नैन मन जरन जुडाऊ॥
जहँ सीया राम लषन निस सोए॥ कहत भरे जल लोचन कोए॥ भरथ बचन
सुनि भयो बिषादु॥ तुरत तहां लै गयो निषादु॥ ४८ दो॥ जहँ सीसुपा पुनीत
तर रघुवर की बिश्राम॥ अति सनेह सादर तहाँ कीनो दंड प्रनाम॥ ४९ चौ॥
कुस साथरी निहार सुहाई॥ कीन प्रनाम प्रदछन लाई॥ चरन रेष रज आं

रा षनलाई ॥ बनैनकहतप्रीतअधिकाई ॥ कनकबिंददोचारकदेषे ॥ राषे

राम सीससीयासमलेषे ॥ सजलबिलोचनहृदैगिलानी ॥ कहतसषासनबच

५७ नसुबानी ॥ श्रीहतसीयबिरहदुतिहीना ॥ यथाअवधनरनारमलीना ॥ राम

पिताजनकदेउपटरकेही ॥ करतलभोगजोगजजेही ॥ ससरभानकुलभा ५७

नभुयालू ॥ जनहिसहितअमरावतिपालू ॥ प्राननाथरघुनाथगुसाई ॥

जोबड़होतसुरामबड़ाई ॥४०॥ दो० ॥ पतिदेवतसुतीयमनसीयासाथरी

देषी ॥ बिहरतहृदैनहहरिहरिपबतेकठनबिसेष ॥४११॥ चौ० ॥ लालनयो

ल गलषनलघुलोने ॥ भएनभाइअसअहहिनहोने ॥ पुरजनप्रियपितमात

दुलारे ॥ सीयारघुबीरहिप्रानप्यारे ॥ मृदमूरतिसुकुमारसुभाऊ ॥ ततबा

रतनलागनकाऊ ॥ तेबनसहहिबिपतिइसभांती ॥ निदरेकोटिकुलसइहि

छाती ॥ रामजनमजगकीनउजागर ॥ रूपसीलसुषसबगुनसागर ॥

परजनपुरजनगुरपितमाता ॥ रामसुभाउसबहिसुषदाता ॥ बैरीउ

रामबड़ाई करहीं ॥ बोलनिमिलनिबिनैमनहरहीं ॥ सारदकोटको

टशतशेषा ॥ करिनसकहिप्रभगनलेषा ॥४१२॥ दो० ॥ सुषसरूपरघुबं

समएमंगलमोदनिधान॥ तेसोवतकुसडासमहिबिधगतीअतिबलवा
न॥४१३॥ चौ॥ रामसुनादुषकाननकाऊ॥ जीवनतरजिमजुगवतराऊ॥ पलक
नैनफनिमनिजेहभांती॥ जगवाहिजननिसकलदिनराती॥ तेअबफिरतवि
पनपदचारी॥ कंदमूलफलफूलअहारी॥ धृगकैकईअमंगलमूला॥ भ
ईसीप्राणप्रीतमप्रतकूला॥ मैधृगधृगअघउदधअभागी॥ सभउत
पातभयोजेहलागी॥ कुलकलंककरकैसृज्योबिधाता॥ सांईद्रोहमुहिकीन्हकु
माता॥ सुनिसप्रेमसमझावैनिषादु॥ नाथकरीऐकतबादबिषादु॥ रामतु
महिप्रियतुमप्रियरामहि॥ इहनिरदोसदोसबिधबामहि॥४१४॥ छंद॥ बि
धबामकीकरनीकठनजेहमातकीनीबावरी॥ तेहरातपुनिपुनिकरहिंप्रभुसा
दरसराहनरावरी॥ तुलसीनतुमसेरामप्रीतमसे[illegible]कहतहैंसो
हैंकीए॥ प्रनामममंगलजानअपनेआनीऐधीरजहीए॥४१५॥ सो॥ अंतरजा
मीरामसकुचसप्रेमकृपायतन॥ चलीयकरीयविश्रामएहिबिचारदृढ
आनिमन॥४१६॥ चौ॥ सषाबचनसुनिउरधरधीरा॥ चलेबिलोकननगा
रतभारी॥ परदषनाकरकरहिंप्रनामा॥ देहिंकैकईखोरनकामा॥ भरभरवा

रविलोचनलेहीं॥ बाम बिधातहि दूषन देहीं॥ एक सराहत भरत सनेहू
कोउ कह न्रपति निबाहेउ नेहू॥ निंदहि आपु सराहि निषादहि॥ को क
हि सकै बिमोहि बिषादहि॥ इहि बिधि राति लोक सभ जागा॥ भा भिनुसार
गुदारा लागा॥ गुरहि सुनाव चढाइ सुहाई॥ नई नाव सभ मात चढाई॥
४१७॥ दो॥ प्रात क्रिआ करि मातपद बंदि गुरहि सिर नाइ॥ आगे कीए निषा
द गन दीन्हेउ कटक चलाइ॥ ४१८॥ चौ॥ दंड चारि महि भा सभ पारा॥ उतरि भ
रत तब सभहि संभारा॥ कीऐ निषादनाथ अगुआई॥ मात पालकी सकल
चलाई॥ साथ बुलाइ भाइ लघु दीना॥ बिप्रन्ह सहित गउन गुर कीना॥
आपु सुरसरिहि कीन प्रनामू॥ सुमरे लखन सहित सीया रामू॥ गवने भ
रत प्यादे पाए॥ कोतल संग जाहि डोरिआए॥ कहहि सुसेवक बारहि बारा॥ होइअ
नाथ असु असवारा॥ राम प्यादे पाइ सिधाए॥ हम कहि रथ गज बाज
बनाए॥ सिर भर जाउ उचत अस मोरा॥ सभ ते सेवक धरम कठोरा॥ देख
भरत गति सुन म्रिदु बानी॥ सभ सेवक मन गरहि गलानी॥ ४१९॥ दो॥ भ
रत तीसरे पहिर को कीया प्रवेस प्रियाग॥ कहित राम सीया राम सीया उम

ग्गेमनअनरागा॥४२०॥चौ॥पुलककजलकतनयांडीकैसे॥पंकजकोसउंपस
गनजैसे॥भरतयादेगनाइमाद॥भएउभयतमभीमकलसमाज॥भरदुपर
यबरलीनसमभलोकनसए॥केनपनामवेचेनकिमाए॥सबिधमीतामीत
नीवनहाए॥दीएदनमहिसरमनमाने॥देवतमपामलधवलहिलोदे॥पुल
कसरीरभरतकरिजोरे॥सकलकामप्रदतीरथराऊ॥वेदविदतजगप्रगटप्रभा
ऊ॥मागेभीखत्यागनिजधर्मु॥आरतकाहिनकरैकुकर्मु॥असजीयाजानस
जानिसुदानी॥सफलकरऊजगजाचकबानी॥४२१॥दो॥अर्थनधर्मनकाम
रुचगतिनचहौंनिर्बान॥जनमजनमरतिरामपदएहवरदाननआन॥४२२॥
चौ॥जानऊरामकुटलकरमोही॥लोगकहऊगुरसाहिबद्रोही॥सीतारामच
नरतिमोरे॥अनदिनबढैअनग्रहतोरे॥जलदजनमभरिसरतिबिसारो॥
जाचतजलपविपाहनडारो॥चातिकरटनघटैघटिजाई॥बढैप्रेमसबभांत
भलाई॥कनकहिबानचढैजिमदाहे॥तिमप्रीतमपदनेमनिबाहे॥भरतब
चनसुनिमांझत्रिबेनी॥भैमृदबानीमंगलदैनी॥तातभरततुमसभबिधसा
धू॥रामचरनअनरागअगाधु॥बादिगिलानिकरउमनमाही॥तुमसमरा

महि प्रिय कोउ नाही ॥४२३॥ दो० ॥ तन पुलकेउ हियँ हरष सुनि बेनि बचन अनुकू-
ल ॥ भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल ॥४२४॥ चौ० ॥ प्रमुदित तीरथ-
राज निवासी ॥ बैखानस बटु गृही उदासी ॥ कहहि परसपर मिलि दस पाँचा ॥ भर-
त सनेह सील सुचि साँचा ॥ सुनत राम गुन ग्राम सुहाए ॥ भरद्वाज मुनिबर प-
हि आए ॥ दंड प्रनाम करत मुनि देखे ॥ मूरतिवंत भाग निज लेखे ॥ धाइ उठाइ ला-
इ उर लीने ॥ दीन असीस कृतारथ कीने ॥ आसन दीन नाइ सिर बैठे ॥ चहत स-
कुच गृह जनु भजि पैठे ॥ मुनि पूछब कछु यह बड सोचू ॥ बोले रिषि लखि सील स-
कोचू ॥ सुनहु भरत हम सब सुधि पाई ॥ बिधि करतब पर किछु न बसाई ॥४
२५ ॥ दो० ॥ तुम गीलानि जीय जिन करि समुझ मात करतूत ॥ तात केकइ दोस न
हि गई गीरा मति धूत ॥४२६॥ चौ० ॥ यह कहत भल कहहि न कोऊ ॥ लोक बेद बुध
संमत दोऊ ॥ तात तुमार बिमल जस गाई ॥ पाइहि लोकउ बेद बडाई ॥ लोक बे-
द संमत सब कहई ॥ जेहि पित देइ राज सो लहई ॥ राउ सत्यब्रत तुमहि बुला-
ई ॥ देत राज सुख धरम बडाई ॥ राम गवन बन अनरथ मूला ॥ जो सुनि सकल
बिस्व भइ सूला ॥ सो भावी बस रानि अयानी ॥ करि कुचालि अंतहुँ पछितानी ॥

तहंतुमारअल्पकाअपराधू॥कहैसोअधमअयानअसाधू॥करतेराजतो
तुमहिनदोषू॥रामहिहोतसुनतसंतोषू॥४२७॥दो॥अबअतिकींनउभरतभ
लतुमहिउचितमतएह॥सगलसुमंगलमूलजगरघुबरचरनसनेह॥४
२०॥चौ॥सोतुमारधनजीवनप्राना॥भूरिभागकोतुमहिसमाना॥यहितुमा
रआचरजनताता॥दसरथसुअनरामप्रियभ्राता॥सुनहुभरतरघुपतिमनमा
हीं॥प्रेमपात्रतुमसमकोउनाहीं॥लखनरामसीतहिअतिप्रीती॥निसिसबतुमहिस
राहतबीती॥जानामरमनहातप्रयागा॥मगनहोहितुमरेअनुरागा॥तु
मपरअसप्रेमरघुबरका॥सुखजीवनजगजसजडनरका॥यहिनअधिकरघुर
बडाई॥प्रनतकुटंबपालरघुराई॥तुमतोभरतमोरमतएहू॥धरेदेहजनु
रामसनेहू॥४२४॥दो॥तुमकेभरतकलंकयहिहमसबकेउपदेस॥रामभगा
तिरससिद्धहितभायहुसमैगनेस॥४३०॥चौ॥नवबिधबिमलतातजसतोरा॥
रघुबरकिंकरकुमदचकोरा॥उदितसदाअथवैगाकबहूंना॥घटैहिननभज
गदिनदिनदूना॥कोकतिलोकप्रीतिअतिकरही॥प्रभुप्रतापरबिछबिहिनहरही॥
निसदिनसुखदसदासभकाहू॥ग्रसैनकैकईकरतबराहू॥पूरनरामसप्रेम
पयूषा॥गुरअपमानदोषनहिदूषा॥रामभगतिअबअमियअघाहू॥कीनेउ

श्री
राम

॥६०॥

मलभसुधावसुधाहू॥ भूपभगीरथसुरसरिआनी॥ सुमिरतसकलसुमंग
लषानी॥ दसरथगुनगनबरनिनजाही॥ अधिककहाजेहिसमजगनाही॥ ४
२१॥ दो॥ जासुसनेहसकोचवसरामप्रगटभएआइ॥ जेहरहियनैननि
कबहुनिरषेनहीअघाइ॥ ४२२॥ चौ॥ कीरतिविधुतमकीनअनूपा॥ जेह
वसिरामप्रेममृगरूपा॥ तातगलानिकरहुजीयजाई॥ डरहुदरिद्रहि
पारसपाए॥ सुनहुभरतहमझूठकहही॥ उदासीनतापसबनरहही
सभसाधनकरिसुफलसुहावा॥ लषनरामसीयादरसनपावा॥ तेहिफ
लकरिफललदरसतुमारे॥ सहितपयागसुभागहमारे॥ भरतधंनतमज
सजगजयो॥ कहितसप्रेममगनमनिभयो॥ सुनिमुनिवचनसभासदहर्षे
साधसराहिसुमनसुरबर्षे॥ धंनिधंनिधुनिगगनप्रयागा॥ सुनिसुनि
भरतमगनअनुरागा॥ ४२३॥ दो॥ पुलकगातहियेरामसीयासजलसरो
रुहनैन॥ करप्रनाममुनिमंडलहिबोलेगदगदबैन॥ ४२४॥ चौ॥ मुनि
समाजअरुतीर्थराज॥ साचिहसपथअघाइअकाज॥ इहथलजोकछु
कहियबनाई॥ इहसमअधिकनअघअधमाई॥ तुमसर्वग्यकहोंसति
भावा॥ उरअंतरजामीरघुरावा॥ मोहिनमातकरतबकरसोच॥ नहिदुष

राम
॥६०॥

जीयजगजानैपोचू॥नाहिनडरबिगरैपरलोकू॥पितासुमरनकरिनाहिनसो
कू॥सुकृतिसुजसभरभवनसुहाए॥लछमनरामसरससुतपाए॥रामबिरहतजि
नतजेउछिनभंगू॥भूपसोचकरकवनप्रसंगू॥रामलखनसीयाबिनपगपन
ही॥४३५॥दो॥अजिनबसनफलअसनमहिसैनडासकुसपात॥बसतरतरन
तसहितहिममातपबर्षावात॥४३६॥चौ॥इहदुखदाहदहैदिनछाती॥भूखन
बासरनींदनराती॥इहकुरोगकरिअउखधनाही॥सोधोसकललोकमनमाही॥मा
तकुमातबढैअघमूला॥तेनहमारहितकीनबसूला॥कुलतकुठारकरकीनकुयं
त्रु॥गाडिअवधपढकठिनकुमंत्रु॥मोहिलगियहकुठाटतिनठाटा॥घालिसिस
भजगबारहिबाटा॥मिटैकुरोगरामफिरआए॥बसैअवधनहिआनउपाए॥
भरतबचनसुनिमुनिसुखपाई॥सभनकीन्हबहुभांतिबडाई॥तातकरोजिनसो
चबिसेखी॥सभदुखमिटहिरामपददेखी॥४३७॥दो॥करिप्रबोधमुनिबरकहेउ
अतिथप्रेमप्रियहोहि॥कंदमूलफलफूलहमदेहलेउकरिछोहि॥४३८॥चौ॥सुनि
मुनिबचनभरतहियेसोचू॥भयोकुअवसरकठिनसकोचू॥जानगुरगुरगिरा
बहोरी॥चरनबंदबोलेकरजोरी॥सिरधरआइसकरियेतुमारा॥परमधर्मयह
हिमाथहमारा॥भरतबचनमुनिबरमनभाए॥सुचसेवकसिषनिकटबुलाए॥

चाहिऐ कीन भरत पहुनाई॥ कंद मूल फल आनहु जाई॥ भलेहि नाथ कहि तिन
कहि सिर नाई॥ प्रमुदित निज निज काज सिधाई॥ मुनहि सोच पाहुन बड नेव
ता॥ तसि पूजा चाहिऐ जस देवता॥ सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई॥ आइसु
होइ सो करहि गुसाई॥ ४४९॥ दो॥ राम बिरह ब्याकुल भरत सानुज सहित समाज॥ प
हुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज॥ ४५०॥ चौ॥ रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर
बानी॥ बड़भागिनि आपुहि अनुमानी॥ कहहि परसपर सिधि समुदाई॥ अतुलित अ
तिथि राम लघु भाई॥ मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू॥ होइ सुखी सब राज समाजू॥
अस कहि रचे रुचिर गृह नाना॥ जेहि बिलोकि बिलखाहि बिमाना॥ भोग बिभू
ति भरि भरि राखे॥ देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे॥ दासी दास साज सब लीन्हे॥ जोग
वत रहहि मनहि मन दीन्हे॥ सब समाज सजि सिधि पल माही॥ जे सुख सुरपुर स
पनेहु नाही॥ प्रथमहि बास दीए सब केही॥ सुंदर सुखद जथा रुचि जेही॥ ४५१॥ दो॥
बहुरि सपरिजन भरत कहै रिषि अस आइसु दीन॥ बिधि बिसमै दाइक बिभव मुनिबर त
पबल कीन॥ ४५२॥ चौ॥ मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका॥ सब लघु लगे लोकपति लो
का॥ सुख समाज नहि जाइ बखानी॥ देखत बिरति बिसारहि ग्यानी॥ आसन सयन सुब
सन बिताना॥ बन बाटिका बिहंग मृग नाना॥ सुरभि फूल फल अमीअ समाना॥ बि

मलजलासम बिबिध बिताना॥ असन पान सुचि अमिअ अमी से॥ देखि लोग सकु
चाहिं जमी से॥ सुर सुरभी सुरतरु सबही कै॥ लखि अभिलाषु सुरेस सची कै॥ रितु
बसंत बह त्रिबिध बयारी॥ सब कहुं सुलभ पदारथ चारी॥ स्रक चंदन बनिता
दिक भोगा॥ देखि हरष बिसमै बस लोगा॥ ४४३॥ दो॰ संपति चकई भरथ चक मुनि आ
इस खेलवार॥ तेहि निसि आश्रम पिंजरा राखे भा भिनुसार॥ ४४४॥ चौ॰ कीन्ह नम
ज्जन तीर्थराजा॥ नाइ मुनहि सिर सहित समाजा॥ ऋषि आयसु असीस सिर रा
खी॥ करि दंडउत बिनै बहु भाषी॥ पथ गति कुसल साथ सब लीने॥ चले चित्र
कूटहि चित दीने॥ राम सखा कर दीने लागू॥ चलत देह धरि जनु अनुरागू॥ न
हि पद त्रान सीस नहि छाया॥ प्रेम नेम ब्रत धर्म अमाया॥ लखन राम सीय पं
थ कहानी॥ पूछहि सखहि कहत म्रदु बानी॥ राम बास थल बिटप बिलोकी॥ उर
अनुराग रहत नहि रोकी॥ देखि दसा सुर बर्षै फूला॥ भै म्रदु महि मगु मं
गल मूला॥ ४४५॥ दो॰ कीए जांहि छाया जलद सुखद बहै बर बात॥ तस मगु भ
यो न राम कहि जस भा भरतहि जात॥ ४४६॥ चौ॰ जड़ चेतन मग जीव घनेरे॥ जे चित
ए प्रभु जिन प्रभु हेरे॥ ते सब भए परम पद जोगू॥ भरत दर्स मेटा भव रोगू॥ यह बड़ि
बात भरत कै नाही॥ सिमरत जिनहि राम मन माही॥ बारक राम कहत ज

गजेउ॥ हेतु तरवन तानं नर तेऊ॥ भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता॥ कस न होइ मग
मंगल दाता॥ सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं॥ भरतहि निरखि हरषु हीयें लहहीं॥
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचु॥ जग भल भलेहि पोच कहुं पोचु॥ गुर सन कहेउ करि
अ प्रभु सोई॥ रामहि भरतहि भेट न होई॥ ४४७॥ दो॥ राम सकोची प्रेम बस भरत
सप्रेम पयोध॥ बनी बात बिगरन चहति करिअ जतन छल सोध॥ ४४८॥ चौ॥
बचन सुनत सुरगुर मुसकाने॥ सहस नैन बिन लोचन जाने॥ कहि गुर खा
द कोमल छल छाडु॥ ईहा कपट करि होइ अकाजू॥ मायापति सेवक सन मा
या॥ करइ त उलटि परे सुरराया॥ तब कछु कीन राम रुख जानी॥ अब कुचा
ल करि होइहि हानी॥ सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाउ॥ निज अपराध रिसाहि न
काउ॥ जो अपराध भगत कर करही॥ राम रोष पावक सो जरही॥ लोकहु बेद
बिदित इतहासा॥ इह महिमा जानै दुरबासा॥ भरत सरस को राम सनेही॥ जग
जप राम राम जप जेही॥ ४४९॥ दो॥ मन हु न आनिअ अमरपति रघुपति भ
गति अकाज॥ अजस लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाज॥ ४५०॥ चौ॥ सु
नु सुरेस उपदेस हमारा॥ रामहि सेवक परम प्यारा॥ मानत सुख सेवक से
वकाई॥ सेवक बैर बैर अधिकाई॥ यदपि सम नहि राग न रोषू॥ गहे न पा

पउ मै गुन दोषू ॥ कर्म प्रधान विस्व करि राषा ॥ जो जस करइ सो तस फल चाषा ॥ तद
पि करैस मविषम विहारा ॥ भगत अभगत हृदै अनुसारा ॥ अगुन अलेप अमान ए
क रस ॥ राम सगुन भए भगति प्रेम वस ॥ राम सदा सेवक रुचि राषी ॥ वेद पुरान साध
सुर साषी ॥ अस जीय जानि तजहु कुटिलाई ॥ करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥ ४५१ ॥
दो॰ ॥ राम भगत परहित निरत पर दुष दुषी दयाल ॥ भगत सिरोमनि भरत ते जनि ड
रपहु सुरपाल ॥ ४५२ ॥ चौ॰ ॥ सत्य सिंधु प्रभु सुर हितकारी ॥ भरत राम आइस अनु
सारी ॥ स्वार्थ विवस विकल तुम्ह होहू ॥ भरत दोस नहि राउर मोहू ॥ सुनि सुरवर
सुरगुर वर वानी ॥ भा प्रमोद मन मिटी गिलानी ॥ वरषि प्रसून हरषि सुरराऊ ॥
लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥ एहि विधि भरत चले मग जाहीं ॥ दसा देषि मुनि सिध
सिहाहीं ॥ जबहि राम कहि लेहि उसासा ॥ उमगत प्रेम मनहु चहु पासा ॥ द्रवहि
वचन सुनि कुलिस पषाना ॥ पुरजन प्रेम न जाइ वषाना ॥ वीच वास करि जम
नहि आए ॥ निरषि नीर लोचन जल छाए ॥ ४५३ ॥ दो॰ ॥ रघुवर वरन विलोकि वर वा
रि समेत समाज ॥ होत मगन वारिधि विरह चढे विवेक जहाज ॥ ४५४ ॥ चौ॰ ॥ ज
मुन तीर तिहि दिन कीन्ह वासू ॥ भयो समय सम सवहि सुपासू ॥ रातहि घाट घाट की
तरनी ॥ आईं अगनित जाहि न वरनी ॥ प्रात पार भए एकहि षेवा ॥ तोषे राम स

125

रा

६२

ताकीसेवा॥ चलेनहइजमनसिरनाई॥ राजसमाजजाइसमपाछें॥ ति
हपाछेदोउबंधुप्यादे॥ भूषनबसनबेषसुठसादे॥ सेवकसुहृदसच
वसुतसाथा॥ सुमिरतलखनसीयारघुनाथा॥ जहजहरामबासबि
श्रामा॥ तिहतिहकरहिसप्रेमप्रनामा॥ ४५५॥ दो॥ मगबासीवरनारिस
निधामकामतजिधाइ॥ देखिसरूपसनेहसबमुदितजनमफलपाइ॥
४५६॥ चौ॥ कहेसप्रेमएकएकपाही॥ रामलखनसखहोहकिनाही॥ बैब
परूपवरनसोइआली॥ सीलसनेहसरसमचाली॥ बेखनसोसख
सीयानसंगा॥ आगेअनीचलीचतुरंगा॥ नहिप्रसनमखमानसखेदा
॥ सखसंदेहहोइएहिभेदा॥ तासतरकतियगनमनमानी॥ कहेसकल
तहिसमनहिस्यानी॥ तिहसराहबानीफुरिपूजी॥ बोलीमधरबचनती
यदूजी॥ कहिसप्रेमसभकथाप्रसंगू॥ जिहबिधरामराजरसभंगू॥ भ
रतहिबहुरिसराहनलागी॥ सीलसनेहसभाउसभागी॥ ४५७॥ दो॥
चलतप्यादेखातफलपितादीनतजिराज॥ जातमनावनरघुबरहिभ
रतसरसकोआज॥ ४५८॥ चौ॥ भाइपभगतिभरतआचरनू॥ कहतसन
तदुखदूखनहरनू॥ जोकछुकहबथोरसखिसोई॥ रामबंधअसका

राम

६२

हिंन होइ री॥ हम सब भाँति भरतहि देखे॥ भए धंन जुबती जन लेखै॥ सुनि गुन देखि दे
षि दसा पछुताहीं॥ कैकई जनन जोग सुत नाहीं॥ कोउ कहि दूषन रानिहि नाहिन
बिधि सब कीन्ह हमहि दाहिन॥ कहँ हम लोक बेद बिधि हीना॥ लघु तीय कुल कर
तूति मलीना॥ बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा॥ कहँ यह दरस पुन्य परनामा॥ अ
स अनंद अचरज प्रति ग्रामा॥ जनु मरभूमि कलपतर जामा॥ ४५९॥ दो॥ भरत दरस
देखत खुल्यो मग लोगन कर भाग॥ जनु सिंघलबासिन भयो बिधि बस सुलभ प्र
याग॥ ४६०॥ चौ॥ निज गुन सहित राम गुन गाथा॥ सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा॥
तीरथ मुनि आश्रम सुर धामा॥ निरखि निमजहिं करहिं प्रनामा॥ मनहीं मन मा
गौं बर एहू॥ सीया राम पद पदुम सनेहू॥ मिलहिं किरात कोल बनबासी॥ बैखान
स बटु जती उदासी॥ करि प्रनाम पूछहिं जेहि तेही॥ केहि बन लखन राम बैदेही॥ ते प्र
भु समाचार सब कहहीं॥ भरतहि देखि जनम फल लहहीं॥ जे जन कहहिं कुसल ह
म देखे॥ ते प्रिय राम लखन सम लेखे॥ इहि बिधि बूझत सबहि सुबानी॥ सुनत राम
बनबास कहानी॥ ४६१॥ दो॥ तिहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमरि रघुनाथ॥ राम द
रस की लालसा भरत सरस सब साथ॥ ४६२॥ चौ॥ मंगल सगुन होहिं सब काहू॥

श्री
राम
६५

करकहिंसुबदबिलोचनबारू॥भरतहिसहितसमाजउछाहू॥मिलिहैंरामुमि
टैउरदाहू॥करतमनोरथजसजीयजाके॥जाहिसनेहसुधासबछाकै॥सीथि
लअंगपगमगडगडोलहिं॥बिहवलबचनप्रेमबसबोलै॥रामसखातिहि
समयदिखावा॥सैलसिरोमनसहजसुहावा॥जासुसमीपसरितपैतीरा॥सीआ
समेतबसहिदोउबीरा॥देखकरहिंसबदंडप्रनामा॥कहिजयजानकीजीवनरा
मा॥प्रेममगनअसराजसमाजू॥जनफिरिअवधचलेरघुराजू॥२४३॥दो॥भरत
प्रेमतिहसमयजसतसकहिसकैनशेष॥कबहिअगमजिमब्रह्मसुखअहमम
मलिनजनेष॥२६४॥चौ॥सकलसनेहसिथिलरघुबरकै॥गएकोसदुइदिनक
रढरकै॥जलथलदेखिबसेनिसिबीते॥कीनगवनरघुनाथपरीते॥उहांरामरज
नीअवशेषा॥जागेसीयासपनअसदेखा॥सहितसमाजभरतजनुआए॥नाथ
बियोगतापतनताए॥सकलमलिनमनदीनदुखारी॥देखीसासुआनअनुहारी
सुनिसीअसपनभरेजललोचन॥भएसोचबससोचबिलोचन॥लखनसप
नयहनीकनहोई॥कठिनकुचाहसुनाइहिकोई॥असकहिबंधुसमेतनहा
ने॥पूजपुरारिसाधसनमाने॥२६५॥छंद॥सनमानसुरमुनबंदबैठेउतरदि

राम
६५

म

व

128

सि देखत भए॥ नभ धूर खग मृग भूर भागे बिकल प्रभ आश्रम गए॥ तुलसी
उठे अवलोक कारन काह चित सचकित रहे॥ सब समाचार किरात कोलन आइ
तिह अवसर कहे॥ २५२॥ सो॥ सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भै॥ सरद
सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल॥ २५२॥ चौ॥ बहुर सोच बस भे सीयारव
नु॥ कारन कवन भरत आगमनु॥ एक आइ अस कहा बहोरी॥ सेन संग चतुरं
ग न थोरी॥ सो सुनि रामहि भा अति सोचू॥ इत पितु बचन उत बंधु संकोचू॥ भरत
सुभाउ समझ मन माही॥ प्रभ चित हित थित पावत नाही॥ समाधान तब भा य
ह जानी॥ भरत कहे मह साधु स्यानी॥ लषन लष्यो प्रभ हृदै षभारू॥ कहत समै सम
नीत बिचारू॥ बिन पूछे कछु कहौ गुसाई॥ सेवक समै न ढीठ ढिठाई॥ तु
म सर्बग्य सिरोमन स्वांमी॥ आपन समझ कहो अनगामी॥ २५३॥ दो॥ नाथ सुहृद
सठ सरल चित सील सनेह निधान॥ सब पर प्रीत प्रतीत जिह जान आप समा
न॥ २५३॥ चौ॥ बिषै जीउ पाए प्रभताई॥ मूढ मोह बस होहि जनाई॥ भरत नीत रत
साध स्याना॥ प्रभ पद प्रीत सकल जग जाना॥ तेऊ आज राजपद पाई॥ चले धर्म म
रजाद मिटाई॥ कुटल कुबंध कुअवसर ताकी॥ जानि राम बनबास इकाकी॥ करी

कुमंत्र मलिन साज समाजू॥ आए करि निःकंटक राजू॥ कोटि प्रकार कपट कुट
लाई॥ कि हस हत गज बाजर पाई॥ भरत देइ देस को आजाए॥ जग बौंराज प
दपाइ॥४२०॥ दो॥ ससि गुर तिय गामी नहुष चढेउ भूमिसुर जान॥ बेद लोक ते
बिमुख भा अधम के बेन समान॥४२१॥ चौ॥ सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू॥ कि
हन राजमद दीन कलंकू॥ भरत कीन यह उचित उपाऊ॥ रिपु रन रंच न राखब का
ऊ॥ एक कीन नहि भरत भलाई॥ निदरे राम जान असहाई॥ समझ परे सोई
आज विशेषी॥ समर सरोष राम मुख देषी॥ इतना कहत नीति रस भूला॥ रन
रस बिटप पुलक मिस फूला॥ प्रभु पद बंद सीस रज राषी॥ बोले सत्य सहज ब
ल भाषी॥ अनुचित नाथ न मानव मोरा॥ भरत हमहि उपचार न थोरा॥ कहि
लगी सहहि रहि मन मांरे॥ नाथ साथ धन हाथ हमारे॥ ४२२॥ दो॥ छत्रजात
रघुकुल जन्म राम अनुज जान॥ लात ह मारत चड़त सीस नीच को धुर समान
॥ उठि कर जोरि रजाइस मागा॥ मनहु बीर रस सोवत जागा॥ बांधि जटा सिर क
कस कटि भाथा॥ साज सरासन साइक हाथा॥ आज राम सेवक जस लेऊ॥ भर
तहि समर सिषावन देऊ॥ राम निरादर कर फल पाई॥ सोवै समर सेज

देउ भाई ॥ आइ बना भल सकल समाजू ॥ प्रगट करौं रिस पाछिल आजू ॥ जिम
करि निकर दलै मृगराजू ॥ लेइ लपेट लवा जिम बाजू ॥ तैसे भरतहि सेन समे
ता ॥ सानुज निदरि निपातौं खेता ॥ जौं सहाइ करै संकर आई ॥ तौ मारौं रन राम
दुहाई ॥ ४२४ ॥ दो ॥ अति सरोष माखे लखन लखि सुनि सपथ प्रमान ॥ सभय लोक
पति लोक सब चाहत भभरि भगान ॥ ४२५ ॥ चौ ॥ जग भै मगन गगन भै बानी ॥ ल
षन बाहुबल बिमल बषानी ॥ तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा ॥ को कहि सकै को जान
न हारा ॥ अनुचित उचित काज कछु होई ॥ समुझ करी भल कहि सब कोई ॥ सह
सा करि पाछै पछुताही ॥ कहै बेद बिध ते बिध नाही ॥ सुनि सुर बचन लषन स
कुचाने ॥ राम सीया सादर सनमाने ॥ कही तात तुम्ह नीत सुहाई ॥ सब ते कठन राज
मद भाई ॥ जो अचवत न्रप मातहि तेई ॥ नाहिन साधसभा जिन सेई ॥ सुनहु लष
न भल भरत सरीसा ॥ बिध प्रपंच महँ सुना न दीसा ॥ ४२६ ॥ दो ॥ भरतहि होइ न
राजमद बिध हरि हर पद पाइ ॥ कबहु कि कांजी सीकरनि छीर सिंधु बिनसा
इ ॥ ४२७ ॥ चौ ॥ तिमर तरन तरनहि मकु गिलई ॥ गगन मगन मकु मेघ

हि मिलही ॥ गोपद जल बूडहि घटजोनी ॥ सहज छिमा बरु छाडउ छोनी ॥ म
सक फूंकि मकु मेरु उडाई ॥ होइ न नृपमद भरतहि पाई ॥ लखन तुम्हार स
पथ पितु आना ॥ सुच सबंधु नहि भरत समाना ॥ सगुन षीर अवगुन जल ता
ता ॥ मिलइ रचै परपंच बिधाता ॥ भरत हंस रबिबंस तडागा ॥ जनमि कीन गुन
दोष बिभागा ॥ गहि गुन पय तजि अवगुन बारी ॥ निज जस जगत कीन उजारी ॥
कहत भरत गुन सील सुभाउ ॥ प्रेम पयोधि मगन रघुराउ ॥ ४७८ ॥ दो ॥ सुनि र
घुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेत ॥ सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपा
निकेत ॥ ४७९ ॥ चौ ॥ जो न होत जग जनम भरत को ॥ सकल धरम धुर धरनि धरत
को ॥ कबि कुल अगम भरत गुन गाथा ॥ को जानै तुम बिनु रघुनाथा ॥ लखन रा
म सीया सुनि सुर बानी ॥ अति सुख लहि तेन जाइ बखानी ॥ इहां भरत सब स
हित सहाए ॥ मंदाकिनी पुनीत नहाए ॥ सरित समीप राखि सब लोगा ॥ मांगि
मात गुर सचिव नियोगा ॥ चले भरत जिह सीया रघुराई ॥ साथ निषाद ना
थ लघु भाई ॥ समझ मात करतब सकुचाही ॥ करत कुतरक कोटि मन माही ॥

ले

रामलखनसीयासुनिममनांऊ॥उठिजनिअनतजाइतजिठांऊ॥४८०॥दो॥मातम
तेमहिमानिमोहिजोकछुकरहिसुथोर॥अघअवगुनछमिआदरहिसम
झिआपनीओर॥४८१॥चौ॥जौपरहरहिमलिनमनजानी॥जौसनमानहिसे
वकजानी॥मोरेसरनेरामकेपनही॥रामसुस्वामिदोससभजनही॥जगजस
भांजिनचांतिकमीना॥नेमप्रेमनिजनिपुननवीना॥असमनगुनतचले
मगजाता॥सकुचसनेहसिथिलसभगाता॥फेरतमनहिमातकृतिखोरी॥
चलतभगतिबलधीरजधोरी॥जबसमझतरघुनाथप्रभाऊ॥तबपथप
रतउतालपाऊ॥भरतदसातिहिअवसरकैसी॥जलप्रवाहजलअलिगतिजै
सी॥देखिभरतकरसोचसनेहू॥भानिषादतिहसमयविदेहू॥४८२॥दो॥लगे
होनमंगलसगुनसुनिगुनकहतनिषादि॥मिटहिसोचहोइहरखपुनिपरना
मविषादि॥४८३॥चौ॥सेवकवचनसतिसबजाने॥आश्रमनिकटिजाइनीयरा
ने॥भरतदीखसबसैलसमाजू॥मुदतिछुधतजनुपाइसनाजू॥ईतभीतजनु
प्रजादुखारी॥त्रिविधतापपीड़ितग्रहमारी॥जाइसुराजसुदेससुखारी॥हो
इभरतगतितिहअनुहारी॥रामवाससबवनसंपदभ्रांजा॥सुखीप्रियाजनु

पाइ सुराजा॥ सचिव बिरागु बिबेक नरेसू॥ बिपिन सुहावन पावन देसू॥ भ
ट जम नेम सील रजधानी॥ सांति सुमति सुचि सुंदरि रानी॥ सकल अंग संप
न्न सुराऊ॥ राम चरन आश्रित चित चाऊ॥४८५॥दो॥ जीति मोह महिपाल दल स
हित बिबेक भुआल॥ करत अकंटक राज पुर सुख संपदा सुकाल॥४८६॥चौ॥ ब
न प्रदेस मुनि बास घनेरे॥ जनु पुर नगर गांउ गन खेरे॥ बिपुल बिचित्र बिहं
ग मृग नाना॥ प्रजा समाज न जाइ बखाना॥ खगहा करि हरि बाघ बराहा॥ दे
खि महिष बृष साज सराहा॥ बैर बिहाइ चरहिं इक संगा॥ जहं तहं मनहु सेन च
तुरंगा॥ झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं॥ मनहु निसान बिबिध बिधि
बाजहिं॥ चक चकोर चातक सुक पिक गन॥ कूजत मंजु मराल मुदित मन
॥ अलिगन गावत नाचत मोरा॥ जनु सुराज मंगल चहु ओरा॥ बेलि बिटप
तृन सफल सफूला॥ सब समाज मुद मंगल मूला॥४८७॥दो॥ राम सैल
सोभा निरखि भरत हृदै अति प्रेम॥ तापस तप फल पाइ जिमि सुखी सिराने ने
म॥४८८॥चौ॥ तब केवट ऊंचे चढि धाई॥ कहेउ भरत सन भुजा उठाई॥ ना
थ देखिअहि बिटप बिसाला॥ पाकर जंबु रसाल तमाला॥ जिन्ह तरबरन

मधबटसोहा॥मंजुबिसालदेषिमनमोहा॥नीलसघनपल्लवफललाला
अबिरलछांहसुषदसबकाला॥मानहुतिमिरअरुनमैरासी॥बिरचीबिधिसके
लिसुषमासी॥एतरसरितसमीपगोसांई॥रघुबरपरनकुटीजहछाई॥तु
लसीतरुबरबिबिधसुहाए॥कहुंकहुंसीयाकहुलषनलगाए॥बटछायावे
दिकाबनाई॥सीयानिजपानिसरोजसुहाई॥४८९ दो॥जहांबैठिमुनिगनस
हितनितसीयारामसुजान॥सुनेकथाइतहाससबआगमनिगमपुरान॥४
९॥चौ॥सषाबचनसुनिबिटपनिहारी॥उमगेभरतबिलोचनबारी॥क
रतप्रनामचलेदेउभाई॥कहतप्रीतसारदसकुचाई॥हर्षहिनिरषिरामपदअं
का॥मानहुपारसपायोरंका॥रजसिरधरिहियनैननलावहि॥रघुबरमि
लनसरससुषपावहि॥देषिभरतगतिअकथअतीवा॥प्रेममगनमृगष
गजडजीवा॥सषहिसनेहबिबसमगभूला॥कहिसुपंथसुरबर्षहिफूला
॥निर्षिसिद्धसाधकअनुरागे॥सहिजसनेहसराहनलागे॥होतनभूत
लभाउभरत को॥अचरसचरचरअचरकरतको॥४९१॥दो॥प्रेमअमि

म
६८
राम

यमंदर बिरहि भरत पयोधि गंभीर ॥ मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपा सिंधु
रघुबीर ॥ ४९२ ॥ चौ ॥ सखा समेत मनोहर जोटा ॥ लखेउ न लखन सघन
बन ओटा ॥ भरत दीख प्रभु आश्रम पावन ॥ सकल सुमंगल सदन सुहाव
न ॥ करत प्रवेस मिटे दुख दावा ॥ जनु जोगी परमारथु पावा ॥ देखे भरत लखन
प्रभु आगे ॥ पूछत बचन कहत अनुरागे ॥ सीस जटा कटि मुनि पट बां
धे ॥ तून कसे कर सरु धनु कांधे ॥ बेदी पर मुनि साधु समाजू ॥ सीय सहि
त राजत रघुराजू ॥ बलकल बसन जटिल तनु स्यामा ॥ जनु मुनि बेष कीन्ह
रति कामा ॥ कर कमलनि धनु सायकु फेरत ॥ जीय की जरनि हरत हसि
हेरत ॥ ४९३ ॥ दो ॥ लसत मंजु मुनि मंडली मधि सीय रघुचंद ॥ ग्यान स
भा जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंद ॥ ४९४ ॥ चौ ॥ सानुज सखा समेत मग
न मन ॥ बिसरे हरष सोक सुख दुख गन ॥ पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं ॥ भूत
ल परे लकुट की नाईं ॥ बचन सप्रेम लखन पहिचाने ॥ करत प्रना
म भरत जीय जाने ॥ बंधु सनेह सरस एहि ओरा ॥ उत साहिब सेवा बस

राम
६८

जोरा॥ मिलनि जाइ नहि गुदरत बनई॥ सुकवि लखन मन की गति भनही॥
रहे राखि सेवा पर भारू॥ चढी चंग जनु खैंचि खेलारू॥ कहत सप्रेम नाइ महि
माथा॥ भरत प्रनाम करत रघुनाथा॥ उठे राम सुनि प्रेम अधीरा॥ कहु पट क
हु निषंग धनु तीरा॥ ४४५॥ दो॥ बरबस लीए उठाइ उर लाए कृपानिधान॥
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान॥ ४४६॥ चौ॥ मिलनि प्रीत
कैसे जाइ बखानी॥ कबिकुल अगम करम मन बानी॥ परम प्रेम पूरन दोउ
भाई॥ मन बुधि चित अहमिति बिसराई॥ कहहु सो प्रेम प्रगट को करई॥
केहि छाया कबि मति अनुसरई॥ कबिहि अरथ आखर बलु साचा॥ अनुहरि ता
ल गतिहि नटु नाचा॥ अगम सनेह भरत रघुबर को॥ जहं न जाइ मनु बि
धि हरि हर को॥ सो मै कुमति कहौ केहि भांती॥ बाज सुराग कि गाडर तांती॥ मि
लनि बिलोकि भरत रघुबर की॥ सुरगन सभय धकधकी धरकी॥ समु
झाए सुरगुरु जड जागे॥ बरषि प्रसून प्रसंसन लागे॥ ४४७॥ दो॥ मिलि सप्रेम
रिपुसूदनहि केवट भेटेउ राम॥ बहुरि भाइ भेटे भरत लछिमन करत
प्रनाम॥ ४४८॥ चौ॥ भेटेउ लखन ललकि लघु भाई॥ बहुरि निषाद लीन उर

लाई॥ पुनि मुनिगन दुहु भाइन बंदे॥ अभिमत आसिषा पाइ अनंदे॥ सानुज
भरत उमगि अनुरागा॥ धरि सिर सीया पद पदम परागा॥ पुनि पुनि कर
त प्रनाम उठाई॥ सिर कर कमल परस बैठाए॥ सीयाँ असीस दीन मन मा
ही॥ मगन सनेह देह सुध नाही॥ सब बिध सानकूल लष सीता॥ भे निसोच
उर अपडर बीता॥ कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा॥ प्रेम भरा मन निज
गति छूछा॥ तेहि अवसर केवट धीरज धरि॥ जोरि पान बिनवत प्रनाम
करि॥ २४९॥ दो॥ नाथ साथ मुनिनाथ के मात सकल पुर लोग॥ सेवक सेन
सचिव सब आए बिकल बिजोग॥ पा॰॥ चौ॥ सीलसिंध सुनि गुर आगम
नु॥ सीया समीप राषे रिपुदमनु॥ चले सबेग राम तेहि काला॥ धीर धर
म धुर दीन दयाला॥ गुरहि देषि सानुज अनुरागे॥ दंड प्रनाम करन प्रभ
लागे॥ मुनिबर धाइ लए उर लाई॥ प्रेम उमग भेटे दोउ भाई॥ प्रेम पुल
क केवट कहि नामू॥ कीन दूर ते दंड प्रनामू॥ रामसषा मुनि बरबस भेटा
जनु महि लुठत सनेह समेटा॥ रघुबर भगति सुमंगल मूला॥ नभ सराहि
सुर बरषहि फूला॥ इह सम निपट नीच को नाही॥ बड बसिष्ठ सम को

जगमाही॥प॰१॥दो॰॥जेहिलखिलखनहुतेअधिकमिलेमुदितमुनिराउ॥सो
सीतापतिभजनकेप्रगटप्रतापप्रभाउ॥प॰२॥चौ॰॥आरतलोकरामसबजाना
करुनाकरसुजानभगवाना॥जोजेहिभाइरहाअभिलाषी॥तेहितेहिकैतसितसिरु
षराषी॥सानुजमिलिपलमहिसबकाहू॥कीन्हदूरिदुषदारुनदाहू॥एहबडिबात
रामकैनाही॥जिमघटकोटिएकरविछाही॥मिलिकेवटहिउमगिअनुरागा॥
पुरजनसकलसराहहिभागा॥देषीरामदुषितमहतारी॥जनुसुबेलिअवली
हिममारी॥प्रथमरामभेटेकैकेई॥सरलसुभाइभगतिमतिभेई॥पगपरिकी
न्हप्रबोधबहोरी॥कालकरमबिधिसिरधरिषोरी॥प॰३॥दो॰॥भेटीरघुबरमात
सबकरिप्रबोधपरितोष॥अंबईसआधीनजगकाहुनदेईअदोस॥प॰४॥चौ॰॥
॥गुरतीयपदबंदेदोउभाई॥सहितबिप्रतियजे[illegible]आई॥गंगगौरिसम
सबसनमानी॥देहिअसीसमुदितमृदबानी॥गहिपदलगेसुमित्राअंका॥ज
नुभेटेसंपतिअतिरंका॥पुनिजननीचरननदोउभ्राता॥परेप्रेमब्याकुलसब
गाता॥अतिअनुरागअंबउरलाए॥नैनसनेहसलिलअन्हवाए॥तेहिअवसर
करहरषबिषादू॥किमकबिकहैमूकजिमस्वादू॥मिलिजननिहिसानुजरघुराऊ॥
गुरसनकहिउकिधारीअपाऊ॥पुरजनपाइमुनीसनजोगू॥जलथलतकतक

राम

कउतरेतेलोग॥२८१॥दो॥ महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोक लीए साथ॥ पावन आ
श्रम गवन कीन्ह भरत लखन रघुनाथ॥२८१॥चौ॥ सीया आइ मुनिवर पग
लागी॥ उचित असीस लही मन मागी॥ गुरपतिनी मुनितीयन समेता॥ मिली प्रे
म कहि न जाइ न तेता॥ बंदि बंदि पग सीय सबही के॥ आसिरबचन लहे प्रिया
जी के॥ सासु सकल जब सीया निहारी॥ मूदे नैन सहमि सुकुमारी॥ परी ब
धिक बस मनहु मराली॥ काह कीन करतार कुचाली॥ तिन सीया निरखि निपट
दुख पावा॥ सो सब सहिअ जो दैउ सहावा॥ जनकसुता तब उर धरि धीरा॥
नील नलिन लोइन भरि नीरा॥ मिली सकल सासुन सीया जाई॥ तेहि अव
सर करुना महि छाई॥२८॥दो॥ लागि लागि पग सबन सीया भेटति अति अनुरा
ग॥ हृदै असीसहि प्रेम वस रहिहे भरी सुहाग॥२८२॥चौ॥ बिकल सनेह सी
या सभ रानी॥ बैठन सभै कहिउ मुनि ग्यानी॥ कहि जग गति माइक मुनिनाथा॥
कहि कछुक परमारथ गाथा॥ न्रप कर सुरपुर गवन सुनावा॥ सुनि रघुना
थ दुसह दुख पावा॥ मरन हेत निज नेह बिचारी॥ भए अति बिकल धीर धुर धा
री॥ कुलिश कठोर सुनत कटु बानी॥ बिलपत लखन सीया सभ रानी॥ सोक
बिकल अति सकल समाज॥ मानहु राज अकाजेउ आज॥ मुनिवर बहुर

रामसनाई॥सहितसमाजसुदरमरतनलहाई॥ब्रतसिंरंभतिहदिनप्रभुकीना॥म
नहिकैहिजलकाजनलीना॥५८॥दो॥भोरमहीरघुनंदनहिजोमम्भिलाइमही
न॥प्रथाभगतिसमेतप्रभुसोसबसादरकीन॥५८॥चौ॥कहिस्येतनक्षयावेहजा
सबनी॥भएपुनीतयातकतमतरनी॥जासनामथावकमाधिलता॥सिमरत
सकलसमंगलमूला॥सघसमयोसाधुसंमतमसा॥तीर्थआवाहनसरसर
जस॥सधभएउडबासरबीते॥बोलेगुरसनरामपीते॥नाथलोगसभनिष
टदुषारी॥कंदमूलफलअंबुअहारी॥सानुजभरतसचिवसभमाता॥देषमो
हिपलजुगजिमजाता॥सबसमेतपुरधारीपाऊ॥आपइहांअमरावतीराऊ
बहुतकहिउंसबकीयोढिठाई॥उचिततहोइतसकरीगोसाई॥५९॥दो॥धर्म
सेतकरनायतनकसनकहहुअसराम॥लोगदुषतदिनदुइदरसदेषलत
हिविश्राम॥५१२॥चौ॥रामबचनसुनिसभेसमाजा॥जनुजलनिधिमहिविक
लजहाजा॥सनिगुरगीरासुमंगलमूला॥भएमनहुमारतअनुकूला॥पा
वनपयपातिहकालनहाही॥जोबिलोकिअघओघनसाही॥मंगलमूरतलोच

नमरमर॥नषहर्षदंडवतकरिकरि॥रामसैलबनदेषनजाही॥जहसुषसकल
कलदुषनाही॥झरनाझरहिसुधासमबारी॥त्रिबिधतापहरत्रिबिधबयारी
बिटपबेलितृनअगनितजाती॥फलप्रसूनपलवबहुभांती॥सुंदरसिलासुष
दतरुछांही॥जाइबरनिबनछबिकेहिपाही॥५१३॥दो॥सरनसरोरुहजल
बिहंगकूजतगुंजतभृंग॥बैरबिगतबिहरतबिपिनमृगबिहंगबहुरंग॥
५१४॥चौ॥कोलकिरातभिलबनबासी॥मधुसुचसुंदरस्वादसुधासी॥भरि
भरिपरिनपुटीरचिरूरी॥कंदमूलफलअंकुरजूरी॥सबहिदेहिकरिबिनैप्र
नामा॥कहिकहिस्वादभेदगुननामा॥देहलोगमोलनलेही॥फेरतराम
दुहाईदेही॥कहहिसनेहमगनमृदबानी॥मानतसाधुप्रेमपहिचानी॥तु
मसुकृतीहमनीचनिषादू॥पावादर्सनरामप्रसादू॥हमहिअगमअति
दर्सतुम्हारा॥जसमरुधरनदेवधुनधारा॥रामकृपालनिषादनेवाजा॥
परजनप्रजाचहेजसराजा॥५१५॥दो॥यहजियजानिसकोचतजिकरीयेछो
हलषनेहु॥हमहिकृतारथकरनलगफलतृनअंकुरलेहु॥५१६॥चौ

तुम प्रिय पाहुन बन पग धारे॥ सेवा जोग न भाग हमारे॥ देव काह हम तुम्हहि गो
साईं॥ ईंधन पात किरात मिताई॥ हम जड़ जीव जीव गन घाती॥ कुटिल कुचाली
कुमति कुजाती॥ पाप करत निसि बासर जाहीं॥ नहि पट कटि नहि पेट अघाहीं॥ सप
नेहु धरम बुधि कस काऊ॥ यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ॥ जब ते प्रभु पद पदुम निहारे॥
मिटे दुसह दुख दोष हमारे॥ बचन सुनत पुरजन अनुरागे॥ तिन्ह के भाग स
राहन लागे॥ ५१७॥ छंद॥ लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं॥ बो
लनि मिलनि सिय राम चरन सनेह लखि सुख पावहीं॥ नर नारि निदरहिं नेह निज सु
नि कोल भिल्लनि की गिरा॥ तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै नौका तिरा॥ ५१८॥ सो
॥ बिहरहिं बन चहु ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब॥ जल ज्यों दादुर मोर भए पी
न पावस प्रथम॥ ५१९॥ चौ॥ पुर नर नारि मगन अति प्रीती॥ बासर जाहिं पलक
सम बीती॥ सीय सासु प्रति बेष बनाई॥ सादर करै सरिस सेवकाई॥ लखा न मरम
राम बिन काहू॥ माया सब सिय माया माहू॥ सीय सासु सेवा बस कीन्ही॥ तिन्ह लहि
सुख सिख आसिष दीन्ही॥ लखि सिय सहित सरल दोउ भाई॥ कुटिल रानि पछितानि
अघाई॥ अवनि जमहि जाचति कैकेई॥ महि न बीच बिधि मीच न देई॥ लोकहु बे

दविदि तकहि कहही॥ रामहि मुख बल नर कल लही॥ पदि सेसे सजन के मन माही॥ राम गवन बिधि अवध कि नाही॥ २२॰॥ दो॥ निसि न नीद नहि भूख दिन भरत बिकल सुठि सोचि॥ नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सकोचि॥ २२१॥ चौ॥ कीन मातु मिस काल कुचाली॥ ईति भीति जस पाकत साली॥ केहि बिधि होइ राम अभिषेकू॥ मोहि अवकलत उपाइ न एकू॥ अवसि फिरहि गुर आयसु मानी॥ मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी॥ मातु कहे बहुरहि रघुराऊ॥ राम जननि हठ करबि कि काऊ॥ मोहि अनुचर कर केतक बाता॥ तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता॥ जौ हठ करउ त निपट कुकर्मू॥ हरगिरि तें गुर सेवक धर्मू॥ प्रात नहाइ प्रभहि सिर नाई॥ बैठत पठए रिषय बुलाई॥ २२२॥ दो॥ गुर पद कमल प्रनाम करि बैठे आइसु पाइ॥ बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ॥ २२३॥ चौ॥ बोले मुनिबर समय समाना॥ सुनहु सभासद भरत सुजाना॥ धर्मधुरीन भानकुल भानू॥ राजा राम सकल भगवानू॥ सति सिंधु पालक स्रुति सेतू॥ राम जनम जग मंगल हेतू॥ गुर पित मात बचन अनुसारी॥ खल दल दलन देव हितकारी॥ नी

राम राम ॥२२॥

राम ॥२२॥

तप्रीत प्रमार्थस्वार्थ॥ कवन राम सम जान जथार्थ॥ विधि हरि हर ससि रवि दिसपा
ला॥ माया जीव कर्म कुल काला॥ अहिप महिप जहि लगि प्रभताई॥ जोग सिध निगमाग
म गाई॥ करि विचार जीय देखहु नीके॥ राम रजाइ सीस सब ही के॥ ५२४॥ दो॥ रा
खे राम रजाइ रुष हम सब कर हित होइ॥ समुझ सियाने करहु अब सब मिलि संमत
सोइ॥ ५२५॥ चौ॥ सब कहु सुषद राम अभिषेकू॥ मंगल मूल मोद मग एकू॥ केहि वि
धि अवध चलै रघुराऊ॥ कहहु समुझ सोइ करीये उपाऊ॥ सब सादर सुनि मुनिवर वा
नी॥ नय परमार थस्वार्थ सानी॥ उतर न आव लोक भै भोरे॥ तव सिर नाइ भरत कर
जोरे॥ भानबंस भए भूप घनेरे॥ अधिक एक ते अधिक बडेरे॥ जनम हेत सब कौ
पित माता॥ कर्म सुभाउसुभ देइ विधाता॥ दल दुष सजै सकल कलियाना॥ अस अ
सीस राउर जग जाना॥ सो गुसाई विधि गति जिन छेकी॥ सकै को टार टेक जो टेकी॥ ५
२६॥ दो॥ बूझीऐ मोहि उपाव अब सो सब मोर अभाग॥ सुन सनेहमय बचन गुर उ
र उमगा अनुराग॥ ५२७॥ चौ॥ तात बात फुरि राम कृपाही॥ राम बिमुष सिध सपने
हु नाही॥ सकुचउ तात कहत इक बाता॥ अरध तजहि बुध सर्बस जाता॥ तुम कान
न गवनहु दोउ भाई॥ फेरीअहि लखन सीय रघुराई॥ सुनि सुबचन हर्षे दोउ भ्राता॥

श्री
राम
॥७३॥

भए प्रेम मोद परबस गाता॥ मन प्रसन्न तन तेज बिराजा॥ जनु जीते राउ राम भ
ए राजा॥ बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी॥ सम सुख दुख बिरोवहि सब रानी॥ कहहि
भरत मुनि कहा सु कीने॥ फलु जग जीवन्ह अभिमत दीने॥ कानन करौं जनम
भर बासू॥ इह ते अधिक न मोर सुपासू॥ ५२८॥ दो॥ अंतरजामी राम सीय तुम सर
बग्य सुजान॥ जो फिर कहहु तु नाथ निज कीजीय बचन प्रमान॥ ५२९॥ चौ॥ भ
रत बचन सुनि देखि सनेहू॥ सभा सहित मुनि भए बिदेहू॥ भरत महा महिमा ज
लरासी॥ मुनि मति ठाढ तीर अबलासी॥ गा चहे पार जतन हीय हेरा॥ पावत ना
उ न बोहत बेरा॥ अउर करै को भरत बडाई॥ सरसी सीपा कि सिंध समाई॥
भरत मुनहि मन भीतर भाए॥ सहित समाज राम पहि आए॥ प्रभ प्रनाम करि
दीन सुआसन॥ बैठे सभ मुनि अनुसासन॥ बोले मुनिबर बचन बिचारी॥ दे
स काल अउसर अनुहारी॥ सुनहु राम सर्बज्ञ सुजाना॥ धर्म नीत गुन ग्यान नि
धाना॥ ५३०॥ दो॥ सभ के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ॥ पुरजन जननी
भरत हित होइ सु कहिअ उपाउ॥ ५३१॥ चौ॥ आरत कहहि बिचार न काऊ॥ सूझ
जुआरहि आपन दाऊ॥ सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ॥ नाथ तुमारे हाथ

राम
॥७३॥

उपाउ॥ सभ मंकर हित तन सघ राउ रे राखे॥ साइस की एम दति पुर आवे॥ म पम मनुना
इसमो कहु हे पी॥ माधे मानन कौरे सिख मो री॥ बुभे से हत कतु जन मन के हित मुनी ई॥ से सम
समभां ति कौरे से व शी॥ कहि मन नेराम मत नमु समभा ख॥ भरत मन ने सविधाय तन मथा॥ दि
न तेकहैं वहि र वहि र॥ भरत भगति वस भए मति मो री॥ मोरे मनु मन करत घरा थी
मो कीजी गैसे सम भी वसा थी॥ ५३२॥ दो॥ भरत सुनि ने कादर मन ने मत रीज जैवचाव
वहेर॥ करव साध मति लोक मत तेन पन नये जगत से बोदि॥ ५३३॥ चौ॥ गुर मन
रागा भरत न कर देथी॥ राम हदै प्रानंद वि शेषी॥ भरत हियमें घुरे वर जानी॥ से ज
सेव कत नमान सवानी॥ बोले गुर ग्राइ समजन कूला॥ वचन मंज अमृद मंगल
मूला॥ नाथ सपथ पित चरन दुहाई॥ भयो न भरत भवन सम भाई॥ जे गुर पद
अंबुज अनरागू॥ केकहि ससके भरत नकेरि भागु॥ लखत घबंध व विध सकुचा
ही॥ करत बड़ न पर भरत बड़ाई॥ भरत ति कहे सो ई कीधे भलाई॥ जस सकी सिरा मर
हे गारगाई॥ ५३४॥ दो॥ तब मन ने बोले भरत सब ने सम सके चत ते तात॥ कृपा सिंध
म बेघ मन नकहह है कीबात॥ ५३५॥ चौ॥ सुनि सिन वचन राम मन वपाई॥ गर सा हि
व अनकूल अधाई॥ लख अम्र पर नि सिर सभ भांति तभा रू॥ कहि न सके कुष कर रेवि

चाहू॥ पुलकसरीरसभाभएठाढे॥ नीरजनैननेहजलबाढे॥ कहिबमोरमुनि
नाथनिबाहा॥ इहतेअधिककहैंमैकाहा॥ मैजानउनिजरघुनाथसुभाऊ॥ अपरा
धिहुपरकोहनकाऊ॥ मोपरकृपासनेहविशेषी॥ खेलतखुनसनकबहुंदेषीः
सिसुपनतेपरहरेउंनसाकू॥ कबहुंनकीनमोरमनभंगू॥ मैप्रभकृपारीतजी
याजोही॥ हारेहुखेलजितावहुमोही॥ ५३६॥ दो॥ महूसनेहसकोचबससम
नमुखकहैनबैन॥ दरसनत्रिपतनआजलगीप्रेमप्यासेनैन॥ ५३७॥ चौ॥
बिधिनसकेउसहिमोरदुलारा॥ नीचबीचजननीमिसपारा॥ यहेकहतमोहि
आजनसोभा॥ अपनीसमझसाधसुचकोभा॥ मातमंदमैसाधसुचाली॥ उरअ
सआनतकोटिकुचाली॥ फरइकिकोदवबालिसुसाली॥ मुकताप्रसवकिसंबु
कताली॥ सपुनेहुदोसकलेसनकाहू॥ मोरअभागउदधिअवगाहू॥ बिनस
मझेनिजअघपरपाकू॥ जारिउंजाइजननकहिकाकू॥ हृदैहेरहारिउंसबओसम
ओरा॥ एकहिभांतिभलेहिभलमोरा॥ गुरगुसाईसाहिबसियरामू॥ लागत
मोहिनीकपरिनामू॥ ५३८॥ दो॥ साधुसभागुरप्रभनिकटकहौंसुथलसति
भाऊ॥ प्रेमप्रपंचकिझूठफुरजानहिमुनिरघुराउ॥ ५३९॥ चौ॥ भूपतिमरन

प्रेमपनराखी॥ जननीकुमतिजगतुसबसाखी॥ देखनजाहिबिकलमहतारी॥ जर
हिंदुसहदुषपुरनरनारी॥ मैंहुंसकलअनरथकरमूला॥ सोसुनिसमुझिसहेउंसबस
सूला॥ सुनिबनगौनकीनरघुनाथा॥ करिमुनिभेषलखनसीयासाथा॥ बिनुप
नहनपियादेपाए॥ संकरसाखिरहिउंएहिंघाए॥ बहुरिनिहारनिषादसनेहू॥
कुलिसकठिनउरभयोनबेहू॥ अबसबआंखिनदेखेउंआई॥ जीवतजीवजडसबैस
हाई॥ जिनहिनिरखिमगसांपनिबीछी॥ तजहिंबिषमबिषतामसतीछी॥१४८॥ दो॰॥ ते
रघुनंदनलखनसीयाअनहितलागेजाहि॥ तासुतनयतजिदुसहदुषदैव
सहावैकाहि॥१४९॥ चौ॰॥ सुनिअतिबिकलभरतबरबानी॥ आरतप्रीतबिनयरससा
नी॥ सोकमगनसबसभाखभारू॥ मानहुंकमलबनपरेउतुसारू॥ कहिअनेक
बिधिकथापुरानी॥ भरतप्रबोधकीनमुनिग्यानी॥ बोलेउचितबचनरघुनंदू॥
दिनकरकुलकैरवबनचंदू॥ तातजाइजीयकरहुगलानी॥ ईसअधीनजी
वगतिजानी॥ तीनकालत्रिभुअनमतिमोरे॥ पुन्यसिलोकतातरतोरे॥ उर
आनततुमपरकुटलाई॥ जाइलोकपरलोकनसाई॥ दोसदेहिजननिजड

रा०

उ तेई॥ जे न गुर मांथ समान हि सेई॥ ५४२॥ दो०॥ मिटै हैं पाप प्रपंच सब अखल अमंगल भार॥ लोक सुजस परलोक सुष सुमिरत नाम तुम्हार॥ ५४३॥ चौ०॥ कहौं सुभाउ सति शिव साषी॥ भरत भूमि रह राउर राषी॥ तात कुतरक करहु जिन जाई॥ बैर प्रीत नहि दुरै दुराई॥ मुनि गन निकट बिहग मृग जाही॥ बाधक बधक बिलोक पराही॥ हित अनहित पसु पंछी जाना॥ मानुष तन गुन ग्यान निधाना॥ तात तुमै मै जानौ नीकै॥ करौ काह असमंजस जीकै॥ राषेउ राउ सति मोहि त्यागी॥ तन परहरेउ प्रेम पन लागी॥ तासु बचन मेटत मन सोचू॥ तिह तें अधिक तुमार संकोचू॥ ता पर गुर मोहि आइस दीना॥ अवसि जो कहहु चहौ सोई कीना॥ ५४४॥ दो०॥ मन प्रसन करि सकुच तजि कहो करो सोई आजु॥ सति संध रघुबर बचन सुनि भा सुषी समाज॥ ५४५॥ चौ०॥ सुर गन सहित सभै सुर राजू॥ सोचत चाहत होन अकाजू॥ करत उपाइ बनत कछु नाही॥ राम सरनि सभ गे मन माही॥ बहुर बिचार परसपर कहही॥ रघुपति भगत भगति बस अहही॥ सुध करि अंबरीष दुरबासा॥ भए सुर सुरपति निपट निरास

राम

॥७५॥

राम

॥७५॥

नेरासा॥ सहै सुरन बहु काल बिषादा॥ नरहरि कीए प्रह्लादा॥ लगि लगि कान
कहहि धुनि माथा॥ अब सुर काज भरत के हाथा॥ आन उपाइ न देखीअ देवा॥ मा
नत राम सुसेवक सेवा॥ हीयै सप्रेम सुमरहु सब भरतहि॥ निज गुन सील राम
बस करतहि॥५४६॥ दो॥ सुनि सुरपति सुर गुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भाग॥ स
कल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुराग॥५४७॥ चौ॥ सीतापति सेवक सेव
काई॥ कामधेनु सीया सरस सुहाई॥ भरत भगति तुम्हरे मन आई॥ तजो सोच बि
धि बात बनाई॥ देषि देवपति भरत प्रभाऊ॥ सहज सुभाइ बिबस रघुराऊ॥ म
न थिर करहु देव डरु नाही॥ भरतहि जानि राम परछाही॥ सुनि सुर गुर सुर
सम्मत सोचू॥ अंतरजामी प्रभ[illegible]हि सकोचू॥ निज सिर भार भरत जीया जाना॥
करत कोटि बिधि उर अनुमाना॥ करि बिचार मन दीनी ठीका॥ राम रजाइस आप
न नीका॥ निज पन तजि राखेउ पन मोरा॥ छोह सनेह कीन नहि थोरा॥५४८॥ दो॥
कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ॥ करि प्रनाम बोले भरत जोर
जलज जुग हाथ॥५४९॥ चौ॥ कहौ कहावौ का अब स्वामी॥ कृपा अंबुध अंतरजा

रा
राम
२६

मी॥ गुर प्रसंग सुसाहिब अनुकूला॥ मिटि मलीन कलपति सूला॥ अपडर डरेउ
न सोच समूले॥ रबिहि न दोस देव दिसि भूले॥ मोर अभाग मातु कुटिलाई
॥ बिधि गति बिषम काल कठिनाई॥ पांउ रोपि सब मिलि मोहि घाला॥ प्रनत पा
ल पन आपन पाला॥ यह नइ रीति न राउरि होई॥ लोकहु बेद बिदित नहि गो
ई॥ जग अनभल भल एक गोसांई॥ कहिअ होइ भल कासु भलाई॥ देव
देवतरु सरिस सुभाउ॥ सनमुख बिमुख न काहुहि काउ॥ ५५१॥ दो॥ जाइ निकट
पहिचानि तरु छांह समनि सब सोच॥ मांगत अभिमत पाव जग राउ रंक भल
पोच॥ ५५१॥ चौ॥ लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू॥ मिटेउ छोभ नहि मन संदेहू
॥ अब करुनाकर कीजिअ सोई॥ जन हित प्रभु चित छोभ न होई॥ जो सेवक साहि
बहि संकोची॥ निज हित चहै तासु मति पोची॥ सेवक हित साहिब सेवकाई
॥ करै सकल सुख लोभ बिहाई॥ स्वारथ नाथ फिरे सबही का॥ कीयै रजाय कोटि
बिधि नीका॥ यह स्वारथ परमारथ सारू॥ सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू॥
देव एक बिनती सुनि मोरी॥ उचित होइ तस करब बहोरी॥ तिलक समाज साज

राम
२६

सेगी माना ॥ करीगे सेम भगति प्रभ जो मनिमाना ॥ ५५१ ॥ दो ॥ सानुज पठीये मोहि बनकी
जीये सभै सनाथ ॥ नतर फेरीये बंधु दोउ नाथ चलो मै साथ ॥ ५५२ ॥ चौ ॥ नतर
न जांहि बन तीनौ भाई ॥ फेरीये सीया सहित रघुराई ॥ जेहि बिधि प्रभ प्रसंन मन हो
ई ॥ करनासागर कीजै सोई ॥ देव दीन सभ मोहि प्रभारू ॥ मोरे नीत न धर्म बीचारू ॥
कहे बचन सभ स्वार्थ हेतू ॥ रहत न आरत के चित चेतू ॥ उतर देइ सुनि स्वामि रजा
ई ॥ सो सेवक लखि लाज लजाई ॥ अस मै अवगुन उदधि अगाधू ॥ स्वामि सनेह सरा
हत साधू ॥ अब कृपाल मुहि सो मत भावा ॥ सकुच स्वामि मन जाइ न पावा ॥ प्रभ
पद सपथ कहौ सति भाऊ ॥ जग मंगल हित एक उपाऊ ॥ ५५४ ॥ दो ॥ प्रभ प्रसंन मन स
कुच तजि जो जेहि आइसु देव ॥ सो सिर धर धर करहि सभ मिटहि अनट अवरेव ॥
५५५ ॥ चौ ॥ भरत बचन सुनि सुनि सभ हरषे ॥ असमंजस बस अवध नेवासी ॥ प्रमदित
मन तापस बन बासी ॥ चुप रहि रहे रघुनाथ संकोची ॥ प्रभ गति देखि सभा सभ सोची ॥
जनक दूत तेहि अवसर आए ॥ मुनि बसिष्ट सुनि बेग बुलाइ ॥ कर प्रनाम तिन रा
म निहारी ॥ बेष देख भए निपट दुखारी ॥ दूतन मुनिबर बूझी बाता ॥ कहहु बिदेह भूप

राम

राम

॥७७॥

कुसलाता॥ सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा॥ बोले चरवर जोरे हाथा॥ बूझब राउर सादर साईं॥ कुसल हेतु सो भयउ गोसाईं॥ ॥५५६॥ दो॥ जानत कोसलनाथ के साथ कुसल गए नाथ॥ मिथिला अवध बिसेष ते जग सब भयउ अनाथ॥ ॥५५७॥ चौ॥ कोसलपति गति सुनि जनकौरा॥ भे सब लोक सोक बस बौरा॥ जेहि देखे तेहि समै बिदेहू॥ नाम सति अस लाग न केहू॥ रानि कुचालि सुनत नरपालहि॥ सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि॥ भरत राज रघुबर बनबासू॥ भा मिथिलेसहि हृदै हरासू॥ नृप बूझे बुध सचिव समाजू॥ कहहु बिचारि उचित का आजू॥ समुझि अवध असमंजस दोऊ॥ चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ॥ नृपहि धीर धरि हृदै बिचारी॥ पठए अवध चतुर चर चारी॥ बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ॥ आएहु बेगि न होइ लखाऊ॥ ॥५५८॥ दो॥ गए अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति॥ चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिरहूति॥ ॥५५९॥ चौ॥ दूतन आइ भरत के करनी॥ जनक समाज जथामति बरनी॥ सुनि गुर परिजन सचिव महीपति॥ भे सब सोच सनेह बिकल अति॥ धरि धीरज करि भरत बडाई॥ लिए सुभट साहनी बुलाई॥ घर पुर देस राखि रखवारे॥ हय गय रथ बहु

आनन चारे॥ दुघरी साथ चलै ततकाला॥ कीनै बिस्राम न मग महि पाला॥ भोरहि
मज्जनानाइ प्रयागा॥ चलै जमन उतरन सभ भालागा॥ खबर लैन हम पठए ना
था॥ तिन कहि अस महि नायो माथा॥ साथ करात छ सातक दीने॥ मुनिवर तुर
त बिदा चर कीने॥ २८०॥ दो॥ सुनित जनकागम न सभ हर्ष्यो अवध समाज॥ रघु
नंदन हि सकोच बड सोच बिबस सुरराज॥ २८१॥ चौ॥ गरै गिलान कुटल कैकेई॥
काहि कहै किहि दूषन देई॥ अस मन आनि मुदित नर नारी॥ भयो बहोर रहि
ब दिन चारी॥ इह प्रकार गति बासर दोऊ॥ प्रात नहान लागे सभ कोऊ॥ करि मज्जन
पूजहि नर नारी॥ गनपति गोर पुरार तिमारी॥ रमा रमण पद बंद बहोरी॥ बि
नवै अंजल अंचल जोरी॥ राजा राम जानकी रानी॥ आनंद अवध अवध रजधा
नी॥ सुबस बसो फिर सहित समाजा॥ भर्थहि राम करै जुवराजा॥ एह सुख सुधा
सींच सभ काहू॥ देव देह जग जीवन लाहू॥ २८२॥ दो॥ गुर समाज भाइन सहित रा
म राज पुर होइ॥ अछत राम राजा अवध मरिअ मांग सभ कोइ॥ २८३॥ चौ॥ सुनि स
नेह मय पुरजन बानी॥ निंदहि जोग बिरति मुनि ग्यानी॥ इह बिधि नित करम

करपुरजन॥रामहिकरहिंप्रनामपुलकितन॥ऊचनीचमधमनरनारी॥लहे
दरसनिजनिजअनुहारी॥सावधानसबहीसनमानहिं॥सकलसराहतकृ
पानिधानहिं॥लरकाइहतेरघुबरबानी॥पालतनीतप्रीतपहिचानी॥सीलस
कोचसिंधुरघुराऊ॥सुमुषसलोचनसरलसुभाऊ॥कहतरामगुनगनअनु
रागे॥सबनिजभागसराहनलागे॥२७४॥दो॥प्रेममगनतिहिसमैसबसुनि
आवतमिथिलेसु॥सहितसभासंभ्रमउठिउरविकुलकमलदिनेसु॥२७५॥चौ
॥भाइसचिवगुरपुरजनसाथा॥आगैगोनकीनरघुनाथा॥गिरिवरदे
षजनकपतिजबही॥करिप्रनामरथत्यागेतबही॥रामदरसलालसाउछाहू
॥पथश्रमलेसकलेसनकाहू॥मनतिहंजहंरघुबरबैदेही॥बिनमनत
तनदुषसुषसुधकेही॥आवतजनकचलेइहभांती॥सहितसमाजप्रेम
मतमाती॥आएनिकटदेषअनुरागे॥सादरमिलनपरसपरलागे॥ल
गेजनकमुनिजनपदबंदन॥रिषनप्रनामकीनरघुनंदन॥भाइनसहि
तराममिलिराजहि॥चलेलवाइसमेतसमाजहि॥२७६॥दो॥आस्रमसा

गर सांतरस पूर्न पावन पाथ ॥ सैन मनहु करना सर तली ए जात रघुनाथ ॥
५८३ ॥ चौ ॥ बोरति ज्ञान बिराग करारे ॥ बचन ससोक मिलत नद नारे ॥ सोच उ
सास समीर तरंगा ॥ धीरज तट तरवर कर भंगा ॥ बिषम बिषाद तरावत धारा
भए भ्रम भवर अबरत अपारा ॥ केवट बुध बिद्या बड नावा ॥ सकै न षैइ एकै ते
गावा ॥ बंचर कोल्ल किरात बिचारे ॥ थके बिलोकय पथक हीए हारे ॥ आश्रम उ
दध मिल्लै जब जाई ॥ मनहु उठेउ अंबुध अकुलाई ॥ सोक बिकल दोउ राज स
माजा ॥ रहा न ज्ञान न धीरज लाजा ॥ भूप रूप गुन सील सराही ॥ रोवहि सोक
सिंध अवगाही ॥ ५८४ ॥ छंद ॥ अवगाहि सोक समुद्र सोचहि नार नर ब्याकुल म
हा ॥ दै दोष सकल सरोष बोलहि बाम बिध कीनो कहा ॥ सुर सिध तापस जो
गजन मुन देष बिदसा बिदेह की ॥ तुलसी न कोउ समरथ जो तर सकै सरत स
नेह की ॥ ५८५ ॥ सो ॥ कीए अमित उपदेस जैह तह लोगन मुनबरनि ॥ धीरज
धरीअ नरेस कहिउ बसिष्ठ बिदेह सन ॥ ५८० ॥ चौ ॥ जासु ज्ञान रबि भव न
स नासा ॥ बचन करन मुन कमल बिगासा ॥ तेह कि मोह ममता नीयरा
ई ॥ यह सीयाराम सनेह बडाई ॥ बिषई साधक सिध स्याने ॥ त्रिबिध जी

॥राम॥

वजगवेदवषाने॥ रामसनेहसरसमनजासू॥ साधुसभाबडआदरतासू॥
सोहिनरामप्रेमबिनज्ञानू॥ करनधारबिनजिमजलजानू॥ मुनैवहुविधिवदे
हुसमझाए॥ रामघाटसभलोकनन्हाए॥ सकललोकसंकलनरनारी॥ सेवा
सरबीतोवेनवारी॥ पसषगमरगनकीनअहारू॥ प्रियप्रजनकरकौनवीचा
रू॥ ४॥ दो॥ दोउसमाजनिमिराजरघुराजनहानेप्रात॥ बैठेसभबटबिट
पतरमननमलीनकृशगात॥ २७५॥ चौ॥ जेमहिसुरदसरथपुरबासी॥ जेमि
थलापतिनगरनिवासी॥ हंसबंसगुरजनकपरोधा॥ जिनजगमगपरमा
र्थसोधा॥ लगेकहनउपदेसअनेका॥ सहतधरमनयविरतविवेका॥ कौ
सीककहिकहिकथापुरानी॥ समझाईसभसभासुबानी॥ तबरघुनाथ
कौसीकअहिकहेऊ॥ नाथकालजल ? बिनसमरहिगेऊ॥ मुनिकहिउचितक
हितरघुराई॥ गयोबीतदिनपहरअढाई॥ ऋषरुषलषकहितिरहुत
राजू॥ ईहाउचितनहिअसनअनाजू॥ कहभूपभलसबहिसुहाना॥ पा
इरजायसुचलेनहाना॥ ४॥ दो॥ तिहअवसरफलफूलदलमूलअनेक
प्रकार॥ लेआएबनचरविपलभरभरकावरभार॥ २७६॥ चौ॥ कामदभेगि

र राम प्रसादा॥ अवलोकत अपहरत बिषादा॥ सर सरिता बन भूमि बिभागा॥
जनु उमगत आनंद अनुरागा॥ बेलि बिटप सब सफल सफूला॥ बोलत खग मृ
ग अलि अनुकूला॥ तेहि अवसर बन अधिक उछाहू॥ त्रिबिध समीर सुखद
सब काहू॥ जाइ न बरनि मनोहरताई॥ जनु महि करत जनक पहुनाई॥ तब स
ब लोक नहाइ नहाई॥ राम जनक मुनि आइसु पाई॥ देखि देखि तरुबर अनुरा
गे॥ जहं तहं पुरजन उतरन लागे॥ दल फल मूल कंद बिधि नाना॥ पावन सुंद
र सुधा समाना॥ ५७५॥ दो॰॥ सादर सब कहं रामगुर पठए भरि भरि भार॥ पूजि पित
र सुर अतिथि गुर लगे करन फलहार॥ ५७६॥ चौ॰॥ एहि बिधि बासर बीते चारी॥ रा
मु निरखि नर नारि सुखारी॥ दुहु समाज असि रुचि मन माहीं॥ बिनु सिय राम फि
रब भल नाहीं॥ सीता राम संग बनबासू॥ कोटि अमरपुर सरिस सुपासू॥ प
रिहरि लखन राम बैदेही॥ जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही॥ दाहिन दइउ होइ जब
सबही॥ राम समीप बसिअ बन तबही॥ मंदाकिनि मज्जन तिहु काला॥ राम द
रस मुद मंगल माला॥ अटन राम गिरि बन तापस थल॥ असन अमिअ सम

राम

मकंद मूल फल || सब समेत संमत दोइ भाता || पल्लव सम हे इन जाती थै माता

२७७ || दो || इह सब जोगन लोक सब कहि हि कहा अस भाग || सहज सुभाइ स

राम

माज दुइ राम चर्न मनराग || २७८ || चौ || इह बिध सगल मनोरथ करही || बचन

||८०||

सप्रेम सुनत मन हरही || सीया मात तिह समय पठाई || दासी देख सुअवस

||८०||

र आई || सावकास सुन सब सीया सासू || आयो जनक राज रनवासू || कौसल्या सा

दर सनमानी || आसन दए समय सम आनी || सील सनेह सकल दुहुं ओरा ||

द्रवहि देख सुन कुलस कठोरा || पुलक सिथल तन वार बिलोचन || महि न

ख लखन लगे सब सोचन || सब सीयाराम प्रीत की मूरत || जनु करना बहु बे

ष बिसूरत || सीया मात कह बिध बुध बांकी || जो पै फेन फोर पब टाकी || २७९ ||

दो || सुनीअ सुधा देखीअहि गरल सब करतूत कराल || जिह तिह काक उलू

क बक मानस सकृत मराल || २८० || चौ || सुन ससोच कहि देबि सुमित्रा || बि

ध गति बडि बिप्रीत बचित्रा || जो स्रिज पाले हरे बहोरी || बाल केल सम बिध

गति भोरी || कौसल्या कह दोस न काहू || कर्म बिबस दुख सुख छति लाहू ||

कठनकर्मगतिजानबिधाता॥जोसभअसभसकलफलदाता॥ईसरजाइ
सीससभहीके॥उतपतिथितलइबिषअम्रीकै॥देबिमोहबसिसोचअबादी
बिधप्रपंचअसअचलअनादी॥भूपतिजीवमरवउरआनी॥सोचअसषिलषि
निजहितहानी॥सीयमातकहिसतिसबानी॥सुकृतीअवधअवधपतिरा
नी॥२८१॥दो॥लषनरामसीयाजाहिबनभलपरनामनपोच॥गहिबरहीअ
अकहिकौशल्यामोहिभरतकरसोच॥२८२॥चौ॥ईसप्रसादअसीसतुमारी
सुतसुतबधूदेवसरिवारी॥रामसपथमैंकीननकाऊ॥सोकरिकहौंसषी
सतिभाउ॥भरतसीलगुनबिनैबडाई॥भाइपभगतिभरोसभलाई॥कहतसा
रदहिकरिमतिहीची॥सागरसेपकिजाइउलीची॥जानऊंसदाभरतकुलदी
पा॥बारबारमुहिकहिउमहीपा॥कसैकनकमनपारषपाए॥पुरषपरषि
अहिसमैसुभाए॥अनुचितआजकहेअसमोरा॥सोकसनेहस्यानपथोरा॥सु
निसुरसरसमपावनबानी॥भईसनेहबिकलसभरानी॥२८३॥दो॥कौसा
ल्याकहिधीरधरसनहुदेवमिथलेस॥कोबिबेकनिधबल्लभहितुमहिसकैउ

160

161

गो राम ८१ न रानि

पदेस ॥ पद ॥ चौ ॥ रानराइ मन अवसर पाई ॥ अपनी भाँति कहब सब जाई ॥ र
खब हित लखन भरत गवने बन ॥ जो पै कहु मानौ मन लै पसन ॥ तउ भल जतन
करब सुविचारी ॥ मोरे सोच भरत कर भारी ॥ गूढ सनेह भरत मन माही ॥ र
है नीक मुहि लागत नाही ॥ लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी ॥ सब भइ मगन
करुन रस रानी ॥ नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि ॥ सिथिल सनेह सिध जोगी मुनि
॥ सब रनवास विथक लखि रहेऊ ॥ तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ ॥ देव दंड जु
ग जामन बीती ॥ राम मात सुनि उठी सप्रीती ॥ पद ॥ दो ॥ वेग पाउ धरिऐ थल
हि कहि सनेह सतिभाइ ॥ हमरे तो अब ईस गति के मिथलेस सहाइ ॥ पद ॥ चौ ॥
लखि सनेह सुनि बचन विनीता ॥ जनक प्रिया गहि पाइ पुनीता ॥ देवि उचित असि
बिनै तुम्हारी ॥ दसरथ घरनि राम महतारी ॥ प्रभु अपने नीचहु आदरही ॥ अगिनि धूम
गिरि सिर तिन धरही ॥ सेवक राउ करम मन बानी ॥ सदा सहाइ महेस
भवानी ॥ रउरे अंग जोग जग को है ॥ दीप सहाइ कि दिनकर सोहै ॥ राम
जाइ बन करि सुर काजू ॥ अचल अवध पुर करिहै राजू ॥ अमर नाग नर

राम ८१

र राम बाउ बल॥ सुबबस हे जप नेज पसे प्रल॥ याहि सम जाग कल कलिा
षा॥ देव न होइ मधामृते भाषा॥२८५॥ दो॥ सम सकल सिय गावर प्रेम पीति(?) सीयाहि
तविनै सनाइ॥ सीया समेत सीया मात तब चली सगाइ मयाइ॥२८६॥ चौ॥ प्रि
या परजनहि मिली वैदेही॥ जो जेह जोग भांति तेह तेही॥ तापस बेष जानकी देषी
भा सब बिकल बिषाद बिशेषी॥ जनक राम गुर आइस पाई॥ चले थलहि सीया
देषी आई॥ लीन लाइ उर जनक जानकी॥ पाहुन पावन प्रेम प्रान की॥ उर उम
गेउ अंबुधि अनरागू॥ भयो भूप मन मनहु पयागू॥ सीया सनेह बटु बाढत
जोहा॥ ता पर राम प्रेम सिसु सोहा॥ चिरंजीव मुनि ज्ञान विकल जन॥ बुडत लहे
उ बाल अवलंबन॥ मोह मगन मति नहि बिदेह की॥ महिमा सीया रघुबर सने
ह की॥२८७॥ दो॥ सिय पित मात सनेह बस विकल न सकी संभार॥ धरनसुता धी
रज धरेउ समो सधर्म बिचार॥२८८॥ चौ॥ तापस बेष जनक सीया देषी॥ भयो प्रे
म परतोष बिशेषी॥ पुत्र पवित्र कीए कुल दोऊ॥ सुजस धवल जग कह सब को
ऊ॥ जिते सुरसर कीरति सरि तोरी॥ गउन कीन बिधि अंड करोरी॥ गंग
अवनि थल तीन बडेरे॥ इह कीए साध समाज घनेरे॥ पित कह सति सने

अ
राम

८२

सनेहसबानी॥ सीअसासुप्रतिबिसमयमानी॥ पुनिपितमातलीन
उरलाई॥ सिखआसिषहितदीनसुहाई॥ कहतनसीयाँसकुचमनमाही
इहाँबसबरजनीभलनाही॥ लखरुखरानिजनायोराऊ॥ हृदैसराहतसील
सुभाऊ॥ ५८१॥ दो॥ बारबारमिलभेटसीयाबिदाकीनसनमान॥ कहीसमै
सिरभरतगतिरानसुबानसयान॥ ५८२॥ चौ॥ सुनिभूपालभरतब्यौहारू॥ सो
नसुगंधसुधाससिसारू॥ मूंदेसजलनैनपुलकेतन॥ सुजससराहनल
गेमुदितमन॥ सावधानसुनसुमुखिसुलोचन॥ भरतकथाभवबंधबिमोच
न॥ धर्मराजनयब्रह्मबिचारू॥ इहाँजथामतिमोरप्रचारू॥ सोमतिमोरभर
तमहिमाही॥ कहैकाहछलछुअतनछाही॥ बिधिगनपतिअहिपतिसिवसा
रद॥ कबिकोबिदबुधबुधिबिसारद॥ भरतचरतकीरतिकरतूती॥ धर्म
सीलगुनबिमलबिभूती॥ समझतसुनतसुखदसभकाहू॥ सुचिसुरसर
रुचिनिदरसुधाऊ॥ ५८३॥ दो॥ निरवधिगुननिरुपमपुरुषभरतभरतसम
जान॥ कहिअसुमेरकिसेरसमकबिकुलमतिसकुचान॥ ५८४॥ चौ॥ अग
मसभैबरनतबरबरनी॥ जिमजलहीनमीनगमधरनी॥ भरतअमितमहिमासु

स
राम

८२

सिआनी॥जानेराममनसकैबषानी॥बर्नसप्रेमभर्तगुनभाऊ॥तियजीयकीरु
चिलषिकहिराऊ॥बहुरिलषनबनभरतबनजाही॥सबकरभलसबकेमन
माही॥देबिप्रीतभरतरघुबरकी॥प्रीतप्रतीतजाइनहितर्की॥भर्तअवधसने
हममताकी॥जदपरामसीयासमताकी॥परमार्थस्वार्थसुषसारे॥भरतस
पनेहुमनहुनिहारे॥साधनसिधरामपगनेहू॥मुहिलषिपरतभरतमतए
हू॥२५५॥दो॥भोरेहिभरतनपेलहहिमनसहुरामरजाइ॥करीअनसो
चसनेहबसकहिउभूपबिलषाइ॥२८९॥चौ॥रामभरतगुनगनतसप्री
ती॥निसदंपतहिपलकसमबीती॥राजसमाजप्रातजगजागे॥न्हाइन्हाइसु
रपूजनलागे॥गएनाइगुरपहिरघुराई॥बंदचर्नबोलेरुषपाई॥नाथभ
रतपुरजनमहितारी॥सोकबिकलबनबासदुषारी॥सहतसमाजराऊ
मिथलेसू॥बहुतदिवसभएसहितकलेसू॥उचितहोइसोईकीजहिना
था॥हितसभहीकररौरहिहाथा॥असकहिअतिसकुचेरघुराऊ॥मुनि
पुलकेलषिसीलसुभाऊ॥तुमबिनरामसकलसुषसाजा॥नरकसरस
दुहराजसमाजा॥२९०॥दो॥प्रानप्रानकेजीवकेजियसुषकेसुषराम॥

उमततजितातसहतनगहसिननहितननिविधधर्मम॥२८८॥चौ॥सेंसुषकर्मधर्मज
रजाऊ॥जिहनरामपदपंकजभाऊ॥जोगकुयोगग्यानअग्यानू॥जिहनराम
प्रेमप्रधानू॥तुमबिनदुखीसुषीतुमतेही॥तुमजानहुजियजोजेहिकेही॥
राउरआइससिरसभहीके॥विदतकृपालहिगतिसबनीके॥आपआश्रम
महिधारीयैपाऊ॥भयोसनेहसिथलमुनिराऊ॥करिप्रनामतबरामसि
धाए॥ऋषिधरिधीरजनकपहिआए॥रामबचनगुरनृपहिसुनाए॥सी
लसनेहसुभाइसुहाए॥महाराजअबकीजैसोई॥सभकरधर्मसहितहि
तहोई॥२८९॥दो॥ज्ञाननिधानसुजानसुचिधर्मधीरनरपाल॥तुमबिनअ
समंजससमनकोसमर्थइहकाल॥९०॥सुनिमुनिबचनजनकअनुरा
गे॥लषगतिज्ञानविरागविरागे॥सिथलसनेहगुनतमनमाही॥आए
इहांकीनभलनाही॥रामहिराइकहेउबनजाना॥कीनआपप्रियप्रेम
परवाना॥हमअबबनतेबनहिपठाई॥प्रमुदितफिरबबिबेकबडा
ई॥तापसमुनिमहिसुरसुनिदेषी॥भएप्रेमबसबिकलबिसेषी॥समो
समझधरधीरजराजा॥चलेभरतपहिसहितसमाजा॥तातभरतकहि

राम
॥८३॥

हितकरराउ॥तुमसिवेकतरघुराउसमभाउ॥२५१॥दो०॥रामसत्यव्रतधर्मरतसब
करसीलसनेहु॥संकटसहितसकोचबसकहिअजोआयसुदेहु॥२५२॥चौ०॥सुनित
नपुलकिनैनभरवारी॥बोलेभरतधीरधरिभारी॥प्रभुप्रियपूज्यपितासमआ
पू॥कुलगुरसमहितमाइनबापू॥कौशकादिमुनिसचिवसमाजू॥ग्यानअं
बुनिधिआपनआजू॥सिसुसेवकआइसुअनुगामी॥जांनमोहिसिखदेइअस्वा
मी॥इहसमाजथलबूझबराउर॥मौनमलिनमैंबोलबबावर॥छोटेबदन
कहौंबडिबाता॥छमबतातलखिबामबिधाता॥आगमनिगमप्रसिद्धपुरा
ना॥सेवाधर्मकठिनजगजाना॥स्वांमिधर्मस्वार्थहिबिरोधू॥बैरअंधप्रेम
हिनप्रबोधू॥२५३॥दो०॥राखिरामरुखधर्मव्रतपराधीनमोहिजान॥सबकेसं
मतसर्वहितकरिअप्रेमपहिचान॥२५४॥चौ०॥भरतबचनसुनिदेखिसुभाउ॥
सहितसमाजसराहतराउ॥सुगमअगममृदमंजुकठोरे॥अर्थअमित
अतिआखरथोरे॥ज्यौंमुखमुकरमुकरनिजपानी॥गहिनजाइअसअदि
भुतबानी॥भूपभरतमुनिसाथसमाजू॥गएजिहँबिबुधकुमुदद्विजराजू॥सु

तेसुष सोच बिकल सब लोगा ॥ मनहु मीन गन नव जल जोगा ॥ देव प्र-
थम कुलगुर गति देषी ॥ निरषि बिदेह सनेह बिसेषी ॥ राम भगतिमय भरत
निहारे ॥ सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥ सब कोउ राम प्रेममय पेषा ॥ भए अ-
लेष सोच बस लेषा ॥ ३०५ ॥ दो० ॥ राम सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराज
॥ रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहि त भयो अकाज ॥ ३०६ ॥ चौ० ॥ सुरन सुमिरि सा-
रदा सराही ॥ देवि देव सरनागत पाही ॥ फेरि भरत मति करि निज माया ॥
पालु बिबुध कुल करि छल छाया ॥ बिबुध बिनै सुनि देवि सयानी ॥ बोली सु-
र स्वारथ जड जानी ॥ मो सन कहहु भरत मति फेरू ॥ लोचन सहस न सूझ सुमेरू
बिधि हरि हर माया बडि भारी ॥ सोउ न भरत मति सकै निहारी ॥ सो मति मोहि
कहत करु भोरी ॥ चंदिनि कर कि चंडकर चोरी ॥ भरत हृदय सिय राम नि-
वासू ॥ तहं कि तिमिर जहं तरनि प्रकासू ॥ अस कहि सारद गई बिधि लोका
॥ बिबुध बिकल निसि मानहु कोका ॥ ३०७ ॥ दो० ॥ सुर स्वारथी मलीन मन कीन ॥
कुमंत्र कुठाट ॥ रच प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाट ॥ ३०८ ॥ चौ० ॥

करकुचालसोचतसुरराजू॥ भरत हाथ सभ काज अकाजू॥ गए जनक रघु
बंसप्रबोधा॥ जनक भरत संबाद सुनाई॥ भरत कहउत कही सुहाई॥ तात रा
म जस आइस देहू॥ सो सभ करै मोर मत एहू॥ सुनि रघुनाथ जोर जुग पा
नी॥ बोले सति सरल मृदु बानी॥ बिदमान आपन मिथलेसू॥ मोर कहब स
भ भांति भदेसू॥ राउर राइ रजाइ सुहोई॥ राउर सपथ सही सिर सोई॥ २८९॥ दो॥
राम सपथ सुनि मुनि जनक सकुचे सभा समेत॥ सकल बिलोकत भरत मुख ब
नै न उतर देत॥ २९०॥ चौ॥ सभा सकुच बस भरत निहारी॥ राम बंधु धरि धी
रज भारी॥ कुसमय देखि सनेह संभारा॥ बढत बिंधि जिमि घटज निवारा॥
सोक कनकलोचन मति छोनी॥ हरी बिमल गुन गन जगजोनी॥ भरत बि
बेक बराह बिसाला॥ अनायास उधरी तिहि काला॥ करि प्रनाम सभ कहं कर जो
री॥ राम राउ गुर साधु निहोरी॥ छिमब आजु अति अनुचित मोरा॥ कहउं बद
न म्रिदु बचन कठोरा॥ हीय सुमरी सारदा सुहाई॥ मानस ते मुख पंकज आ
ए॥ बिमल बिबेक धर्म नय साली॥ भरत भारती मंजु मराली॥ २९१॥ दो॥ नब

लो

रा. बिबेकबिलोचनसेसिथलसनेहसमाज॥करिप्रनामुबोलेभरतसुमरिसीय
राम रघुराज॥२९२॥चौ॥प्रभुपितमातसुहृदगुरस्वांमी॥पूजपरमहितअंतरजा
मी॥सरलसुसाहिबसीलनिधानू॥प्रनतपालसर्बज्ञसुजानू॥समरथसरना राम
८५ गतिहितकारी॥गुनगाहिकअवगुनअघहारी॥स्वांमगुसांईहसरसगुसा
ईं॥मोहिसमानमैसाइदुहाई॥प्रभुपितबचनमोहिबसपेली॥आएउंइहांस ८५
माजसकेली॥जगभलपोचऊंचअरुनीचू॥अमीअमरपदमाहुरमीचू॥सो
मैसभबिधकीनढिठाई॥प्रभुमानीसनेहसेवकाई॥२९३॥दो॥कृपाभला
ईआपनीनाथकीनभलमोर॥दूषनभेभूषनसरससुजसचारुचहुंओर॥
२९४॥चौ॥राउररीतसुबानिबडाई॥जगतबिदितनिगमागमगाई॥कूरकु
मतिखलकुटलकलंकी॥नीचनसीलनरासनिसंकी॥तेउसुनिसरनसामु
हेआए॥सकृतप्रनामुकीएअपनाए॥देखदोषकबहूनउरआनी॥सुनिगु
नसाधसमाजबखानी॥कोसाहिबसेवकहिनेवाजी॥आपसमाजसाजसब
साजी॥निजकरतूतनसमझसपने॥सेवकसकुचसोचउरअपने॥सोगुसा

रनहिहुसरकोपी॥मुजाउठाइकहेंपमीरोपी॥पसनाचतमकपाठप्रवीना
गुनगननटपाठकम्राधीना॥१६५॥दो॥सोमधारसनमानजनकीयेमाघसी
रमैंर॥केकृपालबिनपालहेविरदावलवरजो॥१६६॥चौ॥केकसनेहकेग्रा
लसभाए॥आयेलाइरजाइसपाए॥तबकृपालहेरनिजजोरा॥समेभांतिम
लमन्योमोरा॥देखेपाइसुमंगलमूला॥जान्योस्वामसहजअनुकूला॥बडे
समाजबिलोकिउभागू॥बडीचूकसाहिबअनुरागू॥कृपाअनुगृहअंगः
अघाई॥कीनकृपानिधसबअधिकाई॥राखामोरदुलारगुसाई॥अपनेसी
लसभाउभलाई॥नाथनेपटमैकीनढीठाई॥स्वामसमाजसकोचबिहाई॥
अवनयबिनयजथारुचिबानी॥कहैसदेवअतिआरतिजानी॥१६७॥दो॥स
हसमजानसुसाहिबअवहिवकुतकमविवउयोरि॥आइसदरीअहेदेवअवविस
भसधारीमैमोरि॥१६८॥चौ॥प्रभपदपदमपरागदुहाई॥सतसकृतिसुखसी
वसुहाई॥सोकरिकहोहीअहेअपनेकी॥रुचजागतिसोवतसपनेकी॥सहज
सनेहस्वामसेवकाई॥स्वार्थछलफलचारिविहाई॥आज्ञासमनसुसाहि
सेवा॥सोप्रसादजनपावैदेवा॥असकहिप्रेमविवसभयभारी॥पुलक

ब

सरीर बिलोचन बारी॥ प्रभुपद कमल गहे अकुलाई॥ समो सनेह न सो कहि
जाई॥ कृपासिंधु सनमान सुबानी॥ बैठए समीप गहि पानी॥ भरत बिनय सु
नि देखि सुभाऊ॥ सिथिल सनेह सभा रघुराऊ॥ २१५॥ छंद॥ रघुराउ सिथिल स
नेह साधु समाज मुनि मिथिला धनी॥ मन महि सराहत भरत भाइप भगति कैं म
हिमा घनी॥ भरत हि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से॥ तुलसी
बिकल सब लोग सुनि सकुच निशाँ॥ २२०॥ सो॥ देखि दुखारी दीन दुहु समाज नर ना
रि सब॥ मघवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहत॥ २२१॥ चौ॥ कपट कुचालि
सीव सुरराजू॥ पर अकाज प्रिय आपन काजू॥ काक समान पाकरिपु रीती॥ छ
ली मलीन कतहुँ न प्रतीती॥ प्रथम कुमत करि कपट सकेला॥ सो उचाट स
ब के सिर मेला॥ सुरमाया सब लोक बिमोहे॥ राम प्रेम अतिसैन बिछोहे॥ भ
ए उचाट बस मन थिर नाही॥ छिन बन रुचि छिन सदन सुहाही॥ दुबिध
मनोगति प्रजा दुखारी॥ सरित सिंधु संगम जनु बारी॥ दुचित [illegible] कतहुँ प
रितोष न लहही॥ एक एक सन मरम न कहही॥ लखि हँसि हिय कहे कृपा
निधानू॥ सरिस स्वान मघवान जुबानू॥ २२२॥ दो॥ भरत जनक मुनिजन सचिव सा
व

धरम चेत सुभाउ॥ लागे देव माया सबहि जथाजोग जँथाइ॥२२३॥ चौ॥ कृपासिं
धु लखि लोक दुखारे॥ निज सनेह सुरपति छल भारे॥ सभा राउ गुर महिसुर
मंत्री॥ भरत भगति सबकै मति जंत्री॥ रामहि चितवत चित्र लिखे से॥ सकुचत
बोलत बचन सिखे से॥ भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई॥ सुनत सुखद बरन
त कठनाई॥ जासु बिलोकि भगति लवलेसू॥ प्रेम मगन मुनिगन मिथले
सू॥ महिमा तासु कहै किमि तुलसी॥ भगति सुभाइ सुमति हियै हुलसी॥ आप
छोटि महिमा बड़ि जानी॥ कबिकुल कानि मानि सकुचानी॥ कहि न सकति गुन
रुचि अधिकाई॥ मति गति बाल बचन की नाई॥२२४॥ दो॥ भरत बिमल जसु बि
मल बिधु सुमति चकोर कुमारि॥ उदित बिमल जन हृदै नभ एकटक रही नि
हारि॥२२५॥ चौ॥ भरत सुभाउ न सुगम निगमहूं॥ लघु मति चापलता कबि छ
महूं॥ कहत सुनत सति भाउ भरत को॥ सीयाराम पद होइ न रति को॥ सुमिरत
भरतहि प्रेम राम को॥ जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को॥ देषि दयाल दसा सबही
की॥ राम सुजान जान जन जी की॥ धरम धुरीन धीर नय नागर॥ सत्य सनेह
सील सुख सागर॥ देस काल लखि समौ समाजू॥ नीति प्रीति पालक रघुराजू॥

राम बोलेबचनबानिसरबसुसे॥हितपरिनामसुनतससिरसुसे॥तातभ
राम रततुमधर्मधुरीना॥लोकबेदबिदप्रेमप्रबीना॥२२६॥दो॥कर्मबचनमा
नसबिमलतुमसमानतुमतात॥गुरसमाजलघुबंधुगुनकुसमयकि राम
८१ मकहिजात॥२२७॥चौ॥जानहुताततरनिकुलरीती॥सत्यसंधपितुकी
रतिप्रीती॥समौसमाजलाजगुरजनके॥उदासीनहितअनहितमनके॥ ८१
तुमहिबिदितसबहीकरकर्मू॥आपनमोरपरमहितधर्मू॥मोहिसब
भांतिभरोसतुमारा॥तदपिकहौंअवसरअनुसारा॥तातताततबिनुबात
हमारी॥केवलगुरकुलकृपासंभारी॥नतरप्रजापुरजनपरिवारू॥हम
हिसहितसबहोतषुआरू॥जौबिनुअवसरअथवैदिनेसू॥जगकेहि
कहहुनहोइकलेसू॥तसउतपाततातबिधिकीनां॥मुनिमिथिलेसराखिसब
लीना॥२२७॥दो॥राजकाजसबलाजपतिधर्मधरनिधनधाम॥गुरप्र
भाउपालिहिसबहिभलहोइहिपरिनाम॥२२८॥चौ॥सहितसमाजतुमारह
मारा॥घरबनगुरप्रसादरषवारा॥मातपितागुरस्वामिनिदेसू॥सक
लधर्मधरनीधरसेसू॥सोतुमकरहुकरावहुमोहू॥ताततरनिकुलपालकहो

होइ॥ साधक एक सकल सिध देनी॥ कीरत सुगति भूतमय बेनी॥ सो बिचार स
हि संकट भारी॥ करहु प्रजा परवार सुखारी॥ बाँटी बिपति सबहि मोहि भाई॥ तुम्ह
हि अवधि भर बड़ि कठनाई॥ जानि तुम्हहि मृदु कहौं कठोरा॥ कुसमय तात न
अनुचित मोरा॥ होहिं कुठाइ सुबंधु सहाए॥ ओड़िअहि हाथ असनिहु के घा
ए॥ ३२५॥ दो॥ सेवक कर पद नैन से मुख सो साहब होइ॥ तुलसी प्रीति कि री
ति सुनि सुकबि सराहहि सोइ॥ ३२६॥ चौ॥ सभा सकल सुनि रघुबर बानी॥ प्रेम
पयोधि अमिअ जनु सानी॥ सिथल समाज सनेह समाधी॥ देखि दसा चुप
सारद साधी॥ भरतहि भयौ परम संतोषु॥ सनमुख स्वामि बिमुख दुख दो
षु॥ मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादु॥ भा जनु गूँगहि गिरा प्रसादु॥ कीन सप्रेम
प्रनाम बहोरी॥ बोले पानि पंकरुह जोरी॥ नाथ भयौ सुख साथ गए को॥ लहि
उ लाहु जग जनम भए को॥ अब कृपाल जस आइसु होई॥ करौं सीस धरि सा
दर सोई॥ सो अवलंब देउ मोहि देई॥ अवधि पार पाऊँ जेहि सेई॥ ३२७॥ दो॥
देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासन पाइ॥ आन्यौ सब तीरथ सलिल तेहि
कहुँ काह रजाइ॥ ३२८॥ चौ॥ एक मनोरथ बड़ मन माही॥ सभय सकोच जा

राम 175

राम

तक हि नाहीं॥ कहेउ तात प्रभु आइसु पाई॥ बोले बानि सनेह सुहाई॥ चित्रकूट सुचि थल तीर्थ बन॥ खग मृग सर सरि निर्झर गिरि गन॥ प्रभु पद अंकित अवनि बिसेषी॥ आइसु होइ त आवउँ देखी॥ अवसि अत्रि आइसु सिर धरहू॥ तात बिगत भय कानन चरहूं॥ मुनि प्रसाद बन मंगल दाता॥ पावन परम सुहावन भ्राता॥ रिषि नायक जहँ आइसु देही॥ राखेहु तीरथ जल थल तेही॥ सुनि प्रभु बचन भरत सुख पावा॥ मुनि पद कमल मुदित सिर नावा॥२३३॥ दो॰॥ भरत राम संबाद सुनि सकल सुमंगल मूल॥ सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल॥२३४॥ चौ॰॥ धन्य भरत जय राम गुसाईं॥ कहत देव हरषत बरिआईं॥ मुनि मिथिलेस सभा सब काहू॥ भरत बचन सुनि भयउ उछाहू॥ भरत राम गुन ग्राम सनेहू॥ पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू॥ सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन॥ नेम प्रेम अति पावन पावन॥ मति अनुसार सराहन लागे॥ सचिव सभासद सब अनुरागे॥ सुनि सुनि राम भरत संबादू॥ दुहु समाज हिय हरष बिषादू॥ राम मातु दुख सुख सम जानी॥ कहि गुन राम प्रबोधी रानी॥ एक कहहिं रघुबीर बड़ाई॥ एक सराहत भरत भलाई॥२३५॥

राम

॥८८॥ ॥८८॥

दो० ॥ अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप ॥ राखीअ तीर्थ तोइ तिह पावन अमी
अनूप ॥ ३३६ ॥ चौ० ॥ भरत अत्रि अनुसासन पाई ॥ जल भाजन सब दीए चलाई ॥ सानुज आपु अत्रि मुनि साधू ॥ सहित गए जहं कूप अगाधू ॥ पावन पाथ पुन्य थल राखा ॥ प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥ तात अनादि सिध थल एहू ॥ लोप्यो काल बिदित नहि केहू ॥ तब सेवकनि सरस थल देषा ॥ कीन सुजल हित कूप बिशेषा ॥ बिधि बस भयो बिस्व उपकारू ॥ सुगम अगम अति धर्म बिचारू ॥ भरत कूप अब कहिहैं लोगा ॥ अति पावन तीर्थ जल जोगा ॥ प्रेम सनेम निमजहि प्रानी ॥ होइ हैं बिमल कर्म मन बानी ॥ ३३७ ॥ दो० ॥ कहत कूप महिमा सकल गए जहा रघुराइ ॥ अत्रि सुनायो रघुबरहि तीर्थ पुन्य प्रभाउ ॥ ३३८ ॥ चौ० ॥ कहत धर्म इतिहास सप्रीती ॥ सहित समाज साज सब सादे ॥ चले राम बन अटन पयादे ॥ कोमल चर्न चलत बिनु पनही ॥ भइ मृदु भूमि सकुच मन मनही ॥ कुस कंटक कांकरी कुराई ॥ कटुक कठोर कुबस्त दुराई ॥ महि मंजुल मृदु मारग कीने ॥ बहत समीर त्रिबिध सुष लीने ॥ सुम

नवअंषसुरघनकरिछाही॥ विटपफूलफलवनम्हेदतोंही॥ म्हेदवेलोक
षगबोलसुबानी॥ सेवहिसकलरामप्रियजानी॥ ३३४॥ दो॥ सकलसिध
सभप्राकृतजुरामकहतजमहात॥ रामप्रानप्रियभरतकहियहतिनकेह
वरबात॥ ३३५॥ चौ॥ इहविधभरतफिरतबनमाही॥ नेमप्रेमलषमुनिस
कुचाही॥ पुनजलथलपायमंसबभागा॥ षगम्रिगतरत्रिनगीरबनबागा
चारविचित्रपवित्रविसेषी॥ बुझतभरतदिव्यसभएदेषी॥ सनिमनमुद
तिकहतरषुराऊ॥ हेतनामगुनपुन्नप्रभाऊ॥ कतहुनिमजनकतहुप्र
नामा॥ कतहुविलोकतमनअभिरामा॥ कतहुबैठमुनआइसपाई॥ सु
मरतसीयासहतदोउभाई॥ देषिसुभाउसनेहसुसेवा॥ देहिअसीसमु
दितबनदेवा॥ फिरहिगएदिनपहिरअढाई॥ प्रभपदकमलविलोक
हिआई॥ ३३६॥ दो॥ देषेथलतीर्थसकलभरतपांचदिनमांज॥ कहतसुन
तहरीहरसुजसगएदिवसभईसांज॥ ३३७॥ चौ॥ भोरन्हाइसभजुरा
समाजू॥ भरतभुमसुरतिरहुतराजू॥ भलदिनआजजानमनमाही॥

रा राम ५०

रामकृपालकहतसकुचाही॥गुरन्रपभरतसभाअवलोकी॥सकुचराम
फिरअवनअवलोकी॥सीलसराहसभासबसोची॥कहुनरामसमस्वां
मसकोची॥भरतसुजानरामरुषदेषी॥उठसप्रेमधरधीरबसेषी॥करि
दंडवतकहतकरजोरी॥राषीनाथसकलरुचमोरी॥मोहिलगीसबही
सहिउसंतापू॥बहुतभांतिदुषपावाआपू॥अबगुसाईमोहिदेउरजा
ई॥सेवौंअवधअवधभरजाई॥२९८॥दो॥जेहउपाइपुनपुनपाइजन
देषीदीनदयाल॥सोसिषदेइयेअवधलगिकोसलपालकृपाल॥
२९९॥चौ॥पुरजनपरजनप्रजागुसाई॥सबसुचसरससनेहसगाई॥राउ
रबदिभलभवदुषदाहू॥प्रभबिनबादपरमपदलाहू॥स्वामिसुजानजा
निसबहीकी॥रुचलालसारहनिजनजीकी॥प्रनतपालपालहिसब
काहू॥देउदुहूदिसओरनिबाहू॥असमोहिसबबिधभूरभरोसो॥कि
एबिचारनसोचषरोसो॥आरतमोरनाथकरछोहू॥दुहमिलकीनढी
ठहठमोहू॥एबडदोषदूरकरिस्वामी॥तजिसकोचसिषीयीअनगामी

राम ५०

भरतबिनैसुनिसभसमेतप्रसंसी॥षीरनीरबिवरनगतिहंसी॥२८४॥दो॥दीनबंधुसु
निबंधकेबचनदीनछलहीन॥देसकालअवसरसरसबोलेरामप्रबीन॥
२८४॥चौ॥ताततुमारमोरपुरजनकी॥चिंतागुरहिन्रपहिघरबनकी॥माथेपर
गुरमुनिमिथलेसू॥हमहितुमहिसपनेनकलेसू॥मोरतुमारपरमपुरषार्थु॥
स्वार्थसुजसधर्मपरमार्थु॥पायसुपितापालिहिदोउभाई॥लोकबेदभ
लभूपभलाई॥गुरपितमातस्वामिसिषपाले॥चलेहुकुमगपगपरहिनषा
ले॥असबिचारसबसोचबिहाई॥पालहुअवधअवधभरजाई॥देसको
सपुरजनपरवारू॥गुरपदरजहिलागछरुभारू॥तुममुनिमातसचिव
सिषमानी॥पालहुपुहुमप्रजारजधानी॥२८५॥दो॥मुषीआमुषुसोचाहि
ऐषानपानकहुएक॥पालैपोषैसकलअंगतुलसीसहितबबेक॥२८६॥चौ॥
राजधर्मसर्बसएतनोई॥जिममनमाहिमनोर्थगोई॥बंधुप्रबोधकीनबहु
भांती॥बिनअधारमनतोषनसांती॥भरतसीलगुरसचिवसमाजू॥सकुच
सनेहबिवसरघुराजू॥प्रभकरिकृपापावरीदीनी॥सादरभरतसीसधरिली
नी॥चरनपीठकरुनानिधानकी॥जनजुगजामिकप्रजाप्रानकी॥संपुटभर

रा तसनेहरतनके॥ अषरजगाजनुजीवजतनके॥ कुलकपाटकरकुलक 181

राम र्मके॥ विमलनैनसेवासधर्मके॥ भरतमदतिअवलंबलहेते॥ ममसुष

जससीयारामरहेते॥ २४९॥ दो॥ मांगिउविदाप्रनामकरिरामलीन्हउरला राम

॥५१॥ इ॥ लोगउचाटेअमरपतिकुटिलकुयवसरपाइ॥ २५०॥ चौ॥ सोकुचालस

भकोभैनीकी॥ अवधिआससमजीवनजीकी॥ ननतरलषनसीयारामवियो ॥५४॥

गा॥ हहरिमरतसबलोककुरोगा॥ रामकृपाअवरेबसुधारी॥ विबुधधा

रिभईगुनदगुहारी॥ भेटतभुजभरभाइभरतसो॥ रामप्रेमरसकहनतपर

तसो॥ तनमनबचनउमगअनुरागा॥ धीरधुरंधरधीरजत्यागा॥ बारिज

लोचनमोचनवारी॥ देषदसासुरसभादुषारी॥ मुनिगनगुरधुरधीरज

नकसे॥ ज्ञानअनलमनकसेकनकसे॥ जेविरंचिनिर्लेपउपाए॥ पदुम

पत्रजिमजगजलजाए॥ २५१॥ दो॥ तेउविलोकरघुवरभरतप्रीतिअनूपअ

पार॥ भएमगनमनतनबचनसहितविरागविचार॥ २५२॥ चौ॥ जहांज

नकगुरगतिमतिभोरी॥ प्राकृतिप्रीतिकहतबडषोरी॥ बरनतरघुवर

भगतिवियोगू॥ सुनेकठोरकविजानेलोगू॥ सोसकोचरसअकथकहनी॥

182

समेसनेहसमसमजसनकुचानी॥भेटभरथरघुबरसमझाए॥पुनरिपदवनह
र्षहियलाए॥सेवकसचिवभरतरुखपाई॥निजनिजकाजलगेसबजाई॥सु
निदारनदुखदुहूंसमाजा॥लगेचलनकेसाजनसाजा॥प्रभपदपदमबंद
दोउभाई॥चलेसीसधरिरामरजाई॥मुनितापसबनदेवनिहोरी॥सभस
नमानबहोरबहोरी॥६५३॥दो॥लखनहिभेटप्रनामकरिसिरधरिसीया
पदधूल॥चलेसप्रेमअसीससुनिसगलसमंगलमूल॥६५४॥चौ॥सा
नुजराममनृपहिसिरनाई॥कीनबहुतबिधबिनबडाई॥देवदयाबसब
डदुखपायो॥सहितसमाजकाननहिआयो॥पुरपगधारीअदेहिअसीसा
कीनधीरधरिगवनमहीसा॥मुनिमहिदेवसाधसनमाने॥बिदाकीयेहरि
हरसमजाने॥सासुसमीपगएदोउभाई॥फिरेबंदपदआसखपाई॥कौ
सकबामदेवजाबाली॥परजनपुरजनसचिवसुचाली॥जथाजोगकरिबि
नेप्रनामा॥बिदाकीएसभसानुजरामा॥नारपुरषलघमधबडेरे॥सभ
सनमानकृपानिधफेरे॥६५५॥दो॥भरतमातपदबंदप्रभसचसनेहमिलभे
ट॥बिदाकीनसजिपालकीसकुचसोचसभमेट॥६५६॥चौ॥परजनमा

रा

राम

८२

तापित ताहि मिलि सीता॥ फिरी प्रान प्रिया प्रेम पुनीता॥ कर प्रनाम भेटी सब सासा
स॥ प्रीत कहत कबि हियँ न हुलासा॥ सुनि सिख अभिमत आसिष पाई॥ रही
सीइ दुहु प्रीत समाई॥ रघुपति पटु पालकी मंगाई॥ करि प्रबोधु सब मात
चढ़ाई॥ साजि बाजि गज बाहन नाना॥ भूप भरत दल कीन पयाना॥ हृदै रा
म सीय लखन समेता॥ चले जाहि सब लोग अचेता॥ बसह बाजि गज
पसु हिय हारी॥ चले जाहि परबस मन मारी॥ २८७॥ दो॰॥ गुर गुरतीय पा
द बंदि प्रभु सीता लखन समेत॥ फिरे हरष बिसमै सहित आए परनानिके
त॥ २८८॥ चौ॰॥ बिदा कीन सनमानि निषादू॥ चलेउ हृदै बड़ बिरह बिषादू॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी॥ फेरे फिरे जोहारि जोहारी॥ प्रभु सीय लखन बैठि
बट छांही॥ प्रिय परिजन बियोग बिलखांही॥ भरत सनेह सुभाउ सुबा
नी॥ प्रिया अनुज सन कहत बखानी॥ प्रीत प्रतीत बचन मन करनी॥ श्री
मुख राम प्रेम बस बरनी॥ तेहि अवसर खग मृग जल मीना॥ चित्रकूट च
र अचर मलीना॥ बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की॥ बरषि सुमन कहि गति
घर घर की॥ प्रभु प्रनाम करि दीन भरोसो॥ चले मुदित मन डर न ख

183

राम

८२

रोस॥३२०॥ दो॥ सानुज सीया समेत प्रभ राजत परन कुटीर॥ भगति ग्यान बैराग जन सोहत धरे सरीर॥३२१॥ चौ॥ मनि महिसुर गुर भरत भुआलू॥ राम बिरहि सब साज बिहालू॥ प्रभ गुन ग्राम गनत मन माही॥ सब चुप चाप चले मग जाही॥ जमना उतर पार सभ भयो॥ सो बासर बिन भोजन गयो॥ उतर देवसर दूसर बास॥ राम सखा सभ कीनस पास॥ सई उतर गोमती नहाए॥ चउथे दिवस अउधपुर आए॥ जनक रहे पुर बासर चारी॥ राज काज सभ साज सभारी॥ सौप सचिव गुर भरतहि राजू॥ तिरहुति चले साज सभ साजू॥ नगर नार नर गुर सिख मानी॥ बसे सखेन राम रजधानी॥३२२॥ दो॥ राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपबास॥ तज तज भूखन भोग सुख जीअत अउध की आस॥३२३॥ चौ॥ सचिव सुसेवक भरथ प्रबोधे॥ नेज नेज काज पाइ सिख ओधे॥ पुनि सिख दीन बोल लघु भाई॥ सौपी सगल मात सेवकाई॥ भूसर बोल भरत कर जोरे॥ करि प्रनाम बर बिनै नेहोरे॥ ऊच नीच कारज भल पोचू॥ आइस देव न करव संकोचू॥ परजन पुरजन प्रजा बुलाए॥ समाधान कर सबास बसाए॥ सानज गे गुर गेह बहोरी॥ कर दंडउत कहत कर जोरी॥ आइ

रा
राम
५३

सहोदर तुव रहैं सनेमा॥ बोले मुनि तन पुलक सप्रेमा॥ समुझब कहब करब तुम जोई॥
धर्म सार जग होइहि सोई॥ ६६३॥ दो॥ मुनि सिष पाइ असीस बड गनक बोलि
दिन साधि॥ सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि॥ ६६४॥ चौ॥ राम मात गु
र पद सिर नाई॥ प्रभ पद पीठ रजाइसु पाई॥ नंदग्राम करि परन कुटीरा॥
कीन निवास धर्म धुर धीरा॥ जटाजूट सिर मुनि पट धारी॥ महि खनि कुस
साथरी सवारी॥ असन बसन बासन ब्रत नेमा॥ करत कठिन रिषि धर्म
सप्रेमा॥ भूषन बसन भोग सुख भारी॥ मन तन बचन तजे तिन तूरी॥
अवध राज सुर राज सिहाई॥ दसरथ धनु सुनि धनद लजाई॥ तेहि पुर
भरत बसत बिन रागा॥ चंचरीक जिमि चंपक बागा॥ रमा बिलास राम
अनुरागी॥ तजत बमन जिमि जन बडभागी॥ ६६५॥ दो॥ राम प्रेम भाजन भ
रत बडे न एहि करतूति॥ चातक हंस सराहिअत टेक बिबेक बिभूति॥ ६६६॥
चौ॥ देह दिने दिन दूबर होई॥ घटै तेज बल मुख छबि सोई॥ नित नव रा
म प्रेम पन पीना॥ बढत धर्म बल मन न मलीना॥ जिमि जल घटत सर
द प्रकासे॥ बिलसत बेतस बनज बिकासे॥ सम दम संजम नेम उपा

राम
५३

सा॥नषतभरतहीयेंबिमलअकासा॥ध्रुवबिस्वासअवधराकासी॥
स्वांमसुरतसुरबीथबिकासी॥रामप्रेमबिधु[illegible]चलअदोषा॥
सहितसमाजसोहितचोषा॥भरतरहनसमझनकरतूती॥भगतिबि
रतगुनबिमलबिभूती॥बरनतसकलसुकबिसकुचाहीं॥सेसगने
सगिरागमनाहीं॥३३७॥दो॥नितपूजतप्रभपावरीप्रीतनहदैसमा
ति॥मांगमांगआग्याइसुकरतराजकाजबहुभांति॥३३८॥चौ॥पुलकगा
तहीयेंसीयारघुबीरू॥जीहनामजपलोचननीरू॥लषनरा
मसीयाकाननबसहीं॥भरतभवनबसतपतनकसहीं॥दोऊदिस
समझकहतसबलोगू॥सबबिधभरतसराहनजोगू॥सुनिब्रतनेम
साधसकुचाहीं॥देषिदसामुनिराजलजाहीं॥परमपुनीतभरतआच
रनू॥मधुरमंजमुदमंगलकरनू॥हरनकठनकलकलषकलेसू॥
महामोहनिसदलनदिनेसू॥पापपुंजकुंजरम्रिगराजू॥समनसक
लसंतापसमाजू॥जनरंजनभंजनभवभारू॥रामसनेहसुधाकरसा

स॥ ६६९॥ छंद॥ सीयाराम प्रेम पीउष पूर्न होत जनम न भरत को॥ मुनि म
न अगम जम नेम सम दम सविषम व्रत आचरत को॥ दुष दाह्य दारिद दंभ
दूषन सुजस मिस अपहरत को॥ कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम
सनमुष करत को॥ ६७०॥ सो॥ भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर
सुनहि॥ सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरत॥ ६७१॥ इ
ति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने भरतनं
द ग्राम वर्णाने द्वितीयो सोपानः॥ इति श्री अयोध्याकां
ड समाप्तं॥ शुभं मस्तु॥ राम राम॥

॥ श्री गणेशाय नमः॥ श्री रामजी नमः॥

॥ शुभं मस्तु॥

॥॥

MSS No. 464 (Part-3) Subject Ramayana

Name of MSS Ramcharit Manas (Van Kand)

Author Tulsidas

Period Folios 52

Script Devnagiri Source Kapoor, Jalandhar City

Missing Folios

ॐ श्रीरामाय नमः ॥ अथ अरण्यकांड लिष्यते ॥ सोरठा ॥ उमा राम गुण गूढ पंडित मुनि पावहिं बिरति ॥ पावहिं मोह बिमूढ जे हरि बिमुष न धर्म रत ॥१॥ चौ० ॥ पुर नर भरत प्रीति मैं गाई ॥ मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥ अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन ॥ करत जे बन सुर नर मुनि भावन ॥ एक बार चुनि कुसुम सुहाए ॥ निज कर भूषण राम बनाए ॥ सीतहि पहिराए प्रभु सादर ॥ बैठे फटिक सिला पर सुंदर ॥ सुरपति सुत धरि बायस बेषा ॥ सठ चाहत रघुपति बल देषा ॥ जिमि पिपीलिका सागर थाहा ॥ महा मंद मति पावन चाहा ॥ सीता चरन चोंच हति भागा ॥ मूढ मंदमति कारन कागा ॥ चला रुधिर रघुनायक जाना ॥ सींक धनुष सायक संधाना ॥२॥ दो० ॥ अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ॥ ता सन आइ कीन्ह छल मूरष अवगुण गेह ॥२॥ [illegible] अपराध प्रभु हतै न काऊ ॥ [illegible] ॥ जब प्रभु लीन्ह सींक कर बाना ॥ [illegible] समाना ॥ प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा ॥ चला भाजि बायस भय पावा ॥ धरि निज रूप गएउ पितु पाहीं ॥ राम बिमुष राषा तेहि नाहीं ॥ भा निरास उपजी मन त्रासा ॥

वैराग्य [illegible]
बिदेहो [illegible]

यथा चक्र भए ऋषि दुर्बासा॥ ब्रह्मधाम शिवपुर सब लोका॥ फिरा श्रमित ब्याकुल
भय शोका॥ काहूं बैठन कहा न ओही॥ राखि को सकै राम कर द्रोही॥ मातु मृत्यु पि
तु शमन समाना॥ सुधा होइ विष सुनु हरिजाना॥ मित्र करै शत रिपु कै करनी
ता कहं बिबुधनदी बैतरनी॥ सब जग ताहि अनल ते ताता॥ जो रघुबीर बिमु
ख सुनु भ्राता॥ दो॥ जिमि जिमि भागत शक्र सुत ब्याकुल अति दुःख दीन॥ तिमि ति
मि धावत राम शर पाछे परम प्रबीन॥ ३॥ बचलिउ रग वन गृसे थको शा॥ रघु
पति शर छुटे बच बचनं देशा॥ नारद देखा बिकल जयंता॥ लागी दया कोमल
चित संता॥ कुरि कहि तें कहि प्रभु प्रभुताई॥ भजेउ तात बउ बिधि सम जाई॥
पठवा तुरत राम पहिं ताही॥ कहेसि पुकारि प्रणत हित पाही॥ आतुर सभय ग
हेसि पद जाई॥ त्राहि त्राहि दयाल रघुराई॥ अतुलित बल अतुलित प्रभुताई
मैं मतिमंद जान नहिं पाई॥ निज कृत कर्म जनित फल पाएउ॥ अब प्रभु पाहि श
रण तकि आएउ॥ सुनि कृपाल अति आरत बानी॥ एक नयन करि तजेउ भ
वानी॥ सो॥ कीन्ह मोह बश द्रोह यद्यपि एहि कर बध उचित॥ प्रभु छाडेउ करि
छोह को कृपाल रघुबीर सम॥ ४॥ रघुपति चित्रकूट बसि नाना॥ चरित किए
श्रुति सुधा समाना॥ बहुरि राम अस मन अनुमाना॥ होइहि भीर सबहिं

2

मोहि जाना॥ सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई॥ सीता सहित चले दोउ भाई॥ अत्री
के आश्रम प्रभु गएउ॥ सुनत महामुनि हरषित भएउ॥ पुलकित गात अत्री उठि
राम धाए॥ देखि राम आतुर चलि आए॥ करत दंडवत मुनि उर लाए॥ प्रेम बारि दोउ ज
न अन्हवाए॥ देखि राम छबि नयन जुड़ाने॥ सादर निज आश्रम तब आने॥ करि राम
॥२॥ पूजा कहि बचन सुहाए॥ दिए मूल फल प्रभु मन भाए॥ प॥ सो॥ प्रभु आसन आसी
न भरि लोचन सोभा निरखि॥ मुनिबर परम प्रबीन जोरि पानि अस्तुति करत॥ छ ॥२॥
ंदः॥ नमामि भक्तिवत्सलं कृपालु शील कोमलं॥ भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधा
मदं॥ निकाम श्याम सुंदरं भवांबुनाथ मंदरं॥ प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष
मोचनं॥१॥ प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभो प्रमेय वैभवं॥ निषंग चाप शायकं धरं त्रिलोक
नायकं॥ दिनेश वंश मंडनं महेश चाप खंडनं॥ मुनींद्र संत रंजनं सुरारि वृंद भं
जनं॥२॥ मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितं॥ विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दू
षणापहं॥ नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं॥ भजे सशक्ति सानुजं शची
पतिप्रियानुजं॥३॥ त्वदंघ्रि मूल जे नरा भजंति हीन मत्सरा॥ पतंति नो भवार्णवे
वितर्क वीचि संकुले॥ विविक्त वासिनः सदा भजंति मुक्तये मुदा॥ निरस्य इंद्रिया
दिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं॥४॥ त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं॥ जगद्गुरुं च

शास्वतंतुरीयमेवकेवलं ॥ भजामिभाववल्लभंकुयोगिनांसुदुर्लभं ॥ स्वभक्तकल्प
पादपंसमंसुसेव्यमन्वहं ॥११॥ अनूपरूपभूपतिंनतोहमुर्विजापतिं ॥ प्रसीदमे
नमामितेपदाब्जभक्तिदेहिमे ॥ पठंतियेस्तवंइदंनरादरेणतेपदं ॥ व्रजंतिनात्र
संशयंत्वदीयभक्तिसंयुतं ॥१२॥ दो ॥ बिनतीकरिमुनिनाइसिरकहकरजोरिब
होरि ॥ चरणसरोरुहनाथजनिकबहुंतजैमतिमोरि ॥१३॥ चौ ॥ जनमजनम
प्रभुतवपदकंजा ॥ बाढैप्रेमचकोरजिमिचंदा ॥ देखिराममुनिविनयप्रणा
मा ॥ विविधभांतिपाएउविश्रामा ॥ अनुसूयाकेपदगहिसीता ॥ मिलीबहो
रिसुशीलविनीता ॥ येसियसकललोकसुखदाता ॥ अखिलकोटिब्रह्मांडकी
माता ॥ तेउपाइमुनिवरमुनिभामिनि ॥ सखीभइकुमुदिनिजिमिजामिनि ॥ ऋ
षिपतनीमनसुखअधिकाई ॥ आसिषदेइनिकटबैठाई ॥ दिव्यवसन
भूषनपहिराए ॥ जेनितनूतनअमलसुहाए ॥ जाहितेरघिदुःखदुरिपरा
हीं ॥ गरुडजानिजिमिअहिगनजाहीं ॥१४॥ दो ॥ जैसेवसनविचित्रसुठिदीन्ह
सीयकरुणानिधि ॥ सनमानीप्रियवचनकहिप्रीतिनजातिबखानि ॥१५॥ चौ ॥
कहरिषिबधूसरसमृदुबानी ॥ नारिधर्मकछुब्याजबखानी ॥ मातुपिता

भ्राताहितकारी॥मितप्रदसबसुनुराजकुमारी॥अमितदानीभर्ताबैदेही॥ 5

राम अधमसोनारिजोसेवनतेही॥धीरजधर्ममित्रअरुनारी॥आपतकालप
३ रिषियहिचारी॥बृद्धरोगबशजडधनहीना॥अंधबधिरक्रोधीअतिदी राम
ना॥ऐसेहुपतिकरकरेअपमाना॥नारिपावजमपुरदुःखनाना॥एकै ॥२॥
धर्मएकब्रतनेमा॥कायबचनमनपतिपदप्रेमा॥जगपतिब्रताचारिबि
धिअहहीं॥वेदपुरानसंतसबकहहीं॥१६ दो॥उत्तममधमनीचलघुस
कलकहौंसमझाइ॥आगेंसुनहितेभवतरहिंसुनहुसीयचितलाइ॥१७॥
चौ॥उत्तमकेअसबशमनमाहीं॥सपनेहुंआनपुरुषजगनाहीं॥मध्यम
परपतिदेषैकैसे॥भ्रातापितापुत्रनिजजैसे॥धर्मबिचारिसमझिकुलरहई॥
सोनिकृष्टत्रियश्रुतिअसकहई॥बिनुअवसरभयतेरहजोई॥जानेअ
धमनारिजगसोई॥पतिवंचकपरपतिरतिकरई॥रौरवनरककल्पश
तपरई॥छिनसुखलागिजनमशतकोटी॥दुःखनसमुझतेहिसमको
षोटी॥बिनुश्रमनारिपरमगतिलहई॥पतिब्रतधर्मछाडिछलगहई॥

पति प्रतिकूल जनम जहं जाही॥ विधवा होइ पाइ तरुनाही॥१८॥ सो॰॥ सहज अपा
वनि नारि पति सेवत सुभ गति लहही॥ जस गावे श्रुति चारि अजहु तु
लसी कां हरि प्रिया॥१९॥ सो॰॥ सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत कर
हीं॥ तोहि प्रानप्रिय राम कहेउं कथा संसार हित॥२०॥ चौ॥ सुनि जानकी पर
म सुख पावा॥ सादर तासु चरन सिरु नावा॥ तब मुनि सन कह कृपा निधा
ना॥ आयसु होइ जाउं बन आना॥ संतत मो पर कृपा करेहू॥ सेवक जानि तज
उ जनि नेहू॥ धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी॥ सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी॥ जा
सु कृपा अज शिव सनकादी॥ चहत सकल परमारथ बादी॥ ते तुम राम अका
म पियारे॥ दीन बंधु मृदु बचन उचारे॥ अब जानी मैं श्री चतुराई॥
भजिय तुम्हहि सब देव बिहाई॥ जेहि समान अतिसय नहि कोई॥ ताकर
सील कस न अस होई॥ केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी॥ कहहु नाथ तुम
अंतरजामी॥ अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा॥ लोचन जल बह पुल
क शरीरा॥२१॥ छं॥ तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए॥ मन
ग्यान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए॥ जप जोग धर्म समूह तें न

रमभक्तिअनुपमपावही॥रघुबीरचरितपुनीतनिसिदिनदासतुलसीगा 7

राम वही॥२२॥दो॥मुनिअंकैप्रमातेकीनहिप्रमुदीनहिसमभगवरदान॥अमनबु

छिनमसंकुलजयजयकृपानिधान॥२३॥कलिमलसमनदमनमनरा राम

॥४॥ मसुजससुखमूल॥सादरसुनहिंजेतरतिन्हपररामरहहिअनुकूल॥२४॥

सो॥कठिनकालमलकोससंबककज्ञानजोगजप॥परिहरिसकलभरोसरा ॥४॥

महिभजहिंतेचतुरनर॥२५॥चौ॥मुनिपदकमलनायकरिसीसा॥चलेब

नहिसुरनरमुनिईसा॥आगेरामअनुजपुनिपाछें॥मुनिबरबेषबनेअ

तिकाछें॥उभयबीचसियसोहतिकैसी॥ब्रह्मजीवबिचमायाजैसी॥सरि

ताबनगिरिअवघटघाटा॥पतिपहिचानिदेहिंबरबाटा॥जहंजहंजाहिं

देवरघुराया॥करहिंमेघतहंतहंनभछाया॥आस्रमबिपुलदेखिमग

माहीं॥देवसदनतेहिंपटतरनाहीं॥बहुतडागमंदरअमराई॥भांतिभां

तिसबमुनिन्हलगाई॥तेहिंदिनप्रभुतहंकीन्हनिवासा॥सकलमुनिन

हिमिलिकीन्हसुपासा॥२६॥दो॥प्रातनित्यकृत्यासनमुदितमनपूजिप्रभुउन

रकीन॥कोदमत्तफलजमिइसममप्रातनिरामकऊंडामन॥२७॥चौ॥प्रात

जसीयसमहभोजनकीना॥ जेतेहिभावसुभगवरदीना॥ तेतप्रातमुनिनसीस
नावा॥ आसीरबादसबहूंसुनपावा॥ सीसीरिउमाश्रीवसिउगतेशा॥ पुनि
प्रभुचलेसनऊविहगेशा॥ बनअनेकसंरस्रगीरिनाना॥ लाघतचलेजा
हिंभगवाना॥ मिलाअसुरविराधमगजाता॥ गर्जतघोरकठोररिसाता॥ रू
पभयंकरमानऊकाला॥ वेगवंतधाएउजिमिव्याला॥ गगनदेवमुनिकिंन
रनाना॥ तेहिछिनहृदयहाकछुमाना॥ तरतहिंसोसीतहिलैचलेउ॥ रामहृ
दयकछुविस्मयभएउ॥ समुझाहृदयकैकेइकरनी॥ कहाअनुजसनबब
ऊविधिवरनी॥ वऊरिलखनरघुवीरप्रबोधा॥ पांचबाणमाछाडेउकरिक्रोः
धा॥२८॥ छ॥ भएक्रोधलखदाससंधानिधनुशरमारितेहिंव्याकुलकीयो॥ पुनिउ
ठानिशीचरराखिसीतहिंअतुलछेकाउतमयो॥ जनुकालदंडकरालधावाविक
लसबसुरगणभए॥ धनुतानिश्रीरघुवंसमणिपुनिमारितनजर्जरकीए
२४॥ दो॥ बऊरिएकशरमारायपराधरणीपुनिमाय॥ उठेउप्रबलपुनिगर्जेउ
चलेउजहांरघुनाथ॥ ३॥ चौ॥ जैसेकहततनिशाचरधावा॥ आवतनहिंकछुऊ
तम्हांहिमेधावा॥ आवाप्रबलयेहिविधिजनुभयघरा॥ तोडहिंकाहाकहंहिंव्याकु

१

राम

५

लसर ॥ तासु तेज अमित मन नित समाना ॥ तनक हटाँहि उडाइ पबाला ॥ जीवजंत
जहलगि ग्रीर हैं जेते ॥ व्याकुल भागि चले तह तेते ॥ उडुगन समान जोति परसा
ता ॥ भावत सीं रघुबीर निपाता ॥ तुरत हि तन चर रूप तेहि पावा ॥ देषि कपीसे
जधाम पठावा ॥ तासु अनेक गाउ उ प्रभु घरणी ॥ देवन्ह मदे तडुं दुभी हनी ॥
सीताराम चरन आल्पटानी ॥ अनुज सहित तब चले उ भवानी ॥ इहाँ शक्र जह
मुनि प्रारंभ गा ॥ आइउ सकल देव निज संगा ॥ गए एक हन न प्रभु देन आशीषाव
न ॥ दिशि बल भेद वर्षात जह रावन ॥ ३१ ॥ दो॰ सरपति संत्राय तम समसर रघु
पति तेज दिनेस ॥ रावण जीवन दिन प्रसमबीतें हुटि हि कलेश ॥ ३३ ॥ चौ॰ सु
नाथिर प्रभु तेहि छन देषा ॥ तेज निधान समभ मति वेषा ॥ तरग चारि बल सम
नत समाना ॥ र पर विसमान हि जाइ बषाना ॥ हितेन पर स अंतर हितर
हरी ॥ स्वेत छत्र चामर शीर ढरी ॥ अनुज हि प्रिय हि कलस मजरी ॥ सर
पति महिमा ग्रन प्रभुताई ॥ जे हि कारण वाधा वत तस आइ ॥ सोक छबि वच
न कहै न हि जाए ॥ बीच हि स्निग्निा इव प्रभ केरा ॥ कास्मार घीन रत तर षपेरा ॥

राम

॥ ५ ॥

दूरहि तें करि प्रभुहि प्रणामा॥ हर्षि सुरेश गैउ निजधामा॥ पुनि आइ जहं मुनि
शरभंगा॥ सुंदर अनुज जानकी संगा॥ ३३॥ दो॥ देखि राम मुख पंकज मुनिवर लो
चन भृंग॥ सादर पान करत अति धन्य जन्म शरभंग॥ ३४॥ चौ॥ कह मुनि सुनु
रघुवीर कृपाला॥ शंकर मानस राजमराला॥ जात रहेउं विरंचि के धामा॥ सुने
श्रवन बन ऐहैं रामा॥ चितवत पंथ रहेउं दिन राती॥ अब प्रभु देखि जुड़ानी
छाती॥ नाथ सकल साधन मैं हीना॥ कीनी कृपा जानि जन दीना॥ सो कछु नाथ
न मोहि निहोरा॥ निज पन राखेउ जन मन चोरा॥ तब लगि रहहु दीन हित
लागी॥ जब लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी॥ योग जग्य जप तप यत कीन्हा॥ प्रभु
कहं देइ भगति वर लीना॥ एहि विधि सर रचि मुनि शरभंगा॥ बैठे हृदय
छाडि सब संगा॥ ३५॥ दो॥ सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तन श्याम॥ म
म हीय वशहु निरंतर सगुण रूप श्रीराम॥ ३६॥ चौ॥ अस कहि योग अगिनि
तन जारा॥ राम कृपा वैकुंठ सिधारा॥ ताते मुनि हरि लीन न भएउ॥ प्रथम
हिं भेद भगति वर लएउ॥ रिषि निकाय मुनिवर गति देखी॥ सुखी भए सब
हृदय विशेषी॥ उस्तुति करहिं सकल मुनि वृंदा॥ जयति प्रणतहित करुणा

॥

राम

६

कंदा॥ पुनि रघुनाथ चले बन आगे॥ मुनि बर बृंद बिपुल संग लागे॥ अस्ति
समूह देखि रघुराया॥ पूछा मुनिन्ह लागि अति दाया॥ जानतहूं पूछिये कैसे
स्वामी॥ सबदरसी तुम्ह अंतरजामी॥ निशिचर निकर सकल मुनि खाए॥ सुन
रघुबीर नयन जल छाए॥ ३७॥ दो॥ निशिचर हीन करौं महि भुज उठाइ प्रण
कीन्ह॥ सकल मुनिन्ह के आश्रमन्ह जाइ जाइ सुख दीन॥ ३८॥ चौ॥ मुनि अगस्त के
शिष्य सुजाना॥ नाम सुतीछन रति भगवाना॥ मन क्रम बचन राम पद सेव
क॥ सपनेहुं आन भरोस न देवक॥ प्रभु आगमन श्रवन सुनि पावा॥ करत
मनोरथ आतुर धावा॥ हे बिधि दीनबंधु रघुराया॥ मोसे शठ पर करिहै
हिं दाया॥ सहित अनुज मोहि राम गोसांई॥ मिलिहैं निज सेवक की नांई॥
मोरे जीय भरोस दृढ नाहीं॥ भगति न बिरति ज्ञान मन माहीं॥ नहिं सतसं
ग योग जप जागा॥ नाहिं दृढ चरण कमल अनुरागा॥ एक बानि करुणा
निधान की॥ सो प्रिय जाके गति न आन की॥ छंद॥ ३९॥ सो जो प्रिय अति पात
कीजिन्ह कवहुं प्रभु सुमिरण कस्यो॥ सो आज मैं निज नयन देखिहौं पुनीत
पुलकित हिय भरयो॥ जे पद सरोज अनेक मुनि के ध्यान कबहुं क पावही॥

राय

६

तेराम श्रीरघुवंशमणि प्रभु प्रेम तें सुख पावहीं ॥४०॥ दो॰ ॥ पन्नगारि सुनु प्रेम
सम भजन न दूसर आन ॥ यह विचार मुनि पुनि पुनि करत राम गुन गान ॥
४१ चौ॰ ॥ सोइ रहे सुफल आजु मम लोचन ॥ देखि बदन पंकज भवमोचन
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी ॥ कहि न जाइ सो दशा भवानी ॥ दिशि अरु
विदिशि पंथ नहिं सूझा ॥ को मैं चलेउ कहां नहिं बूझा ॥ कबहुंक फिरि पाछे
पुनि जाई ॥ कबहुंक नृत्य करै गुन गाई ॥ अविरल प्रेम भगति मुनि पाई ॥
प्रभु देखैं तरु ओट लुकाई ॥ अतिसय प्रीति देखि रघुवीरा ॥ प्रगटे हृदय हरण
भवभीरा ॥ मुनि मग माझ अचल होइ बैसा ॥ पुलक शरीर पनस फल जैसे
सा ॥ तब रघुनाथ निकट चलि आए ॥ देखि दशा निज जन मन भाए ॥४२॥ दो॰ ॥ रा
मसमा हित संत प्रिय सेवक दुःख दारिद्र दवन ॥ मुनि मन कहत प्रभु आइ उ
ठु उठु द्विज मम प्राणसम ॥४३॥ चौ॰ ॥ मुनिहि राम बहु भांति जगावा ॥ जाग
न ध्यानजनित सुख पावा ॥ भूप रूप तब राम दुरावा ॥ हृदय चतुर्भुज रूप
देखावा ॥ मुनि अकुलाइ उठा पुनि कैसें ॥ विकल हीन मणि फणिवर जैसें ॥
आगें देखि राम तन श्यामा ॥ सीता अनुज सहित सुखधामा ॥ परेउ लकुट इ

12

बेचरन कहि लागा। प्रेम मगन मुनिबर बडभागा। भुज बिशाल गहि लीए 13
उठाई। परम प्रीति राखे उर लाई। मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला। कनक
राम तरुहि जनु भेंट तमाला। राम बदन बिलोक मुनि ठाढा। मानहुं चित्र मांझ लि राम
॥७॥ खि काढा। ४४ दो। तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहिं बार। निज आश्र
म प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार। ४५ चौ। कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मो ॥७॥
री। उस्तुति करौं कवन बिधि तोरी। महिमा अमित मोरि मति थोरी। रबि स
नमुख खद्योत अंजोरी। श्याम तामरस दाम शरीरं। जटा मुकुट परिधन
मुनिचीरं। पाणि चाप शर कटि तूणीरं। नौमि निरंतर श्रीरघुबीरं। मोह
बिपिन घन दहन कृशानु। संत सरोरुह कानन भानु। निशिचर करि बरूथ मृ
गराजं। त्रातु सदा नो भव खग बाजं। अरुण नयन राजीव सुबेशं। सीता नय
न चकोर निशेशं। हर हृदि मानस राज मरालं। नौमि राम उर बाहु बिशालं
संशय सर्प ग्रसन उरगादं। समन सुकर्कस तर्क बिषादं। भव भंजन रंजन सु
र यूथं। त्रातु सदा नो कृपा बरूथं। निर्गुण सगुण बिषम सम रूपं। ज्ञान गि
रा गोतीतमनूपं। अमलमखिलमनवद्यमपारं। नौमि राम भंजन महि भारं॥

भक्तिकल्पपादपआरामं॥तर्जनक्रोधलोभमदकामं॥अतिनागरभवसा
गरसेतुं॥त्रातुसदादिनकरकुलकेतुं॥अतुलितभुजप्रतापबलधामं॥कलि
मलविपुलविभंजननामं॥धर्मवर्मनर्मदगुणग्रामं॥संततसंतनोतुम
मरामं॥यदपिविरजव्यापकअविनाशी॥सबकेहृदयनिरंतरवाशी॥त
दपिअनुजश्रीसहितखरारी॥वशतुमनसिममकाननचारी॥जेजानहिंतेजा
जानउस्वामी॥सगुणअगुणउरअंतरजामी॥जोकोशलपतिराजिवनयना
करौसोरामहृदयममअयना॥४६॥सो॰॥मायावशजगजीवर सहिंविवशासंत
तमगण॥तिन्हमिलिलागउंप्रियरामकरुणाकरसुंदरसुखद॥४७॥चौ॥असअ
भिमानजाइजनिभोरे॥मैंसेवकरघुपतिपतिमोरे॥रामभगतितजिचहकल्या
ना॥सोनरनरकधर्मसंगालसमाना॥सुनिमुनिवचनराममनभाए॥वहुरिह
रषिमुनिवरउरलाए॥परमप्रसन्नजानुमुनिमोही॥जोवरमागउंदेउंसो
तोही॥मुनिकहमैंवरकवहुंनजाचा॥समझिनपरैझूठकासांचा॥तुम्हहि
नीकलागैरघुराई॥सोमोहिदेउदाससुखदाई॥अविरलभगतिविरति
विज्ञाना॥हेउसकलगुणज्ञाननिधाना॥प्रभुजोदीन्हसोवरमैंपावा॥अव

सोदुरजमोहिसिजोभावा॥४८॥दो॥अनुजजानकीसहितप्रभुचापबानधरराम॥मम
हियगगनइंदुइवबसहुसदानिहकाम॥४९॥चौ॥एवमस्तुकरिरमानिवा
सा॥हरषिचलेकुंभजरिषिपासा॥पुनिप्रनामकरियुगकरजोरी॥सुनमुनि
मकछुविनतीमोरी॥बहुतदिवसगुरदरसनपाए॥भएउमोहिएहिंआश्र
मआए॥अबप्रभुसंगजाउंगुरपाहीं॥तुम्हकहंनाथनिहोरोनाहीं॥चलेजात
प्रभुतबपदपंकजा॥देखिहंजोविराधमदभंजा॥देखिकृपानिधिमुनिचतुरा
ई॥लीएसंगबिहसेदोउभाई॥पंथकहतनिजभगतिअनूपा॥मुनिआश्रम
पहुचेसुरभूपा॥आश्रमदेखिमनसुचिसुंदर॥सरितसरोवरहरषितम
धर॥बनचरजलचरजीवजहांते॥बैरनाकरहिंप्रीतिसबसितें॥प॰दो॰त
रुवरबहुविधिविहंगमयबोलतविविधप्रकार॥वसहिंसिद्धमुनितपक
रहिंमहिमागुनगनअपार॥५१॥चौ॥तुरतअगस्तिगुरहिंपहिंगएउ॥करिदंड
वतकहतअसभएउ॥नाथकोसलाधीसकुमारा॥आएमिलनजगतआधा
रा॥रामअनुजसमेतवैदेही॥निसदिनदेवजपतहहुजेही॥सुनतअगस
तितुरतउठिधाए॥प्रभुविलोकिलोचनजलछाए॥मुनिपदकमलपरे

देउमारी॥ रिषि अति प्रीति लिए उर लाई॥ सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी॥ आ
सन बर बैठारे आनी॥ पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा॥ मोहि सम भाग्यवंत न
हिं दूजा॥ जहं लगि रहे अपर मुनि बृंदा॥ हरषे सकल बिलोकि सुखकंदा॥ पर
दो॥ मुनि समूह महं बैठे सनमुख सब की ओर॥ सरद इंदु तन चितवत मान
हुं निकर चकोर॥ पर॥ चौ॥ पाइ सुथल जल हृदय थित मीना॥ पारथायाइ सुखी
जिमि दीना॥ प्रभु हि हेरि बिसमय भए हि भांति॥ चातक जिमि पियाए जल स्वाती॥
तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं॥ तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं॥ तुम्ह जानहु जे
हि कारन आयउं॥ ताते तात न कहि समुझायउ॥ अब सो मंत्र देहु प्रभु मो
ही॥ जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही॥ द्विज द्रोही न बचहिं मुनिराई॥ जिमि पंकज
बन हिम परितपाई॥ मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी॥ पूछेहु नाथ मोहि का
जानी॥ तुम्हरेइ भजन प्रभाउ अघारी॥ जानौं महिमा कछुक तुम्हारी॥ प४॥ दो॥ भृ
कुटी निरखत नाथ तब बरनि सदा पद कमल रत॥ जिन्ह डारे निज उदर महुं
बिबिध बिधाता सिंधु हर॥ पप॥ चौ॥ अति कराल सब पर जग जाना॥ सो तैं क
हेउ सुनि प्रभु भगवाना॥ ऊमरि तरु बिसाल तव माया॥ फल ब्रह्मांड अनेक नि

17

काया॥ जीव चराचर जंतु समाना॥ भीतर वसहिं न जानहिं आना॥ ते फल भक्ष
क कठिन कराला॥ तव भय डरत सदा सोइ काला॥ ते तुम्ह सकल लोकपति सांई॥ पू
राम छेहु मोहि मनुज की नांई॥ यह वर मागौं कृपानिकेता॥ वसहु हृदय श्री अनु राम
ज समेता॥ अविरल भगति विरति सतसंगा॥ चरण सरोरुह प्रीति अभंगा॥
॥९॥ जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता॥ अनुभवगम्य भजहिं जेहि संता॥ अस तव रूप ॥५॥
वखानौं जानौं॥ फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानौं॥ ५६॥ सो॥ जे प्रिय प्रिय पर
तव मान हरत तन्हहिं संतत विवश॥ तिन्ह कुं किमि हि मान जान सेवक कत
न्ह कौं प्राण प्रिय॥ ५७॥ चौ॥ संतत दासन्ह देहु वडाई॥ तातें मोहि पूछेहु र
घुराई॥ है प्रभु परम मनोहर ठांउ॥ पावन पंचवटी तेहि नाउ॥ गोदावरी न
दी तहं वहई॥ चारि जुग प्रसिद्ध सो अहही॥ दंडक वन पुनीत प्रभु करहू॥
उग्र श्राप मुनिवर कर हरिहू॥ वास करहु तहं रघुकुल राया॥ कीजै सक
ल मुनिन्ह पर दाया॥ चले राम मुनि आयसु पाई॥ तुरत हिं पंचवटी नि
यराई॥ छिबि व्यल ताडुम प्रभु मन माए॥ निरखि राम ते भए महाए॥ लक्षम
ण राम सीइ चरण निहारी॥ कानन अघ गा भाग्य सुख भारी॥ ५८॥ दो॥ गीध

राज सों भेट भइ बहु बिधि प्रीति बढाइ ॥ गोदावरी निकट प्रभु रहे परण ग्रह छाइ ॥५८॥ चौं ॥ जब तें राम कीन्ह तहं बासा ॥ सुखी भए मुनि बीती त्रासा ॥ गिरि बन नदी ताल छबि छाए ॥ दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाए ॥ खग मृग बृंद अनंदित रहहीं ॥ मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ॥ सो बन बरनि न सक अहिराजा ॥ जहां प्रगट रघुबीर बिराजा ॥ एक बार प्रभु सुख आसीना ॥ लछिमन बचन कहे छलहीना ॥ सुर नर मुनि सचराचर सांई ॥ मैं पूछौं निज प्रभु की नाई ॥ मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा ॥ सब तजि करौं चरन रज सेवा ॥ कहहु ज्ञान बिराग अरु माया ॥ कहहु सो भगति करहु जेहि दाया ॥ दो॰ ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहहु समुझाई ॥ जातें होइ चरन रति शोक मोह भ्रम जाइ ॥५९॥ चौ ॥ थोरेहि महुं सब कहौं बुझाई ॥ सुनहु तात मन मति चित लाई ॥ मैं अरु मोर तोर तैं माया ॥ जेहि बस कीन्हे जीव निकाया ॥ गो गोचर जहं लगि मन जाई ॥ सो सब माया जानेहु भाई ॥ तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ ॥ बिद्या अपर अबिद्या दोऊ ॥ एक दुष्ट अतिसय दुःख रूपा ॥

जाव श जीव परा भव कूपा ॥ एक रचै जग गुन वश जाकें ॥ प्रभु प्रेरित नहि
निज बल ताकें ॥ ज्ञान मान जहां एको नांही ॥ देषित ब्रह्म समान सब मांही
कहियत तात सो परम विरागी ॥ तृण सम सिद्धि तीनि गुण त्यागी ॥ दो० माया
ईश न आपु कहुं जान कहिय सो जीव ॥ बंध मोक्ष प्रद सर्व पर माया प्रे
रक शीव ॥ १५ ॥ चौ० ॥ धर्म तें बिरति योग तें ज्ञाना ॥ ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना ॥
जातें वेगि द्रवौं मैं भाई ॥ सो मम भगति भगत सुखदाई ॥ सो स्वतंत्र अव
लंबन आना ॥ तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥ भक्ति तात अनुपम सुष मूला ॥
मिलै जो संत होइ अनुकूला ॥ भगति कि साधन कहौं बषानी ॥ सुगम पं
थ मोहि पावहि प्रानी ॥ प्रथमहि विप्र चरण अति प्रीती ॥ निज निज धर्म नि
रत श्रुति रीती ॥ तेहि कर फल पुनि विषय विरागा ॥ तब मम धर्म उपज
अनुरागा ॥ श्रवणादिक नव भगति दृढाहीं ॥ मम लीला रति अति मन
माहीं ॥ संत चरन पंकज अति प्रेमा ॥ मन क्रम वचन भजन दृढ नेमा ॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा ॥ सब मोहि कहं जाने दृढ सेवा ॥ मम गुण गा

गामाहीं॥ देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं॥ ताते अब लगि रहिउँ कुआरी॥ मन माना
कछु तुम्हहिं निहारी॥ सीतहि चितइ कहि प्रभु बाता॥ अहै कुमार मोर लघु भ्राता
गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी॥ प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी॥ सुंदरि सुनु
मैं उन्ह कर दासा॥ पराधीन नहिं तोर सुपासा॥ प्रभु समरथ कोसलपुर रा
जा॥ जो कछु करहिं उन्हहि सब छाजा॥ १८॥ दो॥ केहरि सम मन फिरि करि बरिल
वा की बाज समान॥ प्रभु सेवक कह मित न रसी मान हु बचन प्रमान॥ १९॥ चौ॥
सेवक सुख चह मान भिखारी॥ ब्यसनी धन सुभ गति ब्यभिचारी॥ लोभी ज
स चह चार गुमानी॥ नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी॥ पुनि फिरि राम निकट
सो आई॥ प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई॥ लछिमन कहा तोहि सो बरई॥ जो
तृन तोरि लाज परिहरई॥ तब खिसिआनि राम पहिं गई॥ रूप भयंकर प्र
गटत भई॥ बिथुरे केश दशन बिकराला॥ भृकुटी कुटिल कान लगि गा
ला॥ सीतहि सभय देखि रघुराई॥ कहा अनुज सन सैन बुझाई॥ अनुज
राम मन की गति जानी॥ उठे रिसाइ तब मनहु भवानी॥ [illegible] दो॥ लछिमन अति लाघ

राम
१९
२
20
राम
१९

वतपुलकशरीरा॥ गदगदगिरानयनबहनीरा॥ कामआदिमदंभनजाकें॥
तातनिरंतरबशमैंताकें॥ ६४ दो॥ बचनकर्ममनमोरिगतिभजनकरैंनिःकाम
तिन्हकेहृदयकमलमहुंकरौंसदाबिश्राम॥ ६५ चौ॥ भगतियोगसुनिअति
सुखपावा॥ लछमनप्रभुचरणन्हिशिरनावा॥ नाथसनेउगतममसंदेहा
भएउज्ञानउपजेउनवनेहा॥ सुनतजबचनसुनिप्रभुमनभाए॥ हरषिरामनि
जहृदयलगाए॥ एहिबिधिगएउकछुकदिनबीती॥ कहतबिरागज्ञानगुण
नीती॥ सूपनखारावणकीबहिनी॥ दुष्टहृदयदारुणजसअहिनी॥ पंच
बटीसोगईएकबारा॥ देखिबिकलभईयुगलकुमारा॥ भ्रातापितापुत्रउ
रगारी॥ पुरुषमनोहरनिरखतनारी॥ होइबिकलसकमनहिंनरोकी॥ जिमि
रविमणीद्रवरविहिबिलोकी॥ ६६ दो॥ कपटमतिपापाचरकुटिलअतिचलीक
रणाउपहास॥ मनषगेशभावीप्रबलहोइचहतिशाचरनाश॥ ६७ चौ॥ रु
चिररूपधरिप्रभुपहिंजाई॥ बोलीबचनमधुरमुसकाई॥ तुम्हसमपुरु
षनमोसमनारी॥ यहिसंयोगबिधिरचाबिचारी॥ ममअनुरूपपुरुषज

बतबनाककाँबिनुकीन्ह॥ ताकेकररावनकहुंमनहुंचुनवतीदीन्ह॥७१॥चौ॥
नाककानबिनुभईबिकरारा॥ जनुस्रवसैलगेरुकैधारा॥ षणमघटादेषत
घनकेरी॥ तहंबाशवधनुमनहुंउएरी॥ खरदुषनपहिंगईबिलपाता॥
धिगधिगतवबलपौरुषभ्राता॥ तेहिंपूछासबकहेसिबुझाई॥ जातुधा
नसुनिसेनबनाई॥ चौदहसहस्रसुभटसंगलीन्हें॥ जिनसपनेंहुंरण
पीठनदीन्हें॥ धाएनिशिचरविकटवरूथा॥ जनुसपक्षकज्जलगिरिजूथा॥
नानाबाहननानाकारा॥ नानायुधधरघोरअपारा॥ सूपनखाआगेंकरिली
नीं॥ असुभरूपश्रुतिनासाहीनी॥७२॥दो॥ नैजनैजबलसबमिलिकहहिंए
कहिएकसनाइ॥ बाजननलागजउजउहरषनहदयसमाइ॥७३॥चौ॥ असगु
नअमितहोंहिंभयकारी॥ गनहिंनमृत्युविवशसबझारी॥ गर्जहिंतर्जहिं
गगनउडाहीं॥ देखिकटकभटअतिहरषाहीं॥ कोउकहजिअतधरहुद्वौभा
ई॥ धरिमारहुतियलेहुछोडाई॥ कोउकहमनिपयसत्यहमकहंहीं॥ कानन
फिरंहिवीरकोउगहहीं॥ एकैंकहहमहिकवीरहहु॥ षरकेआगेंजसजनिकह
हु॥ वहुविधिकहतवचनरणधीरा॥ आएसकलजहांरघुवीरा॥ प्रभुदेपी

23

नभमंडलरहा॥ रामबोलाइ अनुजसनकहा॥ लैजानकीहि जाउगीरीकंद
र॥ आवे निसीचरकटकभयंकर॥ रहेउसजगसुनि प्रभुकैबानी॥ चलेसहि
तस्री धरिसरधनुपानी॥ देखिरामरिपुदलचलिआवा॥ बिहसिकठिनकोदंड
चढावा॥१४॥ छं॰॥ कोदंडकठिनचढाइ सिरजटाजूटबांधतसोहक्यों॥ मरक
तसैलपरलरतदामिनिकोटिकोटिसोंजुगभुजंगज्यों॥ कटिकसिनिखंगबिसालभु
जगहिचापबिसिखसुधारिकैं॥ चितवतमनहुंमृगराजप्रभुगजराजघटा
निहारिकैं॥१५॥ सो॥ आइगएबगमेल धरहुधरहुधाएसुभट॥ यथाबिलो
किअकेलबालरबिहिघेरतदनुज॥१६॥ चौ॥ घेरेरहेनिशिचरसमदाशी॥
दंडकबगमगचलेपराशी॥ प्रभुबिलोकिशरसकहिंनडारी॥ थकितभ
एरजनीचरधारी॥ सचिवबोलिबोलेखरदुखन॥ यहकोउनृपबालक
नरभूषन॥ यद्यपिभगिनीकीन्हकुरूपा॥ बधलायकनहिंपुरुषअनूपा॥
नागअसुरसुरनरमुनिजेते॥ देखेजितेहतेहमकेते॥ हमभरिजनमसु
नहुसबभाई॥ देखीनहिंअसिसुंदरताई॥ देहुतुरतनिजनारिदुराई॥
जीअतभवनजाहुदोउभाई॥ मोरकहातुम्हताहिसुनावहुं॥ तासुबचन

राम
१२

राम
१२

नसकैमानदरसावज ॥७७॥ दो॰ ॥ भएकालवससठसबजानहिनहिरघुबीर
ममकपुंककैमेमतउरसनझगकडमतिधीर ॥७८॥ चौ॰ ॥ दुतन्हकहारामसन
जाई ॥ सुनतरामबोलेमुसकाई ॥ आजुभएउवडभागहमारा ॥ तोरेंप्रभुक
सकीन्हविचारा ॥ ॥ हमछत्रीमृगयावनकरहीं ॥ तुम्हसेखलमृ
गखोजतफिरहीं ॥ रिपुबलवंतदेखिनडरहीं ॥ एकवारकालझसनलरहीं
यद्यपिमनुजदनुजकुलघालक ॥ मुनिपालकखलसालकबालक ॥ जौं
नहोइबलगृहफिरिजाहू ॥ समरविमुखमैंहतौंनकाहू ॥ रनचढिकरियक
पटचतुराई ॥ रिपुपरकृपापरमकदराई ॥ दुतन्हजाइतुरतसबकहेउ ॥
सुनिखरदूषनउरअतिदहेउ ॥७९॥ छं॰ ॥ उरदहेउकहेउकिधरहुधाएविक
टरजनीचरा ॥ सरचापतोमरसक्तिसूलकृपानपरिघपरसुधरा ॥ प्रभुकी
न्हधनुषटंकोरप्रथमकठोरघोरभयावहा ॥ भएवधिरव्याकुलजातुधान
नज्ञानतेहिअवसररहा ॥८०॥ दो॰ ॥ सावधानहोइधाइजानिसबलआराति ॥
लागेवरषनरामपरअस्त्रसस्त्रबहुभांति ॥८१॥ तिन्हकेआयुधतीलसम

मरकट काटे बीर रघुबीर॥ तानि शरासन श्रवण लगि पुनि छाडेउ निज तीर॥ ६२॥
छंद॥ तब चले बान कराल॥ फुंकरत जनु बहु ब्याल॥ कोपेउ समर श्रीरा
म॥ चले बिशिख निशित निःकाम॥ अवलोकि खरतर तीर॥ मुरि चले निशि
चर बीर॥ एक एक को न संभार॥ करै तात भ्रात पुकार॥ कोउ कहै खर रूकी
न्ह यो युद्ध इन्ह समन लीन्ह॥ जांके बान अति बिकराल॥ गएसे भाइ मानह्यु ब्या
ल॥ भए क्रोधी तीनउ भाइ॥ जो भाजि रण ते जाइ॥ तेहि बधब हम निज पानी॥
फिरे मरण मन ऊं ठानि॥ ६३॥ दो० उमा एक निज प्रभु हि बस पुनि उबके बउ
भाग॥ तरणा हंहि प्रभु शर लगि बेनायो गज पजाग॥ ६४॥ चौ०॥ रघुप
अनेक प्रकारा सनमुख ते करहि प्रहारा॥ देखु परम कोपेउ जानि॥ प्रभु
धनु शर संधानि॥ छाडेउ बिपुल नाराच॥ लगे कटन बि
कट पिशाच॥ उर शीश भुज कर चरण॥ जहं तहं लगे महि परण॥ चि
रत लागत बान॥ धर परत को घर समान॥ भट कटत तन शत खंड॥
पुनि उठत करि तप खंड॥ भट उडत बहु भज जगमें उ॥ बिनु मौलि धावत रुंड॥
र

राम
१३

राम
१३

25

26

षगकंककाकसृगाल ॥ कटकटाहिंकठिनकराल ॥ ८५ ॥ छं० ॥ कटकटाहिंजंबुक
भूतप्रेतपिशाचखर्परसंचहीं ॥ बेतालबीरकपालतालबजाइयोगिनिनंच
हीं ॥ रघुबीरबानप्रचंडखंडहिंभटन्हकेउरभुजशिरा ॥ जहंतहंपरहिंउठिलर
हिंधरुधरुकरहिंभयकरगिरा ॥ अंतरावलीगहिउडतगीधपिशाचकरगहिधा
वहीं ॥ संग्रामपुरबासीमनहुंबहुबालगुडीउडावहीं ॥ मारेपछारेउरबिदा
रेबिपुलभटकहंरतपरे ॥ अवलोकिनिजदलबिकलभटतिशिरादिखरदूष
नफिरे ॥ शरशक्तितोमरपरसुसूलकृपाणएकहिंबारहीं ॥ करिकोपश्रीर
घुबीरपरअगनितनिशाचरडारहीं ॥ प्रभुनिमिषमहुंरिपुशरनिवारिप
चारिडारेशायका ॥ दशदशविशिषउरमांझमारेसकलनिशिचरनायका ॥ म
हिपरतउठिभटभिरतमरतनकरतमायाअतिघनी ॥ सुरडरतचौदहसहस
प्रेतविलोकिएककौशलधनी ॥ सुरसकलदेषिसभीतमायानाथअतिकौतु
ककरयो ॥ देषहिंपरसपररामकरिसंग्रामरिपुदललरिमरयो ॥ ८६ ॥ दो० ॥ राम
रामकहितनतजहिंपावहिंपदनिर्बान ॥ करिउपायरिपुमारेछनमहंकृपानिधा
न ॥ हरषितबरषहिंसुमनसुरबाजहिंगगननिशान ॥ अस्तुतिकरिकरि

सबचलेसोभितविविधविवान॥९३॥चौ॥जबरघुनाथसमररिपुजीते॥सुर
नरमुनिसबकरभयभीते॥तबलछमनसीतहिलेआए॥प्रभुपदपरतहर्षि
उरलाए॥सीताचितवश्याममृदुगाता॥परमप्रेमलोचननअघाता॥पंच
वटीवसिश्रीरघुनाइक॥करतचरितसुरमुनिसुखदायक॥धुआंदेखि
खरदुषनकेरा॥जाइसूपनखारावणप्रेरा॥बोलीबचनक्रोधकरिभारी॥
देसकोसकैसुरतिबिसारी॥करसिपाणसोवसिदिनराती॥सुधिनहितव
सिरपरआराती॥राजनीतिबिनुधनबिनुधरमा॥हरिहिसमर्पेबिनुसत
करमा॥विद्याबिनुबिबेकउपजाइ॥श्रमफलपढेकिएअरुपाइ॥संगत
जतीकुमंत्रतेराजा॥मानतेज्ञानपानतेंलाजा॥प्रीतिप्रणयबिनुमदतेंगु
णी॥नासहिबेगिनीतिअसिसुनी॥९३॥सो॥रिपुरुजपावकपापप्रभुअहि
गनियनछोटकरि॥असकहिविविधप्रलापकरि॥लागीरोदनकरण॥
९४॥दो॥सभामांझपरिब्याकुलबहुप्रकारकहरोइ॥तोहिजिअतदसकंध
रमोरिकिअसीगतिहोइ॥९५॥चौ॥सुनतसभासदउठेअकुलाई॥समुझा
ईकरगहिवेसाई॥कहलंकेसकहसिनिजवाता॥केइतवनासाका

न निपाता॥ अवधनृपति दशरथ के जाए॥ पुरुषसिंघ बन खेलन आए॥ समुझि
परी मोहि उन्ह कै करनी॥ रहित निशाचर करिहहि धरनी॥ जिन्ह कर भुजबल
पाइ दशानन॥ अभय भए बिचरत मुनि कानन॥ देखत बालक काल समाना॥
परम धीर धन्वी गुन नाना॥ अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता॥ खल बध रत सुर
मुनि सुखदाता॥ सोभा धाम राम अस नामा॥ तिन्ह के संग नारि एक स्यामा॥
सो ॥२६॥ जनि तिन्ह कुमारि पियारि यह तर योगन जानहि कोउ॥ मैं मन दीख बिचा
रि जग नर है तेहि सम न केउ॥२७॥ चौ॥ गज कं जाइ देखत मृग जब ही॥ हेरत फुरउ बि
कलता सुख बसत बही॥ जीवन मृत्ति लोक बसता कें॥ दशमुख सकल मंदरी सम कि
जाकें॥ रूपरासि विधि नारि सवारी॥ रति शत कोटि तासु बलिहारी॥ तासु अनु
ज काटे श्रुति नासा॥ सुनि तव भगिनि करहि परिहासा॥ बिन अपराध धर्म सत
तह मारी॥ अपराधी के मैव चहि सरारी॥ खर दूषन सुनि लगे पुकारा॥ छन
महं सकल कटक उन्ह मारा॥ खर दूषन त्रिशिरा कर घाता॥ सुनि दशशीश ज
रे सब गाता॥ भएउ शोच मन नन हि विश्रामा॥ बीतहिं पल मानहुं शत जामा॥
२८॥ दो॥ सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भांति॥ गएउ भवन अति

सोचबसमैंदपथैंननिपाति॥९९॥चौ॰॥सुरनरमुनिउरगनागषगमांही॥सो

राम रेगमनुसुरकऊंकोउनांही॥षरदूषनमोहिसमबलवंता॥तिन्हहिकोमारै

बिनुभगवंता॥सुरनरंजननमंजननमहिमाया॥जौंभगवंतलीन्हअवतारा॥ राम

॥१५॥ तौमैंजाइबयरहठिकरऊं॥प्रभुसरप्रानतजैंभवतरऊं॥होइहिभजनन

तामसदेहा॥मनक्रमबचनमंत्रदृढएहा॥जौंनररूपभूपसुतकोऊ॥ ॥१५॥

हरिहौंनारिजीतिरनदोऊ॥चलाअकेलयाननचढितहवां॥बसमारीचसिं

धुतटजहवां॥रथमनरूपजौंरैंषरचारी॥बेगबंतइमिजिमिउरगारी॥

१००॥छं०॥उरगारिसमसमअतिबेगबरनातजाइनहिमहिमाकही॥श्वेतश

ऋशोभितस्यामघनजनुचवररखेतबिराजहीं॥एहिभांतिनाघतमेखलाइ

सरितअनेकबापीसोहहीं॥बनबागउपबनबाटिकासुचिनगरमन

मनिमोहहीं॥१०१॥दो॥बहुतडागसुचिबिहंगमनगबोलतबिबिधप्रका

र॥एहिबिधिजातएउंसिंधुतटपातजेजनबिस्तार॥१०२॥चौ॥सुंदरिजीवबि

बिधबिधिभांती॥करहिंकोलाहलदिनअरुराती॥कूदहिंतेगर्जहिंबिध

ननाइ॥मनहुबलीबलवरातीनजाई॥कनककेवालुसुंदरसबहाशी॥

बैठसिसकलजंतुतहँजाही॥तेहिपरदिव्यलताद्रुमलागे॥देखिदेवतपमुनिमन
अनुरागे॥गुहाविविधविधिरहंहिबनाई॥बरनतसारदमतिसकुचाई॥चा
हियजहंतहंऋषिन्हकरबासा॥तहंनिसाचरकरहिंनिवासा॥दसमुखदेखिसक
लसकुचाने॥जेजडजीवसजीवपराने॥इहांरामजसिजुगुतिबनाई॥सुनहु
उमासोकथासुहाई॥१३॥दो॥लछिमनगएबनहिंजबलेनमूलफलकंद॥ज
नकसुतासनबोलेबिहसिकृपासुखबृंद॥१४॥चौ॥सुनहुप्रियाब्रतरुचिरसु
सीला॥मैंकछुकरबललितनरलीला॥तुम्हपावकमहुंकरहुनिवासा॥जब
लगिकरौंनिसाचरनासा॥जबहिंरामसबकहाबखानी॥प्रभुपदधरिहियअ
नलसमानी॥निजप्रतिबिंबराखितहंसीता॥तैसैसीलरूपसुबिनीता॥लछि
मनहूंयहमरमनजाना॥जोकछुचरितरचेउभगवाना॥दसमुखगएउजहां
मारीचा॥नाइमाथस्वारथरतनीचा॥नवनिनीचकैअतिदुखदाई॥जिमि
अकालकेकुसुमभवानी॥१५॥दो॥करिपूजामारीचतबसादरपूछीबात॥क
वनहेतुमनब्यग्रअतिएकसरआएहुतात॥१६॥चौ॥दसमुखसकलकथा
तेहिआगें॥सहितअभिमानअभागें॥होहुकपटमृगतुम्हछलकारी॥जेहि
कही

विधि हरि आनौं नृप नारी॥ तेहिं पुनि कहा सुनहु दशशीसा॥ ते नर रूप चरा
चर ईशा॥ तासो तात वयर नहिं कीजे॥ मारे मरिय जियाए जीजे॥ मुनि मख रा
खन गए उ कुमारा॥ विनु फर शर रघुपति मोहि मारा॥ शत योजन आयउं
छन माहीं॥ तिन्ह सन वयर किए भल नाहीं॥ भइ मम कीट भृंग की नाईं॥ जहं
तहं मै देखौं दोउ भाई॥ जौं नर तात तदपि अति सूरा॥ तिन्हहि विरोधि न आइ
हि पूरा॥ १०७॥ दो॥ जेहिं ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हर कोदंड॥ खर दूषन ति
शिरा हतेउ मनुज कि अस वरिवंड॥ १०८॥ चौ॥ राम अस मन तासम नत दशकं
धर॥ रहत प्राण नहिं मम उर अंतर॥ जाउं भवन कुल कुशल विचारी॥ सुनत
जरा दीन्हेसि बहु गारी॥ गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा॥ कहु जग मोहि स
मान को योधा॥ तब मारीच हृदय अनुमाना॥ नवहिं विरोधें नहिं कल्या
ना॥ शस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी॥ वैद वंदि कवि भानस गुनी॥ उभय भांति
देखा निज मरना॥ तब ताकेसि रघुनायक सरना॥ उतरु देत मोहि वधब
अभागें॥ कस न मरौं रघुपति शर लागें॥ अस जीय जानि दशानन संगा॥
चला राम पद प्रेम अभंगा॥ मन अति हरष जनाव न तेही॥ आजु देखि

राम ९६ राम ५६ 31

हे परम सनेही॥११९॥ छं०॥ निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पा
इहौं॥ श्री सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं॥ निर्बान दायक क्रो
ध जा कर भगति अबसहि बस करी॥ निज पानि सर संधानि सो मोहि बधिहि
सुखसागर हरी॥१२०॥ दो॥ मम पाछें धर धावत धरें सरासन बान॥ फिरि फि
रि प्रभुहि बिलोकिहौं धन्य न मो सम आन॥१२१॥ चौ॥ सीता लछिमन सहित
रघुराई॥ जेहि बन बस सुनु निज सब दाई॥ तेहि बन निकट दसानन गए
ऊ॥ तब मारीच कपट मृग भएऊ॥ अति बिचित्र कछु बरनि न जाई॥ कनक
देह मनि रचित बनाई॥ सीता परम रुचिर मृग देखा॥ अंग अंग सुमनोहर
बेषा॥ सुनहु देव रघुबीर कृपाला॥ एहि मृग कर अति सुंदर छाला॥ सत्य
संध प्रभु बधि करि एही॥ आनहु चर्म कहति बैदेही॥ तब रघुपति जानत सब का
रन॥ उठे हरषि सुर काज सवारन॥ मृग बिलोकि कटि परिकर बांधा॥ कर
सर चाप रुचिर सर सांधा॥ प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई॥ फिरत बिपिन नि
सिचर बहु भाई॥ सीता केरि करेहु रखवारी॥ बुधि बिबेक बल समय बिचा
री॥१२२॥ दो॥ मसु सखहि चले ततहां प्रभु भुज जहां कपट मृग नीच॥ देव हरष बर्षि सुमन

33

बिबसउठिमिचातकवरबाबीच॥१२३॥चौ॥प्रभुहिबिलोकिचलामृगभाजी

राम धाएरामसरासनसाजी॥निगमनेतिशिवध्याननपावा॥मायामृग

पाछेंसोइधावा॥कबहुनिकटपुनिदूरिपराई॥कबहुकप्रगटतकब

१२ हुंदुराई॥प्रगटतदुरतकरतछलभूरी॥एहिबिधिप्रभुहिंगएउलैदूरी॥ राम

तबतकिरामकठिनशरमारा॥धरनिपरेउकरिघोरपुकारा॥लछम १२

णकरप्रथमहिलैनामा॥पाछेसुमिरेसिमनमहंरामा॥प्राणतजतप्रगटे

सिनिजदेही॥सुमिरेसिरामसमेतसनेही॥अंतरप्रेमतासुपहिचाना॥मु

निदुर्लभगतिदीन्हसुजाना॥१२४॥दो॥बिपुलसुमनसुरबरषहिंगावहिं

प्रभुगुनगाथ॥निजपददीन्हअसुरकहंदीनबंधुरघुनाथ॥१२५॥चौ॥

खलबधितुरतफिरेरघुबीरा॥सोहचापकरकटितूनीरा॥आरतगिरासु

निजबसीता॥कहलछिमनसनपरमसभीता॥जाहुबेगिसंकटअतिभ्रा

ता॥लछमनबिहसिकहासुनुमाता॥भृकुटिबिलाससृष्टिलयहोई॥स

पनेउंसंकटपरैकिसोई॥सौंपिगएमोहिरघुबरथाती॥जौंतजिजाउं

तोछेननहिंकाती॥यहकहिजेयजानिसुनेयममममाता॥सकतककहबककबहि

मैवाता मरमबचनतबसीताबोली हरिप्रेरितलछमणमतिडोली बहु
दिशिरेषषचाइगतसिशा वारहिंवारनाइपदशीशा वनदिशिदेवसौपि
सबकाहू चलेतहांरावणशशिराहू चितवछिलषणसीइफिरैवैसे तज
तबधनिडीमातुहिजैसे ११६ दो एकउरडरतरामकीदुसरैसीयकेलि
लषणतेजतनहतभएजनडाठेदबवेलि ११७ चौ सूनभवनदशकंध
रदेषा आवानिकटजतीकेवेषा जाकेडरसुरअसुरडेराही नीदनरैनदि
नअन्ननषाही सोदशशीशस्वानकीनांई इतउतचितइचलाभडिहाई
इमिकुपंथपगदेतषगेशा रहतनतेजतनबुधिलवलेसा करिकनेक
धिकलचतुराई मागेउभीषदशाननजाई मतियजानिसीइकंदमूलफ
ल देनलगीतेहिंवड्वजरिफल कहदशमुषसहसनुमंदरवानी कंधीमी
बनलेउंसयानी विधिगतिवामकालकठिनाई देषिलाछिसीयबाहरआ
ई ११८ दो विश्वभरणीगमघदलदलनिकरणीमकलत्रसरकाज आनानहि
तेहिसमयतहंदशशीशशकपटकेसाज ११९ चौ नानाविधिकहिकथासु
हाई राजनीतिभयप्रीतिदेषाई कहेसीतासुनजतीगोसाई बोलेसिबच

35

राम

नदुहकीगोरी तबरावरा निजरूपदेखावा भएसभीतसबनामसनावा
कहसीताधरिधीरजगाढा आइगएउप्रभुखलरहुठाढा जिमिहरिवधुहि
छुद्रशशचाहा भएसिकालवसनिशिचरनाहा वाइसकरचहखगपति
ममता सिंधुसमानसेइकिमिसरिता बरीकीहोइमारपेनसमाना जोहि
भवननिजमनजमजाना सुनतवचनदशशीशरिशाना मनमहचरणवं
दिसुखमाना १२० दो क्रोधवंततबरावरण लीन्हेसिरथबैठाइ चल्यागगन
पथमातुरमयरथहांकिनजाइ १२१ चौ हाहाजगएकबीररघुराया केहि
अपराधविसारेउदाया आरतहरणशरणसुखदायक हारघुकुलसरोज
दिननायक हालक्ष्मणतुम्हरनहिदोशा सोफलपाएउकीन्हेउरोसा वैवे
हमनजोकछुरहेउ सोविधिमाजमोहिदुःखदएउ पंचवटीकेखगमृग
जाती दुःखीभएजलचरवहुभांती विविधविलापकरतिवेदेही भरीकृपा
प्रभुदुरिसनेही विपतिमोरिकोप्रभुहिसनावा पुरोडासचहरासभखावा
सीताकेविलापसुनिभारी भएचराचरजीवदुःखारी १२२ दो बहुविधिक
रतविलापनभलिगेजातदशशीष उरतनखलवरपायमनमलजौदीन्हेसि

राम

१८

जईश ॥ १२३ ॥ चौ गीधराज सुनि आरत बानी रघुकुलतिलक नारि पहिचानी अ
धम निशाचर लीन्हे जाई जिमि मलेछ बस कपिला गाई अहह पथ मत तन मम
बल नाहि तदपि जाइ देखौं बल ताहि सीते पुत्री करसि जन त्रासा करिहौं जातुधा
न कुल नाशा धावा क्रोधवंत खग कैसें छूटै पवि पर्वत कहुँ जैसें रे रे दुष्ट ठाढ कि
न होहि निर्भय चल्लेसि न जानेसि मोहि आवत देखि कृतांत समाना फिरि दशकं
धर कर अनुमाना की मैनाक की खगपति होई मम बल जान सहित पति सो
ई जाना जरठ जटायु एहा मम कर तीरथ छाडिहि देहा ॥ १२४ ॥ दो मम भुज ब
ल नहि जानत ताबत तप सनु सहाय समर चढै तौ एहि हतौं जियत न सकिहि प
लजाय ॥ १२५ ॥ चौ सुनत गीध क्रोधातुर धावा कह सुनु रावण मोर शीखावा त
जि जानकी कुशल गृह जाहू नाहि त अस होइहि बहुबाहू राम रोष पावक अति घो
रा होइहि सकल सलभ कुल तोरा उतर न देत दशानन योधा तबहि गीध धावा
कर क्रोधा धरि कच विरथ कीन्ह महि गीरा सीतहि राखि गीध पुनि फीरा
दशमुख उठि करत शर संधाना गीध मार इकाटे उघ नबाना चोचन्ह मारि विदा
रेसि देही दंड एक भए मुरछा तेही ॥ १२६ ॥ सो जेहि रावण निज बल पाइ एम

नेगग्रासिक्रसरेषा तेहिआवणमनममबचकरमतिधीरबीररागीधेशा ११७ चौ 37

राम मातमअंएपुनिउठिसोधावा मारेगीध्रमनमुखनहिआवा केन्हेसिवज्रजब

पुक्षखगेशा घाकितमएउ — तबजरठरमिठ्रेशा तबसक्रोधनिशीचर राम

१९ खिसिआना काटेसीपरमकरालकृपाणा काटेसिपंखपराखगधरणी सु

मिररामकरिअद्भुतकरणी मनमउंगीधपरमसुखमाना रामकजमम १९

त्यागेउप्राणा सीतहिजानचढाइबहोरी चलाउतायलतासनचोरी करतबि

लापजातिनभसीता व्याधविवसजिमिमृगीसभीता गीरिपरबैठेकपिनिहि

हारी कहिहरिनामदीन्हपटडारी एहिबिधिसीतहिसोलैगएऊ बनअशो

कमहराखतमएऊ ११८ दो हारिपरावलवउविविधिभयअरुप्रीतिदेषाइ

तबअशोकपादपतरराषेसिजतनकराइ ११९ चौ उहांविधातामनजम

रमाना कुरवपतिबोलिमंत्रगसठाना तातजतनकतनयापरजाइ करिधि

नयबजिमिपितुहीचरनाइ असकहिविधिसुंदरहविमानी सौंपिवउरी

बोलेमडुवानी एहिमहत्सकृतकुधानप्यासा बरबसमहकबयहसंघायना

षा सोप्रसादलैगाइमपारी चलेउहृदयसमपेरततरघुराशी कछुवाशाव

मायानिजमोरी रसकरहेगएसबमोरी तदपिउरतसीतापंहिआएउ कपि
भ्रमालागमनिजनामसुनाएउ नैश्रीजानेमकरेरामसुजाना पितुजनकदशरथ
सममाना कशैयपितोछैड्रिकरिशोका सवमवायगएउनिजलोका १३० दो
जेहिविधिकपटकुरंगसंगधाएचलेश्रीराम सोछविसीताराखिउररटतिर
हतिहरिनाम १३१ चौ रघुपतिअनुजहिआवतदेखी बाहिजचिंताकीन्हविशे
षी जनकसुतापरिहरेहुअकेली आएउतातबचनममपेली निशिचरनि
करफिरहिंबनमाहीं ममसीताआश्रममहनाहीं अनुहतातभलकीन्हहु
नाहीं सीयविनाममजीवननाहीं राखितेंकविभिविपतीवरिभारी छाड़ेहु
सीतहिकानीनगाई गहिपदकमलअनुजकरजोरी कहेउनाथकछुमोरि
नखोरी अनुजसमेतगएउप्रभुतहां गोदावरीतटआश्रमजहां आश्रमदे
खीजानकीहीना भएविकलजसप्राकृतदीना १३२ दो काननरहेउतजाग
रिवचककचइसियराम रावणानाशीविछुरनभयउसुखवीतेचारिउजा
म १३३ चौ परदुःखहरणप्रभोकदुःखताहीं भाविषादतिनकेमनमाहीं
हागुणखानीजानकीसीता रूपशीलव्रतनेमपुनीता लछिमनसमुझा

एवहुभांती रुषतचलेलतातरुपाती हेखगमृगहेमधुकरश्रेणी तुम्ह
देषीसीतामृगनयनी षंजनसुककपोतमृगमीना मधुपनिकरकोकिला
प्रवीना कुंदकलीदाडिमदामिनी शरदकमलशशिअहिभामिनी वरुण
पासमनोजधनुहंसा गजकेहरिनिजसुनतप्रसंसा श्रीफलकनककदलि
हरषांहीं नेकुनसंकसकुचमनमांहीं सुनुजानकीतोहिबिनुआजू हरषे
सकलपाइजनुराजू किमिसहिजातअनषतोहिपांही प्रियावेगिप्रगटसि
कसनाहीं १३४ दो॰ फणिमणिसनदीनजिमित्यागेसीतलवारि तिमिव्या
कुलभएलखणतहंरघुवरदशानिहारि १३५ चौ॰ धरिउरधीरवुझावहिं
रामहि तजहिनशोकसाधुकसमवधामहिं एहिविधिषोजतविलपतस्वामी
मनहुंमहाविरहीअतिकामी पूरणकामरामसुखराशी मनुजचरित
करअजअविनाशी सरवरगमितनदीगिरिषोहा वनवीथिलखणराम
तहंजोहा शोचहृदयकछुकहिनहिआवा टूटधनुषशरआगेंपावा क
ंकणकश्रोणितदेषियकैसें सावनजलभाटवरजैसे कहतरामलछिम
नसिवकाही कोजंकीन्हयुद्धएहिठाहीं आगेंपरागीधपतिदेषा सुमिरत

रामनामजिन्हरेषा १३६ दो० करसरोजसिरपरसेउकृपासिंधुरघुवीर निरषि
राम छविधाम मुषविगतभइसबपीर १३७ चौ० तवकहगीधवचनधरिधी
रा सुनहुराम भंजनभवभीरा नाथदशाननयहगतिकीन्ही तेहिषलजनक
सुताहरिलीन्ही लैदछिनदिसिगएउगोसांई विलपतिअतिकुररीकीनांई
दरसलागिप्रभुराषेउंप्राना चलनचहततवकृपानिधाना रामकहत
नराषहुताता मुषमुसकाइकहीतेंहिवाता जाकरनाममरतमुषआवै अ
धमौमुकुतिहोइश्रुतिगावै सोममलोचनगोचरआगें राषौंदेहनाथकेहिषा
गें जलभरिनयनकहहिरघुराई तातकर्मनिजतेंगतिपाई परहितवसजि
न्हकेमनमाही तिन्हकहजगदुर्लभकछुनाहीं तनतजितातजाहुममधामा दे
उकाहतुम्हपूरनकामा १३८ दो० सीताहरनतातजनिकहहुपितासनजाइ
जौमैरामतौकुलसहितकहिहिदशाननआइ १३९ गीध्रदेहतजिधरिहरिरू
पा भूषनबहुपटपीतअनूपा श्यामगातविशालभुजचारी अस्तुतिक
रहिंनयनभरिवारी १४० छं० जयरामरूपअनूपनिर्गुनसगुनगुनप्रे
रकसही दससीसबाहुप्रचंडखंडनचंडसरमंडनमही पाथोदगातसरो

४०

जमुखराजीवआयतलोचनं नितनौमिरामकृपालबाहुविशालभवभ
यमोचनं बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं गोविंदगोपरद्वंद्व
हरविज्ञानघनधरणीधरं जेराममंत्रजपंतसंतअनंतजनमनरंजनं
नितिनौमिरामअकामप्रियकामादिखलदलगंजनं जेहिश्रुतिनिरंजनब्र
ह्मव्यापकविरजअजकहिगावहीं करिध्यानज्ञानविरागजोगअनेकमु
निजेहिपावहीं सोप्रगटकरुणाकंदशोभावृंदअगजगमोहही मम
हृदयपंकजभृंगअंगअनंगबहुछविसोहही जोअगमसुगमसुभाव
निर्मलअसमसमसीतलसदा पश्यंतियोयोगीजतनकरिकरतमनगोव
ससदा सोरामरमानिवाससंततदासवसत्रिभुवनधनी ममउरवसउ
सोसमनसंसृतिजासुकीरतिपावनी १४३ दो अविरलभक्तिमागिवरगी
धगएउहरिधाम तेहिकीक्रियायथोचितनिजकरकीन्हीराम १४४ चौ कोम
लचितअतिदीनदयाला कारणविनुरघुनाथकृपाला गीधअधमखगआ
मिषभोगी गतिदीन्हीजोजाचतयोगी सुनहुउमातेलोगअभागी हरितजि
होहिंविषयअनुरागी पुनिसीतहिखोजतदोउभाई चलेविलोकतवनबहु

तारी संकुललताविटपघनकानन बहुखगमृगगजपंचानन आवतपंथ
कवंधनिपाता तेइसबकहीस्रापकैबाता दुर्वासामोहिदीन्हेंस्रापा प्रभुपद
देखिमीटासोपापा सनुगंधर्वकहेंमैंतोंही मोहिनसोहाइब्रह्मकुलद्रोही १८५
दो मनबचक्रमनकपटतजिजोकरभूसुरसेव मोहिसमेतविरंचिशिवबस
ताकेसबदेव १८६ चौ स्रापततारुतपुरुषकहंता विप्रपूज्यअसगावहिंसं
ता पूजियविप्रशीलगुणहीना सूद्रनगुणगणज्ञानप्रवीना कहिनिजधर्म
ताहिसमुझावा निजपदप्रीतिदेखिमनभावा रघुपतिचरणसरोजशिरना
ई गएउगगनआपनिगतिपाई ताहिदेइगतिरामउदारा सवरीकेआ
श्रमपगुधारा सवरीदेखिरामग्रहआए मुनिकेबचनसमुझिजीयभाए
सरसिजलोचनवाहुविशाला जटामुकटशिरउरबनमाला श्यामगोर
सुंदरदोउभाई सवरीपरीचरणलपटाई प्रेममगनमुखबचननआ
वा पुनिपुनिपदसरोजशिरनावा सादरजललैचरणपखारे पुनिसुंदर
आसनबैठारे १८७ दो कंदमूलफलसुरसअतिदिएरामकहिआनि प्रेम
सहितप्रभुखाएवारहिंवारबखानि १८८ चौ पानिजोरिआगेंभइठाढी प्रभु

43

त्ति विलोकि प्रीति अति बाढी केहि विधि उस्तुति करौं तुम्हारी अधम जाति मैं ज

राम डमति भारी अधम तें अधम अधम अति नारी तिन्ह मह मैं मंदअघारी क

ह रघुपति सुनु भामिनि बाता मानौं एक भक्ति कर नाता जाति पांति कुल धर्म राम

२२ बडाई धन बल परिजन गुन चतुराई भक्तिहीन नर सोहै कैसा बिनु जल

वारिद देखिय जैसा नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं सावधान सुनु धरु मन मा २२

हीं प्रथम भक्ति संतन्ह कर संगा दूसरि रति मम कथा प्रसंगा १४९ दो० गु

रु पद पंकज सेवा तीसरी भक्ति अमान चौथी भक्ति मम गुण गण करै निरं

तर गान १५० चौ० मंत्र जाप मम दृढ बिश्वासा पंचम भक्ति सु वेद प्रकाशा

म छठ दम शील विरति बहु कर्मा निरत निरंतर सज्जन धर्मा सातम सम

मोहि मय जग देखा मोतें संत अधिक करि लेखा आठम यथा लाभ संतो

षा सपनेहु नहिं देखै परदोषा नवम सरल सब सन छलहीना मम

भरोस हिय हरष न दीना नवमहु एकौ जिन्ह के होई नारि पुरुष सचरा

चर कोई अतिसय भामिनि सो प्रिय मोरें सकल प्रकार भक्ति दृढ तोरें जो

गी वृंद दुर्लभ गति जोई तो कहु आजु सुलभ भइ सोई मम दरसन फल

परमअनूपा जीवपावनिजसहजसरूपा १५१ दो सबप्रकारतबभागबड़ ५५
ममचरणाअनुरागतबमहिमाजेहितेउरबसहितिलासुपरमजगभाग १५२
चौ बचनसुनतसबरीहरषानी मातिअनुरागगेहपदपानी सुनिप्रियब
चनहरषकंपाही पुनिबोलेप्रभुगिरासुहाही जनकसुताकीसुधिभामिनि
जानहिंकहुंकरिबरगामनि पंपासरहिजाहुरघुराही मनिवरविपुलरहे
तहंछाही अपिमतंगमहिमागुणभारी जेहिबचराचररहंहिसकचारी वेरन
करकाहुसनकोही जासनुवयरप्रीतिकरसोही पीनवरसालवनकाननफूले
खगमृगजीवजंतुअनुकूले करउनालमबकरगहजाही तहलेइहिसु
ग्रीवामिताही सोसबकहिहिदेवरघुवीरा जानतहुंपूछहुमतिधीरा वारवार
प्रभुपदशीरनाही प्रेमसहितसबकथासुनाही १५३ छं० कहिकथासकल
विलोकिहरिमुखहृदयेंपदपंकजधरे तजियोगपावकदेहहरिपदलीनम
इजहंनहिंफिरे नरविविधकर्मअधर्मवहुमतशोकप्रदसबत्यागहु वि
स्वासकरिकहदासतुलसीरामपदअनुरागहु १५४ दो जातिहीनअघज
न्ममहिमाक्तिकीन्हअसीनारि महामंदमनसुखचहहिऐसेप्रभुहिविसारि॥
॥१५५॥

चौ।। चले राम त्यागे उ बन सोऊ अतुलित बल नर केहरि दोऊ

राम बिरही इव प्रभु करत बिषादा कहित कथा अनेक संबादा लछिमन दे

षु बिपिन कै सोभा देषत केहि कर मन नहि छोभा नारि सहित सब राम

षग मृग बृंदा मानहुं मोर करत हहिं निंदा हमहि देषि मृग निकर २२

२२ पराहीं मृगीं कहहिं तुम्ह कह भइ नाही तुम्ह आनंद करहु मृग जा

ए कंचन मृग ए षोजन आए संग लाइ करिणी करि लेहीं मानहुं मोहि

सिषावन देहीं शास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देषिय भूप सुसेवित बस नहि ले

षिय राषिय नारि जदपि उर माहीं युवती शास्त्र नृपति बस नाहीं देषहु

तात बसंत सुहावा प्रिया हीन मोहि भय उपजावा १५६ दो बिरह बिकल ब

लहीन मोहि जाने सि निपट अकेल सहित बिपिन मधुकर षग मदन

कीन्ह बगमेल १५७ देषि गए उ भ्राता सहित तासु दूत सुनि बात डेरा की

न्हे उ मनहुं तब कटक हटकि मनजात १५८ चौ बिटप बिशाल लता अरुझा

नी बिबिध बितान दिए जनु तानी कदलि ताल बर धुजा पताका।।

देषि न मोह धीर मन जाका बिबिध भांति फूले तरु नाना जनु बानैत बने

रुखवाना॥ कुंज कुंज सुंदर विटप साल ए जनु भट विलग विलग होइ छाए कूज
त पिक मानहुं गज माते ढेक महोख ऊंट वेसराते मोर चकोर कीर वर वाजी
पारावत मराल सब जाती तीतिर लावक पदचर जूथा वरनि न जाइ मनो
ज वरूथा रथ गिरि सिला दुंदुभी झरना चातक वंदी गुन गन वरना म
धुकर मधुर भेरि सहनाई त्रिविध वयारि वसीठी आई चतुरंगिनी सेना
संग लीन्हें विचरत सवहि चुनौती दीन्हें लछिमन देखत काम अनीका
रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका एहि कें एक परम वल नारी तेहि तें उवर सु
भट सोइ भारी १५९ दो तात तीनि अति प्रवल खल काम क्रोध अरु लोभ मुनि
विज्ञान धाम मन करहिं निमिष महुं छोभ लोभ के इछा दंभ वल काम के के
वल नारि क्रोध कें परुष वचन वल मुनिवर कहहिं विचारि १६१ चौ गुना
तीत सचराचर स्वामी उमा राम सव अंतरजामी कामिन्ह कै दीनता देखाई
धीरन्ह के मन विरति दृढाई क्रोध मनोज लोभ मद माया छूटहिं सकल
राम की दाया सो नर इंद्रजाल नहिं भूला जा पर होइ सो नट अनुकूला ३
मा कहौं मैं अनुभव अपना सत्य हरि भजन जगत सव सपना पुनि प्रभु

रम
४७
गएसरोवरतीरा पंपानामसुभगगंभीरा संतहृदयजसनिर्मलवारी
बांधेघाटमनोहरचारी जहंतहंपियहिंबिबिधमृगनीरा जनुउदारगृह
जाचकभीरा १६२ दो सुखीमीनसबएकरसअतिअगाधजलमांहि ज
था धर्मशीलन्हकेदिनसुखसंजुतजांहि १६३ दो पुरइनीसघनवोटज
लवेगिनपाइयमर्म मायाछन्ननदेखियेजैसैंनिर्गुणब्रह्म १६४ चौ॥
बिकसेसरसिजनानारंगा मधुरमुखरगुंजतवहुभृंगा बोलतजल
कुक्कुटकलहंसा प्रभुविलोकिजनुकरतप्रसंसा चक्रवाकवकखगस
मुदाई देखितवनहवरनिनजाई सुंदरखगगणगिरासुहाई जात
पथिकजनुलेतवोलाई तालसमीपमुनिन्हगृहछाए चहुंदिशिकानन:
विटपसुहाए चंपकवकुलकदंवतमाला पाटलपनसपरासरसाला
नवपल्लवकुसुमिततरुनाना चंचरीकपटलीकरगाना शीतलमंदसु
गंधसुभाऊ संततवहैमनोहरवाऊ कुहूंकुहूंकोकिलधुनिकरहीं
सुनिरवसरसध्यानमुनिटरहीं फलेफलेनववीटपसोहाए रहेभूमिफ
लाभतिनीचराए देखिसुभगतिरुवरनिनजाही नवपहैसववीटपसोहाही॥
२४ २४

१६५ दो फलभारन्हनमिविटपसबरहेभूमिनियराइ परउपकारीपुरुषजि
मिनवहिंसुसंपतिपाइ १६६ चौ देखिरामअतिरुचिरतलावा मज्जनकीन्ह
परमसुखपावा देखिसुंदरतरुबरछाया बैठेअनुजसहितरघुरा
या तहंपुनिसकलदेवमुनिआए अस्तुतिकरिनिजधामसिधाए बैठेपर
मप्रसन्नकृपाला कहतअनुजसनकथारसाला विरहवंतभगवंतहिदे
खी नारदमनभासोचविशेषी मोरस्रापकरिअंगीकारा सहतरामनाना
दुःखभारा ऐसेंप्रभुहिविलोकौंजाई पुनिनवनिहिअसअवसरआई य
हविचारिनारदकरबीना गएजहंप्रभुसुखआसीना गावतरामचरितमृ
दुबानी प्रेमसहितबहुभांतिबखानी करतदंडवतलिएउठाई राखेबहु
तवारउरलाई स्वागतपूछिनिकटबैठारे लछिमनसादरचरणप
खारे १६७ दो नानाविधिविनतीकरिप्रभुप्रसन्नजियजानि नारदबोलेबच
नतबजोरिसरोरुहपानी १६८ चौ सुनहुउदारपरमरघुनायक सुंद
रअगमसुगमवरदायक देहुएकवरमागौंस्वामी यद्यपिजानतअंत
रजामी जानहुमुनितुम्हमोरसुभाऊ जनसनकवहुंकिकरौंदुराऊ॥

48

कवनवस्तुमोहिअतिप्रियलागी जोमुनिवरनसकहुतुम्हमागी जनक
हंकछुअदेयनहिमोरें असप्रतीतितजहुजनिभोरे तबनारदवोले
हरषाई असवरमागौकरौंढिठाई यद्यपिप्रभुकेनामअनेका श्रु
तिकहअधिकएकतेएका रामसकलनामन्हतेंअधिका होउनाथअ
घखगगणवधिका रामसोसकलनामतेअधिका होउनामअघख
लगगणवधिका १६५ दो राकारजनीभक्तितवरामनाममोइसोम अ
परनामउडुगणविमलवसोभक्तउरव्योम १६६ दो एवमस्तुमुनिसन
कहेउकृपासिंधुरघुनाथ तबनारदमनहरषअतिप्रभुपदनाएउमा
थ १६७ चौ अतिप्रसन्नरघुनाथहिजानी पुनिनारदवोलेमृदुवानी॥
रामजवहिप्रेरेउनिजमाया मोहेउमोहिसुनहुरघुराया तवविवाह
मैचाहोंकीन्हा प्रभुकेहिकारणकरैनदीन्हा सुनुमुनितोहिकहौसहरो
सा भजहिमोहितजिसकलभरोसा करौंसदातिन्हकैरषवारी जिमि
वालकपालैमहतारी गहशिशुवछअनलअहिधाई तहंराषैजन
नीअरगाई प्रौढभएंतेहिसुतपरमाता प्रीतिकरैनहिपाछिलवाता॥

मोरें प्रौढ तनयसमग्यानी वालकसुतसमदाससअमानी जनहिमोरवलनिजव
लुताही दुहुंकहुंकामक्रोधरिपुआही यहविचारपंडितमोहिभजही पाएउग्यान
भक्तिनहितजही १९८ दो कामक्रोधलोभादिमदप्रवलमोहकैधारि तिन्हमहं
अतिदारुनदुखमायारूपीनारि १९९ चौ सुनुमुनिकहिहिपुराणश्रुतिसंता मो
हविपिनिकहुंनारिवसंता जपतपनेमजलाश्रयझारी होइग्रीषमसोषैसब
नारी कामक्रोधमदमत्सरभेका इन्हहिहरषप्रदवरषाएका दुर्वासनाकुमु
दसमुदाई तिन्हकहंसरदसदासुखदाई धर्मसकलसरसीरुहवृंदा होइहि
मतिन्हहिदहइसुखमंदा पुनिममताजवासवहुताई पलुहैनारिशिशिररितु
पाई पापउलूकनिकरसुखकारी नारिनिविडरजनीअंधिआरी वुधिवलसी
लसत्यसवमीना वनसीसमत्रियकहहिंप्रवीना १२० दो अवगुणमूलसूलप्र
दप्रमदासवदुःखखानि तातेकीन्हनिवारणमुनिमैंयहजीयजानि १२१ चौ सु
निरघुपतिकेवचनसुहाए मुनितनपुलकनयनजलछाए कहहुकवनप्र
भुकैयहरीती सेवकपरममताअतिप्रीती जेनभजहिंअसप्रभुभ्रमत्यागी ज्ञानरं
रकतेपरमंदअभागी पुनिसादरवोलेमुनिनारद सुनहुरामविज्ञानविशारद॥

राम संतन्ह के लछण रघुवीरा कहहु नाथ भंजन भवभीरा सुनु मुनि संतन्ह के गु राम 51
ण कहऊ जातें मैं उन्ह के वस रहऊ षट विकार जित अनघ अकामा अचल
२६ अकिंचन सुचि सुखधामा अमितबोध अनीह मितभोगी सत्य सार कवि के
विद योगी सावधान मानद मदहीना धीर भगति पथ परम प्रवीना १७२ दो॥
गुणागार संसार दुःख रहित सकल संदेह तजि मम चरण सरोज प्रिय ति
न्ह कह देह न गेह १७३ चौ निज गुण श्रवण सुनत सकुचाहीं पर गुण सुन
त अधिक हरषांही सम शीतल न हित्यागहि नीती सरल सुभाउ सबहि स
न प्रीती जप तप व्रत दम संयम नेमा गुरु गोविंद विप्र पद प्रेमा श्रधा छमा २६
मत मैत्री दाया मुदिता मम पद प्रीति अमाया वीर विवेक विनय विज्ञाना वो
धयथारथ वेद पुराणा दंभ मान मद करहि न काऊ भूलि न देहि कुमारग
पाऊ गावहिं सुनहिं सदा मम लीला हेतु रहित परहित रत शीला मुनि सु
नु साधुन्ह के गुण जेते कहि न सकहि सारद श्रुति तेते १७४ छं० कहि सक न
सारद शेष नारद सुनत पद पंकज गहे अस दीनबंधु कृपाल अपने भगति
गुण निज मुख कहे सीर नाइ वार हिं वार चरणन्हि ब्रह्मपुर नारद गए॥

तेहं धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रंग रए १७५ दो रावनारि जस पा
वन गावहिं सुनहिं जे लोग राम भक्ति दृढ पावहिं बिन बिराग जप जोग १७६
दो दीपशिषा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग भजहि राम तजि काम मद करहिं २१
सदा सतसंग ॥१७७॥ इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषवि
२१ ध्वंसने विमलवैराग्यसंपादनो नाम त्रितियसोपानः ॥ शुभमस्तु ॥३॥

श्रीरामायनमः श्रीकृष्णाय नमः

अरण्यकांड समाप्यते शुभमस्तु ॥

A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 464 (Part - 4) Subject Ramayana

Name of MSS Ramcharit Manas (Kishi Karda Kand)

Author Tulsidas

Period ______ Folios 24

Script Devnagiri Source Kapoor, Jalandhar City)

Missing Folios ______

१
रा. कि

ॐ श्रीगणेशाय नमः अथ किष्किंधाकांड लिख्यते ॥ कुंदेंदी
वरसुंदरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौ वरध
न्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृंदप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौ
रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भ
क्तिप्रदौ तौ हि नः १ ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंस
नं चाव्ययं ॥ श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरे संशोभितं सर्व
दा ॥ संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं ध
न्यास्ते कृतिनः पिबंति सततं श्रीरामनामामृतं ॥ २ सो
मुक्तिजन्ममहि जानि ज्ञानखानि अघहानिकर ॥ जहँ बस
संभुभवानि सो कासी सेइअ कस न ॥ १ ॥ आगे चले बहुरि र
घुराई ॥ ऋष्यमूक पर्वत निअराई ॥ तहँ रह सचिव

मेव
न
म

सहित सुग्रीवा आवत देखि अतुल बल सीवा अति सभीत क
ह सुनु हनुमाना पुरुष जुगल बल रूप निधाना धरि बट
रूप देखु तैं जाई कहसि जानि जिय सैन बुझाँई पठवा बालि
होइ मन मैला भागौं तुरत तजौं यह सैला विप्र रूप ध
रि कपि तह गएउ माथ नाइ पूछत अस भएउ को तुम्ह
स्यामल गौर शरीरा क्षत्री रूप फिरहु बन वीरा कठि
न भूमि कोमल पद गामी कवन हेतु विचरहु बन स्वा
मी मृदुल मनोहर सुंदर गाता सहित दुसह बन आतप बा
ता की तुम्ह तीनि देव महि कोऊ नर नाराइन की तुम्ह दो
ऊ दो जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार की
तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार १ चौपा
ई कोशलेश दशरथ के जाए हम पितु वचन मानि ब
न आए राम नाम लछिमन दोउ भाई संग नारि सुकुमारि

सहाई॥ इहाँ हरी निसिचर वैदेही॥ खोजत फिरहि हम
तेही॥ आपन चरित कहा हम गाई॥ कहहु विप्र निजँ बुझाई॥
तब हनुमँत हृदय अस जाना॥ एतब प्रकटे राम भगवाना॥ प्र
भु पहिचानि परे गहि चरणा॥ सो सुख उमा जाहि नहि वर
णा॥ पुलकित तन मुख आव न वचना॥ देखत रुचिर वे
ष के रचना॥ पुनि धीरज धरि अस्तुति कीना॥ हर्षि हृदय
निज नाथहि चीन्हा॥ मे अजान होय पूछा साईं॥ तु
म कस पूछहु नर की न्याई॥ तव माया वस फिरौं भुलाना॥
ताते मैं नहि प्रभु पहिचाना॥ दोहा॥ एक मंद मैं मोह
वश॥ कुटिल हृदय अज्ञान॥ पुनि प्रभु मोहि विसा
न
रेउ दीनबंधु भगवान॥ ४॥ चौपाई॥ यदपि नाथ
बहु अवगुण मोरे॥ सेवक प्रभुहि परे न भोरे॥ ना

यजीवनतवमायामोहा सोनिस्तरैतुम्हारैंछोहा तापरमैर
घुवीरदोहाई जानौकछुनहिभजनउपाई सेवक
सुतपितुमातभरोसे रहैअसोचबनैप्रभुपोसे अस क
हिचरणपरेअकुलाई निजतनप्रकटप्रीतिउरछाई
तबरघुपतिउठाइउरलाए निजलोचनजलसी
चजुडाए सुनकपिजीयजनिमानेहिऊना तैंमम
प्रियलछिमनतेदूना समदर्शीमोहिकहसभको
ई सेवकप्रियअनन्यगतिहोई दोहा सोअनन्याअ
सजाहिकेमतिनटरेहनुमंत मैंसेवकसचराचररू
पराशिभगवंत चौपाई देखिपवनसुतपतिअनु
कूला हृदयहर्षवीतासबसूला नाथशैलपरकपि
पतिरहई सोसुग्रीवदासतवअहई तासनाथसमै

त्रीकीजै ॥ दीनजानितेहिअभयकरीजे ॥ सोसीताकरखो
जकराइहि ॥ जहंतहंमरकटकोटिपठाइहि ॥ इहिवि
धिसकलकथासमुझाई ॥ लिएदोउजनपीठचढाई ॥
जबसुग्रीवरामकहिदेखा ॥ अतिशयजन्मधन्यक
रिलेखा ॥ सादरमिलेनायपदमाथा ॥ भेटेअनुजस
हितरघुनाथा ॥ कपिकेमनविचारयहरीती ॥ करिह
विधिमोसूयेप्रीती ॥ दोहा ॥ तबहनुमंतउभयदिशि
कहिसबकथाबुझाइ ॥ पावकसाखीदेइकरिजोरी
प्रीतिदृढाइ ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ कीनप्रीतिकछुवीचनरा
खा ॥ लक्ष्मणरामचरितसबभाखा ॥ कहसुग्रीवनय
नभरिवारी ॥ मिलिहिनाथमिथलेशकुमारी ॥ मंत्रि

न

हिं

न सहित इहां इक बारा बैठ रहो मै करित विचारा गग
न पंथ देखी मै जाता परबस परी बहुत बिलपाता रा
म राम हा राम पुकारी हम दिशि देखि दीन्ह पट डारी
मांगा राम तुरत पट दीन्हा पट उर लाइ शोच अति
कीन्हा कहहु सुग्रीव सुनहु रघुबीरा तजहु शोच आन
हु मन धीरा सब प्रकार करिहउं सेवकाई जेहिं विधि
मिलहिं जानकी आई दोहा सखा वचन सुन हर्षेउ
कृपासिंधु बलसींव कारण कवन बसहु बन मो सन
कहहु सुग्रीव ५ चौपाई एकहि प्रभु हम हक्षि जान हिता
ही महावीर मराम मरकट कुल माहीं नव अस्थान प्रथम
केहि ठामा कहहु नि मात पिता कर नामा कहहु सुग्रीव सुनहु
रघुराई कहहु कथा आदि तेउ तपति गाई प्रेम सुनयन निज

कीचनिकारा॥ धरअंगदरीभ्रमिपरडारा॥ बानरएकप्रकटत
हहोई॥ चेचलबहुतविरंचबलसोई॥ तेहकानामविधिरा
विराधिज्ञानी॥ रिक्षराजतेन्हिसमनन्हिज्ञानी॥ विधिपदनाय
सीसकपिकहई॥ आयसुकवनकाहमोहिअभुअहई॥ वि
चरहुवनगिरफलखावहु॥ मरहुनिसाचरजेजहपावहु
सोब्रह्माकीआज्ञापाई॥ दक्षिनदिशिगएवरघुराई॥ दे
रिक्षराजतहेविचरई॥ महावीरबलवान॥ निशचरमिले
तेसबहते लयलयबडेपरवान॥ ८॥ चौपाई॥ फिरतदी
खएककूपअनूपा॥ जलपरिछांहिदीखनिजरूपा॥ त
बकपिसोचकरतमनमाही॥ केहिविधिरिपुरहहिंह्या
आही॥ तेहिंदेखकोपाकपिवीरा॥ सबदिशिफिराकूपके
तीरा॥ जोजोचरितकीनकपिजेसा॥ सोसोचरितनदीतहतेसा॥

गर्ज्ञोकीसजाइ सोबोला कूदि परजलमाहीडोला तेहित
त्पलटि भई सोनारी अतिअनूप गुणरूपअपारी सुनहु
उमाअतिकौतक होई आयव होरि ठाढि भयसोई सुर
पति हृदि परी तिहकाला तेहि बिंदु परी सिरवाला मोहे
भानु देखिशाबसीवा कूटोबिंदुपरा तेहि ग्रीवा दोहा
इहअंससते भयोवाली भयो महावीर बलधाम दिनकर सुतेहू
सरभयो तेहि सुग्रीवहू नाम ९ चौपाई सुनततकालसु
नहुं रघुवीरा नारीपलटभयोसोइवीरा तवसुकिर अश्री
तमन भय एहु हम हि संगलेविधि पहुंग एहु कपिप्र
णामसवचरित वखाना कहव्रह्माहरि इकबलवा
ना तवविधि हमहि कहासमझाई दच्छिणजाउहोभा
ई किसकिंधा तुमकरहुथाना रंगभोगवहुविधसु

दिशी

रा॰ किं॰ रखनाना॥ जोप्रभुलोकचराचरस्वामी॥ सोअवतरिहिनाथ
५ बहुनामी॥ रघुकुलमनिदशरथसुतहोई॥ पितुआज्ञा
ताविचरिहिबनसोई॥ नरलीलाकरिहहिविधिनाना
पेहहिदरशहिहोईकल्याना॥ दोहा॥ तवहमबंधुदोऊस
नकेविधिकेबेन॥ तपजपजोगनपावहीं सोहमदेखिह
हिनेन॥१॥ चौपाई॥ विधिपदबंदिचलेदोउभाई॥ किष
किंधातबआएगोसाई॥ बालीराजकीनसुरत्राता॥ ब
नवसेदैत्यहन्योदोउभ्राता॥ मयदानवसुतहोदीरामा
यावीदुंदुभिरणधीरा॥ कहसुग्रीवसुनहुरघुराई॥ वि
धिगतिअलखजानिनहिजाई॥ नाथबालिअरुमैंहोभाई॥
सीते प्रीतिकछुवरनिनजाई॥ मयसुतमायावीतेहिनाऊ॥ आवा
सोप्रभुहमरेगाऊ॥ अर्धराति पुरद्वारपुकारा॥ बालि

१

५
राम

सो

हरि पुबल सहे न पारा धावा बालि देखि सो भागा मै पुनि
गए उ बंधु संग लागा गिरिवर गुहा पैठ सो धाई बालि मोहि
तब कहा बुझाई परखेहु मोहि एक पखवारा नहि आवो
तौ जाने हु मारा दोहा तब बाली मोहि तन कहा बैठ रहे
उ अधमास मयपैठ हु गिरिवर गुहा कर हुन संचरना
स ११ चौपाई अस कहि भीतर पैठ सो धाई नाना वि
धि तहा भई लराई मास दिवस तह हेर हु उ खरारी निसरी
रुधिर धार तह भारी तब मै निज मन कीन्ह विचारा जा
नारि पुने बंधु मारा बालि हते सि मोहि मारहि आई शिला
हारि दे चल यो पराई दोहा बालि महा बल अमित अति
समर न जीता को इ तिहि मारा निशचर न जब सो अब
मारिहि मो ... ३ १२ चौपाई मएउं भवन मन सो च अपा
रा पैके बाली के हेतिम मारा मंत्रे राज्य रुदे बा विन्ह सा

मोह हिल

ई दीन्हेउ राज मोहि बरिआई ॥ बालि ताहि मारि गृह आवा ॥ देखि
मोहि जिय भेद बढ़ावा ॥ रिपु सम मोहि मारिसि भारी ॥ हरि
लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी ॥ ताके भय रघुबीर कृपाला ॥ सक
ल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला ॥ इहां साप बस आवत नाहीं ॥ त
दपि सभीत रहौं मन माहीं ॥ सुनि सेवक दुख दीनदयाला ॥
फरकि उठे द्वौ भुजा बिसाला ॥ दोहा ॥ सुनत बचन बोले प्र
भु कहहु साप की बात ॥ दुंदुभि दैत सकल बन विध्वंसे बालि
हन्यो तेहि तात ॥ १३ ॥ समदर्सी सीतल सदा मुनिवर पर
म प्रवीन ॥ मोहि बुझाइ कहहु सब साप कवन हित दीन ॥
१४ ॥ चौपाई ॥ सुनहु कृपानिधि कृपानिकेता ॥ बाली श्राप भ
यो केहि हेता ॥ बोले बचन कपीस मन लाई ॥ दुंदुभि दै
त महाबल भाई ॥ मल्लयुद्ध की गति सम जाने ॥ अवर बली
कोउ नहि मन माने ॥ एक बार जल निघटत आयो जाइ

केजलनिधिमाझ थहायो सबहि करौ प्रभाउ जलमहँ
उ करिअभिमान मथन तेहि महँउ मथत सिंधु व्याकुल
सब गाता जीव जंतु सब भए निपाता तब अकुलाय सिं
धु बलि आवा वचन विचारि हितहि सुनावा तुम बल
सर वर और न कोऊ वचन विचारि कहहु जे मय सोऊ हेम
गिरि बलवर निनजाई तेहि जीतो करि जाय उपाई वच
न सुनत तहाँ चलि आयो देखि हिमाचल अति मन भायो
ताल ठोक गिरि लीन उठाई तब हिमगिरि बहु बिनती
लाई तुम्हरे बल सर वर मैं नाही तो ते करौं न मान।
उछाहीं पंपापुर तुम महँ चलि जाहू बालि महाबलि ता।
प्रेहि अघाहू सुनत वचन तब ही चलि आवा बालि
बालि कहि ताहि उघावा दोहा भेरव कीये सो महिरव

करगर्बबहुतमनमाहि॥ आयौ निकट सो गर्ज्जि कैय॥ म
नहुँ तिन कुँ भय नाहि॥ १५॥ चौपाई॥ महीमर्द्दहु मक
रहि निपाता॥ गरज्यौ घोर गिरा जनु घाता॥ ठौकैयाता
लवज्ञ जनु परेउ॥ मर्मता ह जानि सब डरेउ॥ पंपापुर ख्या
कुल सब काहू॥ चंद्र ग्रसन आयो जनु राहू॥ हनत सबा
लि दौरा नत तकाला॥ देखि अहर भञ्जरंड कराला॥ भि
रेउ जुगल करि वर आई॥ मल्लयुद्ध कहु वरनि न जा
ई॥ जाम चारि सब कौतुक भएउ॥ मुष्टि प्रहार तास कपि
करेउ॥ गिरा अवनि तब शैल समाना॥ जीव जंतु न सि
हटैत हनाना॥ पुनि तेहि वालि जुगल करि डारा॥ उन
र दक्खिन कौन प्रहारा॥ तेहि गिरि पर मुनि कुटी सोहा
ई॥ रुधिर प्रवहायो तहँ धाई॥ सनंद रिषी को होंहि

निवासा || सो रिषि गए मंजन सुखरासा || मंजन करि सुने
दुरिषि आए || देखि कुटी अति क्रोध बढ़ाए || तब हृदि विचा
र करत मन माहीं || जनु एक चालि आव प्रभु तांहीं || ति
नहीं सकल कही इतिहासा || सुनि सुनंद भए क्रोध निवासा ||
दोहा || दीन साप तब क्रोध करि || नहि मन कीन विचार || बा
लि नाम गिरि देखनहि || होइ नाय तन छार || १६ || चोपाई ||
तेहि भय ते बाली नहि आवत || रिषि के वचन समुझि भ
य पावत || तेहि भरोसे इहि गिरि रहऊं || बालि त्रास नहि वि
चरत कहऊं || इहि दुख ते प्रभु दिन अरु राती || चिंता बहु
त जरति अति छाती || सुनि सेवक दुख दीनदयाला || फ
रकि उठे दोउ भुजा विसाला || मित्र दुःख रज मेरु समाना ||
बोले विहसि राम भगवाना || दोहा || सुनि सुग्रीव मैं मारि
हों बालिहि एकहिं बाणा || ब्रह्म रुद्र शरणागत हूं गए
न उभरहि प्राणा || १७ || चोपाई || जे न मित्र दुख होहिं दुखा

री॥ तिन्हें बिलोकित पातक भारी॥ निज दुख सम गिरि रज जो के
जाना॥ मित्र के दुख रज मेरु समाना॥ जिन के असमति सह
ज न आई॥ ते शठ हठ कत करत मिताई॥ कुपथ निवारि सु
पंथ चलावा॥ गुण प्रकटै प्रकटै अवगुणहि दुरावा॥ दे
त लेत मन शंक न धरहीं॥ बल अनुमान सदा हित कर
हीं॥ विपति काल कर शत गुण नेहा॥ श्रुति कहि संत मित्र
गुण एहा॥ आगें कह मृदु वचन बनाई॥ पाछें अनहित
मन कुटिलाई॥ जाकर चित अहि गति सम भाई॥ असकु
मित्र परिहरे भलाई॥ सेवक सठ नृप कृपण कुनारी॥ क
पटी मित्र शूल सम चारी॥ दोहा॥ मित्र मित्र सो प्रीति क
रि हृदय आन मुख आन॥ जाकर मन वस प्रीति नहि दुरे
दुराय न जान॥ १८॥ चौपाई॥ जानन्नमर्म्मेहोई रघुनाथा
इहाँ रहौं हनुमंत लय साथा॥ सो हनुमंत बालि सब जाना
इहाँ न आवत कृपा निधाना॥ सुनि सुग्रीव वचन भगवा

ना बोले हरि हँसि धरि धनु बाना सखा सोच त्यागो बल मोरे सब बिधि करो काज मय तोरे कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा बालि महाबल अति रण धीरा दुंदुभि अस्थि ताल दिखराये बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये देखि अमित बल बाढी प्रीती बालि बधब इन्ह भइ परतीती बार बार नावइ पद सीसा प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा उपजा ज्ञान बचन तब बोला नाथ कृपा मन भयउ अलोला सुख संपति परिवार बडाई सब परिहरि करिहउँ सेवकाई

हरि

ना बोलेहरिहृसिधरिधनुवाना सखासोचत्यागोब
लमोरे सबबिधिकरोकाजमयतोरे कहसुग्रीवसु
नहुरघुवीरा बालिमहाबलअतिरणधीरा सुनताल
ल इहकृपानिधाना वेधहिसबएकहिबाना चंद्रमं
डलाकारसुहाई परेएकबारामहिमाई ताकेकर
बालीप्रभुमरई नातरुप्रणमिथ्याकोउकरई सु
निबोलेप्रभुशीतलबानी कपिचतुराईतोरिमयजा
नी एहिविधिबलकाकरहुपरेखू कहहुतालक
रिचरितविशेखू सुनिसुग्रीवहृदेहरखाना एकदि
वसवनगएउँवृक्षफूलफलदेखतभयो मनहर्षा
वसातफलली झ्ना जलमंजननेसुखजोकीन्हा दोहा ले
आतुरचलआएउ पंपापुरजगदीस करिस्नानेध्या
नयुनि नाइहुइकोशीस १९ चौपाई ताकेफलजे
मनकरिदया सोफलपरएकवेतासयो ससिमंड
लसमाननफनकाटी देखिकपीसमहारिसवाटी कोध

अनलतनलेत उसाह॥ आतुर चल गयो तेहि पास॥ अ
रेडु सुभट कुमार न सावा। जमपुर आतु सदन तब छावा
नाहि तशा पलेहु सिसमोरा। वृहद फूटै निकसे तन तोरा।
जहां जाइ करि बैठा बेदी। निकसे त्तार रह छेत नछेदी
क्रोध निवारि बालि गृह आवा। सा मार यह तत्व क
पावा। दोहा। पुत्र बंधु सुनि क्रोध करि मन दुख भयो
अपार। निश्चय मारिहि बालिहि जो इहवै घेतार।
चौपाई। सो सब समाचार मय जानव। अस तव कहव
नाथ मन नव। चौदह भुवन जो एकरस जाना। व्यापि रहा
सब जीव समाना। सो प्रभु सुनन तहा सकी बानी। निरख
बदन बोले धनु पानी। सखा सोच त्यागहु बल मोरे।
सब विधि करहु काज मय तोरे। अबन्धि चंदूज बतार
विलोके। कंपेहु मज बही प्रभु कोपे। सहज सरासन बा
२ रा चढ़ाए। विनप्र यास रघुबीर हाए। दोहा। सर हि च
लायो नाथ तब गहो भुजा को दंड॥ त्रिकस्यो स पना

एतरहि हृतभए शानखंड ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ करिअस्तुति
जनबसर्वसिधावा ॥ निरषिहरीशप्रभुमहि सुखपावा ॥ देखिअ
तिबलवाढीप्रीती ॥ बालिवधनकर भइपरतीती ॥ बार
हिंवारिनाइपदसीसा ॥ प्रभुहिंजानिमनहर्षकपीसा ॥ उप
वचन जाज्ञानतबबोला ॥ नाथकृपामनभइउअडोला ॥ सुख
संपतपतिपरिवारवडाई ॥ सबपरिहरिकरिहौंसेवका
ई ॥ एसबराम भक्तिवाधक ॥ कहहिंसंततवपदआधा
रक ॥ शत्रुमित्रसुखदुखजगमाहीं ॥ मायाकृतपरमार्थ
नाहीं ॥ बलिपरमहितजासप्रसादा ॥ मिलेहुरामतुमशम
नविषादा ॥ सपनेजेहिसनहोइलराई ॥ जागेसमुझतम
नसकुचाई ॥ अबप्रभुकृपाकरयहिभांती ॥ सबतजभज
र नकरौंदिनराती ॥ सुनिविरागसंयुतकपिवानी ॥ बो

लेहि हसि राम धनुपानी॥ जो कछु कहेहु सत्य सब सोई॥ सखा
बचन मम मृषा न होई॥ नट मरकट इव सबहि नचावत॥ रा
म खगेस बेद अस गावत॥ लै सुग्रीव संग रघुनाथा॥ चले
चाप सायक गहि हाथा॥ तब रघुपति सुग्रीव पठावा॥ ग
र्जेसि जाय निकट बल पावा॥ सुनत बालि क्रोधातुर धा
वा॥ गहि कर चरन नारि समुझावा॥ सुनु पति जिन्हहि मि
ला सुग्रीवा॥ ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा॥ कोसलेस सुत
लछमन रामा॥ कालहु जीति सकहि संग्रामा॥ सो रघुबी
र हृदय महं आनहु॥ ममता छाडि कहा मम मानहु॥ दो०॥
कहा बालि सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ॥ जौं कदा
चि मोहि मारहि हो तौ पुनि होव सनाथ॥ चौपाई॥ अस क
हि चला महा अभिमानी॥ तृन समान सुग्रीवहि जानी॥ भि

चितेचरणचितदीन्हे ॥ सफलजन्ममानाप्रभुचीन्हे ॥ हृदयप्री
तिमुखवचनकठोरा ॥ बोलाचितेरामकीओरा ॥ धर्महेतु
अवतरेहुगुसांई ॥ मारेहुमोहिव्याधकीन्याई ॥ मेवैरीसु
ग्रीवपिआरा ॥ कारणकवणनाथमोहिमारा ॥ अनुजव
धूभगिनीसुतनारी ॥ सुनसठएकन्यासमचारी ॥
इन्हेकुदृष्टिविलोकेजोई ॥ ताहिवधेकछुपापनहोई ॥
मूढतोहिअतिशयअभिमाना ॥ नारिशिखावनकरि
सनकाना ॥ ममभुजबलआश्रिततेहिजानी ॥ मारचह
सिअधमअभिमानी ॥ दोहा ॥ सुनहुरामस्वामीस
नग ॥ चलनचातुरीमोरि ॥ प्रभुअजहुमेपातकी
अंतकालगतितोरि ॥ चौपाई ॥ सुनतरामअतिकोमल
वाणी ॥ वालिसीसपरसेउनिजपाणी ॥ अचलकरौंत

२।

रेउभयबालीअतितर्जा॥मुष्टिकमारिमहाध्वनिगर्जा॥तब
सुग्रीवविकलहोइभागा॥मुष्टिप्रहारवज्रसमलागा॥
मैंजोकहारघुवीरकृपाला॥वंधुनहोइमोरयहकाला॥
एकरूपतुमभ्रातादोऊ॥तेहिभ्रमतेनहिमारेऊंसो
ऊ॥करपरशासुग्रीवशरीरा॥तनुभाकुलिशगईसँ ब
पीरा॥मेलीकंठसुमनकैमाला॥पठवापुनवलदेइवि
शाला॥पुनिनानाविधिभईलराई॥विटपओटदेखैं हि
रघुराई॥दोहा॥वहुछलवलसुग्रीवकरि॥हृदय
हारिभयमान॥माराबालिहिरामतव॥हियेमांझश
रतानि॥२३॥चौपाई॥पराविकलमहिशरकेलागे
पुनिउठवैठिदेखिप्रभुआगे॥श्यामगातशिरजटा॥
वनाए॥अरुणनयनशरचापचढाए॥पुनिपुनि॥

नु राखहुं प्राणा॥ बालि कहा सुनु कृपानिधाना॥ जन्म जन्म
मुनि करि यतन कराही॥ अंत राम कहि आवत नाही॥ जासु ना
म बल शंकर काशी॥ देत सबहि समगति अबनासी॥ मम
लोचन गोचर सोइ आवा॥ बहुरि कि प्रभु अस बनहि ब
नावा॥ सुनहु नाथ इक बिनती मोरी॥ अस्तुति करहुं मो
रि बिधि तोरी॥ छंद॥ सो नयन गोचर जासु गुण नित ने
ति कहिं श्रुति गावही॥ जीत पवन मन गो निरस करि मुनि
ध्यान कबहुंक पावही॥ १॥ मोहि जानि अति अभिमान बश
प्रभु कहेउ राखु शरीरही॥ अस कवन शठ हठि काटि
सुर तरु वारि करहि करीरही॥ २॥ अब नाथ करि करु
णा विलोकहु देहु यह वर मांगहुं॥ जेहि योनि जन्मौ कर्म
वश तहं राम पद अनुरागहुं॥ ३॥ यह तनय मम सम वि

नयबलकल्याणप्रदप्रभुदीजियै । गहिबांहसुरनरनाहआ
पनदासअंगदकीजियै ४ दोहा रामचरणदृढप्रीतिकरि
बालिकीन्हतनत्याग सुमनमालजिमिकंठते गिरतनजा
नैनाग ।२४। चौपाई । रामबालिनिजधामपठावा । नग
रलोकसबव्याकुलधावा । नानाबिधिबिलापकरतारा
छूटेकेसनदेहसंभारा । धुनिधुनितारासिरउरघनहीं
वदनविलोकिहृदयमनगुनहीं । मैपतितैसेबहुतसमझा
वा । कालविवसकछुमननहिंआवा । अंगदकाकछुकह
ननापावा । बीचहिसुरपुरप्राणपठावा । ताराबिकलदे
खिरघुराया । दीन्हज्ञानहरिलीन्हीमाया । छितिजलपावक
गगनसमीरा । पंचरचितयहअधमसरीरा । प्रगटसोतनत
वआगेसोवा । जीवनित्यकेहिलगितुमरोवा । उपजाज्ञान

की चरणानबलागी। लीन्हेसि परम भक्ति बर मागी। उमा दारु योषित की नाई। सबहिं नचावत राम गुसांई। तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा। मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा। राम कहा अनुजहि समुझाई। राज देहु सुग्रीवहिं जाई। रघुपति चरण नाइ करि माथा। चले सकल प्रेरित रघुनाथा। दोहा। लक्ष्मण तुरत बुलाएहु पुरजन विप्र समाज। राज दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ युवराज। २६। चौपाई। उमा राम सम हित जग माहीं। गुरु पितु मातु बंधु कोउ नाहीं। सुर नर मुनि सब के यह रीती। स्वारथ लागि करैं सब प्रीती। बालि त्रास व्याकुल दिन राती। तन बहु व्रण चिंता जर छाती। सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ। अति कोमल रघुवीर सुभाऊ। ऐसे प्रभु के

MSS No. 464 (Part 5) Subject Ramayana

Name of MSS Ramcharit Manas

Author Tulsidas

Period Folios 34

Script Devnagiri Source Kapoor, Jalandhar City

Missing Folios

सकलगुननिधानंबानरानामधीशं

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः श्रीजानकीवल्लभाय नमः श्लोक शान्तं शाश्वतमप्र
मेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुं रामा
ख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं वन्देहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडाम
णिं १ नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरा
त्मा भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च २
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रग
ण्यं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ३ चौ जामवंत के बचन सुहाए सु
नि हनुवंत हृदे अति भाए तब लगि मोहि परखत तुम भाई सहि दुख कंद मूल
फल षाई जब लगि आवहि सीतहि देषी होइ काज मोहि हर्ष विशेषी अस
कहि नाइ सबन को माथा चल्यो हर्षि हिय धरि रघुनाथा सिंधु तीर इक
भूधर सुंदर कौतक कूद चढ्यो ता ऊपर बार बार रघुबीर संभारी त
रिकेउ पवनतनय बल भारी जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता चल्यो सो गि
रि पाताल तुरंता जिमि अमोघ रघुपति बाण एही भांत चला हनुमा
ना जलनिधि रघुपति हेत विचारी तेंही मैनाक

हेरिश्रमहरी १ सो० सिंधुबचनउरआनतुरतउठेमैनाकतब रामदूत
जोयजानपुलककततनकरैजोरिकहि २ पुलकहृपाकरिकहुविश्रामा जा
तेसफलहोइममधामा ३ दो० हनुमानतेहिपरसपरपुनिकीनप्रना
म रामकाजकीनेबिनामोहिकहाँविश्राम ४ चौ० जातपवनसुतदेव
नदेषा जानैकहुबलबुधिविशेषा सुरसानामअहिनकैमाता पठइन
आइकहीतेनबाता आजसुरनमोहिदीनअहारा सुनतबचनकहिप
वनकुमारा रामकाजकरिफिरिमैआवौं सीताकीसुधप्रभुहिसुनावौं तब
तवबदनपैठिहौंआई सत्यकहौंमोहिजानदेमाई कवनेहुजतनदेहिन
जाना ग्रससिनमोहिकहिहेहनुमाना जोजनभरितेहिबदनपसारा
कपितनकीनदुगनविस्तारा सोरहिजोजनमुषतिहठयो तुरतपवनसु
तबतीसभयो जसजससुरसाबदनबिढ़ावा तासुदूनकपिरूपदेषा
वा सतजोजनतिहिआननकीना अतिलघुरूपपवनसुतलीना बदन
पैठपुनिबाहरआवा मांगाबिदाताहिसिरनावा मोहिसुरनजिहिलागि
पठावा बुधिबलतोरमरममैपावा ५ दो० रामकाजसबकरहुतुम

राम लखुधरूपनिधान सासिबदेइगाईसोहर्षचल्योहनुमान इसो दि
ष्यरएकपिंडमेंदरिहिडि करिमायामानभकेषगगगहिरि जीवजंतजेगगन राम
उड़ाही एतविधसदागगनचरषाहिं सोईछल्यूहनुमानकहिकीना
तासकपटकपटरतनिहिचीना ताहिमारिमारतसततजीरा बारधपारि
२ गयोमतिधीरा तहांजाइदेषीवनसोभा गुंजतचंचरीकमधलोभा
नानातरफलफूलसरूए षगमृगछंददेषिमनभाए सैलबिशालदे २
षिइकआगे ताप्परिधाइचढ्योभयत्यागे उमानतकछुकपिकैअधिकाई॥
प्रभुप्रतापजोकालहिषाई गिरपरिचढिलंकतिनदेषी कहिनजाइअ
तिदुरगविसेषी अतिउतंगजलनिधचहुंपासा कनककोटिकपिरमप्र
काशा ॥छंद॥ कनककोटविचित्रमनिकृतसुंदरायतनाघना चउहट्टहट्टसु
ढुपासबीथीचारुपुरबहुविधिबना गजबाजषच्चरनिकरपदचररथ
वरूथन्हकोगने बहुरूपनिसचरजूथअतिबलसेनवरनतनहिं
बने बनबागउपवनबाटकासरकूपवापीसोहहीं नरनागसुरगं
धर्वकन्यारूपमुनिमनमोहहीं कहुमल्लदेहिविशालसैलसमानअति

3

बलगरजही नानाअषारनभिरहिबहुबिधएकएकनतरजही करजतन
भटकोटनबिकटतननगरचहुदिसिरछही कहुमहषमानुषधेनुषरअज
षलनिसाचरभछही इहलागितुलसीदासइनकीकथकछुइकहैकही रघुबीर
सरतीरथसरीरनत्यागगतिपइहैसही ८ दो पुररषवारेदेषिबहुकपिमनकीनि
विचारि अतिलघुरूपधरोंनिसिनगरकरोंपइसार ९ चौ मसकसमानरूपकपिधरी
लंकहिचल्योसुमरउनरहरी नामलंकनीइकनिशाचरी सोकहिचलिसमोहिनिंद
री जानहिनहीमरमसठमोरा मोरअहारजहालगिचोरा मुठिकाएकमहाकपि
हनी रुधिरबमतधरनीढनमनी पुनिसंभारउठीसोलंका जोरपानकरिविनयस
संका जबरावनहिब्रह्मबरदीना चलतविरंचकहामोहिचीना त्रेतारामलषण
अवतरही भक्तिहेतमानुषतनधरही ताकीत्रियारावनहरिल्यावही सोरघुना
थदूतपठावही विकलहोसितैंकपिकेमारे तबजानसनिशाचरसंघारे तातमो
रअतिपुन्यबहूता देषेनैनरामकरदूता १० दो तातस्वरगअपबरगसुष
धरिअतुलाएकअंग तुलितताहिसकलमिलिजोसुषलबसतसंग ११ चौ॥
प्रबसनगरकीजसबकाज हृदेराषकोशलपुरराजा गरलसुधारिपुक
रैमिताई गोपदसिंधुअनलसितलाई गरुडसुमे[illegible]रेनसमताही॥

अतिविचित्रकहजातिसोनाही प्रापनकीयेदेषाकपितेही

रामकृपाकरिचितवाजाही अतिलघुरूपधरेउहनूमाना वैठानगरसुमरभग
वाना मंदरमंदरप्रतिकरितसोधा देषेजहतहअगनतजोधा गयोदसानन
मंदरमाही मंदरमहिनहीवैदेही भवनएकपुनिदेषिसुहावा हरिमंदरतिह
भिनबनावा १२ दो रामायुधअंकितगृहसोभावरननजाइ नवतुलसकाब्रि
दतसिदेषहरषकपिराइ १३ चौ लंकानिशाचरनेकरनेवासा इहांकहांस
जनकरबासा मनमहितरककरैकपिलागा तेहीसमैविभीषनजागा रा
मरामतेहसुमरनकीनां हृदैहरषकपिसजनचीना इहसनहठकरहेंपहि
चानी साधतेहोइनकारजहानी विप्ररूपधरिवचनसुनाए सुनततवि
भीषनउठितेहआए करप्रनामपूछीकुसलाई विप्रकहोनिजकथाबुझाई
कैतुमहरिदासनमैकोई मोरेहृदैप्रीतिअतिहोई कैतुमरामप्रेमअनुरागी
आएहोमोहिकरनबडभागी १४ दो तबहनूमंतकहीसबरामकथानिजनाम सु
नतजुगलतनपुलकमनसुमरगुनग्राम १५ चौ सुनहुपवनसुतर
हनहमारी जैसेदसननमहिजीभविचारी तातकबहूमोहिजानअनाथा
करहैकृपाभानकुलनाथा तामसतनकछुसाधननाही प्रीतनपदसरोज
मनमाही अबमोहिभाभरोसहनूमंता विनहरिकृपामिलैनहिसंता जो

6

रघुबीर अनुग्रह कीना तौ तुम मोहि दरस हठि दीना सुनहु बिभीषन प्रभु की री
ती करति सदा सेवक पर प्रीती कहो कवन मैं परम कुलीना कपि चेचल सबही
बिधहीना प्रात लेइ जो नाम हमारा तिहदिन ताहि न मिलै अहारा १६ दो अस मैं अ
धम सषा सुने मोहि पर रघुबीर कीनी कृपा सुमर गुन भरे बिलोचन नीर १७
चौ जानत हो अस स्वांमि बिसारी फीरैं ते हकाहि न होइ दुषारी एहबिधि कहत
राम गुन ग्रामा पावा अनिरबाच बिश्रामा पुनि सम कथा बिभीषन कही जेहि बि
ध जनकसुता तिहरही तब हनुमंत कहा सुनि भ्राता देषी चहौं जानकी माता जु
गति बिभीषन सकल सुनाई चलो पवनसुत बिदा कराई करि सोई रूप ग
यो पुनि तहवा बन असोक सीता रहि जहवा देषि मनैं मों कीन प्रनामा बैठेही
तजात निस जामा कृसतन सीस जटाइक बेनी जपत हृदे रघुपति गुन श्रेनी
१८ दो निजपद नैन दए मन राम कमल पद लीन परम दुषी भा पवनसुत दे
षि जानकी दीन १८ चौ तरपल्लव महि रहा लुकाई करै बिचार करो का भाई ते
हि अवसर रावन तिह आवा संग नारि बहु करे एबनावा बहु बिधि षल सीत
हि समझावा साम दाम भय भेद दिषावा कहि रावन सुनि समुषि सयानी मंदोदरी
आदि सम रानी * तव अनुचरी करो पन मोरा एक बार बिलोक मम ओरा त्रिन धरि

१

ओटकहतवैदेही सुमरिअवधपतिपरमसनेही सुनुदसमुषषद्योतप्रका
सा कबहुंकिनलनीकरैविकासा असमनसमझकहतजानकी षलसुधन
हिरघुबीरबानकी सठसूनेहरिआनेमोही अधमनिलजलाजनहितोही २
दो आपुहिसुनिषद्योतसमरामहिभानसमान परुषबचनसुनिकाढिअसि
बोलाअतिषिसिआन २१ चौ सीतातैममकृतअपमाना कटहौंतवसिरकठिन
कृपाना नाहितसपदिमानममबानी सुमुषिहोतिनतजीवनहानी स्यामसरो
जदामसमसुंदर प्रभुभुजकरिकरसमदसकंधर सोभुजकंठकितवअसिघोरा
सुनसठअसप्रवानपनमोरा चंद्रहासहरममपरितापं रघुबरविरहअनल
संतापं सीतलनिसितबहसिवरधारा कहसीताहरिममदुषभारा सुनतबच
नपुनिमारनधावा मयतनयाकहिनीतिबुझावा कहिसिसकलनिसचरनबोला
ई सीताबहुविधित्रासहुजाई मासदिवसमहकहानमाना तौमैमारवकाढ
कृपाना २२ दो भवनगयोदसकंधरइहांपिसाचनिवृंद सीतहित्रासदेखा
वहिधरहिरूपबहुमंद २३ चौ त्रिजटानामराछसीएका रामचरनरतिनिपु
निविवेका सबनैबोलिसुनाइससपन सीतहिसेइकरहुहितअपन सप
नेंबांनरलंकाजारी जातधानसेनासबमारी षरआरूढनगनदससीसा

राम ४ न

7 राम ४

श्री

मडतसिरखंडितभुजबीसा इहबिधिसोदछनदिसजाई लंकामनहुबिभीषनपाई नग
रफिरीरघुबीरदुहाई तबप्रभुसीताबोलपठाई एहसपनेमैकहेउपुकारी होइहै
सतइंदिनचारी तासुबचनसुनतेसबडरी जनकसुताकेचरनंनपरी २४ दो जिह
तहंगईसकलसबसीताकमनसोच मासदिवसबीतेमोहिमारहिनिशाचरपो
च २५ चौ त्रिजटासनबोलीकरिजोरी मातबिपतिसंगतैमोरी तजौंदेहकरिबेग
उपाई दुसहबिरहिअबनहिसहिजाई आनिकाठरचचितावनाई मातअ
नलपुनिदेहिलगाई सतकरिममप्रीतिसयानी सुनैकोश्रवनसूलसमबा
नी सुनतबचनपदगहिसमझाइस प्रभुप्रतापबलसुजससुनाइस निसिन
अनलमिलिसुनसुकुमारी असकहिसोनिजभवनसिधारी कहिसीताबिधिभा
प्रतिकूला मिलिहिनपावकमिटिहिनसूला देखीअतप्रगटगगनअंगारा अव
निनआवतएकोतारा पावकमयससिश्रवतनआगी मानहुमोहिजानहतभा
गी सुनहिबिनयममबिटपअसोका सतनामकरहरममसोका नूतनकिसल
यअनलसमाना देहिअगनिजनिकरहिनिदाना देखीपरमबिरहाकुलसीता सो
छिनकपहिकलपसमबीता २६ सो कपिकरिहिदेबिचारदीनमुद्रकाडार
तब जनुअसोकअंगारदीनउठकरिगहिउ २७ चौ तबदेखीमुद्रकामनो

९

राम ५ — राम ५

हर रामनामअंकतअतिसुंदर चकितचितवमुद्रीपहिचानी हर्षविषादहृदे
अकुलानी जितिकोसकैअजैरघुराई मायातेअसिरचिनहिंजाई सीतामनबि
चारकरनाना मधुरबचनबोल्योहनुमाना रामचंद्रगुनबर्नैलागा सुनतहि
सीताकरिदुखभागा लागीसुनैश्र[illegible]वनमनलाई आदिहुतेसबकथासुनाई
श्रवनामृतजिहकथासुहाई कहीसोप्रगटहोइकिनभाई तबहनुमंतनिकट
चलिगयो फिरिबैठीमनबिसमैभयो रामदूतमैमातजानकी सतसपथकरुनानि
धानकी एहमुद्रकामातमैआनी दीनरामतुमकहसहिदानी नरबानरहिसं
गकहुकैसे कहीकथाभैसंगमजैसे ॥ दो ॥ कपिकेबचनसप्रेमसुनिउपजाम
नविस्वास जानामनक्रमबचनएहिकृपासिंधकरदास ॥ चौ ॥ हरिजनजान
प्रीतअतिगाढी सजलनैनपुलकावलबाढी बूडतबिरहजलधहनुमाना भ
योतातमोकोजलजाना अबकहुकुसलजाउबलिहारी अनुजसहितसुखभव
नखरारी कोमलचितकृपालरघुराई [illegible] ॥ कपिकेहिहे
तधरीनिठुराई सहजबानसेवकसुखदाइक कबहुकसुरतकरतरघुना
इक कबहुँनैनममसीतलताता होइहैनिरखस्याममृदगाता बचननआवैनैनभ
रैवारी अहहनाथहौनिपटबिसारी देखिपरमबिरहाकुलसीता बोलाकपि

चन

मृदवें बिनीता मातकुसलप्रभुअनुजसमेता तवदुषदुषीसुकृपानिकेता जनजननी
मानहुजीअऊना तुमतेप्रेमरामकेदूना दो॰ रघुपतिकरसंदेससोअबसुनुजन
नीधरधीर असकहिकपिगदगदभयोभरेविलोचननीर ३१ चौ कहेउरामवि
योगतवसीता मोकहुसकलभएविपरीता नवतरुकिसलमनहुकृशानु कालनिशा
समनिशससिभानु कुवलयविपनकुंतवनसरिसा वारदतपततेलजनुवरसा जे
हितरहेकरततेईपीरा उरगस्वाससमत्रिविधसमीरा कहेहुतेकुछदुषघटि
नहिहोई काहेकहोइहजाननकोई ततप्रेमकरिममअरुतोरा जानतप्रियए
कमनमोरा सोमनसदारहततोहिपाही जानप्रीतरसुइतनेमाही प्रभुसंदेस
हृदै सुनतवैदेही मगनप्रेमतनसुधनहितेही कहिकपिहृदैधीरधरुमाता सुमरुरामसे
वकसुषदाता उरआनउरघुपतिप्रभुताई सुनिममवचनतजहुकदराई ३२ दो॥
निशाचरनिकरपतंगसमरघुपतिवानकृशानु जननीहृदैधीरधरजरेनिशाचर
जान ३३ चौ जोरघुवीरहोतसुधपाई करतेनहिविलंवरघुराई रामवानरवि
उदएजानकी तमवरूथकहिजातधानकी अबहिमातुमैजोउलवाई प्रभुआइ
सनहिरामदुहाई कछुकदिवसजननीधरधीरा कपनसहितआइहरघुवीरा
निशाचरमारितोहिलैजाइहै तिहुपुरनारदादिजसगैहैहि हैंसुतकपिसमतुमेहिस

राम ६ ॥

माना जातधानन्हतिन्हरखवाना मोरैंहृदैपरमसंदेहा सुनिकपिप्रगटकीन्हि
निजदेहा कनकभूधराकारशरीरा समरभयंकरअतिबलबीरा सीतामनभरोस
तबभयो पुनिलघुरूपपवनसुतलयो ३४ दो सुनुमातासाखामृगनहिंबलबु
द्धिबिसाल प्रभप्रतापतें [illegible] गरुडखाइपरमलघुब्याल ३५ चौ मनसंतोषसु
नतकपिबानी भगतिप्रतापतेजबलसानी आसिषदीनरामप्रिय जाना होहुता
तबलसीलनिधाना अजरअमरगुननिधिसुततोहू करहुबहुतरघुनाइकछो
हू करहुकृपाप्रभअसमुसनिकाना निरभरप्रेममगनहनुमाना बारबारनाइ
सपदसीसा बोलाबचनजोरकरकीसा अबकृतकृतिभयोमैंमाता आसिषतव
अमोघबिख्याता सुनहुमातमोहिअतिसैभूखा लागीदेखिसुंदरफलरूखा सुनि
सुतकरैंबिपनरखवारी परमसुभटरजनीचरधारी तिनकरभयमातामोहिना
ही जोतुमसुखमानहुमनमाही ३६ दो देखिबुधिबलनिपुनकपिकहितोजानकी
जाउ रघुपतिचरनहृदैधरितातमधुरफलखाउ ३७ चौ चल्योनाइसिरपैठा
बागा फलखाइसतरतोरनलागा रहेतहांबहुभटरखवारे कछुमारसकछु
जाइपुकारे नाथएकआवाकपिभारी तिहासोकबाटकाउजारी खाइसफलअ
रुबिटपउपारे रछकमर्दमर्दमहिडारे सुनिरावनपठएभटनाना तिनैदेखि

राम ६

गर्जैहनुमाना सबरजनीचरकपिसंघारे गएपुकारतकछुअधमारे पुनिपठ
येउतिहंअछकुमारा चलासंगिलैसुभटअपारा आवतदेखिविटपगहितर्जा
ताहिनिपातमहाधुनिगर्जा ३८ दो कछुमरेसकछुमरदेसकछुमिलऐसिधरि
धूरि कछुपुनिजाइपुकारएप्रभमर्कटबलिभूरि ३९ चौ सुनिसुतबधलंकेस
रिसाना पठइसिमेघनादबलवाना मारसिजिनसुतबांधेसुताही देखीयेकपि
हिकहाकरआही चलाइंद्रजितअतुलितजोधा बंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा
कपिदेखादारुनभटआवा कटकटाइगर्जाअरुधावा अतिबिसालतरएकउ
पारा बिरथकीनलंकेसकुमारा रहेमहाभटताकेसंगा गहिगहिकपिमर
देनिजअंगा तिनहनिपाततताहिसनबाजा भिरेजुगलमानहुगजराजा मुष्ट
मारिचढातरुजाई ताहिएकछिनमूरछाआई उठिबहोरकीनसिबहुमाया जी
तनजाइप्रभंजनजाया ४० दो ब्रह्मअस्त्रतिहसांधिआकपिमनकीनविचार जो
नब्रह्मसरमानोंमहिमामिटैअपार ४१ चौ ब्रह्मबचनमानेनहिजोऊ रामच
नतेबमषसोऊ ब्रह्मबानकपिकउतेहमारा परतीबारकटकसंघारा तेहदे
खाकपिमूरछतभयो नागपासबांधिसलैगयो जासुनामजपुसुनउभवानी
भवबंधनकाटैनरज्ञानी तासदूतकिबंधतरुआवा प्रभकारजलगीकप
हिबंधावा कपिबंधनसुनिनिसचरधाइ कौतकलागीसभासभआए द

समबैसमादीखकापैजाई कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई करैजोरेसुरदिसप
बिनीता भर्कुटबिलोकतसकलसभीता देखीप्रतापनकपिमनसंका जिमअहि
गनमैगरडअसंका ४२ दो कपहिबिलोकदसाननबिहसकहिदुरबाद सुतब
धसुरतकीनपुनिउपजाहदैबिषाद ४३ चौ कहिलंकेसकवनतेकीसा केहकै
बलघालेहिबनखीसा कीधौश्रवनसनेनहीमोही देखौअतिअसंकस
ठतोही मारेनिसाचरकेहअपराधा कहुसठतोहिनप्रानकैबाधा सुनिरा
वनब्रह्मंडनिकाया पाइजासबलबिरचतमाया जाकेबलबिरंचिहरईसा पा
लतसृजतहरतदससीसा जाबलसीसधरतसहसानन अंडकोससमेतगि
रकानन धरैजबिबिधदेहसुरत्राता तुमसेसठन [illegible]
[illegible]ावनदाता हरकोदंडकठनजेहभंजा तोहिसमेतन्रपदलमदगं
जा षरदूषनत्रि[illegible]सरबाली बधसकलअतुलबलसाली ४४ दो जोकेबलल
वलेसतेजितेउचराचरझारि तासदूतमैजासकीहरआनेउप्रियानारि ४५ चौ
जानउमैतुमारप्रभुताई सहसबाहसनपरीलराई समरबालसनकरजस
पावा सुनिकपिबचनबिहसबहरावा षायोफलप्रभुलागीभूषा कपिसुभा
इतेतोरेरूषा सभकेदेहपरमप्रियस्वामी मारहिंकुमारगगामी जिनमोहि
मारातेमैमारे तिहपरबांधेउतनयतमारे मोहिनकछुबांधेकीलाजा की

राम ७ राम ७ सिरी मोह

नचहौंनिजमनकरिकाजा बिनतीकरौंजोरिकररावन सुनऊमानतजिमोरसिषा
वन देषऊतुमनिजकुलहिबिचारी भ्रमतजभजऊभगतिभैहारी जाकेडरअति
कालडराही जोसुरअसुरचराचरषाही तासौंबैरकबऊंनहिकीजै मोरेकहे
जानकीदीजै ५६ दो प्रनतपालरघुनाइककरनासिंधषरारि गएसरनप्रभराष
हैंतवअपराधबिसारि ५७ चौ रामचरनपंकजउरधरऊ लंकाअचलराजतुमकर
ऊ रिषिपुलस्तजसुबिमलमयंका तिहससिमऊजनिहोऊकलंका रामनाम
बिनिगिरानसोहा देषिविचारत्यागमदमोहा बसनहीननहिसोहसुरारी स
भभूषनभूषतवरनारी रामविमुषसंपतिप्रभुताई जाइरहीपाईबिनुपाई
सजलमूलजिनसरितननाही बरषगएपुनितबहिसुषाही सुनिदसकंठक
होपुनिरोपी बिमुषरामत्रातानहिकोपी संकरसहस्रहरिअजतोही सकहिन
राषरामकरिद्रोही ५८ दो मोहमूलबऊसूलप्रदत्यागऊतमअभिमान भज
ऊरामरघुनाइककृपासिंधभगवान ५९ चौ जदपकहीकपिअतिहितबा
नी भगतिबिबेकविरतनयसानी बोलैबिहसमहाअभिमानी मिलेहमहिसमुह
कपिगुरबडग्यानी मृतनिकटआईसठतोही लागसिअधमसिषावनमोही
उलटाहोइकहैहनुमाना मतिभ्रमतोहिप्रगटमैजाना सुनिकपिबचनब

रुतत्तिसमाना बेगन हरउ सद्ध करि प्राना सुनत निशाचर मारन धाए सचिव
राम नसहित विभीषन आए नाइ सीस करि बिनय बहूता नीतिविरोध न मारीये दूत
आन दंड कछु करीय गुसाई समहीकहा मंत्र भल भाई सुनत बोल्लबिहसि दस राम
८ केघर अंग भंग करिपठइ बंदर ५० दो कपिकी ममता पुछपरि सब हि कहै
समझाई तेल बोर पट बांध पुनि पावक दे लगाई ५१ चौ पुछ हीन बंदर ति ८
हजाइह तब सठ निज नाथहि ले आइह जिन केकीन सबहुत बडाई देखो मे
तिनकी प्रभुताई बचन सुनत कपि मन मुसकाने भई सहाइ सारद मै जाने जा
तुधान सुनि रावन बचना लागे रचन मूढ सोई रचना रहा न नगर बसन
घृत तेला बाढी पुछ कीन कपि खेला कौतक कै आए पुरबासी मारहि चरन क
रहि बहु हासी बाजहि ढोल देहि सब तारी नगर फेर पुनि पुछ प्रजारी पावक
जरत देखि हनुमंता भयो परम लघु रूप तुरंता निबुक चढ्यो कपि कनक अटा
री भई सभीत निशाचर नारी ५२ दो हरि प्रेरित तिह अवसर चले मरत उनचा
स अटहास करि गर्जो कपि बढि लाग अकास ५३ चौ देह बिसाल परम हरूआ
ई ~~[illegible]~~ मंदर ते मंदर चढ धाई जरे नगर भा लो
क बिहाला झपट लपट बहु कोट कराला तात मात हा सुनै पुकारी इह अ

बसरकोहमेंउबारी हमुरोकलायहिकथिनहितोही बालवरूपधरैसरकोही सा
घमबत्ताकरैफल्लोभेसा जैरैनगरमनाथकरीजैसा जारानगरसैमबइकमहि
एकविभीषनकरगृहजाही प्रबलमनलाधीवहत्नतजरैतो गमीविचारजीयामे
मेषपैठो ताकरिदूतमनतजिहसबजा जरानसोतिहकपनगर्जा उलटपलट
लेकासमजारी कूदपरापुनिसिंधमंजारी ५४ दो पछकबुजाईबोइस्रमधरल
घुकरूपबहोर जनिकसुताकेमागेठाढभयाकरीजोरि ५५ चौ मातमोहिदीजैकछु
चीना जैसेरघुनाइकमोहिदीना चूडामणिउतारतबदयो हरषसमेतपवन
सुतलयो कहियोतातअसमोरप्रनामा सबप्रकारप्रभुपूर्नकामा दीनदयालवि
रदसंभारी हरहुनाथममसंकटभारी ताकसुतकथासुनाइहु बानप्रताप
प्रभुसमुझाइहु मासदिवसमहुनाथनआवा तौपुनिमोहिजीअतनहिपावा क
हुकपिकिहिविधराखउंप्राना तुमहुतातकहतअबजाना तोहिदेखिसीतलभई
छाती पुनिमोकोंसोईदिनसोईराती ५६ दो जनकसुतहिसमुझाइकरिबहुविध
धीरजदीन चरनकमलसिरनाइकपिगवनरामपहिकीन ५७ चौ चलतमहाधु
निगरजसभारी गर्भस्रवैसुनिनिशचरनारी लांघिसिंधइहपारैआवा सबदकिल
किलाकपिनसुनावा हर्षेसबबिलोकहनुमाना नूतनजनमकपिनतबजाना
मुखप्रसंनतनतेजबिराजा कीनरामचंद्रकीकाजा मिलेसकलअतिभएसुखारी॥

तलफतमीनपावजनवारी चलेहरषरघुनायकपासा पूछतकहतनवलइत
हासा तबमधुवनभीतरसबआए अंगदसंमतमधुरफलखाए राषवारेजब
वर्जईलागे मुष्टप्रहारहनतसभभागे ५८ दो जाइपुकारेतेसबेवनउजारजुवरा
ज सुनिसुग्रीवहर्षकपिकरिआएप्रभकाज ५८ चौ जोनहोतसीतासुधपाई मधु
वनकेफलसकहिकिषाई यहिविधमनविचारकेराजा आइगएकपिसहतस
माजा आइसबननावापदसीसा मिलेसबनअतिप्रेमकपीसा पूछीकुसलकुस
लपददेषी रामकृपा भाकाजविशेषी नाथकाजकीनोहनुमाना राषेसकलक
पनकेप्राना सुनिसुग्रीवबहुरतेहमिल्यो कपनसहतरघुपतिपहिचल्यो रा
मकपनजबआवतदेषा कीयेकाजमनहर्षविशेषा फूटकसिलाबैठेदोउभाई
परेसकलकपिचर्ननिहिजाई ६० दो प्रीतसहतसभभेटएरघुपतिकर्नापुंज
पूछीकुसलनाथअबकुसलदेषिपदकंज ६१ चौ जांमवंतकहिसुनिरघुराया
जापरेनाथकरहुतुमदाया ताहिसदासुभकुसलनिरंतर सुरिनरमुनिप्रसं
नताहिपरि सोईविजयीविनयीगुनसागर तासुसुजसत्रिलोकउजागर प्रभ
कीकृपाभयोसभकाज जनमहमारसुफलभैआज नाथपवनसुतकीनजुकर
नी सहससुमुखनजाइसोवर्नी पवनतनयकेचरतसुहाए जांमवंतरघुपत
हिसुनाए सुनतकृपानिधमनअतिभाए पुनिहनुमानहर्षहीयेलाए कहोतात

राम ५

केहि भांतिजानकी रहितकरतरछास्वप्रानकी ६२ दो नामपाहरूदिवसनिसध्यान
तुमाराकपाट लोचननिजपदजंत्रितजाहिप्रानकेहिबाट ६३ चौ चलतमोहिचू
डामनदीन्ही रघुपतिहृदैलाइसोईलीन्ही नाथजुगललोचनभरिबारी बच
नकहेकछुजनककुमारी अनुजसमेतगहेहुप्रभुचरना दीनबंधुप्रनतारतह
रना मनक्रमबचनचरनअनुरागी केहिअपराधनाथहौंत्यागी अवगुनएक
मोरमैमाना बिछुरतप्राननकीनपयाना नाथसोनैनन्हिकोअपराधा निसरत
प्रानकरहिहठिबाधा बिरहअगनितनतूलसमीरा स्वासजरैछिनमाहिस
रीरा नैनस्रवहिजलनिजहितलागी जरैनपावदेहबिरहागी सीताकीअति
बिपतिबिसाला बिनेकहेभलदीनदयाला ६४ दो निमषनिमषकरुनानिधिजा
हिकलपसमबीत बेगचलीऐप्रभुआनीऐभुजबलखलदलजीत ६५ चौ सु
निसीतादुखप्रभुसुखऐना भरिआएजलराजिवनैना बचनकाइमनममगतिजा
ही सपनेहुबूझीऐबिपतिकिताही कहिहनुमंतबिपतप्रभुसोई जबतवसुमर
नभजननहोई केतकबातप्रभजातधानकी रिपुहिजीतआनबीजानकी सुनिक
पितोहिसमानउपकारी नहिकोईसुरनरमुनितनधारी प्रतउपकारकरौंका
तोरा सनमुखहोइनसकतमनमोरा सुनसुततोहिउरिनमैनाही देषेंक

५

रिविचारमनमाही उपजैपुनिकपिचिंतवसरत्राता लोचननीरपुलकअति
गाता ६६ दो सुनिप्रभुबचनबिलोकमुखगातहरषहनुमंत चरनपरेउप्रेमा
कुलत्राहित्राहिभगवंत ६७ चौ बारबारप्रभुचहैउठावा प्रेममगनतेहउठब
नभावा प्रभुकरपंकजकपिकेसीसा सुमरिसोदसामगनगौरीसा सावधान
मनकरिपुनिशंकर लागेकहनकथाअतिसुंदर कपिउठाइप्रभुहृदेलगावा क
रगहिपरमनिकटबैठावा कहुकपिरावनपालितलंका केहबिधिदहेउदुरग
अतिबंका प्रभुप्रसन्नजानाहनुमाना बोलाबचनबिगतअभिमाना साखामृ
गकेबडुमनुसाई साखातेसाखापरिजाई नाघिसिंधहाटकपुरजारा निशिच
रगनवधिबिपनउजारा सोसबतवप्रतापरघुराई नाथनकछूमोरप्रभुताई
६८ दो ताकोप्रभुकछुअगमनहिजापरतुमअनुकूल तवप्रभाउबडवानलहि
जारिसकैखलतूल ६९ चौ नाथभगतिअतिसुखदाइनी देहुकृपाकरिअन
पाइनी सुनिप्रभुपरमसरलकपिबानी एवमस्तुतबकहेउभवानी उमाराम
सुभाउजेहजाना ताहिभजनतजिभाउनआना इहसंबादजासुउरआवा रघु
पतिचरनभगतिसोईपावा सुनिप्रभुबचनकहैकपिब्रिंदा जयजैजयकृपा
लसुखकंदा तबरघुपतिकपिपतिहिबुलावा कहाचलेकरकरहुबनावा॥

अबबिलंबकेहिकारनकीजै तुरतकपिनकोआइसदीजै कौतकदेखिसुमनबहु 20
बर्षी नभतेभवनचलेसुरहर्षी ३० दो कपिपतिबेगबुलाए आए जूथपजू
थ नानाबर्नअतुलबलबानरभालबिरूथ ३१ चौ प्रभपदपंकजनावहिंसी
सा गरजहिंभालमहाबलकीसा देखीरामसकलकपिसेना चितैकृपाकरिराज
वनैना रामकृपाबलपाइकपिंदा भएपछयुतमनहुंगिरिंदा हर्षरामतबकी
नपयाना सगनभएसुंदरसुभनाना जासुसगलमंगलमयकीती तासुपयानसगु
न[illegible]एहनीती प्रभपयानजानावैदेही फरकबामअंग
जनुकहिदेही जोईजोईसगनजानकीहोई असगनभयोरावनहिसोई चला
कटककोबरनैपारा गर्जहिबानरभालअपारा नखआयुधगिरपादपधारी
चलेगगनमहिइछाचारी केहरनादभालकपिकरही डगमगाइदिग्गजचिकरही
३२ छंद चिंकरहिंदिगजडोलमहिगीरलोलसागरखरभरे मनहर्षदिनकरि
सोमसुरमुनिनागकिंनरदुखटरै कटकटहिमर्कटभटबहुकोटिकोटनधावही
जयरामप्रबलप्रतापकोशलनाथगुनगनगावही सहिसकनभारउदारअहि
पतिबारबारहिमोहीए गहिदसनपुनिपुनिकमठपृष्टकठोरसोकिमसोहीए
रघुबीररुचिरप्रयानप्रस्थितजानिपरमसुहावनी जनकमठखपरसरप
[illegible] राजसोलिखतअबचलपावनी ३३ दो यहिबिध

जाइकृपानिधिउतरेसागरतीर जहँतहँलागेखान फलभालुविपुलकपिबी

राम र ७४ चौ उहाँनिशाचररहैससंका जबतेजारिगयोकपिलंका निजनिजगृहसब राम

करैविचारा नहिंनिशाचरकुलकेरउवारा जासुदूतवलिवर्ननजाई तेहिआएपुर

११ कौनभलाई दूतनसनसुनिपुरजनवानी मंदोदरीअधिकाअकुलानी रहसिजोरि ११

करिपतिपदलागी बोलीवचननीतिरसपागी कंतकरषहरिसनपरिहरहु

मोरकहाअतिहितहियधरहु समुझतजासुदूतकीकरनी श्रवैंगर्भरजनीच

रघरनी तासुनारिनिजसचिववुलाई पठवहुकंतजोचहहुभलाई तवकुल

कमलविपिनदुखदाई सीतासीतनिसासमआई सुनहुनाथसीताविनुदीने

हितनतुम्हारशंभुअजकीने ७५ दो राममानअहिगनसरिसनिकरनिशाचरभे

२ क जबलगिग्रसतनतबलगिजतनकरहुतजिटेक ७६ चौ श्रवनसुनीसठताक

रिबानी विहसाजगतविदितअभिमानी सभैसुभाइनारिकरिसांचा मंगलमहु

भयमनअतिकाचा जौआवैमर्कटकटकाई जीयाविचारनिशाचरखाई कंप

हिलोकपजाकीत्रासा तासुनारिसभीतवडहासा असकहिविहसताहिउरलाई

चल्योसभाममताअधिकाई मंदोदरीहृदैकरिचिंता भयोकंतकरविधविपरीता

वैठेसभाखवरिअसपाई सिंधुपारसेनासमआई वूझसिसचिवउचितमत

कहहु तेसवहसेमष्टकररहहु जितेसुरासुरतवश्रमनाही नरबान

रिपुकेहलेषेमाही ७७ दो सचिवबैदगुरतीनजौप्रियबोलैभयआस राजधर्मतनती 22
नकरिहोइबेगहीनास ७८ चौ सोईरावनकहुबनीसहाई अस्तुतिकरहिसु
नाइसुनाई अवसरजानविभीषनआवा भ्राताचरनसीसतिहनावा पुनिसिर
नाइबैठिनिजआसन बोलाबचनपाइअनुसासन जौकृपालपूछहुमोहिबाता
मतिअनरूपकहौहितताता जौआपनचहौकल्याना सुजससुमतिसुभग
तिसुषनाना सोपरनारिलीलारगुसाई तजौचौथकेचंदकिनाई चौदहभु
वनएकपतिहोई भूतद्रोहतिष्टैनहीसोई सोसर्बग्यज्ञानकिनहोऊ गुनसाग
रनागरनरजोऊ अलपलोभभलकहैनकोऊ विसनीसम[illegible]पायनकोऊ स
तपुरानवेदकहदोऊ सबजसमीतचराचरदोऊ ७९ दो कामक्रोधमदलोभस
बनाथनरककेपंथ सबपरहरिरघुबीरहिभजहुभजहि[illegible]जेहिसंत ८०
चौ तातराममनहिनरभूपाला भवनेसरकालहुकरकाला ब्रह्मअनामयअजभ
गवंता ब्यापकअजितअनादिअनंता गोद्विजधेनदेवहितकारी कृपासिंधमानुषत
नधारी जनरंजनभंजनषलब्राता देवधर्मरछकसुनिभ्राता ताहिवैरतजनायहु
माथा प्रनतारतभंजनरघुनाथा देहुनाथप्रभकहुवैदेही भजहुरामबिनहेतु
सनेही सरनगएप्रभुकाहिनत्यागा विस्वद्रोहकृतअघजेहिलागा जासुनाम

छियतापनसावन सोइ प्रभ प्रगट समझु जिय रावन ८१ दो बार बार पद लाग
उं बिनै करौ दससीस परहर मान मोह मद भजहु कौशलाधीस ८२ दो मुनि पु
लसत निज सिष सन कहि पठई यह बात तुरत सो मै प्रभु सन कही पाइ सुअ
वसर बात ८३ चौ माल्यवंत अति सचिव सयाना तासु बचन सुनि अति सुष माना
तात अनुज तव नीत बिभीषन सो उर धरहु जो कहत बिभीषन रिपु उतकर्ष क
हत सठ दोऊ दूरि न करहु इहां है कोऊ माल्यवंत ग्रह गयो बहोरी कहै बिभी
षन पुनि कर जोरी सुमति कुमति सब के उर रहहीं नाथ पुरान निगम अस कहहीं
सुमति तहां संपति सुष नाना जहां कुमति तहं बिपति निदाना तव उर कुमति ब
सी बिप्रीता हित अनहित मानहु रिपु प्रीता कालरात निशाचर कुल केरी तिह
सीता पर प्रीत घनेरी ८४ दो तात चरन गहि मागौं राषहु मोर दुलार सीता
देहु राम कहु अहित न होइ तुम्हार ८५ चौ बुध पुरान श्रुति संमत बानी क
ही बिभीषन नीत बषानी सुनत दसानन उठा रिसाई षल तोहि निकट मृत्यु अ
ब आई जिअसि सदा सठ मोर जिआवा रिपु कर पछ मूढ तोहि भावा कहसि
न षल अस को जग माही भुज बल जाहि जिता मै नाही मम पुर बसि तपसिन प
र प्रीती सठ मिलु जाइ तिनहु कहु नीती अस कहि कीन्हसि चरन प्रहारा अनुज गहे

स

24

पद बारंबारा उमा संत कै हैए हबड़ाई मंद करत जो करै भलाई तुम्ह पितु सरिस
भलेहि मोहि मारा रामु भजें हित नाथ तुम्हारा सचिव संग लै नभ पथ गयो स
बै सुनाइ कहत अस भयो ८६ दो रामु सत्य संकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि मै
रघुबीर सरन अब जाउं देहु जनि षोर ८७ चौ अस कहि चला विभीषन जबही
आइ हीन भए सब तबही साधु अवग्या तुरत भवानी कर कल्यान अखिल कै हानी
रावन जबहि विभीषन त्यागा भयो विभव बिनु तब हि अभागा चल्यो हर्षि रघुना
इक पाही करत मनोरथ बहु मन माही देषौ जाइ चरन जलजाता अरुन मृदुल से
वक सुषदाता जे पद परसि तरी रिषिनारी दंडक कानन पावनकारी जे पद ज
नकसुता उर लाए कपट कुरंग संग धर धाए हर उर सर सरोज पद जेई अहो
भाग मै देषहु तेही ८८ दो जिन पाइन के पादुकन भरत रहे मन लाइ ते पद आ
ज बिलोकहौ इन नैनन अब जाइ ८९ चौ इहि बिधि करत सप्रेम विचारा आयो स
पदि सिंधु इहि पारा कपिन विभीषन आवत देषा जाना कोउ रिपु दूत विसेषा ता
हि राषि कपीस पहि आए समाचार सब ताहि सुनाए कहि सुग्रीव सुनहु रघुरा
ई आवा मिलन दसानन भाई कहि प्रभु सषा बूझिए काहा कहि कपीस सुनहु
नरनाहा जानि न जाइ निसाचर माया कामरूप कि हि कारन आया भेद हमार लेन

राम 25

सोऊआवा राषीयेबांधमोहिअसभावा सषानीततुमनीकबिचारी ममपनसर
नागतिभयहारी सुनिप्रभबचनहरषहनमाना सरनगतिवछलभगवाना ४० राम
दो सरनागतिकहुंजेतजहिंनिजअनहितअनमान तेनरपावरपापमयतिन
हिविलोकतहानि ४१ चौ कोटिविप्रबधलागहिंजाहू आएसरनतजउनहिंताहू १३
सनमुषहोइजीवमुहिजबही जनमकोटिअघनासहितबही पापवंतकरस
हजिसुभाऊ भजनमोरितेहिभाउनकाहू जोपैदुष्टहृदैसोईहोई मोरेसनमु
षआवकिसोई निर्मलमनजनसोमोहिपावा मोहिकपटछलछिद्रनभा
वा भेदलेनपठवादससीसा तबहिनकछुभैहानकपीसा जगमैसषानि
शाचरजेते लछमनहनैनिमषमहितेते जोसभीतआवासरनाई रषहौता
हिप्रानकीन्याई ४२ दो उभयभांतितेहिआनहुहसकहकृपानकेत जयकृपा
लकहिकपिचलेअंगदहनुसमेत ४३ चौ सादरितेहिआगेकरिबानर चले
जहांरघुपतिकरुनाकर दूरहितेदेषेदोउभ्राता नैनानंददानकेदाता बहुरिरा
मछबिधामबिलोकी रहिउठठटकइकटकपलरोकी भुजप्रलंबकंजारुनलोचन
स्यामलगातिप्रनतभयमोचन सिंघकंधआयतउरसोहा आननअमितमद
नमनमोहा नैननीरपुलकतिअतिगाता मनधरिधीरकहीमृदबाता नाथ

26

दसाननकरीमैभ्राता निशाचरबंसजनमसुरत्राता सहजपापप्रियतामसदेहा ज
थाउलूकहितमपरनेहा ४४ दो श्रवनसुजसुसुनिआयोप्रभभंजनभवभीर त्राह
त्राहिआरतहरनसरनसुषदरघुबीर ४५ चौ असकहिकरतदंडवतदेषा तुर
तउठेप्रभुहर्षविशेषा दीनबचनसुनिप्रभुमनिभावा भुजविशालगहिहृदैलगा
वा अनुजसहतमिलिढिगबैठारी बोलेबचनभक्तिभैहारी कहिलंकेससहितप
रवारा कुसलकुठाहरबासतुम्हारा षलमंडलीबसहुदिनराती सषाधर्मनिबहै
केहिभांती मैजांनोतुम्हारसबरीती अतिनैनिपुननभावअनीती बरुभलवासन
रककरताता दुष्टसंगिजिनदेहुबिधाता अबपददेषिकुसलरघुराया जोतुमकी
नजानजनदाया ४६ दो तबलगिकुसलनजीवकहुसपनेहुनहिबिश्राम जब
लगिभजतनरामकहुसोकधामतजिकाम ४७ चौ तबलगिहृदैबसतषलनाना
लोभमोहमछिरमदमाना जबलगिउरनबसतरघुनाथा धरेचापसायककटिभाथा
ममतातरुनतमीअंधियारी रागद्वेषउलूकसुषकारी तबलगिबसतजीवमनमा
ही जबलगिप्रभुप्रतापरबिनाही अबमैकुसलमिटेभयभारे देषिरामपदक
मलतुम्हारे तुमक्रपालजापरअनुकूला ताहिनव्यापत्रिविधभवसूला मैनिशा
चरअतिअधमसुभाऊ सुभआचारनकीनकाऊ जासरूपमुनिध्याननआवा

27

तिन्हप्रभुहर्षहृदैमुहिलावा ४८ दो अहोभागममअमितअतिरामकृपासुखपुंज
देखेउंनैनविरंचिशिवसेव्यजुगलपदकंज ४९ चौ सुनहुसखानिजकहौंसुभा
उ जानभुसुंडिसंभुगिरिजाऊ जोनरहोइचराचरद्रोही आवैसभैसरनतकिमोही
तजिमदमोहकपटछलनाना करौंसद्यतिहसाधुसमाना जननीजनकबंधु
सुतदारा तनधनभवनसुहृदपरवारा सबकैममताताग्बटोरी ममपद
मनहिबांधबरडोरी समदर्शीइछाकछुनाही हर्षसोकभयनहिमनमाही अ
ससज्जनममउरबसकैसे लोभीहृदैबसेधनजैसे तुमसारषेसंतप्रियमोरे
धरौंदेहनहिआननिहोरे १०० दो सगुनउपासकपरहितनिरतनीतदृढनेम
तेनरप्रानसमानममजिनकेद्विजपदप्रेम १०१ चौ सुनिलंकेससकलगुन
तोरे तातेतुमअतिसयप्रियमोरे रामबचनसुनिबानरजूथा सकलजैयकृपा
बिरूथा सुनतविभीषनप्रभुकैबानी नहिअघातश्रवनामृतजानी पदांबुज
गहिबारहिबारा हृदैसमातनप्रेमअपारा सुनहुदेवसचराचरस्वामी प्र
नतपालउरअंतरजामी उरकछुप्रथमबासनारही प्रभुपदप्रीतसरितसो
बही अबकृपालनिजभगतिपावनी देहुसदाशिवमनभावनी एवमस्तु
कहिप्रभुरनधीरा मांगातुरतसिंधुकरनीरा जदपसखाइछानाही मोरद

सुअमोघजगमाहि असकहिरामतिलकतेहिसारा सुमनब्रिष्टिनभभईअपारा १२
दो रावनक्रोधअनलनिजस्वाससमीरप्रचंड जरतविभीषनराषादीनेउराज
अषंड १३ दो जोसंपतिशिवरावनहिदीनदएदशमाथ सोईसंपदाविभीषन
हिसकुचदीनरघुनाथ १४ चौ असप्रभुछाडिभजहिजेआना तेनरपसुबिनुपू
छविषाना निजजनजानिताहिअपनावा प्रभुसुभाउकपिकुलमनभावा पु
निसर्बज्ञसर्बउरबासी सर्बरूपसबरहितउदासी बोलेबचननीतिप्रतिपाल
क कारनमनुजदनुजकुलघालक सुनुकपीसलंकापतिबीरा केहिबिधितरी
अजलधिगंभीरा संकुलमकरउरगझषजाती अतिअगाधदुस्तरसबभां
ती कहलंकेससुनहुरघुनाइक कोटिसिंधुसोषकतवसाइक जद्यपितदपि
नीतिअसिगाई विनयकरीअसागरसनजाई १५ दो प्रभुतुम्हारकुलगुरजल
धिकहिहिउपायबिचारि विनप्रयाससागरतरहिसकलभालुकपिधारि १६
चौ सखाकहितुमनीकउपाई करीअदैवजौहोइसहाई मंत्रनयहिलछिमनम
नभावा रामबचनसुनिअतिदुषपावा नाथदैव[illegible]करीकवनभरोसा सो
षीअसिंधुकरीअमनरोसा कादरमनकहुएकअधारा दैवदैवआलसीपु

राम

१५

कहा सुनित बहसि बोले रघुबीरा ऐसेहीकरबधरऊमनधीरा असकहिप्रभुअन
जहिसमझाई सिंधुसमीपगएरघुराई प्रथमप्रनामकीनसिरनाई बैठेपुनित
टदर्भडसाई तबहिंबिभीषनप्रभुपहिंआए पाछैरावनदूतपठाए ९७ दो सक
लचरितितनदेखाधरेकपटकपिदेह प्रभगुनहृदैसराहिहिसरनागतपरने
ह ९८ चौ प्रगटबखानेरामसुभाऊ अतिसप्रेमगाबिसरिदुराऊ रिपकेदूतक
पिनतबजाने सकलबांधकपीसपहिंआने कहिसुग्रीवसुनऊसबबानर
अंगभंगकरिपठऊनिशाचर सुनिसुग्रीवबचनकपिधाए बांधकटक
चऊपासफिराए बऊप्रकारमारनकपिलागे दीनपुकारततदपनत्यागे जो
हमारहरनासाकाना तेहिकौशलाधीसकीआना सुनिलछमनसबनिकटबु
लाए दयालागिहसितुरतछुडाए रावनकरदीदेऊएहपाती लछमनबचन
बांचकुलघाती ९९ दो कहिऊमुखागरमूढमनममसंदेसउदार सीतादे
ऊमिलऊनतआवाकालतुमार १०० चौ तुरतनाइलछमनपदमाथा चले
दूतबरनतगुनगाथा कहतरामजसलंकाआए रावनचरनसीसतिननाए
बिहसदसाननपूछीबाता कहसिनसुकआपनिकुसलाता पुनिकहिखबरबि

न

राम

१५

भीषनकेरी जातिभ्रीतपाशीप्रतिनेरी करतराजलंकेसठत्यागी होइहिजर
करकटिप्रमभागी पुनिकहिभालकीसकटकाडी कठनेकालप्रेरतचलेगाडी
जिनकेजीवनकरिरखवारा भयोमृदलचितसिंधविचारा कहतपमनकेबात
बहोरी जिनकेहृदेत्रासनअतिमोरी १११ दो कैतशीभेटिकेफिरगएश्रवनस
ननतजसमोरि कहिसनपदलतेजबलबहुतचकतचिततोरि ११२ चौ नाथ
कृपाकरिसबहुजैसे मनहुकहत्क्रोधतजतैसे मिलाजाइजबमनजतमारा
ताजहिरामतिलकतिनमारा रावनदूतहमहिसनिकाना कपनबांधदेनउ
दुषनाना श्रवननासकाकाटिहिलागे रामसमपथदीनेहमत्यागे पूछउ
नाथरामकटिकाडी बदनकोटिशतबर्ननजोडी नानाबर्नभालकपिधारी विकटि
ननविसालभयकारी जेहपुरदहिउहतोसततोरा सकलकपिनमहितेहबल
थोरा अमितनामभटकठिनकराला अमितनागबलविपुलविशाला ११३ छंद
बहुरूपवनचरजूथअतिबलसेनवर्ननतनहिबनै स्यामादिप्रबगौरादिप्रौ
अकनादिमुषिकोसकअगनै अतिकोपदतीउछकानयदंतकरधरमधरा इह
भांतिप्रबलप्रतापरघुपतिदीपहोबहुबंदरा ११४ दो दुविदमयंदनीलनल
अंगदगदविकराल दधिमुखकेहरिकुमदगवजामवंतबलरास ११५ चौ ए
कपिसबसुग्रीवसमाना इनसमकोटिनगनइकोनाना रामकृपाअतुलब

राम
१६

न्हतिनही त्रिनसमानत्रैलोकहिगनही असमैश्रवनसुनादसकंधर पदमअठा
रहजूथपबंदर नाथकटकमहिसोकपिनाही जोनतुमैजीतैरनमाही परमक्रो
धमीजहिसबहाथा आइसपैनदेहरघुनाथा सोषैसिंधसहितझषब्याला पु
रहिनतभरिकुधरबिसाला मर्दिगर्दमिलवहिदससीसा ऐसेहीबचनकहिस
बकीसा गर्जहितर्जहिसहजअसंका मानहुग्रसनचहततहैलंका ११६ दो सह
जसूरकपिभालसबपुनिसिरपरप्रभुराम रावनकालकोटकहुजीतसकहि
संग्राम ११७ चौ रामतेजबलबुधबिपुलाई शेषसहसशतसकैनगाई सक
सरएकसोषिसतसागर तवभ्रातहिपूछेउनयनागर तासबचनसुनिसाग
रपाही मांगतपंथकृपामनमाही सुनतबचनबिहसादससीसा जोअसिम
तिसहाइकृतकीसा सहजभीरुकरबचनदृढाई सागरसनठानीमचलाई मू
ढमृषाकाकरसिबडाई रिपबलबुधथाहमैपाई सचिवसभीतविभीषनजा
के बिजैबिभूतकहाजगताकै सुनिखलबचनदूतरिसबाढी समयविचारप
त्रिकाकाढी रामानुजदीनीइहपाती नाथबचाइजुडावहुछाती बिहसबांमक
रलीनीरावन सचिवबोलसठलागबचावन ११८ दो बातनमनहिरिझा
इसठजनघालकुलखीस रामविरोधनउबरेसिसरनबिस्नुअजईस

राम
१६

११९ दो॰ कीतजिमानअनुजइवप्रभुपदपंकजभृंग होहिकिरामसरानलख
लकुलसहितपतंग १२० चौ॰ सुनतसभयमनमुखमुसकाई कहतदसानन
सबहिसुनाई भूमिपराकरगहतअकासा लघुतापसकरबागबिलासा कहसु
कनाथसतसबबानी समुझउछाडुप्रकृतिअभिमानी सुनउबचनममपर
हरिक्रोधा नाथरामसनतजउबिरोधा अतिकोमलरघुबीरसुभाऊ जद्यपिअखि
ललोककरराऊ मिलतकृपातुमपरप्रभुकरही अपराधनकेउधरही ज
नकसुतारघुनाथहिदीजे इतनाकहामोरप्रभुकीजे जबतिहकहादेउबैदे
ही चरनप्रहारकीनसठतेही नाइचरनसिरचलासोतहां कृपासिंधुरघुना
इकजहां करप्रनामनिजकथासुनाई रामकृपाआपनगतिपाई रिषिअग
स्तकाश्रापभवानी राछसभयोरहामुनिज्ञानी बंदरामपदबारंबारा मुनिनिज
आश्रमकोंपगधारा १२१ दो॰ बिनैनमानतजलधजडगएतीनदिनबीत बोले
बल रामसकोपतबभैबिनहोइनप्रीत १२२ चौ॰ लछमनबानसरासनआनु सो
षोवारधिबिसिखकृसानु सठसनबिनैकुटलसनप्रीती सहजकृपनसनसुंदरनी
ती ममतारतसनज्ञानकहानी अतलोभीसनबिरतबखानी क्रोधहिसमकाम
हिहरिकथा ऊसरबीजबएंफलजथा असकहिरघुपतिचापचढावा एहम
तिलछमनकेमनभावा संधानेउप्रभुबिसिखकराला उठीउदधउरअंतरज्वाला॥

मकरउरगजषगननाअकुलाने जरतजंतजलनिधजबजाने कनकथारभरिमनि
गननाना बिप्ररूपआएतजमाना १२३ दो काटेहिपइकदलीफरैकोटिजतनको
उसींच बिनैनमानखगेससुनडाटेहिपइनवनीच १२४ चौ सभैसिंधगहिपद
प्रभकेरे छिमहुनाथसबअवगुनमेरे गगनसमीरअनलजलधरनी इन
केनाथसहजजडकरनी तवप्रेरतमायाउपजाए स्रिष्टहेतुसबग्रंथनगाए प्रभ
आइसजेहिकहजसअहई सोतिहभांतिरहैसुखलहई प्रभभलकीनमोहिसिख
दीनी मरजादापुनितुमरीयकीनी ढोलगवारसूद्रपसुनारी सकलताडनाकेअ
धिकारी प्रभप्रतापमैंजाबसुखाई उतरैकटकनमोरबडाई प्रभआज्ञाअपेल
स्रुतिगाई करौंसोबेगजोतमहिसोहाई १२५ दो सुनतबिनीतबचनअतिक
हक्रिपालमुसकाइ जेहबिधउतरैकपिकटकतातसोकहहुउपाइ १२६ चौ
नाथनीलनलकपिदोउभाई लरकाईरिषिआसिषपाई तिनकेपरसकीएगिर
भारे तरहिजलधप्रतापतुमारे मैपुनिउरधरिप्रभप्रभताई करहौंबलअनुमा
नसहाई इहबिधिनाथपयोधबधाईऐ जेहसुजसलोकतिहगाईऐ एहिसर
ममउतरतटबासी हतहुनाथखलनरअघरासी सुनिक्रिपालसागरम
नपीरा तुरतहिहरीरामरनधीरा देखिरामबलपौरषभारी हरषपयोनि
धभयोसुखारी सकलचरितकहिप्रभहिसुनावा चरनबंदपाथोधसिधावा॥

राम

१८

१२७ छंद निजभवनगवनेसिंध श्रीरघुपतिहियहिमतिभायो यहिचरतकलिम
लहरजथामतिदासतुलसीगायो सुखभवनसंसयसमनदवनविषादिरघु
पतिगुनगना तजिसकलआसभरोसगावहिसुनहिसंततसठमना १२८
दो सकलसुमंगलदायकरघुनायकगुनगान सादरसुनहितेतरहिभवसिं
धुबिनाजलजान॥१२९॥ इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुष
विध्वंसनेज्ञानसंपादिनीनामपंचमोसोपानः ५ शुभमस्तु संवत १८५९

अथसुंदरकांडुसमापतं॥

शुभमस्तु

राम

जी

३४

१८

A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 464 (Part 5) Subject Ramayana

Name of MSS Ramcharit Manas

Author Tulsidas

Period

Folios 34

Script Devnagiri

Source Kapoor, Jalandhar City

Missing Folios

श्यामवर्णे

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीरामाय नमः श्रीरामानुजाय नमः॥ जानकीवल्लभाय नमः॥ श्लोक॥ ॥

ॐ रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं॥ योगेंद्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं॥ मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं॥ वंदे कुंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं॥१॥ शंखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्मांबरं॥ कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियं॥ काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं॥ नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं मन्मथारिं॥२॥ यो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं॥ खलानां दंडकृद्योसौ शंकरः शं तनोतु मे॥३॥ ॐ रामाय नमः॥

दोहा॥ लव निमेष परवान जुग बरख कल्प सर चंड॥ भजसि न मन तिहि राम कहु काल जासु कोदंड॥१॥ सोरठा॥ सिंधु बचन सुन

लं. १

2

रामसचिवबोलप्रभअसकह्यो॥ अबविलंबकिहकामकरहुसेतु
उतरेकटकआप॥ सोरठा॥ सुनहुभानकुलकेतुजामवंतकरजोर
कहहि॥ नाथनामतवसेतुनरचढभवसागरतरहि॥६॥ चौपई॥
यहिलघुजलधितरतकतिवारा॥ असहसुनपुनिकहिपवनकु
मारा॥ प्रभप्रतापवडवानलभारी॥ सोष्योप्रथमपयोनिधि
वारी॥ तवरिपुनारिरुदनजलधारा॥ भरयोवहुरमयोतिहखारा॥
सुनअतिउकुपवनसुतकेरी॥ हर्खेकपिरघुपतितनुहेरी॥ जा
मवंतबोलेद्वैभाई॥ नलनीलहिसबकथासुनाई॥ रामप्रताप
सुमरमनमाही॥ करहुसेतुप्रयासकछुनाही॥ बोललयेकपि
निकरबहोरी॥ सकलसुनोविनतीकछुमोरी॥ रामचर्नपंकज
उधरहू॥ कौतकएकभालुकपकरहू॥ धावहुमर्कटविकटव
रूथा॥ आनहुविटपगिरनकेजूथा॥ सुनकपभालुचलेकरिहू

हा ॥ जै रघुवीर प्रताप समूहा ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ अति उतंग तरु सैल गन ल-
लीलहि लेहि उठाइ ॥ आन देहिं नल नील कहुं रचहिं ते सेतु वनाइ
॥ ८ ॥ चौपई ॥ सैल विसाल आन कपि देही ॥ कंदुक इव नल नी-
ल ते लेही ॥ देष सेतु अति सुंदर रचिना ॥ विहस कृपानिध वोले
वचना ॥ परम रम्य उत्तम यह धरनी ॥ महिमा अमित जाइ न
हि वरनी ॥ करहौं इहां शंभु की थपना ॥ मोरे हिरदे परम कल्पना
॥ सुन कपीस वहु दूत पठाए ॥ मुनवर सकल वोल लै आए ॥ लि-
ग थाप विधवत कर पूजा ॥ शिव समान प्रय मोहि न दूजा ॥ शिवद्रो-
ही मम भक्त कहावा ॥ सो नर सपनेहु मोहि न भावा ॥ शंकर विमु-
ष भक्त चहि मोरी ॥ सो नर की मूढ मति थोरी ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ शंकर
प्रय मम द्रोह पुनि शिवद्रोही मम दास ॥ ते नर करहि कल्प भर
घोर नर्क मह वास ॥ १ ॥ चौपई ॥ जे रामेश्वर दर्शन करहैं ॥ ते तनु

२
ले॰ नजिहरलोकसिधईहैं॥ जोगंगाजलुआनचढावै॥ सोसायुजमु
क्तिनरूपावै॥ होयअकामजेछलुतजसेइहि॥ भक्तिमोरितेहिशं
करदेवहि॥ ममकृतसेतुजुदर्शनकरही॥ सोविनुश्रमभवसा
गरतेही॥ रामवचनसवकेजीयभाऐ॥ मुनवरनिजनिजआश्र
मआए॥ गिरजारघुवकीयहरीती॥ संततकरहिंप्रणतपरप्री
ती॥ वांधासेतुनीलनलनागर॥ रामकृपाजसुभयोउजागर
वूडहिआनहिवोरहिजेई॥ भएउपलवोहितसमतेही॥ महमा
यहनजलधिकेवनी॥ पाहनगुननकपनकेकनी॥१॥ दोहरा
श्रीरघुवीरप्रतापतेसिंधुतिरेपषान॥ तेमतमंदजोरामतज
भजहिजाइप्रभआन॥२॥ चौपई वांधसेतुसुदृढवनावा
देषकृपानिधकेमनभावा॥ चलीसेनकछुवर्निनजाई॥ गर्जह
मर्कटभटसमुदाई॥ सेतुवंधढिगचढरघुराई॥ चितेकृपाल

सिंधु बहुताई॥ देषन को प्रभु करुणा कंदा॥ प्रगट भए सब जलचर बृं
दा॥ नाना मकर नक्र झख ब्याला॥ शत योजन तनु परम बिशाला॥
ऐसेउ एक तिन्हहि जे षाही॥ एकन्ह के डर तेउ डेराही॥ प्रभुहि बिलो
कहि टरहि न टारे॥ मन हरषित सब भए सुखारे॥ तिन्ह के ओट न देषि
य बारी॥ मगन भए हरि रूप निहारी॥ चला कटक कछु बरनि न जाई
॥ को कहि सकक कपि दल बिपुलाई॥ ३॥ दोहरा॥ सेतुबंध भइ भीर अ
ति कपि नभ पंथ उड़ांहि॥ अपर जलचरन्हि पर चढ़ि चढ़ि पारहि जांहि
॥ ४॥ चौपई॥ अस कौतुक बिलोकि दोउ भाई॥ बिहसि चले कृपाल र
घुराई॥ सेन सहित उतरे रघुबीरा॥ कहि न जाइ कपि जूथप भीरा
॥ सिंधु पार प्रभु डेरा कीना॥ सकल कपिन्ह कहुँ आयसु दीना॥ खाहु
जाय फल फूल सुहाए॥ सुनत भालु कपि जहं तहं धाए॥ सब
तरु फरे राम हित लागी॥ ऋतु अनऋतु कालहि गत त्यागी॥

३ लं.

खाहिं मधुर फल बिटप हिलावहि ॥ लंका सन्मुष शिषर चलावहि ॥
जहिं जहिं फिरत निशाचर पावहि ॥ घेरत सकल बहु नाच नचावहि ॥ द
सनन्ह काटनास सका काना ॥ कहि प्रभु सुजस देहि तव जाना ॥ जिन
कर नासा कान निपाता ॥ तिन रावनहि कही सब बाता ॥ सुनत स्र
वण वारिधि बंधाना ॥ दशमुख बोलु उठा अकुलाना ॥१५॥ दोहरा ॥
बांधो जलनिधि नीरनिधि जलधि सिंधु वारीस ॥ सत्त तोयनिधि कंप
ति उदधि पयोनिधि नदीस ॥१६॥ चौपई ॥ व्याकुलता निज समुझ बहो
री ॥ बिहसि चला गृह कर मत भोरी ॥ मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो ॥
कौतुकही पाथोधि बंधायो ॥ कर गहि पतिहि भवन निज आनी ॥
बोली परम मनोहर बानी ॥ चरन नाय सिरु अंचरु रोपा ॥ सुनहु बचन
पिय परहरि कोपा ॥ नाथ बैर कीजे ताही सो ॥ बुधि बल सकी ये जीत
जाही सो ॥ तुमहि रघुपतिहि अंतर कैसा ॥ खलु खद्योत दिनकुर

6

२

हिजैसा॥ अतवलुमधिकैटभजिन मारे॥ महावीर्दितसुतसंघा
रे॥ जिहबलबांधसहंसभुजुमारा॥ सोअवतरयोहएंमहिभारा
॥ ताहुविरोधुनाकीजियनाथा॥ कालकर्मगतिजांकेहाथा॥१७॥
दोहरा॥ रामहिसौपोजानुकीनायकमल्यदमाथ॥ छतकौरा
जुहमर्पबनजाथभजियरघुनाथ॥१८॥ चौपई॥ नाथदीनदया
के लरघुराई॥ बाढोंहनुमुषगएनखाई॥ चाहियकनेसोसबकवी
ते॥ तुमसुरअसुरचेराचरजीते॥ अंतकहेअसनीतदशानन॥१
चौथेपनुजावैनृपकानन॥ तासुभजनकीजियतिहभर्ता॥ जो
कर्ता पालकसंहर्ता॥ सोरघुबीर्प्रणतअनुरागी॥ भजोनाथम
मतासबत्यागी॥ मुनवर्जैतनकहंजिहलागी॥ भूपराजतजहो
हिविरागी॥ सोकौशलाधीसरघुराया॥ आएकर्नेतोहिपरदा
या॥ जौपीयमानहुमोसिखावन॥ होहसुजससतिहुपुअंतपाव

पु.
लं.

8

ना॥१९॥ दोहा॥ अस कहि लोचन बारि भरि गहि पद कंपत गात॥ नाथ भजो र
घुबीर पद मम अहिवात न जात॥२०॥ चौपई॥ तब रावण मय सुता उठाई
॥ कहै लाग खल निज प्रभुताई॥ सुनु तै प्रिया बृथा भय माना॥ जग
जोधा को मोहि समाना॥ वरुण कुबेर पवन जम काला॥ भुज बल
जिते सकल दिगपाला॥ देव दनुज नर सब बस मोरे॥ कवण हेतु
उपजा भय तोरे॥ नाना विधि तेहि कहसि बुझाई॥ सभा बहोरि बैठ सो
जाई॥ मंदोदरी हृदे अस जाना॥ काल विवस उपजा अभिमाना
॥ सभा आय मंत्रिन तिह बूझा॥ करवै कवन विधि रिपु से जूझा॥
कहै सचिव सुनु निशचर नाहा॥ बारबार प्रभ पूछहु काहा॥ कहो क
वन भय करिय विचारा॥ नर कप भालु अहार हमारा॥२१॥ दोहा॥
वचन सबन को श्रवण सुन कह प्रहस्त कर जोर॥ नीत विरोध न
करिय प्रभ मंत्रिण मति अति थोर॥२२॥ चौपई॥ कहे सचिव सव

सा

ठकुरसुहाती॥ नाथ न पूर आव इहि भांती॥ वारिधि लांघि एक क
पि आवा॥ तासु चरित मन महुं सब गावा॥ छुधा न रहि तुमहि
तब काहू॥ जारत नगर कस न धरि खाहू॥ सुनत नीक आगे दुख
पावा॥ सचिवन असि मत प्रभुहि सुनावा॥ जेह्नि वारीस बंधायो हिवा
हेला॥ उतरे सेन समेत सुवेला॥ सो हम मनुज खाव किस
भाई॥ वचन कहे सब गाल फुलाई॥ सुन मम वचन तात अ
ति आदर॥ जनु मन गुणहु मोहि कर कादर॥ प्रिय वानी जे सु
न जे कहही॥ ऐसे नर निकाय जग अहिही॥ वचन परम हित
सुनत कठोरा॥ सुनहि जे कहे ते नर प्रभु थोरा॥ प्रथम वसीठ
पठो सुन नीती॥ सीता देय करहु पुन प्रीती॥ २३॥ दोहरा॥
नार पांय फिरि जांय जौ तौ न बढाय यरार॥ नाहि त सन्मुख
समर महि तात करिय हठ मार॥ २४॥ चौपई॥ यहि मति जौ

१

पृ.
सं.

मानहु प्रभ मोरा॥ उभै प्रकार सुजस जग तोरा॥ सुनत सन कह दस-
कंठ रिसाई॥ अस मत सठ किहि तोहि सिखाई॥ अबही ते उर संसै होई
॥ बेणुमूल सुत भयो घमोई॥ सुन पितु गिरा परुष अति घोरा॥ च
ला भवन कहि बचन कठोरा॥ हित मत तोहि न लागत कैसे॥ काल
बिबस कहु भेषज जैसे॥ संध्या समै जानु दससीसा॥ भवन चल्यो
निर्षत भुज बीसा॥ लंका सिषर उपर आगारा॥ अति बिचित्र तहि हो-
इ अखारा॥ बैठ जाय तिह मंदर रावन॥ लागे किंनर गंध्रब गावन
बाजहि ताल पषाउज बीना॥ निर्त करै अपछरा प्रबीना॥२५॥
दोहरा॥ सुनासीर सत सरिसो संतत करै बिलास॥ परम प्रबल रिपु
सीस पर तद्यपि नाकछु मन त्रास॥२६॥ चौपई॥ इहां सुबेल सैल
रघुबीरा॥ उतरे सैन सहित अतभीरा॥ सैल संग इक सुंदर देषी॥
अति उतंग सम सुभ्र बिसेषी॥ तहिं तरु किसल लै सुमन सुहाए॥

लछमनरचनिजहाथवछाए॥ तिहपररुचिरमृदुलमृगछा
ला॥ तिहआसनआसीनकृपाला॥ प्रभुकृतसीसकपीसउछं
गा॥ वामदहिनदिशचापनिखंगा॥ दुहकरकमलसुधारतवा
ना॥ कहिलंकेशमंत्रलगकाना॥ वडभागीअंगदहनुमाना
॥ चरणकमलचांपतविधनाना॥ प्रभुपाछेलछमणवीराशन
॥ कटनिखंगकरवाणसराशन॥ २२॥ दोहरा॥ यहिविधकरु
णाशीलगुणधामरामआशीन॥ तेनरधंनजेध्यानयहिरह
तसदालैलीन॥ २८॥ पूर्वदिशाविलोकप्रभुदेखाउदितमयंक
॥ कहतिसवैदेषोससशहिमृगपतसरिसअसंक॥ २६॥ चौपई॥
पूर्वदिशागिरगुहानिवाशी॥ परमप्रतापतेजबलराशी॥ मत्त
नागतमकुंभविदारी॥ शसकेशरीगगनवनचारी॥ विथुरेन
भमुक्ताहलतारा॥ निशासुंदरीकेशिंगारा॥ कहप्रभुशसम

५५ लं. हुकेच कताई॥ कहो काहु निज निज मति भाई॥ कहि सुग्रीव सुनो
रघुराई॥ शठ सन हि प्रगट भूमि के छाई॥ मांग्यो राहि श्रुसह कौं
हि कोई॥ उमैं हि परी स्यामता सोई॥ कोक कहि जब विधि रैनै मुष
कीना॥ सार भाग शसि के हे लीना॥ छिद्र सो प्रगट इंदु उ मांही
॥ तिहु मग देषियन में पछांहीं॥ प्रभु कहि गरल बंधु शसि केरा
॥ अति प्रिय निज उर दीन वसेरा॥ विष संयुत कर निकर पसारी॥॥
जारत विरहवंत नर नारी॥ ३॥ दोहरा॥ कहु मारुत सुत सुनो प्र
भु शसि तुम्हार प्रिय दास॥ तव मूर्ति विधि उर वसत सोय स्यामता भा
स॥ ३१॥ पवन तनै के वचन सुन विहसे राम सुजान॥ दछन
दिशा विलोक प्रभु बोले कृपानिधान॥ ३२॥ चौपई॥ देषु विभी
षण दछन आसा॥ घन घमंड दामिनी विलासा॥ मधुर मधु
र गर्जै घन घोरा॥ होय वृष्टि जनु उपल कठोरा॥ कहे विभीषण

उग्रकृपाला॥ होयनतडुतनवादिमाला॥ लंकाशिषरूचिआगा
रा॥ तहिदसकंधरदेषअषारा॥ छत्रमेघडंबरसिंधारी॥ सोजनु
जलधघटाअतकारी॥ मंदोदरिश्रवणहिताटंका॥ सोप्रभुजनुदा
मिनीदमंका॥ वाजेतालमृदंगअनूपा॥ सोरवसधुरसुनहुसुर
भूपा॥ प्रभुमुसकानसमझअभिमाना॥ चापचढायवानसंधाना
॥२३॥ दोहरा॥ छत्रमुकटताटंकतवहतेएकहीवान॥ देषतसभ
केपरेमहिमर्मनकोऊजान॥ २४॥ असकौतुककररामसरप्रवसे
आइनिषंग॥ रावणसभाशंकसबदेषमहारसभंग॥२५॥
चौपई॥ कंपनभूमनमरुतविशेषा॥ अस्त्रशस्त्रकछुनयनन
देषा॥ सोचहिसभनिजहृदयमंझारी॥ असगुनभयोभयंकभा
री॥ दशमुषदेषसभाभयपाई॥ विहसवचनकहजुगतवनाई
शिरौगिरेसंततसुभजांही॥ मुकटषिसेकसअसगुणतांही॥

लं॰ सैनसकोचनिजनिजग्रहजाई॥ गवनेभवनसकलसिरनाई॥ मं
दोदरीसोचउरवसयो॥ जवतेश्रवणफूलमहिखसयो॥ सजलनै
नकहजुगकरजोरी॥ सुनोप्राणपतिविनतीमोरी॥ कंतरामवि॰
रोधपरिहरहू॥ जानमनुजजनमनहठधरहू॥३६॥ दोहरा॥ विस्व
रूपरघुवंशमणिकरहुवचनविस्वासु॥ लोककल्पनावेदकरअंग
अंगप्रतिजासु॥३७॥ चौपई पदपातालसीसअजधामा॥ अपर
लोकअंगअंगविस्रामा॥ भ्रकुटविसालभयंककाला॥ नैनदिवा
करकचघनमाला॥ जासुघ्राणअस्वनीकुमारा॥ निशअरुदिवस
निमेषअपारा॥ श्रवणदिशादशवेदवषाणी॥ मारुतस्वासनि
गमनिजवाणी॥ अधरलोभजमदसनकराला॥ मायाहासवाहुदि
गपाला॥ आननअनलअंबुपतिजीहा॥ उतपतिपालनप्रलैस
मीहा॥ रोमराजअष्टादशभारा॥ अस्थसैलसरितानसजारा॥

उदर उदधि अधगो जातना॥ जग मै प्रभ के बहुत कल्पना॥॥१८॥ दोहा॥
अहंकार शिव बुध्य अज मन शशि चित्र महान॥ मनुज बास चराच
रै रूप राम भगवान॥१४॥ अस विचार सुन प्राणपति प्रभु सन वैर वि
हाय॥ प्रीत करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाय॥४०॥ चौपई॥॥
विहसा नारि वचन सुन काना॥ अहो मोह महिमा बलवाना॥ नारि सु
भाव सति कवि कहहीं॥ अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥ साहस अ
नृत चपलता माया॥ भय अविवेक असोच अदाया॥ रिपु कर रू
प सकल तै गावा॥ अति विशाल भय मोहि सुनावा॥ सो सब प्रिया
सहज वस मोरे॥ समझ परा प्रशाद अब तोरे॥ जान्यो प्रिया तो
र चतुराई॥ यहि विधि कहि है मो प्रभुताई॥ तव बति कही [illegible] मृग
लोचन॥ समझत सुषद सुनत भय मोचन॥ मंदोदर मन मह
अस ठयो॥ पियहि काल बस मतभ्रम भयो॥४१॥ दोहरा॥॥

15

6

लं॰ बहुविधजलपक्षिसकलनिशिप्रातभयेदशकंध॥सहितजग्रसंकर

लंकपतिसभागयोमदम्रंध॥४४॥मंत्रनसहितसलंकपतिच॰

ढेधवलरहजाय॥सकसानेकहराजसेदेषकुदलसमुदा या॥४५

चौपई॥यहजोसिंहनादकिलकाई॥तरुअरुससम्रसमानउचाई

॥सहंसकोटशतशंकसमाना॥इहकेसंगबानपर्ंमाना॥रणअ

जीतअरुअतिनिहशंका॥नादसनेकंपतहैलंका॥लागअकाश

केचूलंगरूरा॥जनुमहिपावकधनुअंकूरा॥विस्वकर्मकेसुतअ

भिमानी॥इयसागबांधाउनमानी॥वसहतामृगिकंदमोही॥

गोदावहिविमलजलयांही॥अतिबलआगेधावहवीरा॥मह

वींदौअचलगंभीरा॥समभ्रमजानेसभलीह्रा॥एद्वैसेनापतिन

लनीला॥४६॥दोहरा॥पवनअठारहकपसुदलचलइनकेभुज

छाहि॥अपनेहायेपुष्पलेरघुपतिपूजेजाहि॥४७॥चौपई॥

16

2

८

सामनाम

17

यहॱ जो आवत अचल समाना॥ चौदह ताल ऊंच परमाना॥ वासु
लिंदा के तट कहीं॥ अंबुद उपर एह संचहीं॥ तात कमल के शरीर
सदेहा॥ जनु अकाश संध्या कमेहा॥ मेदनी ह्व तैलं गहू मवाई॥ लं
का सोह चितै जनु खाई॥ तारा सुवन वालि को जायो॥ अति जु झारै
रघुपति मन भायो॥ मन्हा हि जपे रामक नाऊं॥ दिनु निश एक रहे सहे
स भाऊं॥ करे वज्र वास वक भेगा॥ उदयाचल इव उदे पतंगा॥ ॥
सेनापत एस व के आगे॥ रघुपति कृपा कत वड भागे॥ ५६॥ दोहरा॥
पांउ भूम जो चाप है पंनग होइ अकाज॥ पंच पद्म वानर हि संग यहि
अंगद जुवराज॥ ५७॥ चौपई॥ इह जो सेतु लखे तनु रेषा॥ जनु रूपेक
मैं गविशेषा॥ दीर्घ के सदा रूए भुज दंडा॥ पांडु चपल पलवंग प्र
चंडा॥ वास करे निध जल के तीरा॥ पान करे गोमत कर नीरा॥ ॥
राजा सुग्रीव क अधिकारी॥ सव चलत सूह सव रचे सवारी॥ वल

६ लं. औरुबहुनपर्वतसमाना॥इनकपुर्षार्थजगजाना॥जिहदिनजन्म्योव
लअधिकाई॥चढ्योचूगोमतकैजाई॥चंद्रहधरहगगनउछ्रय्यो
सत्रजींजनतेफिरपर्यो॥४८॥दोहरा बानरपद्मसुएकसंगसबदि
नुयाकेसाथ॥कालकुसोरनमूंजहैकुमुदअहिकपनाथ॥४९॥
चौपई॥ यहदेषहुजोषटासुहाई॥जसभभौदेकर्वहुताई॥नी
लवर्नसबेलहैगयो॥अवनअकाशएकरसभयो॥आगेपाछे
दशदिसधावहि॥शिलाशृंगतरुतोर्तआवहि॥सहशनागबलकु
लशस्माना॥सतपद्मइनकनेप्रनामा॥एकछपतकांशीकेवा
शी॥अजअजीतअचलअवनाशी॥तीछ्नदंतनषायुधधारी॥
माहिगजधर्हंतउपारी॥इनकाकेनकजूथअपारा॥धूम्रकेतुप
पालनहारा॥इतकर्ज्येष्टवंधुजाम्वंता॥जिनकेवलकओहिन
अंता॥तीनलोकसोजूझैपारै॥शंकरपरैसबेलउपारै॥वास

18

५

करेन्ह मंदाकेतीरा॥ वज्र समान अभेद शरीरा॥५०॥ दोहरा॥ राजा
कर्यहि मंत्र वरु रघुपत करि निजदासु॥ कालहु सौं रन जूझहै नैकु न
लेय उसास॥५१॥ चौपई॥ अब देषहु यहि जूथ अपारा॥ पीत वर्ण है
गरपहारा॥ बाल सरूप वंकुन सी फूटी॥ कुंकम मार दिशा जनु छू-
टी॥ चौवीस अर्बुद दहुन कर जूहा॥ शहस वृंद सब कोट समूहा॥ शि-
ला शृंग जे आगे परई॥ पावन मीज कर के कर कई॥ कंचन गिरि के रह के
वाशी॥ इन कर जूथप नाथ अवनाशी॥ अत बल वाशव कहि तकारी
॥ सुग्रीवै सखा सम भुव भारी॥ पान करहि गंगा क नीरा॥ पर्वत शृंग समा
न शरीरा॥ छिन छिन सिंहनाँ जौ होई॥ घहु गर्जत आवत है सो ईपर
दोहरा॥ जस त्रिहु गंड सु गलत गज वल कनी नह अंत॥ यह कपराज
सु केसरी जांक सुत हनुमंत॥५२॥ चौपई॥ छटा एक आवत है जूटी
॥ जनु मधु सिंधु चल्यो मित फूटी॥ भ्रम अकाश अचल अवसाने॥

उत्तरतेजनुसल्यउड्डाने॥ यहमतजूथपनाथजेअहहिं॥ अतिवलरा
जकेसंगरहहिं॥ कपकेहूपअचलअवनाशी॥ एतुयपापेत्रके
वाशी॥ अतिसुंदरओरूसमसेपच्छा॥ महावीरगवैगवच्छा॥ पीव
हितुंगमहकनीरा॥ एमर्दनगंधमादतुयवीरा॥ हस्तीसाठसहस्र स
वलजाहीं॥ इहमहिएककहौंमैताहीं॥ भेरनादसिंहकठीना॥
विक्रमशार्दूलअनुमाना॥५४॥ दोहरा॥ देवनमहिजसुसर्पतीतेज
नमहजसभान॥ पनशनामवानरलुएहअतिवलनीतमनिधान
॥५५॥ चौपई॥ यहजोकमलपत्रअतदेहा॥ जनुकैलाशशृंगके
रेहा॥ लोचनमधुपिंगुलअतिलोने॥ कामचारचितवैवहुकोने॥
लंकासोंहिलंगूरमेवाई॥ गर्जतआवैवज्रकीन्याई॥ सुरपतिकेसंगयु
द्धकोगयो॥ तबतेकामरूपयहभयो॥ एतेवासवसोजुगिताई॥ तिंह
तेयहदेवनकमोई॥ सहसकोटकपिइनकेसंगा॥ रातेपीतस्वेता

बहुरंगा॥५६॥ दोहरा॥ गिर्वरु ढाप न्ती आवते उड्डती आवै रेनु॥ तरु
नते जइ झुरुसंघ ईरतौ तनेसु खेन॥५७॥ चौपई॥ यह कपकरै षहु
तनु फेरा॥ जनु सपक्ख ट्टै चल्यो सुमेरा॥ एक वार लैका ट्टन जारी॥ पु
न गर्जत आवत इह वारी॥ जिह दिन गर्भ मे अंजनी जायो॥ वाल अरुए
लीले कहु धायो॥ तीन शहस्र जोजन उछुरयो॥ उदया चल ऊपर मे
गिरयो॥ मुहकी चोट जे वज्र प्रमाना॥ मातें हनाम धरयो हनुमाना॥
काम रूप कोटिन बल एही॥ काल कुदंड कुलश सम देही॥ वेगवं
त जस खगै ब्रुउड्डाहीं॥ बुधवंत दूत अस नाहीं॥ विद्यायठादिवा
कर्पोहीं॥ उलटी गति रव संग उड्डाहीं॥ नाक नाग नर्षुरगतिका
री॥ महा अवधत पतेज पुरारी॥ वार्द्ध लांछ्यो गोपद जैसे॥ इह
कपीस संग जरुवकैसे॥५८॥ दोहरा॥ तेजत रुनद्रुवपावके पव
न ते वेग अपार॥ कांधे लीने श्रीप्रभु पति रघुवंश उदार॥५९॥

चौपई॥अतसीवर्नकुसमतनुरेखा॥पुर्षपुरानधरेंनवेंखा॥मत्तग
यंदसुंडभुजदंडा॥धनुषबानअसिधर्नप्रचंडा॥उरविशालअत
उंन्नतकंधर॥कंबुकंठरेखाप्रसंन्नतर॥मुषछबिकोउपमाकवि
जोही॥शरदसरोजसमकैनहींसोही॥दसनपांतकीक्रांतकहै
को॥ललकतिमननपटतहिंलहेको॥देषतअधर्नकीअरुनाई॥॥
बिंबाफलहमधूकलजाई॥सुकतुंडहनाशकालजावहि॥यकेसु
कविनहिउपटतरुपावै॥सीसजटाकेमुकटवनाए॥भालविशाल
तिलकअतिभाए॥दूषणदिशलछमणबलवीरा॥वामबाहु
औप्रानशमीरा॥६॥दोहरा॥वामभागविभीषणासिरुअभिषे
कसुराज॥वीजमंत्रसमजाणहींअवशहोकरेंसुकाज॥६॥
चौपई॥अबदेषहुसेनायहआई॥जसभभींदैकर्मिहवाई
रातशेतअरुपीतरियाहा॥शिलाश्रृंगतरुवरकेछाहा॥कंन्या

एकब्रह्मउपजाई ॥ नैनमूर्ध्नेरूपलुनाई ॥ बालमाघदिनकबेल
दीना ॥ ऋतुजानेकावाशवकीना ॥ जाकेरजनवीर्डयजाये ॥ देवअं
सवानर्ह्वैआए ॥ किस्किंधाइनकुंभस्याना ॥ देवसर्तेमधुबनउ-
दयाना ॥ रिषिमूकइनकेविस्रामा ॥ चामीतनिबहेजहंरामा ॥
बालीजेष्टरामनेमारा ॥ यहसुग्रीवपराजकर्योरा ॥ ताराताहुपा
टकैरानी ॥ जिहकहँतनअंगदअभिमानी ॥ सबैलोकएकएकओरक
नाना ॥ यँकतेएकवीरबलवाना ॥ कहदसमुखबलखर्वसकतासन
कहोसुहृदपद्मकेबिलासन ॥ कहसकतानेकरोबखाना ॥ जहते
होतपद्मप्रमाना ॥ सहस्रलाखककेकोटिसुजाना ॥ शहस्रकोटि
कुशंकुसमाना ॥ शहस्रशंकुकअर्बुदएका ॥ अर्बुदशहस्रकु
बृंदविशेखा ॥ शहस्रबृंदजोहोइप्रमाना ॥ महापद्मतेकपर
माना ॥ ऐसेतेपद्मअठारहसाजा ॥ एसबबडेरामकेकाजा ॥ बीबेने

१२ लं. चौनेनविसाला ॥ कंबुकंठअतिसोतकमाला ॥ ६२॥ दोहा ॥
हलीसाठसहस्रबलसदाधर्मकेसीव ॥ स्वेतछत्रसिरसोभताय
हराजासुग्रीव ॥ ६३॥ इहविधिसकलदिखाउसकसानेकपप्र
हु ॥ गनेनरावनकालवससमहामर्बसंबहु ॥ ६४॥ सोरठा ॥ फूलेफ
लैनबैतजदपत्तघावर्षहृज़लघ ॥ मूर्षहृदैनचेतजौगुरूमिलै
विरंचसम ॥ ६५॥ चौपई ॥ इहांप्रातजागेरघुराई ॥ पूछामतसभ
सचिवबुलाई ॥ कहोबेगकाकरीयेउपाई ॥ जामवंतकहपदसिरना
ई ॥ सुनसर्वग्यसकलगुनरासी ॥ बुद्धितेजधर्मसभउरबासी ॥
मंत्रकहोनिजमतअनुसारा ॥ दूतपठाइयेबालकुमारा ॥ नीक
मंत्रसभकेमनमाना ॥ अंगदसेनकहकृपानिधाना ॥ बाल
तनैबुधबलगुणधामा ॥ लंकाजाहुतातममकामा ॥ बहुतबुझा
यतुमेकाकहऊं ॥ परमचतुरमैंजानतअहऊं ॥ काजहमारातोहिहि

तहँ होई॥ रिपु सन करेहु बतकही सोई॥१७॥ सोरठा॥ प्रभु आज्ञा धरि सी
स चरन बंदि अंगद उठेउ॥ सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु॥
॥१७॥ दोहा॥ स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दियेउ॥ अस बिचारि जुब
राज तनु पुलकित हरषित हियेउ॥१८॥ चौपई॥ बंदि चरन उर धरि प्रभुताई
॥ अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई॥ प्रभु प्रताप उर सहज असंका॥ रन बाँ
कुरा बालि सुत बंका॥ पुर पैठत रावन कर बेटा॥ खेलत रहा सो होइ गइ
भेटा॥ बातहि बात करष बढ़ि आई॥ जुगल अतुल बल पुनि तरु
नाई॥ तेहि अंगद कहुँ लात उठाई॥ गहि पद पटकेउ भूमि भवाँ
ई॥ निसिचर देषि सकल भट भारी॥ जहँ तहँ चले न सकहि पुकारी॥
एक एक सन मरम न कहही॥ समुझि तासु बध चुप करि रहही॥
भयेउ कोलाहल नगर मझारी॥ आवा कपि लंका जेहि जारी॥ अब धौं
काह करिहि करतारा॥ अति सभीत सब करहि बिचारा॥ बिनु पूछें

१३
लं॰ मुदेहिं दिखाई॥ जिसहविलोकत जाइ सुखाई॥ ६४॥ दोहा॥ गयोसभा
दर्बार तव शिमरीरामपदकंज॥ सिंहठवनइतउतचितै धीवीर बलपुंज
॥ ७०॥ चौपई तुर्तनिशाचर एकपठावा॥ समाचारोवणहिजनावा॥
सुनत विहसबोलादशशीसा॥ आनहुबोलकहाकरकीसा॥ आयसु
सुनतदूतबहुधाए॥ कपकुंजरहिबोललैआए॥ अंगददेषदशानन
वैसा॥ सहतप्राणएककज्जलगिरिजैसा॥ भुजाविटपशिरशृंगसमाना॥
रोमावलीलता जनुजाना॥ मुखनाशकानैनअरुकाना॥ गिरिकंदरा
खोहअनुमाना॥ गयोसभामननेकुनमुरा॥ बालतनैअतबलबां
कुरा॥ उठेसभासदकपकोदेषी॥ रावणउरभोक्रोधविशेषी॥ ७१॥
दोहा॥ यथामत्तगजयूथमहिपंचाननचलजाइ॥ रामप्रतापसंभा
रउवैठसभाशिरन्याय॥ ७२॥ चौपई कहदशकंधरकवनतैबंदर॥ मैर
घुबीरदूतदसकंधर॥ ममजनकहतुहरहीमिताई॥ तवहितकारनआ

सोभाई ॥ उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती ॥ शिव विरंच पूजे बहु भांती ॥ वर
पाए कीएसभ काजा ॥ जीते लोकपाल सब राजा ॥ नृप अभिमान मोह वस
किंबा ॥ हरि आनी सीता जगदंबा ॥ अब सुभ कहा सुनो तुम मोरा ॥ सम थ
पराध छमहि प्रभ तोरा ॥ दसन गहो त्रिण कंठ कुठारी ॥ परिजन सहित संग
निज नारी ॥ सादर जनक सुता करि आगे ॥ यह विधि चलहु सकल भय त्यागे
॥७३॥ दोहा ॥ प्रणतपाल रघुवंशमणि त्राहि त्राहि अब मोहि ॥ सुनत हि
आरत वचन प्रभु अभय करैंगे तोहि ॥७४॥ चौपई ॥ रे कप पोच बोल संभा
री ॥ मूढ न जानहि मोहि सुरारी ॥ कहु निज नाम जनक कर भाई ॥ तिहि नाते
मानये मिताई ॥ अंगद नाम बाल कर बेटा ॥ तासो कहूं भई तुम भेटा ॥
अंगद वचन सुनत सकुचाना ॥ हा बाली वानर मैं जाना ॥ अंगद तही बा
लक बालक ॥ उपजा वंश अनल कुल घालक ॥ गर्भ न गयो विर्यर्थ तु
ज्या मॅए ॥ निज मुख तापस दूत कहाए ॥ अब कहु कुसल बाल कहु अहई ॥

बा.
लं. विहसतवचनतब अंगद कहई॥ दिनदशगएबालपहिजाई॥ बूझेहु
कुशलसखाउरलाई॥ रामविरोध कुशलजहहोई॥ सोसमतोहितुनाइ
हसोई॥ सुनसठभेदहोयउरतांके॥ श्रीरघुवीरहृदैनहजांके॥७४॥

दोहरा॥ हमकुलघालकसत्यतुमकुल्यालकदशसीस॥ अंधोवधिरनेअस
कहहैनैनकानतववीस॥७५॥ चौपई॥ शिवविरंचसुरमुनसमुदाई॥
जाचतजासुचरनेशिवकाई॥ तासुदूतव्है हमकुलबोरा॥ अैसिहुमति
उरविहरनतोरा॥ सुनकठोरवानीकपकेरी॥ कहतदसाननननैनतरेरी॥
खलुतववकठनवचनमैसहऊं॥ नीतधर्मसबजानतअहऊं॥
कहुकपधर्मशीलतातोरी॥ हमहूसुनीकृतपरत्रियचोरी॥ देखीनैन
दूतरखवारी॥ बूडनमरहु धर्मब्रतधारी॥ काननाकाविनुभगनिनि
हारी॥ छमाकीनतुमधर्मविचारी॥ धर्मशीलतातवजगजागी॥
पावादर्शेहमहुवडभागी॥७६॥ दोहरा॥ जनिजल पाशिजढजंत

कपिसठविलोकममबाहु॥ लोकपालबलविपुलशशिग्रसनहेत
सभराहु॥२२॥ पुननमस्तसमकर्निकरकमलनिपरकरवास॥ ॥
सोभतभयोमरालइवशंभुसहितकैलाश॥१८॥ चौपाई॥ तुमरेक
टकमाहसुनअंगद॥ मोसनभिहिकवनजोधावद॥ तवप्रभुनारि
विरहबलहीना॥ अनुजतासदुषदुषीमलीना॥ तुमसुग्रीवकूलद्रु
मदोऊ॥ बंधुहमारभीरअतिसोऊ॥ जामवंतमंत्रीअतिबूढा॥ ॥
सोकहोयअबसमरारूढा॥ सिल्पकर्मजानहनलनीला॥ हैकपि
एकमहाबलशीला॥ आवाप्रथमनगरजिहजारा॥ सुनहसबोल्योबा
लकुमारा॥ सत्तवचनकहनिसचरनाहा॥ साचहुकीशकीनपुरदाहा
॥ रावणनगरअल्पकपरहहई॥ कोअससमूरखसुनैकोकहई॥ जोअति
सुभटसराहोरावन॥ सोसुग्रीवकेरलघुधावन॥ चलेबहुतसो
वीनहोई॥ पठवाखवरलैनहमसोई॥१९॥ दोहा॥ अबजान्योकप

29

दह्यो पुर बिनु प्रभु आज्ञा हु पाय॥ गयो न फिरि निज नाथ पै तेहि भय रह्यो लु-
काय॥ ८०॥ सत्त कहै दशकंठ तव मोहि न सुनि तकछु कोहु॥ कोऊ न ह-
मरे कटक अस तो सन लरत न सोहु॥ ८१॥ प्रीति बिरोध समान सन करिय
नीति अस आहि॥ जौ मृगपति बध मेडुकनि भल कि कहै कोउ ताहि॥ ८२ ॥
जद्यपि लघुता राम कहु तोहि बधे बड़ दोष॥ तदपि कठिन दसकंध सुन
छत्र जाति कर रोष॥ ८३॥ हमसे बोल्यो दसमौलि तव कपि कर बड़ गुन एक॥
जो प्रतिपाले तासु हित करै उपाइ अनेक॥ ८४॥ चौपाई॥ धन्य कीस जो
निज प्रभु काजा॥ जहँ तहँ नाचे परिहरि लाजा॥ नाच कूदि करि लोक रिझाई
॥ पति हित करे धर्म निपुनाई॥ अंगद स्वामिभगत तव जाती॥ प्रभु गु-
न कस न कहसि यह भाती॥ मै गुन गाहक परम सुजाना॥ तव कटु र-
टन करौ नहि काना॥ कहि कपि तव गुन गाहकताई॥ सत्त पवनसुत
मोहि सुनाई॥ बन विध्वंस सुत बधि पुर जारा॥ तदपि न तेहि कछु कृत

अपकारा॥ सोविचारतवबंधुनसाई॥ दशकंधमैंकीनढिठाई॥ देख्योआ
इजोकछुकपभाषा॥ तुमरेंलाजनरोषुनमाषा॥ जौअसमतपितुषा
योकीसा॥ कहअसबचनहसादशसीसा॥ पितुहषाइषातिहुपुनतो
ही॥ अबहीसमझपराकछुमोही॥८५॥ दोहरा॥ बहुतकतधनुबचनस
रहृदयदहेरिपुकीस॥ प्रतिउतरशनाशिनमनहुकाटतभटदससीस॥
॥८६॥ चौपई॥ बालविमलजसभाँजनजानी॥ हतौनतोहअधमअभिमा
नी॥ सुणरावनरावनजगकेते॥ मैनिजश्रवनसुनेनिजजेते॥ रावणए
कमहाबलगर्बी॥ जीतनचल्योसुरासुरसेबी॥ सागरउतरपारसोगयो॥
नारहूंदसोदेषतभयो॥ तिनशशिकहसपतनिपहजाहु॥ कहोकिआ
योनिसुरनाहु॥ तवमैतिनहजीतसंग्रामा॥ लैजैहौतुमकेहुनिजधा
मा॥ सुनतवचनइकजठरिसानी॥ धायचर्नयहगगनउडानी॥
गईहूर्धरधरउकजोरा॥ डारासिंधुमध्यअतजोरा॥८७॥ दोहरा॥

१९
लं. गयोअगाद्धअचेतह्वैमरैनविप्रप्रशादि॥सावधानह्वैउठचल्योपुनहियर 32
हितविखाद॥८८॥चौपई॥इकरावनकीकहौकहानी॥जीतनचल्योश
सिहअभमानी॥गयोनिकटअतिबङुहिमडाल्यो॥कांपेगातविकल
ह्वैचाल्यो॥बलहजितनइकगयोपताला॥मांषाबांधशिसुनहैशाला
॥खेलहिबालकमाईजाई॥दयालागबलदीनछुडाई॥एकबहोरिश
हस्रभुजदेषा॥धाइधराजिमजंतुविशेषा॥कौतुकलागभवनलैआवा
॥सोपुलस्तमुनिजाइछुडावा॥बहुप्रकारमुनताहिसिषावा॥गयोमपु
रिलीजनआवा॥८९॥दोहा॥एककहतमुहसकुचिअतिरहाबाल ल
कीकांख॥तिनमैरावनतैकवनसतकहौतजमाष॥९०॥चौपई॥
सुनसठसोरावनबलशीला॥हरगिरिजानुजासभुजलीला॥जान
उमापतजासुसुराई॥पूज्योजिहशिरसुमनचढाई॥शिरसरोजनि
जकरनेउतारी॥अमितवारपूजेउपुरारी॥भुजविक्रमजानहिदिग १९

पाला॥ सठ अजहूं जिन के उर शीला॥ जानहि दिग्गज उर कठिनाई॥ ज
ब जब भिरउं जाइ बरिआई॥ जिन के दशन कराल न फूटे॥ उर लागत मू
लक इव टूटे॥ जासु चलत डोलत इमि धरनी॥ चढत मत्त गज जिमि ल
घु तरनी॥ सो रावन जग विदित प्रतापी॥ सुनहि न श्रवन अलीक प्र
लापी॥२१॥ दोहरा॥ तिहि रावन कहु लघु कहै नर कर करहि बखान॥
रे कपि चपल सु अधम मति अति सब जाना तव जान॥२२॥ चौपई॥ सुन
अंगद सकोप कह बानी॥ बोल संभार अधम अभिमानी॥ सहस
बाहु भुज गहन अपारा॥ दहन अनल सम जासु कुठारा॥ जासु प
रशु सागर खर धारा॥ बूडे नृप अगनित बहु बारा॥ तासु गर्ब जिहि देखत भा
गा॥ सो नर क्यों दससीस अभागा॥ राम मनुज कस रे सठ बंगा॥ धन्वी
काम नदी पुन गंगा॥ पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा॥ अन्न दान अरु रस पी
यूखा॥ वैनतेय षग अहि सहसानन॥ चिंतामणि पुनि उपल दशा

१२ लं. नन॥ सुनमतमंदलोकवैकुंठा॥ लाभुकिरब्रुपतिभक्तिअकुंठा॥४३॥ दो॥

सोनसहततवमानमघबनुउजारपुरजार॥ कसरेसठहनुमानकप
गयोसुतवसुतमार॥४४॥ चौपई॥ सुनरावनपहेचेतुराई॥ सजशि
क्षपासिंधुरघुराई॥ जोखलभएसिरामकड्डीही॥ ब्रह्मरुद्रसकेराख
नाकोई॥ मूढमृषाजनिमारेगाला॥ रामवैरहोइसबसहाला॥
तवशिरनिकर्कपनकेआगे॥ परहैधर्नरामसलोगे॥ तेतवसिरकं
दकइवनाज्ञा॥ खेलहिभालकीसचौगाना॥ जबहिसमकौपहि
रघुनाइक॥ छूटहिअतकरालबहुसाइक॥ तवकिचलैअसगाल
तुमारा॥ असविचारभजुरामउदारा॥ सुनतवचनरावनपजेरा
जतेमहानलजनुघ्रतपरा॥४५॥ दोहरा॥ कुंभकर्नेअसबंधुमम
सुतप्रसिधशक्रार॥ मोपर्राक्रमनहसुन्योजिताचराचरझा
र॥४६॥ चौपई॥ सठसाखामगजोरसहाई॥ बांधासिंधुएहीप्रभु

ताई ॥ नाघह षग अनेक वारीसा ॥ सूर न होइ ते सुन सठ कीसा ॥
मम भुज सागर बल जल पूरा ॥ जह बूडे बहु सुर नर सूरा ॥ बीस पयोध
अगाध अपारा ॥ को अस बीर जु पावै पारा ॥ दिगपालन मै नीर भरा
वा ॥ भूप सुजस खल मोह सुनावा ॥ जौ पै समर सुभट तव नाथा ॥
पुन पुन कहस तासु गुन गाथा ॥ तौ बसीठ पठवत किह काजा ॥
रिपु ते प्रीत करत नह लाजा ॥ हरगिर मथन निरषु मम बाहू ॥ पुन सठ
कप निज प्रभुहि सराहू ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ सूर कवन रावन सरिस स्वकर काट
निज सीस ॥ हुते अनल महु बार बहु हरषत साष गिरीस ॥ २८ । चौपई
जरत बिलोके जब हू कपाला ॥ विध के लिषे अंक जे भाला ॥ नर कें क
र आपुन बध बाची ॥ हस्यो जान विध गिरा असाची ॥ सो मन समु
झि त्रास न ह मोरे ॥ लिखा बिरंच जठर मति भोरे ॥ आन बीर जे सु मम
बल आगे ॥ पुन पुन कहस लाज पत त्यागे ॥ कह अंगद सलाज ज

१८ लं गमाही॥ रावण तव समान कोनाही॥ लाजवंत तव सहज सुभाऊ॥ 36
निजमुष निज गुन कहसि न काऊ॥ सिर अरु सैल कथा चित रही॥ तांतें बा
रीस तैं कही॥ सो भुजबल राषेहु उर घाली॥ जित सहस्र बाहू बल बा
ली॥ सुनु मतमंद कहै सब कूरा॥ काटे सीस कि होयहि सूरा॥ बा
जीगर कहु कहे न बीरा॥ काटे निज कर सकल सरीरा॥९५॥ दोहा॥
जरहि पतंग विमोह वस भार वहैं खर वृंद॥ ते नहि सूर सराहीयहि
समझ देषु मतमंद॥१०॥ चौपई॥ अब जनि बाति बढाव खलु कर
ही॥ सुनु मम वचन मान परहरही॥ दसमुष मै न बसीठी आयो
॥ अस विचार रघुवीर पठायो॥ वारवार इम कहै कृपाला॥ नहि
गजार जसु वधे सृगाला॥ मन कुं समझ बचन प्रभु केरे॥ सहेउ क
ठोर बचन सठ तेरे॥ नाहि त कर मुष भंजन तोरा॥ ले जातो सीत
हि बडजोरा॥ जानो तव बल अधम सुरारी॥ सूनी हर आनी प

रनारी॥ तैनिसिचरकुलगर्बबढूता॥ मैसेवकरघुवरकरदूता॥ जौनरामअ
पमानहडरूं॥ तुम्हदेषतअसकौतककरूं॥१०१॥ दोहा॥ तोहिपटक
महिसेनहतिचौपटकरतवगाउं॥ मंदोदरीसमेतसठजनकसुत
हिलैजाउं॥१०२॥ चौपई॥ जौअसकरौंतदपिनबडाई॥ मुएबधेक
छुनहिमनुसाई॥ कौलकामबसकृपनविमूढ॥ अतिदरिद्रअ
जसीअतिबूढा॥ सदारोगबससंततक्रोधी॥ विस्नुविमुषश्रुति
संतविरोधी॥ तनुपोषकनिंदकअघखानी॥ जीवतशवसम
चौदहिप्रानी॥ असविचारिखलुबधौंनतोही॥ अबजनिरिसउप
जावसमोही॥ सुनसकोपकहनिसिचरनाथा॥ अधरदसनदसिमीज
तहाथा॥ रेकपिपोचमरनअबचहसी॥ छोटेबदनबातबडकहसी
॥कटुजलपसिजडकपिबलजाके॥ बुधबलतेजप्रतापुनताके॥
॥१०३॥ दोहा॥ अगुनअमानविचारितेहिदीनपिताबनबासु॥ ॥

१९
लं.

38

सोडुखअस्ररुजुवतीबिरहँपुनिनिसअनुदिनममत्रासु॥१०४॥ जिनकेबलकर्ग
रबतुहहकैसेमनुजअनेक॥ षैहहिनिस्चरदिवशनिसमूढसमऊतजटेरे
क॥१०५॥ चौपई॥ जबतिनकीनरामकीनिंदा॥ क्रोधवंतअतिभयौक
पिंदा॥ हरिहरनिंदासुनैजुकाना॥ होइपापगोघातसमाना॥ कटक
टानकपकुंजरभारी॥ दुहुभुजदंडतमकमहमारी॥ डोलतधर्नसभा
सदखसे॥ चलेभागभयमारुतग्रसे॥ गिरतदसाननउठेसंभारी॥
भूतलपरेमुकटअतिचारी॥ कछुबहुकर्निजसिरन्संवारे॥ कछुअंग
दप्रभपासपचारे॥ आवतमुकटदेषकपभागे॥ दिनहीलूकपर्नविधला
गे॥ कीरावनकर्कोपचलाए॥ कुलशचौंआवतअतिधाए॥ प्रभकह
हसजननहृदैडराहू॥ लूकनअसनकेतनहराहू॥ एहकिरीटदसकंध
रकेरे॥ आवतबालतनैकेप्रेरे॥१०६॥ दोहा॥ कूदगहेकपवनसुतआ
नधरेप्रभपास॥ कौतकदेखहिभालकपदिनकरसर्सप्रकास॥१०७॥

39

ऊहांसकोपदशाननहिसबसनकहतरिसाइ॥ धरोकपहिधरिमारहो
सुनअंगदमुसकाइ॥१८॥ चौपई॥ उहांकहतदसकंधरिसाई॥ धरो
ऊकपभाजनजाई॥ इहविधिबेगसुभटसभधावहु॥ खाहुभालुकप
जहितहिधावहु॥ महिहुकीसकपकरहुहाई॥ जीयतधरोतापससुयभा
ई॥ पुनसकोपबोलेजुवराजा॥ गालबजावततोहनलाजा॥ मरुगरु
काटनिलजकुलघाती॥ बलविलोकबिहरीनहीछाती॥ रेत्रियचोरकु
मार्गगामी॥ खलमलरासमंदमतिकामी॥ सन्यपातजलपशिदुर
बादा॥ छाडीतुमकुलकीमर्जादा॥ भैसकालवशिनिश्चरनाहा॥
रामविरोधयहैफलचाहा॥ यांकोफलुपावहिगोआगे॥ वानरभालु
चपेटनलागे॥ राममनुजबोलतअसबानी॥ गिरहनातुमरसना
अभिमानी॥ गिरैहैरसनासंसयनाही॥ सिरनसमेतसमरमहमा
ही॥१९॥ सोरठा॥ सोनरकितदसकंधबालबध्योजहिएकसर॥

रा॰
लं॰ वीसहुलोचनअंधधिकतवजन्मकुजातजड॥११॥तवशोणितकीप्या
सत्रषितरामसाइकनिकर॥तजौतोहितिहित्रासकटुजलपकनिस्चरअधम
॥१२१॥चौपई॥मैतवदसनतोरिबेलायक॥आयसुमोहिनदीनरघुना
यक॥असरिसहोतदसोमुषतोरें॥लंकागहिसमुद्रमहिबोरें॥गूल
रफलसमानयहिलंका॥बसहुमध्यतुमजंतअसंका॥मैबानरफल
खावनहारा॥आयसुदीननरामउदारा॥जुगतसुनतरावनमुसका
ई॥मूढसिष्योकहिबहुतझुठाई॥बालनिकबहुगालआहिमारा॥
मिलतपसुनतैभयोलवारा॥साचहुमैलवारभुजबीहा॥जौनउपार
योतौदसजीहा॥रामप्रतापसुमरकपकोपा॥सभामाझपनुकरपदरो
पा॥जौमममचरनेसकलसठटारी॥फिरहिंरामसीतामैहारी॥सुनहुसुभट
समकहदशसीसा॥पदगहिधरनिपछाहुकीसा॥इंद्रजीतआदकब
लवाना॥हर्षिउठेभटजहितहिनाना॥टारहिकरबलविपुलउपा

ई॥ पदरनटरे बैठत सिर न्याई॥ पुनउ ऊपर हिउ सब आरती॥ टरेन
की सचर्नन यह भांती॥ पुरषु कु योगी जिम उगौरी॥ मोहि विटपन
हि सक हि उपारी॥११२॥ दोहरा॥ कोट कोट घन नाद सम॥ सुभट
उठे हुषीठ॥ ऊपट हि टरेन कपचर्न पुन बैठ हि सिर न्याइ॥११३
भूमिन छाडुत कपि चर्न देषत रिपु पर भाग॥ कोट विघ्न ते संत
कर मन जिम नीत नत्या ग॥११४॥ चौपई॥ कप बल देष सकल
हिय हारे॥ उठा आपन वराज प्रचारे॥ गहि तचर्न कहि बाल कु
मारा॥ मम पद गहे न तो हउ बारा॥ गहि हि न राम चर्न कजोई
॥ सुनति फिरा मन निसकुचाई॥ भयो तेज हत श्री सभ गई
॥ मध्य दिवश जिम शशि सोहई॥ सिंहासन बैठ यो शिर न्याई॥
मानहु संपति सकल गवाई॥ जगदातम प्राणपति रामा॥ ॥
तासु विमुष किम लहि विश्रामा॥ उमा राम की भृकुट विशाला

होय विसु पुनि पावै काला ॥ तव एते कुल शकुल शनत एक कई ॥ ताहु दूत प
नु कहहु किमट रई ॥ पुनकप कही नीति विधि नाना ॥ मान न ताहि काल
नीयराना ॥ रिपु मद मथ प्रभु सुजस सुनायो ॥ यह कहि चल्यो बाल
नृप जायो ॥ हतौ न षेत षिलाय षिलाई ॥ तोहि अब बहु का करौं बडाई ॥
प्रथमहि तासु तनै कप मारा ॥ सो सुन रावन भयो दुषारा ॥ जातुधानु
अंगद पुन देषी ॥ भै व्याकुल सभ भय विशेषी ॥ १८ ॥ दोहा ॥ रिपु बल ध
रषि तह हर्ष कप बाल तनै बल पुंज ॥ सजल सलोचन पुलकित तनु गहे
राम पद कंज ॥ १८ ॥ सांझि जान दसमौल तब भवन गयो बिलषाइ ॥ मंदो
दरी निशाचरहि बहुर्क कह्यो समुझाय ॥ १९ ॥ चौपई ॥ कंत समुझ मन त
जो कुमतिही ॥ सोहन समरु तुमहि रघुपतिही ॥ रामानुज लघु रेष
षचाई ॥ सो नहि लांघहु अस मनुसाई ॥ पिय तुम ताहि जितव संग्रा
मा ॥ जांके दूत केर अस कामा ॥ कौतुक सिंधु लांघ तव लंका ॥ आयो क

पकेसरीअसंका॥ रषवारेहतविपुनउजारा॥ देषततोहिअछैतिह
मारा॥ जारनगरसबकीनसछारा॥ कहांरहाबलगर्बतुमारा॥ अब
पतिम्रषांगालजनुमारहु॥ मोर्कहाअसतहृदैबिचारहु॥ पतिर्घु
पतहिन्रपतजिनमानहु॥ अगजगनाथअतुलबलजानहु॥ बान
प्रतापजानुमारीचा॥ तासुकहामानेनहिनीचा॥ जनकसभा^
अतुलनमहिपाला॥ रहेतुमोबलविपुलविशाला॥ भंजधनुख
जानकीविवाही॥ तवसंग्रामजितहुकिनताही॥ सुर्पतिसुतजा^
नहिबलथोरा॥ राषाजीयतआंषगहिफोरा॥ सूपनखांकेग
तितुमदेखी॥ तदपिहृदयनहिलाजविशेषी॥११८॥ दोहरा॥
वधिविराधिषरदूषहिलीलाहत्योकबंध॥ बालएकसमारयो
तिहजानहुदसकंध॥११९॥ चौपई॥ जिहबलनाथबंधायोहेला
॥उतरेप्रभुदलसहतसुबेला॥ कारुनीकदिनुककुलकेतू॥ दूत

र

पठायोतवहितहेत || सभामांझजिनतवबलमथ्या || कर्वरूथमैंनगपति
जथ्या || अंगदहनुमतिअनुचरजांके || रणबांकुरेवीरअतिबांके || ति
हकोपियपुनिपुनिनरकहहू || मुधामानममतामदबहहू || अह
हकंतकृतरामबिरोधा || कालबिवसमनउपजनबोधा || कालदंड
गहकाहुनमारा || हरैधर्मबलबुद्धबिचारा || निकटकालजि
हआवैसांई || तिहभ्रमहोयतुमारिहिन्याई || १२० || दोहरा || द्वैसुत
मारेदह्योपुरु || अबहुपीयपतिदेहु || कृपासिंधरघुपतहिभ
जुनाथविमलजसुलेहु || १२१ || चौपई || नारवचनसुनविशिषस
माना || सभागयोउठहोतबिहाना || बैठाजायसिंघासनफूली
|| अतिअभिमानत्राससभिभूली || इहारामअंगदहबुलावा || ||
आयचर्नपंकजसिरुनावा || अतिआदरसमीपबैठारी || बोलेबि
हसकृपालखरारी || बालतनैइककौतकमोही || तातसत्रकहु

पूछौ तोही ॥ रावन जातु धानु कुल टीका ॥ भुज बल अचल जासु जग
लीका ॥ तासु मुकट तुम चार चलाए ॥ कहौ तात कवनै विधि पाए
सुन सखब्य प्रणत सुषकारी ॥ मुकट न होहि भूप गुन चारी ॥ साम
दाम अरु दंड विभेदा ॥ नृप उर बसै नाथ कहहि बेदा ॥ नीत धर्म के चरन
सुहाए ॥ अस जीय जान नाथ पहि आए ॥१२२॥ दोहरा ॥ धर्म हीन
प्रभपद विमुख काल विवस दससीस ॥ आए गुन तज रावणहि हुन
हु कौशलाधीस ॥१२३॥ पर्म चतुर्ता श्रवण सुन विहसे राम उदार ॥ स
माचार पुन सब कह्यो गढ को बालकुमार ॥१२४॥ चौपई ॥ रिपु के स
माचार जब पाए ॥ राम सचिव सभ निकट बुलाए ॥ लंका बांकी चा
रह्वारा ॥ किह बिध लागिय करहु विचारा ॥ तव कपीश रिक्षेस विभी
षण ॥ सिमर हृदय दिनुकर कुल भूषण ॥ कर बिचार तिह मंत्र दिढा
वा ॥ चार अनीक पकट कुबनावा ॥ जथा जोग सेनापति कीने ॥

२३
लं॰ ऋष्यमूककालबोलतवलीने॥ पूर्वद्वारअंगदबलशीला॥ दक्षिणद्वारकीहे
ननलनीला॥ पच्छिमद्वारहनुमानबिराजा॥ उत्तरद्वारप्रभुअनुजसमा
जा॥ प्रभुप्रतापकहिसमसमुझाए॥ सुनकपिसिंहनादकधोए॥।
हर्षितरामचरनेसिरुनावहि॥ गहिगिरिशिखरबीरसमधावहि॥।
गर्जेहितरजहिभालुकपीसा॥ जैरघुबीरकौशलाधीशा॥ जानतिप
रमदुर्गअतिलंका॥ प्रभुप्रतापकपिचलेअशंका॥ घटाटोपकर्चे
हुदिशघेरी॥ मुखहिनिशानबजावहिभेरी॥१२५॥ दोहा॥ जयत
रामभ्राताससहितजैकपीशसुग्रीव॥ गर्जहिकेहरनादकपिभाल
महाबलसीव॥१२६॥ चौपई॥ लंकामयोकुलाहलभारी॥ सुनत
दशाननअतिअहंकारी॥ देषहुबानरकेरिढिठाई॥ बिहसनिशा
चरसैनबुलाई॥ आएकीशकालकेप्रेरे॥ छुधावंतरजनीचरमेरे॥
असकहिअटहाससठकीना॥ गहबैठेअहारप्रभदीना॥ सुभरस

46

ल्का चारहु दिशजाहू॥ धरधर भालुकपीशनि खाहू॥ पूर्बद्वार निशा
चरबीरा॥ दक्षिणद्वार महोदर धीरा॥ पश्चिम मेघनादिकरराजा
उत्तरद्वारे आप बिराजा॥ उमा रावणहि अस्ति अभिमाना॥ जिमटि
ट्टिभ षग ऊत सुताना॥ चले निशाचर आयसु मांगी॥ गहि कर भिंडु
पाल अरु सांगी॥ तोमर मुधगर पर्स्व प्रचंडा॥ सूलकृपाण परिघ गि
रिखंडा॥ जिम अरुनोपर निकर निहारी॥ धावत सठ षग मांस
अहारी॥ चौच भंग डुख तिनहुन सूझा॥ तिम धाए मनुजाद अबूझा
॥३९॥ दोहा॥ नानायुधसर चाँप धर जातुधान बलबीर॥ कोटकं
गूर्नेच ढगए कोटि कोटि रणधीर॥४०॥ चौपई॥ कोटकंगूर्ने सो
है कैसे॥ मेरु के श्रृंग नजनु घनि जैसे॥ बाजहि ढोल निशान जुझा
ऊ॥ सुनि सुनि होत भटन मनिचाऊ॥ बाजहि फीरी भेर अपारा॥
सुन कादर उर जाहि दरारा॥ देषनि जाइ कपनि कै ठाटा॥ अति

अतिविसालतनुभालसभटा॥ धावहिगनहिनअवघटघाटा॥ पर्बत
फोरकरहिवढुवाटा॥ कटकटाइकोटनभटतर्जहि॥ दसनउोटकाटहि
अतितर्जहि॥ उतरावन इतरामदुहाई॥ जैतिजैतिजैपरीलराई॥
निसरसिषरसमूहउठावहि॥ कूदधहिकपिफेरचलावहि॥४१॥
॥छंद॥ धरकुधरषंडुप्रचंडमर्कटभालुगढपरडारही॥ ऊपटहि
चरनगहिपटकमहिभजचलतबहुरप्रचारही॥ अतितरलतरुन
प्रतापतरजहितमकिगढपरचढगए॥ कपिभालुचढमंदर्नजहि
तहिरामजसुगावतभए॥१॥ दोहरा॥ एकएकगहिरजनिचरपु
निकपचलेपराइ॥ ऊपरआपुनहेठभटगिरहिधर्नेपरआइ॥४१॥
चौपई॥ रामप्रतापप्रबलकपिजूथा॥ मरदहिनिसरनिकरबरूथा॥
चढेदुर्गपुनिजहतहबानर॥ जैरघुबीरप्रतापदिवाकर॥ चले
निशाचरनिकरपराई॥ प्रबलपवनजिमघनसमुदाई॥ हाहाका

रभयोपुरभारी॥ रोवहिंआरतबालकनारी॥ सभमिलदेहरावणहगारी॥ राजकर्तयहिमृत्युहकारी॥ निजदलविचलसुनीजबकाना॥ फेरेसुभटलंकेशरिसाना॥ जोरणविमुखफिरामैजाना॥ तिन्हमाइँकरालकृपाना॥ सर्बसुषाइभोगकरनाञ्जा॥ समर्भूमभएवल्लभप्राना॥ उगर्वचनसुनसकलसकाने॥ फिरेक्रोधकबीरलजाने॥ सनमुषसमरबीरकैसोभा॥ तवतिनतजाप्रानकरलोभा॥१३२॥

दोहरा॥ बहुआयुधधरसुभटसभाभिरहिप्रचारप्रचार॥ कीनेव्याकुलभालकपिपरिबप्रचंडनमार॥१३३॥ चौपई॥ भेआतुरकपिभागनलागे॥ जद्यपिउमाजीतहैंआगे॥ कोकहिकहिअंगदहनुमंता॥ कहनलनीलदुवदबलवंता॥ निजदलबिचलसुनीहनुमाना॥ पश्चिमद्वाररहाबलवाना॥ मेघनादसनकरैलराई॥ टूटनद्वारपरमकठनाई॥ पवनतनैमनभाअतिक्रोधा॥ गर्जाप्रबलकालस

भिजोधा॥ कूदतलंकगढऊपरआवा॥ गहिगिरमेघनादकहुधावा॥
भंज्योरथसारथीनिपाता॥ ताहिहृदेमहिमार्हिलाता॥ दूसरसूत
बिकलतिहजाना॥ स्यंदनिघालतुरतगृहआना॥१३४॥ दोहरा॥
अंगदसुनाकिपवनसुतिगयोसुदुर्गअकेल॥ समरबांकुराबालसु
ततर्केचढाकपिखेल॥१३५॥ चौपई॥ युद्धविरुद्धक्रुद्धदोबांदर॥ राम
प्रतापसुमरउरअंतर॥ रावनभवनचढेतबजाई॥ करतकोसलाधी
सदुहाई॥ कलशसहितगहिभवनढहावा॥ देषनिशाचरपतिभे
पावा॥ नारबृंदकरपीटहिछाती॥ अबकपदुयआएउतपाती॥
कपलीलाकरतिनहिडुरावहि॥ रामचंद्रकरसुजससुनावहि॥
पुनिकरगहिकंचनकेखंभा॥ कहिनिकरियउतपातअरंभा॥
कूदपरेकपिकटकमंझारी॥ लागेमर्देभुजबलभारी॥ काहुहिला
तचपेटकिकेहू॥ भजहिनरामहिसोफलुलेहू॥१३६॥ दोहरा॥

एकएकशनिमर्दनहितोरचलावहिंमुंड॥ रावनआगेपरैंतेज
नुफूटतदधकुंड॥१३७॥ चौपई॥ महामहामुषआजेपावहिं॥ ते
पगगहिप्रभुपासचलावहिं॥ कहैविभीक्षणतिनकेनामा॥ देहिरा
मतिनहूंनिजधामा॥ खलुमनुजाद्दिजामिखभोगी॥ पावैगतिजो
जाचतिजोगी॥ उमाराममृदुचितुकरुणाकर॥ वैरुभावसुमरित
मुहिनिश्चर॥ देहिपरमगतितिहनिजजानी॥ अतक्रपालकोक
हूंभवानी॥ सुनअसप्रभुनभजेभ्रमुत्यागी॥ नरमतमंदतेपरम
अभागी॥ अंगदिअरुहनुमंतिप्रवेशा॥ कीनदुर्गअसकहिअव
धेसा॥ लंकादोकपसोहैकैसे॥ मथहिसिंधुद्वैमंदरजैसे॥१३८॥
दोहरा॥ भुजबलकरिपुदलमल्योदेषदिवशकरअंत॥ कूदैयुगल
प्रयासबिनुआएजहिभगवंत॥१३९॥ चौपई॥ प्रभुपदकमलसी
सितिननाए॥ देखसुभटरघुपतिमनभाए॥ रामक्रपाकरजुगल

निहारे॥ भएविगतस्रमसबैसुषारे॥ गएजानअंगदहनुमाना॥ फिरेभा
लमर्कटभटनाना॥ जातुधानप्रदोषबलपाई॥ धाएकरदससीसदु
हाई॥ निसिचरअनीदेषिकपिफिरे॥ जहँतहँकटकटायभटभिरे॥ द्वै
दलप्रबलपचारपचारी॥ लरहिंसुभटनहिमानहिहारी॥ बीरतमी
चरसबअतिकारे॥ नानावर्णबलीमुषभारे॥ सबलजुगलदलसमब
लजोधा॥ बिबिधप्रकारभिर्तकरक्रोधा॥ प्राबिटसर्दपयोदघनेरे
लर्तमनहुमारुतकेप्रेरे॥ अनिपअकंपनअरुअतिकाया॥ विच
लतसेनकीनइनमाया॥ भयौनिमिषमहिअतिअंधिकारा॥॥
सूझनआपनिहाथपसारा॥ मारुकाटुसबकर्हिंपुकारा॥ वृष्टि
होयरुधिरोपलछारा॥४७॥ दोहरा॥ देषनैविडतमदसहुदिश
कपदलभयोषभार॥ एकहिएकनदेषतबजहँतहँकरेपुकार
॥४८॥ चौपई॥ इहसबमर्मविभीषणजाना॥ लएबोलअंगदह

नुमाना॥ समाचार सब कहि समुझाए॥ सुनत कोप कपि कुंजर धाए
॥ पुनि कृपाल हसि चाप चढ़ावा॥ पावक सायक सपदि चलावा
॥ भयो प्रकाश कतहुं तम नाहीं॥ ज्ञान उदे जिमि संशय जाहीं॥ भालु
बली मुख पाय प्रकाशा॥ धाए कोप विगत श्रम त्रासा॥ हनूमान अं
गद रन गाजे॥ हांक सुनत रजनीचर भाजे॥ भागत भट पटकहिं
धर धर्नी॥ करहिं भालु कपि अद्भुत कर्नी॥ गहि पग डारहिं सागर माहीं
॥ मकर ग्राह झख धर धर खाहीं॥ ७४२॥ दोहा॥ कछु मायल कछु
रण घिसे कछु गाडु चढ़े पराहु॥ गर्जहिं मर्कट भालु भट संग रदल रण
बिचलाइ॥ ७४३॥ चौपई॥ निशा जानु कपि चारहु अनी॥ आए तहां ज
हां कोसल धनी॥ राम कृपा कर चितवा जबहीं॥ भए बिगत श्रम बानर त
बहीं॥ उहां दसानन सचिव हकारे॥ सभ सनि कहसि सुभट जे मारे॥
आधा कटक कपिन संहारा॥ कहहु बेग का करिय बिचारा॥ माल्यवंत

अतिजर्ठनिशाचर॥ रावणमातुलमहामंत्रबर॥ बोलावचननीतअ
तिपावन॥ तातसुनोकछुमोरतिषावन॥ जबतेतुमसीताहरिआनी
॥ असगुनहोहिनाजायबषानी॥ बेदपुरानजासुजसुगावा॥ रामबि
मुषसुषकाहुनपावा॥१५४॥ दोहा॥ हिरंन्याक्षसभ्रातासहितमधुकैट
भबलवान॥ जिहमारेसोअवतर्योकृपासिंधुभगवान॥१५५॥ काल
रूपखलुबनदहिनगुनागारअनुबोध॥ जिहसेवहिशिवकमलभ
वतिहसनकवनबिरोध॥१५६॥ चौपई॥ परहरबैरदेहुवैदेही॥ भज
हुकृपानिधपर्मसनेही॥ तांकेवचनबानसमलागे॥ करिआमुष
करजाहिअभागे॥ बूढभयसिननुमारतितोही॥ अबजिननैनदि
षावसिमोही॥ तिहअपुनेमनिअसअनुमाना॥ बध्योचाहितय
हिश्रीभगवाना॥ सोउठगयोकहतिदुरबाद्॥ तवसिकोपबोल्योअ
नुनाद्॥ कौतकप्रातदेषहहुमोरा॥ करहोबहुतकहतहैंघोरा

सुनसुतबचनभरोसबछावा॥ प्रीतसमेतसांकबैठावा॥ कहतिवि
चारभयोमिनुसारा॥ लागेकपपुनिचहूंदुवारा॥ कोपकपनदुर्ब
टगढघेरा॥ नगरकुलाहलभयोघनेरा॥ बिव्याकुधघरनिश्चर
धाए॥ गढतेपर्बततिषरचलाए॥१४७॥ छन्द॥ ढाहेमहीधरसि
षरिकोटिनबिध्यबिधगोलाचलै॥ ब्रहिरातजिमपविपातगर्जित
जनुप्रलैकेबादलै॥ मरकटविकटभटजुटतसतनमुषकटतितनुज
रजरभए॥ गहिसैलतेगढपरचलावहजहसुतहनिश्चरहए॥१४८
दोहरा॥ मेघनादसुनश्रवनअसगढपुनिछेकाआइ॥ उतरदुर्गतेबी
रबरसनमुषचलाबजाय॥१४९॥ चौपई॥ कहकौसलाधीसद्वैभ्रा
ता॥ धन्वीसकललोकविष्याता॥ कहिनलनीलदुविदसुग्रीवा॥
कहअंगदहनुमतबलसींवा॥ कहांविभीषणभ्राताद्रोही॥ आजुस
बहिहठमोरेवोही॥ असकहकठनबानसंधाने॥ अतिसेकोपका

सुं. नलगताने॥ सरसमूहसोछाडेलागा॥ जनुसपच्छधावैबहुनागा॥ ज
हतहपरतिदेषअहिबनचर॥ सनमुषद्वैनसकैनिहअवसर॥ भागेभै
ब्याकुलकपरीछा॥ बिसरीसबनजुद्धकीइछा॥ सोकपिभालननेमहि
देषा॥ कीनसजिहनिप्राणअविशेषा॥१५०॥ दोहरा॥ मारिसिंदसि
दसिविशिषिसबपरेभूमिकपबीर॥ सिंहनादगर्जतमयोसेघनादरण
धीर॥१५१॥ चौपई॥ देषपवनसुतकटकविहाला॥ क्रोधवंतधायो
जनुकाला॥ महामहीधरतमकउपारा॥ अतिरिसमेघनादपरडा
रा॥ आवतदेषगयोनभसोई॥ रथसारथीतुरंगसबषोई॥ बारबार
प्रचारहहनुमाना॥ निकटआविमर्मसोजाना॥ रामसमीपगयोघ
ननादा॥ नानाभातिकहसिडरबादा॥ अस्त्रशस्त्रआयुद्धसबडारे॥
कौतुकहीप्रभुकाटिनिवारे॥ देषप्रभावमूढषिसिआना॥ करेलागमा
याविधनाना॥ जिमकोकरेगरुडसोषेला॥ डरपावैदिसिसल्यसपेला

56

२

॥१५२॥ दोहरा॥ जासुप्रबलमायाबिवसिशिवविरंचबडछोट॥ ताहि
दिषावैरजनिचरनिजमायामतिखोर॥१५३॥ चौपई॥ नभचढवर्ष
विपुलअंगारा॥ महितेप्रबलहोइजलधारा॥ नानाभांतिपिशाचिपि
शाची॥ मारुकाटधुनिबोलहिनाची॥ बिष्टापूइरुधिरकचहाडा॥
वर्षैकबहुउपलबहुछाडा॥ वर्षधूरिकीनसिअंधारा॥ सूझनिआ
पनिहाथुपसारा॥ स्रकुलानेकपमायादेषे॥ सबकरमरनबनाय
हलेषे॥ कौतकदेषसमसुस्काने॥ भएसभीतसकलकपिजाने॥ ए
कबानकाटीसबमाया॥ जिमदिनुकरहरतिमरनकाया॥ क्रपादृ
ष्टिकपभालविलोके॥ भएप्रबलरणरहैनरोके॥१५४॥ दोहरा॥
आयसुमांगेरामपहिअंगदादिकपसाथ॥ लछमनचलेसकोप
सरतिबानसरासनहाथ॥१५५॥ चौपई॥ छितजनैनउरबाहुबि
साला॥ हिमगिरनिभतनुकछुइकलाला॥ उहांदसाननसुभट

२९

लं॰ पठाए॥ नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए॥ भूधर नष बिटपायुध धारी॥॥ धाए कपि जै राम पुकारी॥ भिरहि सकल जोरहि तें जोरी॥ इत उत जै इच्छा नहि थोरी॥ मुठकन लातन दंतन काटै॥ कपि जै सील मारि पुनि डाटै॥ मारु धारु धरु धरु धरु मारू॥ सीस तोर गहि भुजा उपारू॥ असर व पूर रहा नव खंडा॥ धावहि जहि तहि रुंड प्रचंडा॥ देषहि कौतुक नभ सुर वृंदा॥ कबहु कबि स्मै कबहु अनंदा॥१५६॥ दोहरा॥

जम्यो गाढ भर भर रुधिर ऊपर धूर उडाय॥ जिम अंगार की रासि पर मतक धूम रहि छाय॥१५७॥ चौपई॥ छायल बीर बिराजत कैसे॥ कुसुमित किंसुक के तरु जैसे॥ लछमन मेघनाद द्वै जोधा॥ भिरहि परसपर कर अति क्रोधा॥ एकहि एक सकै नहि जीती॥ निसचर छल बल करै अनीती॥ क्रोधवंत तब भयो अनंता॥ भंज्यो रथ सारथी तुरंता॥ नाना विधि प्रहार कर शेषा॥ राक्षस भयो प्राण अविशेषा॥

59

रावनसुतनिजमनअनुमाना॥संकटभयोहरिहिसमप्राना॥बी
रघातनीछाडुशिसांगी॥तेजपुंजलछमनउरलागी॥मुर्छाभई
सांगकेलागे॥तबचलगयोनिकटभयत्यागे॥५८॥दोहरा॥
मेघनादसमकोटशतजोधारहेउठाइ॥जगदाधारअनंतकिम
चलैउठैषिसआया॥५९॥चौपई॥सुनगिरजाक्रोधानलजाहू॥
जारेभवनचारदशआहू॥सकैसंग्रामजीतकोताही॥सेवहिअग
जगसुरनरजाही॥इहकौतूहलजानैसोई॥जापरकृपारामकी
होई॥संध्यासमैफिरीदोअनी॥लगेसंभारनिनिजनिजधनी॥
व्यापकब्रह्मअजितभुवनेश्वर॥लछमनकहाबूझकरूनाकर॥
तवलगलैआएहनुमाना॥अनुजदेषप्रभअतिदुखमाना॥जा
मवंतुकहिवैदसुषेना॥लंकारहिकोपठियेलेना॥धरलघुरूप
गयोहनुमंता॥आन्योभुवनसमेततुरंता॥६०॥दोहरा॥रघुप

लं

तिचर्नेसरोजगहिहृनायोआनसुषेन॥ कह्यानामगिरिऔषधी। जाहुपवनसुतलेन॥१६१॥ चौपई॥ रामचर्निसरसिजउरराषी चलाप्रभंजनसुतबलभाषी॥ ऊह्यादूतइकमर्मजनावा॥ रावनकालनेमग्रहआवा॥ दसमुषकह्यामर्मतिहसुना॥ पुनपुनकालनेमसिरधुना॥ देषततुमैनगरजेहिजारा॥ तासुपंथकोरोकनहारा॥ भजरघुपतहितकरुआपना॥ तजहुनाथसबझूठाजलपना॥ नीलकमलतनुसुंदरस्यामा॥ हृदेराषुलोचनअभिरामा॥ अहंकारममतामदत्यागू॥ महामोहनिशिसोवतजागू॥ कालव्यालकरभछुकजोई॥ सुपनिहुसमरकिजीतीयसोई॥१६२॥ दोहरा॥ सुनदसकंधरिसानअतितिहमनकीनविचार॥ रामदूतकरमरोबरुइहखलुनतमहमार॥१६३॥ चौपई॥ असकहचलारचसमगमाया॥ सरमंदरबहुबागबनाया॥ मारुतसुतदेषासुभआश्रम॥ मुनहिबूझजलपयो

जायस्रम॥राक्षसबेषकपटतहसोहा॥मायापतिदूतहिचहिमोहा
जायपवनसुतनायोमाथा॥लागाकहनरामगुनगाथा॥होतमहा
रणरावनरामहि॥जितहैरामनसंसययामहि॥इहांसमैमैदेषों
भाई॥ज्ञानदृष्टिबलमुहिअधिकाई॥मांगाजलतिहिदीनकमंडु
ल॥कहिकपनहिअघाउंथोरेजल॥सरमज्जनकरआतुरआवौ
दीक्षादेहुज्ञानजिहपावौ॥१६४॥दोहरा॥सरपैठतकपपदगह्यो
मकरीतबअकुलान॥मारीसोधरदिव्यतनुचलीगगनचढिया
न॥१६५॥चौपई॥कपतवदर्शभईनिहपापा॥मिटातातमुनवर
करसापा॥मुनिनहोयइहनिस्चरघोरा॥मानहुसत्यवचनकपि
मोरा॥असकहिगईअपछराजबही॥निस्चरनिकटगयोकपितबही
॥कहहकपमुनगुरुदछणालेहू॥पाछेहमहिमंत्रतुमदेहू॥सिरलं
गूरलपेटपछाडा॥निजतनुप्रगटेसिमरतीबारा॥रामरामक

३१
लं.

हिहाडसिप्राना॥ सुनमनहर्षचलाहनुमाना॥ देषासैलनऔषध
चीना॥ सहसाकपउपारतबलीना॥ गहिगिरनिशिनभधावतभयो।
अवधिपुरीऊपरकपगयो॥१६॥ दोहरा॥ देषाभर्तविशालअतिनि
शिचरमनुअनुमानु॥ बिनुफरसरगहिमारयोचापश्रवनलगतान
॥१६१॥ चौपई॥ परोमुर्छततनुलामहेशायक॥ सुमरतिराममरामरघुना
यक॥ सुनप्रियवचनभर्तिउठधाए॥ कपिसमीरअतिआतुरआए
॥ विकलविलोककीसउरलावा॥ जागतिनहिबहुभांतजगावा॥ मु
षमलीनमनभयोदुखारी॥ कहतिवचनलोचनभरबारी॥ जहि
विधिरामविमुषमुहिकीना॥ तिहपुनिएहदारुणदुखदीना॥॥
जौमेरेमनबचअरुकाया॥ प्रीतरामपदकमलअमाया॥ तौकप
होउविगतश्रमसूला॥ जौमोपररघुपतिअनुकूला॥ सुनतिवचन
उठिबैठिकपीसा॥ कहिजैजैतिकोसलाधीसा॥१६२॥ सोरठा॥ ली

62

३१

नकपहिउरलाइतनपुलकतलोचनसजल ॥ प्रीतनहृदयसमायसु
मररामरघुपतितिलक ॥१६९॥ चौपई ॥ तातकुसलकहुसुषनिधान
की ॥ सहितअनुजअरुमातुजानकी ॥ कपसबचरितसमासब
खाने ॥ भयेदुषीमनमहुपछुताने ॥ अहिदैवमैकतजगजायो ॥
प्रभुकेएकैकाजनआयो ॥ जानकुअवसरमनधरधीरा ॥ पुनिकप
सोबोलेबलिबीरा ॥ तातगहरहोइहतवजाता ॥ काजनसाइहहो
तिप्रभाता ॥ चढममसायकसैलसमेता ॥ पठवोंतुहिजहिकृपान
केता ॥ सुनकपिमनउपजाअभिमाना ॥ मोरेभारचलहिकिमबाना
॥ रामप्रभाउविचारबहोरी ॥ बंदिचर्नकहिकपकरजोरी ॥ तवप्र
तापउरराषप्रभुसाईं ॥ जैहोंरामबानकीन्याईं ॥ भर्तहर्षतबआय
सुदयो ॥ पदसिरुनायचलतकपभयो ॥१७०॥ दोहरा ॥ तवप्रता
पुउरराषप्रभजैहैंनाथतुरंत ॥ असकहिआइसुपायपदबंद

चल्यो हनुमंत दोहा॥ भरत बाहु बल सील गुण प्रभु पद प्रीत अपार॥ जात
सराहत मनहि मन पुनि पुनि पवनकुमार॥१७२॥ चौपई॥ उहां राम लछ्म
नहि निहारी॥ बोले वचन मनुज अनुहारी॥ अर्धराति गै कपि नहि आयो
॥ राम उठाय अनुज उर लायो॥ कसहु न दुखित देष मुहि काउ॥ बंधु सदा
तव मृदुल सुभाउ॥ मम हित लागत ज्यों पितु माता॥ सह्यो विपुन हिम आ
तप बाता॥ सो अनुराग कहा अब भाई॥ उठ हिन सुन मम बच बिकुलाई
॥ जौ ज्ञान तव बन बंध बिछोहू॥ पिता वचन मन ते नह ओहू॥ सुत वित नार
भवन परवारा॥ होहि जाहि जग वार हि वारा॥ अस बिचार जीय जागहु ता
ता॥ मिले न जगत सहोदर भ्राता॥ यथा पंष विनु षग अति दीना॥ मन वि
नु फन कर बर कर हीना॥ अस मम जीयन बंधु बिन होही॥ जो जढ दैव जि
यावै मोही॥ जैहो अवध कवन मुष लाई॥ नार हेतु प्रिय बंध गवाई॥
बरु अपजस सहितेउ जग माही॥ नार हान विशेष छित नाही॥ अब अ

65

बिलोकशोकसुततोरा॥ सहहिनिठुरकठोरउरमोरा॥ निजजननीकेएककुमारा॥ तातताासुतुमप्राणअधारा॥ सौंपिसमोहितुमैगहिपानी॥ सबबिधिसुषदपरमहितजानी॥ उतरकहांदैहौंतिहजाई॥ उठिकिनमोहिसिखावहुभाई॥ बहुबिधसोचतिसोचबिमोचन स्रवतसलिलराजिवदललोचन॥ उमाएकअखंडिरघुराई॥ नरगतिभक्तिकृपालदिषाई॥१७३॥ सोरठा प्रभुबिलापसुनकानबिकलभएबानरनिकर॥ आइगयोहनुमानजिमकरुणामहुबीररस॥१७४॥ चौपई हर्षिरामभेटेहनुमाना॥ अतिकृतग्यप्रभपरमसुजाना॥ तुर्तवैद्यतवकीनउपाई॥ उठबैठेलक्षमणहर्षाई॥ हृदेलाइभेटेप्रभुभ्राता॥ हर्षेसकलभालुकपब्राता॥ पुनिकपवैद्यतहांधरआवा॥ जिहबिधतबहिताहिलैआवा॥ इहबिरतांतदशाननसुन्यो॥ अतिबिखादपुनिपुनिसिरधुनयो॥ ब्याकुलकुंभकर्नपहिंगयो॥ करबहुयतनजगावतिभयो॥ लीएनिशाचरकोटबु

लं॰ बुलाई॥ जतनकरहिबहुनाहउठाई॥ लैलैतूवेनामजगावहि॥ मुष्ला
तबहुभातिलगावहि॥ डुंदभभेरमृदंगबजावहि॥ गोमुषपणवबहुढो
लसुनावहि॥ तोमरमुद्गरवज्रप्रहारे॥ डुंतसरषड्गसरीरबिदारे॥ सैल
अनकगहसुभटलगावह॥ तितितबहुसुषगातसुषावहि॥१७५॥

दोहरा॥ गजरथसहस्त्रवरूथभटकुदलतारतिगात॥ मानहुलागपहार
शृंगबहुगुत्ताकसुषग्रात॥१७६॥

चौपई॥ लैबुलाइभारजतुतकामा॥
कोमलकरवारजिअभिरामा॥ मंदिहासकैहाघलगायो॥ उठयोमम
किअतिसैसुषपायो॥ जागानिस्त्र्चरदेषियकैसा॥ मानहुकालदेहध
रबैसा॥ कुंभकर्नबूजासनुभाई॥ काहेतवमुषसुहासुषाई॥ कथा
कहीसबतिअभिमानी॥ जिहप्रकारसीताहरआनी॥ तातकपनि
निस्त्र्चरसभमारे॥ महांमहांजोधासंघारे॥ दुरमुषसुररिपुमनुजअ
हारी॥ महाअतिकायअकंपनभारी॥ अपर्महोदरआदिकबीरा॥

66

परेसमरमहिसुभटरणधीरा॥१२७॥ दोहरा॥ सुनदसकंधरवचनतबकुं
भकर्नबिलखान॥ जगदंबाहरआनअबसठचाहतकल्याना॥१२८
॥ चौ॥ भलनकीनतैंनिसचरनाहा॥ अबमुहआनजगायहुकाहा॥
अजहुताततयागहुअभिमाना॥ भजोरामहोइहहकल्याना॥ हैद
ससीसमनुजरघुनायक॥ जांकेहनूमानसेपायक॥ अहहबंधु
तैंकीनखुटाई॥ प्रथमहिमुहनसुनायोआई॥ कीनोप्रभविरोध
तिहदेवक॥ शिवविरंचसुरजाकेसेवक॥ नारदमुनमुहिज्ञानजो
कहो॥ कहितेउंतोहसमैनिरबहो॥ रघुकुलतंशसोपरमंउदारा
॥ द्वैहैब्रह्ममनुजअवितारा॥ तिनकेहाथमरिवतुमभाई॥ नार
दगिरासत्तमयआई॥ अबभरनैनभेटमुहभाई॥ लोचनसुफ
लकरोंमैंजाई॥ स्यामगातसरसीरुहिलोचन॥ देखौजायताप
त्रैमोचन॥१२९॥ दोहरा॥ रामरूपगुनसिमरतमगनभयोछि

३४
लं. नएक॥ रावनमांग्योकोटघटमदअरुमहिषअनेक॥१८०॥ चौपई॥
महिषखाइकरमदरापाना॥ गर्जावज्रअघाततमाना॥ चलादुर्गतज
सेननसंगा॥ कुंभकर्णदुर्मतिरनरंगा॥ देषविभीषणआगेगयो॥ परद
गहनामकहतनिजभयो॥ अनुजउठायहृदैतिहलावा॥ रघुपतिभक्ति
जानमनभावा॥ तातकालरावनमुहमारा॥ कहतिपरमहितमंत्रविचा
रा॥ तिहगिलानरघुपतपहिआयो॥ दीनदेषिप्रभुकेमनभायो॥ सुनु
सुतभयोकालवसरावन॥ शोकमानअविपर्मसिखावन॥ धन्नधन्नतै
धन्नविभीषण॥ भयोताततनिसचरकुलभूषण॥ बंधुबंशतुमकीनउजा
गर॥ भज्योरामसोभागुनसागर॥१८१॥ दोहरा॥ वचनकर्ममनक
पटतजभजहुरामरणधीर॥ जाहुननिजपरसूझमुहभयोकालवस
बीर॥१८२॥ चौपई बंधुवचनसुनफिराविभीषण॥ आयोजहित्रैलो
कविभूषण॥ नाथभूधराकारसरीरा॥ कुंभकर्नआवतिरणधीरा॥

68

इतनाकपनिसुनाजबकाना॥ किलकिलायधाएबलवाना॥ लयउ
पारबिटपअरुभूधर॥ कटकटाइ ड्वाहै तांऊपर॥ कोटकोटगिरसिष
प्रहारा॥ कहिंभालकपएकहिवारा॥ मरैनमनुतहिटरैनटारा॥ जिम
गजअर्कफलनकरमारा॥ तवमारुतसुतमुष्टिकाहन्यो॥ पराधर्नेव्या
कुलसिरुधुन्यो॥ पुनिउठतिहमारयोहनुमंता॥ घूमतभूतलपर्यो
तुरंता॥ पुनिनलनीलहिअवनपछारसि॥ जहतहपटकपटकभ
टछारसि॥ चलीबलीमुषसेनपराई॥ अतिभैत्रसितिनकेसमुहाई
॥८३॥ दोहरा॥ अंगदादिकपछ्रायबसकरसोत्सुग्रीव॥ काषिदाबि
कपराजकहुचलाअमितबलसीव॥८४॥ चौपई॥ उमाकर्तिरघुप
तिकरलीला॥ खेलगरुडजिमअहिगनमीला॥ भ्रकुटभंगजोका
लहिखाई॥ तांहिकिसोहैऐसिलराई॥ जगपावनकीर्तिविस्तरहै
गायगायभवनिधनरतरहै॥ सुर्छागेमारुतसुतजागा॥ सुग्री

लं॰ वहुरितवरोजनलागा ॥ कपराजहुकेमुर्छाबीती ॥ निबुकगयोतहिम्रत
कप्रतीती ॥ काटसिदसननासिकाकाना ॥ गर्जअकाशचलातिहजा
ना ॥ गहसिचर्नधरधरनपछारा ॥ अतिलाघवउठतिहपुनिमारा ॥ पुनि
आयोप्रभुपहिबलवाना ॥ जैजैकारुकीनभगवाना ॥ नाककानकाटेजी
यजानै ॥ फिराक्रोधकरभईगिलाने ॥ सहिजभीमपुनिबिनुस्तुतिनासा
देषतकपदलउपजीत्रासा ॥ ८५ ॥ दोहरा ॥ जैजैजैरघुवंशमनधाए
कपदैहूहू ॥ एकहिवारजुतासिपरछाडनिगिरतरुजूह ॥ ८६ ॥ चौ ॥
कुंभकर्नरनरंगबिरुधा ॥ सनमुषचलाकालजनुक्रुधा ॥ कोटिकोटि
कपधरधरषाई ॥ जनुटीडीगिरगुहासमाई ॥ कोटनगहिसरीरसन
मर्दा ॥ कोटनिमीजमिलावहिगर्दा ॥ मुषनासाश्रवणनकीबाटा ॥
निसरपराहिभालुकपिठाटा ॥ रणमदमत्तनिशाचरदर्पा ॥ विश्वग्र
सहिजनुयहिविधिअर्पा ॥ मुरेसुभटसभफिरहिनाफेरे ॥ सूझननैन

सुनेनहितेरे॥ कुंभकर्नकपफौजबिडारी॥ सुनधाएरजनीचरधारी
॥देषीरामविकलकटकाई॥ रिपुअनीकनानाबिधिआई॥१८७॥
दोहरा॥ सुनसौमित्रकपीशतुमसकलसंभारहुसैन॥ मैंदेष
हुखलदलबलहिबोलेराजिवनैन॥१८८॥ चौपई॥ करसारंगविस
षिकटभाथा॥ मगपतिठवनचलेरघुनाथा॥ प्रथमकीनप्रभध
नुषटंकोरा॥ रिपुदलवधिरभयोसुनसोरा॥ सत्तसंधसांधेसरलछा
॥कालसर्पजनुचलेसपछा॥ अतिजबचलैनिसितिनाराचा॥
चलेकर्नभटविकटपिशाचा॥ कटहिचर्नउरसिरभुजदंडा॥ ब
हुतकिबीरहोहिशतिखंडा॥ घुमिरघुमिरघायलमहिपर्ही
॥उठसंभारसुभटपुनलरहीं॥ लागतबानजलदजिमगाजहि॥
बहुतकदेषकठनसरभाजहि॥ रुंडप्रचंडमुंडबिनुधावहि॥
धरुधरुमारुमारुधुनगावहि॥१८९॥ दोहरा॥ छिनमहुप्रभ

३६
लं॰

कैसायकनकाटेबिकटपिशाच॥ पुनिरघुपतिकेतूनिमहिप्र
बिसेसमनाराचि॥१९०॥ चौपई॥ कुंभकरनमनदेषविचारी॥ ह
तेनिमिषमहुनिश्चरभारी॥ भएकुधदारुणबलबीरा॥ करम्र
गनायकनादगंभीरा॥ कोपमहीधरलयेउपारी॥ डारेजाहि
मर्कटभटभारी॥ आवतदेषस्यैलप्रभुभारे॥ सनिकाटरजत
मकरिडारे॥ पुनिधनुतानकोपरघुनायक॥ छाडेअतिकरा
लबहुसायक॥ तनिमहिप्रबिसतनिसरतेजाही॥ जनुदामिन
घटमांझसमाही॥ श्रोणितस्रवतसोहितनुकारे॥ जनुकजल
गिरगेरुप्रनारे॥ विकलविलोकभालुकपिधाए॥ बिहसाजान
निकटभटआए॥१९१॥ दोहरा॥ गर्जितधाएबेगअतिकोटको
टगहिकीस॥ महिपरकेगजराजइवसपथ्यकरैदससीस
॥१९२॥ चौपई॥ भागेभालुबलीमुषजूथा॥ वृकविलोकजिस

मेघबरूथा॥ चलेभागकपिभालभवानी॥ विकलपुकारतिआरतवा
नी॥ एनिसचरदुकालसमअहई॥ कपकुलदेसपरनेअबचहई
॥ कृपावारधररामखरारी॥ पाहपाहिप्रणतार्तिहारी॥ सकरुण
बचनसुनतभगवाना॥ चलेसुधारसरासनबाना॥ रामसेननि
जपाछेघाली॥ चलेसकोपमहाबलसाली॥ खैंचधनुखशरशत
सरसंधाने॥ छूटेतीरसरीरसमाने॥ लागतसरधावारिसभरा
कुधरडगमगेडोलतधरा॥ लीनएकतिहसैलउपाटी॥ रघुकु
लतिलकभुजासोकाटी॥ धावाबामबाहुगिरधारी॥ प्रभुसोभुजा
काटमहिपारी॥ काटेभुजासोहिखलकैसा॥ पछहीनमंदरगि
रजैसा॥ उग्रविलोकनप्रभुहिविलोका॥ ग्रसनचहितमानहु
त्रयलोका॥९३॥ दोहा॥ करचिकारअतिघोरतबधावाबद
नपसार॥ गगनसिद्धसुरत्रासितसबहाहाहेतपुकार॥९४॥

३१
लं.

।चौपई। सभैदेवकरुणानिधिजानै॥ स्रवणप्रयंतसरासनतानै॥ विसिषिनिकरनिसचरमुषभरयो॥ तदपिमहाबलभूमिनपरयो॥ सरनभरामुषसनमुषधावा॥ कालत्रोणसजीवजनुआवा॥ तवप्रभकोपतीव्रसरलीना॥ अतिलाघवखलुसिरबिनुकीना॥ सोहितरूपपरयोदसाननआगै॥ बिकलभयोजिमफनिमनित्यागे॥ कटेसीसधरधावप्रचंडा॥ तवप्रभुकाटकीनदुयखंडा॥ परेभूमिजनुनभतेभूधर॥ हेठदाबकपभालुनिशाचर॥ तासतेजप्रभबदनसमाना॥ सुरमुनसमनअचंभवमाना॥ नभदुंदभीबजावहिहरषहि॥ जैजैकरप्रसूनसुरवर्षहि॥ करबिनतीसुरसकलसिधाए॥ तेहीसमैदेवरिषिआए॥ गगनोपरहरिगुनगनगाए॥ रुचिरबीररसप्रभमननिभाए॥ बेगहतहुखलइहपतिलंका॥ दूरकरोअबसमहरशंका॥ कहिनिर्मलजससुनवरगए॥

रामसमिरमहुसोभितभए॥९५॥ छंद॥ वेगहिहतोखलुबलद
लहिकहिबिमलजसमुनिवरगए॥लीनेसमातनरामकरगहि
समरमहिसोभितभए॥संग्रामभूमिबिराजिरघुपतिअतुलब
लकोसलधनी॥समबिंदमुषराजीवलोचनरुचिरतनुसोणित
कनी॥भुजजुगलफेरतिसरसरासनिभालुकपिचहुदिशिबने
॥कहिदासतुलसीकहिनसकिछबिसेषजिहआनननिघने॥९६
दोहरा॥निसचरअधममलाघतनुताहिदीननिजधाम॥गिरिजा
तेनरमंदमतिजेन भजहिश्रीराम॥९८॥चौपई॥दिनकेअंत
फिरीद्वैअनी॥समरभईसुभटनिस्रमघनी॥रामकृपाकपिद
लबलबाढा॥जिमतृणपायअनलअतिगाढा॥छीजहिनि
सचरदिनअरुराती॥निजमुषकहेधर्मजिहभांती॥बहुबिला
पदसकंधरकरही॥बंधुसीसपुनिपुनिउरधरही॥रोवहिंना

रा॰ लं॰ ३८

षरिदैहतिपानी॥ताहतेजबलविपुलबषानी॥मेघनादतिहअवसरआवा॥कहहबहुकथापितासमुझावा॥देषोकालमोरिमनुसाई॥अबहिबहुतकाकरौबडाई॥इष्टदेवसेवतिबलपायो॥सोबलतातनतोहिदिषायो॥यहिविधिजलपतभयोबिहाना॥चहुंद्वारकपलागेनाह्ना॥इतकपभालकालसमबीरा॥उतरजनीचरअतबलबीरा॥लरहिसुभटनिजनिजजयहेतू॥वरननजायसमरषगकेतू॥४९॥दो॥मेघनादमायारचीरथचढगयोअकाश॥गरज्योप्रबलपयोधजिमभईकटककपत्रास॥४९॥चौपई॥शक्तिसूलतरवारकृपाना॥अस्त्रशस्त्रकुलसायुधनाह्ना॥डारैपरसुपर्बपाखाना॥लागेवृष्टिकर्नबहुबाना॥रहेदसोदिशसायकछाई॥मानहुमहामेघझरलाई॥धरुधरुमारुसुनहिकपनाह्ना॥जोमारहितिहकोउनजाना॥गहिगिरतरुअकाशकपधावहि॥देषहितिहनदुषितफिरआवहि

अवघटघाटवाटगिरकंदर॥मायावलकीनसरपंजर॥जहांकहांव्या
कुलभएबंदर॥सुरपतिबंदपरेजनुमंदर॥मारुतसुतअंगदनलनीला
कीनेविकलसकलबलसीला॥पुनिलक्षमणसुग्रीवविभीषण॥सरनिमार
कीनसवजरजरतन॥पुनिरघुपतिसनिजूझनलागा॥सरछांडैहुइलाग
हिनागा॥व्यालपाससबसभएषरारी॥स्ववसअनंतएकअविकारी॥न
टइवकपटचरितकरनाना॥सदासुतंत्ररामभगवाना॥रणसोभा
लगिप्रभुहिबंधावा॥देषदशादेवनभयपावा॥५१॥दोहा॥जाप
तिजांकरनामुजपिमुनिकाटहिंभवपास॥सोप्रभुआवहिबंधुतब्या
पकविस्वनिवास॥५२॥चौपई॥चरितरामकेसगुनभवानी॥तरकि
नजाहिबुद्धिबलबानी॥असविचारजेतग्यविरागी॥रामहिभजहिंत
रकसबत्यागी॥व्याकुलकटककीनघननादा॥पुनभाप्रगटकहै
दुरबादा॥जामवंतकहिषलरहुठाढा॥सुनकरताहिक्रोधअत

बाढ॥ बूढ जानत्त छाडुवें तोही॥ लागसि पतत पचारै मोही॥ अस
कहतीब्र त्रिशूल चलावा॥ जामवंत कर गहि सो धावा॥ मारसि मेघना
द कै छाती॥ परा धरनि घुर्मित सुरघाती॥ पुनि रिसाइ गहि चरन फिरा
वा॥ महि पछारि निज बल दिषरावा॥ वर प्रसाद सो मरै न मारा॥ तब गहि
पद लंका पर डारा॥ इहां देवरिष गरुड पठावा॥ राम समीप सपदि सो आ
वा॥२०३॥ दोहा॥ पन्नगारि खाए सकल छिन महुं व्यालबरूथ॥ भए विगत
माया तुरत हर्षे वानर यूथ॥२०४॥ गहि गिरि पादप उपल नष धाए कीस
रिसाइ॥ चले तमीचर विकलतर गढ पर चढे पराइ॥२०५॥ चौपई॥
मेघनाद कै मुर्छा जागी॥ पितहि विलोकि लाज अति लागी॥ तुरत गयो
सो गिरि कंदरा॥ करौं अजै मष अस मन धरा॥ सो सुधि पाइ विभीषन क
हई॥ सुनहु प्रभु समाचार सत अहई॥ मेघनाद मष करै अपावन॥
षल मायावी देव संतावन॥ जो प्रभु सिद्धि होइ सो पाइहि॥ नाथ वेगि

पुजीतनजाइहु॥ सुनरघुपतिअतिसैसुखुमाना॥ बोलैअंगदादि कपनान्हा॥ लछमणसंगजाहुसभभाई॥ करहुविधंसघग्यकरजा ई॥ तुमलछमणमारहुरणतोही॥ देषतमैसुरतुषअतिमोही॥मा रहुतिहबलबुधिउपाई॥ जिहछीजहिनिस्चरसुनुभाई॥ जामवंतक पराजविभीछण॥ स्येनसमेतरहोतीनोजन॥ जबरघुपतिदीनीअ नुसासन॥ कटनिखंगकससाजसरासनि॥ प्रभुप्रतापउरधररण धीरा॥ बोलाछनइवगिरागंभीरा॥ जोतिहअसाजुबधेबिनुआवहु॥ तौरघुपतिसेवकुनकहावहु॥ जोशतशंकरकरहिसहाई॥ तदपि हतौरघुबीरदुहाई॥२०६॥ दोहरा॥ बंदिरामपदकमलजुगचल्यो तुरंतअनन्त॥ अंगदनीलमयंदनलसंगसुभटहनुमंत॥२०७॥॥ चौपई॥ जायकपनदेखासोबैसा॥ आहुतदेयरुधिरअरुभैसा॥ तबकीनसहकतयग्यविधंसा॥ जबनउठेतबकरहिपसंसा॥ तरप

नउठेधर्हिकचजाई॥ लातनहततहततचलेपराई॥ लैत्रसूलधावाक
पभागे॥ आएजहिरामानुजआगे॥ आवापर्मक्रोधुकरमारा॥ ॥
गर्जेघोररवबारहिबारा॥ कोपमरूतसुतअंगदधाए॥ हतित्रसू
लउरधर्नगिराए॥ प्रभुकहिछाडतिसूलप्रचंडा॥ सरहतिकृतअनं
तजुगखंडा॥ उठबहोरमारूतजुवराजा॥ हतहिकोपतिहबाउन
बाजा॥ फिरेबीररिपुमरेनमारा॥ तवधावाकरघोरचिकारा॥ ॥
आवतदेषकुधजनुकाला॥ लछ्मणछाडेविशिषिकराला॥ देषिति
आवतपवसमबाना॥ तुर्तुभयोषलअंतरधाना॥ बिबधिबेषध
रकरैलराई॥ कबहुकप्रगटकबहुदुरजाई॥ देषअजयरिपुडर
पेकीशा॥ परमक्रोधुतबभयोअहीशा॥ तबत्रसूलडारसिल
छमणपर॥ काटकीनशतखंडधरनिपर॥ तिषरएकपुनसो
लैधावा॥ रामानुजसोकाटखिसावा॥ २०८॥ दोहा॥ आयुधिब

कुछाडेसुनिहरजनुमकरेफनीस॥ हर्षविसमकपरीछुतबबुद्धसहित
सुरईस॥१०४॥ चौपई॥ बिब्धायुधर्मेछाडुनलागा॥ रनकाननजिम
नागा॥ रामअनुजसरसिंहसमाना॥ उमागूलछूटहिजनुमिमाना॥॥
लछ्मणअसमनमंत्रदृढावा॥ इहपापहिमैबहुतषिलावा॥ अतमा
यामदइहतउरछावा॥ अबबधउचितनकपमयपावा॥ अलकहकोसे
कोदंडुचढावा॥ इहमारूतलछमणमभावा॥ सुमरकौसलाधीसप्रता
पा॥ सरसंधानकीनकरदापा॥ देषियजिमरवतेजसमाना॥ फूकतम
नकुव्यालअनुमाना॥ छाडाबासुनासतनलागा॥ सीसभुजाकाटयो
नरनागा॥ सीसपरयोघनीपरजबई॥ भुजादाहनीनभसोगई॥ च्व
नसमानसोगर्जेअभागा॥ मतीवारकपटसभत्यागा॥१०५॥ दोहरा॥
रामानुजकहिरामकहिअसकहछाडेप्रान॥ धन्नसक्रजितमाततव
कहअंगदहनुमान॥१११॥ चौपई॥ जेजगकहिदंडकजनदंडा॥ हर

५१
लं॰

द्रोहीसुतसमरप्रचंडा॥महिमातासुमहाबलसीवा॥जासुप्रतपश्च
भेदसुग्रीवा॥भुजबलसुरनायकबसकीना॥चौदहभवनजीतज
सुलीना॥रिपुतरखलनमूलखलगंजे॥जिमजगकमलनालगह
भंजे॥जिमबासवगहकुलस्कराला॥कीनविच्छटगिरपच्छविशाला॥
रणसांगसैपरयोसरीरा॥तरेदारुजिमरुधिरहुनीरा॥दंतबिकटमुषप
रमभयावन॥चिकुरसघनवषस्रमसुभडरावन॥रक्तलालसुरंगजिमजा
वक॥दवकीशिषासोहजनुपावक॥पायसुआयसुरिबभकपीसा॥
करगहलीनसुइकरसीसा॥२१२॥दोहरा॥करस्रममास्योमहारिपु
रामअनुजरणधीर॥निडरसुमनवरषहिविबुधकहहजैगिरागंभीर
॥११३॥चौपई॥बिनुप्रयासहनुमंतउठावा॥लंकाद्वाररापतिहआवा
॥तासुमरनसुनसुरगंधर्बा॥चढविमानआएसुरसर्बा॥वर्षसुमन
दुंदभीवजावै॥श्रीरघुबीरविमलजसुगावै॥जैअनंतजैजगदाः

82

धारा॥ तुम प्रभु देवन सभ न संभारा॥ अस्तुति कर सुर सिद्ध सिधाए॥
लक्ष्मण कृपासिंधु पहि आए॥ प्रभ हसि बिलोकत सी सपदनाए॥ उठ प्र
भु हर्ष अनुज उर लाए॥ कृपा दृष्टि प्रभ अनुज हि हेरे॥ बिगत त्राइ की
ने कर फेरे॥ बानन बिधो सो हत तनु कैसा॥ कनक लूण पर पूरति जैसा
॥ मुष प्रसंन नता देष लषे सब॥ रिपु बल कह्यो बिभीषण हीतब॥ धर
यो सीत ज्ञान प्रभ स आगे॥ बानर भालु बिलोकन लागे॥ प्रभ कौतक की नि
ष सो ती सा॥ रावन कह्यो कोसलाधीसा॥ २१४॥ दोहरा॥ प्रभु आय सु
न की सप निसाषो जतन कराई॥ कटक सहित रघुबंस मणि सो भत
दो नो भाय॥ २१५॥ चौपई॥ कृपा दृष्टि सब कटक निहारे॥ भए अ
सहित राम बैठारे॥ सुन हु उमा इह बिधि रिपु मारा॥ सुर नर मुनि स
ब भए सुखारा॥ अब सो सुनो भुजा तिह केरी॥ षग ज्यों गगन राम सर
प्रेरी॥ मेघनाद अंगन सो परी॥ बानन बिधि सो श्रोणित भरी॥ सो ह

ततहां सुलेंच बैसी ॥ रतिसो सरिस रूप गुन जैसी ॥ नाग सुता दस कंधसु
तो हू ॥ वास विरंचि तीय छवि मैं सो हू ॥ हेम सिंहासन सोहित बाला ॥ से
वहि विद्याधर तिय माला ॥ पूजहि बिबुद्धि बिनै करताहीं ॥ मुष प्रमेंद को
सकेसराही ॥ पति भुजि परी ग्यान इह भांती ॥ मन हुं सकल सुष तरु
की कांती ॥ २१८ ॥ दोहरा ॥ जह तह दासी देष कर सो एत स्वत भुज दं
ड ॥ भयो सम र आचर्य मैं मन हु अखंड लखंड ॥ २१९ ॥ चौपई ॥ ॥
सुन कर सकल सषी मुष बैना ॥ सद्य सिंहासन उठी सुनैना ॥ सहि
जसु भाय धक धकी धरकी ॥ सूचक असु भ दच्छण भुज फरकी ॥
होत महा म्रग ऐरावस रामहि ॥ बीर धुरीन मोर पति तामैं ॥ सकल
सुरासुर सकहि न जूजी ॥ विधि वामता परति नहि बूझी ॥ इत नाक
हतग ईतिह स्राप ॥ पति भुजि लषि कर कोट बिलाप ॥ कन कजटत
मन भूषन सोई ॥ महा विटप सम ग्यान न होई ॥ देषत मन हिन

आवततेही ॥ तासुप्रभावसुनहुपहलेही ॥ नींद्नार भोजनपरहुई
बारहिवर्षतासुकरमरई ॥ २१८ ॥ दोहरा ॥ कर विचार मनठीकदय
मैपक्षिदेवतिनार ॥ भुजलिषमेटहुदुचितई सुनकरदीनपसार
॥ २१९ ॥ चौपई ॥ लषिरूषतासुसषीउठधाई ॥ तुरतहुखोजषरी
लैआई ॥ दीनहाथपरामनि अंगनाई ॥ लिषितालषनकीतमु
चिराई ॥ नींद्नारभोजनशतकोटक ॥ तजेतासुमहिमायहिछोट
क ॥ अखैअखंडअजेअविनाशी ॥ अतुलअमितअचरचरिकेवा
शी ॥ प्रगटहिपालहिपुनिजगहरई ॥ त्रगुणरूपद्वैमूर्तिकरई ॥
जोकालहुकरकालभयंकर ॥ वर्नितसेससारदाशंकर ॥ लीला
तनुसुरसेवकहेतू ॥ जासुनामभवसागरकेतू ॥ मुनिमनपुंडरी
कजाकोवर ॥ वचिनविवेकविचारबुद्धिपर ॥ २२० ॥ दोहरा ॥ कोट
कलपबर्नतनिगमअगमजासुगुनिगाय ॥ तमतरीरजउजीह

बिनुकिमिनवबैंलिषह्लाघ॥२२१॥ चौपई॥ ममसिरगयेदेंसतरघुराई॥ तव
वचननलगमुजांपठाई॥ इहबिधलिषासकमुजबाता॥ परीमूनत
वग्रेतबिलखाता॥ वाचतकलमुजलिषाजयार्थ॥ लषमनराम
जानपरमारथ॥ तियसुभंड्तिदूपबहुभांती॥ बिलपैमिलसबस
षनकीपांती॥ गुनगनसोहसशीलनाहिको॥ कहरोवैबलविज्ञे
बाहुको॥ जिनभुजबलसुरनाथबिगोए॥ सोप्रभग्राजुसमरमहि-
सोए॥ ननगनमहाबस्नबिसारहि॥ महिलोटैकरतलसिरमार
हि॥ ग्रतसैदुखतदेहसधनाहीं॥ दारुणबिपतकहैकिहपाहीं॥
छिनकप्रबोहसषीकोकरई॥ बहुरशोकदावानलजरई॥ छिन
छिनउठतपरतधनीनल॥ पुनपुनहमरसराहतपतिबला॥२२२
दोहरा॥ तिनमहिसषीसयानइककहसमुझाएबैन॥ सोकछाडप
तिदेवतासुमतिकरियमनचैन॥२२३॥ चौपई॥ सुनकहिसहि
सानननतनुजाता॥ सत्तकहातुमसषीसुबाता॥ विधिनिरमतनु

खमोहनिबाहू॥ सुखपरघरी भुवनसबकाहू॥ विजयरामंसषमएाक
हुआयो॥ सजसुसल्लमरकटकुलपायो॥ कुलकलंकबडलहोवि
भीहना॥ कुलकुठारअसुसुन्योनदीषन॥ कूटिबंदिअबसुरग्रनिके
री॥ निजनिजपुर्नहुहाईफेरी॥ मुनिपुलस्तकरकुलभानासा॥ अव
रविससकुलकोप्रकाशा॥ तेजवंतपावकपरहरदुख॥ वसैससी
रआजुअपनेसुख॥ सललगगनसबनिरमलआजू॥ सुवसबस
हिसुरलायकराजू॥२२४॥ दोहा॥ जमकुमेरदिशपालसभप्रमु
दितसुरनरनाग॥ खाउअघाउविहायदुःखपाइसुजस्यविभाग
॥२२५॥ चौपई॥ ठतनाकहमंदिरमहिआई॥ देषासिसनिगमधनु
बहुताई॥ सुरपतिभवननिपटतरनाही॥ ऋद्धिसिद्धितहिसकल
कमाही॥ देषतविभवनमनअनुरागो॥ पतिपदनेहनिपुनमन
लागो॥ दीनेमननिगनभूषनचीरा॥ धेनुधर्निगंहाटकहीरा॥ मए

ज

४४ ला.

मैशिवकारचीबनाई॥भुजचढाइपहिरावकराई॥आपुनि चढतभईपुनिजाई॥सरतुरलभसुषसदनबिहाई॥वीतराग जिमतजैविषैगन॥सहसभांतपतिपदलागेमन॥सकसारकास लोचनज्याए॥कनकपिंजरनिरषपठाए॥व्याकुलकहकहाजातसनै ना॥सुनधीरजपरहरैसबैना॥भएविकलषगगननिइहभाती॥अपर दशाकैसेकहजाती॥परजालोगसंगसमलागे॥प्रेमतुमगलोचन जलपागे॥२२६॥दोहरा॥बाजनलागनिशानगन ढोलतुंदभीमे र॥पुरजनपर्जनसंगसमचलेपालकीछेर॥२२७॥चौपई॥देषभी रदसकंधरहारे॥सजगहोकुसबबीरपुकारे॥जानहिकटिकरपुन कीआई॥अस्त्रशस्त्रकरधरहुबनाई॥धनषचढातरकससकरबां धहि॥गहिअसचरमसमरबरकांदहि॥तोमरपहुप्रचंडगदागह ॥तीक्षणचोपेसूलसांकिलहि॥मारुमारुघरुघरुकहिधावहि

४४

प्रगटदसाननबिजैसुनावहि॥ गरजहितजैहिगिरागंभीरा॥
समरभयंकरनिस्वरबीरा॥ निपटहिनिकटपालकीआई॥ ची
नसकलभटरहेलजाई॥ देषजुद्वारनागपतिकंन्या॥ सतीसि
रोमणित्रभुवनधंन्या॥२२८॥ दोहरा॥ द्वारपालदसकंधरहिषब
रसुनाईजाय॥ भईरजाइसबेगहीलेहुसुताहिबुलाय॥२२९॥
तिहअवसरहिसुलोचनागहेचरनेसिरुन्याइ॥ राषमुजाबनना
दकीकन्यावचनसुनाइ॥२३०॥ चौपई॥ तुमहिअछुतअसहालह
मारी॥ सुषतभयोशोकअधिकारी॥ नभमगमुजासुममगहपरी
॥ बानबेधश्रोणितसनिभरी॥ देषमुजामनिमैअतिडरी॥ संसयदे
षदीनकरषरी॥ लिषीरामलषमनमहिमोइत॥ सोक्रमसमभवि
धकथाकहीतिन॥ ठगसीरहीबाचमुनगाथा॥ जरैसुंगजोपावैा
साथा॥ रणकबंधमुजममगहआई॥ सिरजहतेहनरेसुदोभाई

करियसोजतनामिलेजहिसीता॥ तुमसमरथ्यचराचरईशा॥ सुनतिकु
लशसतिगिराबधूकी॥ जीवनआसदशाननमूकी॥ तदपिधीरधर
कतिप्रबोधा॥ कहुकहिसुहसमानजगजोधा॥२३१॥ दोहरा॥ राम
लषनसुग्रीवनलनीलहुविदहनुमंत॥ साघविभीह्णदिषमकर
आनोमारसुरंत॥२३२॥ चौपई॥ अबलगिरह्योमहोलाभारी॥ कुंभक
र्णघननादसुरारी॥ हमहुआजलगकीननजूझा॥ इनसमकरपुर्षा
रथबूझा॥ मरेतेनरबानरकेमारे॥ बातसुनतअसलाजहमारे॥
गनतीकवनबीरमहुतिनकी॥ असतुरदशाकीनकपजिनकी॥
छाडसोचकुलवधूपुतोहू॥ जानहिउनसमानजिनमोहू॥ पुत्रवि
लंबकरियछ्वरचारी॥ देषोमोरभयंकरमारी॥ आनहुसिरुसमशस्त्र
निकेरा॥ बिनुप्रयासनहिलावोबेरा॥ भुगवहिजंतपुराकृतमोगा
॥ तनकतनसचरबनचरजोगा॥२३३॥ दोहरा॥ मेरउषारनिहो

११

रज्जोधराधरहि करबीच॥ तेभटखाएसमसकज्जिमकालकुटालितानीच॥
॥२३४॥ चौपई॥ क्रोधावेशप्रगटबलबोलो॥ हृदेशोकतरुअचलनडोले॥ समाधाननहिमानतसोई॥ सुनप्रलापपरुतोषनहोई॥
नरबानरपुषीरघदेषत॥ वडेप्रचंडछोटकरलेषत॥ कृदसिंधुलंकाकपजारी॥ लछुकरमाननताहिसुरारी॥ कुंभकर्नअतिकायमहोदर॥ ममपतिगिरयोसुसैनसहोदर॥ तेरिपुचहेदशाननजीती॥ देषियमहामोहकीरीती॥ उतर्दैउतौपातकहोई काबिबादअबिसरबहुस्रोई॥ फिरेराजतौमोहनाकाजू बिनुपियसकलनर्ककरसाजू॥२३५॥ दोहरा॥ तुरतहिउठीसुलोचनागईमैसुतापास॥ पदगहिरोवतसभकहीप्रगटशोकउपहास॥२३६॥ चौपई॥
अरहितेसभकथाबषानी॥ सुनसुनरोवहिरावनरानी॥ कहासुपतिभुजालिषवबहोरी॥ रामलषनमहिमानहिथोरी॥ कहो

बहुरदसकंधरक्रोधा॥ मरतहुविडंबनकीनसिजोधा॥ सुनसोपुत्रवधकी
बानी॥ बोलीबहुरमंदोदरिरानी॥ कहहुजोमानवसज्ञख्यानी॥ सुनजो
नारदमुषकीबानी॥ पाछलबातमईसभसाची॥ अनुभवकीननए
कोबाची॥ देविनहोयहुघारिषभाषत॥ अपनेमोहमहामननमाषत
आगलिकथासमासमेता॥ सुनपुत्रीरिषवर्नौंजेता॥ वैरभाव
दसकंधरकूजाहि॥ प्रानहुगयेनीतनहीबूझहि॥ सोदृशोकसंकटते
छूटहि॥ बानरभालुराजगहलूटहि॥ धनुमणिअम्हणबसनविमाना
भोगकहैबनचरकुलनाना॥२३७॥ दोहरा॥ राजविभीषणपायहैअ
मरकलपनिरबाहि॥ भावीवशसषदुषजगतउपदेसेकहुकाहि॥
॥२३८॥ चौपई॥ मुनिवचननकीमोहिप्रतीती॥ अनुभवसदाहाराअ
रुजीती॥ तुमपुत्रीअबपरहरशोका॥ पतिसंगवतुसाधुपरलोका
जाहरामपहिपतिसिरलागी॥ तजसंकोचतूसानहिमांगी॥ होइन

लाज काज करम हूँ गा॥ समय हीन गुन गनियन दूषन॥ एक नारि ब्रत
रघुपति केरा॥ लषन सुजसु तेसु न्योछनेरा॥ है पुन सहसु विभीषण तो
रा॥ बाल सुवन है बालक मोरा॥ जामवंत मंत्री सुग्रीवा॥ दुविद मयं
द महाबल सींवा॥ जानो ब्रह्मचर्य हनुमाना॥ शिवस्वरूप भय हंमें ग्वा
ना॥ सदा नीतरतिम मनरेशा॥ तहा जात कहु कवन कलेशा॥२३॥

दोहरा॥ बंदत तोहि पति भुज लिषत लषन राम पर भाउ॥ सो हरि षबच
कहे सम अब बिलंब नहि लाउ॥२४॥ चौपई॥ सुनत सामु सुषकरहि
तु बानी॥ जाउं राम पहि यह मन मानी॥ बारबार चरनन सिर न्याई
॥ गवनी जहं लछमन रघुराई॥ देषा कटक भालकपि केरी॥ सिंधु
सुबेल महीधर घेरी॥ उमग्यो मनहु महोदधि दूसर॥ हरित पिंग कपि
धूमिल धूसर॥ मूल लाल मासकि घन हेरी॥ मनहु लपटि बहुवान
लि केरी॥ गिर तरु धरु भुज समहि जभयंकर॥ जहं तहं प्रगट होत जनु ज

लधर॥ लछुमन सेष सुयंक सीमधर॥ कटक जलधसो वत राघव व्हैर
॥ अषै बहूर तिहं बैठ विभीषण॥ अस्तुत कृत स्रुति सुन्यो नदी स्वणार४१
दोहरा॥ देषति डुरी सुलोचना धीजे घर्ति बहोर॥ महाराज रघुबीर
को बिनै सुनावहि मोर॥२४२॥ चौपई॥ बानर सकल उठे असि बोली
॥ अरपुर ते आवत इक डोली॥ जानपते अब रावन बूझा॥ भय मति से
बनाइ जब जूझा॥ हठत जसीता दीन पठाई॥ तजहु सोच अब मिटी
लराई॥ जहि लगि प्रगट कीन पुर आगी॥ बांध्यो सेतु हेतु जिह लागी॥
सो सीता बिनु श्रम ही पाई॥ जानत विधि अनुकूल अब आई॥ बिजै राम
सुग्रीव हि आयो॥ सुजस सुसकल बानर कुल पायो॥ बिरहि राम ल
षमन कर छूटयो॥ बिनु कलेश लंका गढ टूटयो॥ जुग जुग कीरति रही
हमारी॥ कतरएक तह मल स्रुबन चारी॥२४३॥ दोहरा॥ यहि बिधि
स भनि बिचार कर दई ठीक मन माहि॥ भयो काज रघुराज कर बात हूत

रीनाहि॥२४४॥चौपई॥पैठतकटकअतिसैसकुचाई॥अनचिह्
नाजिमपरस्वरजाई॥आगेजायदेषरघुबीरहि॥छबमैस्यामलगौर
सरीरहि॥मर्कतकनकछबहिजनुनिंदति॥धन्नसुजनमहिमाजिहबं
दति॥मत्तिगयंदसुंडभुजदंडा॥धनुषबानअसधरेप्रचंडा॥उरवि
शालअतिउन्नतकंधर॥कंबुकंठरेषाप्रससन्यातर॥सुषछबकीउपमा
कविजोहै॥सीससरोजससककहैनसोहै॥दसनपांतिकीक्रांतकहैको
॥ललकतमनपटतरहिलहैको॥देषतअधिरनकीअरुनाई॥बिं
बाफलबंधूकलजाई॥सुकतुंडहिनाशकालजाई॥यकेसुकविन
हिपटतरपाई॥२४५॥दोहरा॥छबमैगुनमैतेजमैरामउदधिअव
गाह॥जहांनपावहिपारअतिकोबरनैकरथाह॥२४६॥चौपई॥
भृकुटीबिकटकपोलसुहाए॥सीसजटाकेमुकटबनाए॥भालवि
शालतिलकसुतसोहै॥ध्यानसमैलषिमुनिमनमोहै॥बलकल

वसनतूनकरिबांधे॥ करसरसुभगसरासनकांधे॥ बीरासनआसनम
गछाला॥ नवपल्लवप्रसूनकीमाला॥ चर्नसरोजबर्नीनहिजाही॥ ज
हिमुनमधुकरसदालुभाही॥ प्रगटभईजन्हिघलतेगंगा॥ श्रुतिपुराण
वाहिकथाप्रसंगा॥ नवहिमहेसनिरंतरजाकहु॥ लोचनगोचरहो
हिसुकाकहु॥ जनअरातमैंजनकहुजोहित॥ भवसागरतारणक
हुवोहित॥२४७॥ दोहरा॥ प्रणतपालहृदावलीजिनचर्ननकेबा
न॥ सोकहरणसंसयदहनकर्नेसुमंगलषान॥२४८॥ चौपई॥
करजोरेअंगदहनुमाना॥ दुविदमयंदकुमदबलवाना॥ जामवंतक
पपतिबलसीला॥ रिषभसुषेनसहितनलनीला॥ महाबीरसभवा
नरराजहि॥ लषनविभीषणदुहिदिशभ्राजहि॥ मितभाषतसरबग्य
सुसेवक॥ चितवतमुषरघुनंदनदेवक॥ सभामधसोभितरघुनंदन
॥ कीनशसुफलनिर्षनिजबंदन॥ तहांविभीषणलषीसुनैना॥ गद

गदकंठनआवतिबैना॥ कर्तदंडवतसिरधरधर्नी॥ सोसमकथावि
भीषणबर्नी॥ पुत्रबधूदसकंधरकीहै॥ पतिदेवतासुलोचनतीयहै
॥ मेघनादकीनारसुशीला॥ यहिगतितिवविरोधकीलीला॥२४६
दोहरा॥ मुएप्राणपतिभुजालिषवससुजाइसयहिमोहि॥ महाराज
रघुवंसमनिजाचानिआईतोहि॥२५॥ चौपई॥ करतिप्रणतिआद
रनहिथोरे॥ कर्नीवचनकहतकरजोरे॥ सर्नोगतिआईमैतोरे॥
दुसहिमावराषहुजनिमोरे॥ तुमसरबग्यईसरघुराया॥ इहअनाथप
रकीजोदाया॥ अतिकृपालसुनहोरघुराई॥ त्राहत्राहसर्नोगतिआ
ई॥२५१॥ छंद॥ मैनारअपावनप्रभुजगपावनरावनरिपुजनसुष
दाई॥ राजीवविलोचनभयभवमोचनपाहिपाहिसरनहआई॥
भुजमोहलिषदीनाअतिमलकीनापरमअनुग्रहमैजाना॥ देष्योम
रलोचनहहरभवमोचनइहैलाभशंकरजाना॥ बिनतीप्रभुमोरीमैम

तिघोरीनाथनवरुमांगोआना॥ पदकमलपरागारसअनुरागामम
मनमधुपकरैपाना॥ यहिभांतिसुनैनाअसतुतिबैनावारवारहरखर
नपरी॥ जोअतिमनभावासोवरुपावाचलिनिजनाथमहिलीलहधरी॥२५१
दोहा॥ पुनपुनउठेसुलोचनाधराधरेसिरुनाय॥ पतिभुजलिषा
सोवाचप्रभुआईतवतरिनाय॥२५३॥ चौपई॥ तुमअंतरयामीभग
वाना॥ प्रभुताआदिमध्यअवसाना॥ करुनावचनसुनतरघुबीरा
पुलकरोमभएथिलसरीरा॥ देउंजियाइतोरपतिआजू॥ भुंजवलंक
कलपरतिराजू॥ छाडसोचअबमनहरषाही॥ तुर्तभवनअपुनेफि
रजाही॥ सुनअतिसत्तसंधुकीबानी॥ मनमहुबानरचमूडरानी॥॥
कहिनसकहिकछुप्रभुरुषदेषी॥ कहाकरहिकरतारअलेषी॥ सीय
सोचकरफलनहिहोइहै॥ जोकरकृपारामयहिजोइहै॥२५४॥ दोहा॥
राजविभीषणलंककरकरहैकिहविधिभाइ॥ समुझबेरघुवननादत

वगहैसराहतनजाइ॥२५५॥ दोहरा॥ मुषरूषलषकपकीसबजाना
॥ प्रणतपालभगवानसमाना॥ देषबहुतरघुबीरकिछोहू॥ बिने
कतिरस्कंधपुतोहू॥ तुमैउदारदेवसभलाइक॥ करूणमैदेषेरघु
नाइक॥ मोहुबिचारकीनमनमाही॥ जीवनतेयहिमरनैताही॥
भुजबललोकजीतवसकीनस॥ चौदहिभुवनभोगकरलीनस॥
रण तीरथिजाचकमलचीनस॥ प्रानसोधनलछमनकरदीनिसि॥
सबनउचतिवितदेस्रपहारा॥ तिहपरूअधिकजोदरसुतुमारा॥
जानमरिवप्रभुमैसनुताघी॥ मिलवहुमहिजसुमेलहिसाधी॥
॥२५६ दोहरा॥ निरमलगतिअवसरमैयोमुनियसजरघुबीर॥
तुमहिमिलेनहिहोयभवयथासिंधुगतिनीर॥२५७॥ चौपई॥ मन
कीजाननहारसुदेवा॥ भवसागरनांव्रतयहिसेवा॥ लीनोरिषभ
कपीसबुलाई॥ मेघनादसिरूदीनमंगाई॥ पाइकृतारथमान

सिम्राप॥ मिटाबिरहिसंभवपरताप॥ अंचलपोछतमुषकै धूरी॥ कहहसम
प्रानसजीवनमूरी॥ देषकरतसंदेहसुग्रीवा॥ भुजमैलिषासुमोहनशीवा
॥ हसहिबदनतौतीययाहिसाची॥ नाउनिश्चरमायानाची॥ कतय
हिज्ञानमृतकभुजगावै॥ जोमुनबरसाधनतेपावै॥ प्रभुतबकह्यो
हसययाहिसीसा॥ कियेकुतरकनउचितकपीसा॥२५८॥ दोहा॥ सिरसो
कहहसिसुलोचनाहसोबेगममनाथ॥ नउप्रतीतनमानहैलिषाजोहु
मरेहाथ॥२५९॥ चौपई॥ छिनकबिलंबकीननहिबोलो॥ मृतकसोमु
षमुहतनहिखोलो॥ पुनपुनकहतहैनागकुमारी॥ हमितमएरएाम
हिकरमारी॥ लगोलषनसहोभबढावहु॥ प्रभुसमीपकतमोहिलजा
वहि॥ जोमनवचनकर्मयहिदेही॥ पतदेवतानआनसनेही॥ तौप्रभु
सभाबीचसिरुबोलै॥ रहिहैइहजगसुजसुअमोलै॥ जोजाननततवय
हिगतिताई॥ बोलपठवनीपितहिसहाई॥ सुणतियबैनहस्योतवसीसा

चौकउठेसमभालकपीसा॥ हसाठठायवदनजबदेषत॥ विस्मैमएस
कलजनपेषत॥ कोटमेचसमसतुननहिंजाई॥ रह्योसुबदनबहुरअ
रगाई॥ सकुचिकपीसहितेष्योनारहि॥ बडआचरयमयोबनचारह
॥ कहिकपिपतिचरननसिरुनाई॥ कारनकवनहसासिरुसाई॥ तवहुन
बिहसकहारघुराई॥ सुनसुग्रीवकुतरकविहाई॥ मनबचकर्मपतहिसि
वकाई॥ तियहनइहसमआनउपाई॥ अससजीयजानकरहितियसेवा
॥ तिहपरसानुकूलमुनिदेवा॥ इहसततहुतअहिराजकुमारी॥ तिहसतिते
हसितीससुरारी॥ पतहुतनारजिनकेग्रहमाही॥ यहिबडबाततिनह
कछुनाही॥ पुनितवसंसयमयाकपीसा॥ तिहकारनहसयोयाहि
तीसा॥ २६०॥ दोहरा॥ सीसपायप्रभुचर्नगहिबहुबिधबिनैसुनाइ
॥ आजुकिदिनरनपरहरियमसहितकोसलराय॥ २६१॥ चौपई॥
बहुरविभीषणपदहिनमतसो॥ रघुवरगुनगनहृदयमनतसो॥ ॥

तुमपितसमरसकंधरभाई ॥ यहिकुलकीतुहलाजबडाई ॥ मुनिपुल
सपर्वार्कंदीपक ॥ पायोफलुरघुबीरसमीपक ॥ तबैमोहवसअनहि
तमाना ॥ ज्ञानभयोतबगुनपहिचाना ॥ जुगजुगकरोअकंटकराजू
॥ सहितसुकीर्तिसकलसमाजू ॥ इमरतिसुमहिमनजसुपैहहि ॥ ॥
रघुबरचरितसंगकरगैहहि ॥ सुनतविभीषनमनकरूणामर ॥ ॥
प्रगटनिकर्तसमयैअसहठिकर ॥ कालकर्मगतिकहिमुजायो ॥
चलीतुरतगुरआइसुपायो ॥ २६२ ॥ दोहरा ॥ बाहरकरकपकटकते
फिरेविभीषणआपु ॥ विसर्योदस्कंधरबैरहोतदेषसंतापु ॥ २६३ ॥ चैपः
सिरूचढायपालकीचढीसो ॥ रघुपतिकृपाप्रभावबढीसो ॥ हृदेराषमू
र्तिघनस्यामहि ॥ रसनारटतनिरंतररामहि ॥ सर्तसिंधुसंगमजहिपाव
न ॥ यहितुधपाइगयोतबरावन ॥ संगमदोदरसमरणबाहू ॥ ननहु
शोकरणकीनप्रकाहू ॥ पाइरजायसुहेवकधाए ॥ चंदनअगरभार्व

हुल्याए ॥ रचहृढदारुणचिताबनाई ॥ जनुसुरलोकनिसेनीलाई ॥ ॥
करप्रणामसबजनपरतोषे ॥ धीरजधरसुमयतिपतिचोषे ॥ सिरभुजध
रबैठीकरआसन ॥ मैंजनुजोगिसिद्धिकरवासन ॥ २६४ ॥ दोहरा ॥
दीनअग्निज्वालाबढीलपटिगगनिलगिजाय ॥ लषीनकाहूंजात
तिहसुरपुरपहुचीधाय ॥ २६५ ॥ चौपई ॥ सुतबधुदेषदशाननिज
बही ॥ मुर्छितभयोप्रयोमहतबही ॥ डुषितहृदयनैननभरिआवा
॥ जनुसिरमनिअहिराजगवावा ॥ हाहुतसंततस्वाहाकारी ॥ करबिला
परस्कंधपुकारी ॥ सक्रआदिजीतेसमदेवा ॥ सुरमुनिनागकहिसब
सेवा ॥ दूसररह्योनभुजिबलदापा ॥ सुर्गभूमतलतपेप्रतापा ॥ यह
बिधकरबिलापलंकेसा ॥ भयोतेजहतिसुनोषगेसा ॥ मंदोदरीरुदनु
करभारी ॥ उरताडनबहुभातिपुकारी ॥ नगरलोगबहुब्याकुलसोचा
सकलकहैदस्कंधरपोचा ॥ २६६ ॥ दोहरा ॥ तवलंकेसअनेकविधिस

पू॰
लं॰

सुनाईसबनार॥नरस्वरूपप्रपंचसमदेषहुहृदयविचार॥२८४॥चौप॰ 104
तिनह्निज्ञानउपदेसारावन॥आपुनमंदकथासुभपावन॥परउपदे
सकुसलबहुतेरे॥जेआचरहितेनरनबहुनेरे॥देषचरितपुनिनभसुरगाव
हि॥वर्षहुसुमनदुंदभीबजावहि॥तासुक्रियाकरनिअवरनाहा॥भयोसो
चवसिअतिउरमाहा॥सचिवआयसमलगेबुझावन॥बादविषादकरयैे
जीयरावन॥सुतबितनारविविधसुषकैसे॥उपजैवटाजाहिउडजैसे॥
तउतिदमकदेषियबनमाही॥रहैनथिरतेबहुरहुपाही॥असजिय
जानसमुझदससभाला॥बचहिनकोजगआएकाला॥असप्रभजतन
चा॰ बिरहुसोई॥रिपुकरनासजवनाविधिहोई॥वचनसुनतितिहुअ
तिसुषुमाना॥कालविवसजिमतीरथज्ञाना॥२८८॥दोहा॥लाग्यो
करनविचारपुनिबहुप्रकारदससीस॥तिमरहृदैअहिरावनहिआ
योजहिंसहुईस॥२८९॥चौपई॥दंडचारनिशितिहठांबीती॥॥

संध्याबंधनकीनशिप्रीती॥ लागाकर्नधानदसशीसा॥ बहुरहर्ष जोरेकरबीसा॥ शिवसेवकसोअतिअनुरागी॥ सुनषगेसतोते बडभागी॥ करषनमंत्रजप्योदसमाला॥ अहिरावनचितढ्योल पताला॥ लग्योकर्नसोमनअनुमाना॥ किहकार्नदससुषअकु लाना॥ निश्चरनाहिभवनवसिजांके॥ जीतनकहुनबीरकोतांके ॥ मनक्रमबचनआननहिसेवी॥ धरयोध्यानउरकामददेवी॥ चल्योबहुरअयोतोतहिवा॥ शिवमंडपदससुषरहिजहिवा॥ निश्चरपतकहुतिहसिरनावा॥ करगहिभुजिआसनबैठावा॥२०॥ दोहरा॥ अहिरावनतवरावनहिपूछीकुसलप्रीत॥ परमहिक हितिहसोकथाभगनीकीनअनीता॥२१॥ चौपई॥ बधरवरदूष नजिमसुधिपाई॥ मीचकपटिमृगकथासुनाई॥ कहसिबहुसी ताकरहर्नी॥ पवनतनैबललंकादलनी॥ सेतुबंधिजिमप्रभुच

105

पृ॰ ५३

लं॰ लिम्रायो॥ बालतनै संबाद सुनायो॥ अनैम्र कंपन म्रस्त्रतिकाया॥ परै सुमरम हिसुनुम्र हिराया॥ तात कुम्भ म्रब म्रायु सिरानी॥ कटक निशाचर सकल षुटानी॥ कुंभकर्ण्ण घननादे मारे॥ राम लषन ते मनुज विचारे॥ म्रान्यो बोलतो हि निज पासा॥ कर सो जतन होइ रिपुनासा॥ सुनत बचन कह केतक बाता॥ हर लै जैहौ दोनो भ्राता॥ लेपताल देवहि बल देऊ॥ जस पूर्ने निश्चर कुल लेऊ॥ लै जब जाम वै जानै तब ही॥ रवि सम तेज होय निसि जब ही॥२२१॥ दोहा॥ कह सुत वचन प्रबोध कर सीस नाय बल भाष॥ म्रायो रघुपति कटक तब निज देवी उर राष॥२२३॥ चौपई॥ रजनकर निशम्रति म्रंधयारी॥ मरकट भट जाग हित हि भारी॥ कहै जैत जै जैत कृपाला॥ म्रत हम्रगम गमना हि न काला॥ तहि मारुत सुत कीन उपाई॥ निज लंगूर को कोट बनाई॥ सो सोभा कछु बरिन न जाई॥ जनु जंग पति रहि

106

107

तहि छाई॥ अरु जिमि देषि बयसै लसमाना॥ दरवाजे मुष क्रूत हनु
माना॥ देष हृदय अहि रावन हारा॥ जिम रवि उदय नतम पै साए
॥ एकोजु गतन मन ठहिरानी॥ कपट बेष तह कीन भवानी॥ बेष
बिभीषन सब अनुहारी॥ पवनसुवन पह गा छलकारी॥ २७४॥ दो॥
सहिज प्रतापी पवनसुत पुनसुरपति पति दास॥ तिनहि नदर चलाए
मपहि मूढ हृदै नहि त्रास॥ २७५॥ चौपई॥ मरम न जान्यो कछु सुति प
वना॥ रूप बिभीषन कर जब गवना॥ ठाढ रहो बोल्यो सुनु भ्राता॥ चल
यो जहार घुबर जनु त्राता॥ मैर घुपति सनि आयसु पाई॥ संध्या करने
गयो सुनु भाई॥ तिहते तुरतु चल्यो प्रभु पाही॥ भै बिलंबु जनु रामरि
साही॥ सुन्न बचन कपि निज मन माना॥ सुन षगेस भावी बलवा
ना॥ कपट चतुर गति जान न जाई॥ परमन तु रहै रहै मनु भाई॥ आइ
सु पाइ गयो सो तह वा॥ फनिपति प्रभु दोनो रहै जह वा॥ कपपति

जामवंतनलनीला ॥ बालतनैसुषेनबलसीला ॥ २७६ ॥ दोहरा ॥ दुविधम
यंदकपीसगनमवृगवाषिकपबीर ॥ सहितबिभीषणअपरभटहोएसब
रणधीर ॥ २७७ ॥ चौपई ॥ तिनकेमधरावनसहिराहू ॥ इकसंगसोवतफ
निपतनाहू ॥ दछनीदिशिसोवतरघुनाथा ॥ अनुजवामदिशतिहपर
हाथा ॥ प्रभुकरपरकरराजतकैसे ॥ जातरूपपरिफनपतजैसे ॥ ॥
कपतबभयजिमसागरदीरा ॥ तहिसोवतमानहुदोबीरा ॥ सुभग
बानधनुधरेबनाई ॥ लषनसहितसमीपरघुराई ॥ अहिरावनम
नकीनप्रनामा ॥ देषरामघनसुंदरस्यामा ॥ ब्रह्मादिकजिहध्या
ननपावहि ॥ मुनमहेसपूजामनलावहि ॥ करहिबिबधविधि
जोगबैरागी ॥ रटहिनिरंतरनितदिनुजागी ॥ सोप्रभुतिहिदेषा
भरलोचन ॥ क्रपासिंधुसेवकभयमोचन ॥ बहुरहृदेतहिकीन
बिचारा ॥ रावनकाजकर्नअनुसारा ॥ कछुनिजमायाकेतगुनआ

ई॥ कवनहि भाँति जाहि ह्वै आई॥२७८॥ दोहरा॥ मोहि न ते मो है तम मै
मंत्रिन ते मुष मूंदि॥ भयो अदृष्टि उठाय कर प्रभु हि चल्यो ले कूदि॥
॥२७९॥ चौपई॥ इहि विधि प्रभु हि गयो ले सोई॥ नभ मारग प्रकाश अ
ति होई॥ सो प्रकाश तव रावन देषा॥ वचन प्रमान तासु कर लेषा॥
मन महु हर्ष करै अति भारी॥ अहि रावन लैगा असुरारी॥ ले निज
लोक गयो छिनु माहीं॥ शोर भयो तव कपदल माहीं॥ जागे बानर स्थी
हत भारी॥ देषिय बिनु सर्त बिनु बारी॥ अस देषिय जिम निशि बिनु चं
न्दू॥ तेज हीन बातुर जिम इन्दू॥ रव बिनु दिन जु जीव बिनु देहा॥ जिम
दीपक बिनु देषिय गेहा॥ एक कहहि एक लगे तब पूछन॥ कहां गए त्रय
लोक विभूषन॥२८०॥ दोहरा॥ सो धाम बहु निकट कह बीनहि पायो
दोबीर॥ भय व्याकुल सभ भालु कप जिम जलचर बिनु नीर॥२८१॥
चौपई॥ सकल कहै विधि काय हि कीना॥ रघुपति बिना प्राण हर ली

ना॥शोकग्रसेघरसकहिनधीरा॥ कहांरामलछुमननरबीरा॥ कनी
करहिकपीसरछपारा॥ बनीबातविधिकाहिबिगारा॥ कटकनिशाच
रसकलसंचारी॥ रहाएकरिपुरावनभारी॥ सोनरहितप्रभुसरके
लागे॥ भाईहमनसमकोनअभागे॥ कबहुंकजोरदससीसहिजीत
हि॥ उत्रकौनदेवैहमसीतहि॥ यहिकहिमुर्छविकलमहिपरे॥
लागेबज्रसैलजनुगिरे॥ बिभीक्षाकीगतिकहीनजाई॥ बिनावछ
जनुधेनलवाई॥२८२॥ दोहरा॥ सहितपवनसुतरीछपतिदुषमन
भाबहुभांति॥ खगपतिसूरुनकतहुंकहुतमअपारतिहरात॥२८३
चौपई॥ पवनतनैपुनकहिसबपाही॥ बिस्मैएकहोइमनमाही
कोऊकआवविभीक्षाबेषा॥ प्रभुकेनिकटजातमेदेषा॥ पूछशिवच
नकहिसअतिनीकी॥ कपटनजानोनिश्चरजीकी॥ वचनसुनतबो
लेलंकेसा॥ अहिरावनलेगाअवधेसा॥ पन्नगलोगवसहैतेई॥

समतनुबेषऋवरनहिहोई॥ महाबलीजानैबहुमाया॥ निश्चैव
हिदससीसपठाया॥ जिहबलहोयउहांसोजाई॥ ताहिजीतऋानै
दोभाई॥ कहैभालुपतिसुनहनुमाना॥ तवबलतातसकलजगजा
ना॥ बेगसोजतनबिचारोताता॥ कृपासिंधुऋानोदोभ्राता॥२८४॥
दोहरा॥ बिलषकह्योकपिपतबहुरमारुतसुतसुनुतात॥ बिनुरघुप
तिधिगुजीवनापलुजुगहैसमजात॥२८५॥ चौपई॥ तृषतमीनबिनु
वारदुखारी॥ तैसेहमसभबिनाखरारी॥ रवबिनुपंकजह्वोयमलाना
॥ तैसेहमसबहैंहनुमाना॥ सीतासुधजिमऔषधिऋानी॥ तिहप्रकार
ऋानहुगुनषानी॥ यहिसुनतबहिपवनसुतबोला॥ चितधिरुकरहुसैे
ननहिडोला॥ भुवनचारदसतीनहुलोका॥ ऋानोप्रभुहतजहुतुम
शोका॥ तबतेसजगरहहुसभभाई॥ लरहुकालसौजोरनऋाई॥ यहि
कहिगर्जचल्योहनुमाना॥ प्रलैकालकेमेघसमाना॥ चलेजातइक

तरुतरगयो॥ गीधानिगीधकहतिअतभयो॥२८६॥ दोहरा॥ गीधनि
रहीसुगर्भनीबोलीपीयसेबैन॥ आनहुआनषमनुजकरषाउंहोयअ
चितचैन॥२८७॥ चौपई॥ तासुबचनसुनषगअतकह्यो॥ अहिरावनरा
ववलैगयो॥ देइहबलदेवीकोजाई॥ बडेभागआमिषजोपाई॥ कंवअ
निकुजतनदेवमैआनी॥ असकहिगीधनारसतनमानी॥ जबहिपवनअ
सुतयहिसुधपाई॥ चल्योहृदैसुमिरतरघुराई॥ तरतुपतालहितिहद्वि
नगयो॥ अहिरावनपुरप्रविसतभयो॥ द्वारपालमकरध्वजकीसा॥॥
कपिसुतहाटिकहितबहुकी॥ निदरचलसिनुहितुहिडरनाही॥ जिम
दीपहिनपतंगडराही॥ मैमारुतकरहौंबालक॥ स्वामभक्तिभंजनअ
सुषकालक॥२८८॥ सोरठा॥ सुनतवचनहनुमानबिस्मैबसबोलतभ
यो॥ अरेमूढअग्यानमोरेसुततसपनिकुनही॥२८९॥ चौपई॥ कहि
तवचनसठितोरिनरषोरी॥ कामबिवसमतिकबमैमोरी॥ ममसुत

112

होसि मूढ किह काजा॥ इतना कहित तो हिं नहिं लाजा॥ किह प्रकार तैं मम सुत मेह हसि॥ निज उत पति मुह सनि किन कहि हसि॥ सुन त कहत मकरध्वज बैना॥ कियो तात जब लंका दहना॥ जब आयो चल जलधि समीपा॥ भयो प्रसेद तुम हि कपदीपा॥ वहि प्रसेद सागर महि गयो॥ सो झष पियो तहां मैं भयो॥ इह प्रकार तव सुत मैं ताता॥ गोपो नहिं निज पितान माता॥ अहिरावन सेवा मैं करऊं॥ प्रभ आइस इह द्वारे रहऊं॥ २९॥ दोहरा॥ सुन्न वचन हनुमानु कहि पूछी पुनाफि र बात॥ आन्यो राम हि लषन कहु काहि कत हैं तात॥ २९॥ चौपई॥ कहो तत दिस थल नाऊं॥ जान चहौ मैं निज प्रभ ठाऊं॥ इह बृतांत भाषौ मैं ताता॥ जस मैं सवरण सुन्यो कछु बाता॥ सीता पति अरू फन पति साथा॥ सो ले आयो निश्चर नाथा॥ कर्त सु अहै होम धो आजू॥ देव हि बलदेइ है न सा जू॥ जो कछु निज श्रवनन सुन पायो॥ तात तुम हि मैं सकल सुनायो

लं॰ निजप्रभुकाजलागउघसहौ॥ तुमसनसत्त्ववचनमैकहौ॥ जानक
हौपैजाननदेहूं॥ प्रभुआग्यातजेपजसुलेहू॥ सुनअसपेलचल्योहनु
माना॥ भयोक्रोधुमकरैंपिबलवाना॥२९२॥ दोहरा॥ कपकहिहनेनिसि
मुष्टिकाकपपुनिमारताहि॥ एकहिएकसुहनेतबबलसुगतसमबट
नाहि॥२९३॥ चौपई॥ एकहिएकसकैनहिटारी॥ मासतसुतसुतदो
भटभारी॥ सुतहिपूछसुतबांधभवानी॥ चलेबहुरखितसबडजानी
धरलघुरूपहोमगहदेषा॥ जीवसजीवपरैनहिलेषा॥ देवीकरतह
मंडपरहई॥ स्रोआतबटबहुकोअसकहई॥ बिबिधिभातमेवापक
वाना॥ धरेआनदेवीअस्थाना॥ मालनतहांसुमनलैआई॥ सुमन
मध्यप्रविसेकपराई॥ सुमनहुतेतनुकृतहरूवाई॥ सोलेसुमन
मंडपहिआई॥ सुमनसकलदेवीपैचढयो॥ बिकटरूपतहितव
कपबढयो॥२९४॥ दोहरा॥ छुवतचर्नदेवीतबहिधनीगईसमाय

115

बदनपसारा ठाढ भैय कपछबि बर्नि न जाय॥२९५॥ चौपई॥ रूप देष भा आनंद भारी॥ कहिं बिचार निशाचर झारी॥ कहें कि देव प्रगट भई आजू॥ बडभागी भा निश्चर राजू॥ कर प्रणाम पुन पूजा करही॥ जो कछु आवस्तु कपमुष परही॥ रही जो सकल वल समुदाई॥ बचीन एको सब कपषाई॥ कपषि आरभा अचरज बारा॥ भालहि निश्चर कुल संहारा॥ ॥ अहि रावन तुर भा सुष कैसे॥ चढे कांध हो य बल पहु जैसे॥ निश्चर विप्र पठहि बहु बानी॥ कहित प्रसन्न भई है भवानी॥ मंड पद्दार कुंड सो आइ ई॥ आहुत विप्र देत जै कहई॥ बिहसी शिषा गगन लगि जाई॥ जुरे तहां निश्चर समुदाई॥२९६॥ दोहरा। बाजत ढोल निशान बहु ताल पषवा वज बीन॥ कूदहि निश्चर गगन लगि भै सब काल अधीन॥२९७॥

चौपई॥ सब न होम सिद्धि जब जाना॥ अहि रावन सन कहि बलवाना॥ हे प्रभु देवी भई अनंदा॥ सुनत तहि वचन उठा मतिमंदा॥ राम लषन

आगेकरलीने॥ तिहकरतीयासोचबडकीने॥ गहिपदबिनैकर्तंकरजोरी॥ 116
सुनेप्रानपतिबिनतीमोरी॥ नाथनहतंतुभूपकेबालक॥ इहचौदहभुवननप्रतिपालक॥ जीवचराचरजेजगमाही॥ सबकेइष्टदेवइआही॥ जेचत्तरे
पबहुतबिलषाही॥ इनसमसमरकोऊनहीजीता॥ तुमपरभयोकाल
विप्रीता॥२९८॥ दोहरा॥ सुनतवचननिजनारकरहुहिससमुझावतसोइ
॥रावनकुलसंघार इनछाडतअतिदुषहोय॥२९९॥ चौपई॥ नारबच
नकीनशनहिकाना॥ लषमनरामतुर्ततहिआना॥ ठांढकीनतहिप्रभकौ
आनी॥ निश्चरगहैबहुआयुद्धपानी॥ धरेगदाकोअरुधनुबाना॥
शक्तिशूलतरवारकृपाना॥ आनजुरेतहिअतिबलबीरा॥ सकलभू
धराकारसरीरा॥ धनषबानगहिजहितहिठांढे॥ मायामोहअगनिब
हुबाढे॥ भरेरोसबोलंतप्रचारी॥ लीयेहाथनंगीतरवारी॥ देषतिरूप
कामदाकेरा॥ हर्षतमनहिफिर्तबहुफेरा॥ माथनायसबअस्तुतठा

ना॥ स्वागलपटसमभयहनुमाना॥ आयुद्धकरगहितोलसंभारी॥॥
बर्छितांगकटछुरीकटारी॥३०॥ दोहरा॥ तोमरमुद्गरपर्सुअसिबांस
फासअरुवेत॥ ओढनखंडाधनुषसरदेषतिरहैनचेत॥३०१॥ चौपई॥
मायाबलितेसकलविचष्यहा॥ अतिबिकालसोइजनुदूप॥ इहबिधिवीर
सकलतहरलई॥ अहिरावणआग्याअनुसरई॥ आयसुपायखड्गतिन
काढे॥ मार्नकौप्रभपरभएठाढे॥ कोकहिराजनीतअनुसरहू॥ तीन
दंडबिलंबअबकरहू॥ सुनअसमूढलगेइमकहई॥ सुमरोजोको
तुमरेअहई॥ नाहितकालअबपहुचआई॥ निश्चैनासहोहुदोभाई
॥ कहैमूढप्रभकौबहुबानी॥ कहितसकुचिमुहिहोतभवानी॥३०२॥
दोहरा॥ फनपतिचितवैरामकहुरामनिर्षअहिराज॥ प्रभुकरकौतुक
कहियकिमसुनहुगरुड़खगराज॥३०३॥ चौपई॥ पुनिदोबंधुमनकी
नबिचारा॥ जपेसकलजगुनामुहमारा॥ हमजिहजपैअसकोजगमा

ई॥ संतनदासनदेतबड़ाई॥ इहअवसरचहीयतहनुमाना॥ निकर
निसाचरहिवीरबलवाना॥ इहबिचारकरचुपकररहई॥ सोपैहोइजो
बिधिमनगहई॥ हसेसकलतवमानेलयो॥ वनसमानकपगर्जत
भयो॥ निसचरसकलत्रसतभएभारी॥ कहेबचनसठहृदयविचारी॥
अहिरावनमलकीननभाई॥ आन्योइहांमनुजहरसाई॥ तिहतेदे
वक्रोधमईआजू॥ अबभासबकरपर्मअकाजू॥ भयेतेजहतनि
सचरझारी॥ हूसरकपगर्जोअतिभारी॥३०४॥ दोहरा॥ प्रगटरूपपव
नसुतकरअटहाससगंभीर॥ अतिभयतरसतसकलखलसुनकुउमा
मतिधीर॥३०५॥ चौपई॥ डगमगभएसबैअभमानी॥ मारुतुवहि
जिमसागरपानी॥ तिहछिनकपलीनेहैभाई॥ हनतलगेनिसचर
समुदाई॥ खड्गछडायलीनहनुमानू॥ कटनलागउरसिरभुजजा
जानू॥ काहुहिनाकरूवनविनुकीने॥ गहिपदडारअनलमहुदीने

निजलंगूरकोकोटबनावा॥जिहतेकोभ्राजननहिपावा॥इहविधि
सभनिश्चरसंहारे॥अहिरावनतबबचउचारे॥रेकपबीठत्रासन
हितोही॥अहिरावनतेजाननिमोही॥जांबिमालकहुजिमतुमभा
ग॥अरुरावनसुतहत्योविचारा॥३०६॥दोहरा॥कालनेमसमभेन
हीसुनहुसकलहनुमान॥असकहिखड्गप्रहारकरकपतनवजर
समान॥३०७॥चौपई॥लेअसताहिपवनसुतमारा॥मसककाट
अनिलमहुडारा॥पूरनिअआहुतकरहतिसीसा॥तबप्रभुबोले
चलेकपीसा॥मकरधुजहितबबिनबहुकीना॥बंधनछोडुरा
जतिहदीना॥इह्राकारकरोराजतुमताता॥हमरिहुममप्रभ
दोनोभ्राता॥असकहिकपनिजदलमहुआवा॥निरखाकटक
परमसुषुपावा॥म्रतकसरीरप्रानफिरआवा॥गईमननिफनि
किमनहुफिरपावा॥बिछुरामिलेबहुरजिमभाई॥इमतबभ

६०
लं॰ एनिरषदोभाई॥ मिल्योकपीसचर्नधरमाथा॥ पुनिषदपरयोनि
शाचरनाथा॥३०८॥ दोहरा॥ जामवंतअंगदसहितमिलेभालस्य
सकीस॥ सनमानेप्रियबचनकहलषनकोसलाधीस॥३०९॥
चौपई॥ बहुरसमनमेटयोहनुमाना॥ कहैतातसुमरापेप्राना
देवनसुमनबृष्टितबकीनी॥ प्रमुदितहृदयकुंदमीदीनी॥ अनु
जसहितहर्षेरघुबीरा॥ बोलेबचैसुनततैसमीरा॥ तुहिसमान
नहिकोहितकारी॥ सुरमुनिसिद्धिजोकोतनुधारी॥ जसुतुमारि
रमवननहिभयो॥ सुनअसबचनचर्नकपनयो॥ नाथकहुतु
ममैकिहलेषै॥ तरनीचलैअगमजलदेषै॥ तैसेसबप्रतापतव
नाथा॥ सुनसबकपहिमिलेरघुनाथा॥ कटकसहितहर्षेदोभाई
॥तिहअवसरसुषकहिकिमजाई॥ उहांदसाननसबसुधपाई
॥दूतनकहीखबरसबजाई॥ अहिरावनहिमर्नेसुनकाना॥ ॥

120

भयोतेजहतश्रीसतिदुषमाना॥ वचनबानसमलागेताही॥ संभ्रममुर्छि
प्रयोमहिमाही॥ मुषसुषानलोचनजलढरई॥ वचननआवपुनिपु
निसिरुधुनई॥३१॥ दोहरा॥ मैतनयानवआयकरबहुप्रकारसमुझा
य॥ मानैमूढनकालवसपरमक्रोधकछुपाय॥३१॥ चौपई॥ रावनतुरऔ
रैकछुठयो॥ मेरकोसतकैजोविधिनिरमयो॥ प्रभुविरोधकरचहिकल्या
ना॥ मूढमोहवसिअतिअग्याना॥ कृपासिंधुसेवकभयहारी॥ तिहि
विरोधसुषचहितमुरारी॥ निशासिरानुभयोभिनुसारा॥ लगेभालुक
पिचारोद्वारा॥ सुभटबुलावदशाननबोला॥ रणसनमुषजाकरम
नुडोला॥ सोअबकहीबरुजाउपराई॥ संजुगविमुषभएनभलाई॥॥
निजभुजबलमैबैरबढावा॥ दैहोउत्तरजौरिपुचढआवा॥ असकहिम
रुतबेगरघुसाजा॥ बाजेसकलजुझाऊबाजा॥ चलेबीरसमअतुल
तबली॥ जनुकज्जलकैआंधीचली॥ असगुनअमितहोहितिहकाला

लं॰ गनैन भुजबल गर्ब बिशाला॥३१२॥ छंद॥ अति गर्ब गनै न सगुन असगु
नि श्रवहिं आयुद्ध हाथ ते॥ भट गिरत रथ ते बाजि गज चिंकरत भागहि
साथ ते॥ गोमायु गिद्ध कराल खर रव स्वान रोवहि अति घने॥ जनु का
लरूप उलूक बोलहि वचन परम भयावने॥३१३॥ दोहरा॥ ताहि किसं
पति सगुन सुभ सपनिहु मन बिश्राम॥ भूतद्रोह रति मोह वसि राम
विमुख रति काम॥३१४॥ चौपई॥ चल्यो निशाचर कटकु अपारा॥
चतुरंगनी अनी बहु धारा॥ बिवध भांत वाहन रथ जाना॥ विपुल
वर्नि पताक धुजि नाना॥ चले मत्त गज जूथ घनेरे॥ प्राविट जल
धमरुत जनु प्रेरे॥ वर्नि वर्नि तनु दैत निकाया॥ समर सूर जानहि
बहु माया॥ अति विचित्र वाहिनी बिराजी॥ बीर बसंत सैन जनु सा
जी॥ चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं॥ छुभित पियोधि कुधर डगम
गहीं॥ उठी रेणु रव गयो छपाई॥ पवन थकित वसुधा अकुलाई॥

123

पनवनिशान चोरस्रवबाजहि॥ महाप्रलैकेघनुजनुगाजहि॥ भेरन फीरबाजसहिनाई॥ मारूरागसुभटसुषदाई॥ केहरनादबीरसभ करही॥ निजनिजबलपोरखउचरही॥ कहैदशाननसुनहुसुभट का॥ मरदहुभाल्लकपनकेकटका॥ हौंमारहोंभूपदोभाई॥ असक हिसनमुषफोजगिराई॥ इहसुघसकलकपनजबपाई॥ धाएक रखुबीरदुहाई॥३१५॥ छंद॥ धाएविशालकरालमरकटभालका लसमानते॥ मानहुसपछउडाहिभूधरवृंदनाझाबानते॥ नषद सनशैलमहादुमायुधसबलशंकनमानही॥ जैरामरावनमत्त गजमृगराजसुजसुबखानही॥३१६॥ दोहरा॥ दुहिदिशजैजैकार करनिजनिजजोरीजान॥ भिरेबीरइतरघुपतहिउतरावनहिब खान॥३१७॥ चौपई॥ रावनरथीबिरथरघुबीरा॥ देषविभीषणभए अधीरा॥ अधिकप्रीतमामनसंदेहा॥ बंदचरणकहितसहित

ले संदेहा ॥ नाथनरथनहितनपदत्राना ॥ किहविधिजीतवरिपुबलवाना ॥ 124
सुनहुसखाकहहकृपानिधाना ॥ जिहजैहोयसोस्यंदनआना ॥ सौर
जधीरजतिहरथचाका ॥ सत्यशीलदृढधुजापताका ॥ बलबिबेकद
मपरहितघोरे ॥ छिमाकृपासमतारजुजोरे ॥ ईसभजनुसारथीसुजाना
॥ बिरतिचर्मसंतोषकृपाना ॥ दानपरसुबुधशक्तिप्रचंडा ॥ बरबिग्या
नकठनकोदंडा ॥ अमलअचलमनत्रूनसमाना ॥ संजमनेमसि
लीमुषनाना ॥ कवचअभेवबिप्रगुरपूजा ॥ इहसमबिजैउपाइनदू
जा ॥ सखाधर्मनैअसरथजांकै ॥ जीतैकोनकतहुरितांकै ॥ ३४ ॥
दोहरा ॥ महाअजैसंसाररिपुजीतसकैसोबीर ॥ जाकैअसरथहो
इदृढिसुनहुसखामतधीर ॥ ३१ ॥ सुनतबिभीषणप्रभुबचनहर्षिग
हेपदिकंज ॥ इहमिसमुहिउपदेसदीयरामकृपासुषपुंज ॥ ३२ ॥
उतपचारदसकंधइतअंगदहनुमान ॥ लरतनिशाचरभालुक

पकर निज निज प्रभु आना॥२२१॥ चौपई॥ सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना
॥ देषत रन नभ चढे बिमाना॥ हम हूं उमा रहे तिह संगा॥ देषत राम
चरित रन रंगा॥ सुभट समर रस दुहु दिश माते॥ कप बल शील राम
बल ताते॥ एक एक सन भिरहि पचारहि॥ उदर बिदारहि भुजा उपारह
॥ मारहि काटहि धरहि पछारहि॥ सीस तोरि सीसन सन मारहि॥
गहि पद धरनि पटक भट डारहि॥ निशिचर भट महि गाडहि भालू॥ ऊप
र डार देह बहु बालू॥ बीर बलीमुष जुद्ध बिरुद्धे॥ दिष अति बिपुल
काल जनु क्रुद्धे॥२२२॥ छंद॥ क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्रवत स्रो
णित राजही॥ मरदह निश्याचर कटक भट बलवंत घन जिम गाज
ही॥ मारहि चपेटन काट दांत निडार लातन मीजही॥ चीकरहि म
र कट भाल छल बल करहि जिह षल छीजही॥ धर गाल फारहि उर
बिदारहि गर अंतावर मेलही॥ प्रहिलाद पति जनु बिबिध तनु धर

समर अंगन खेलही॥ धरु मारु काट पछार घोर गिरा गगन महि भर
रही॥ जै राम जो तृण ते कुलिस कर कुलिश ते तृण कर सही॥३२३॥
दोहरा॥ निज दल विचल विलोकके बीस भुजा दस चाप॥ चले दसा
नन कोप तब फिरहु फिरहु कर दाप॥३२४॥ चौपई॥ धायो परम क्रुद्ध
दसकंधर॥ सनमुष चले हूह दै बंदर॥ गहि कर पादप उपल पहारा
॥डारनि तां पर एकहि बारा॥ लागहि सैल बज्र सम तासू॥ खंड खंड
हुय टूट हि आसू॥ चला न अचल महा रथ रोपी॥ रन दुरमद रावन
अति कोपी॥ इत उत झपट दपट कपि जोधा॥ मर्दै लाग भयो अ
ति क्रोधा॥ चलै पराइ भालु कपि नाना॥ त्राहि त्राहि अंगद हनुमा
ना॥ पाहि पाहि रघुबीर गुसाई॥ इह खल खाइ काल की न्याई॥
तिह देषे कपि सकल पराने॥ दसहु चाप साइक संधाने॥३२५॥
छंद॥ संधान धनु सर निकर छाडे उरग जिम उडि लागही॥ रहिप

र सर धरनीगगनबिचदिशिविदिशकपभाजही॥ भेअतिकुलाह
लबिकलदलकपभालबोलहिआतुरे॥ रघुबीरकरुणासि
धुआरतिबंधुजनिरछकहरे॥३२६॥ दोहरा॥ वैचलतदेषअ
नीकनिजकटनिखंगधनुहाथ॥ लछमनचलेसरोषअतिना
यरामपदमाथ॥३२७॥ चौपई॥ रेखलकामारसकपभालू॥ मोहि
विलोकतारहोकालू॥ तवबोल्योदशकंधरिसाना॥ अबरणभूसछा
डुकहिज्ञाना॥ खोजतरह्योतोहिसुतघाती॥ आजुनिपातजुडावोछा
ती॥ असकहिछाडेबानप्रचंडा॥ लछमनकीएसकलशतखंडा॥ कोट
नआयुद्धरावनडारे॥ तिलप्रमानकरकाटनिवारे॥ पुननिजबान
नकीनप्रहारा॥ स्यंदनभंजसारथीमारा॥ शतशतसरमारेदसभा
ला॥ गिरश्रृंगनजनुप्रविसहिब्याला॥ शतसरपुनमाराउरमाही॥
परयोअविनतलसुधकछुनाही॥ उठाप्रबलपुनिमुर्छात्यागी॥॥

लं· ६४

छाडसिब्रह्मदीनजोसांगी॥३२८॥ छंद॥ सोब्रह्मतदृप्रचंडशक्ति
घनंतउरलागी तही॥ परयोबीरविकलउठावदसमुषअतुलब
लमहिमारही॥ ब्रह्मांडभवनबिराजजांके एकसिरजिमरजकनी
तिहचहितउठावनमूढरावनजाननहित्रिभुवनधनी॥३२९॥ दोहा
देषतधायोपवनसुतबोलतवचनकठोर॥ आवततिहउरमेहस्यो
मुष्टिप्रहारप्रचोर॥३३०॥ चौपई॥ जानुटेकिकपिभूमिनगिरा॥ उठा
संभारबहुरिरसभरा॥ मुष्टिकाएकताहिकपमारा॥ परयोसैलजिम
वज्रप्रहारा॥ गईमूरछाबहुरसुजागा॥ कपबलविपुलसराहनला
गा॥ धिगधिगममपौरखधिगमोही॥ जोतैजीयतउठसिसुरद्रो
ही॥ असकहिकपलछमनकहिल्याऊ॥ देषदसाननबिस्मैपायो
कहिरघुबीरसमुझिजियभ्राता॥ तुमकृतांतभषकसुरत्राता॥॥
सुनतबचनउठबैठकृपाला॥ गगनगईसोशक्तिकराला॥ धरसर

128

चापचलपुनिभए ॥ रिपुसमीपअतिआतुरगए ॥३३१॥ छंन्द ॥
आतुरबहोरविभंजस्यंदनिसूतहतब्याकुलभयो ॥ गिरयोधनिदस
कंधरिबिकलततनबानशतबेध्योहियो ॥ सारथीदूसरघालरथितिं
हनुरतलंकालेगयो ॥ रघुबीरबंधुप्रतापपुंजिबहोरप्रभुचरननननयो
॥३३२॥ दोहा ॥ उहांदसाननजागकरकरनिलागककुजग्य ॥ जैचा
हतिरघुपतिबिमुषसठहठवसिअतिअग्य ॥३३३॥ चौपई ॥ इहां
विभीषणसबसुधपाई ॥ सपदिजायरघुपतहिसुनाई ॥ नाथकोरए
वनइकजागा ॥ सिद्धिभयेनहिमरहिअभागा ॥ पठवहुबेगदेवभट
बंदर ॥ करहिविध्वंसननिसिषदसकंधर ॥ प्रातहोतप्रभसुभटपठा
ए ॥ हनुमदादिअंगदसबधाए ॥ कौतुककूदचढेकपलंका ॥ पैठेरा
वनभवनअसंका ॥ जबहींयग्यकर्तसोदेषा ॥ सकलकपनभाक्रो
धुविशेषा ॥ रणतेनिलजभाजग्रहआवा ॥ ईहांआयबगध्यानुल

गावा॥ असकहिकंगदमारीलाता॥ चितवनसठस्वारथमनराता॥

॥३३४॥ छंद॥ नहिचितवजबकपकोपतबगहिदसनलातनमारही

॥ धरकेसनारनिकारबाहरतेतिदीनपुकारही॥ तवउठयोकोपकृतां

तसमगहिचरिनबानरडारिही॥ यहिबीचकपनिविध्वंसमषकरदे-

षमनमहुहारही॥३३५॥ दोहरा॥ मषबिध्वंसकपकुसलसबआ

एरघुपतिपास॥ चल्योलंकपतिक्रुद्धह्वैतजजीवनकैआस॥३३६॥

चौपई॥ चलतहोहिअतअसुभभयंकर॥ बैठहिगीधउडाहिसि

रनपर॥ भयेकालवसकाहुनमाना॥ कहिसिबजावहुघुजानि

शाना॥ चलीतमीचरअनीअपारा॥ बहुगजरथपदातअसवारा

॥ प्रभुकेसनमुषधाएकैसे॥ सलभसमूहअनिलकहुजैसे॥ ईहा

देवतनबिनतीकीनी॥ दारुणबिपतहमहिइहदीनी॥ अबज

निरामषलावहुतेही॥ अतिसैदुषितहोतवैदेही॥ देववचनप्रभ

सुनमुसिकाना॥उठरघुबीरसुधोरबाना॥जटाजूटदृढबांधेमा
थे॥सोहैंसुमनबीचबिचगाथे॥अरुणनैनबारधतनुस्यामा॥
अषिललोकदायकबिश्रामा॥कटितटपरकरकस्योनिखंगा॥॥
करकोदंडुकठनसारंगा॥३३७॥छंद॥सारंगकरसुंदरनिखंगसिली
मुषाकरकटिकस्यो॥भुजदंडपीनमनोहरायतउरधरासुरपदल
स्यो॥कहिदासतुलशीजबुहिप्रभुसरचापफेरनरणलगे॥ब्रह्मं
डुदिग्यजकमठअहिमहिसिंधुभूधरडुगमगे॥३३८॥दोहरा॥
हर्षेदेवबिलोकहूबिवर्षहिंसुमनअपार॥जैजैप्रभुगुनग्यानब
लधामहरनमहिभार॥३३९॥चौपई॥एहीबीचनिशाचरअनी॥॥
कसमसातआईअतिघनी॥देषचलेसनमुषकपभटा॥प्रलैका
लकेजनुघनघटा॥बहुप्रकारतरवारचमकह॥जनुदहिदिशिदा
मिनीदमकह॥गजरथतुरगचिकारकठोरा॥गर्जहमनहुबलाहिक

घोरा॥ कपलंगूरबिपुलनभछाए॥ मनहुइंद्रधनुउगेसुहाए॥
उठेधूरमानहुजलधारा॥ बाणबूंदभईबृष्टिअपारा॥ दुहुदिशि
परबतकरहिप्रहारा॥ बज्रपातजनुबारहिबारा॥ रघुपतिकोप
बानझरलाई॥ घायलभेनिश्चरसमुदाई॥ लगतबानबीरचिं
करहीं॥ घुरमितजहातहामहिपरहीं॥ श्रवहिसैलजनुनिरझ
रभारी॥ श्रोणितसरकादरभयकारी॥३५०॥ छंद॥ कादरभयंकर
रुधिरसरताबढीपरमअपावनी॥ द्वैकूलिदलिरथरेतचकरआवर
तवहितभयावनी॥ जलजंतुगजपदचरतुरगखरबिबधिवाहन
कोगने॥ सरशक्तितोमरसर्पचापतिरंगचरमकमठघने॥३५१॥
दोहरा॥ बीरपरहिजनुतीरतरुमज्जाबहुबहिफेन॥ कादरदेष
तहीडरहिसुभटनकेमनचैन॥३५२॥ चौपई॥ मज्जहिभूत
पिशाचबिताला॥ प्रमथमहाझोटिंगकराला॥ काककंठलैभु

जाउडाई॥ इकतेछीनएकलैषाई॥ एककहैंअैसेसहुधाई॥ 133
सठहुतुमारदशनजाई॥ कहिरतिमटबाघलतरगिरे॥ जहतहसमनकुञ्जरधजलपरे॥ षैचहिअंतगीधतटमए॥ जनुबनुसीषेलहिचितदए॥ बहुमटबहैचठेषगजाही॥ जनुनावरखेलहिसरमाही॥ जोगिनभरभरखपरसंचहि॥ भूतपिशाचवधूजनुनच्चहि॥ मटकपालकरतालबजावहि॥ चामुंडानानाविधिगावहि॥ जंबुकनिकरदेखकटकटहि॥ खाहिहुहाहिअघाहि सुदबटकंहि॥ कोटनिरुंडमुंडबिनुडोलहि॥ सीसपरेमहिजैजैबोलहि॥३४३॥ छंद॥ बोलहिजुजैजैरुंडमुंडप्रचंडसिरबिनुधावही॥ खपरनिखग्निअलुफिजूझहिसुमटसुरपुरपावही॥ निअरबरूथविमरदगरजहिमालुकपिदलपितमए॥ संग्रामअंगननिसुमटसोवहिरामसरनिकरनहए॥३४४॥ दोहरा॥ हृदैविचारयोद

लं॰ सवदन मानिअसि संहार ॥ मैं अके लक पमाल बहु माया करैं अपार ॥ ३४५ ॥

चौपई ॥ देवन प्रभुहि प्यादे देषा ॥ उपजा उर अति छोभ विशेषा ॥ ॥ सुरपत निज रथ तुर्त पठावा ॥ हर्ष सहित मातुल लै आवा ॥ तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा ॥ विहस चढे कौशल पुर भूपा ॥ चंचल तुरग मनोहर चारी ॥ अजर अमर मन सम गति कारी ॥ रथा रूढ जब नाथहि देषी ॥ धाए कप बल पाय विशेषी ॥ सहीन जाय कपन कै मारी ॥ तब रावन माया बिस्तारी ॥ सो माया रघुबीरहि बाची ॥ सब काहू मानी कर साची ॥ देषी कपन निशाचर अनी ॥ बहु अंग दल लछमन कप धनी ॥ ३४६ ॥ छंद ॥ बहु बाल सुत लछमन कपी स विलोक मरकट अपडरे ॥ जनु चित्र लिषत समेत लछमन जहि सुतहि चित वहि षरे ॥ ॥ निज सेन चकित विलोक हसि सर चाप तजि कौशल धनी ॥ माया हरी हर निमष महु हरषत सकल वानर अनी ॥ ३४७ ॥ दोहरा ॥ ॥

बहुरराममम तनचितै बोलेबचनगंभीर॥ इंदयुद्धिदेषहुसकलश्र मितभएअतिबीर॥३४८॥ चौपई॥ अमकहिरघरघुनाथचलावा विप्रचरनपंकजसिरुनावा॥ तवलेसकोधुउरछावा॥ गर्जततर्जतस नमुषधावा॥ जीतहुजेभटसंजुगमाही॥ सुनतापरतिमेतिनसम नाही॥ रावननामजगतजससुजाना॥ लोकपजाकैबंदीषाना॥ ॥ खरदूखरकबंधतैमारा॥ बधिहुब्याधिइवबालिबिचारा॥ निश्चरनि करसुभटसंहारे॥ कुंभकरणघननादहिमारे॥ बैरुआजुसबलेहु निबाही॥ जोरनभूपभाजनहिजाही॥ आजुकरौखलुकालहवालै॥ परिहुकठनरावनकैपालै॥ पुनिदुरवचनकालिवसजाना॥ कहै बिहसतबकृपानिधाना॥ सत्रसत्रसमतवप्रभताई॥ जलपसिज नाहिषाउमनसाई॥३४९॥ छंद॥ जनजलपनाकरसुजसुनासहि नीतसुनतकरहिछमा॥ संसारमहुपुर्षात्रिविधिपाटलरसालप

135

नसमसमा॥ इकसुमनप्रददइकसुमनफलइकफलैकेवललागही॥ इक
कहैकहकरकरहिइककरहिकरतनबागही॥३५०॥ दोहरा॥ रामवच
नसुनविहसकहिमोहिसिषावतज्ञान॥ वैरुकरतनहितबडरयो अब
लागेप्रियप्रान॥३५१॥ चौपई॥ कहिदुरवचनक्रुद्धदसकंधर॥ कुल
शिसमानलागिछाडुनिसर॥ नानाकारसिलीमुषधाए॥ दिशिअ
रुबिदिशिगगनमहिछाए॥ अनिलबानछाडयोरघुबीरा॥ छिनम
हुजरेनिशाचरतीरा॥ छाडसितीबरशक्तिषिसाई॥ बानसंगप्रभुफेरप
ठाई॥ कोटिनचक्रत्रिसूलपवारहि॥ बिनुप्रयासप्रभुकाटनिवारहि॥
निफलहोहिरावनसर कैसे॥ खलकेसकलमनोरथजैसे॥ तबसतबान
सारथीमारसि॥ परयोभूमिजैरामपुकारसि॥ रामकृपाकरसूतउठावा
॥तबप्रभुप्रमक्रोधकहुपावा॥३५२॥ छंद॥ भयोक्रुध्यजुद्धविरुद्धरघु
पतित्रूनसाइककसमसे॥ कोदंडधुनिअतिचंडसुनिमनुजादिसभमा

रूतिरसे॥ मंदोदरीउरकंपकंपतिकमठभूधरमनत्रसे॥ चिक्करहिंदि
ग्पजिदंतुगहिमहिदेषकौतुकसुरहसे॥३५३॥ दोहरा॥ तानितरास
निस्वबनिलगिछाडेबिसिषकराल॥नामयानगनिनमचलेलहित
हातजनुब्याल॥३५४॥ चौपई॥ चलेबानसपछजनुउरगा॥ प्रथम
हिहत्योसारथीतुरगा॥रथविभंजेहतिकेतुपताका॥गजोअति
अंतरबलुयाका॥ तुर्तअनिरथचढषिसिआना॥छाडसिअसत्र
शस्त्रविधिनाना॥ विफलहोहितभउद्यमताके॥जिमपरद्रोहनिर्त
मनजाके॥ तबरावनदसस्लचलाए॥ बाजिचारमहिमारगिराए॥
तुर्तउठाइकोपरघुनायक॥षैंचिसरासनछाडेसाइक॥रावनसिरुत
सोजबकचारी॥ चलरघुबीरसिलीमुषधारी॥दसदसबानभालदस
तिमारे॥निसिरगएचलेरूधिरपनारे॥ स्त्रवतरुधिरधायोबलवा
ना॥प्रभुपुनिकृतधनुसरसंधाना॥तीसतीररघुबीरपवारे॥भुज

६९
लं. नसमेतसीसमहिडारे॥ काटतहीपुनिभएनवीने॥ रामबहोरभुजासिर छीने॥ काटतझटतपुनन्तनभए॥ प्रभुबहुबारबाहुसिरहए॥ पुनि पुनिप्रभुकाटेभुजसीसा॥ अतिकौतकीकैसलाधीसा॥ रहेछाइनभ सिरुअरुबाहू॥ मानहुअमितकेतुअरुराहू॥३५५॥ छंद॥ जनुरा हुकेतअनेकनभपथअवतश्रोणितधावही॥ रघुबीरबानप्रचंड लागहिभूमगिरतनपावही॥ इकइकसिरासिरनिकरछेदेनभउड तइमसोहिही॥ जनुकोपदिनुकरनिकरकरजहितहिबिधुंतक पोहही॥३५६॥ दोहरा॥ जिमजिमप्रभुहरतासुसिरतिमतिमहो हिअपार॥ सेवतबिषअनबिधजिमनितनितन्तनमार॥३५७ चौपई॥ दसमुषदेषसिनकैबाढा॥ बिसरामरनभईरिसगाढा॥ गर्जामूढमहाअभिमानी॥ धायोदसोसरासनतानी॥ समरभू मिदसकंधरकोप्यो॥ बर्षबाणरघुपतिरथरोप्यो॥ दंडएकरथ
६९
138

देषिनपरा॥ जनुनिहारमहिदिनुमनुउडरा॥ हाहाकारसुर्नेनभ॥
कीना॥ तवप्रभुकोपकारमुकलीना॥ सरनिवाररिपुकेसिरका
टे॥ तेदिशिविदिशिगगनमहिपाटे॥ काटेसिरनभमार्गधावहि॥
जैजैधुनिसुनभयउपजावहि॥ कहिलछमनहनुमानकपीसा
कहिरघुबीरकोसलाधीसा॥२५८॥ छंद॥ कहिरामकहिसिरनिकर
धाएदेषमर्कटिभजिचले॥ संधानधनुरघुवंशिमणिहसिसर्निसिरभे
देभले॥ सिरमालिकागहिकालिकाकरबृंदबृंदनिबहुमिली॥ कररु
धिरसरमज्यनमनहुसंग्रामबटपूजनचली॥२५९॥ दोहरा॥ पुनिरावन
अतिकोपकरछाडसिशक्तिप्रचंड॥ सनमुषचलीविभीषणहिमन
हुकालकरदंड॥२६०॥ चौपई॥ आवतिदेषशक्तिषरधारा॥ प्रणता
रतहरविरदुसंभारा॥ तुर्तविभीषणपाछेमेला॥ सनमुषरामसही
सोसेला॥ लागिशक्तिमुर्छाकछुभई॥ प्रभुकृतिषेलसुरनविकलई

९:
लं.

देषविभीषनप्रभुश्रमपायो॥ गहिकरगदाक्रुधहोइधायो॥ रेकुभाग
सठमंदकुबुध्ये॥ तैसुरनरमुनिनागबिरुध्ये॥ सादरशिवकहुसीस
चढाए॥ एकएककैकोटिनपाए॥ तिह्कारनखलअबलगिबाचा
॥अबतवकालसीसपरनाचा॥रामविमुषसठचाहसंपदा॥ असि
कहिहनसिमांझउरगदा॥३६१॥ छंद॥ उरमांझगदाप्रहारघोरक
ठोरलागतमहिपरा॥ दसबदनश्रोणितस्रवतिपुनिसंभारधायो
रिसभरा॥ द्वैभिरेबलअतिमल्यजुद्धविरुधएकैइकहनै॥ रघुबी
रबलगरबितविभीषणघावनहिताकोगनै॥३६२॥ दोहरा॥ उमावि
भीषणरावणहिसनमुषचितवकिकाउ मितेसुकालसमानअ
बश्रीरघुबीरप्रभाउ॥३६३॥ चौपाई॥ देषाश्रमितविभीषणभारी॥
धायोहनूमानगिरधारी॥ रथतुरंगसारथीनिपाता॥ हृदैमाझ
तिहमारसिलाता॥ ठांढरहाअतिकंपतिगाता॥ गयोविभी

140

वनजहिंजनुजाता ॥ पुनिरावनतिहहत्योपचारी ॥ चलागगनि
कपपूछपसारी ॥ गहिसपूछकपसहितउडाना ॥ पुनिफिरभिरे
प्रबलहनुमाना ॥ लतिअकाशजुगलसमजोधा ॥ हनितएकए
कहिकरक्रोधा ॥ सोहैनमछलबलबहुकरही ॥ कज्यलगिरसुमे
रजनुलरही ॥ बुधिबलनिश्चरपरेनपारा ॥ तबमारुतसुतप्रभु
हिसभारा ॥ ३६४ ॥ छंद ॥ संभारश्रीरघुबीरधीरपचारकपरावन
हन्यो ॥ महिपर्यौपुनिउठलर्तिदेवनिजुगलकहुजैजैभयो ॥ हनुमं
तुसंकटदेषमरकटभालुक्रोधातुरचले ॥ रणमत्तरावणसकलसु
भटप्रचंडभुजिबलदलमलै ॥ ३६५ ॥ दोहरा ॥ रामपचारेबीरतब
धाएकीसप्रचंड ॥ कपदलप्रबलबिलोकतिहकीनप्रगटपाखं
ड ॥ ३६६ ॥ चौपई ॥ अंतरध्यानभयोछिनएका ॥ पुनप्रगटेखब
लुरूपअनेका ॥ रघुपतिकटकभालुकपजेते ॥ जहतहप्रगट

लं॰ दसाननतेते ॥ देषेकपनअमितदससीसा ॥ भागेभालुविकलभटकी
सा ॥ चलेबलीमुषधर्हिनधीरा ॥ आहिआहिलछमनरघुबीरा ॥
दसदिशिकोटनधावहिरावन ॥ गर्जहिघोरकठोरभयावन ॥ डरेस
कलसुरचलेपराई ॥ जैकीआसतजहुअबभाई ॥ सबसुरजितेएकद
स्कंधर ॥ अबबहुभएतकहुगिरकंधर ॥ रहेविरंचशंभुमननज्ञानी
जिनजिनप्रभुमहिमाकछुजानी ॥३६७॥ छंद ॥ जानाप्रतापतेरहेन
निरभयकपनरिपुजानेफुरे ॥ चलेबिचलमरकटभालकौसल्लपालपा
हिभयातुरे ॥ हनुमंतअंगदनीलनलअतिबललतरनबांकुरे ॥ मर
दहिदशाननकोटकोटिनकपटभाभटअंकुरे ॥३६८॥ दोहरा ॥ सुरि
बानदेषेबिकलहसेकौसल्लाधीस ॥ सजिबिसिखासनएकसरहतेसक
लदससीस ॥३६९॥ चौपई ॥ प्रभुछिनमहिमायासबकाटी ॥ जिमर
वउदयेजायतमफाटी ॥ रावनएकदेषसुरहर्षे ॥ फिरेसुमनबहुप्रभ

142

पुरवर्षी॥ भुजिउठायरत्नुपतिकपफेरे॥ फिरएकएकनतबटेरे॥ ॥ 143

प्रबलपाइभालुकपधाए॥ तर्लतमककंतुगमन्हिआए॥ कतेप्र
संस्तासुरतिहृदेषे॥ भयेएकमैइनकेलेषे॥ सठकुसदानुममोरप
स्वायल॥ कहिअसकोपगगनपुनिधायल॥ हाहाकारकतेसुरभा
गे॥ खलहुजाहुकहिमोरेआगे॥ देषविकलसुरअंगदधावा॥ कूदच
रनगहिभूमिगिरावा॥३१॥ छंद॥ गहिभूमिपारयोलातमारयोबा
लसुतप्रभुपहिंगयो॥ संभारउठदसकंधघोरकठोररवगर्जतभयो
॥ करदापचापचठायदससंधानसरबहुवर्षई॥ कियेसकलभ
टघायलभयाकुलदेषनिजबलहर्षई॥३१॥ दोहरा॥ तवरघुप
तिलंकेसकेसीसभुजासरचाप॥ काटेभएबहोरजिमकर्मसूठ
करपाप॥३२॥ चौपई॥ सिरभुजबाठदेषरिपुकेरी॥ भालुक
पनरिसभईघनेरी॥ मरततनमूठकटतुभुजिसीसा॥ धाएकोप

७२
लं. भालुभटकीसा ॥ बालतनैमारुतनलनीला ॥ द्रुविदकपीसपन
सबलशीला ॥ बिटपमहीधरकहिंप्रहारा ॥ सोगिरतरुगहिक
पनहुमारा ॥ एकनषनरिपुवपुषबिदारी ॥ भागचलहिंइकला
तनमारी ॥ तवनलनीलसिरनचढगए ॥ नषनलिलारबिदा
तभए ॥ रुधिरबिलोकसकोपसुरारी ॥ तिनहिधर्निकहुभुजाप
सारी ॥ गहेनजाहिकर्नेपराफिरहीं ॥ जनुजुगमधुपकमलबन
चरहीं ॥ कोपकूदिद्वैधरसिबहोरी ॥ महिपटकतगहिभुजाम
रोरी ॥ पुनिसकोपदसिधनुकरलीने ॥ सर्निमारघायलकप
कीने ॥ हनुमदादिमुरछितकरबंदर ॥ पाइप्रदोषहर्षदसकंध्र
॥ मुरछितदेषसकलकपबीरा ॥ जामवंतधायोरणधीरा ॥ संग
भालुभूधरतनुधारी ॥ मारनलगेपचारपचारी ॥ भयोक्रोधरा
वनबलवाना ॥ गहिपदमहिपटकेभटनाना ॥ देषभालुपति

144

निजदलन्हाता॥ कोपमाजितउरमारसिलाता॥३७३॥ छंन्द॥ ॥ 145
उरलातन्हातप्रचंडुलागतिविकलरथतेमहिपरा॥ गहिभालवी
सहुकरमनहुकमलनिवसेनिसिमधुकरा॥ मूर्छितविलोकबहो
रपदहिहतिभालुपतिप्रभुपहिंगयो॥ निशिजानस्यंदननिघालतिहि
तबसूतजतनकरतभयो॥३७४॥ दोहरा॥ गैमुरछातबभालुकपत
मस्राएप्रभुपास॥ सकलनिशचररावनहि छोरिरहेअतित्रास॥३७५
चौपई॥ तेहींनिशिसीतापहिजाई॥ त्रिजटाकहिसबकथासुना
ई॥ सिरभुजिबाढिसुनतरिपुकेरी॥ सीताउरभयत्रासघनेरी॥ मुष
मलीनउपजीमनिचीता॥ त्रिजटासनिबोलीतवसीता॥ होइहि
काहिकहसिकिनमाता॥ किहविधमरहिविस्वदुषदाता॥ रघुप
तिसरसिरकटहिनमरई॥ विधिविप्रीतचरितसबकरई॥ मोर
अभागजियावतिओही॥ जिहहौहरपदकमलबिछोही॥ जिह

हतकपटकनकमृगझूठा॥ अजहुसुदैवमोहिपररूठा॥ जिहविधि
मुहिदुषदुसहसहाए॥ लछमनकहुकटुवचनकहाए॥ रघुप
तिबिरहिसविखसरभारी॥ तकितकिमारबारबहुमारी॥ ऐसेसि
हुदुषजोराषममप्राना॥ सोविधिताहिजियावनआना॥ बहुवि
धिकीनबिलापजानकी॥ करिकरिसुरतिकृपानिधानकी॥ कहि
त्रिजटासुनिराजकुमारी॥ उरसरलागैमरैसुरारी॥ तातैप्रभुउर
हतैनतेही॥ इहकैहृदैवसतिवैदेही॥३१६॥ छंद॥ इहकैहृदैवसि
जानकीजानकीउरममबासहै॥ ममउदरभवनअनेकलागतबा
नसभकरनासहै॥ सुनिवचनहर्षविषादमननिअतिदेषपुनित्रि
जटाकहा॥ अबमरहिरिपुइहविधिसुनोसुंदरतजैसंसयमहा
॥३१७॥ दोहरा॥ काटतसिरहैहैविकलछूटजायतवध्यान॥ ॥
तबरावनकहुहृदैमहिमारहिरामसुजान॥३१८॥ चौपई॥

147

असकहिबहुतभांतिसमुझाई॥ पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई॥
रामसुभाउसुमिरवैदेही॥ उपजीविरहविथाअतितेही॥ निसिहि
ससिहनिंदतबहुभांती॥ जुगसमभईबिहातिनराती॥ करतिबिला
पमनहिमनभारी॥ रामविरहजानकीदुखारी॥ जबअतिभयोउर
अंतरदाहू॥ फरकयोवामनैनअरुबाहू॥ सगुनविचारधरयोमन
धीरा॥ अबमिलहैकृपालरघुवीरा॥ इहांअर्द्धनिशिरावनजागा
निजसारथसनषीझनलागा॥ सठरणभूमिछुडायोंही॥ धिग
धिगअधममंदमतितोही॥ तिनपगगहिबहुबिधिसमुझावा
भोरभएरथचढपुनिधावा॥ सुनआगमनदसाननकेरा॥ कप
दलखरभरभयोघनेरा॥ जहितहिभूधरविटपउपारी॥ धाएकट
कटाइभटभारी॥ ३१९॥ छंद॥ धाएजुमरकटविकटभालुकरा
लकरभूधरधरा॥ अतकोपकरहिप्रहारमारतभजचलैरजनी

चरा॥ विचलायदलबलवंतकीनसत्त्वेरपुनिरावनलयो॥ चहुंदिश
चपेटनमारनषनबिदारतनुव्याककीयो॥२८०॥ दोहा॥ देषमहा
मरकटप्रबलरावनकीनबिचार॥ अंतरहितह्वैनिमषिमहिकृतमा
याविस्तार॥२८१॥ छंद॥ जबकीनतिन्हपाखंड॥ भएप्रगटजंतुप्र
चंड॥ वेतालभूतपिशाच॥ करधरेधनुनाराच॥ योगिनिगहेकर
बाल॥ इकहाथमनुजकपाल॥ करसद्यश्रोणितपान॥ नाचहिक
रहिबहुगान॥ धरुमारुबोलहिघोर॥ रहिपूरधुनिचहुंओर॥॥
मुषबाइधावहिषान॥ तबलगेकीसपरान॥ जहंजाहिमर्कटभाग
॥ तहांबर्तदेषहिआग॥ भएबिकलबानरभालु॥ पुनिलागवर्षैहिबा
लु॥ जहितहिथकितकरकीस॥ गरज्योबहुरदससीस॥ लषमनकपी
ससमेत॥ भएसकलबीरअचेत॥ हारामहारघुनाथ॥ कहिसुभट
मीजहिहाथ॥ इहविधिसकलबतोर॥ तिन्हकीनकपटबहोर॥॥

प्रगट्यसविपुलहनुमानु॥ धाएगहेपाखानु॥ तिनरामघेरेजाइ॥
चहुंदिशिवरूथबनाइ॥ मारहुधरहुजनिजाइ॥ कटकटहिपूंछउठा
इ॥ दसदिशलंगूरबिराज॥ तिनमध्यकौशलराज॥ ३८२॥ छंद॥ तिन
मध्यकोशलराजसुंदरस्यामतनुसोभालही॥ जनुइंद्रधनुखअने
ककीवरबारतुंगतमालही॥ प्रभुदेषहर्षबिषादउरसुरशब्दजैजैजै
करी॥ रघुबीरएकहितीरकोपुकिनिमषिमहिमायाहरी॥ माया
विगतकपभालुहर्षेविटपगिरगहिसबफिरे॥ सरनिकरछाडेराम
रावनबाहुसिरपुनिमहिगिरे॥ श्रीरामरावनसमरचरितअनेक
कलपजुगावही॥ शतसेषसारदिनिगमकबतेतदपपारुनपा
वही॥ ३८३॥ दोहरा॥ कहेतासुगुनगनिकछुकजडमतितुल
सीदास॥ निजपौरषअनुसारजिममसकउडहिअकास॥॥
॥३८४॥ काटेसिरभुजबारबहुमरेनभटलंकेस॥ प्रभुक्रीडत

ले. मुनिछिद्रहरब्याकुलदेषकलेश॥१८५॥ चौपई॥ कटतिबढहिसीसस
मुदाई॥ जिमप्रतिलाभलोभअधिकाई॥ मरैनरिपुश्रमभयोविशेषा
॥रामविभीषनतनतबदेषा॥ उमाकालमरजांकीईछा॥ सोप्रभुक
रजनप्रीतपरीछा॥ सुनसरबग्यचराचरनायक॥ प्रणतपालसुरमु
निसुषदायक॥ नाभीकुंडसुधावसिजांके॥ नाथजियतरावनबल
ताके॥ सुनतविभीषनवचनक्रपाला॥ हर्षगहेकरबानकराला॥
असगुनहोनलगेपुनिनाना॥ रोवहिबहुश्रगालखरस्वाना॥॥
बोलेषगजगआरतिहेतू॥ प्रगटभएनभजहंतहंकेतू॥ दसदिश
दाहिहोनअतिलागा॥ भयोपरबबिनुरवउपरागा॥ मंदोदरिउर
कंपतिभारी॥ प्रतिमाश्रवहिनैनमगवारी॥१८६॥ छंद॥ प्रतिमा
रुवहिपविपातनभअतिवातवहिडोलतमही॥ वरषहिबलहक
रुधिरकचरजिअसुभअतिसककोकही॥ उतपातअमितविलोक

सुरमुनिविकबोलहिजैजयऐ॥ सुरसभेजानकृपालरवुपतिचापसर
जोरतभए॥३९७॥ दोहरा॥ आकरष्योधनुकानलगिछाडेसरइ
कतीस॥रवुनाइकसायकचलेमानहुकालफनीस॥३९८॥ चौपई
सायकएकनाभसरसोखा॥ अपरलगेभुजसिरकरिरोषा॥ लैसि
रुबाहुचलेनाराचा॥ सिरभुजिहीनरुंडमहिनाचा॥ धरनिधसहि
धरधावप्रचंडा॥ तबप्रभुसरहतिकृतिजुगखंडा॥ गरज्योमरतघो
ररवभारी॥ कहारामरनहतेपचारी॥ डोलीभूमिगिरतदसकंधर
॥ छुभितसिंधुसरिदिग्यजभूधर॥ प्रयोबीरद्वैखंडबढाई॥ चापिभा
लुमरकटसमुदाई॥ मंदोदरिआगेभुजसीसा॥ धरसरचलेजहां
जगदीसा॥ प्रविसेसभनिखंगमहिआई॥ देषसुर्नदुंदभीबजाई॥
तासुतेजसमानप्रभुआनन॥ हर्षेदेषशंभुचतुरानन॥ जैजैधुन
पूरीब्रह्मंडा॥ जैरवुबीरप्रबलभुजदंडा॥ वर्षहिसुमनदेवमुनि
दे

लं. बृंदा ॥ जैकृपालजैजैतमुकंदा ॥ ३८४ ॥ छंद ॥ जैकृपाकंदमुकंदद्वंदह
र्नसर्नसुषप्रदप्रभो ॥ खलदलविदारनपर्मकार्नकरुणीकसदाविभो
॥ सुरसिद्धमुनिगंधर्बहर्षेबाजहंदुंदुभिगहगही ॥ संग्रामअंगनराम
अंगअनंगबहुसोभालही ॥ सिरजटामुकटप्रसूनबिचबिचअतिम
नोहरराजही ॥ जनुनीलगिरिपरतडतपटलसमेतउडुगनभ्राजही
॥ भुजदंडसरकोदंडफेरतरुधरकनतनअतिबने ॥ जनुराइमुनि
तमालतरुबैठेविपुलसुषआपने ॥ ३८५ ॥ दोहरा ॥ कृपादृष्टिकरबृ
ष्टिप्रभुअभयकीयेसुरबृंद ॥ हर्षेबानरभालुसबजैसुषधाममुकंद ॥
॥ ३८६ ॥ चौपई ॥ पतिभुजसिरदेषतिमंदोदरी ॥ मूर्छितविकलधर्नि
षिसपरी ॥ युवतिबृंदरोवतिउठिधाई ॥ तिहउठायरावनपहिआई
॥ पतिगतिदेषतकरहिपुकारा ॥ छूटेचिकुरनदेहिसंभारा ॥ उरताडना
करहिविधिनाना ॥ रोवतिकरहिप्रतापबखाना ॥ तवबलनाथडो

लनितधनी॥ चढतमत्तगजजाजिमलछूतनी॥ तीनलोकमानतज
हिन्माना॥ तेजहीनपावकससिभाना॥ सेषकमठसहिसकहिन
भारा॥ सोतनुभूमिपरयोभरिछारा॥ वरुणकुबेरसुरेससमीरा॥ रण
सनमुषधरकाहुनधीरा॥ भुजिबलजित्योकालजमसाई॥ आजु
परिऊअनाथकीन्याई॥ जगतविदमितुमरीप्रभुताई॥ सुतपरज
निबलवर्निनजाई॥ रामविमुषअसिहालतुमारा॥ रहानकोकु
लरोवनहारा॥ तवबसविधिप्रपंचसबनाथा॥ सभैदिशनिपति
नावहिमाथा॥ अबतवसिरभुजिजंबकखाही॥ रामविमुषयहि
अनुचितनाही॥ कालविवसिपतिकहानमाना॥ अगजगनाथि
मनुजकरजाना॥१०४॥ छंद ॥ जानामनुजकरदनुजकानानि
दहनिपावकहरस्वयं॥ जिहनमितशिवब्रह्मादिसुरपियभज्योः
नहिकरुणामयं॥ आजन्मतेपरद्रोहिरतिपापौघमयतवतनु

अयं॥तुमहूंदियोनिजधामराममनमामिब्रह्मनिरामयं॥३१३॥दोहरा॥ अहहनाथरघुनाथसमकृपासिंधुकोआनमुनिदुर्लभजोपरमगतितोहिदीनभगवान॥३१४॥चौपई॥मंदोदरीवचनसुनिकाना॥सुरमुनसिद्धिसबनसुषुमाना॥अजमहेसुनारदसनकादी॥जेमुनिवरपरमारथबादी॥भरलोचनरघुपतहिनिहारी॥प्रेममगनिसभभएसुखारी॥रुदनकर्तदिलोकसबनारी॥भयोविभीषणमनदुखभारी॥बंधुदसादेषतिदुषकीना॥रामअनुजकहुआयसुदीना॥लछमनजावताहिसमुझायो॥बहुरविभीषणप्रभुपहिआयो॥कृपादृष्टिप्रभुताहिविलोका॥करहुक्रयापरहरसबसोका॥कीनक्रयाप्रभुआयसमानी॥॥विधिवतिदेसकालजीयजानी॥३१५॥दोहरा॥मैतन्यादिकनारसबदेयतिलांजलताहि॥भवनगईरघुबीरगुनगानिबरनतमनमाहि॥३१६॥चौपई॥आयविभीषणपुनिसिरुनायो॥कृपासिंधुतबअ

नुजबुलायो॥ तुमकपीतअंगदनिलनीला॥ जामवंतमारूतजैसी॥
ला॥ सभमिलजाऊंविभीक्षणताघा॥ सारकुतिलककहोरघुनाघा॥
पितावचनमैनगरनआवौ॥ आपुसरीकपअनुजपठावौ॥ तुर्तचले
कपसुनिप्रभुवचना॥ कीनीजायतिलककीरचिना॥ सारदेसिंहा॥
सनबैठारी॥ तिलकदीनअततुतअनुसारी॥ जोरपाणसबहनि
हिरूनाए॥ सहितविभीक्षणप्रभुपहिआए॥ तवरघुवीरबोलकप
लीने॥ कहिप्रियवचनसुषीसबकीने॥३९७॥ छंद॥ कीयेसुषी
कहिबानीसुधाबलतुमारेरिपुहयो॥ पायोविभीक्षणराजतिहुपुर
यसुतुमरोनितनयो॥ मोहिसहितसुभकीरततुमारीपमप्रीतजेगा
यहैं॥ संसारसिंधुअपारपारप्रयाससबिनुनरपायहैं॥३९८॥ दोहरा
सुनतरामकेवचनमदनहिअघायकपपुंज॥ बारहिवारविलोकमुष
गहेसकलपदकंज॥३९९॥ चौपई॥ पुनिप्रभुबोललीयेहनुमाना॥

लंकाजाहुकह्येभगवाना॥समाचारजानिकिहिसुनाइहु॥तासुकु
शलैतुमचलआइहु॥तवहनुमंतिनगरमहिआए॥सुननिसचरी
निशाचरधाए॥पूजाबहुप्रकारतिनिकीनी॥जनकसुतादिषाय
तबदीनी॥दूरहितेप्रणामकपकीना॥रघुपतिदूतिजानकीचिह्ना
कहिहुतातप्रभकृपानिकेता॥कुसलअनुजकपिसेनसमेता॥सम
विधिकुसलकोसलाधीसा॥मातुसमनजीत्योदससीसा॥अविचलिरा
जुविभीषणपावा॥सुनकपवचनहर्षउरछावा॥४००॥छंद॥अति
हर्षमनतनपुलकलोचनसजलकहिपुनिपुनिरमा॥कादेउंतो
हिहैलोकमैकपिकिमपिनहिबीनीसमा॥सुनमाततमैपायोअषि
लजगराजआजनसंसयं॥रणजीतरिपुदलबंधुजुतिपस्यामरास
नमामयं॥४०१॥दोहरा॥सुनसुतसदगुनसकलतवहृदयबस
हिहनुमंत॥सानिकूलरघुवंशमनिरहेसमेतअनंत॥४०२॥चौपई॥

अबसोजतनकरहुतुम्हताता॥ देषियनैनस्यामम्रदुगाता॥ तवह
नुमानरामपहिंजाई॥ जनकसुताकैकुसलसुनाई॥ सुनबानीभा
नुकुलभूषण॥ बोललीयेजुवराजविभीषण॥ मारुतसुतकै
संगसिधावहु॥ सादरजनकसुतालैआवहु॥ तुरतहिंसकलगए
जहिंसीता॥ सेवहिंसबनिसचरीबिनीता॥ बेगबिभीषणतिनहि
सिखावा॥ सादरतिनसीतहिअनुवावा॥ दिव्यबसनभूषणपहिरा
ए॥ शिवकारुचिरसाजपुनिल्याए॥ तांपरहर्षचढीवैदेही॥ सुमि
रसामसुषधामसनेही॥ बेतबाणरछकचहुंपासा॥ चलेसकल
मनपरमहुलासा॥ देषनिभालुकीससभआए॥ रछककोपनिवा
रणधाए॥ कहिरघुबीरकहामममानहु॥ सीतहिसखापियादेआ
नहु॥ देषहिकपजननीकीन्याई॥ विहसकहारघुबीरगुसाईं॥ सुनि
प्रभवचनभालुकपहर्षे॥ नभतेसुर्नसुमनबहुवर्षे॥ सीताप्रथम

अनलमहिराषी॥ प्रगटकीनचहिअंतरसाषी॥४०३॥ दोहरा॥ तिह्नकारणकरुणायतनुकहेकछुकटुरबाद॥ सुनतजातधानीतकललागीकरनविषाद॥४०४॥ चौपई॥ प्रभुकेवचनसीसधरसीता॥ बोलीमनक्रमबचनपुनीता॥ लछमनहोहुधर्मकेनेगी॥ पावकप्रगटकरहुतुमबेगी॥ सुनलछमनसीताकैबानी॥ बिरहिबिवेकधर्मंहैसानी॥ लोचनसजलजोरकैदोऊ॥ प्रभसनिकछुकहिशक्तिनतेऊ॥ देषरामरुषलछमनधाए॥ प्रगटक्रसानकाष्टबहुल्याए॥ प्रबलअनिलविलोकवैदेही॥ हृदेहर्षकछुभयनहितेही॥ जौमनबचक्रममममउरमाही॥ तजिरघुबीरआनगतिनाही॥ तौक्रसानुसभकैगतिजाना॥ मोकहुहोश्रीखंडसमाना॥४०५॥ छंद॥ श्रीखंडसमपावकप्रवेसकियोसुमरप्रभुमैथली॥ जैकौसलेसमहेसबंदितचर्नरतिअतिनिरमली॥ प्रतिबिंबअरुलौकिककलंकप्रचंडपावकमहिजरे॥ प्रभुचरितकाहु

नलषेनमसदरसिद्धिमुनिवेषहिषरे॥तवअनुलभ्रातुररूपकरगहिसा
न्नश्रीहुनबिदितजो॥जिहीरसागरइंदरारामहिसमरपीआनसो॥सोई
रामवामविभागराजतिरुचिरअतिसोभाभली॥नवनीलनीरजनिक
टमानकुकनकपंकजिकीकली॥४०६॥दोहरा॥हर्षसुमनवर्षहिविबु
धिवाजहिगगननिशान॥गावहिकिन्नरअपछरानाचहिचढीबिवान॥
।४०७।श्रीजानकीसमेतप्रभुसभाअमितअपार॥देषतिहरषेभालुक
पिजैररघुपतिसुषसार॥४०८॥चौपई॥तवररघुपतिअनुसासनिपाई॥
मातुलचलेचरणसिरुन्याई॥आएदेवसदारतिस्वारथ॥वचनकहेमान
हुपरमारथ॥दीनबंधुदयालरघुराया॥देवकीनदेवनपरदाया॥॥
विस्वद्रोहिरतिएहखलुकामी॥निजअघगयोकुमारगगामी॥तुमस
मरूपब्रह्मअबनासी॥सदाएकरससहिजउदासी॥अकलअगुन
अजअनघअनामय॥अजितमोघशक्तिकरुणामय॥मीनकमठ

159

लं. सूकरनरहरी॥ बावनपर्सरामबपुधरी॥ जबजबनाथसुरन्हदुषपावा॥
नानातनुधरतुमहिनसावा॥ रावनपापरूपसुरद्रोही॥ कामलोभमद
रतिअतिकोही॥ सोकृपालतवधामसिधावा॥ इहहमरेमनबिस्मैआवा
॥हमदेवतापर्मअधिकारी॥ स्वारथिरततवभक्तिबिसारी॥ भवप्रवाहि
संततहमपरे॥ अबप्रभुपाहिसर्निअनुसरे॥४०९॥ दोहरा॥ करबिनती
सुरसिद्धिसभरहिजहितहिकरजोर॥ अतिसैप्रेमसरोजभवअस्तुतिकर
तबहोर॥४१०॥ तोटकछंद॥ जैरामसदासुषधामहरे॥ रघुनायकसाय
कचापधरे॥ भवबारनदारुनसिंहप्रभो॥ गुनसागरनागरनाथविभो॥
तनुकामअनेकअनूपछबी॥ गुनगावतिसिद्धिमुनींद्रकबी॥ जसु
पावनरावननागमहा॥ षगनाथजथाकरकोपमहा॥ जनरंजनभं
जनशोकभयं॥ गतिक्रोधसदाप्रभुबोधमयं॥ अवतारउदारअपार
गुनं॥ महिभारबिभंजनग्यानघनं॥ अजब्यापकमेकमनादिसदा

करुणाकरहोश्रीरामिमुदा॥ रघुवंशविभूषनदूषनहा॥ क्षितिभूपविभी
षनदीनरहा॥ गुनज्ञाननिधानअमानिअजं॥ नितरामिनमामिविभुं
जरुजं॥ भुजदंडप्रचंडप्रतापबलं॥ खलबृंदनिकंदमहाकुसलं॥॥
बिनुकारणदीनदयालहितं॥ छबिधामनिमामिरमासहितं॥ भव
तारनकारनकाजपरं॥ मनसंभवदारुणदोषहरं॥ सरचापमनो
हरतूणधरं॥ जलजारुणलोचनभूपबरं॥ सुषमंदरसुंदरश्रीरमनं
॥ मदमारमहाममतासमनं॥ अनवद्यअखंडनगोचरगो॥ समरू
पसदासबहोयगनसो॥ इतवेदबदंतिनदंतिकथा॥ रवआतपभिन्नम
भिन्नयथा॥ कृतिकृतिविभोसबबानरए॥ निरखंतितवाननसादरए
॥ धिगसुजीवनदेवसरीरहरे॥ तवभक्तिबिनाभवभूलिपरे॥ अबदीन
दियालकृपाकरिये॥ मतिमोरिबिभेदकरीहरिये॥ जिहतेविप्रीतक्रि
पाकरिये॥ दुखसोसुषमानसुषीचरिये॥ खलखंडनमंडनरामक्षमा

लं॰ पदपंकजसेवतशंभुउमा॥ नृपनायकदेवरदानसिदं॥ चरनांबुजप्रेमसदासुभिदं॥४११॥ दोहरा॥ बिनैकीनबिधिमातिबहुप्रेमपुलकअतिगात॥ बदनबिलोकतिरामकरलोचननहीअघात॥४१२॥ चौपई॥ तिहअवसरदसरथतहिआए॥ तनैबिलोकनैनजलछाए॥ सहितअनुजप्रणामतिहिकीना॥ आशिर्बादपिलातबदीना॥ तातसकलतवपुन्नप्रभाऊ॥ जीत्योअजैनिशाचरराऊ॥ सुनसुतबचनप्रीतअतिबाढी॥ सजलनैनरोमावलिठाढी॥ रघुपतिप्रथिमप्रेमअनुमाना चितैपितैदीनोद्रिढिग्याना॥ तांतेउमामोक्षनहिपावा॥ दसरथिभेदभक्तिमनलावा॥ सगुनउपासकमोक्षनलेही॥ तिनकहुरामभक्तिनिजदेही॥ बारबारकपिप्रभुहिप्रनामा॥ दसरथहर्षगएनिजधामा॥४१३॥ दोहरा॥ अनुजजानकीसहितप्रभुकुशकौसलाधीस॥ छबबिलोकमनहर्षअतिअस्तुतकरेसुरीस॥

162

॥७१४॥छंद॥ जैरामसोभाधाम॥दायकप्रणतबिश्राम॥धृतित्रूनब
रसरचाप॥भुजदंडप्रबलप्रताप॥जैदूषनारिषरारि॥मरदननिशाच
रधार॥ जैदुष्टमारेनाथ॥भएदेवस[illegible]सनाथ॥जैहरनधरनीभार
महिमाउदारअपार॥जैरावणारिकृपाल॥किएजातुधानुबिहाल
॥लंकेसअतिबलगर्ब॥किएवस्यसुरगंधर्ब॥मुनिसिद्धिषगनरना
ग॥हठपंथसबकैलाग॥परद्रोहरतिअतदुष्ट॥पायोसुफलपा
पिष्ट॥अबसुनहुदीनदयाल॥राजीवनैनबिसाल॥मुहिरह्याअत
अभिमान॥नहिकोइमोहिसमान॥अबदेषप्रभुपदकंज॥गतिमा
नप्रदतुखपुंज॥कोब्रह्मनिरगुनध्याव॥अव्यक्तजिहस्रुतिगाव॥
मोहिभावकोसलभूप॥श्रीरामसगुनसरूप॥वैदेहिअनुजसमेत॥
ममहृदैकरहुनिकेत॥मुहिजानियेनिजदास॥दैभक्तिरमानिवास
॥७१५॥छंद॥भेदभक्तिरमानिवासत्रासहरनसरनसुखदायकं॥

सुषधामरामनिमामकामअनेकछबिरघुनायकं॥ सुरव्रंदरंजनद्वं
द्वभंजनमनुजितनुअतुलतिबलं॥ ब्रह्मादिशंकरसेव्यरामनमा
मिकरूणाकोमलं॥ ७१६॥ दोहा॥ अबकरकृपाविलोकमुहिआइसु
देहुकृपाल॥ काह्निकरौंसुनप्रियबचनबोलेदीनदयाल॥ ७१७॥ चौ.
सुनसुरपतिकपभालुहमारे॥ परेभूमनिश्चरनिजेमारे॥ ममहित-
लागतजेइनप्राना॥ सकलजियावसुरेससुज्ञाना॥ सुनषगपतिप्र
भकैइहबानी॥ अतिअगाधजानहिमुनिज्ञानी॥ प्रभुशक्तिमवनिमा
रजियाई॥ केवलसक्रहिदीनबडाई॥ सुधावरषकपभालुजियाए
हर्षउठेसभुप्रभुपहिआए॥ सुधाव्रष्टिभैदुहदलऊपर॥ जियेभालु
कपनहिरजनीचर॥ रामाकारभएतिनकेमनि॥ गएब्रह्मपदत
जिसरीररन॥ सुरअंसिकसभकपअरुरिछा॥ जियेसकलरघुप
तिकीइछा॥ रामनसर्सदीनहितकारी॥ कीनेमुक्तिनिशाचरझारी

खलमलधामकामरतिरावन॥गतिपाईजोमुनिवरिपावन॥४१८॥
दोहरा॥ सुमनवर्षसभसुरचलेचढिचढिरुचिरविबान॥देषहु
सुअवसररामपहिआएसंभुसुजान॥४१९॥चौपई॥ नंदीचढेमहा
गनिसंगा॥सोभितसंगगौरिसुरधंगा॥जलकगंगसिरचंदुलिला
रा॥नीलकंठछबिगरलिकीभारा॥करखप्परसिरुनरउरमाला॥
अहिकुलपतिस्रुतिगरेबिसाला॥तीननैनपिंगलसिरजरा॥
स्वेतविभूतदेहिस्रुतिछटा॥डिमिडिमिडिमिडवरूकरवाजे॥
स्रंगीसिरगगिरछालासाजै॥तरुनअरुनअंबुजसुभचरना
नखदुतभक्तिहृदैतमहरना॥मननमैभूतभूषनत्रिपुरारी॥
आननसर्दचंदछबिहारी॥इहविबसोहिकामरिपुकैसे॥
धरेसरीरसांतिरसजैसे॥४२०॥दोहरा॥नासलंकपतिसोनत
मबैठकोअधीन॥संगचारुगंधर्वगननिगएतहांगौरीस॥४२१॥

दोहरा ॥ परमप्रीतकरजोरजुगनलिननैनभरबार ॥ पुलकिततनुग
दगदगिराबिनैकरतत्रिपुरार ॥४२२॥ चौपई ॥ मामभिरक्षयरघुकु
लनायक ॥ धृतिबरचापरुचिरकरसायक ॥ मोहमहाघनपटलप्र
भंजन ॥ संसयबिपिनअनलसुररंजन ॥ अगुनसगुनगुनमंदरसुंद
र ॥ भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर ॥ कामक्रोधमदगजपंचानन ॥
बसहुनिरंतरजनमनकानन ॥ बिषैमनोरथपुंजकंजबन ॥ प्रबल
तुखारउदारपारमन ॥ भवबारिधमंदरपरमंदर ॥ बारियतारिय
संसृतिदुस्तर ॥ स्यामगातराजीवबिलोचन ॥ दीनबंधुप्रनतारतमो
चन ॥ अनुजजानकीसहितनिरंतर ॥ बसहुरामन्रपममउरअंतर ॥
मुनिरंजनमहिमंडनमंडन ॥ तुलसीदासप्रभुतापबिखंडन ॥४२३॥
दोहरा ॥ नाथजबहिकोसलपुरीहोइहैतिलककुमार ॥ तवमैआवौंह
नहुप्रभुदेषनिचरितउदार ॥४२४॥ चौपई ॥ करबिनतीजबसंभुसिधा

ए॥ तवप्रभुनिकटविभीषनआए॥ नायचरनसिरुकहिमृदुबानी॥
बिनैसुनहुप्रभुसारंगपानी॥ सकुलसदलप्रभरावनुमारा॥ पावन
जसुत्रिभुवनविस्तारा॥ दीनमलीनहीनमतिजाती॥ मोपरकृपाकीन
बहुभाती॥ अबजनिगृहिपुनीतप्रभकीजै॥ मज्जनकरीयसमरश्रम
छीजै॥ देसकोसमंदरसंपदा॥ देहुकृपालकपिन्हकहुमुदा॥ सभवि
धिनाथमोहिअपुनाईय॥ पुनिमुहिसहितअवधिप्रभुजाईय॥ सु
नतवचनतबदीनदयाला॥ सजलभएद्वैनैनबिसाला॥४२५॥
दोहरा॥ तोरकोसगृहमोरसबसत्यवचनसुनुभ्रात॥ दसाभरतकै
सुमरमुहिनिमषकलपसमजात॥४२६॥ तापसिदेषसरीरकृसिजपत
निरंतरमोहि॥ देषौबेगसुजतनुकरसखानिहोरौतोहि॥४२७॥ जौजै
हौबीतेअवधिजियतनपावौबीर॥ प्रीतभक्तिकीसमुझिप्रभुपुनिपु
निपुलकिसरीर॥४२८॥ करहुकलपभरराजतुममोहिसुमरमनमा

पुनिममधामसिधायहोजहासंतसबजाहि॥४२९॥चौपई॥सुनत
विभीषनवचनरामके॥हर्षगहेपदकृपाधामके॥बानरभालुसक
लहरषाने॥गहिप्रभुपदगुनविमलबषाने॥बहुरविभीषनभवनसि
धावा॥मनगनबसनविमानभरावा॥लैपुश्पकप्रभुआगेराषा॥
हसकरकृपासिंधुतबभाषा॥चढ़विमानसुनसषाविभीषन॥गग
नजायबरषहुपटभूषन॥नभपरजायविभीषनतबही॥बर्षदि
येमनअंबरसबही॥जोजोमनभावेसोलेही॥मनमुषमेलडारकप
देही॥हसेरामसियअनुजसमेता॥पर्मकौतकीकृपानिकेता॥
॥४३०॥दोहरा॥ध्याननपावैजाहिमुनिनेतनेतकहबेद॥कृपासिं
धुसोकपनसनिकर्तअनेकबिनोद॥४३१॥उमाजोगजपदानत
पनानामषब्रतनेम॥रामकृपानहिकरहितसजसनिहकेवल
प्रेम॥४३२॥चौपई॥भालुकपनपटभूषनपाए॥पहिरपहिर

रघुपतपहिंआए॥ नानाजिनसिदेषप्रभुकीसा॥ पुनिपुनिहु 169
लिकौसलाधीसा॥ चितैसबनपरकीनीदाया॥ बोलेवचनमधु
ररघुराया॥ तुमरेबलमैरावनुमारा॥ तिलकविभीखनकोपुनिसा
रा॥ निजनिजग्रहअबतुमसबजाहू॥ सुमरिहुमोहिडरिहुजिन
काहू॥ वचनसुनतप्रेमाकुलवानर॥ पानजोरबोलैसबसादर
॥प्रभजोकहोतुमहिसभसोहा॥ हमरेहोतबचनसुनिमोहा॥
दीनजानकपकीयेसनाथा॥ तुमत्रिलोकपतिप्रभुरघुनाथा॥
सुनप्रभुवचनलाजहमभरही॥ मसककहुंखगपतहितकरही
॥देषरामरुषबानररीछा॥ प्रेममगिननहिग्रहकैईछा॥४३३॥
दोहरा॥ प्रभुप्रेरितकपभालुसभरामरूपउरराष॥ हर्षविषादस
मेततबचलेबिनैबहुभाष॥४३४॥ जामवंतुकपराजनलअंगदादि
हनुमान॥ सहितविभीखनजेअपरजूथपकपबलवान॥४३५॥

८५
लं. कहिनसकहहिकछुप्रेमवसभरभरलोचनवार॥ सनमुषचितवतराम तनु नैननमेषविसार॥४३६॥ चौपई॥ अतिहैप्रीतदेषरघुराई॥ लीनेसकलविमानचढाई॥ मनमहिविप्रचरनशिरनावा॥ उत्तरदिशहिविमानचलावा॥ चलविमानकुलाहलिहोई॥ जैरघुबीरकहैसबकोई॥ सिंहासनअतिऊचमनोहर॥ श्रीसमेतबैठे प्रभुतापर॥ राजतरामसहितसुभामिनी॥ मेरशृंगजनुघनसुदामिनी॥ रुचिरविमानचल्योअतिआतुर॥ कीनीसुमनबृष्टिहरषेसुर॥ परमसुषधवैत्रिविधिबयारी॥ सागरसरसरनिरमलवारी॥ सगुनहोहसुंदरचहुपासा॥ मनप्रसन्ननिरमलनभआसा॥ कहिरघुबीरदेषुरणसीता॥ लछमनइहांहत्योइंद्रजीता॥ हनुमानअंगदकेमारे॥ रणमहिपरेनिशाचरभारे॥ कुंभकर्नरावनहैभाई॥ इहांहतेसुरमुनिदुषदाई॥४३७॥ दोहरा॥ देषोसुंदर

170

171

रसेतुजहिं थापेशिवसुषधाम॥ सीतासहितकृपाइतन शंभुहि कीनप्रणाम॥४३८॥ जहिंजहिंकरुणासिंधुबनुकीनबासुबिश्राम सकलदिषाएजानकिहिकहेसबनकेनाम॥४३९॥ चौपई॥ सपद विमानतहांचलआवा॥ दंडकबनजहिपर्मसुहावा॥ कुंभजादिमु निनायकनाना॥ गएरामसबकेअस्थाना॥ सकलरिषनसैपाइ असीसा॥ चित्रकूटआएजगदीसा॥ तहिंकरमुननिकेरसंतोषा चलाविमानतहांतेचोखा॥ बहुरिरामजानकहिंदिषाई॥ जमुना कलमलहरनसुहाई॥ पुनिदेषीसुरसरीपुनीता॥ रामकहाप्र नामकरसीता॥ तीरथपतिपुनिदेषप्रयागा॥ देषतकोटजनम अघभागा॥ देषपर्मपुनिपावनबेनी॥ हर्नशोकहरलोकनिशे नी॥ देषहुअवधिपुरीअतिपावन॥ त्रिविधितापभयरोगनसाव न॥४४०॥ दोहरा॥ तवरघुनायकसीयसहितअवधकीनपर्नामि

सजलविलोचन पुलकतनु पुनि पुनि हरषत राम॥४४१॥ बहुरि त्रिबेनी आय प्रभु हरषत मज्जन कीन॥ कपन समेत सु महिसुरन दान बिबिधि बिधि दीन॥४४२॥ चौपई॥ प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई॥ धरबटरूप अवधपुर जाई॥ भरतहि कुसल हमार सुनाइहु॥ समाचार लेतुम चल आइहु॥ तुरत पवनसुत गवनत भए॥ तव प्रभु भारद्वाज पहि गए॥ नाना बिधि मुनि पूजा कीनी॥ अस्तुत करपुनि आसिष दीनी॥ मुनि पदबंद जुगल करजोरी॥ चढि बिमान प्रभु चले बहोरी॥ इहां निखाद सुना हरि आए॥ नाव नावक हि लोक बुलाए॥ सुरसरनांघ जान जब आवा॥ उतरयो तट प्रभ आयसु पावा॥ तव सीता पूजी सुरसरी॥ बहु प्रकार चरनन तव परी॥ दीन असीस हरष मन गंगा॥ सुंदर तव अहिवात अभंगा॥ सुनत गुहि धायो प्रेमाकुल॥ आयो निकट परम सुष संकुल॥ प्रभुहि बिलोक सहित वैदेही॥ प्रयो।

172

श्रवनतलसुघनहितेही ॥ प्रीतपरमविलोकरघुराई ॥ हर्षउठाय
लयोउरलाई ॥४४३॥ छंद ॥ लयोहृदैलायकृपानिधानसुजान
रायरमापती ॥ बैठारपरमसमीपबूझीकुशलसोकरबेनती ॥ अब
कुशलपदपंकजविलोकविरंचशंकरसेव्यजे ॥ सुषधामपूरनका
मरामनमामिरामनमामिते ॥ सभभांतिअधमनिषादसोहरिभ
रतज्योंउरलाययो ॥ मतिमंदतुलसीदाससोप्रभुमोहिबसबिस
राययो ॥ यहिरावणारिचरित्रपावनरामपदरतिप्रदसदा ॥
कामादिहरविग्यानकरसुरसिद्धमुनिगावहिमुदा ॥४४४॥ दोहा ॥
समरविजैरघुपतिचरितसुनहिजेसदासुजान ॥ विजैविबेकविभू
तनिततिनहिदेहिभगवान ॥४४५॥ यहिकलकालमलायतनु
मनकरदेषिबिचार ॥ श्रीरघुनायकनामुतजिनहिकछुआन
अधार ॥४४६॥ इतिश्रीरामचरितमानिसेसकलकलकलु

 अविधंसनेबिमलबिग्यानसंपादनीनामषष्टमसोपानाःसमा
पितः॥ ॥इतिश्रीलंकाकांडसमापतं॥संपूरणं॥ ॥
॥राम॥ ॥राम॥ ॥राम॥ ॥राम॥ ॥राम॥ ॥राम
॥ ॥संवत॥१९२९॥ ॥मकरेमासेक्रिस्नपखेत्र्योदस्यांशुभं॥

MSS No. 464 (Part -7) Subject Ramayana

Name of MSS Ramcharit Manas (Uttar Kand)

Author Tulsidas

Period Folios 113

Script Devnagiri Source Kapoor, Jalandhar City

Missing Folios

१
उ.

छुमन बड़भागी॥ राम पदारबिंद अनुरागी॥ कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा॥ तातें नाथ संग नहि
लीन्हा॥ जो करनी प्रभु समझै मेरी॥ नहि निसतार कलप सत कोरी॥ जन अवगुन प्रभु मान न का
ऊ॥ दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ॥ मोरे जिय भरोसा द्रिढ सोई॥ मिलहहि राम सुगुन सुभ होई॥ बी
तें अवधि रहहि जो प्राना॥ अधम कवन जग मोहि समाना॥ ८ दोहा॥ राम बिरह सागर अमित भर
त मगन मन होति॥ बिप्र रूप धरि पवन सुत आइ गयो जनु पोत॥ ९॥ बैठे देषि कुसासन जटा
मुकुट कृश गात॥ राम राम रघुपति जपत श्रवत नयन जलजात॥ १०॥ चौपई॥ देषत हनूमा
न अति हरषो॥ पुलक गात लोचन जल बरषो॥ मन महि बहुत भाति सुष मानी॥ बोल्यो श्र
वन सुधा सम बानी॥ जासु बिरह सोचहु दिनु राती॥ रटहु निरंतर गुन गन पाती॥ रघुकुल ति
लक सुजन सुषदाता॥ आयो कुसल देव मुनि त्राता॥ रिपु रन जीत सुजस सुर गावत॥ सीता स
हित अनुज प्रभु आवत॥ सुनत बचन बिसरे सब दूषा॥ त्रिषावंत जिम पाइ पियूषा॥ को तुम तात
कहा ते आये॥ मोहि परम प्रिय बचन सुनाये॥ मारुत सुत मै कपि हनुमाना॥ नाम मोर सु
नु कृपानिधाना॥ दीनबंधु रघुपति कर किंकर॥ सुनत भरत भेटेउ उठ सादर॥ मिलत प्रेम न॥

राम
१

ॐश्रीगणेशायनमः॥श्रीजानकीवल्लभोजयति॥केकीकंठाभनीलंसुरवरविलस
द्विप्रपदाब्जचिन्हं॥शोभाढ्यंपीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नं॥पाणौनारा
चचापंकपिनिकरयुतंबंधुनासेव्यमानं॥नौमीड्यंजानकीशंरघुवरमनिशंपुष्प
कारूढरामं॥१॥कोशलेंद्रपदकंजमंजलौ॥कोमलावजमहेशवंदितौ॥जानकीकरसरो
जलालितौ॥चिंतकमानसभृंगसंगिनौ॥२॥कुंदइंदुदरगौरसुंदरं॥अंबिकापतिमभी
ष्टसिद्धिदं॥कारुनीककलकंजलोचनं॥नौमिशंकरमनंगमोचनं॥३॥दोहा॥रहाएक
दिनुअवधकरअतिआरतिपुरलोग॥जहिंतहिंसोचहिंनारिनरकृसगाततनरामवियोग
॥४॥सगुनहोहिंसुंदरसकलमनप्रसन्नसबकेर॥प्रभुआगवनजनावजनुनगररम्यच
हुंफेर॥५॥कौशल्यादिकमातसबमनअनंदअसहोइ॥आयोप्रभुश्रीअनुजजुतिकह
नचहतिअबकोइ॥६॥भरतनयनभुजदक्षिनोफरकतबारहिंबार॥जानसगुनमनह
रषअतिलागेकरनविचार॥७॥चौपई॥रहाएकदिनअवधअधारा॥समझतमनदुखभ
योअपारा॥कारनकवननाथनहिंआयो॥जानकुटिलकिधौंमुहिबिसरायो॥अहहिधंन्यल

हिहृदेसमाता॥ नयनश्रवतजलपुलकतगाता॥ कपितवदरसशसकलदुखवी
ते॥ मिलेआजुमुहिरामपरीते॥ बारबारबूझीकुशलाता॥ तोकोदेऊंकहासु
नभ्राता॥ इहिसंदेशसरसजगमाही॥ करिबिचारदेष्योकछुनाही॥ नाहिनतात
ऊरनमैतोही॥ अबप्रभचरितसुनावहुमोही॥ तबहनुमंतनाइपदमाथा॥ क
हेसकलरघुपतिगुनगाथा॥ कहुकपकबहुदयालगोशांई॥ सुमरहिमोहिदा
सकीन्याई॥११॥ छंद॥ निजदासज्योंरघबंशभूषनकबहुममसुमरनकरॺो॥
सुनिभरतबचनविनीतअतिकपिपुलकततनचरननपरॺो॥ रघुबीरनिजमु
षजासगुनगनकहतअगजगनाथजो॥ काहेनहोइविनीतपरमपुनीतस
दगुनसिंधसो॥१२॥ दोहा॥ रामप्रानप्रियनाथतुमसत्यिबचनममतात॥ पुनपु
नमिलतभरतसनहरषनहृदैसमात॥१३॥ सोरठा॥ भरतचरनसिरनाइतु
रतगयोकपिरामपहि॥ कहीकुशलसनजाइ॥ हरषचल्योप्रभजानचढि॥१४॥
चौपई॥ हरषभरतकोशलपुरआये॥ समाचारसनगुरहिसुनाए॥ पुनमंदर
महिबातजनाई॥ आवतनगरकुशलरघुराई॥ सुनतसकलजननीउठि॥

२
उ०

धाई॥ कहु प्रभु कुशल भरत सम भाई॥ समाचार पुरबासन पाए॥ नरअरु नारि
हरषसन धाए॥ दधि दूरबा रोचन फल फूला॥ नव तुलसी दल मंगल मूला॥ न
रि भरि हेम थारि भामनी॥ गावत चलि सिंधुर गामनी॥ जे जैसे तैसे उठ धावहि॥
बाल वृद्ध कहुं संग न लावहि॥ एक एकन कहुं बूझहि भाई॥ तुम देखे दयाल रघु
राई॥ अवधपुरी प्रभु आवति जानी॥ भई सकल शोभा कै षानी॥ बहइ सुहाव
न त्रिविधि समीरा॥ भए सरजू अति निरमल नीरा॥ १५॥ दोहा॥ हरषत गुर परि
जन अनुज भूसुर बृंद समेत॥ चले भरत मन प्रेम अति सनमुख कृपा निकेत॥
॥१६॥ बहुतक चढी अटारि निनि रषहि गगन बिमान॥ देषम धर सुर लषति
करहि सुमंगल गान॥१७॥ राका शशि रघुपति पुरी सिंधु देषि हरषान॥ बढ
यो कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान॥१८॥ चौपई॥ इहा भानुकुल कमल
दिवाकर॥ कपन देखावत नगर सुषाकर॥ सुनु कपीश अंगद लंकेशा॥ पावन
पुरी रुचिर अहि देषा॥ जद्यप सब बैकुंठ बषाना॥ बेद पुरान विदित जग जाना॥ अ
वधपुरी सम प्रिय नहि सोई॥ इहि प्रसंग जानै सब कोई॥ जनम भूमि मम पु॥

4
राम
२

सो सुहावनि॥ उत्तरदिसि बहि सरजू पावनि॥ जा मज्जनते बिनहि प्रयासा॥ मम समीप
नर पावहि बासा॥ अतिप्रिय मोहि इहांके बासी॥ मम धामदा पुरी सुषरासी॥ हरषे सब
कपि सुनि प्रभु बानी॥ धन्य अवध जो राम बषानी॥ ४॥ दोहा॥ आवत देषि लोग सब कृ
पासिंधु भगवान॥ नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतर्‍यो भूमि बिवान॥ २॥ उतर कह्यो प्र
भु पुष्पकों तुम कुवेर पहि जाहु॥ प्रेरित राम चल्यो सो हरष बिरहु अति ताहु॥ २१॥
चौपई॥ आये भरत संग सब लोगा॥ कृस तन श्रीरघुबीर वियोगा॥ बामदेव वशिष्ट
मुनि नायक॥ देषे प्रभु महि धरि धनु सायक॥ धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह॥ अनुज
अति सहित पुलक तनोरुह॥ भेंट कुशल बूझी मुनिराया॥ हमरे कुशल तुमारे दाया॥ स
कल द्विजन मिलि नायो माथा॥ धरम धुरंधर रघुकुलनाथा॥ गहे भरत पुनि प्रभु प
द पंकज॥ नमित जिनहि सुर मुनि शंकर अज॥ परे भूमि नहि उठत उठाए॥ बरि क
रि कृपासिंधु उर लाए॥ स्यामल गात रोम भए ठाढे॥ नव राजीव नयन जल बाढे॥
॥ छंद॥ राजीव लोचन श्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी॥ अति प्रेम हृदे

लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी॥ प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहि जा
ति नहि उपमा कही॥ जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुषमा लही॥ बूझ
त कृपानिधि कुशल भरतहि बचन बेगि न आवई॥ सुनु शिवा सो सुष बचन
मन ते भिंन्न जान जो पावई॥ अब कुशल कोशलनाथ आरत जानि जन दर
सन दीयो॥ बूडत बिरह बारीस कृपा निधान मोहि कर गहि लीयो॥ २॥ दोहा॥ पु
नि प्रभु हरष तशत्रुघन भेटे हृदै लगाय॥ लछमन भरत मिले तब परम प्रेम दो
उ भाय॥ २८॥ चौपई॥ भरतानुज लछमन तब भेटे॥ दुसह बिरह संभव दुष मे
टे॥ सीता चरन भरत शिर नावा॥ अनुज समेत परम सुष पावा॥ प्रभु बिलोकि
हरषे पुरबासी॥ जनित बियोग बिपति सब नासी॥ प्रेमा कुल सब लोक नि
हारी॥ कौतक कीन कृपाल षरारी॥ अमित रूप प्रगटे तिह काला॥ यथा योग
मिले सबहि कृपाला॥ कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी॥ कीये सकल नर नारि
बिशोकी॥ छिन महि सबहि मिले भगवाना॥ उमा मरम यह काहु न जाना॥ ३

हि विधि सबै सुषी करि रामा॥ आगे चले सील गुन धामा॥ कौशल्यादि मातु सब धा
ई॥ निरषि बछ जनु धेनु लवाई॥ २५॥ छंद॥ जनु धेनु बालक बछ तजि ग्रह चर
न बन परबस गई॥ दिन अंत पुर रुष स्रवत थन हुंकार करि धावत भई॥ अति
प्रेम सब मातु भेटी बचन मृदु बहु बिधि कहे॥ गई बिपति बिषम बियोग भ
व तिन हरष सुष अगनित लहे॥ २६॥ दोहा॥ भेटेउ तनै सुमित्रा राम चरन रति जा
न॥ रामहि मिलत कैकई हृदै बहुत सकुचान॥ २७॥ लछमन सब मातन मिले॥
हरषे आसिष पाइ॥ कैकई कहु पुनि मिले मन कर छोभ न जाइ॥ २८॥ चौप
ई॥ सासुन सबन मिली बैदेही॥ चरन लागि हरष अति तेही॥ देहि असीस बूझि
कुशलाता॥ होइ अचल तुम्हार अहिबाता॥ सब रघुपति मुष कमल बिलोक
हि॥ मंगल जान नयन जल रोकहि॥ कनक थाल आरती उतारहि॥ बारबार
प्रभु गात निहारहि॥ नाना भांति निछावर करही॥ परमानंद हरष उर भरही॥
कौशल्या पुन पुन रघुबीरहि॥ चितवहि कृपासिंधु रनधीरहि॥ हृदै विचार

तबारहबारा। कवनभांतिलंकापतिमारा॥ अतिसुकुमारजुगलमोरेबारे। निश्च
रसुभटमहाबलिभारे॥४॥ दोहा॥ लछमनअरुसीतासहितप्रभुहिबिलो
कतमात॥ परमानंदमगनमनपुनपुनपुलकतगात॥५॥ चौपाई॥ लंकाप
तिकपीसनलनीला॥ जामवंतअंगदशुभसीला॥ हनुमदादिसबबानरबी
रा॥ धरेमनोहरमनुजशरीरा॥ भरतसनेहशीलब्रतनेमा। देषसादरसबबर
नहिंतेंअतिप्रेमा॥ देषनगरबासनकीरीती। सकलसराहतप्रभुपदप्रीती॥
पुनरघपतिसबसषाबुलाए। मुनपदलागहुसकलसिषाए॥ गुरुवशिष्टकुल
पूज्यहमारे॥ इनकीकृपादनुजरणमारे॥ एसबसषासुनहुमुनमेरे। भयेसमर
सागरमहिंबेरे॥ ममहितलागजन्मइनहारे। भरतहुतेमुहिअधिकपिआ
रे॥ सुनप्रभुबचनमगनसबभये। निमषनिमषउपजतिसुषनए॥६॥ दोहा॥
कौशल्याकेचरननिपुनतिननायोमाथ॥ आसिषदीनीहरषतुमप्रियममजि
मरघुनाथ॥७॥ सुमनब्रिष्टनभसंकुलेभवनचलेसुषकंद॥ चढीअटारनिदे
षहिसकलनारिनरबृंद॥८॥ चौपाई॥ कंचनकलशबचित्रसवारे। सबहि

घरेसजिनिजनिजद्वारे॥ बंदनद्वारपताकाकेतू॥ सजनबनाएमंगलहेतू॥ बी
थीसकलसुगंधसिंचाई॥ गजमनरचिबहुचौकपुराई॥ नानाभांतिसुमंगल
साजे॥ हरषनगरनिसानबहुबाजे॥ जहितहिंनारिनिछावरकरहीं॥ देहिअसी
सहरषउरभरहीं॥ कंचनथारआरतीनाना॥ जुवतीसाजकरहिसुभगाना॥ क
रहिआरतीआरतिहरिके॥ रघुकुलकमलबिपिनदिनकरके॥ पुरशोभासंपति
कल्याना॥ निगमशेषसारदाबषाना॥ तेऊयहिचरितदेषठगरहही॥ उमाता
सगुननरकिमकहही॥ २४॥ दोहा॥ होहिसगुनसुभबिबिधबिधबाजहिनाक
निसान॥ पुरनरनारिसनाथकरिभवनचलेभगवान॥ चौपई॥ २१॥ प्रभुजानीकै
केईलजानी॥ प्रथमतासगृहगएभवानी॥ ताहप्रबोधबहुतसुषदीना॥ पुनिनिज
भवनगवनहरिकीना॥ कृपासिंधजबमंदरगए॥ पुरनरनारिसुषीसबभए॥ गु
रबशिष्टदिजलीएबुलाई॥ आजसुघरीअतिहिसुभदाई॥ सबदिजदेहुहरषअ
नुसासन॥ रामचंद्रबैठेसिंहासन॥ मुनिबशिष्टकेबचनसुहाए॥ सुनतिसकल
बिप्रनअतिभाए॥ कहेबचनमृदबिप्रअनेका॥ जगअभिरामरामअभिषेका॥

५ उं०

अबमुनवरबिलंबनहिकीजै महाराजकहुतिलकुमारीजै ३७ दोहा तबमुन
वरकहियोसमनसुनतचलेशिरनाय रथअनेकबहुबाजगजतुरत
सवारेजाय ३८ दोहा जहांतहांधावनपठैमुनमंगलद्रवमंगाय हरखसमेत
बशिष्टपदपुनशिरनायआय ३९ अवधपुरीअतिरुचिरबनाई देवनसुम
नवृष्टिझरिलाई रामकहासेवकनबुलाई प्रथमसखनअन्हवावहुजाई
सुनतबचनजहितहिंजनधाए सुग्रीवादितुरतअन्हवाए पुनकरुनानि
धिनरतहंकारे निजकररामजटानिरवारे अन्हवायप्रभुतीनोंभाई भक्ते
बछलकृपालरघुराई भरतभावप्रनकोमलताई शेषकोटिशतसकैंनगाई पुनिनिजजटाराममविवराये गुरुअनुसाशनुसासनपाए करमज्ञान
प्रभुसबनसाजे अंगअनेगकोटिछुबिछाजे ४० दोहा सासनसादरजा
नकहिमञ्जनतुरतकराय दिव्यबसनबरभूखनअंगअंगसजेबनाय ४१
रामवामदिशशोभितरमारूपगुनखान देखमातसबहरखीजनमसफ
लनिजजान ४२ दोहा सुनखगेशतिहअवसरब्रह्माशिवमुनबृंद च

राम

५

डिबिमानसनमुखआयेसुरदेषनसुषकंद ४३ चौपई प्रभुबिलोकिमुनिमनअनु
रागा तुरतदिव्यसिंहासनमागा रविसमतेजसोबरननजाई बैठेराम
द्विजनसिरुनाई जनकसुतासमेतिरघुराई पेषविप्रहरषेसमुदाई बेद
मंत्रतबद्विजनउचारे नभसुरमुनिजैयजयतिपुकारे प्रिथमतिलकबिशष्ठ
मुनिकीना पुनसबविप्रनआयसदीना सुतबिलोकहरषीमहतारी बार।
बारआरतीउतारी बिप्रनदानबिबधबिधिदीने जाचकसकलअजाच
ककीने सिंहासनपरत्रिभुवनसाई देषसुरनरदुंदभीबजाई ४४ छंद
नभदुंदभीबाजहिबिपुलगंधरबकिंनरगावही नाचहिअपछराबृंदपर
मानंदसुरसुषपावही भरतादिअनुजबभीषनादहनुमदादिसमाजते ग
हेछत्रचामरबिजनधनुअसिचरमसक्तिबिराजते श्रीसहितदिनकरबं
सभूषनकामबहुछबिसोहही नवअंबधरबरगातअंबरपीतमुनमन
मोहही मुकटांगदादबिचित्रभूषनअंगअंगनिप्रतिसजे अंभोजनयनबि
शालउरभुजधंनिनरनिरषेतते तिनकेपुराकृतपुंनिउ देनयेसदा

प्रभुकाजही कहिदास तुलसी धंन्न अवधपुरी जहां प्रभु राज ॥ ही ४५ दो
हा बहुसो भाम समाज सुष कहि तिब नैन षगेस ॥ बरनै सारद सेष श्रुति सो
रसजानि महेस ॥ ४६ भिंन्न भिंन्न अस्तुति करगए सुर निज निज धाम बं
दी बेष बेद तब आए जहिं श्री राम ४७ प्रभुसरवज्ञ कीन्ह अति आदर कृपा ॥
निधान लषो न काहू मरम कछु लगे करन गुन गांन ४८ छंद जय सगुन
निर्गुण रूप रूप अनूप भूप सिरोमने दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल षल
भुजबल हने अवतार नर संसार भार बिभंजदारुन दुषदहे जय प्रनतपा
लदयाल प्रभु संयुक्त सक्ति नमाम हे ॥ तव विषम माया बस सुरासुर
नाग नग जग जग हरे नवपंथ भ्रमति अमति दिवस निसि काल करम गुन
निर्भरे जे नाथ करुनाकर विलोके त्रिबिधि दुखते निरबहे नवषेद षेद न द
क्ष हम कहुं रक्षराम नमामहे जे ग्यान मान बिमत्त तव भवहरनि भगति न आ
दरी ते पाइ सुरदुर्लभ पदादिप परतिहमदेषत हरी बिस्वास कर सम आस प
रहर दास तव जे होइ रहे जपनाम तव बिनु श्रम तरहि भव नाथ सो समरामि

हे जेचरनशिवअजपूज्यरजसुभपरसिमुनिपतनीतरी नखनिरगतामुनि
वंदतात्रैलोकपावनसुरसरी ध्वजकुलिसअंकुशकंजजुतबनफिरतकंटककिं
नलहे पदकंजद्वंदमुकुंदरामरमेशनितभजामहे अव्यक्तमूलमनादित
रुतुत्वचारनिगमागमभने षटकंधशाखापंचबीसअनेकपरनसुम
नघने फलजुगलबिधिकटुकमधुरबेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे पल्लव
तिफूलतनवलनितसंसारबिटपनमामहे जेब्रह्मअजमद्वैतमनुभवग
म्यमनपरिध्यावही तेकहहुंजानहुनाथहमतवसगुनजसुनितगावही क
रुणायतनप्रभुसदगुनाकरदेवयहिमागही मनबचनकरमविकारत
जितवचरनहमअनुरागही ४९ दोहा॥ सबकेदेषतबेदनविनतीकीनउ
दार अंतरध्यानभयेपुनिगयेब्रह्मआगार ५० बैनतेयसुनिशंभुतबआ
एजहिंरघुबीर बिनैकरतगदगदगिरापूरतपुलकशरीर ५१ छंद जयरा
मरमारमनंशमनं भवतापभयाकुलपाहिजनं अवधेशसुरेशरमेश

व

विभो सरनागतमागतपाहिप्रभो दशशीशबिनाशनबीसभुजा क्रितदूरम
हामहिभूररुजा रजनीचरबृंदपतंगरहे सरपावकतेजप्रचंडदहे महिमंड
लमंडनचारुतरं धृतसायकचापनिषंगबरं मदमोहमहाममतारजनी
तमपुंजदिवाकरतेजअनी मनुजादिकिरातनिपातकीए म्रिगलोगकुभोग।
सरेनहीये हतिनाथअनाथनपाहिहरे बिषियाबनपावरभूलपरे बहुरो
गवियोगनलोगहीये भवदंघ्रिनिरादरकेफलए भवसिंधअगाधपरेनरते
पदपंकजप्रेमनजेकरते अतिदीनमलीनदुषीनितही जिनकेपदपंकजप्री
तिनही अवलंबभवंतकथाजिन्हके प्रियसंतअनंतसदातिनके नहिरा
गनलोभनमानमुदा तिनकेसमवैभववाविपदा एहितेतवसेवकहोत
मुदा मुनित्यागतिजोगभरोससदा करिप्रेमनिरंतरनेमलीये पदपंकज
सेवतसुद्धहीये सममाननिरादरआदरही सभसंतसुषीबिचरंतिमही
मनमानसपंकजभृंगभजे रघबीरमहारणधीरअजे तवनामजपा।

मिनमामिहरिं भवरोगमहागदमानअरिं गुनशीलकृपापरमाय
तनं प्रनमामिनिरंतरश्रीरमनं रघुनंदनिकंदयद्वंदघनं महिपाल
विलोकयदीननंनं ५२ दोहा बारबारबरमागउ हरषिदेहु श्रीरंग
पदशरोजअनपायनीभगतिसदासतसंग ५३ बरनिउमापतिराम
गुनहरषगएकैलास तबप्रभकपनदिवायेसबबिधिसुषप्रदवा
स ५४ चौपई सुनिषगपतियहकथापावनी त्रिबिधतापभवभ
यदावनी महाराजसुरमैंअभिषेका सुनतलहैनरबिरतबबेका जे
सकामनरसुनहिजोगावहिं सुषसंपतिनानाबिधिपावहि सुरदुर्ल
भसुषकरजगमाही अंतकालरघुपतिपुरजाही सुनहिबिमुक्तबिर
तअरुबिषई लहहिंभगतिगतिसंपतिनई षगपतिरामकथामे
बरनी सुमतिबिलासत्रासदुखहरनी मोहनदीकहुंसुंदरतरनी
नितनवमंगलकोशलपुरी हरषतिरहहिंलोगसभजुरी तिन्हकैप्री

विरति
विवेक
ज्ञान
...१
नी १

८ तिरामपदपंकज सनकेजिनहिनमतिशिवमुनिअज मंगलबहुत।
उ० प्रकारपहिराए दिजनदान नानाबिधिपाए ५५ दोहा ब्रह्मानंद।
का० मगनकपिसबकेप्रभुपदप्रीति जातिनजानैदिवसनिसगएमास
षटबीत ५६ चौपई बिसरेग्रहिसुपनेसुधनाही जिमपरद्रोहसंत
मननाही तबरघुपतिसबसषाबुलाए आयसमनसादरशिर
न्याए परमप्रीतसमीपबैठारे भगतसुषदमृदबचनउचारे तुम
अतिकीनिमोरिसिवकाई मुषपरकिहबिधकरौबडाई तातेतुम
मुहअतिप्रियलागे ममहितलागभवनसुषसागे अनुजराजसंप
तिवैदेही देहगेहपरवारसनेही सबममप्रियनहितुमहिसमाना
मिषानकहौंमोरियहबाना सबकेप्रियसेवकयहनीती मोरेअध
कदासपरप्रीती ५७ दोहा अबघरजाहुसषासबभजहुमोहिद्रिढ
नेम सदासरबगतिसरबहितजानकरहुअतिप्रेम ५८ चौपई

16

राम
८

सुनप्रभबचनमगनसमनये कोहमकहाबिसरतनिगये इकटकेरहेजोरक
रिआगे सकहिनकहिकछुअतिअनुरागे परमप्रेमतिनकरप्रभदेषा कहा।
बिबधाबिधिज्ञानबिशेषा प्रभसनमुषकछुकहैनपारहि पुनपुनचरनस
रोजनिहारहि तबप्रभभूषनबसनमगाए नानारंगअनूपसुहाए सुग्री
वहिप्रथमैपहिराए बसनभरतनिजहाथबनाए प्रभप्रेरतिलछमनपहि।
राये लंकापतिरघपतिमनभाये अंगदबैठरहानहिडोला प्रीतिदेषप्र
भताहिनबोला ॥ दोहा जामवंतनीलादिसभपहिराये रघनाथ हियध
रराम रूपसबचलेनाइपदमाथ १० तबअंगदऊठनाइशिरसजलनय
नकरजोर अतिबिनीतिबोल्योबचनमनहुप्रेमरसबोर ॥ चौपई सुन
सरबज्ञकृपासुषसिंधो दीनदयाकरआरतिबंधो मरतीबारनाथमोह
बाली गयोतुमारहिकोछेघाली असरनसरनबिरदसंभारी मोहिजिन
तजहुभगतिहितकारी मोरेतुमप्रभगुरपितमाता जाऊंकहातजिजलप

९
उ० कां०

18

दज्ञाता तुमहिबिचारकहोनरनाहा प्रभुतजिभवनकाजमेकाहा बालक
ज्ञानबुद्धबलहीना राखहुसरननाथजनदीना नीचटहलग्रहकेसमक
रहा पदपंकजबिलोकभवतरिहा असिकहिचरनपर्योप्रभुपाही अ
बजननाथकहोग्रहिजाही ६२ अंगदबचनबिनीतसुनिरघपतिकरुना
सीव प्रभुउठायउरलाइयो सजलनयनराजीव ६३ दोहा निजउरमा
लबसनतनबालतनैपहिराय बिदाकीनभगवानतवबहुप्रकारसम
झाय ६४ चौपई भरतअनुजसौमित्रसमेता पठवनचलेभगतिकृति
चेता अंगदहृदैप्रेमनहिथोरा फिरफिरचितवरामकीओरा बारबा
रकरिदंडप्रनामा मनअसिरहनकहहिमुहरामा रामबिलोकनबो
लनचलनी सुमरिसुमरिचरतहसमलीनी प्रभुरुखदेखबिनैबहु
नाषी चलेहृदैपदपंकजराषी अतिआदरसभकपपहुचाये भाइ
नसहितभरतपुनिआये तबसुग्रीवचरनगहिनाना भांतिबिनैकीन

राम
९

हनुमाना दिनदशाकररघपति पदसेवा पुनतबचरनदेषहैदेवा पुं
नपुंजतुमपवनकुमारा सेवहुजाय़कृपाआगारा अस्किहकपिसमचले
तुरंता अंगदकहैसुनहुहनुमंता ६५ दोहा कहियोदंडवतिप्रभूसोंतुमहिके
होकरिजोर बारबाररघुनाय़कहिसुरतिकराय़हुमोरि ६६ दोहा असि
कहिचलैबालसुतफिरिआयेहनुमंत तासप्रीतिप्रभुसनकही मगनभये
भगवंत ६७ कुलसहचाहकठोरअतिकोमलकुशमहचाह चितषगेशरामक
रिसमजपरैकिहकाहि ६८ चौपई पुनकृपाललीयोबोलनिषादा दीनेभूषन
वसनप्रसादा जाहिभवनममसुमरनकरहू मनक्रमवचनधरमअनुसरहू
तुममममसषानरतसमभ्राता सदारहोपुरिआवतजाता बचनसुनतउप
जासुषभारी परेयोचरननिलोचनभरबारी चरननलननउरिधरग्रहआ
वा प्रभसुनावपुरजननिसुनावा रघपतिचरतिदेषपुरबासी पुनपुनकहै
धंन्नसुषरासी रामराजबैठेत्रैलोका हरषतभयेगयेसमसोका बैरनकरको

दूसन कोई राम प्रताप विषमता खोई ६९ दोहा बरनाश्रम निज निज धरम
निरत बेद पथ लोग चलहिं सदा पावहिं सुख नहिं भय शोक न रोग ७० चौपई
दैहिक दैविक भौतिक तापा राम राज नहिं काहू विआपा सब नर करहिं परस्पर प्री
ती चलहिं सुधर्म निरत श्रुति रीती चारहु बरन धर्म जग माही पूर रहा सु
पनेहु अघ नाही राम भगति रत सब नर नारी सकल परम गति को अधिकारी
अलप मृतु नहिं कवनहु पीरा सब सुंदर सब बिरज सरीरा नहिं दरिद्र कोऊ
दुखी न दीना नहिं कोऊ अबुध न लक्षन हीना सब निरदंभ धरम रत धरनी
नर अरु नारि चतुर अति गुनी सब गुन पंडित सब विज्ञानी सब कृतज्ञ नहिं क
पट सयानी ७१ दोहा रामराज नभगेश सुनि सचराचर जग माहि काल क
रम सुभाव गुन कृत दुख काहु नाहि ७२ चौपई भूमि सप्त सागर मेखला
एक भूप रघुपति कोशला भुवन अनेक रोम प्रति जासू यह प्रभुता कछु बहुत
न तासू सो महिमा समझत प्रभु केरी यह बरनत हीनता घनेरी सो महि

मागेसतजिनजानी फिरहिचरिततेहिरतिमानी सोईजानैकरफल
यहिलीला कहहिमहामुनिबरदमसीला रामराजकरसुखसंपदा बर
निनसकैफनीससारदा सबउदारसबपरउपकारी विप्रचरनसेवकनर
नारी एकनारिव्रतिरतिसबझारी तेमनबचक्रमपतिहितकारी २२ दोहा
दंडजतनकरभेदजहनरतकनिरतसमाज जितहुमनहिसुनिअसरामचंद्रकेराज २२ चौपई फूलहिफलहिसदातरुकानन रहहिएकसंगग
जपंचानन खगमृगसहजबैरबिसराई सबनपरसपरप्रीतिबढाई
कूजतखगमृगनानाबृंदा अभयचरहिबनकरहिअनंदा सीतलसुरभ
पवनबहिमंदा गुंजतअलिलैचलमकरंदा लताबिटपमागेमधुचवही
मनभावतोधेनपयस्रवही ससिसंपन्नसदारहधरनी त्रेतामेकृतजुग
कैकरनी प्रगटीगिरनबिबिधमनखानी जगदातमाभूपजगजानी सरिता
सकलबहैबरिबारी सीतलअमलस्वादसुखकारी सागरनिजमिरजादार

११ उ० कां

हहो उरहिरतनरतनरलहही सरसिजआकुलसकलतडागा अति
प्रसंन्नदशादिशविभागा २४ दो० विधुमहिपूरमयूषनरवितपजितन
नहिकाज मागेवारददेहजलरामचंद्रकेराज २५ चौपई कोटनिवाज
मेधप्रभकीने दानअनेकदिजनकहुदीने श्रुतिपथपालकधरमधुरं
धर गुनातीतअरुभोगपुरंदर पतिअनुकूलसदारहिसीता सोभाखा
नसुशीलविनीता निजकरगहपरचरीयाकरई रामचंद्रआयसअनुसरई
जिहविधिकृपासिंधसुषमानै सोईकरश्रीसेवविधजानै कोशल्यादिसासग्र
हमाही सेवैसजनमानमदनाही उमारमाब्रह्मादिवंदता जगदंबासंतत
मनिंदता २६ दो० जासकृपाकटाक्षसुरचाहतचितवनसोइ रामपदारबिंदर
तिकरतसुभावहिषोइ २७ चौ० सेवहिसानकूलसबभाई रामचरनरतिअ
तिअधिकाई प्रभमुषकमलविलोकतरहही कबहूकृपालहमहिकछुकह
ही रामकरहिभ्रातनपरप्रीती नानाभांतसिषावहिनीती हरषतरहहि

23

नारिकेलोगा करहिसकलसुरदुर्लभजोगा महिनिशादिविधमनावतिरहही श्रीरघवीरचरनरतिचहहीं हैसुतसुंदरसीताजाये लवकुशवेदपुराननिगाये हैविजयीबिनईगुनमंदर हरिप्रतिबिंबमनहुअतिसुंदर दुइदुइसुतसबभ्रातनकेरे भयेरूपगुनसीलघनेरे २८ दो० ज्ञानगिरागोतीतअजमायामनगुनपार सोइसच्चिदानंदघनकरिनरचरितउदार २९ चौपाई प्रातकालसरजूकरमज्जन बैठहिसभासंगतिद्विजसज्जन वेदपुराणवशिष्ठवषानहि सुनहरामजद्यपसवजानहि अनुजनसंजुतभोजनकरही देषसकलजननीसुषभरही भरतशत्रुघनदूनोभाई सहितपवनसुतपवनजाई बू उँ उद्दिबैठरामगुनगाहा कहिहनुमानसुमतिअवगाहा सुनतविमलगुननितिसुषपावहि बहुरबहुरकरविनयकरावहि सबकेग्रहग्रहहोहिपुराना रामचरितपावनबिधिनाना नरअरुनारिरामगुनगावहि करहिदिवसनिशजाताननजानहि ३० दो० अवधपुरीवासनकरसुषसंपदासमाज सहसशेष

१२ बनहिकहिसकहिंजहंरामबिराज ८१ चौपई नारदादिसनकादिमुनी
ॐ शा दरसनलागकोशलाधीसा दिनप्रतिसकलअजोध्याआवहि देषनग
कां रबैरागबिसरावहि जातरूपमनरचतअटारी नानारंगरुचरगचढारी पु
रचहुपासकोटअतिसुंदर रचेकंगूरारंगरंगबर नवग्रहनिकरअनीकब
नाई जनुघेरीअमरावतिआई महिबहुरंगरचतरचकाचा जोबिलो
कमुनवरमनुनाचा धवलधामऊपरनभचुंबत सकलमनहुरविशशि
दुतिनिंदति बहुमनरचतझरोषाभ्राजहि ग्रहिग्रहिप्रतिमनदीपविराजहि
८२ छं० मनदीपराजहिभवनभ्राजहिदेहरीबिद्रुमरची मनषंभभीतिबिरंच
बिरचीकनकमनमरकतषची सुंदरमनोहरमंदरायतअजररुचफटक
रचे प्रतिद्वारद्वारकपाटपुरटबनाइबहुबज्रनषचे ८२ दोहा० चारुचि
त्रसालाग्रहग्रहप्रतिलिषेबनाइ रामचरितजेनिरषतिमनमुनलेहचुराइ
८४ चौपई सुमनबाटिकासबहिलगाई बिबिधभांतिकरजतनबनाई

लताल[illegible]लितबहुजातसुहाई फूलहिंसदाबसंतकीनाई गुंजतमधु
करमुषरमनोहर मारुतत्रिबिधिसदाबहुसुंदर बोलतमधुकरउडातसु
हाये नानाषगबालकनिजबाए मोरहंससारसपारावत भवननपरसो
भाअतिपावन जहंतहंदेषहिनिजपरछाही बहुविधिकूजहिंन्रितकनाही
शुकसारकापढावैंहिबालक कहोरामरघपतिजनपालक राजदु
वारसकलबिधिचारू बीथीचोहटरूचरबजारू ८५ छंद बाजारचा
रुनबनैबरनतबस्तुबिनुगथपाईयै जहंभूपपरमनिवासतहकी
संपदाकिमगाईयै बैठेबजाजसराफबनिकअनेकमनुहुकुवेरते सम
सुषीसनुसंचरहिंसुंदरनारिनरशिशुजरठजे ८६ दोहा उतरदिशासर
जूबहेनिरमलजलगंभीर बांधेघाटमनोहरस्वलपपंकनहितीर ८७
चौपई दूरिफराकरुचरसोघाटा जहंजलपिवहिबाजगजठाटा पनघट
परममनोहरनाना तहांनपुरुषकरहिंइसनाना राजघाटसबबिधिसुं
दरवर मज्जहितहवरनचारिउनर तीरतीरदेवनकेमंदर चहुदिशतिनकी

उपवनसुंदर कहुंकहुंसरितातीरतुलसकासुहाई पुरशोभाकछुबरनिनजाई।
बाहरनगरपरमअमराई ब्रिंदब्रिंदबहुमुनहिलगाई देषतपुरीअषल
अघभागा बनउपबनबापकातडागा २८ छंद बापीतडागअनूपकूप।
मनोहरायतसोहही सोपानसुंदरनीरनिरमलदेषसुरनरमोहही बहु
रंगकंजअनेकषगकूजहिमधुपगुंजारही आरामरम्यपिकादिषगनि
जानिपथकहकारही २९ दोहा रमानाथजिहराजासोपुरबरनिकिजाय
अनुमादिकसुषसंपदारहीअवधसबछाइ ३० चौपई जहातहारघुपति
गुनगावहि बैठपरस्परयहेसिषावहि भजहुप्रनतप्रतिपालकरामहि
शोभाशीलरूपगुनधामहि जलजविलोचनश्यामलगातहि पलकन
यनइवसेवकत्रातहि धृतसररुचरचापतूनीरहि संतकंजबनरविरन
धीरहि कलकरालब्यालषगराजहि नमतिरामअकाममंताजहि लो भ
भमोहमृगजूथकिरातहि मनसिजकरिहरिजनसुषदातहि संसेशोक
निवडितमभानहि दनुजगहनबनदहनकृशानहि जनकसुतासमेत

रचबीरहि कसिन मजहु नवमंजन नीरहि बहुबासनामसकहिमरास
हि सदाएकरसअनअविनासहि मुनरंजन मंजन मवमारहि तुलसिदा
सके प्रभहितदारहि ॥ दोहा ॥ यहि विधिनगरनारिनरकरहिरामगुनगान
सानुकूलसमपररहति संततकृपानिधान ॥ ९२ ॥ चौपाई ॥ जबतेरामप्रताप
खगेसा उदतिभयोअतिप्रबलादिनेसा पूरप्रकासरह्योतिहलोका बहुत
नसुषबहुतनमनसोका जिनहिसोकतेकहोबषानी प्रथमअविद्यानि
शानिशानी अघऊलूकजहतहालुकाने कामक्रोधकैरवसकुचाने बि
बधकरमगुनकालसुनाऊ एचकोरसुखलहैनकाऊ मतसरमानमोह
मदचोरा इनकहुकतहुनरकबनहिबोरा धरमतडागज्ञानबिज्ञाना ए
पंकजविगसेविधिनाना सुषसंतोषबेरागबिबेका बिगतिशोकएकोक
अनेका ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ यहप्रतापरविजानकेउरजबकरैप्रकास पिछिलेबा
ढेप्रथमजेकहतेपावहिनास ॥ ९४ ॥ चौपाई ॥ भ्रातनसहितरामइकबारा
संगपरमप्रियपवनकुमारा सुंदरउपबनदेषनगये सबतरकुसुमत

पल्लवनए ज्ञानसमै सनकादिकआये तेजपुंजगुनसीलसुहाये ब्रह्मानं
दसदालयलीना देषतबालकबहुकालीना रूपधरेजनचारोबेदा स
मदरशीमुनिविगतबिभेदा आसाबसनबसनयहतिनकी रघपतिचरि
तहोइतहाँसुनही तहारहेसनकादिभवानी जहँअजसंभवमुनिवरज्ञा
नी रामकथामुनिबहुविधिबरनी ज्ञान[illegible]जोनिपावकजिमिअरनी
३५ दोहा देषराममुनिआवते हरषदंडवतिकीनि पीतअंबरआसनुदी
योतिहबैठेमुनधीर ३६ चौपई हरषदंडवतिचारहुभाई सहितपव
नसुतसुखअधिकाई मुनिरघपतिछबिअतुलविलोकी भयेमगनमन
रहेनरोकी श्यामगातसरोरहलोचन सुंदरतामंदरभवमोचन इकटक
रहेनिमेषनलावहिं प्रभकरजोरेशीशनिवावहि तिनकीदशादेषरघवी
रा श्रवतिनयनजलपुलकशरीरा करगहिप्रभमुनवरबैठारे परम
मनोहरिबचनउचारे आजधंनमैसुनहुमुनीशा तुमरेदरसजाहिंअ
घषीसा बडेभागपाईयेसतसंगा विनहप्रयासहोहिभवभंगा ३७

दोहा संतपंथअपवरगकाकामीभवकरपंथ कहहिसंतकविकोविदेश्रुति
पुराणसदग्रंथ ९८ चौपई सुनप्रभवचनहर्षमुनिचारी पुलकतत
नअस्तुतिअनुसारी जयभगवंतअनंतअनामय अनघअनेकएक
करुनामय जयनिर्गुनजयजयसुखसागर सुखमंदरसुंदरअतिनाग
र जयइंदरारमनजयभूधर अनुपमअजअनादसोभाकर ज्ञाननिधा
नअमानमानप्रद पावनसुजसपुरनबेदबद ज्ञाननिधानअमानमान
प्रद जगकृतज्ञअग्यतभंजन नामअनेकअनामनिरंजन सर्बसर्बग।
तिसर्बउरलय बससिसदाहमकहुपरपालय द्वंदविपतभवफंध
विभंजय हृदिबसरामकाममदगंजय ९९ दोहा परमानंदकृपा
यतनमनपरपूरनकाम प्रेमभगतअनपायनीदेहुहमैश्रीराम १००
चौपई देहभगतरघपतिअनुपावनि त्रिबिधितापभवदापनसावनि
प्रनतकामधेनुकल्पतरु होइप्रसंन्नदीजेप्रभयहबर भवबारध

१५ ३०

उ०
को०

कुंजरघनायक सेवकसुखदायक सकलदुषदाहक मनसंभवदारुनदुषद
रय दीनबंधुसमताबिस्तारय स्रापत्रासशरीरयादिनिबारक बिनयबिवे
कबिनयविसतारक नृपमौलमनमंडनधरनी देहनगतिसंभ्रितसरित
रनी मुनिमनमानसहंसनिरंतर चरनकमलवंदतअजशंकर रघकु
लकेतसेतकुलरक्षक कालकरमगुनभावगुनत्रक तारनतरनहरन
समदूषन तुलसिदासप्रभत्रिभुवनभूषन १०१ दोहा बारबारअस्तु
तिकरिप्रेमसहितसिरुन्याइ बृह्मभवनसनकादिगेअतिअभीष्टफलपाइ
१०२ चौपाई॥ सनकादिकबिधिलोकसिधाए भ्रातनरामचरनसिरनाए
पूछतप्रभहिसकलसकुचाही चितवहिसबमारुतसुतपाही सुनीचहैं
प्रभमुषकीबानी जोसुनिहोइसकलभ्रमहानी अंतरजामीप्रभुसबजा
नी बूझतकहहुकाहहनुमाना जोरिपानकहतबहनुमंता सुनहुदीन
दयालभगवंता नाथभरथकछुपूछनचहही प्रश्नकरतमनसकुच

राम०
१५

चतअहही तुमजानहुकपमोरसुभाऊ नरतहमोरकछुअंतरकाऊ सु
नप्रस्नबचन नरतगहिचरना सुनहुनाथप्रनतारतहरना १३ दोहा ना
थनमोहसंदेहकछुसपनेसोकनमोह केवलकृपातुमारिहीकृपानंदसं
दोह १४ चौपई करौंकृपानिधिएकढिठाई मैसेवकतुमजनसुषदाई
संतनकेमहिमारघुराई बहुबिधिबेदपुराननगाई श्रीमुषतुमपुनकी
नबडाई तिनपरप्रभुनहिप्रीतिअधिकाई सुनाचहौंप्रभुतिनकरल
छन कृपासिंधगुनज्ञानबिचछन संतअसंतनभेदअवगाई प्रनत
पालमुहकहोबुझाई संतनकेलछनसुनभ्राता अगनतश्रुतिपुरा
नबिष्याता संतअसंतनकेअसिकरनी जिमकुठारचंदनआचरनी
काटैपरसमिलैसुनभाई निजगुनदेइसुगंधबसाई १५ दोहा ताते
सुरशीशहिचडतजगबल्लभश्रीषंड अनलदाहपीठतघननपरस
बदनयहदंड १६ चौपई बिषैअलंपटसीलगुनाकर परदुखदु

१६ खसुखसुखदेषपर समअनतारिपबिमलबिरागी लोभनमरषहरषभैत्या
गी कोमलचितदीननपरदाया मनवचक्रममममनगतिअमाया सबहि
मानप्रदआपअमानी चरतप्रानसममममतेप्रानी बिगतकाममममनाम
परायण सीतलबिरतबिनीतमुदतायन सीतल्लतासरलतामैत्री द्विजप
दप्रीतिधरमजननजंत्री एकलषनवसहिजासउर जानहुतातसंतसंतत
पुर समदमनियमनीतनहडोलहि परुषवचनकबहूनहिबोलहि १७
दोहा निंदाउस्तुतिउभैसमपरीतममपदकंज तालसजनममप्रानगु
नमंदरसुखपुंज १८ चौपई सुनहुअसंतनकेरसुभाऊ भूल्पासंग
तिकरैनकाऊ तिनकरसंगसदादुखदाई जिमकपलहिघालहिहर
हाई खलनहृदैअतितापबिसेषी जिनअगजलेप्रसंपतदेषी ज
हकहनिंदासुनहिपराई निरदैकपटीकुटलमलाई बैरअकारनस
नकाहूसो जसरहितअनहिततातासो जूठहलैनाजूठकदेना जूठऊ

उ० का

राम

भोजनजूठचबेना बोलहिमधुरवचनजिमिमोरा खाइमहाअहिहृदैकठो
रा १०९ दोहा परद्रोहीपरदाररतेपरधन पर अपबाद तेनर पावरपा
पमयदेहधरेमनुजादि ११० चौपई लोभैओढनलोभैडासन शिश्न
नोदरपरजमपुरत्रासन काहूकीजोसुनैबडाई स्वासलेहिजनुजूडीआ
ई जबकाहूकेदेषैविपती सुषीभयेमानहुजगनृपती स्वारथरतिसुर
संतविरोधी लंपटकामलोभअतिक्रोधी मातपितागुरविप्रनमानहिआ
पुगयेअरुघालहिआनहि करैमोहबसद्रोहपरावा संतसंगहरिकथा
नभावा अवगुनसिंधमंदमतकामी वेदबिदूषकपरधनस्वामी विप्रद्रो
हसुरद्रोहविशेषा दंभकपटजीयधरेसुबेषा १११ दोहा अैसेअधममनु
जषलकृतयुगत्रेतानाहि द्वापरकछुकबृंदबहुह्वैहैकलयुगमाहि ११२
चौपई परहितसरसधरमनहिभाई परिपीडासमनहिअधमाई नि

ऐसे सकल पुरान बेद कर कहो तात जानहि कोविद नर नरशरीर धरि जे प
रपीरा करहि ते सहहि महा भव पीरा करैं मोह बस नर अघ नाना स्वारथ
रत परलोक नसाना कालरूप तिन कहु मै भ्राता सुभ अरु असुभ कर
म फल दाता असि बिचार जे परम सयाने भजहि मोहि संसृत दुख जाने
त्यागहि करम सुभासुभ दायक भजहि मोहि सुर नर मुनि नायक संत
असंतन के गुन भाषे ते न परहि भव जिन लखि राखे ॥११३ दोहा सुनहु
तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक गुन यह उभै न देखियहि देखे सो अ
बिबेक ॥११४ चौपई श्री मुख बचन सुनत सब भाई हरषे प्रेम न हृ
दै समाई करहि बिनै अति बारहि बारा हनूमान हीय हरष अपारा
पुनि रघुपति निज मंदिर गये इहि विधि चरित करत अति नये बार बार ना
रद मुनि आवहि चरित पुनीत राम के गावहि नित नव चरित देख मुनि जा
ही ब्रह्मलोक सब कथा कहाही सुनि बिरंच अतिसय सुख मानहि पु

नपुनतातकरहुगुनगानहि सनकादिकनारदहि सराहहि जद्यपब्र
ह्मनिरतमुनिआहहि सुनगुनगानसमाधिविसारी सुंदरसुनहिप
रमअधिकारी ॥५४ दोहा जीवनब्रूंसमुंकतिपरमचरितसुनहितजि
ध्यान जेहरिकथानकरहिरति तिनकेहीयपषान ॥५५ चौपाई एकबा
ररघुनाथबुलाए गुरद्विजपुरबासीसबआए बैठेसदसअनुजमुनस
ज्जन बोलेबचनभगतिभयभंजन सुनहुसकलपुरजनममबानी
कहौनकछुममताउरआनी नहिअनीतनहिकछुप्रभुताई सुनहुक
रहिजोतुमैसुहाई सोईसेवकप्रियतमममसोई ममअनुसासनमा
नैजोई जोअनीतकछुभाषौंभाई तौमुहबरजहुभयबिसराई बडे
भागमानुषतनुपावा सुरदुर्लभसबग्रंथनगावा साधनधाममोक्षकर
दारा पाइनजेहिपरलोकसवारा ॥५६ दोहा सोपावैगोदुखअतिशिर
धुनिधुनपछुताइ कालहिकरमहिईस्वरहिमिथ्यादोषलगाइ ॥५७

चौपई। इहि तन कर फल बिषै न भाई। स्वरगौ स्वल्प अंत दुषदाई। नरतन
पाइ बिषै मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं। ताहि कबहि न लकहै
न कोई। गुंजा गहै परसमनि षोई। आकर चारि लक्ष चौरासी। जोनि भ्रमति यह
जीव अबिनासी। फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल करम सुभाव गुन घेरा।
कबहुक करि करुना नरदेही। देत ईस बिनु हेतु सनेही। नरतन भव बारिध
कहु बेरो। सनमुष मरुत अनुग्रह मेरो। करनधार सदगुर दृढ नावा। दुर्ल
भ साज सुलभ करि पावा। ११६ दोहा। जो न तरै भवसागर नर समाज अस
पाइ। सो कृत निंदक मंदमति आतमहन गति जाइ। ११७ चौपई। जो पर
लोक इहां सुष चहहू। सुनि मम बचन हृदै दृढ गहहू। सुलभ सुषद मा
रग यह भाई। भगति मोरि पुरान श्रुति गाई। ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका।
साधन कठिन न मन कहु टेका। करत कष्ट बहु पावै कोई। भगति हीन मोहि प्रि
य मोहि न सोई। भगति स्वतंत्र सकल गुन षानी। बिनु सतसंग न पावै प्रानी।
पुंन्य पुंज बिनु मिलहि न संता। सतसंगति संसृति कर अंता। पुंन्य एक जग

माहिनदूजा मनक्रमबचनविप्रपदपूजा सानुकूलतेहिपरमुनिदे
वा जोतजिकपटकरैद्विजसेवा ११८ दोहा औरेएकेगुपतिमतिस
बैकहोकरिजोरि शंकरभजन विनानरभगतिनपावैमोरि ११९
चौपई कहोभगतिपथकवनप्रयासा जोगनमषजपतपउपवासा
सरलसुभावनमनकुटलाई यथालाभसंतोषसदाई मोरदासक
हाउनरआसा करैतकहोकहाविस्वासा बहुतकहोकहाकथाबढा
ई येहिआचरनबस्यमैंभाई वैरनविग्रहआसनत्रासा सुखमयता
हिसदासबआसा अनारंभअनकेतअमानी अनघअरोषदक्षविज्ञा
नी प्रीतिसदासज्जनसंसरगा त्रिनसमविषैस्वर्गअपवर्गा भगति
पक्षहठनहिसठताई दुष्टतरकसबदूरबहाई १२२ दोहा ममगु
नग्रामनामरतिगतिममतामदमोह ताकरसुषसोईजानैपर
मानंदसंदोह १२३ चौपई सुनतसुधासमबचनरामके गहेसबन

पदक्रिपाधामके जननिजनकगुरुबंधहमारे कृपानिधानप्रानतेप्या
रे तनधनधामरामहितकारी सबविधतुमप्रनतारतहारी असिसि
षतुमबिनुदेइनकोऊ मातपितास्वारथरतिहोऊ हेतुरहतिजुगज
गउपकारी तुमतुमारसेवकअसुरारी स्वारथमीतिसकलजगमाही
सपनेप्रभपरमारथनाही सबकेबचनप्रेमरससाने सुनरघनाथ
ह्रिदेहरषाने निजनिजग्रहिगयेआयसपाई बरनतप्रभतबकही
सुहाई १२४ दोहा उमाअवधबासीनरनारिकृतारथरूप ब्रह्मस
च्चिदानंदघनरघनायकजहभूप १२५ चौपई एकबारबसिष्टमुनि
आये जहारामसुखधामसुहाये अतिआदररघनायककीनो पदप
षारपादोदकलीनो रामसुनहुमुनिकहेकरजोरी कृपासिंधबिनती
कछुमोरी देषदेषआचरनतुमारा होतमोहममह्रिदेअपारा महिमा
अमितबेदनहिजाना मैकहिभांतकहौभगवाना उपरोहतीकरम

अतिमंदा बेदपुरानस्मृतिकरनिंदा जबनलेऊमैतबबिधिमोही महा
लाभआगेसुततोही प्रमात्मब्रह्मनररूपा होइहैरघुकुलभूषनभूपा १२६
दोहा तबमैंहृदयविचारा जोगजग्यब्रतदान जाकहुकरयसोपैहौंधरमनयहि
समआन १२७ चौपई जपतपनियमजोगनिजधरमा स्रुतिसंभवनानासु
भकरमा ज्ञानदयादमतीरथमज्जन जहलगधरमकहितस्रुतिसज्जन आ
गमनिगमपुरानअनेका पढेसुनेकरफलप्रभुएका तवपदपंकजप्रीतिनिरं
तर सबसाधनकरफलयहसुंदर छुटैमलकिमलहिकेधोए घृतकिपा
वकोबारिबिलोए प्रेमभगतिजलबिनुरघराई अभिअंतरमलकबहुंनजा
ई सोईसरवग्यतग्यसोपंडित सोगुनग्रहबिग्यानअखंडित दच्छसकललच्छ
नजुतसोई जाकेपदसरोजरतिहोई १२८ दोहा नाथएकबरमागऊं रामक्र
पाकरदेह जनमजनमप्रभुपदकमलकबहुघटैजिनिनेह १२९ चौपई असकहि
हिमुनिवसिष्टग्रहआये कृपासिंधकेमनअतिभाये हनुमदादिनरतादिकआ

२० उ० को०

40

न्हाता संगलीयेसेवकसुखदाता पुनकृपालपुरबाहरगए गजरथतुरगम गावतिमये देषिकृपाकरिसकलसराहे दीयेऊचितजिनजिनतेचाहे हरनसकलश्रमप्रभश्रमपाई गयेजहासीतलअवराई भरतदीननिजबसन उसाई बैठेप्रभसेवहुसममाई मारुतसुतनबमारुतकरई पुलकपुलकलोचनजलभरई हनूमानसमनहिबडभागी नहकोऊरामचरनअनुरागी गिरजाजासप्रीतिसेवकाई बारबारप्रभनिजमुषगाई १२ दोहा तिहअवसरमुनिनारदआएकरतलबीन गावनलागेरामकलिकीरतिसदानवीन १३ चौपई रामविलोकयपंकजलोचन कृपाबिलोकनशोचबिमोचन नीलतामरसश्यामकामअरि ह्रिदेकंजमकरंदमधुपहरि जातधानबरूथबलभंजन मुनिजनमनरंजनअघगंजन भूसुरससिनवत्रंदवलाहक असरनसरनदीनजनगाहक भुजबलविपुलभारमहिषंडन षरदूषनबिराधबधमंडन रावनारिसषरूपभूपबर जयदशरथकुलकुमदसुधा

राम २०

कर सुजसपुरानविदतिनिगमागम गावतिसुरमुनिसंतसमागम कारुनी
कबालीमदखंडन सबबिधकुशलकौशलामंडन कलमलमथननाममम।
मताहनि तुलसदासप्रभपापादिप्रनतजन १३२ दोहा प्रेमसहितमुनिनारद
ह्वबरनरामगुनग्राम सोभासिंधह्रिदैधरिगएजहाबिधधाम १३३ चौपई
गिरजासुनहुबिसदइहिकथा मैसबकहीमोरिमतियथा रामचरितसदकोट
अपारा स्रुतिसारदानबरनैपारा रामअनंतअनंतगुनानी जनमकरमअने
तनामानी जलसीकरमहिरजगनिजाही रघपतिचरितनबरनिसराही बिम
लकथाहरिपद दाइनी भगतिहोइसुनअनपायनी उमाकहिउसबकथासु
हाई जोभसुंडखगपतिहिसुनाई कछुकरामगुनकहिउबखानी अबकाकहौं
सुकहोभवानी सुनसुभकथाउमाहरखानी बोलीअतिबिनीतिमृदबानी
धंन्नधंन्नमैंधन्नपुरारी सुनिउरामगुनभवभयहारी १३४ दोहा तुमरीकृपा
यतनकृतिकृतिनमोह जान्योरामप्रतापप्रभचिदानंदसंदोह १३५ नाथतवा

कृपा

ननशशिश्रवनकथासुधारघबीर श्रवनपुटनमनपानकरनहिंअघातम
तिधीर १२६ चौपई रामचरितजेसुनतअघाहीं रसविसेषजानातिहनाहीं
जीवनमुकतिमहामुनिजेऊ हरिगुनसुनहिंनिरंतरतेऊ भवसागरचहपा
रजोपावा रामकथाताकहुंदृढनावा बिषिअनकहुपुनहरिगुनग्रामाश्र
वनसुषदअरुमनअभिरामा श्रवनवंतअसकोजगमाहीं जाहिनरघ
पतिचरतसुहाहीं तेजडजीवनआतमघाती जिनहिनरघपतिकथासु
हाती हरिचरित्रमानसतुमगावा सुनिमैनाथअमितसुषपावा तुमजो
कहीयहकथासुहाई कागभसुंडगरुडप्रतिगाई दोहा १२७ बिरतज्ञा
नविज्ञानदृढरामचरनअतनेह बाइसतनरघपतिभगतमोहपरम
संदेह १२८ चौपई नरसहस्रमैसुनहुपुरारी कोउइकहोइधरमब्रत
धारी धरमसीलकोटकमहिकोई बिषयाविमुषविरागरतिहोई कोटि
बिरकतमद्धिश्रुतिकहहीं सम्यकज्ञानसुकृतकोउलहहीं ज्ञानवंत

कोटनमैकोऊ जीवनमुकतिसक्रितजगसोऊ तिनसहस्रमैसबगुन
षानी दुर्लभब्रह्मलीनबिज्ञानी धरमसीलबिरकतअरुज्ञानी जीव
नमुकतिब्रह्मपरप्रानी सबतेसोदुर्लभसुरराया रामभगतरतिगतिम
दमाया सोहरिभगतिकागकिमपाई बिस्वनाथमुहिकहोबुझाई १३९
दोहा रामपरायनज्ञानरतिगुनागारमतिधीर नाथकहोकिहकारनपा
योकागसरीर १४० चौपई यहप्रभचरितपवित्रसुहावा कहोकृपाल।
कागकहपावा तुमकिहभांतिसुनामदनारी कहोमोहिअतिकौतकभारी
गरुडमहाज्ञानीगुनरासी हरिसेवकअतिनिकटनिवासी तिहकिहहेत।
कागसनजाई सुनीकथामुनिनिकरबिहाई कहोकवनबिधभासंबा।
दा दोऊहरिभगतकागउरगादा गौरिगिरासुनिसरलसुहाई बोले
सिवसादरसुखपाई धंन्यसतीपावनमतितोरी रघपतिचरनप्रीतिन
हिथोरी सुनहुपरमपुनीतइतिहासा जोसुनेसकललोकभ्रमनासा ऊ

44

२२ पजेरामचरनविस्वासा नव निधितरनरविनद्दिप्रियासा १४१ दोहा मै
उ० सेप्रभुसनविहंगपतिकीनकागसनजाइ सोसवसमादरकहहै सुनहुउनाम
को० निलाइ १४२ चौपई मैजिमकथासुनीभवमोचन सोप्रसंगसुनसुमुष
सुलोचन प्रथमदक्षग्रह तवअवतारा सतीनामतबरहातुमारा दक्षज
ग्यतवभाअपमाना तुमअतिक्रोधतजेतवप्राना ममअनुचरनकीनमष
भंगा जानहुतुमसोसकलप्रसंगा तबअतिसोचभयोमनमोरे दुषीभ
योवियोगप्रियतोरे सुंदरगिरबनसरिततडागा कौतकदेषतफिरौबेरा
गा गिरसुमेरउत्तरदिसदूरी नीलसैलएकसुंदरसूरी तासुकनकमैसि
षरसुहाये चारचारमोरेमनमाये तिनपरएकविटपबिशाला बटपी
परपाकरीरसाला शैलोपरसरसुंदरसोहा मनिसोपानदेषमनमोहा
सुमन १४३ दोहा सीतलअमधरजल जलजबिपुलबहु रंग कूजतकलरविहंस
गनगुंज तमंयुलभृंग १४४ चौपई तिहगिरपरबसैषगसोई तासुना
सकलपंतिनहोई मायाक्रितगुनदोषअनेका मोहमनोजआदिअ

राम
२२

बिबेका रहे ब्यापसमस्तजगमाही तिहगिरनिकटकबहुनहिजाही
तहबसिहरहिंमैजेजिमकागा सोसुनउमामहितअनुरागा पीपरतरतरध्या
नसोधरई जापजग्यपाकरतरकरई आंबछाहकरमानसपूजा तजिहरि
भजनआंननहिदूजा बटतरकहहरिकथाप्रसंगा आवहिसुनहिअनेकबि
हंगा रामचरितबिचित्रबिधनाना प्रेमसहितकरिसादरगाना सुनहिसक
लमतबिमलमराला बसहिनिरंतरजेतिहताला जबमैजाइसुकोतकदेषा
उरऊपजाआनंदबिशेषा १८५ दोहा तबकछुकालमरालतनधरतहकी
ननिवास सादरसुनिरघपतिगुनपुनआयोकैलास १८६ चोपई गिरजा
कहियोसोसनइतिहासा मैजिहसमैगयोषगपासा अबसोकथासुनहुजे
हिहेतू गयेकागपहिषगकुलकेतू जबरघनाथकीननरक्रीडा समझत
चरितहोतमुहिब्रीडा इंद्रजीतकरआपबंधायो तबनारदमुनिगरडपठा
यो बंधनकाटिगयोउरगादा उपजाह्रिदेप्रचंडबिषादा प्रभबंधन

46

२२ उ० को०

समझतबहुनोती करतबिचारउरगआराती ब्यापकब्रह्मबिरजबागीसा मा
यामोहपारपरमीसा सोअवतारसुनहुजगमाही देष्योसोप्रभावकछु
नाही १४७ दोहा भवबंधनतेछूटहिनरजपजाकरनाम षरवनिसा
चरबांधिउनागपाससोराम १४८ चौपई नानाभांतमनहिसमझावा
प्रगटनग्यानहृदैभ्रमछावा षेदषिंनमनतरकबढाई भयोमोहबसितु
मराहिनाई ब्याकुलगयोदेवरुषपाही कहसिजोसंसयनिजमनमाही
सुननारदहलागिअतिदाया सुनषगप्रबलरामकैमाया जोग्याननक
रिचितअपहरई बरिआईबिमोहमनकरई जिहबहुबारनचावामो
ही सोईबिआपीबिहंगपतितोही महामोहउपजाउरतोरे मिटहिनबे
गकहेषगमोरे चतुराननपहिजाहुषगेसा सोइकरहुजिहहोइनिदेसा
१४९ दोहा असिकहिचल्योदेवरुषकरतरामगुनगान हरिमायाबलब
रतनतपुनपुनपरमसुजान १५० चौपई तबषगपतिबिरंचिपहिगयो

राम २२

निजसंदेहसुनावतभयो। सुनबिरंचरामहिशिरुनावा। समझप्रताप
प्रेमअतिछावा। मनमहुकरैविचारबिधाता। मायाबसकविकोविदग्या
ता। हरिमायाकरिअमितप्रभावा। बिपुलबारजिहमोहनचावा। अग
जगमयजगममउपराजा। नहआचरजमोहखगराजा। तबबोलेबिध
गिरासुहाई। जानमहेशरामप्रभुताई। बैनतेयशंकरपहिजाहू। तातअ
नतपूछहुजनकाहू। तहहोइहितवसंसयहानी। चलेउबिहंगसुनतबि
धिबानी। ५१। दोहा। परमातुरविहंगपतिआयोतबमुहपास। जातेरहि
योकुबेरग्रहरहयोउमाकैलास। ५२। चौपई। तिहममहिपदसादरशिरु
नावा। पुनआपनसंदेहसुनावा। सुनिताकरबिनतीमृदबानी। प्रेमस
हितमैकहिउभवानी। मिलहुगरुडमारगमहमोही। कवनभांतसमझा
वौतोही। तबहिहोहिसभसंसैभंगा। जबबहुकालकरैसतसंगा। सु
नैतहाहरिकथासुहाई। नानाभांतिमुनिनिजोगाई। जिहमहिआदिम

२८ उ॰ कां॰

ङ्गिअवसाना प्रनवतिपाद राम भगवाना निनहरिकथा होतिजहभा
ई। पठवहुंतहां सुनोतुम्ह जाई जाइहिसुनतसकलसंदेहा रामचरन
ह्वैहैअतिनेहा १५३ दोहा विनसतसंगनहरिकथातेहविनुमोहनभा
ग मोहगयेविनुरामपदहोइनदृढअनुराग १५४ चौपई मिलहिनर
घपतिबिनुअनुरागा कीयेजोगतपग्यानविरागा उत्तरदिससुंदरगिर
नीला तहहरहकागभसुंडसुसीला रामभगतपथपरमप्रबीना ग्यानी
गुनगृहबहुकालीना रामकथासोकहैनिरंतर सादरसुनहिबिबिध
बिहंगबरि जाइसुनहुतहहरिगुनभूरी होइहमोहजनितदुखदूरी
मैजबतिहसबकहासुझाई चलोहरषममपदशिरनाई तातेउमा
नमैसमुझावा रघपतिकृपामरममैपावा होइहकीनकबहुअभिमा
ना सोखोवेचहकृपानिधाना कछुतिहतेपुनमैनहिराखा समझैषग
षगपतिकीभाषा प्रनमायाबलवंतभवानी जाहिनमोहकवनअस

राम

ग्यानी १५५ दोहा ग्यानीभगतसिरोमनित्रिभुवनपतिकरजान ताहिमो
हमायानरपावरकरहिगुमान १५६ शिवबिरंचिकहुमोहैकोहैबपुरा
आन असिजीयजानभजहिमुनिमायापतिभगवान १५७ चोपई गयो
गरुडजहाबसैभुसुंडा मतिअकुंठहरिभगतअखंडा देषशैलप्रसं
नमनभयो मायामोहसोचसबगयो करतडागमजनजलपाना बट
तरगयोहृदैहरषाना बृद्धबृद्धबिहंगतहआये सुनैरामकेचरितसु
हाये कथाअरंभकरैसोचाहा तेहीसमैगयोषगनाहा आवतदेषसक
लषगराजा हरषोबाइससहितसमाजा अतिआदरषगपतिकरिकी
ना स्वागतपूछिसुआसनदीना करपूजासमेतअनुरागा मधुरबचनत
बबोल्योकागा १५८ दोहा नाथकृतारथभयोमैतवदरशनषगराज आ
इसदेहुसोकरौअबप्रभआयेकिहकाज १५९ दोहा सदाकृतारथरूप
तुमकहमृदुबचनषगेश जिहकैअस्तुतसादरनिजमुषकहीमहेश १६०

२५
उं०
कां०

50

चौपई। सुनहुतातजिहकारनआयो। सोसबभयोदरशतवपायो। देषपर
मपावनतवआश्रम गयोमोहसंसैनानाभ्रम अबश्रीरामकथाअतिपाव
न सदासुषदहुखदूरनसावन सादरतातसुनावहुमोही बारबारबि
नवौप्रभतोही सुनतगरुडकेगिराबिनीता। सरलसुप्रेमसुषदसुबिनीता।
भयोतासमनपरमउछाहा। लागकहैरघुपतिगुनगाहा। प्रथमहिअति
अनुरागभवानी। रामचरितसरकहसिबषानी। पुननारदकरमोहअपा
रा। कहसिबहुरिरावनअवतारा। प्रभअवतारकथापुनगाई। तबशिशुच
रितकहसिमनलाई। ।६१। दोहा बालचरितकहबिबधिबिधिमनमहि
ग परमउछाह रुषिआवनकहसिपुनश्रीरघुबीरबिबाह ।६२। चौपई ब
हुररामअभिषेकप्रसंगा। पुननृपबचनराजरसभंगा। पुरबासनकरिबि
रहबिषादा। कहिसिरामलछुमनसंबादा। बिपनगवनकेवटअनुरागा।
सुरसरउतररनिवासप्रयागा। बालमीकप्रभमिलनबषाना। चित्रकूट

राम
२५

५१६

जिमबसिजगवाना सचिवगवननगरत्नपमरना भरतागवनप्रेमबहु
बरना करनृपक्रियासंगपुरबासी भरतगयेजहप्रभुसुषरासी पुनर
घपतिबहुबिधिसमझाये लैपादुकाअवधपुरधाये भरतरहनिसुर
पतिसुतकरनी प्रभुअरुअत्रिभेटपुनबरनी १६३ दोहा कहिविराध
बाधिजिहिबिधिदेहतजीसरभंग बरनसुतीछणप्रीतिपुनिप्रभुअग
स्तसतसंग १६४ चौपई कहिदंडकबनपावनताई गीधमयतरी
पुनतिहगाई पुनप्रभुपंचबटीकृतबासा भंजीसकलमुननकीत्रा
सा पुनलछमनउपदेसुअनूपा सूपनषाजिमकीनकरूपा बरदू
षनबधबहुरबषाना जिमबैसमरमदशाननजाना दशाकंधरमा
रीचबतकही जिहबिधभसोसभतिहकही पुनमायासीताकरहर
ना श्रीरघुबीरबिरहकछुबरना पुनप्रभुगीधक्रियाजिमकीनीब
धकबंधसबरहिगतिदीनी बहुरबिरहबरनतरघबीरा जिहबिध

२६
उ० का०

गयेसरोवरतीरा १६५ दोहा पुनिनारदसंबादकहि मारुतमिलनप्रसं
ग पुनसुग्रीवमिताई बालिप्रानकरभंग १६६ [illegible] कपहिति
लककरप्रनकृतशैलप्रबरषनबास बरनन बरषासरद रितराम
रोषकपत्रास १६७ चौपई जिहिविधिकपपतिकीसपठाये सीताखो
जसकलदिसधाये बिबरप्रवेशकीनजिहभांती कपनबहोरमि
लासंपाती सुनसनकथासमीरकुमारा नाघतभयोपयोधिअपा
रा लंकाकपिप्रवेशजिमकीना पुनसीतहिजिमधीरजदीना बनउ
जाररावनहिप्रबोधी पुरदहनाघतेबहुरपयोधी आयेकपसभजह
रघुराई वैदेहीकीकुशलसुनाई सैनसमेतजथारघबीरा उतरेजा
इबारनिधितीरा मिलाबभीषनजिहविधआई सागरनिग्रहकथा
सुनाई दोहा सेतबांधकपसैनजिमउतरीसागरपारि गयाबसीठीबीरबरि जिहविधबालकुमार १६९ निशचरकीसलराईबरन

52

राम
२६

सबिबिधप्रकार कुंभकरन घननादकरबलपौरषसंघार ७० चौपई
निशाचरनिकरमरनबिधनाना रघपतिरावणसमरबषाना रावनबध
मंदोदरिशोका राजबभीषणदेवअशोका सीतारघपतिमिलनबहोरी
सुरनकीनअस्तुतिकरजोरी पुनपुषपकचडकपनसमेता अवधचलेप्र
भकृपानिकेता जिहविधरामनगरनिजआये वायसविसदचरितसभ
गाये कहसिबहोररामअभिषेका पुनबरनननृपनीतअनेका कथास
मस्तभसुंडबषानी जोमैतुमसनकहीभवानी सुनसभकथारामखगना
हा कहतबचनमनपरमउछाहा ७१ सोरठा गयोमोरसंदेहसुनयोस
कलरघपतिचरित भयोरामपदनेहतवप्रसादवायसतिलक ७२ मोह
भयोअतिमोहप्रभबंधनरनमहिनिरष चिदानंदसंदोहरामविकलका
रनकवन ७३ चौपई देषचरितअतिनरअनुसारी भयोहृदेममसंसे

५४ २७ उ० का०

54

नारी सोभ्रमग्रबनेहितकरमाना कीनग्रनुग्रहकृपानिधाना जोग्र
तिग्रातपग्राकुलहोई तरुछायासुखजानैसोई जोनहोतमोहग्रत
मैमोही मिलतौतातकवनविधतोही सुनतौकिमहरिकथासुहाई
ग्रतिबचित्रबहुविधतुमगाई निगमागमपुरानमतिएहा कहहिसि
धमुनिनहिंसंदेहा संतविशुद्धमिलहिपरतेही चितवहिरामकृपाक
रजेही रामकृपातवदरशननयो तवप्रसादिसभसंसैगयो १७४ दोहा
सुनिबिहंगपतिबानीसहित विनैग्रनुराग पुलकगातलोचनसजल
मनहरषेग्रतिकाग १७५ श्रोतासुमतिसुशीलसुचकथारसकहरिदा
स पाइउमाग्रतिगोपमतिसज्जनकराहिप्रकास १७६ चौपई बोलोका
गभसुंडबहोरी नभगनाथपरप्रीतिनथोरी सभविधनाथपूजतुममेरे
कृपापात्ररघुनायककेरे तुमहिनसंसैमोहनमाया मोपरनाथकीनतुम
दाया पठैमोहमिसिखगपतितोही रघपतिदीनबडाईमोही तुमनि

राम
२७

नमोह कहीषगसाई। सोनहिकछुआचरजगोसाई। नारदभवविरंचसन
कादी जेमुनिनायकआतमवादी मोहनअंधकीनकिहकेही कोजगका
मनचावनजेही त्रिस्नाकिहनकीनबौराहा किहकरह्रिदेक्रोधनहिदा
हा १७७ दोहा ग्यानीतापससूरकविकोविदगुनआगार किहकैलोभ
विडंबनाकीननइहिसंसार १७८ श्रीमदबक्रनकीनकिहप्रभुताब
धिरनकाहु मृगलोचनीकेनैनसरकौअसलागनजाहि १७९ चौप
ई गुनकृतसंनपातनह्वेकेही कोउनमानमदतजिउनिवेही जोबन
ज्वरकिहनहबलकावा ममताकिहकरजसननसावा मछरकाहिक
लंकनलावा काहिनशोकसमीरडुलावा चिंतासापनकोनहिषाया को
जगजाहिनव्यापीमाया कीटमनोरथदारुसरीरा जिहनलागघुनको
अससिधीरा सुतवितलोकईषनातीनी किहकैमतिइनकृतनमलीनी प

२८ द्रसममायाकरपरवारा प्रबलअमितकोबरनैपारा शिवचतुराननजा

उ० हिडराही अपरजीवकिहलेषेमाही १८० दोहा व्यापरसोसंसारमे।

कां० मायाकटकप्रचंड सेनापतिकामादिनटदंभकपटपाषंड १८१ सोदा

सीरघवीरकेसमझेमिथ्यासोप छूटेनरामकृपाविनुनाथकहौंपदरो

प १८२ चौपई जोमायासबजगहिनचावा जासुचरितलषकाहुन

पावा सोप्रभुभ्रूविलासषगराजा नावनटीइवसहिजसमाजा सोइस

चिदानंदघनरामा अजविज्ञानरूपबलधामा व्यापकव्यापअषंडअ

नंता अषिलअमोघसकतिभगवंता अगुनअदभ्रगिरागोतीता

सभदरसीअनवधअजीता निरममनिराकारनिरमोहा नितनि

रंजनसुषसंदोहा प्रकृतपारप्रभुसभउरबासी ब्रह्मनिरीह विरज

अबिनासी इहामोहकरकारननाही रविसनमुषितमकबहकि

जाही १८३ दोहा भगतहेतभगवानप्रभुरामधर्योतनभूप कीये

राम

२८

चरितपावनपरमप्राकृतिनरअनुरूप १८४ जथाअनेकबेषधरिनृ
तकरैनटकोइ सोइसोइभावदिषावैआपुनहोइनसोइ १८५ चौपई
असिरघपतिलीलाउरगारी दनुजविमोहनजनसुषकारी जेमति
मलिनविषैबसिकामी प्रभुपरमोहधरैइमस्वामी नयनदोषजाकहु
जबहोई पीतबरनिससिकहुकहसोई जबजिहदिशभ्रमहोइषगेसा
सोकहपश्चिमउदैदिनेसा नौकारूढचलतजगदेषा अचलमोहबसि
आपहिलेषा बालकभ्रमहिग्रहग्रहादी कहहिपरसपरमिथ्याबादी
हरिबिषैकअसिमोहबिहंगा सपनेहनहिअज्ञानप्रसंगा मायाबसि
मतिमंदअभागी ह्रिदयजुवालाबहुबिधिलागी तेसठहठबसिसं
सयकरही निजअग्यानरामपरधरही १८६ दोहा कामक्रोधमद
लोभरतिग्रहअशकतिदुषरूप तेकिमजानहिरघपतहिमूढपरे
तमकूप १८७ निर्गुणरूपसुलभअतिसगुनजाननहिकोइ सुगमअ

२९
उ०
को०

रामनानाचरितहंनिमुनिमननिस्रमहोइ १८८ चौपई सुनखगेसरघप
तिप्रभुताई कहौंयथामतिकथासुहाई जिहबिधमोहभयोप्रभुमोही
सोसबकथासुनावौतोही रामकृपाभाजनतुमताता हरिगुनप्रीतिमोहि
सुखदाता तातेनहकछुतुमहिदुरावौ परमरहस्यमनोहरगावौ सु
नहुरामकरसहजसुभाऊ जनअभिमाननराषहिकाऊ संसृतमू
लसूलप्रदनाना सकलसोकदायकअभिमाना तातेकरहिकृपा
निधदूरी सेवकपरममताअतिभूरी जिमसिसुतनब्रनहोइगोसा
ई मातचिराव कठनकीन्याई १८९ दोहा जदपप्रथमदुषपावैरो
वैबालअधीर ॥ बाधनासहितजननीगनैनसोसिसुपीर १९० ति
मरघपतिनिजदासकरहरहिमानहितलाग तुलसीदासऐसेप्रभुहि
कसिनभजहुभ्रमत्याग १९१ चौपई रामकृपाआपनजडताई कहौ
खगेससुनहुमनलाई जबजबराममनुजतनुधरही भगतहेतली

राम
२९

लाबहुकरही तबतबअवधपुरीमैजाऊ बालचरितबिलोकहरषाऊ
जनममहोत्सवदेषोजाई बरषपांचतहरहोंलुनाई इष्टदेवममबाल
करामा सोभावपुषकोटिसतकामा निजप्रभबदननिहारनिहारी लो
चनसुफलकरौउरगारी लघुवाइसबपुधरिहरिसंगा देषोबालचरित
बहुरंगा १९८ दोहा लरकाईजहजहफिरहितहतहसंगउडाहि जूठन
परएअजरमहिसोउठाकरषाऊ १९३ एकबारअतिसैसबचरित
कीएरघबीर सुमरतप्रभलीलासोइपुलकतनयोसरीर १९४ चौपई
कहैभसुंडसुनहुषगनायक रामचरितसेवकसुषदायक नृपमंदरसु
दरसबभाती षचतकनकमनिनानाजाती बरनिनजायरुचरअंग
नाई जहषेलहिनितचारोभाई बालविनोदकरहिरघुराई बिचरत
अजरजननिसुषदाई मरकतमृदुलकलेवरस्यामा अंगअंगप्रति
छबिबहुकामा नवराजीवअरुनमृदचरना पदजरुचरनषससिदु

तिहरना ललितअंकफुलसादकचारी नूपरचारमधररविकारी चारुपु
रटमनिरचितबनाई कटिकिंकनिकलमुखरसुहाई १६५ दोहा रेखात्रै
सुंदरउदरनाभीरुचिरगंभीर उरआयतभ्राजतबिबिधिबालबिभूषन
चीर १६६ चौपाई अरुनपानिनखकरजुमनोहर बाहबिशालबिभूषन
सुंदर कंधबालकेहरदरिग्रीवा चारुचिबकआननछबिसीवा कलब
लबचनअधरअरुनारे दुइदुइदसनविसदबरिबारे ललितकपोलम
नोहरनासा सकलसुखदससिकरिसमहासा नीलकंजलोचनभव
मोचन भ्राजतभालतिलकगोरोचन विकटभ्रिकुटसमश्रवनसुहाये कुं
चितकचमेचककछबिछाये पीतझीनझगुलातनसोही किलकनचितवन
भावतमोही रूपरासनृपअजिरबिहारी नाचहिनिजप्रतिबिंबनिहारी
मोहिसनकरहिबिबधिबिधक्रीडा बरनतचरतमोहअतिब्रीडा किल
कतमोहधरनिजबधावहि चलोभागतबपूकदिखावहि १६७ दोहा

आवत निकट हसहि प्रभु भाजत रुदन कराहि जाउ समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहि १९८ प्राकृत शिशु इव लीला देषि भयो मुहि मोह कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह १९९ चौपई इतिनाम मन आनत षगराया रघुपति प्रेरत व्यापी माया सो माया न दुषमोह काही आन जीव इव संसृत नाही नाथ इहा कछु कारन आना सुनहु सो सावधान हरिजाना ग्यान अखंड एक सीतावरि माया वस्य जीव सचराचर जो सब के रह ज्ञान एकरस ईश्वर जीव हि भेद कहहु कसि माया वसि जीव अभिमानी ईशवश्य माया गुन खानी परवस जीव स्ववस भगवंता जीव अनेक एक श्रीकंता मुधा भेद जद्यपि कृत माया बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया २०० दोहा रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निरबान ज्ञानवंत अपि सो नर पशु बिनु पूछ बिषान २०१ राकापति षोडश उअहि तारागन समुदाइ सकल गिर नदवला इयै बिनु रबि राति न जाइ २०२ चौपई ऐसहि हरि बिनु भजन

श्री

उं० कां०

62

नषगेस्या मिटैनजीवनकेरिकलेसा। हरिसेवककहिनबापअभि विद्या प्रन
प्रेरतवापैनिहवि‌द्या ताते नापानहोइदासकर नेद्भगतिबाठैविहंग
कुरि च्ह्रमते चक्रतरामसुहदेषा विहसे सोहनिचरितविसेषा तिहि कौत
ककरिमरमनकाहू जाना अनुजनमातपिताहू जानुपानिधायेमोहि
धरना मयामलगातअरुनकरचरना तबमैभागिचलेउउरगारी रान
गहनकहुभुजापसारी जिमजिमदूरउडाऊअकासा तहंभुजहरदेषोनि
जपासा ८३ दोहा ब्रह्मलोकलगिगयोमैचितएपछउडान जुगअं
गुलकरबीचसबरामभुजहिमुहलात ८४ सप्तावरनभेदकरजह
लगिहैगतिमोर गयोतहाहरिभुजनिरषब्याकुलभयोबहोर ८५ चौ
पई मुदिउनैनत्रशातजबभयो पुनचितवतकोशलपुरगयो मो
हिविलोकराममुसकाही बिहसतुरतगयोमुषमाही उदरमाझसुनि
अंडजराया देषिउबहुब्रह्मांडनिकाया अतिबचित्रतहलोकअने

राम

श्री

का रचनाअधिकएकतेएका कोटनचतुराननगौरीशा अगनतउड
गनरविरजनीशा अगनतलोकपालजमकाला अगनतभूधरभूम
विशाला सागरसरसरविपनअपारा नानाभातिसृष्टिविस्तारा सुर
मुनिसिद्धनागनरकिंनर चारिप्रकारसजीवचराचर २·६ दोहा जो
नहिदेषानहिसुनाजोमनहूनसमाइ सोसबअद्भुतदेषयोबरनक
वनबिधिजाइ २·७ एकएकब्रह्मांडमहिरहियोबरषशतएक इहिबिधि
देषतफिरमैअंडकटाहिअनेक २·८ चौपई लोकलोकप्रतिभिंनबि
धाता भिंनबिष्णुशिवमनुदिशत्राता नरगंधर्बभूतबेताला किंनर
निशाचरपसुषगब्याला देवदनुजगननानाजाती सकलजीवतहआ
गरस नहिभांती महिसरिसागरगिरनाना सबप्रपंचतहआनेआना अंडकोस
प्रतिप्रतिनिजरूपा देषोजिनसअनेकअनूपा अवधपुरीप्रतिभुवननिना
री सरयूभिंनभिंननरनारी दशरथकौशल्यासुनिताता बिबधरूपभरता धं

३२ द्विकभ्राता प्रतिब्रह्मांडराम अवतारा देषोबालबिनोद अपारा २०९ दोहा भिंनभिंन मैदीषसब अतिबचित्र हरिजान अगनतभुवनफिरेप्रभुराम नदेष्यो आन २१० सोशिशुपन सोइसोभा सोकृपाल रघबीर भुवनभुव नदेषतफिरौप्रेरतिमोह समीर २११ चौपई भ्रमतमोह ब्रह्मांड अनेका बीतेमनहुकलपसतिएका फिरतफिरतनिज आश्रम आयो तहपुनरह कछुकाल गवायो निजप्रभुजन्मअवधसुनपायो निरभरप्रेमहरष उठधायो देष्योजनममहोत्सवजाई जिहबिधप्रथमकहामैगाई रामउदरदेष्योजगनाना देषतबनै नजाइबषाना तहपुनदेष्योराम सुजाना मायापतिकृपाल भगवाना करौबिचारबहोरबहोरी मोहक लितव्यापतिमतिमोरी उभैघरीमहिमैसबदेषा भयेभ्रमतिमनमोहवि सेषा २१२ दोहा देषकृपालविकलमुह बिहसेतबरघबीर बिहसत हीमुषबाहरेआयोसुनिमतिधीर २१३ सोइलरिकाईमोहसनकरै (

राम ३२

64

लागपुनराम कोटिभांतिसमझावामनुनलहैबिस्राम २१४ चौपई देखचरितइ
हसोप्रभुताई समझतदेहदशाबिसराई धरनिपरयोमुखआवनबाता त्राहि
त्राहिआरतजनत्राता प्रेमाकुलप्रभुमोहविलोकी निजमायाप्रभुतातबरोकी
करसरोजप्रभुममसिरधरियो दीनदयालसकलदुखहरयो कीनरामतब
बिगतबिमोहा सेवकसुखदकृपासंदोहा प्रभुताप्रथमबिचारबिचारी मनम
हिहोमहरषअतिभारी भगतबछलताप्रभुकैपेषी उपजीउरममप्रीतिविसे
षी सजलनयनपुलकतकरजोरी कीनोबहुबिधिबिनयबहोरी २१५ दोहा
सुनसप्रेममबानीदेषदीननिजदास बचनसुषदगंभीरमृदबोलेरमा
निवास २१६ काग्गभसुंडमागबरअतिप्रसंनमहजान अनुमादिकसिध
अपररिधिमोछसकलगुनषान २१७ चौपई ग्यानबिबेकबिरतिबिग्या
ना मुनिदुर्लभगुनजेजगजाना आजुदेउसबसंसैनाही मांगुजोतोहिभा
वैमननमाही सुनिप्रभुबचनअधिकअनुरागो मनअनुमानकरनतबला

३२ उ॰ कां॰

66

न्यो प्रभु कहहु देन सकल सुख सही जगति आपनी देन न कही जगति हीन गुन सब सुख ऐसे लवन बिना बहु बिंजन जैसे॥ भजन हीन सुख कवने काजा अ सबिचार बोल्यो खगराजा जो प्रभु होय प्रसन्न बर देहू मो पर कृपा करहु अ रू नेहू मन भावत बर मागो स्वामी तुम उदार उर अंतर जामी २१८ दोहा अ बिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव जिह खोजत जोगीश मुनि प्रभु प्रसा द कोउ पाव २१९ भगत कलपतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम सो निज भ गत मोहि प्रभु देहु दया कर राम २२० चौपाई एवमस्तु कहि रघुकुल नायक बोले बचन परम सुखदायक सुनि बायस तै सहज सयाना काहि न मागसि असि बरदाना सब सुख खानि भगत तै मागी नाते कोन बडो अति भागी जो मुनि कोटि जतन नहि लहही जे जप जोग अनल तन दहही रीझेउ देखत तोरि चतुरा ई मागी भगत मोहि अति भाई सुन बिहंग प्रसाद अब मोरे सब सुभ गुन बसि हहि उर तोरे भगति ग्यान बिग्यान बिरागा जोग चरित्र रहस्य बिभागा जानब ते

राम ३३

सुनहीकरिनिजभेदा ममप्रसादनहिसाधनषेदा २२१ दोहा मायासंभ
वभ्रमसबअबनबिआपहैतोहि जानसिब्रह्मअनादिअजअगुनगु
नाकरमोहि २२२ मोहिभगतप्रियसंततअसबिचारसुनिकाग कायबच
नमनममपदकरसिअचलअनुराग २२३ चौपई अबसुनपरमबिमल
ममबानी सतिसुगमनिगमादिबषानी निजसिद्धांतसुनावौतोही सु
निमनधरसबतजभजुमोही मममायासंभवसंसारा जीवचराचरबि
बिधिप्रकारा सबममप्रियसबममउपजाये सबतेअधिकमनुजमुहिभा
ये तिनमहिद्विजद्विजमहिश्रुतिधारी तिनमहिनिगमधरमअनुसारी ति
नमहिप्रियबिरक्तपुनिग्यानी ज्ञानहुतेअतिप्रियबिज्ञानी तिनतेपुनिमो
हिप्रियनिजदासा जिहगतिमोरनदूसरआसा पुनपुनसत्यकहोतुहिपाही
मोहिसेवकसमप्रियकोऊनाही भगतिहीनबिरंचकिनहोई सबजीवन
समप्रियमोहिसोई भगतिवंतअतिनीचोप्रानी मोहिप्रानप्रियअसिममबा

नी दोहा २२४ सुचि सुशीलसेवकसुमतिप्रियकहुकाहिनलाग स्रुतिपु
रानकहनीतिअसिसावधानसुनकाग २२५ चौपई एकपिताकेविपुल
कुमारा होहिंप्रिथकगुनशीलअचारा कोउपंडितकोतापसग्याता कोधन
वंतसूरकोउदाता कोऊसर्वग्यधरमरतिकोई सबपरपितहिप्रीतिसम
होई कोऊपितभगतबचनमनकरमा सपनेहुजाननदूसरधरमा
सोसुतप्रियपितप्रानसमाना जद्यपिसोसबभांतिअयाना एहिबिधजी
वचराचरजेते त्रिजगदेवनरअसुरसमेते अखिलविस्वयहमोरउपा
या सबपरमोंहिबराबरदाया तिनमहिजोपरहरमदमाया भजैमो
हिबचनमनअरुकाया २२६ दोहा पुरषनिपुंसकनारिवाजीवचराचरको
इ सर्बभावभजिकपटतजिमोहिपरमप्रियसोइ २२७ सोरठा सतिकहौख
गतोहिसुचिसेवकममप्रानप्रिय असबिचारभजमोहिपरहरआसभ
रोससब २२८ चौपई कबहूकालनब्यापैतोही सुमरेसभजेसुनिरंत

नर

राम

69

रिमोही प्रभुबचनामृतसुनननअघाही तनपुलकतमनअतिहरखाही सोसु
षजानैमनअरुकाना नहिरसनाप्रतिजाइबषाना प्रभुसोभासुषजानहि
नयना कहिकिमिसकहितिनहिनहिबयना बहुबिधमोहप्रबोधसि
षदेइ लगेकरनसिसुकौतकतेइ सजलनयनकछुमुषकररूषा चि
तैमातलागीअतिभूषा देषमातआतुरउठिधाई कहिमृदबचनलीयेउ
रलाई गोदराषिकरावपयपाना रघुपतिचरितललितकरगाना २२९
सोरठा जिन्हसुषलागिपुरारिअशुभबेषकृतसिवसुषद अवधपुरीनरना
रितिन्हसुषमहिसंततमगन २३० सोरठा सोइसुषलवलेशजिनबारिक
सपनेलहियो तेनहिगनेषगेशब्रह्मसुषहिसज्जनसुमति २३१ चौपई
मैपुनअवधरह्योकछुकाला देषोबालबिनोदरसाला रामप्रसाद
भगतबरपायोप्रभुपदबंदनिजाश्रमआयो तबतेमोहनब्यापीमाया
जबतेरघुनायकअपनाया इहसभगुपतचरितमैगावा हरिमायाजि

ममोहनचावा निजअनुभवअबकहौषगेसा बिनुहरिभजननजाहिकले
सा रामकृपाबिनसुनिषगराई जानिनजाइरामप्रभुताई जानेबिनुनहोइप
रतीती बिनुप्रतीतनहोइहिप्रीती प्रीतिबिनानहिभगतदृढाई जिमषगप
तिजलकैचिकनाई ॥२२॥ सोरठा बिनुगुरहोइनग्यान ग्यानकिहोइबैराग
बिनु गावहिबेदपुरानसुषकिलहै हरिभगतबिनु ॥२२॥ कोबिश्रामकिपा
वतातसहजसंतोषबिनु चलैकिजलबिननावकोटिजतनपचिपचिमरै
॥२३॥ चौपई ॥ बिनुसंतोषकामननसाही कामअछतसुषसुपनेनाही रा
मभजनबिनुमिटहिनकामा थलविहीनतरुकबहुकेजामा बिनुबिग्या
नकिसमताआवै कोऊअवकासकिनभबिनुपावै श्रधाबिनाधरमनहि
होई बिनुमहिगंधकिपावैकोई बिनुतपतेजकिकरबिस्तारा जलबिनु
रसकिहोइसंसारा सीलकिमिलबिनुबुधिसेवकाई जिमबिनुतेजनरू
पगोसाई निजसुषबिनुमनहोइकिथीरा परसकिहोइबिहीनसमीरा

कवनउसिद्धिकिविनुविस्वासा विनुहरिभजननभवभयनासा २२४
दोहा विनुविस्वासभगतनहितिहविनुद्रवहिनराम रामकृपाविनुस
पनहुंजीवनलहिविश्राम २२५ सोरठा अस विचारमतिधीरतजिकु
तरकसंसैसकल भजहुरामरघुबीरकरुनाकरसुंदरसुषद २२६ चौप
ई निजमतिसरसनाथमैंगाई प्रभुप्रतापमहिमाषगराई कहयोनक
छुकरिजुगतविशेषी यहसबमैंनिजनैयननदेषी महिमानामरूप
गुनगाथा सकलअमितअनंतरघुनाथा निजनिजमतिमहिमामुनि
गावहि निगमशेषशिवपारनपावहि तुमआदिषगमसकपरजंता
नभउडाहिनहिपावहिअंता तिमरघुपतिमहिमाअवगाहा तातकब
हुंकोऊपावकिथाहा रामकामसतकोटिसुभगतन दुर्गाकोटिअमि
तअरिमरदन शक्रकोटिसतसरसबिलासा नभसतकोटिअमित
अवकासा २२७ दोहा मरुतकोटिसतविपुलबलरविसतकोटिप्रकास ता

71

अंसी० स्रिष्टनिपुनाई विष्नुकोटसमपालनकरता

२६ ससिसतिकोटिसुसीतलसमनसकलभवत्रास कालकोटिसतसरस
उ० अतिदुस्तरदुरगदुरंत धूमकेतसतकोटिसमदुराधर्षभगवंत २२९
कां० चौपई प्रभुअगाधसतकोटिपताला समनकोटिसतसरसकराला
तीरथअमितकोटिसतपावन नामअखिलअघपूगनसावन हिमगि
रकोटिअचलरघुवीरा सिंधकोटिसतसमगंभीरा कामधेनसतको
टिसमाना सकलकामदायकभगवाना सारदकोटिअमितचतुरा
ई [illegible] बिधसतकोटि [illegible] रुद्रकोटि
सतसमसंघरता धनदकोटिसतसमधनवाना मायाकोटिप्रपंचनि
धाना भारधरनसतकोटिअहीसा निरबधिनिरूपमप्रभुजगदीसा
२४ छंद निरूपमउपमाआनरामसमानरामनिगमकहै जिमको
दौ० टिसतषद्योतरविकहतिअतिलघुतालहै इहभांतनिजनिजमत
विलासमुनीसहरिहिबषानहीं प्रभुभावगाहकअतिक्रपालस राम २६

प्रेममगुनि सुषमानहीं २४१ दोहा रामअमितगुनसागरथाहकिपा
वैकोइ संतननतेजसकछुसुन्योतुमहिसुनायोसोइ २४२ सोरठा भा
वबस्यभगवान सुखनिधान करुनाभवन तजिममतामदमान
भजिसदासीतारवन २४३ चौपई सुनिभुसुंडकेबचनसुहाये हर
षतषगपतिपंषफुलाये नयननीरमनअतिहरषाना श्रीरघुपति
प्रतापउरआना पाछुलमोहसमझिपछुताना ब्रह्मअनादिमनुजक
रिमाना पुनपुनकागचरननिसिरुनावा जानिरामसमप्रेमबढावा गु
रबिनुभवनिधितरैनकोई जोबिरंचिसंकरसमहोई संसैसर्पग्रस्योमो
हिताता दुखदलहरिकुतरकबहुब्राता तवसरूपगारुडरघुनायक मो
हिजीआयोजनसुखदायक तवप्रसादममोहनसाना रामरहस्यअ
नूपमजाना २४४ दोहा ताहिप्रसंसैबिबधिबिधिसीसनाइकरजोरि
बचनबिनीतसप्रेममृदबोल्योगरुडबहोरि २४५ प्रभुअपनेअबिबेक

तेबूझेउस्वामीतोहि कृपासिंधसागरकहहुजानदासनिजमोहि २४६ चौपई
तुमसरबज्ञतज्ञतमपारा सुमतिसुशीलसरलआचारा ज्ञानविरतविज्ञान
निवासा रघुनायकके तुमप्रियदासा कारनकवनदेहयहपाई तातस
कलमुहिकहोबुझाई रामचरितसरसुंदरस्वामी पायहुकहाकहोनभगा
मी नाथसुनामैअसशिवपाही महाप्रलेहूनासतवनाही मृषाबचनन
हिईस्वरकहई सोमेरेमनसंसैयहई अगजगजीवनागनरदेवा नाथ
सकलजगकालकलेवा अंडकटाहिअमितलयकारी कालसदादुरतक्र
ममारी २४७ सोरठा तुमहिनव्यापतिकालअतिकरालकारनकवन मो
हिसोकहोकृपालज्ञानप्रभावकिजोगबल २४८ दोहा प्रभुतवआश्रम
आयेमोरमोहभ्रमभाग कारनकवनसोनाथसबकहोसहितअनुराग २
४९ चौपई गरुडगिरासुनिहरषेउकागा बोलेउउमापरमअनुरागा धंन्न
धंन्नतवमतिउरगारी प्रश्नतुम्हारमोहिअतिप्यारी सुनतवप्रश्नसप्रेमसु

हाई बहुत जनम कैसुधि मुहि आई सुन निज कथा कहौं मैं गाई तात सुनहु सा
दर मन लाई जप तप मख सम दम ब्रत दाना बिरत बिबेक जोग बिग्याना सब
कर फल रघुपति पद प्रेमा तिह बिनु कोऊ न पावै छेमा इहि तन राम भगति म
य पाई ता तें मोहि ममता अधिकाई जिह तें कछु निज स्वारथ होई तिहिं पर म
मता करै सब कोई २५० सोरठा पंनगारि असि नीति श्रुति संमत सज्जन कहहि
अति नीचहु सन प्रीति करै जान निज परम हित २५। पाट कीट ते होइ तिह
ते पाटंबर रुचिर कृमि पालै सब कोइ परम अपावन प्रान सम २५२ चौप
ई स्वारथ सांच जीव कौ एहा मन क्रम बचन राम पद नेहा सो पावन
सो सुभग शरीरा जो तन पाइ भजै रघुबीरा राम बिमुख लहि बिधि सम दे
ही कबि कोबिद न प्रसंसै तेही राम भगति इहि तन उर जामी ता तें मोहि प
रम प्रिय स्वामी तजौं न तनु निज इछा मरना तनु बिनु भजन बेद नहि ब
रना प्रथम मोह मुहि बहुत बिगोवा राम बिमुख कँब हूँ न सोवा नानाज

सुब

रू॰
उ॰
को॰

76

न्मकरमफुनिनाना कीयेजोगतपजपमखदाना कवनजोनिजनमो
जहांनाही मैंखगेसभ्रमन्नमजगमाही देष्योंकरिसबकरमगोसाई
सुषीनभयोअबहिकीन्याई सुधमुहिनाथजनमबहुकेरी शिवप्रसा
दिमुहिमतिघनेरी २५२ दोहा प्रथमजनमकेचरितअबकहोंसुनो
बिहगेश सुनिप्रभुपदरतिउपजैजातेमिटैकलेश २५४ पूरबकल
पएकप्रभुजुगकलिजुगमलमूल नरअरुनारिअधरमरतिसकलनि
गमप्रतिकूल २५५ चौपई तिहकलजुगकोशलपुरजाई जनमतभयो
सूद्रतनपाई शिवसेवकमनक्रमअरुबानी आनदेवनिंदकअभिमा
नी धनमदमत्तपरमबाचाला उग्रबुद्धिउरदंभबिसाला जदपरसो
रघुपतिरजधानी तदपनकछुमहिमातवजानी अबजानामैंअवध
प्रभावा निगमागमपुरानअसिगावा कवनहुजनमअवधबसिजोई
रामपरायनसोपरहोई अवधप्रभावजानतवप्रानी जबउरबसहिरा

राम
रू॰

मधनुपानी सोकलिकालकठनउरगारी पापपराइनसमनरनारी
२५६ दोहा कलमलग्रसेधरमसबलुपतभयेसदग्रंथ दंभननिजमत
कलपकरप्रगटकीयेबहुपंथ २५७ भयेलोगसबमोहबसलोभग्रसेसु
भकरम सुनहरिजानग्यानिनिधिकहौकछुककलिधरम २५८ चौ
पई बरनधरमनहिआश्रमचारी स्रुतिबिरोधरतिसबनरनारी द्विज
स्रुतिबेचकभूपप्रजासन कोउनहिमाननिगमअनुसासन मारगसो
जाकरजोईभावा पंडितसोजोगालबजावा मिथ्यारंभदंभरतिजोई
ताकहुसंतकहैसबकोई सोसयानजोपरधनहारी जोकरदंभसोबड
आचारी जोकहझूठमसकरीजाना कलजुगसोगुनवंतसियाना निरा
चारजोस्रुतिपथत्यागी कलजुगसोइग्यानीबैरागी जाकेनखअरुजटा
बिसाला सोतापसप्रसिद्धकलिकाला २५९ दोहा असुभबेषभूषन
धरेभछाभछजिखाहि तेइजोगीतेइसिद्धनरपूजतकलजुगमाहि २६०

सोरठा जेअपकारीचारतिनकरगौरवमानतेइ मनक्रमबचनलबारतेब
कताकलिकालमहि २९८ चौपई नारिबिबसनरसकलगोसाई नाच
हिनरमरकटकीन्याई सूद्रद्विजनउपदेसहिग्याना मेलजनेऊलेहिकुदा
ना सबनरकामलोभरतिक्रोधी देवविप्रश्रुतिसंतबिरोधी गुनमंदरसु
दरपतित्यागी भजहिनारिपरपुरुषअभागी सौभागनीबिभूषणहीना
बिधवनकेसिंगारनवीना गुरशिषबधिरअंधकरलेषा एकनसुनैए
कनहिदेषा हरैशिष्यधनशोकनहरई सोगुरघोरनरकमहिपरई
मातपिताबालकनबुलावहि उदरभरैसोधरमसिषावहि २९९ दोहा
ब्रह्मग्यानबिनुनारिनरकहहिनदूसरबात कौडीलागतेलोभबसिकर
हिविप्रगुरघात २९९ बादहिसूद्रद्विजनसनहमतुमतेकछुघाटि जा
नैब्रह्मसोविप्रबरआंषिदिषावहिडांटि २९८ चौपई परत्रियलंपटकप
टसियाने मोहद्रोहममतालपटाने तेअभेदबादीग्यानीनर देषामै

चरित्र कलिजुग कर आप गये तिनहूं मं रख्खा लहि जे कहुं सं मारग प्रतिपा त

ते नर लहि कलप कलप भर एक एक नरका परहि जे दूषहि स्रुति कर तरका जे ब

रनाधम तेल कुमारा स्वपच किरात कोल कलवारा नारि मुई ग्रह संपति नासी म क

ड़ मुड़ाइ होवैं संन्यासी ते विप्रन सन आपु पुजावहि उभै लोक निज हाथ नसा

वहि विप्र निरछर लोलुप कामी निराचार सठ बृषली स्वामी सूद्र करहि ज

प तप नाना बैठ बरासन कहहि पुराना सब नर कलपित करहि आचारा

जाइ न बरनि अनीत अपारा ॥२९५॥ दोहा भये बरन शंकर सकल भिंन सेत

सब लोग करहि पाप पावहि दुख भय रुज शोक वियोग ॥२९६॥ स्रुति संमत

हरि भगत पथ संजुति बिरति बिबेक तिहि न चलहि नर मोह बस कलपहि पं

थ अनेक ॥२९७॥ छंद बहु दाम सवारहि धाम जती बिषिआ हरि लीनें रही न

बिरती तपसी धनवंत दरिद्री ग्रिही कलि कौतक तात न जाति कही कुलवं

ति निकारहि नारि सती ग्रह आनहि चेरनि बेरि गती सुत मानहि मात पिता त

४०

उ०

को०

बलौ अबलानन दीषनहीनबलौ समुरारिपिआरिलगीजबते रिपरूपकु
टंबनेयतबते नृपपापपरायनधरमनही करदंडबिदंडप्रजानितही घन
वेतकुलीनमलीनअपी द्विजचिनुजनेऊघोरतपी नहमानपुरानन्नबेद
हिजो हरिसेवकसतसही कलिसो कबिबृंदउदारदुनीनसुनी गुनदूषक
बातनकोपगुनी कलिबारहिबारदुकालपरे बिनुअन्नदुषीसमलोगम
रे २९८ दोहा सुनियगेशकलिकपटहठदंभद्वैतपाषंड मानमोहमाया
दिमद व्यापरहेब्रह्मंड २९९ तामसघरमकरहिनरजपतपमषब्रतदान
देवनबरषेधरनिपरिबुएनजामहिधान ३०० छंद अबलाकचभूषन
भूरखुधा धनहीनदुषीममताबहुधा नरपीडतरोगनभोगकही अभि
मानविरोधअकारनही लघुजीवनसंमतिपंचदशा कलपोतननासम्
मानअसा कलिकालबिहालकीयेमनुजा नहमानतकोअनुजानतुजा
नहतोलविचारनसीतलता सबजातकुजातिभयेमंगता इरषाकरस

उ

राम

४०

तनलोलुपता मनपुररही समताबिगता सबलोगबियोगबिशोकहये बर
नाश्रमधरमअचारगये दमदाननदयानहिंजानपनी जडताप्रपंचनतातघ
नी तनपोषकनारनिरासगरे परनिंदकजेजगमोबगरे २७१ दोहा सु
नब्यालारिकालकलिमलअवगुनआगार गुनौबहुतकलिजुगकरबिनुप्र
यासनिसतार २७२ क्रितयुगत्रेताद्वापरहूं पूजामषअरुजोग जोगतिहो
इसोकलिहरिनामतेपावहिलोग २७३ चौपई क्रितजुगसबजोगीबिज्ञा
नी करहैध्याननतरहिंभवप्रानी त्रेताबिबधजग्यनरकरही प्रभुहिसमरप
करमभवतरही द्वापुरकररघुपतिपदपूजा नरभवतरहिंउपावनदूजा कलि
जुगजोकेवलहरिगुनगाहा गावतनरपावहिंभवथाहा कलिजुगजोगनज
ग्यनज्ञाना एकअधाररामगुनगाना सबभरोसतजिजोनजिरामहि प्रेमस
मेतगावगुनग्रामहि सोभवतरकछुसंसैनाही नामप्रतापप्रगटकलिमाही
कलिकरएकपुनीतप्रतापा मानसपुंन्यहोइनहिंपापा २७४ दोहा कलिजु

गमसमन हिंस्रानजग मोनर कर विस्वास गाइराम गनगुन विमल भव तर विनाहि
प्रियास २७५ प्रगट चार पग धरम के कलम हि एक प्रधान जेनकेन विध दीने दा
न करै कल्यान २७६ चौपई कितयुग धरम होहि सम केरे ह्रिदे राम माया के
प्रेरे शुद्ध सत्व समता विज्ञाना कित प्रभाव प्रसंनमन जाना सत्व बहुत रज क
छुरति करमा सम विध सुष त्रेता कर धरमा बहु रज स्वल पसत्व कछु तामस द्वा
पुर धरम हरष भय मानस तामस बहुत रजो गुन थोरा कलि प्रभाव बिरोध
चहु ओरा बुध जग धरम जान मन माही तजि अधरम रति धरम कराही काल
धरम नहि व्यापहि ताही रघपति चरन प्रीति अति जाही नट क्रित बिकट कपट ष
गराया नट सेवकन हि व्यापहि माया २७७ दोहा हरिमाया क्रित दोष गुन
विनु हरि भजन न जाहि भजै राम तजि काम स भ अस विचार मन माहि २७८
तिह कलिकाल बरष बहु बस्यो अवध विहगेश परयो दुकाल बिपति ब
सि तब मै गयो विदेश २७९ चौपई गयो ऊजैनी सुन उरगारी दीन

मलीन दरिद्र दुखारी। गये काल कछु संपति पाई। तहँ पुनि करौं शंभु सेव काई।
विप्र एक वैदिक शिव पूजा करै सदा हित काज न दूजा। परम साध परमारथ।
बिंदक शंभु उपासक नाह हरि निंदक। तिह सेवौं मैं कपट समेता। द्विज दया
ल अति नीति निकेता। बाहज नम्र मुह देख गुसांई। विप्र पठाव पुत्र की न्याई।
शंभु मंत्र मुह द्विजवर दीना। शुभ उपदेश बिबिध बिध कीना। जपौं मंत्र शि
व मंदर जाई। हृदै दंभ अहमित अधिकाई। २८० दोहा। मैं खल मल सं
कुल मति नीच जात बस मोह। हरिजन द्विज देखे जरौं करौं बिश्न कर द्रोह। २८१
सोरठा। गुर नित मोह प्रबोध दुखत देख आचारन मम। मुह उपजै अति
क्रोध दंभहि नीत कि भावई। २८२ चौपई। एक बार गुर लीन बोलाई। मो
ह नीति बहु भांत सिखाई। शिव सेवा कर फल सुत सोई। अवरल भगत
राम पद होई। राम हि भजहि तात शिव धाता। नर पावर कै केतक बाता।

७२ उ० कां

जासु चरन अज सिव अनुरागी तासु द्रोह सुष चहसि अभागी हर कहुँ हरि
सेवक गुर कहिऊ सुन षगनाथ हृदय मम दहिऊ अधम जाति मैं बिद्या
पाए भयो यथा अहि दूध पिआए मानी कुटिल कुभाग कुजाती गुर कर द्रो
ह करौ दिन राती अति दयाल गुर स्वलप न क्रोधा पुन पुन मोहि सिषा
व सुबोधा जिह ते नीच बडाई पावा सो प्रथमहि हति ताहि नसावा धूम
अनल संभव सुनि भाई तिह बुझाइ घन पदवी पाई रज मग परी नि
रादर रहई सभ कर पद प्रहार नित सहई मरुत उडाव प्रथम तिह भरई
पुन नृप नयन किरीटन परई सुन षगपति अस समझ प्रसंगा बुध न
हि करहि अधम कर संगा कवि कोविद गावहि असि नीती षल सन कल
ह न भल नहि प्रीती उदासीन नित रहै गोसाई षल परिहरै स्वान की न्या
ई मै षल हृदै कपट कुटलाई गुर हित कहै न मोहि सुहाई २०२ दोहा एक

लं राम ८२

बारहुहरिमंदरजपतरहेउसिवनाम गुरआयोअभिमानतेउठिनहिकीनप्र
नाम २०४ सोदयालनहिकहेउकछुउरनरोषलवलेस अतिअघगुरअ
पमानतासहिनसकेमहेस २०५ चौपई मंदिरमाझभईनभबानी रेह
तिभागअग्यअभिमानी जद्यपतवगुरकेनहिक्रोधा अतिक्रिपालचितस
म्यकबोधा तदपिसापसठदेहोतोही नीतविरोधसुहाइनमोही
जोनहीदंडकरौखलतोरा भ्रष्टहोइस्रुतिमारगमोरा जेसठगुरसनईरषा
करही रौरवनरककोटिजुगपरही त्रिजगजोनिपुनिधरहिसरीरा आयु
तजन्मभरिपावहिपीरा बैठरहेसिअजगरइवपापी सरपहोइखलमल
मतिबापी महाबिटपकोटरमहिजाई रहुअधमाधमअधिगतिपा
ई २०६ दोहा हाहाकारकीनगुरदारुनसुनशिवश्राप कंपतमोहविलो
कअतिउरउपजापरताप २०७ करीदंडवतसप्रेमदिजशिवसनमुखकर
जोरि बिनयकरतगदगदस्वरसमझघोरगतिमोरि २०८ छंद नमामी
शमीशान निर्बाणरूपं विभुंब्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं निजंनिर्गुणंनिर्वि

८२ उ० को०

कलपंनिरीहं चिदाकाशमाकाशबासं भजेहं निराकारमोंकारमूलंतुरीयं गि
राज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं करालंमहाकालकालंकपालं गुनागारसंसार
पारंनतोहं तुषाराद्रिसंकाशगोरंगभीरं नमोभूतकोटप्रभासीसरीरं स्फु
रन्मौलकल्लोलनीचारुगंगा लसदबालभालिंदुकंठेभुयंगा चलत्कुं
डलंभ्रूसुनेत्रंविशालं प्रसंनाननंनीलकंठंदयालं मगाधीसचरमांब
रंरुंडमालं प्रियंशंकरंसर्बनाथंभजामि प्रचंडप्रक्रिष्टंप्रगल्भंपरेशं अ
खंडंअजंभानकोटप्रकासं त्रियाशूलनिर्मूलनंशूलपानं भजेहंभवानी
पतंभावगम्यं कलातीतकल्यानकल्पांतकारी सदासज्जिदानंददाताप्रु
रारी चिदानंदसंदोहमोहप्रहारी प्रसीदप्रसीदप्रभोमनमथारी नजावा
दुमानाथपदारबिंदं भजंतीहलोकेपरेवानरानं नतावतसुखंशांतिसं
तापनासं प्रसीदप्रभोसर्बभूताधिवासं नजानामिजोगंजपंनैवपूजा न
तोहंसदासर्बदाशंभुतुभ्यं जराजन्मदुःखोघतातप्यमानं प्रभोपाहिआ
पानमीशानशंभो ८८९ रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेनहरितोषयेत् येप

राम ८२

ठंति नरा भक्त्या तेषां शंभु प्रसीदते २९० दोहा सुनि बिनती सरबग्य शिव
देषि बिप्र अनुराग पुन मंदर नभबानी भै द्विजबर बर कछु माग २९१ जो प्रस
न्न प्रभ मो पर नाथ दीन पर नेहु निज पद भगति देइ प्रभ पुन दूसर बर देहु २९२
तव माया बसि जीव जड संतत फिरै भुलान तिह पर क्रोप न करो प्रभ क्रपासिं
धु भगवान २९३ शंकर दीन दयाल अब इह पर होहु क्रपाल श्राप अनुग्र
हु होइ जिह नाथ थोरही काल २९४ चौपई इहि कर होइ परम कल्याना सो
ई करो अब क्रिपानिधाना बिप्रगिरा सुनि परहित सांनी एवमस्तु इति भै
नभबानी जदिप कीन इह दारुन पापा मै पुन दीन क्रोध करि श्राप तदि
प तुमार साधता देषी करहौ एह पर क्रिपा बिशेषी छिमासील जे पर उपका
री ते द्विज मोहि प्रिय यथा षरारी मोर श्राप द्विज ब्यर्थ न जाइहि जन्म सहस्र
अवस यह पाइहि जन्मत मरत दुसह दुष होई इहि स्वल पौ नहि ब्यापै सोई
कवनहु जनम मिटै नहि ग्याना सुनहु सूद्र मम बचन प्रवाना रघपति उ

रीजनमतवकनयो पुनतैंममसेवामनुदयो पुरीप्रभाउअनुग्रहमोरे रामभ
गतिउपजाहिउरतोरे सुनममवचनसत्तअतिनाई। हरितोषनब्रतद्विज
सेवकाई। अबजनिकरहिविप्रअपमाना। जानससंतअनंतसमाना। इंद्र
कुलशममसूलविशाला। कालदंडहरिचक्रकराला। जोइनकरमारानहि
मरई। विप्रद्रोहपावकसोजरई। असिविबेकराषहुमनमाही तुमकहुंज
गदुर्लभकछुनाही औरएकआशिषामोरी अप्रतिहतिगतिहोइहै
तोरी २९५ दोहा सुनशिवबचनहरषगुरएवमस्तइतिभाष मोह
प्रबोधगयोग्रहशंभुचरनउरराष २९६ प्रेरतकालविंधगिरजाइमे
योमैव्याल पुनप्रयासविनुसोतनुतजोगयोकछुकाल २९७ जोतनुध
रौतजोपुनिअन्यासहरिजान जिमनूतनपटपहिरैनरपरहरैपु
रान २९८ शिवराषीश्रुतिनीतअरुमैनहिपावकलेस इहिबिधि
धरेउबिबिधतनुज्ञाननगयोखगेस २९९ चौपई। त्रिजगदेवनरजो

तनधरऊ जहतहराममजनअनुसरऊ एकसूलमोहिबिसरनकाऊ गु
रुकरकोमलसीलसुभाऊ चरमदेहदिजकैमैपाई सुरदुर्लभपुरानश्रुति
गाई खेलौतहूंबालकनमीला करौसकलरघुनायकलीला प्रौढभये
मोहिपितापढावा समझौसुनौगुनौनहिभावा मनतेसकलबासनाभागी
केवलरामचरनलयलागी कहुखगेशअसकवनअभागी खरीसेवसुर
धेनहित्यागी प्रेममगनमोहिकछुनसुहाई हारेउपितापढाइपढाई भ
येकालबसजबपितमाता मैबनगयोभजनजनत्राता जहजहबिपि
मुनीश्वरपावौ आश्रमजाइजाइशिरनावौ बूझौतिनैरामगुनगाहा कहि
हिसुनौहरषखगनाहा सुनतफिरौहरिगुनअनुबादा अब्याहतगतिशं
भुप्रसादा छुटीत्रिबिधईषनागाढी एकलालसाउरअतिबाढी रामच
रनबारजजबदेखौ तबनिजजनमसफलकरलेखौ जिहपूछौसोमुनि
असिकहई ईश्वरसर्बभूतमयअहई निरगुनमतनहिमोहसुहाई

सगुनब्रह्मरतिकरअधिकारी ३० दोहा गुरकेबचनसुरतिकरराम
चरनमनलाग रघुपतिजसुगावतफिरौंछिनछिननवअनुराग ३१
मेरुशिषरबटछायामुनलोमसआसीन देषचरनशिरुनायोबच
नकह्योअतिदीन ३२ सुनममबचनविनीतमृदमुनकृपालषगराज
मोहसादरपछुतभयोद्विजआयेकिहकाज ३३ तबमैंकहाकृपानि
धितुमसरबज्ञसुजान सगुनब्रह्मअवराधनमोहकहोभगवान ३४
चौपई तबमुनीशरघपतिगुनगाथा कहेकछुकसादरषगनाथा ब्रह्म
ग्यानरतमुनिविज्ञानी मोहपरमअधकारीजानी लागेकरनब्रह्मउप
देशा अजअद्वैतअगुनहृदयेसा अकलअनीहअनामअरूपा अनुभ
वगमअषंडअनूपा मनगोतीतअमलअबिनासी निर्विकारनिर्बंध
सुखराशी सोतैंताहितोहिनहिभेदा बारिबीचइवगावहिवेदा बि
बधभांतिमुनिमोहिसमझावा निर्गुनमतममहृदैनआवा पुनमैं

ह्मजोनाहंपदसीसा। सगुनउपासककहहुमुनीसा। रामभगतजलममनमी
ना। किमबिलगाइमुनीशप्रबीना। सोउपदेसकहहुकरदाया। निजनैननदि
षौरघराया। भरिलोचनबिलोकअवधेसा। तबसुनहौनिर्गुणउपदेसा। मुनि
पुनिकहीहरिकयाअनूपा। षंडसगुनमतअगुननिरूपा। तबमैनिर्गुनमति
करिदूरी। सगुननिरूपोहठकरभूरी। उतरप्रतिउतरमैकीना। मुनितनभयोक्रो
धकेचीना। सुनिप्रभबहुतअवज्ञाकीये। उपजक्रोधज्ञानहुकेहीये। अतिसंघर
षनजोकरकोई। अनलप्रगटचंदनतेहोई। ३.५ दोहा। वारबारसकोपमुनिक
रैनिरूपनज्ञान। मैअपनेमनबैठतबकरोबिबधअनुमान। ३.६ क्रोधकिद्वैत
बुधबिनुद्वैतकिबिनुअज्ञान। मायाबसपरिछिंनजडजीवकिईशसमान। ३.७ चौ
पई। कबहुकदुखसुखकरहितताके। तिहकिदरिद्रपारसमनिजाके। परद्रोहीकि
होइनिहिसंगानिसंका। कामीपुनकिरहैअकलंका। बंसकिरहद्विजअनहितकी

४६ उ॰ को॰

ने करम कि होहि स्वरूपहि चीने काहू सुमति कि षल संग जामी सुभ गति पाव कि
परत्रीय गामी भव कि परहि परमात्म बिंदक सुषी कि होहि कबहु हरि निंदक
राज कि रहै नीति बिनु जाने अघ कि रहे हरि चरित बषाने पावन जस कि पुंन बिनु हो
ई बिन अघ अजस कि पावे कोई लाभु कि कछु हरि भगत समाना जिह गावहि
श्रुति संत पुराना हानि कि जग इहि सम कछु भाई भजय न रामहि नर तन पाई
अघ की बिनु तामस कछु आना धरम कि दया सरस हरिजाना इहि बिधि अमि
त जगत मन गुनिऊ पुन पुन सगुन पछ मै रोपा तब मुनि बोल्यो बचन सकोपा
मूढ परम सिष देऊ न मानस उतर प्रतिउतर बहु आसैनस सति बचन विस्वा
स न करही बाइस इव सब ही ते डरही सठ स्वपछ तव ह्रिदय बिशाला सपद
होइ पंषी चंडाला लीन श्राप मै सीस चढाई नह कछु भय न दीनता आई ॥ ७८

दोहा तुरत भयो मै काग तब पुन मुनि पद शिर नाइ सुमरि राम रघुबंस मनि

हरषत चलो उठाइ ॥१९ उमा जे राम चरन रति बिगति काम मद क्रोध नि
ज प्रभु मय देखहि जगति किह सन करहिं न बिरोध ॥१० चौपई सुनि खगे
स नह कछु रिष दूषन उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन क्रिपा सिंध मुनि म
ति करि भोरी लीनी प्रेम परीछा मोरी मन बच क्रम मोह निज जन जाना
मुनि मति पुनि फेरी भगवाना रिष मम सहन सीलता देखी राम चरन बि
स्वास बिशेषी अति बिस्मय पुन पुन पछुताई सादर मुनि मुहि लीन बु
लाई मम परतोष बिबध बिध कीना हरषत राम मंत्र तब दीना बालक
रूप राम कर ध्याना कह्यो मोह मुनि क्रिपानिधाना सुंदर सुषद मोह अति
भावा सो प्रथम हि मुह हैं तुमहि सुनावा मुनि तह काल कछुक मोह राषा रा
म चरित मानस सब भाषा सादर मुह यह कथा सुनाई पुनि बोले मुनि गि
रा सुहाई राम चरित्र सर गुप्त सुहावा शंभु प्रसाद तात मैं पावा तव निज भक्ति
राम कर जानी ताते मैं सब कह्यो बिषानी राम भक्ति जिनके उर नाही कबहु न

तातकहियतिनपाहीं मुनमोहिविविधभांतिसमुझावा मैंसप्रेममुनिपद
शिरुनावा निजकरकमलपरसममशीशा हरषितआसिषदीनिमुनीशा
राममक्तिअविरलउरतोरे वसहिसदाप्रसादअवमोरे ३१ दोहा सदाराम
प्रियहोवतुवसभगुनअघनअमान कामरूपइछामरनज्ञानविरागनिधा
न ३२ जिहआश्रमतुमवसविपुनसुरैमरनिश्रीभगवंत व्यापहितहिंनअ
विद्याजोजनएकप्रजंत ३३ चौपई कालकर्मगुनदोषसुभाऊ कछुदुषतु
महिनव्यापहिकाऊ रामरहस्यललतविधिनाना गुपतप्रगटइतिहास
पुराना विनुश्रमतुमसमजानविसोऊ नितनवनेहरामपदहोऊ जोइ
छाकरिहोमनमाहीं हरिप्रसादकछुदुर्लभनाही सुनिमुनिआसिषसु
नुमतधीरा ब्रह्मगिराभैगगनगंभीरा एवमस्तुतववचमुनिज्ञानी एह
ममभक्तिकरममनबानी सुनिनभगिराहरषमोहिभयो प्रेममगनस
नसंशयगयो करिविनतीमुनिआयसुपाई पदसरोजपुनपुनशिरुनाई

95

हर्षिसहित एहिंआश्रमआयो प्रभुप्रसाद दुर्लभवरपायो इहांबसतु
मोहिसुनुखगईसा बीतेकल्पसातअरुबीसा करोंसदा रघुपतिगुनगाहा
सादरसुनहिंबिहंगमनाहा जबजबअवधपुरी रघुवीरा धरहिंभक्तिहि
तमनुजसरीरा तबतबजाइरामपुररहऊं सिसुलीलाविलोकिसुखलहऊं
पुनउरराषिराम सिसुरूपा निजआश्रमआऊंषगभूपा कथासकलमैंतु
म्हहिसुनाई कागदेहिजिहकारनपाई कहेउंतातसबप्रस्नतुम्हारी रा
मभक्तिमहिमाअति भारी ३४ दोहा तातयहतनुमोहिप्रियभयोराम
पदनेह निजप्रभुदरसनपायउंगयेसकलसंदेह ३५ भगतपक्षिहठि
कररहेउंदीनमहामुनिस्राप मुनिदुर्लभफलपाइउंदेषोभजनप्रता
प ३६ चौपई जेअसिभगतिजानिपरहरहीं केवलज्ञानहेतश्रमकर
हीं तेजडकामधेनुग्रहत्यागी षोजतआकफिरहिंपयलागी सुनषगे
स्यहरिभक्तिविहाई जेसुषचाहहेआनउपाई तेसठमहासिंध

४८ उ॰ कां॰

विनुतरनी पैरपारचाहहिजेडकरनी सुनुनसेउकेबचनसवानी बोले गरुडहरषमृदवानी तवप्रसादप्रभुममउरमाही शंशयशोकमोहिभ्रमनाहीं सुन्योपुनीतिरामगुनग्रामा तुलसीकृपालसोविश्रामा एकबातिप्रभुपछौनाही कहहुबुकारकृपानिधिमोही कहहिसंतमुनिवेदपुराना नहीकछुदुर्लभज्ञानसमाना सोईमुनितुमसनकहेउ गुशांई नहिआदरेउभक्तिकीन्याई ज्ञानहिभक्तिहिअंतरकेता सकलकहहुप्रभुकृपानिकेता सुनिउरगारवचनसुखमाना सादरबोलेकागसुजाना भगतिहिज्ञानहिनहिकछुभेदा उभयहरहिभवसंभवखेदा नाथमुनीशकहहिकछुअंतर सावधानसुनिसोविहंगवर ज्ञानविरागजोगविज्ञाना एसवपुरुषसुनहुहरिजाना पुरुषप्रतापप्रवलसवभाती अवलाअचलसहजजडजाती दोहा पुरुषत्यागिसकनारिहिजोवरक्तमनधीर ननुकामीविषयवसवि

राम ४८

96

मुषजोपदरघुबीर सोरठा सोऊमुनिज्ञाननिधान मृगनैनीमुषबि
धुनिरषि बिकलहोइ हरिजाननारि बिस्नमायाप्रगट ३८ चौपई इहां
नपछपातकछुराषौं वेदपुरानसंतमतिभाषौं मोहननारिनारिको
रूपा पन्नगारिएहिनीतिअनूपा मायाभक्तिसुनहुप्रभुदोऊ नारिब
रगजानेसबकोऊ पुनिरघुबीरहिभगतिपिआरी मायाषलनिरतकि
बिचारी भक्तिहिसानुकूलरघुराया तातेतेहिडरपतिअतिमाया राम
भक्तिनिरुपनिरुपाधी वसैजासुउरसदाअबाधी तिहिबिलोकमाया
सकुचाई करिनसकेकछुनिजप्रभुताई असबिचारजेमुनिबिग्यानी
जाचहिभक्तिसकलसुषषानी ३९ दोहा एहचरित्ररघुनाथकेवेग
नजानेकोइ जानैतेरघुवरकृपासपनेमोहिनहोइ ४० औरज्ञानभ
क्तिकरभेदसुनहुसुप्रवीन जोसुनहोहिरामपदप्रीतिसदाअविछीन
४१ चौपई सुनहुतातयहकथाअकहानी समुझबनैनजातिबषानी

ईस्वरअंसजीवअविनासी चेतनअमलसहजसुषरासी सोमायावसभ
योगुसांई वांध्योकीरमर्कटकीन्याई जडचेतनहिग्रंथपरगई जदि
पम्रषाछूटतकठनई तवतेजीवभयोसंसारी छूटनग्रंथनहोइसुषा
री विनाग्यानकिनाहीसुषआवा जहांतहांवहुताडुषपावा श्रुतिपुरा
नवहुकह्योउपाई छूटनअधकअधकउरझाई जीवरिदयतममो
हविशेषी ग्रंथछूटकिमपरेनदेषी असमंजोगईसजवकरई जव
हुकदाचितुसोनिरवरई सात्वकश्रद्धाधेनुसुहाई जोहरिकृपारि
दयइवस्याई जपतपमषव्रतनेमअपारा जेश्रुतिकहशुभधर्मअचारा
सोइत्रिनहारितचरैजवगाई भाववछशिसुपाइपन्हाई घोइनिव्रित
पात्रविस्वासा निर्मलमनअहीरनिजदासा पर्मधरममयपयदुहि
भाई अवठेअनलअकामवनाई तोषमरुततवछिमाजुडावै धृ
तिसमजावनिदैहिजमावै मुदतामथैविचारमथानी दमअधार

रजुसत्यसुवानी तवमथिकाढिलेहिनवनीता विमलविरागसुभगसु
पुनीता ४२ दोहा जोगअग्निकरप्रगटतवकर्मसुभाशुभलाइ बुद्धिसि
रावैज्ञानघृतममतामलजरजाइ ४३ तवविज्ञाननिरूपनीबुद्धिवि
सदघृतपाइ चित्तदधियाभरिधरैतवदृढसमतादिवनाइ ४४ ती
नअवस्थातीनिगुनविहकपासतेकाढि तूलतुरीयसवारिपुनवातीक
रैसुगाढ ४५ सोरठा जिहिविधिजलैसोदीपतेजराशविज्ञानमय जा
तहिजासुसमीपजरहिमदादिकसलभसभ ४६ चौपई सोहमस्मि
इतिविधीअखंडा दीपशिषासोईपरमप्रचंडा आत्मअनुभवसुःख
सुकासा तवभवमूलभेदभ्रमनासा प्रवलअविद्याकरपरवारा मो
हिआदितममिटैअपारा तवसोईबुद्धपाइउजियारो उरग्रहवैठग्रं
थनिरुआरी छोरनग्रंथपावजोसोई जायहजीवकृतारथहोई छो
रतग्रंथजानिखगराया विघ्नअनेककरैतवमाया रिद्धिसिद्धिप्रेरैवहु

५० नाई। बुद्धहि लोन दिषावै आई। कलवलछलि करि जाहि समीपा
उ अचल वात बुझावहि दीपा होइ बुद्ध जो परम सयानी तितन तनि चि
को तव न अनहित जानी जो तो विघन बुद्ध नहीं वाधी तौ वहोर सुर कर
हि उपाधी इंद्री द्वार झरोषे नाना तह तह सुर बैठे कर थाना आवति
देषहि विषय वयारी तिहि हठि देह कपाट उघारी जव सो प्रभंजन उर
ग्रह जाई। तब ही दीप विज्ञान बुझाई। ग्रंथन छूटि मिटा सो प्रकासा बु
द्धि विकल भय विषय वतासा इंद्री सुरनि न ज्ञान सुहाई। विषय भोग
पर प्रीति सदाई। विषय समीर बुद्ध कृत भोरी तिहि विधि दीप को वार
होरी ४७ दोहा तव फिर जीव विविध विध पावि संसृत कलेस हरिमा
या अति दुस्तर तरे न जाइ विहगेश ४८ कहत कठिन समुझत कठिन सा
धन कठिन ववेक होय घुनाक्षर न्याय जो पुनि प्रत्यूह अनेक ४९ चौ राम
पई ज्ञान पंथ कृपा के धारा परत षगेश होइ नहीं वारा जो निर्विघ्न पी ५०

तिनिर्वहै सोकैवल्यपरमपदलहै अतिदुर्लभकैवल्यपरमपद संतपुरा
ननिगमआगमवद राममजतसोइमुक्तिगुसांई अनइछितआवैवरिआई
जिमिथलविनुजलरहिनसकाई कोटिभांतकोइकरैउपाई तथामोक्ष
सुषसुनुषगराई रहिनसकैहरिभक्तिविहाई असविचारहरिभक्तसि
याने मुक्तिनिरादरभक्तिलुभाने भक्तिकरतविनुयतनप्रयासा संसृतम
लअविद्यानासा भोजनुकरियत्रिप्तहितलागी जिमिअनपचवैजठरागी
असिहरिभगतिसुगमसुषदाई कोअसमूढनजाहिसुहाई ५ दोहा
सेवकसेव्यभावविनुभवनतरियउरगारि भजहुरामपदपंकजअससि
द्धांतविचार ५। जोचेतनकुंजडकरैजडहिकरैचैतन्य अससमर्थरघु
नायकहिभजहिजीवतेधन्य ५२ चौपई कह्योज्ञानसिद्धांतबुझाई सु

५१ ॐ को॰

नहु भक्तिमनकी प्रभुताई॥ राम भक्ति चिंतामनि सुंदर॥ वसैगरुड़ जाके उरअं
तर॥ परमप्रकाशरूपदिनराती॥ नहिकछुचहियदियाघृतवाती॥ मोहदरिद्र
निकटनहिआवा॥ लोभवातनहिताहिबुझावा॥ प्रवलअविद्यातममिटिजाई॥
हारहिसकलसलभसमुदाई॥ खलकामादिनिकटनहिजाही॥ वसैभक्तिजाकेउरमा
ही॥ गरलसुधासमअरिहितहोई॥ तिहिमनिविनुसुखपावनकोई॥ व्यापहि
मानसरोगनभारी॥ जिनकेवससबजीवदुखारी॥ रामभक्तिमनिउरवसिजा॥
के॥ दुखलवलेसनसपनेहताके॥ चतुरशिरोमनितेईजगमाही॥ जेमनिला
गिसुजतनकरही॥ सोमनिजदपिप्रगटजगअहही॥ रामकृपाविनुनहिको
उलहई॥ सुगमउपायपायवेकेरे॥ नरहतभाग्यदेहभटभेरे॥ पावनपर्वत
वेदपुराना॥ रामकथारुचिराकरनाना॥ मरमीसज्जनसुमतिकुदारी॥ ग्यान
वैरागनैनउरगारी॥ भावसहितखोजैजोप्रानी॥ पावभक्तिमनिसवसुखखा
नी॥ मोरेमनप्रभुअसविश्वासा॥ रामतेअधिकरामकेदासा॥ रामसिंधु

राम ५१

घनसज्जनधीरा चंदनतरूहरिसंतसमीरा सवकरफलहरिभक्तिसुहा
ई भ्रतिसेहितसरमुनिशिवगाई असविचारजोकरसतसंगा रामभ
क्तितिहिसुलभविहंगा ५३ दोहा ब्रह्मपयोनिधिमंदिरग्यानसंतसु
रआहि कथासुधामथिकाढहिभक्तिमधुरताजाहि विरतचरमअसि
ग्यानमदलोभमोहरिपुमारि जेपाईसोहरिभक्तिदेषुषगेशविचार ५४
चौपई पुनसप्रेमवोलोषगराऊ जऊकृपालमोहउपरभाऊ नाथमो
हिनिजसेवकजानी सप्तप्रश्नमोहिकहोवषानी प्रथमहिकहोनाथम
तिधीरा सवतेदुर्लभकवनसरीरा वडदुषकवनकवनसुषभारी
सोईसंक्षेपहिकहहुविचारी संतअसंतमरमतुमजानहु तिनकरस
हजसुभाववषानहु कवनपुन्यश्रुतिवेदविशाला कहहुपरमअघक
वनकराला मानसरोगकहहुसमुझाई तुमसर्वज्ञकृपाअधिकाई
तातसुनहुसादरअतिप्रीती मैंसंक्षेपकहोयेहनीती नरतनसमन
हिकवनहिदेही जीवचराचरजाचतजेही नर्कस्वर्गअपवर्गनिश्रेणी

५२ उ॰ का॰

ग्यानविरागभक्तिसुभदेनी सोतनुधरिहरिभजहिनजेनर होहिवि

षैरतिमंदमंदतर कांचकिरचवदलेतेलेहीं करतेठारपरस

मनिदेहीं नहींदरिद्रसमदुखजगमाहीं संतमिलनसमसुखकछु

नाहीं परउपकारवचनमनकाया संतसहिजसुभाउखगराया सं

तसहिहिदुखपरहितलागी परदुखहेतुअसंतअभागी भूर्जतरू

सुमसमसंतकृपाला भूर्जतरूसमसंतकृपाला परहितिनित

सहहविपतिविशाला सनइवषलपरबंधनकरई षालकढाइवि

पतिसहिमरई षलविनुस्वारथपरअपकारी अहिमूषकइवसुन

उरगारी परसंपदाविनासिनसाहीं जिमशशिहतिहिमउपलविला

हीं दुष्टउदयजगआरतिहेतू यथाप्रसिद्धअधमग्रहकेतू संतउ

दयसंततसुषकारी विश्वसुषदजिमइंदुतमारी परमधर्मश्रुतिवि

दितिअहिंसा परनिंदासमअघनषगीशा हरिगुरुनिंदकदादुरू

होई जन्मसहस्रपावितनुसोई द्विजनिंदकवहुनरकभोगिकर

रवे नी
स स्प

राम

जगजनमेवायसशरीरधर सुरश्रुतिनिंदकजेअभिमानी रौरवनरकप
रतेप्रानी होहिंउलूकसंतनिंदारति मोहिनिसाप्रियग्यानभानुगति सबके
निंदाजेजडकरही तेचमगादुरहोइअवतरही सुनहुतातअबमानसरोगा
जिनतेंदुखपावहिंसबलोगा मोहिसकलब्याधिनकरमूला तिनतेंपुनिउप
जहिंबहुसूला कामवातकफलोभअपारा क्रोधपित्तनितछातीजारा प्री
तिकरहिंजऊतीनउभाई उपजैसंन्यपातदुखदाई विषयमनोरथदुर्ग
मनाना तेसबसूलनामकोजाना ममतादादुकंडुइरषाई हरषविषा
दगहुरबहुताई परसुषदेखिजरनिसोइछाई कुष्टदुष्टतामनकुटलाई
अहंकारअतिदुषदडमरूआ दंभकपटमदमाननेहरूआ त्रिष्नाउदर
बृद्धिअतिभारी त्रिविधईषनातरुनतिजारी जुगविधिज्वरमतसर
अविवेका कहलगिकहहुकुरोगअनेका ५६ दोहा एकव्याधिवशनर
मरहिंएअसाधिबहुव्याधि पीडहिंसंततजीवकहुंसोकिमिलहिंस
माधि नेमधर्मआचारतपग्यानजग्यजपदान भेषजपुनिकोटिननहीन

हिरोगजाहिंहरिज्ञान १२ चौपई यहबिधिसकलजीवजगरोगी सो
कहरषभयप्रीतिबियोगी ॥ मानसरोगकछुकमैंगाए हैंहिसबकेलषिबि
रलेन्हपाए जांनेतेंछीजहिंकछुपापी नासनपावहिंजनपरितापी बिषय
कुपथ्यपाय अंकूरे मुनिहुहृदयकानरबापूरे रामकृपानासहिंसबरोगा
जौएहिभांतिबनैसंजोगा सदगुरबैदबचनबिस्वासा संजमयहनबि
षयकैआसा रघुपतिभक्तिसजीवनमूरी अनूपानश्रद्धामतिपूरी एहि
बिधिभलेएहिरोगनसांही नाहितौजतनकोटिनहिजाहीं जानियतबम
नबिरुजगोसाईं जबउरबलबिरागअधिकाई सुमतिछुधाबाढैनि
तनई बिषयआसदुर्बलतागई बिमलज्ञानजलजबसोनहाई तबर
हिरामभक्तिउरछाई सिवअजसुकसनकादिकनारद जेमुनिब्रह्मबि
चारबिसारद सबकरमतषगनायकएहा करियरामपदपंकजनेहा श्रु
तिपुरानसबग्रंथकहाहीं रघुपतिभक्तिबिनासुषनाहीं कमठपीठजामहिं
बरुबारा बंध्यासुतबरुकाहुहिमारा फूलहिंनभबरुबहुबिधिफूला जौ

वनलहसुषहरिप्रतिकूला तसाजाइवरुमृगजलपाना वरुजामहिसस
सीससविषाना अंधकारवरुरविहिनसावै रामविमुषनजीवसुषपावै हि
मतेअनलप्रगटवरुहोई विमुषरामसुषपावनकोई दोहा वारिमथेघृ
तहोइवरुसिकताते वरुतेल विनुहरिभजननभवतरहि यहसिद्धांतअ
पेल मसकहिकरैविरंचप्रभुअजहिमसकतेंहीन असविचारतजसंश
यरामहिभजहिप्रवीन छंद विनिश्चितंवदामिते नअन्यथावचांसिमे ह
रिंनराभजंतिजे दुस्तरंतरंतते १२२ चोपई कहेउतातहरिचरितअनूपा जे
हतेतरियअमितभवकूपा स्रुतिसिद्धांतएहिउरगारी रामभजियसवकाज
विसारी प्रभुरघपतितजिसेईअकाही मोहिसेसठपरममताही तुमवि
ज्ञानरूपनहिमोहा नाथकीन्हमोपरअतिछोहा पूछेहुरामकथाअतिपाव
नि सुकसनकादिकशंभुमनभावनि सतसंगतदुर्लभसंसारा निमषदं
डभरिएकौवारा देखुगरुडनिजहृदयविचारी मैरघवीरभजनअधिका
री सकुनाधमसवभांतिअपावन प्रभुमोहिकीन्हविदतजगपावन दोहा
आजुधंन्यमैधंन्यअतिजपतपसवविधिहीन॥ निजजनजानिराममोहि

संतसमागमदीन नाथजथामतिन्नाषयोराषेकुल्हिकाकुगोर चरितसिंधरघु
नायककरथाहकिपावेकोइ १२३ चौपई सुमिरिरामकेगुनगननाना पुन
पुनहरषषगसुंडसुजाना महिमानिगमनेतिकरगाई अतुलतवलप्रतापप्र
भुताई शिवअजपूज्यचरनरघराई मोपरकृपापरममृदुलाई असस्वभा
वकहुंसुनेउकनदेषौं केहिषगेशरघपतिसमलेषौं साधकसिद्धविमुक्तउ
दासी कविकोविदकृतज्ञसंन्यासी जोगीस्वरसुरतापसज्ञानी धर्मनिरत
पंडतविज्ञानी तरहिनविनसहिएममस्वामी रामनमामनमामनमामी
सरनगयेमोसेअघरासी होहिसिद्धनमामअविनासी दोहा जासुनामभव
भेषजहरनघोरत्रयसूल सोकृपालमोहितोहिपररहोसदाअनुकूल ए
निभुसंडकेवचनसुभदेषिरामपदनेह बोलेउप्रेमसहितगिरागरुडविगत
संदेह १२४ चौपई मैकृतकृत्यभयोतववानी सुनिरघुवीरभक्तिरससा
नी रामचरननौतनरतिभाई मायाजनितविपतिसवगाई मोहिजलधि
वोहतनुमभये मोकोनाथविविधसुषदये मोपेहोइनप्रतउपकारा
वंदौतवपदवारहिवारा पूरनकामरामअनुरागी तुमसमतातनकोउव

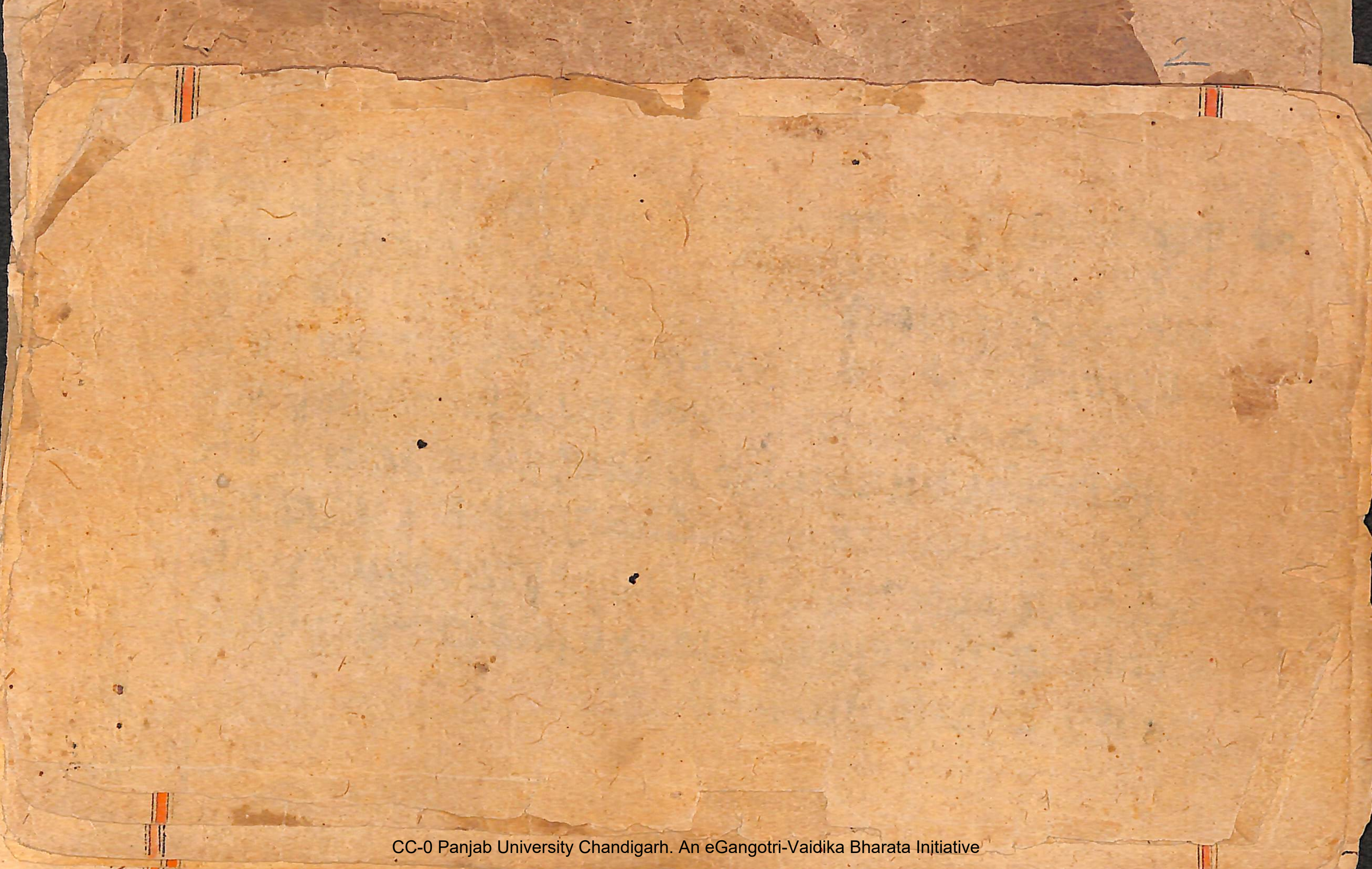
उभागी संतविटपसरितगिरधरिनी परहितहेतुसबनकीकर
नी संतहृदयनवनीतसमाना कहकविनपैकहैनजाना निजपरताप
द्रवैनवनीता परदुखद्रवैसुसंतपुनीता जीवजनमसफलममभइयो
मनकाप्रसादसंसयसकलगइयो जानेहुसदामोहिनिजकिंकर पुनपुनउमा
कहैविहंगवर ६९ दोहा तासुचरनसिरुनाइकरिप्रेमसहितमति
धीर गयोगरुडवैकुंठतवहिरदयराषिरघुवीर ७० गिरजासंतसमाग
मसमनलाभकछुआन विनुहरिक्रिपानहोइसोगावहिवेदपुरान ७१ चौ
पई कहेउपरमपुनीतइतिहासा सुनतश्रवनछूटेभवपासा प्रनतक
ल्पतरुकरुनापुंज उपजैप्रीतरामकेपदकंज मनक्रमवचनजनितअ
घजाई सुनहिजेकथाश्रवनमनलाई तीर्थअटनसाधनसमुदाई
जोगवैरागग्याननिपुनाई नानाकर्मधर्मव्रतदाना संजमसमदम
जपतपमषनाना भूतदयाद्विजगुरसेवकाई विद्याविनयविवेक
वढाई जहांलगिसाधनवेदवषानी सबकरफलहरिभक्तिहि

जानी सोरघनाथभक्तिस्रुतिगाई रामकृपालाहूंएकपाई ७२ दोहा
मुनिदुर्लभहरिभक्तिनरपावहिंविनुहिप्रयास जेयहकथानिरंतरि
सुनहिंमानविश्वास ७३ चौपई सोईसर्वज्ञगुनीसोईज्ञाता सोई
महिमंडनपंडितदाता धर्मपरायणसोईकुलत्राता रामचरनजाकेचर
नेजाकरमनुराता नीतिनिपुनसोईपरमसयाना स्रुतिसिद्धांतनी
कतिहिंजाना सोईकविकोविदसोईरनधीरा जोछलछाडभजैर
घुवीरा धंन्यदेसजोजहांसुरसरी धंन्यनारिपतिव्रतअनुसरी धं
न्यसोनृपनीतिजोकरई धंन्यसोद्विजनिजधर्मनटरई सोधनधन्य
प्रथमगतिजाकी धंन्यपुण्यरतिमतिसोईवाकी धंन्यसोघरीसोईज
वसतसंगा धंन्यजन्मद्विजभक्तिअभंगा ७४ दोहा सोकुलधंन्य
उमासुनहुजगतपूज्यसुपुनीति श्रीरघवीरपरायनजिहिनरऊप
जपुनीत ७५ चौपई मतिअनुरूपकथामेंभाषी जद्यपिप्रथमगुप्त
करिराषी तवमनिप्रीतिदेखिअधकाई तोमैरघपतिकथासुनाई

एहिनहिकहियसठहिहठसीलहि जोमनुलाइनसुनिहरिलीलहि कहि
यनलोभहिक्रोधहिकामहि जोनभजेसचराचरस्वामिहि द्विजद्रोहहिनसु
नाइयैकबहूं सुरपतिसरसहोइनपजबहूं रामकथाकेतेइअधिकारीजि
नीत नकेसतसंगतअतिप्यारी गुरपदप्रीतिरतिजेई द्विजसेवकअधिकारीतेई
ताकहुएहिविशेषसुखदाई जाहिप्रानप्रियश्रीरघुराई दोहा रामचर
नरतिजोचहैअथवापदनिर्वान भावसहितसोएहिकथाकरैश्रवनपुटपा
न ७७ चौपई रामकथागिरजामैवरनी कलिमलिसमनिमनोमलहर
नी संसृतरोगसजीवनमूरी रामकथागावहिश्रुतिसूरी एहुमहुरुचि
रसपतसोपाना रघुपतिभक्तिकेरपंथाना अतिहरिकृपाजाहिपरिहोई
पाऊदेययहमारगसोई मनकामनासिद्धिनरपावा जोयहिकथा
कपटतजिगावा कहहिसुनहिअनुमोदनकरही तेगोपदइवभवनि
धितरही सुनिसभकथाहिदैअतिभाई गिरजाबोलीगिरासुहाई नाथ।

कोपा मम गत संदेहा रामचरनउपज्योअतिनेहा ७८ दोहा मैकृतकृत्यभयउं
तवप्रसादविस्वेस उपजीराममगतिदृढ़बीतेसकलकलेस ७९ यह
सुभसंभुउमासंवादा सुखसंपादनसमनविषादा भवभंजनगंजनसंदेहा ज
नरंजनसज्जनप्रीयाएहा रामउपासकजेजगमाहीं एहसमप्रियतिनकेकछुना
हीं रघुपतिकृपायथामतिगावा मैयहपावनचरितसुहावा एहकलिकालनसा
धनदूजा जोगजग्यजपतपव्रतपूजा रामहिसुमरियगाईयरामहि संततसुनी
यरामगुनग्रामहि जासुपतितपावनबडनामा गावहिकविस्रुतिसंतपुराना ता
हिभजहिमनतजिकुटिलाई रामभजेगतिकेहिनहिपाई ८० छंद पाईनकि
हिगतिपतितपावनरामभजिसुनुसठमना गनिकाअजामिलब्याधगीधगजादि
खलतारेघना आभीरजमनकिरातखसस्वपचादिअतिअघरूपजे कहिनामबा
रकतेपिपावनहोहिराममनमामिते ८१ छंद रघुवंसभूषनचरितयहनरकहह
िसुनहिजेगावहि कलिमलमनोमलधोइविनुश्रमरामधामसिधावहि संतपंच
चौपाइमनोहरजानिजोनरउरधरे दारुनअविद्यापंचजनितविकारश्रीरघुप

तिहरे ८२ सुंदरसुजांनकृपानिधानअनाथपरिकरिप्रीतिजो सोएकरामअकारनहित निर्वांणपदसमआनको जाकीकृपालवलेसतेमतिमंदतुलसीदासहूं पायोपरमबिश्रामरामसमानप्रभुनाहीकहूं ८३ दोहा मोसमदीननदीनहित तुमसमानरघुवीर असबिचाररघुवंसमनिहरहुविषमभवभीर ८४ कामिहिनारि पियारिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम तिमरघुनाथनिरंतरंप्रियलागहुमोहिराम ८५ श्लोक यत्पूर्वंप्रभुणाकृतंसुकविनाश्रीशंभुनादुर्गमं श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशंप्राप्त्यैतुरामायणं मत्वातद्रघुनाथनामनिरतंस्वांतस्तमःशांतये भाषाबंधमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसं ८६ पुण्यंपापहरंसदाशिवकरंविज्ञानभक्तिप्रदं मायामोहमलापहंसुविमलंप्रेमांबुपूरंशुभं श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहंतिये तेसंसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंतिनोमानवः १८ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविमलविज्ञानसंपादनेनामसप्तसोपानःसमाप्तः॥ संवत् १८।६०॥



कि० श्री १

१

॥०॥ श्रीजानकीवल्लभो जयति ॥ कुंदेंदीवरसुंदरावतिबलौ विज्ञान
धामावुभौ शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृंदप्रियौ ॥ मायामा
नुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्ति
प्रदौ तौ हि नः ॥१॥ ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं श्रीमच्छं
भुमुखेंदुसुंदरवरे संशोभितं सर्वदा ॥ संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजा
नकीजीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिबंति सततं श्रीरामनामामृतं ॥२॥ सोरठा
मुक्तिजन्ममहि जानि ज्ञानखानि अघहानिकर ॥ जहँ बस शंभु भवानि सो कासी
सेइय कस न ॥ जरत सकल सुरवृंद विषम गरल जेहि पान किय ॥ तेहि न भजसि
मतिमंद को कृपाल शंकर सरस ॥ दोहा ॥ आगे चले बहुरि रघुराया ॥ रिष्यमूक
पर्वत नियराया ॥ तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा ॥ आवत देखि अतुल बलसींवा

राम १

आतिसभीतकहसुनुहनुमाना॥ पुरुषजुगुलबलरूपनिधाना॥ धरिबटुरूप
देखुतैंजाई॥ कहेसुजानिजियसैनबुझाई॥ पठयेबालिहोइमनमैला॥ भागौंतुर
ततजौंयहशैला॥ विप्ररूपधरिकपितहंगयऊ॥ नाइमाथपूछतअसभयऊ
कोतुम्हस्यामलगौरशरीरा॥ छत्रीरूपफिरहुबनबीरा॥ कठिनभूमिकोमल
पदगामी॥ कवनहेतबनबिचरहुस्वामी॥ मृदुलमनोहरसुंदरगाता॥ सहत
दुसहबनआतपबाता॥ कीतुममतीनिदेवमहकोऊ॥ नरनारायणकीतुमदो
ऊ॥ दोहा॥ जगकारनतारनभवभंजनधरनीभार॥ कीतुमअखिलभुवन
पतिलीन्हमनुजअवतार॥१॥ चौपाई॥ मुनिबोलेरघुबंसकुमारा॥ बिधि
कालिबाकोमेटनहारा॥ कोशलेशदशरथकेजाये॥ हमपितुबचनमानि
बनआये॥ रामनामलछिमनदोउभाई॥ संगनारिसुकुमारिसोहाई॥ सत

कि०
श्री
२

3

हरी निसिचर वैदेही॥ विप्र फिरत हम षोजत तेही॥ आपन चरित कहा हम गाई॥
विप्र कहहु निज कथा बुझाई॥ प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना॥ सो सुख उमा जा
इ नहि बरना॥ पुलकित तन मुख आव न बचना॥ देषत रुचिर वेष कै रचना॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्ही॥ हरष हृदय निज नाथहि चीन्ही॥ मोर न्याउ मै
पूछौ साई॥ तुम्ह पूछहु नर की नाई॥ तव माया वस फिरौ भुलाना॥ ता ते मै
नहि प्रभु पहिचाना॥ दोहा॥ एक मै मंद मोह वस कुटिल हृदय अग्यान॥ पुनि प्रभु
मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान॥ २॥ चौपाई॥ जदपि नाथ बहु अवगुन मो
रे॥ सेवक प्रभुहि परो जनि भोरे॥ नाथ जीव तव माया मोहा॥ सो निस्तरै तुम्हारी
छोहा॥ ता पर मै रघुबीर दोहाई॥ जानौ नहि कछु भजन उपाई॥ सेवक सुत पति

राम
२

ता पर मैं रघुबीर दोहाई॥ जानौं नहि कछु भजन उपाई॥ सेवक सुत पति मातु भरोसे
रहैं असोच बनै प्रभु पोसे॥ अस कहि परौ चरन अकुलाई॥ निज तनु प्रगटि प्रीति
उर छाई॥ तब रघुपति उठाइ उर लावा॥ निज लोचन जल सींचि जुडावा॥ सुनु क
पि जनि मानसि जिय ऊना॥ तै मम प्रिय लछिमन ते दूना॥ समदरसी मोहि क
ह सब कोउ॥ सेवक प्रिय अनन्य गति सोउ॥ दोहा॥ सो अनन्य जाके असि मति न
टरै हनुमंत॥ मै सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत॥३॥ चौपाई॥ देखि पवन
सुत पति अनुकूला॥ हृदय हरष बीती सब सूला॥ नाथ सैल पर कपिपति रहई
सो सुग्रीव दास तव अहई॥ तेहि सो नाथ मयत्री कीजै॥ दीन जानि तेहि अभय क
रीजै॥ सो सीता कर खोज कराइहि॥ जहं तहं मरकट कोटि पठाइहि॥ एहि बिधि सकल
कथा समुझाई॥ लिए दोउ जन पीठि चढाई॥ जब सुग्रीव राम कहं देखा॥ अतिसय

ता

जन्मधन्यकैलेषा॥सादरमिलेउनाइपदमाथा॥भेंटेउअनुजसहितरघुनाथा॥
कपिकरमनविचारएहिरीती॥करिहौंहविधिमोसनयेप्रीती॥दोहा॥तवहनुमंतउ
भयदिसिकहीसवकथासुनाइ॥पावकसाषीदेइकरिजोरीप्रीतिदृढाइ॥४॥चौ॥
कीन्हीप्रीतिकछुवीचनराषा॥लछिमनरामचरितसवभाषा॥कहसुग्रीवन
यनभरिवारी॥मिलिहिनाथमिथिलेशकुमारी॥मंत्रिनसहितइहांएकवा
रा॥वैठरहेउमैंकरतविचारा॥गगनपंथदेषीमैंजाता॥परवसपरीवहुतवि
लपाता॥रामरामहारामपुकारी॥हमहिदेषिदीन्हेउपटडारी॥मागारामतुर
ततिनदीन्हा॥पटउरलाइशोचअतिकीन्हा॥कहसुग्रीवसुनहुरघुवीरा॥तज
हुशोचमनआनहुधीरा॥सवप्रकारकरिहौंसेवकाई॥जेहिविधिमिलिहिजा
नकीआई॥दोहा॥सषावचनसुनिहरषेकृपासिंधुवलसींव॥कारनकवनवसहुवन

वसहुवनमोहिकहहुसुग्रीव॥५॥चौपई॥नाथवालिअरुमैंद्वौभाई॥प्रीतिरहीकु
छुवरनिनजाई॥मयसुतमायावीतेहिनाऊ॥आयासोप्रभुहमरेगाऊ॥अर्धरा
तिपुरद्वारपुकारा॥वालिरिपुवलसहैनपारा॥धावावालिदेषिसोभागा॥मैंपु
निगएउंवंधुसंगलागा॥गिरिवरगुहापैठसोजाई॥तववालीमोहिकहावुझाई॥
परषेसुमोहिएकपषवारा॥नहिंआवौंतौजानेसुमारा॥मासदिवसतहरहेउ
षरारी॥निसरीरुधिरधारतहभारी॥वालिहतेसिमोहिमारिहिआई॥सिला
देइतहचलेउपराई॥मंत्रिनपुरदेषाविनुसाईं॥दीन्हेउमोहिराजवरिआईं॥वा
लीताहिमारिगृहआवा॥देषिमोहिजियभेदवढावा॥रिपुसममोहिमारिसिअ
तिभारी॥हरिलीन्हिसिसर्वसुअरुनारी॥ताकेभयरघुवीरकृपाला॥सकलभु
वनमैंफिरेउवेहाला॥इहांश्रापवसआवतनाहीं॥तदपिसभीतरहोंमनमाहीं

मुनिसेवकदुखदीनदयाला॥ फरकिउठीद्वैभुजाविशाला॥ दोहा॥ सुनुसुग्रीवमा
रिहौंवालिहिएकहिंवान॥ ब्रह्मरुद्रशरणागतगएँनउवरहिंप्रान॥६॥ चौपाई॥ जेन
मित्रदुखहोहिंदुखारी॥ तिनहिविलोकतपातकभारी॥ निजदुखगिरिसमरजक
रिजाना॥ मित्रकदुखरजमेरुसमाना॥ जिनकेअसिमतिसहजनआई॥ तेसठ
हठिकतकरतमिताई॥ कुपंथनेवारिसुपंथचलावा॥ गुनप्रगटैअवगुनहिदुरावा॥
देतलेतमनसंकनधरई॥ वलअनुमानसदाहितकरई॥ विपतिकालकरसत
गुननेहा॥ श्रुतिकहैसंतमित्रगुनएहा॥ आगेकहमृदुवचनवनाई॥ पाछेअ
नहितमनकुटिलाई॥ जाकरचितअहिगतिसमभाई॥ असकुमित्रपरिहरेभ
लाई॥ दोहा॥ मित्रमित्रसनप्रीतिकरिहृदयआनमुखआन॥ जाकेमनवचप्रेम
यहदुरेदुराएजान॥७॥ चौपाई॥ सेवकसठनृपकृपिनकुनारी॥ कपटीमित्रसूल

सम्मचारी॥सषासोचत्यागहुबलमोरे॥सबबिधिघटबकाजमैतोरे॥कहसु
ग्रीवसुनहुरघुबीरा॥बालिमहाबलअतिरनधीरा॥दुंदुभिअस्थिताखदेषराए
बिनप्रयासरघुनाथढहाए॥देषिअमितबलबाढीप्रीती॥बालिबधबइन्हभै
परतीती॥बारबारनावैपदसीसा॥प्रभुहिजानिमनहरषकपीसा॥उपजाग्या
नबचनतबबोला॥नाथकृपामनभएउअलोला॥सुखसंपतिपरिवारबडा
ई॥सबपरिहरिकरिहौसेवकाई॥एसबरामभक्तिकेबाधक॥कहहिसंततव
पदअवराधक॥शत्रुमित्रसुखदुखजगमाही॥मायाकृतपरमारथनाही
बालिपरमहितजासुप्रसादा॥मिलेहुरामतुमसमनबिषादा॥सपनेजेहि
सनहोइलराई॥जागेसमुझतमनसकुचाई॥अबप्रभुकृपाकरहुएहिभाती
सबतजिभजनकरौदिनराती॥सुनिबिरागसंजुतकपिबानी॥बोलेबिहसिराम

श्री ५

रामधनुपानी॥ जोकछुकहेहुसत्यसबसोई॥ सषाबचनममम्रषानहोई॥
नटमर्कटइवसबहिनचावत॥ रामषगेसबेदअसगावत॥ लैसुग्रीवसंगरघु
नाथा॥ चलेचापसायकगहिहाथा॥ तबरघुपतिसुग्रीवपठावा॥ गरजिसि
जाइनिकटबलपावा॥ सुनतबालिक्रोधातुरधावा॥ गहिकरचरननारिसमु
झावा॥ सुनुपतिजिनहिमिलेसुग्रीवा॥ तेद्वौबंधुप्रतुलबलसींवा॥ कोशले
शसुतलछिमनरामा॥ कालहुजीतिसकहिंसंग्रामा॥ सोरघुबीरहहुपमह
ग्यानहु॥ ममनाछाडिकहामममानहु॥ दोहा॥ कहाबालिसुनुभीरुप्रियसमद
रसीरघुनाथ॥ जोकदाचिमोहिमारिहैतौमैहोवसनाथ॥ ८॥ चौपाई॥ असकहि
चलामहाअभिमानी॥ त्रनसमानसुग्रीवहिजानी॥ भिरेउभयबालीअति
तर्ज्जा॥ मुठिकामारिमहाधुनिगर्जा॥ तबसुग्रीवबिकलहोइभागा॥ मुष्टिप्र

हारबज्रसमलागा॥मैंजोकहारघुबीरकृपाला॥बंधुनहोइमोरयहकाला॥ए
करूपतुमभ्राताद्दोउ॥तेहिभ्रमतेंमारेउनहिंसोउ॥करपरसासुग्रीवशरीरा
तनभाकुलिसगइसबपीरा॥मेलीकंठसुमनकैमाला॥पठवापुनिबलदेइबि
शाला॥पुनिनानाबिधिभईलराई॥बिटपवोटदेषहिंरघुराई॥दोहा॥बहुछल
बलसुग्रीवकरिहियहारिभयमानि॥मारावालिहिरामतबहृदयमाझस
रतानि॥१॥चौपई॥पराबिकलमहिसरकेलागे॥पुनिउठिबैठदेषिप्रभुआगे
स्यामगातशिरजटाबनाए॥अरुननयनशरचापचढाए॥पुनिपुनिचित
यचरनचितदीन्हा॥सुफलजनममानाप्रभुचीन्हा॥हृदयप्रीतिमुखबच
नकठोरा॥बोलाचितयरामकीवोरा॥धर्महेतुअवतरेहुगोसाई॥मारेहुमोहि
ब्याधकिनाई॥अनुजबधूभगिनीसुतनारी॥सुनुसठकन्यासमएचारी॥इन

सुनुसठहठवसकिहेकुकर्मा पारिहरिलोकवेदकुलधर्मा १

कि०
श्री
६

हि कुदिष्टि बिलोकै जोई॥ ताहि बधे कछु पाप न होई॥ मूढ तोहि अतिसय अभि
माना॥ नारिसिषावन करसि न काना॥ मम भुजबल आश्रित तेहि जानी॥
मारा चहसि अधम अभिमानी॥ दो० सुनहु राम स्वामी सन चल न चातु
री मोरि॥ प्रभु अजहूं मे पापी अंत काल गति तोरि॥ १०॥ चौ० सुनत राम अति
कोमल बानी॥ बालि सीस परसा निज पानी॥ अचल करौं तन राषहु प्राना॥
बालि कहा सुनु कृपा निधाना॥ जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं॥ अंत राम कहि
आवत नाहीं॥ जासु नाम बल शंकर कासी॥ देत सबहि सम गति अबिनासी॥
मम लोचन गोचर सोई आवा॥ बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा॥ छं०॥ सो
नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं॥ जिति पवन मन गोनि
रस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं॥ मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कै

राम
६

सोराखुशरीरही॥ असकौनसठहठकाटिसुरतरुवारिकरीहवबूरही॥ अवना
थकरिकरुनाबिलोकहुदेहुजोवरमागऊं॥ जेहिंजोनिजनमौंकरमवसतहं
रामपदअनुरागऊं॥ यहतनयममसमबिनयबलकल्यानप्रदप्रभुलीजिऐ
गहिवांहसुरनरनाहआपनदासअंगदकीजिऐ॥ दोहा॥ रामचरनदृढप्रीतिक
रिबालिकीन्हतनत्याग॥ सुमनमालजिमिकंठतेगिरतनजानीनाग॥ ११
चौपाई॥ रामवालिनिजधामपठावा॥ नगरलोगसबब्याकुलधावा॥ नाना
विधिविलापकरतारा॥ छूटेकेशनदेहसम्हारा॥ मैंहमहिवहुतसमुझावा॥ पीत
कालबिवसकछुमनहिनआवा॥ अंगदकहकछुकहेनपारहु॥ वीचहिसुरपु
रमानपठारहु॥ ताराबिकलदेखिरघुराया॥ दीन्हज्ञानहरिलीन्हीमाया॥ छि
तिजलपावकगगनसमीरा॥ पंचरचितअतिअधमशरीरा॥ प्रगटसोतनतुव

कि॰
श्री
७

वआगे सोवा॥ जीव नित्य तुम केहि लगि रोवा॥ उपजा ग्यान चरन तब लागी॥ ली
न्हेसि परम भक्ति वर मागी॥ उमा दारु जोषित की नाई॥ सबहि नचावत राम गो
साई॥ तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा॥ मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा॥ राम कहा
अनुजहि समुझाई॥ राज देहु सुग्रीवहि जाई॥ रघुपति चरन नाइ कै माथा॥ चले
सकल प्रेरित रघुनाथा॥ दोहा॥ लछिमन तुरत बोलाए पुरजन विप्र समाज॥
राज दीन्ह सुग्रीव कह अंगद कह जुवराज॥१२॥ चौ॥ उमा राम सम हित जग
माही॥ गुर पितु मातु बंधु प्रभु नाही॥ सुर नर मुनि सब कै यह रीती॥ स्वारथ
लागि करहि सब प्रीती॥ बालि त्रास व्याकुल दिन राती॥ तन बहु ब्रन चिंता ज
र छाती॥ सो सुग्रीव कीन्ह कपिराउ॥ अति कृपाल रघुवीर सुभाउ॥ पुनि सुग्री
वहि लीन्ह बोलाई॥ बहु प्रकार नृपनीति सिखाई॥ कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा॥

राम
७

पुरनजाउंदशचारिवरीशा॥गतग्रीषमवरषारितुआई॥रहिहौनिकटशैल
परछाई॥ अंगदसहितकरहुतुमराजू॥संततहृदयधरेहुममकाजू॥जवसुग्री
वभवनफिरिआए॥रामप्रवर्षनगिरिपरछाए॥दोहा॥प्रथमहिदेवन्हगिरि
गुहाराखीरुचिरवनाइ॥रामकृपानिधिकछुकदिनवासकरहिगेआइ॥१२
चौपाई॥सुंदरवनकुसुमितअतिशोभा॥गुंजतमधुपनिकरमधुलोभा
कंदमूलफलपत्रसोहाये॥भएवहुतजवतेप्रभुआए॥देषिमनोहरशैल
अनूपा॥रहेतहांअनुजसहितसुरभूपा॥मधुकरषगमृगतनधरिदेवा॥
करहिसिद्धमुनिप्रभुकैसेवा॥मंगलरूपभयोवनतवते॥कीन्हनेवासर
मापतिजवते॥फटिकसिलाअतिसुभ्रसोहाई॥सुखआसीनत
हांदोउभाई॥कहतअनुजसनकथाअनेका॥भक्तिविरतिनृपनीतिविवेका

कि०

श्री ९

15

वरषाकालमेघनभछाये॥ गरजतलागतपरमसोहाये॥ दो॥ लछिमनदेषु
मोरगननाचतवारिदपेषि॥ ग्रहीविरतिरतहरषजसविष्नुभगतकहंदेषि
१४॥ चौप॥ घनघमंडनभगरजतघोरा॥ प्रियाहीनडरपतमनमोरा॥ दामिनिदमकि मन
रहनघनमाही॥ षलकैप्रीतिजथाथिरनाही॥ वरषतजलदभूमिनिअराये
जथानवहिबुधविद्यापाये॥ बूंदअघातसहेगिरिकैसे॥ षलकेवचनसंत
सहैजैसे॥ छुद्रनदीभरिचलीतुराई॥ जसथोरेधनषलइतराई॥ भूमिपर
ताभाढावरपानी॥ जिमिजीवहिमायालपटानी॥ सिमिटिसिमिटिजलभर
हितलावा॥ जिमिसदगुनसज्जनपहआवा॥ सरिताजलजलनिधिमहंजा
ई॥ होइअचलजिमिजिउहरिपाई॥ दो॥ हरितभूमित्रिनसंकुलसमुझिप राम

९

रैनहिपंथ॥ जिमिपाषंडवादतेगुप्तहोइसद्ग्रंथ॥१५॥ चौ॥ दादुरधुनिचहुदिसा
सोहाई॥ वेदपढहिजनुवटुसमुदाई॥ नवपल्लवभएविटपअनेका॥ साधकमन
जसमिलेविवेका॥ आकजवासपातविनभएउ॥ जससुराजषलउद्यमग
एउ॥ षोजतकतहुमिलैनहिधूरी॥ करैक्रोधजिमिधर्महिदूरी॥ ससिसंपन्न
सोहमहिकैसी॥ उपकारीकैसंपतिजैसी॥ निसितमघनषद्योतविराजा॥ जनु
दंभिनकरमिलासमाजा॥ महावृष्टिचलिफूटिकियारी॥ जिमिस्वतंत्रभए
विगरहिनारी॥ कृषीनिरावहिचतुरकिसाना॥ जिमिवुधतजहिमोहमदमाना॥
देषिअतचक्रवाकषगनाही॥ कलिहिपाइजिमिधर्मपराही॥ ऊषरवरषैत्रिन
नहिजामा॥ जिमिहरिजननीहियउपजनकामा॥ विविधिजंतुसंकुलमहिभ्राजा
प्रजावाढजिमिपाइसुराजा॥ जहतहरहेपथिकथकिनाना॥ जिमिइंद्रीगनउप

कि०

श्री

जेज्ञाना॥ दोहा॥ कबहुप्रबलचलमारुतजहतहमेघबिलाहि॥ जिमिकपूतकेउप
जेकुलसद्धर्मनसाहि॥ कबहुदिवसमहनिबिडतमकबहुकप्रगटपतंग॥ उपजै
बिनसैज्ञानजिमिपाइकुसंगसुसंग॥१६॥ चौपाई॥ बरषाबिगतसरदरितुआई॥
लछिमनदेखहुपरमसोहाई॥ फूलेकाससकलमहिछाई॥ जनुबरषाकृतप्रग
टबुढाई॥ उदितअगस्तिपंथजलसोषा॥ जिमिलोभहिसोषैसंतोषा॥ रस
रससूषसरितसरपानी॥ ममतात्यागकरहिजिमिज्ञानी॥ जानिसरदरितु
खंजनआये॥ पाइसमैजिमिसुकृतसोहाये॥ पंकनरेनुसोहअसधरनी॥ नीतिनि
पुननृपकैजसिकरनी॥ जलसंकोचबिकलभएमीना॥ अबुधकुटुंबीजि
मिधनहीना॥ बिनुघननिर्मलसोहअकासा॥ हरिजनइवपरिहरिसबआसा॥
कहुकहुवृष्टिसारदीथोरी॥ कोउएकपावभगतिजिमिमोरी॥ दोहा॥ चलेहरषि

राम

तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि॥ जिमि हरि भक्ति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि॥१७॥ चौ॥ सुखी मीन जे नीर अगाधा॥ जिमि हरि सरन न एक को बाधा॥ फूले कमल सोह सर कैसें॥ निरगुन ब्रह्म सगुन भए जैसें॥ गुंजत मधुकर मुखर अनूपा॥ सुंदर खग रव नाना रूपा॥ चक्रवाक मन दुख निसि पेखी॥ जिमि दुरजन पर संपति देखी॥ चातक रटत तृषा अति ओही॥ जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही॥ सरदातप निसि शशि अपहरई॥ संत दरस जिमि पातक टरई॥ देखि इंदु चकोर समुदाई॥ चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई॥ मसक दंस बीते हिम त्रासा॥ जिमि द्विज द्रोह किए कुल नासा॥ दोहा॥ भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाई॥ सद्गुर मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाई॥१८॥ चौ॥ बरषा गत निर्मल रितु आई॥ सुधि न तात सीता कै पाई॥ एक बार कैसेहु सुधि जानो॥ कालहु जी

ति निमिष महं आनौ॥ कतहु रहै जो जीवत होई॥ तात जतन करि आनौं सोई॥ सुग्री
वहु सुधि मोरि बिसारी॥ पावा राज कोस पुर नारी॥ जेहि सायक मारा मै बाली॥
तेहि सर हतौं मूढ कह काली॥ जासु कृपा छूटहि मद मोहा॥ ता कहु उमा कि स
पनेहु कोहा॥ जानहि यह चरित्र मुनि ज्ञानी॥ जिन रघुनाथ चरन रति मानी॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना॥ धनुष चढाइ गहे कर बाना॥ दोहा॥ तब अनु
जहि समुझावा रघुपति करुना सींव॥ भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्री
व॥ १९॥ चौपई॥ इहा पवनसुत हृदय बिचारा॥ राम काज सुग्रीव बिसारा॥ नि
कट जाइ चरनन सिर नावा॥ चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा॥ सुनि सुग्री
व परम भय माना॥ बिषय मोर हरि लीन्हेउ ज्ञाना॥ अब मारुतसुत दूत
समूहा॥ पठवहु जहं तहं बानर जूहा॥ तब हनुमंत बुलाए दूता॥ सब करि

रिसनमानवहुता॥मैमुखप्रीतिनीतिदेषराई॥चलेसकलचरननशिरना
ई॥एहिअवसरलछिमनपुरआए॥क्रोधदेखिजहँतहँकपिधाए॥दोहा॥धनु
षचढाइकहातबजारिकरौंपुरछार॥ब्याकुलनगरदेखितबआयोबालिकु
मार॥२०॥चौपाई॥चरननाइशिरविनतीकीन्ही॥लछिमनअभयवाहुतेहि
दीन्ही॥क्रोधवंतलछिमनसुनिकाना॥कहकपीसअतिभयअकुलाना॥
सुनुहनुमंतसंगलैतारा॥करिविनतीसमुझाउकुमारा॥तारासहितजाइह
नुमाना॥चरनवंदिप्रभुसुजसबषाना॥करिविनतीमंदिरलैआए॥चरनप
षारिपलंगबैठाए॥तवकपीसचरननशिरनावा॥गहिभुजलछिमनकंठ
लगावा॥नाथविषयसममदकछुनाहीं॥मुनिमनमोहकरैछनमाहीं॥
सुनतविनीतवचनसुखपावा॥लछिमनतेहिबहुविधिसमुझावा॥पव

नततनयसबकथासुनाई॥जेहिबिधिगएदूतसमुदाई॥दोहा॥हरषिचलेसुग्रीवतब
अंगदादिकपिसाथ॥रामअनुजआगेकरिआएजहरघुनाथ॥२१॥चौपाई॥ना
इचरनसिरकहकरजोरी॥नाथमोहिकछुनाहिनखोरी॥अतिसयप्रबलदे
वतवमाया॥छूटैरामकरहुजबदाया॥बिषयबससुरनरमुनिस्वामी॥मैपा
वरपसुकपिअतिकामी॥नारिनयनसरजाहिनलागा॥घोरक्रोधनिसितम
जोजागा॥लोभपासजेहिगरनबधाया॥सोनरतुमसमानरघुराया॥यहगुन
साधनतेनहिहोई॥तुमरीकृपापावकोउकोई॥तबरघुपतिबोलेमुसुकाई॥तु
मप्रियमोहिभरतजिमिभाई॥अबसोइजतनकरहुमनलाई॥जेहिबिधिसीता
कैसुधिपाई॥दोहा॥एहिबिधिहोतबतकहीआएबानरजूथ॥नानाबरनसक
लदिसिदेखियकीसबरूथ॥२२॥चौ॥बानरकटकउमामैदेखा॥सोमूरखजोक

रन चलै तेव॥ आगे राम पद नावहि माथा॥ निरखि बदन सब होहि सनाथा॥ अस
कपि एक न सेन माही॥ राम कुशल जेहि पूछी नाही॥ यह न कछु प्रभु कै अधिका
ई॥ बिस्वरूप ब्यापक रघुराई॥ ठाढे जहं तहं आयस पाई॥ कह सुग्रीव सबहि समुझाई
राम काज अरु मोर निहोरा॥ बानर जूथ जाहु चहु ओरा॥ जनक सुता कहु खोजहु
जाई॥ मास दिवस महु आवहु भाई॥ अवधि मेटि जो बिन सुधि पाई॥ आवै बनिहै
सो मोहि मराई॥ दोहा॥ बचन सुनत सब बानर जहं तहं चले तुरंत॥ तब सुग्रीव बो
ला से अंगद नल हनुमंत॥२२॥ चौपाई॥ सुनहु नील अंगद हनुमाना॥ जामवंत म
ति धीर सुजाना॥ सकल सुभट मिलि दछिन जाहू॥ सीता सुधि पूछेहु सब काहू॥
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु॥ रामचंद्र कर काज सवारेहु॥ भानु पीठि सेइय
ल उर आगी॥ स्वामिहि सर्ब भाव छल त्यागी॥ तजि माया सेइय परलोका॥ मिटहि सक

लभवसंभवसोका॥ सोइगुनग्यसोईबडभागी॥ जोरघुबीरचरनअनुरागी॥ देहध
रेयहफलभाई॥ भजियरामसबकामबिहाई॥ आयसुमागिचलेसिरुनाई॥ हृदय
हरषसुमिरतरघुराई॥ पाछेपवनतनयशिरुनावा॥ जानिकाजप्रभुनिकटबो
लावा॥ परसासीशसरोरुहपानी॥ करमुद्रिकादीन्हजनजानी॥ बहुप्रकारसी
तहिसमुझाएहु॥ कहिबलबीरहबेगितुमआएहु॥ हनुमतजन्मसुफलकरिमा
ना॥ चलेहृदयधरिकृपानिधाना॥ जद्यपिप्रभुजानतसबबाता॥ राजनीति
राषतसुरत्राता॥ दोहा॥ चलेसकलवनखोजतसरितासरगिरिखोह॥ राम
काजलयलीनमनबिसरातनकरछोह॥ २४॥ चौपाई॥ कतहुहोइनिसिचरसो
भेटा॥ प्रानलेहिएकएकचपेटा॥ बहुप्रकारगिरिकाननहेरहि॥ कोउमुनिमि
लैताहिसबघेरहि॥ लागितृषाअतिसयअकुलाने॥ मिलैनजलघनगहनभु

लाने॥ मन अनुमान कीन्ह हनुमाना॥ मरन चहत सब बिन जल पाना॥ चढि
गिरि सिषर चहूँ दिसि देषा॥ भूमि बिबर एक कौतुक पेषा॥ चक्रबाक बक हंस उ
डाही बहुतक षग प्रबिसहि तेहि माही॥ गिरि ते उतरि पवनसुत आवा॥ सब कहु
लय सोइ बिबर देषावा॥ आगे करि हनुमंतहि लीन्हा॥ पैठे बिबर बिलंब न कीन्हा॥
दोहा॥ देषि जाइ उपवन सर नद बिगसित बहु कंज॥ मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि ना
रि तप पुंज॥ २५॥ चौपई॥ दूरि ते ताहि सबनि सिर नावा॥ पूछे निज बिरतंत सुनावा॥
तेहि तब कहा करहु जल पाना॥ षाहु सरस सुंदर फल नाना॥ मज्जन कीन्ह मधु
र फल षाये॥ तासु निकट पुनि सब चलि आये॥ तेहि सब आपनि कथा सुनाई॥
मै अब जाब जहा रघुराई॥ मूदहु नयन बिबर तजि जाहू॥ पैहहु सीतहि जनि पछि
ताहू॥ मूदि नयन देषहि कपि बीरा॥ ठाढे सकल सिंधु के तीरा॥ सो पुनि गई जहा

रघुनाथा॥ नारकमलपदनाइसिमाथा॥ नानाभाँतिबिनयतिनकीन्ही॥ अ
नपायनीभक्तिप्रभुदीन्ही॥ दोहा॥ बदरीबनकहुँसोगईप्रभुअज्ञाधरिसीस॥ उ
रधरिरामचरनजुगजेबंदितअजईश॥२६॥ चौपाई॥ इहाँबिचारहिंकपिमनमाहीं
बीतीअवधिकाजकछुनाहीं॥ सबमिलिकहहिंपरसपरबाता॥ बिनसुधिल
हेंकहबकाभ्राता॥ कहअंगदलोचनभरिबारी॥ दुहुंप्रकारभइमृत्युहमारी॥
पुनिपुनिअंगदकहसबपाहीं॥ मरनभयोकछुसंसयनाहीं॥ अंगदबचनसु
नतकपिबीरा॥ बोलिनसकहिंनयनबहनीरा॥ इहाँनसुधिसीताकैपाइ॥ उहाँ
गएँमारिहिकपिराई॥ पिताबधेपरमारतमोही॥ राखारामनिहोरनवोही॥
छिनएकसोचमगनहोइरहेउ॥ पुनिअसबचनकहतसबभएउ॥ हमसीता
कीसुधिबिहीना॥ नहिंजैहैंजुबराजप्रबीना॥ असकहिलवनसिंधुतटजाई

बैठेकपिसबदर्भडसाई॥जामवंतअंगददुखदेषी॥कहीकथाउपदेसविशेषी॥तात
रामकहुनरजनिमानहु॥निरगुनब्रह्मअजितअजजानहु॥हमसबसेवकअति
बड़भागी॥संततसगुनब्रह्मअनुरागी॥दोहा॥निजइछाअवतरैप्रभुसुरमहि
गोद्विजलागि॥सगुनउपासकसंगतहरहहिमोक्षसबत्यागि॥२७॥चौपई॥एहिवि
धिकहहिकथाबहुभाती॥गिरिकंदरासुनासंपाती॥बाहिरहोइदेषेबहुकीशा॥मो
हिअहारदीन्हजगदीशा॥आजुसबहिकहंभछनकरउ॥दिनबहुचलेअहारबि
नमरउ॥कबहुनमिलाभरिउदरअहारा॥आजुदीन्हविधिएकहिबारा॥डरपेगी
धबचनसुनिकाना॥अबभामरनसत्यहमजाना॥कपिसउठेगीधकहदेषी॥जा ४
मवंतमनसोचविशेषी॥कहअंगदविचारिमनमाही॥धन्यजटायूसमकोउनाही॥
रामकाजलगिनिजतनत्यागी॥हरिपुरगएउपरमबड़भागी॥जोरघुपति

चरन न चित लावै॥ तेहि सम ध्यान न धर्म कहावै॥ सुनि षग हरष सोक जुत बा
नी॥ आवा निकट कपिन भय मानी॥ ताहि देषि सब चले पराई॥ ढाढ कीन्ह तेइ सप
थ दिवाई॥ तिन्हहि अभय करि पूछिसि जाई॥ कथा सकल तेन्ह ताहि सुनाई॥ सुनि
संपाति बंधु कै करनी॥ रघुपति महिमा बहु बिधि बरनी॥ दो०॥ मोहि लै जाहु सिंधु तट
देउ तिलंजुलि ताहि॥ बचन सहाइ करब मै पैहो षोजहु जाइ॥२८॥ चौ॥ अनुज क्रि
या करि सागर तीरा॥ कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा॥ हम दोउ बंधु प्रथम तरुनाई॥
गगन गए रबि निकट उड़ाई॥ तेज न सहि सक सो फिरि आवा॥ मै अभिमानी र
बि निअरावा॥ झिमि झिमि मै रबि निकट उड़ाउ॥ तिमि तिमि अति व्याकुल होइ
जाउ॥ जरे पंष अति तेज अपारा॥ परेउ भूमि करि घोर चिकारा॥ मुनि एक नाम चं
द्रमा ओही॥ लागी दया देषि करि मोही॥ बहु प्रकार तेहि ग्यान सुनावा॥ देह जनि

28

तब अभिमान छुडावा॥ त्रेता ब्रह्म मनुज तन धरिहहि॥ तासु नारि निसिचर पति
हरिहहि॥ तासु खोज पठइहि प्रभु दूता॥ तिन्हहि मिले ते होब पुनीता॥ जमिहहि
पंख करसि जनि चिंता॥ तिन्हहि देखाइ देहेसु तै सीता॥ अस कहि मुनि निज आश्र-
म गयऊ॥ तेहि छन तन रच ज्ञान कछु भयऊ॥ स हारा मकर सु थिर न करऊ॥ एहि
बिधि गम जो बन मैं रहेऊ॥ मुनि के गिरा सत्य भै आजु॥ सुनि मम बचन कर-
हु प्रभु काजु॥ गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका॥ तहं रह रावन सहज असंका॥ तहं
असोक उपबन जह रहई॥ सीता बैठी सोच रत अहई॥ दोहा॥ मैं देखौं तुम्ह नाहि
गीधहि दृष्टि अपार॥ बूढ भयों न त करतेउ कछुक सहाइ तुम्हार॥ २९॥ चौपई॥
जो नाघै सत जोजन सागर॥ करै सो राम काज मति आगर॥ सो इक छुकरे रा-
म कर काजु॥ तेहि सम अन्य आन नहि आजु॥ मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा॥

29

राम कृपा कस भयउ शरीरा॥ पापिउ ज्ञाकर नाम सुमिरही॥ अति अपार भव सा गर तरही॥ तासु दूत तुम तजि कदराई॥ रामहृदय धरि करहु उपाई॥ असकहिउ मागी धज वगएऊ॥ तिनके मन अति विसमय भएऊ॥ निज निज वल सब का हू भाषा॥ पार जाइ कर संसय राषा॥ जरठ भएउ अस कहै रिछेसा॥ नहि तन रहा प्रथम वल लेशा॥ जवहि त्रिविक्रम भएउ षरारी॥ तव मै तरुन रहेउ वल भा री॥ दोहा॥ वलि वांधत प्रभु वाढेउ सो तन वरनि न जाइ॥ उभय घरी महदीन्हेउ सा त प्रदछिन धाइ॥ ३०॥ चौपई॥ अंगद कहजाउ मै पारा॥ जिय संसय कछु फिर ती वारा॥ जामवंत कह तुम सव लाएक॥ पठइय किमि सव ही कर नाएक॥ कहइ रीछ पति सनु हनुमाना॥ का चुप साधि रहेहु वलवाना॥ पवन तनय व ल पवन समाना॥ बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना॥ कवन सो काज कठिन जग

माही॥जोनहिंहोइतातनोहिआही॥रामकाजलगितवअवतारा॥सुनत
भएउपर्वताकारा॥कनकवरनअनितेजबिराजा॥मानहुअपरगिरिन्हक
रराजा॥सिंघनादकरिवारहिवारा॥लीलहिनाघौंजलधिअपारा॥सहितस
हायरावनहिमारी॥आनौइहात्रिकूटउपारी॥जामवंतमैपूछौंतोही॥उचित
सिखावनदीजैमोही॥एतनाकरहुतातनुमजाई॥सीतहिदेखिकहहुसुधिआई
रामहिजेअधिकसिखावनिनाही॥वेगिकरहुनुमधरिमनमाही॥तवनिजभुज
बलराजिवनयना॥कौतुकलागिसंगकपिसेना॥छंद॥कपिसेनसंगसंघ
रिनिसिचररामसीतहिआनिहै॥त्रैलोकपावनसुजससुरमुनिनारदादि
वखानिहै॥सोसुनतगावतकहतसमुझतपरमपदनरपावही॥रघुवीरपद
पाथोजमधुकरदाससतुलसीगावही॥दो॥भवभेषजरघुनाथजसुसुनहिजेन

31

रघुकुलनारि ॥ तिनकर सकल मनोरथ सफल करहिं त्रिपुरारि ॥ सोरठा ॥ नीलोत्प
लदल श्याम काम कोटि शोभाभ्यधिक ॥ सुनिय तासु गुनग्राम जासु नाम अघ
खगवधिक ॥ ३१ ॥ इति श्री रामचरितमानसे सकल कलि कलुष विध्वं
सने विमलवैराग्य संपादिनी नाम चतुर्थः सोपानः समाप्तः ॥ ४ ॥

15 TANGIBS 20 Yds

१

ॐ श्रीगणेशाय नमः प्रश्नाक्षरमात्रे ति कुल विशा १८ त्रिभिः गुणपि युग्मे

मिश्रा अष्टेतर १० ८ पालेन नम केशेषो मत्युस्वलसरः प्रश्नाक्षरमात्रेष २८

गुणं चतुर्हीनाद्विवमिश्रा ११ द्वादश २२ भक्तारेषे मृत्युमस्या प्रश्नाक्षर

मात्राद्वया १ गुणात्रिथो दशहीना विशा ३ भक्ताशेषेण तिथी प्रश्ना

ने ... मात्रा ऊर्द्ध ४ गुणास पूर्हीना मानु १२ सपूविशतिरे भक्ताशेष

नक्षत्रं प्रश्नाक्षरमात्रा विंशति २० गुणा षट् ६ हीनास पूर्मि ७ भक्ताशेष वा

रः प्रश्नाक्षरमात्राद्वद ... गुणादू ... २ हीनास पूर्विंशति मि २७ भक्ताशे

षे योगा ज्योतिर्विन्नाद ... निर्धारणा त्रा सम गीरितम ... वीशाम नमो

दायगणादीनां मिश्र ... अथ चक्रोद्धार स प्रोर्दुगा कार्याने वर्षयेत

कृ१	कृ२	कृ३	रो४	३५	रु६	रे	२८	मृ९	म१०	पा११	आ१२	आ१४	आ१५	आ१६
कृ१	रो१२	म१५	रो१६	३७	घ१८	ह्रीं १	ज१६	ऊ२०	म२८	२५	३७	६८	श्रा२५	
पु६	हे७	पु८	पु५	ना०	प७	फू८	व४	मा०	म११	य८	ना०	ह११	श१२	ध१०
म१७	ह१२	ह७०	३११	ह१२	श्ले१४	ह१२	[illegible]	[illegible]	ह५	म२	म११	र४	म१	

इ१६	पू८०	अ८६		श८	म१	क२	
३८	दि१०	दा५		५०	वर्गचैत्र	ख३	
का८	प८	मे४		५६	न५	२२	
स५	चे१२	मे४४	बुद	बृद	३३	श११	ग्रस्त

ज्ञाताम्तुसपको॥ गुरपज्ञाता॥ २४ आलिंगवेन ३ युक्तोजाता१२३४ पिंड

कितगे॥ ७ लोशेषडवस्तुनेनामादेचयंजातनं वध्२ [illegible] तो १: युक्तो३ [illegible]

~~पंच भागेवधं२८ शेषांकाङवस्तुनेवर्गस्य~~) अट छ भागेन वध्यं४२

शेषांकाः४ कवर्गाच्चतुर्थोवतनो रा चवर्गा तवर्गोजातालवधं४३

मन्दे १: युक्तो१४३ पंच भागेवधं२८ शेषांक ३स्तुनोर्वर्गस्तस्याय

दूर तृतीयोद्कार द्विपद पद्मोवदेदेव दवी यच्च वदेन्नदीस्ववै

वैश्च पद्मेवदेत पुष्पं [illegible] मद्दे वदेतफ तं मनसीं दवातचिं

ततं वर्गवर्गा प्रमाणात [illegible] कोपो क्रमात्ति रेवत आकारादिस्त

थावर्गा सो कोशेषु [illegible] तात

क्र शान: [illegible] ११ यो द श १२ अन्वय

वातिरेका [illegible] ततः प [illegible] चक्रे दिना नकाले

[illegible] शायेततः [illegible] स्मी ४८ शेषांदृष्टा को१स

विश्रिया [illegible] रुमतं शुभं रामरामराम०

चात्वारिंशता इति लग्नकप्रकरणं अथ घस्तनकाप्रकरणं टकारादेरे प्रदे-
शान्निसौमे तिस्त्र कन्यानानां सामध्ये एकादि चवादे पुराय सेयो टु
कारकूटाटकाराणां अथनाम प्रकरणं प्रथमादेरे प्रकट व होत्रवर्गे
अवतरं नाम ड़ादरे प्रकटे पचवर्गे पचादारं नाम खड़ दोर वर्गे
टकादरं नाम मन्न वादरे पचवर्गे ड़ादरं नाम दशादारे प्रदे
बद्धेन तीये वर्गे टु जरं नाम दुदशादारे षष्टे वर्गे चतुरदरं
ओदशे चतुर्थे वर्गे पचादर चतुर्दे [illegible] नये वर्गे षडादरं नाम
इती पंडुकूल पुरे इति गर्गाचार्य [illegible] निर्णोरमा [illegible] टि [illegible] न
सप्तर्षि अलिंगतवे ताया [illegible] [illegible] ११ [illegible] स्य ८ दास्ये
वर्ग ८ लेन दुस्याकं ११ गुरु [illegible] [illegible] [illegible]
रसवर्ग ७ लेन रस्साकार ८ गुरु [illegible] ८ [illegible] दूष [illegible] ६५ [illegible] ६५ दीन
ज्ञाता पिंडा १० पिंडा केता मुराकोटीया [illegible] राक [illegible] दिचाष्ये
[illegible] चद्या फालस्याह्यजो रस्यस्वरांक [illegible] का १८ [illegible] पिंड [illegible] १९२८

२ राकुपाशः परिज्ञेयं सर्व्याद सप्तमि गृहं अरवर्ग द्दिगको योगं
दृ प्रतापमारती देवी केवल ज्ञानचारिणीय यथातथा प्रवक्ष्यामी सर्वे
ज्ञेनसमाषितं । वचनास्वराराशीवद्दुद्दगुमायेत एकादरे प्रश्ने श
नि चंद्रौ द्वादरे प्रश्ने गुरु चंद्रो अष्टरे प्रश्ने गुरु भौमौ चतुरद्द
रे बुद्धद्वयं पंचाद्दरे प्रश्ने भौम गुरु षट्दरे प्रश्ने सोम शुक्रौ स
प्तान्दरे रवीशनौ अष्टान्दरे शनी रवी नवा द्दरे दश द्दरे गुरु
शनी एकादशा द्दरे बुद्द भौमौ द्वादशा द्दरे बुध भौमौ त्रयो
दशा द्दरे सोम गुरु चतुर्दशा द्दरे रवि शुक्रौ पंचादशा द्दरे
शनैश्चरद्वयं षोडशा [illegible] द्दरे रवि शुक्रौ सप्तदशा द्दरे गुरु रवि
अष्टादशा द्दरे बुध [illegible] एकोनविंशा द्दरे भौम द्वयं वीशा द्द
रे सोम बुधौ एकविंशा द्दरे प्रश्ने रवी गुरु ॥ इति एकविंश
ति प्रश्ना लाभालाभ [illegible] गमनागमने नृपपराजये जीवत मरणं सर्व
विषये गद्दीता ॥ इती प्रश्नतिलके संज्ञाधिकारः अथ चिंता
प्रकरणं एकाद्दरे प्रश्ने शनैश्चरोदये धातु चिंता द्वा द्दरे प्रश्ने

तयालिखेत् अ श्वादि काश्चतारि शाकोरका स्युस्तया क्रमात् १ आका
रादि विसर्गांता स्वतु कोरोात तया लिखेत् ककारायचास्त याकर्णान्तोव
कोष्ठेषु मानयात यान्नतादिना इति वृष्टि दरीलीला सर्वमाचासम
निता दिग्वांदीयते तत्र तन्कादिरखी२ महति दिग्कं फ वेला इशानव
र्यंतं को च्यंच चके द्वष्टव्या उदाहरणाय प्राप्त खेम प्रचतारि श१०
दंकाः ईशाने षट्चत्वारिंशा४६ दंका एवं सर्वदिशामु वोध्या
के नचित्पालनामा त्वरगृहीतं [illegible] चामेकार२ अनुरुवारे
वकाराः ४ एव प्रकारः रजोनान्य दिग को नवेरदं दश रती २ मेको
यं भेतिन सुहृद्भाव चिंता २।३।४। मध्येकेन्दु।१।४।२। मध्ये ६।१।१।७। को यीमनु
अ१	क२	ख३	ग४	च५	आ२
उ५	ङ६	च३	घ४	ज५	ई६
ऊ६	ज७	छ८	ऊ१०	इ४	ठ५
इ६	ठ७	ग८	त५	थ६	इ७
ध८	न९	प६	फ७	व८	भ९
म१०	प७	अ३२	अं११	श८	ल९
व१०	श-	स८	ष४	श७	स१०
ओ३	ह११	ह	ई७	ओ८	ल५ र

फलयश्च हृदेह्यौ २ रनीमह चत्वारि दाककार्यसिद्ध
यस्नेज्ञाने सहदेखमायः क्षीः रस्सद सहगुणीतेपरुको
के कोणे इद्र युक्तेनतग७ मा जितं क्रत्वा शेषे ग्रहो
दयं कथ्यात फ लमितीति याः सु रजो
दय नास्तिम त्यु सफलतोलाभकीर्तिता

6

चतुर्थे मूलजीवो पंचमे धातु षड्दारे मूलजीवे संप्तादारे धातुरेको

अष्टमे जीवद्वो नवमे धातुजीवो दशमे मूलं एकादशे मूल धातु

द्वादशे धातुजीवो त्रिदशे धातुमूलौ पंचदशे जीव धातु षोडशे

जीवमूलौ सप्तदशे धातु अष्टादशे जीव जीवमूलं एकोनविंशे धा

तु विंशे मूलं एकविंशे त्रयोदशे प्र[illegible] धातु [illegible] आयलु

का [illegible] पएकादशे पंचवर्गे [illegible]का पेता द्वादशे [illegible]कापाले

वलाश्रिता [illegible]दशे [illegible] स्वर्गे वलाश्रितो चतुर्दशे मर्त्य [illegible]का मूला

श्रिता षड्दशे मर्त्यलो[illegible]का मूलाश्रिता सप्तादशे स्वर्गे धाताश्रिता

अष्टादशे स्वर्गे [illegible] न वमे मर्त्यलोके जीवश्रिता दशमे

स्वर्गे [illegible]का धाताश्रिता [illegible] मर्त्यलोके [illegible]का मूलाश्रिता [illegible]

स्वर्गे धाताश्रिता [illegible] मर्त्यलोके मूलाश्रिता चतुर्दशे स्वर्गे धा

ताश्रिता [illegible] पंच[illegible] श्रिता षोडशे [illegible] सप्तदशे पाताले

मूलाश्रिता [illegible] एकोनविंशे स्वर्गे धात

मूलाश्रिता अष्टादशे [illegible] मर्त्यलोके मूलाश्रिता एकोनविंशे स्वर्गे धात

श्रिता विंशे स्वर्गे मर्त्यलोके मूलाश्रिता एकविंशे [illegible]

शुक्रोदये जीव चिंता चतुर्थाब्दे तरे शनैश्चरोदये मूल चिंता पंचमे भौमोदये
धातु षष्ठाब्दे तरे चंद्रोदये जीव चिंता सप्तमे शुक्रोदये धातु अष्ट
मे गुरूदये धातु एकादशाब्दे तरे बुधोदये मूल चिंता द्वादशे भौमो
दये धातु त्रयोदशे सूर्योदये मूलं चतुर्दशे सूर्योदये धातु पंचद
शे शनैश्चरोदये धातु षोडशे शुक्रोदये जीवा सप्तदशे गुरूदये
धातु अष्टाब्दे तरे दशा बुधोदये मूलं एकोनविंशाब्दे तरे भौमोदये
धातु विंशत्यब्दे तरे भौमोदये मूल चिंता एकविंशत्यब्दे तरे आदित्योदये
धातु चिंता ॥ अथ नष्टप्रश्ने प्रथमाब्दे तरे धातु नष्ट द्वितीयाब्दे तरे जी
वन षष्ठे अब्दे तरे धातु नष्ट वर्षा चतुर्थाब्दे तरे मूल पीत नष्टे सप्ताब्दे तरे धातु
नष्ट कांस्य अष्टाब्दे तरे धातु नष्ट लोह नवाब्दे तरे जीव द्वादशाब्दे तरे नष्ट स
वर्षा पंचदशाब्दे तरे जीवा षोडशाब्दे तरे पित्तवा सप्तदशाब्दे तरे धातु अष्ट
दशे मूलं एकोनविंशे अब्दे धातु लोहं विंशाब्दे तरे धातु मांसं ए
कविंशत धातु नष्ट ताम्रं ॥ इति नष्टप्रश्ने अथ मुष्टिप्रश्ने प्रथ
माब्दे तरे धातु एक संख्या द्वितीयाब्दे तरे मूल जीव संख्या कोष्ठाब्दे तरे धातु एक